



। श्रीसच्चिदानन्दवर्तये परमात्मने नमः ।



## तुलसीदासकृत रामायन ॥

बनारस कालिज के पण्डित रामजसन ने बांचने की  
सुगमता के लिये पदों को अलग २ करके भाषा  
की चाल पर कई एक पुस्तकों से सोधकर  
छपवाया ॥

इस रामायन के अंत में कठिन शब्दों के अर्थ और इतिहास आदि भी लिखे हैं ॥

जिस किमी को लेना हो बनारस कालिज के पण्डित रामजसन के  
पास लिख भेजे ॥

बनारस ॥

॥ मेडिकल शास्त्र के हाथेखाने में कापी गई ॥

सन १८८५ ई०



## ॥ चौपाई ॥

बंदौ गुहपदपदमपरागा । सुहृदि सुवाम सरस अनुरागा ।  
 अमियमूरिमय चूरन चारु । समन सकल भवहजपरिवारु ।  
 मुहृतसंभूतन विमल विभूतो । मंजल मंगलमोदप्रदुतो ।  
 जगमनमंजुमुकुरमलहरनी । किये तिलक गुनगनवसरनी ।  
 ओगुहपदनखमनिगनजोती । सुमिरत दिव्यदृष्टि हिस होती ।  
 दलन मोहतम हंसप्रकाश । बड़े भाग्य घर आवहि जाय ।  
 उघरहि विमल बिखोचन ही के । मिटहि दोष दुख भवरजनी के ।  
 सुझहि रामचरित मनिमानिक । गुप्त प्रगट जह जो जेहि खानिक ।

## ॥ दोहा ॥

यथा सुभजन आजि दृग साधक सिद्ध सुजान ।  
 कौतुक देखहि सैल वन भूतल भूर निधान । ॥

चौ० गुहपदरज मृदु मंजुल अंजन । नयन अमिय दृग्दोषविभंजन ।  
 तेहि करि विमल बिबेक बिखोचन । बरनी रामचरित भवमोचन ।  
 बंदौ प्रथम महोसुरचरना । मोहजनितसंघय दैव हरना ।  
 सुजनसमाज सकल गुनखानी । करौ प्रणाम सप्रेम सुकानी ।  
 साधुचरित सुभ सरिस कपास । निरस विमद गुनमय फल जास ।  
 जो सहि दुख परकिदु दुरावा । बंदनीय जेहि जग अस पावा ।  
 मुद मंगलमय संतसमाज । जो अग जंगम तीरथराज ।  
 रासभक्ति जह सुरसरिधारा । सरस्वति ब्रह्मा बिचार प्रेरा ।  
 बिषयनिषेधमय कलमलहरनी । कर्मकथा रविनंदिनि बरनी ।  
 हरिहरकथा बिराजति बेनी । सुनत सलक मुदमंगलदेनी ।  
 बट बिस्वास अचल निजधर्मा । तोरथराज समाज सुकर्मा ।  
 सबहि सुलभ सब दिन सब देसा । सेवत सादर समन कलेशा ।  
 अकथ अलौकिक तीरथराज । देद सद्य फल प्रगट प्रभाज । ॥

दो० । सुनि समझहि जन मुदित मन मज्जहि अति अनुराग ।

लहहि चारि फल अकृत तनु साधु समाज प्रयाग । ॥

चौ० मज्जनफल देखिय ततकाला । काक दोहि पिक बकड मराला ॥  
 सुनि आषरज करै जनि कोई । भूतभंगतिहि हिमा नहि कोई ॥  
 बालमोक नारद षट्थोन्म । निज निज मुखनि कही निज होनी ॥  
 जलचर यलचर नभचर । जे जइ जैन जीव जहाना ॥  
 मति कीरति गति भूति भलाई । जब जहि जतन जहां जेहि पाई ॥  
 सो जानव सतसंगप्रभाज । लोकजं बेद न आन उपाज ॥  
 सिद्ध सतसंग बिबेक न होई । रामकृपाबिनु सुलभ न सोई ॥  
 सतसंगति मुदसंगसमूहा । सोद फल सिधि सब साधन फूला ॥

सठ सुधरहिं सतसंगति पाई । पारस परसि कुधातुसुहाई ॥  
 विधिबध सुजन कुमंगति परहीं । कनिमनिसम निज गुन अनुसरहीं ॥  
 विधि हरि हर कविकोविद बानी । कहत माधुमहिमा सकुचानी ॥  
 सो मोहिसन कहि जात न कोये । साकबनिक मनियनगुन जैसे ॥

दो० । बंदी संत समानचित हित अनहित नहीं कोउ ।  
 अंजलिगत सुभ सुमन जिमि सम सुगंध कर दोउ । ३ ॥  
 संत सरल चित जगत हित जानि सुभाव सनेउ ।  
 वालविनय सुनि करिछपा रामचरन रति देख । ४ ॥

चौ० बडरि बंदि खलमन सतिभाए । जे विनु काज दाहिनेऊ बांए ॥  
 परहितहानि लाभ जिन्ह करे । उजरे हरष विवाद बसेरे ॥  
 हरिहरजस राकेसराऊ से । परअकाज भट सहसबाऊ से ॥  
 जे पर दोष लखहिं सहसाखी । परहितघृत जिन के मन माखी ॥  
 तेज कसानु रोष महिषेसा । अथअवगुनधनधनिक धनसा ॥  
 उदय केतुसम हित सब हो के । कुंभकरनसम सोदत नीके ॥  
 पर अकाज खनि हुनि परिहरहीं । जिमि हिम उपल कषी दल गरहीं ॥  
 बंदी खल जस मेस सरोषा । सहस बदन बरसै पर दोषा ॥  
 पुनि मनवीं पृथराजसमाना । पर अघ सुनै सहसदस काना ॥  
 बडरि सक्रमम विनवीं तेही । संतत सुरानीक हित अही ॥  
 बचन बडरिहि सदा पियारा । सहस नयन पर दोष निहारा ॥

दो० । कुलमोन अरि मोत हित सुनत जरहिं खलरीति ।  
 जानि पानि जुग जोरि करि विनती करौं समीति । ५ ॥

चौ० मैं आपनि दिशि कोन्ह निहोरा । तिन निज ओर न लाउव भोरा ॥  
 बायस पालिय अति अनुरागा । होहि निरामिष कबहुं कि कागा ॥  
 बंदी संत असज्जन चरना । दुखप्रद उभय बीच कहु बरना ॥  
 विक्रत एक प्राण हरि लेहीं । मिलत एक दाहन दुख देखी ॥  
 उपजहिं एक संग जल माहीं । जलज जोक जिमि गुन बिलगाहीं ॥  
 सुधा सुरा सम साधु असाधु । जनक एक जग जलधि अगाधु ॥  
 भल अनभल निज निज करतलो । सहत सुजस अपलोक विभती ॥  
 सुधा सुधाकर सुरमरि साधु । गरल अनल कलिमल सरि व्याधु ॥  
 गुन अदगुन जानत सब कोई । जो जेहि भाव नोक तेहि छोई ॥

दो० । भलो भलाई पै सहहिं सहहिं निहोरी नोष ।  
 सुधा सराहिष अमरता गरल दुराहिष मोष । ६ ॥

चौ० खल मह अगन साधु गुन माहा । उदय अपार उदधि अगनाहा ॥  
 तेहि तें कहु गुन दोष बखाने । संघट त्याग न विनु पहिचाने ॥  
 भलेउ पोष सब विधि उपजाये । अनि गुन दोष केद बिलगाये ॥



PRINTED BY E. J. LAZARUS & CO.  
AT THE BRIDGAL HALL PRESS, CALCUTTA.

श्रीरामचन्द्राय नमः ।

## रामायन तुलसीकृत ।

वाल्मीकीय ।

वर्णानामर्थसङ्ग्रहानां रसानां छन्दसामपि मङ्गलानाञ्च कर्तारौ  
वन्दे वाणीविनायकौ । १ । भवानीशङ्करौ वन्दे अद्वाविद्वासरूपिणौ  
याभ्यां विना न पश्यन्ति सिद्धाः स्वान्तस्थमीश्वरं । २ । वन्दे बोधमयं  
नित्यं गुरुं शङ्कररूपिणं यमाश्रितोहि वक्रोपि चन्द्रः सर्वत्र वन्द्यते  
। ३ । सीतारामगुणग्रामपुष्पारण्यविहारिणौ वन्दे विशुद्धविज्ञानौ  
कवीश्वरकपोश्वरौ । ४ । उद्भवस्थितिसंहारकारिणौ केशहारिणौ  
सर्वश्रेयस्करोः सीतां नतोद्धारामवल्लभां । ५ । यन्मायावशवर्त्तिविश्व-  
मखिलं ब्रह्मादिदेवासुरा यत्सत्त्वादमृष्यैव भाति सकलं रज्जौयथा-  
ऽहेर्धमः यत्पादः स्रवमेव भाति हि भवाम्भोधेस्तितीर्षावतां वन्देऽहं  
तैमशेषकारणपरं रामाख्यमीशं हरिं । ६ । नानापराणनिगमागम-  
सम्मतं यद्रामायणे बिम्बितं कचिदन्यतोपि स्वान्तः सुखायतुलसी  
रघुनाथगाथा भाषानिबन्धमतिमङ्गलमातनोति । ७ ॥

॥ सौरेरटा ॥

जेहि सुमिरत सिधि होइ गननायक कटिबरबदन ।  
— करो अनुग्रह सोइ बुद्धिरासि सुभगुनसदन ॥  
मूक होइ बाबालु पंगु चढ़ै गिरिवर गहन ।  
जासु छपा सु दबाहु-इवौ सकल कलिमलदहन ॥  
नीलसरोरुहस्यास तरुन अरुनबारिजनयन ।  
करो सो मम उर धाम सदा होइ तोरसयन ॥  
कुंदइंदुसमदेह उमारमन कानाअयन ।  
जाहि दीन पर नेह करो छपा मर्दनमयन ॥  
बंदौ गुरुपदकंज छपासिंधु नररूप हरि ।  
महामोहतमपुंज जासु बचन-रविकरनिकर ॥

कहहिं बेद इतिहास पुराना । विधिप्रपंच गुनअवगुनसाका  
दुख सुख पाप पुन्य दिन राती । साधु असाधु सुजाति कुजाती  
द्वानव देव ऊंच अह नीचू । अमिय सजीवन माऊर मीचू  
माया ब्रह्म जीव जगदीसा । लच्छ अलच्छ रंक अवनीसा  
काशी मगध सुरसरि कर्मनासा । मरु माखव महिदेव गवासा  
स्वर्ग नर्क अनुराग बिरागा । निगमागम गुन दोष बिभागा

दो० । जइ चेतन गुन दोष मय विस्व कोन्ह करतार ।  
संत हंस गुन गहहिं पय परिहरि बारि बिकार । ७ ॥

चौ० अस विवेक जब देहिं बिधाता । तब तजि दोष गुनहिं मन राता  
काल सुभाव कर्म बरिआई । भलेउ प्रहृतयस चूक भलाई  
सो सुधारि हरिजन जिमि लेंहीं । दक्षि दुख दोष विमल जस देहीं  
खलउ करद भल पाद सुसंगू । मिटहि न मलिन सुभाव अभंगू  
लखि सुवेष जगबंचक जेऊ । बेषप्रताप पुजियत तेऊ  
लघरहिं अंत न होय निबाह । कालनेमि जिमि रावन राह  
किये कुबेष साधुमनमानू । जिमि जग जामुन हनुमानू  
हानि कुसंग सुसंगति लाह । लोकज बेद बिदित सब काह  
गगन चढ़ै रज पवनप्रसंगा । कीचद मिलद नीच जलसंगा  
साधु असाधु सदन सुक सारी । सुभिरहिं राम देहिं गन गारी  
धूम कुसंगति कारिख होई । लिखिच पुरान मंजु मरि सोई  
सोई जल अगल अनिल संधाता । होई जलद जग जीवन दाता ॥

दो० । यह भेषज जल पवन पट पाद कुजोग सुजोग ।

होई कुवस्तु सुवस्तु जग लखहि सुलकलन लोग । ८ ॥

सम प्रकास तम पाख दुज नाम मेद विधि कोन्ह

समिपोषक शोषक समुझि जग जम अपजस दोन्ह । ९ ॥

जइ चेतन जग जीव ज सकल राम मय जानि

बंदौं सब के पद कमल सदा जोरि जुग पानि । १० ॥

देव दमज नर नाग खग प्रेत पितर गंधर्व

बन्दौं किन्नर रजनिचर हपा करजु अदु सब । ११ ॥

चौ० आरु चार लाख चौराधो । जात जोर भजलथलवाधो ॥

सिचारा ममय सब जग ज नी । करौं प्रनाम जोरि जुग पानी ॥

जानि कृपाकरि किंकर मीक । सब मिलि करजु छाड़ि कल होवू ॥

निज बलबुद्धिभंगस मोहि जाहीं । ताते बिनय करौं सब पाहीं ॥

करन चहौं रघुरति गुनगाहा । लघु मति मोरि चरित अवगाहा ॥

सुख न एकउ अंग लपाऊ । मम मति रंक मनोरथ राऊ ॥

मति अति नीच ऊंचि रचि आकी । रहिये अमिय जग जरै न काकी ॥

हमिहहिं सज्जन मोरि ठिठारि	। सुनिहहिं बाखनचन मन खारि	॥
जौ बाखक कह तोतरि वाता	। सुनहिं मुदित मन पितु यह माता ॥	
हंसहिं कूर कुटिल कुबिचारी	। जे पर दूषन भूषन धारी	॥
निज कबित कहि लाजु न नीका	। सरस होउ अथवा प्रति फीका	॥
जे पर भनित सुनत हरषाहीं	। ते बर पुरुष बज्रत जग नारी	॥
जग बज्र नर सरितासम भाई	। जे निज बाढ वढहिं जल पारी	॥
सज्जन सुकृतसिंधुसम कोई	। देखि पूर बिधु बाढहिं कोई	॥

दो० । भाग छोट अभिलाष बड़ करउं एक विस्वास ।

पैहहिं सुख सुनि सुजन जन खल करिहें उपहास । १२ ॥

चौ० खलपरिहास होइ हित मोरा	। काक कहहिं कलकठ कठारा ॥
हंसहिं बक दाहुर चातकही	। हंसहिं मलिन खल बिमल बतकही ॥
कवितरमिक न रामपद नेंछ	। तिन्ह कहं सुखद हामरस एछ ॥
भाषाभनित मोरि मति भोरी	। हंसिबे योग हंस नहिं खोरी ॥
प्रभुपदप्रोति न सामझि नीको	। तिन्हहिं कथा सुनि सागिहिं फीको ॥
हंसि हरपदरति मति न कुतरकी	। तिन्ह कहं मधुर कथा रघुवर की ॥
रामभक्तिभूषित जिय जानी	। सुनिहहिं सुजन सराहिं सुधानी ॥
कवि न होउं नहिं चतुर प्रवीना	। सकल कला सब यियाहीना ॥
आखर अर्थ अलंकृत नाना	। छंदप्रबंध अनेक विधाना ॥
भावभेद रसभेद अपारा	। कवितदोष गुन बिबिध प्रकारा ॥
कवितबिबेक एक नहिं मोरे	। सत्य कहौं लिखि कागद कोरे ॥

दो० । भनित मोरि संवगन रहित विख विदित गुन एक ।

सो बिचारि सुनिहहिं सुमति जिन्ह के प्रवक्ष बिबेक । १३ ॥

चौ० इहिं मह रघुपतिनाम उदारा	। अति पावन पुरान सुतिमारा ॥
मंगलभवन अमंगलहारी	। उमासहित जहिं अपु चिपुरारी ॥
भनित बिचित्र मुकविकृत ओज	। रामनाम बिनु सोह न साज ॥
बिधुवदनी सब भांति सवारी	। सोह न बसन बिना बर नारी ॥
सब गुनरहित लुकविकृत वानी	। रामनामजसअंकित जानी ॥
सादर कहहिं सुनहिं बुध ताही	। मधुकरसरिस संत गुनपारी ॥
अदपि कवितगुन एकउ नारी	। रामप्रताप प्रगट इहिं मारी ॥
सोइ भरोस मोरे मन आवा	। कहि न सुसंग बड़प्पन पावा ॥
धूमउ तजै सहज कह्याई	। अंगरप्रसंग सुगंध बसाई ॥
भनित भदस बसु भलि बरनी	। रामकथा जगमंगलकरनी ॥

॥ छंद ॥

मंगलकरनि कलिमलहरनि तुलसी केया रघुनाथ की ।

गति कूर कवितासरित की ज्यौ परम पावन पाथ की ॥

प्रभुसुखसंगति भनिति भलि होइहि सुजनमनभावनी ।  
 भवअंगभूति मखान की सुमिरत सुहावनि पावनी । १ ॥  
 दो० । प्रिय जागिहि अति सबहिं मम भनिति रामजससंग ।  
 दाइ विचार कि करइ कोउ बंदिइ मलयप्रसंग । १४ ॥  
 खामसुरभिपय विषद अति गुनद करहिं तेहिं पान ।  
 गिरायाम सिथरामजस गावहिं सुनहिं सुजान । १५ ॥

चौ० मनि मानिक मुकुतकाषि जैसी । अहि गिरि गजसिर सोइ न तैस  
 नृपकिरोट तहजोतनु पाई । लहहिं सकल सोभा अधिकाई  
 तैसहिं सुकविकवित सुध कहहीं । उपजहिं अनत अनत कवि कहहिं  
 भक्तिहेतु विधिभवन बिहारी । सुमिरत खरद आवति धाई  
 रामचरितसर विष्णु अन्हवायें । सो लम जाइ न कोटि उपायें  
 कवि कोविद अथ हृदय विचारी । गावहिं हरिगुन कलिमलहारी  
 कोन्हे प्राकृतजनमनगाना । सिर धनि गिरा लागि पछितान  
 हृदयसिंधु मति भोपमना । खाती खरद कहहिं सुजाना  
 जो वरषै वर बारि विचारु । होहिं कवित मुकुतामनि चारु

दो० । जुक्ति बेधि पुनि पोहिये रामचरित वर ताग ।  
 पहिरहिं सखन बिमल उर सोभा अति अनुराग । १६ ॥

चौ० । जे जनमे कलिकाल कराला । करतव वायस खेप मराला  
 चलत कुपंथ वेदमग छाड़े । कपटकलेवर कलिमल भाड़े  
 बैषकुं भक्त कहाइ राम को । किंकर कंचन कोइ कामि को  
 तिन मह प्रथम रेख अग मोरी । धृग धरमध्वज धंधक धोरी  
 जो अपने अवगुन सब कहजं । बाढे कथा पार नहि लहजं  
 ताने मै अति अलप बखाने । धोरे मह जानिहहिं सखाने  
 समझि विविध विध बिनती मोरी । कोउ न कथा सुनि देसिह खोरी  
 एतेऊ पर करिहहिं जे संका । मोहि ते अधिक ते जइ मतिरंक  
 कवि न होउ नहि चतुर कहाजं । मतिअनरूप रामगुन गाजं  
 कहं रघुपति के चरित अपारा । कहं मति मोरि निरत संसारा  
 जेहि माहन गिरिमेह उडाहीं । कहइ तूल केहि खेखे माहीं  
 समुझत अमित गमप्रभुताई । करत कथा मग अति कदराई

दो० । खरद खेप मधेस विधि आगम निगम पुरान ।  
 नेति नेति कहि आसु गुन करहिं निरंतर गान । १७ ॥

चौ० । सब जानत प्रभुप्रभुता सोई । तदपि कहे बिनु रहा न कोई  
 तहां वेद अल कारन राखा । भजनप्रभाव भांति बड भाखा  
 एक अनोइ अरूप अनामा । अज सच्चिदानन्द परधामा  
 व्यापक विस्वरूप भगवाना । तेइ धरि देइ चरित हत नाजा

सो केवल भक्तव्रत लागी । परम कृपा सुप्रसन्नगुरामी ॥  
 जेहि जन पर ममता अहोछ । तेहि कहना करि कीन्ह न कोछ ॥  
 गणपहोरि गरीबनेवाज । सरल सबल साहिब रघुराज ॥  
 बुध वरनहि हरिजस अघ जानी । करहि पुनीत सुखल निज बानी ॥  
 तेहि बल में रघुपतिगुनमाया । कहिहौं नार रामपद माया ॥  
 मुनिह प्रथम हरिकोरति गार । तेहि मगु चलत सुगम मोहि भार ॥

दो० । अति अपार जे सरित पर जो रूप सेतु कराहि ।  
 चढि पिपीलिका परम लघु विमुक्त पारहि जाहि । १८ ॥

चौ० एहि प्रकार बल मनहि दृढाई । करिहौं रघुपतिकथा सुहाई ॥  
 व्यास आदि कविपुंगव नागा । जिन सादर हरिचरित बखाना ॥  
 चरनकमल बंदौं सब करे । पुरवज सकल मनोरथ मेरे ॥  
 कलि के कबिन करौं परनामा । जिन वरण रघुपतिगुनयामा ॥  
 जे प्राकृत कवि परम सधाने । भाषा जिन हरिचरित बखाने ॥  
 भये जे अहं जे होइहै आगे । प्रनवौं सबहिं कपट छल त्यागे ॥  
 होउ प्रसन्न देऊ बरदान । साधुममाज भजितसकमान ॥  
 जो प्रबंध बुध नहि आदरेहौं । सो सम वादि वालकवि करहौं ॥  
 कोरति भनिति भति भलि सोई । सुरसरिस सब कहि हित होई ॥  
 राममुकोरति भनित भदेसा । अघमंजस न स मोहि अदेसा ॥  
 तुम्हरी कृपा सुख भोउ मोरे । मिश्रनि सुहावनि पाठ पढोरे ॥  
 करज अनुपम अस जिय जानी । विमल जसहि अनुहरद सुबानी ॥

दो० । सरल कवित कोरति विमल सोइ आदरहिं सुजान ।  
 सहज वयर विसराइ रिपु जो भुनि करहि बखान ॥  
 सो न होइ तिन विमल मति मोहि मति बल अति थोर ।  
 करज कृपा हरिजस कहौं पुनि पुनि करउं निशोर ॥  
 कवि कोविद रघुवर चरित मानस मंजु मराल ।  
 बालविनय सुनि सुखि सुखि मो पर होइ कृपाख । १९ ॥

दो० । बन्दौं मनिपदकंज रामायन जिन निमंथौ ।  
 सखर सकोमल मंजु दोष रहित कृपन सहित ॥  
 बन्दौं चारिउ वेद भववारिधि ओहित हरिस ।  
 जिनहि न सपनेजुं खंद बरनत रघुपति विसद जस ॥  
 बन्दौं विधिपद रेनु भवसागर जिन कीन्ह यज्ञ ॥  
 संत सुधा सवि धेनु प्रगटे खल विष ब्रह्मनी । २ ॥

दो० । विबुध विप्र बुध मुख चरण बंदि कहौं कर ओरि ।  
 होइ प्रसन्न पुरवज सकल मंजु मनोरथ मोरि । २० ॥

चौ० । पुनि बन्दौं सारद सुरचरिता । अमल पुनीत मनोहर चरिता ॥



मञ्जन पाव पाप हर एका । कहत सुनत इक हर श्रविवेका  
 मुर पितु मातु महेस भवानी । प्रनवौ दीनबंधु दिनदानी  
 सेवक स्वामिसखा भिययो के । हित निरुपधि सब विधि तुलसी  
 कैलि विलोकि जगहित हर निरिजा । सावरमंथ जाल जिन सिरजा  
 अनमिल आखर अरध न जासु । प्रगट प्रभाव महेसप्रताप  
 सो महेस मो पर अनुकूला । करौ कथा मुदमंगलमूला  
 सुमिरि बिवा सिव पार पसाऊ । वरनौ रामचरित चितपाऊ  
 भनिति मोरि शिवरूपा विभातो । सविसमाज मिलि मगई सुरात  
 जो यह कथा सनेहसमेता । कहिहहिं सुनिहहिं समुझि सचेत  
 सोरहहिं रामचरणचमुरानी । कलिमलरहित सुमंगलभाषी

दो० । सपनेऊ सांचेऊ मोहि पर जो हरगौर पसाउ ।  
 तौ फुर होउ जो कहउं सब भाषा भनित प्रभाउ । २१ ॥

चौ० । बन्दौ अवधपुरी प्रति पावनि । सरजू सरि कलिकलुषनसावनि  
 प्रनवौ पुरनरनारि बहोरी । ममता जिन पर प्रभुहि न थोरी  
 सियनिदकअलशोष नसाये । लोक विप्रेक वगुइ बसाये  
 बंदौ कौमल्या दिशि प्राची । कोरति जासु सकल जग माची  
 प्रगटेउ जहं रघुपति ससि साहू । विलसुखद खलकमलतुषाहू  
 दसरथ राउ सहित सब रानी । सुदत सुमंगलमूरति खनी  
 करौ प्रनाम करम मन वागो । करइ कृपा सुत सेवक जानी  
 जिनहि विरचि बड भयउ विधाता । महिमाअवधि रामपितु पाता

धो० । बन्दौ अवधभूआल सत्य प्रेम जहि रामपद ।  
 विकुरत दोनदयाल प्रिय तन हनइव परिहरेउ । २ ॥

चौ० । प्रनवौ परिजनसहित विदेह । जाहि रामपद गूढ स  
 जोग भोग महं राखेउ गोई । राम विलोकत प्रगटेउ सोई  
 प्रनवौ प्रथम भरत के चरना । जासु नेम व्रत जाइ न वरना  
 रामचरण पंकज मन जाइ । सुअ मधुप इव तजेन पास  
 बन्दौ ललितन पद अलजाता । सीतल सुभग भक्त सुखदाता  
 रघुपतिकोरति विमल पताका । दंड समान भयौ जस जाका  
 मेघ सहस्रसीस अमकारन । जो अवतरेउ भूमिभयटारन  
 सदा सो सानकूल रज मो पर । कृपासिंधु सौमिचि गुनाकर  
 रिपुसूदनपद कमल नमामो । हर सुखल भरतअनुगामी  
 सहावीर बिनऊं हनुमाना । राम जासु जस आपु बखाना

सो० । बंदौ पवनकुमार खलवनपतक जान घन ।

जासु हृदय आगार बसई राम सरचापधर । ४ ॥

चौ० । कपिपति अख निषाचरराजा । अंगदादि जे कीसमाजा ॥

बन्दौ सब के वरन बहाये	। प्रथम बरीर राम जिस पाये	॥
रघुपतिवरन सदायक जेते	। खग मृग मर मर मरु मरु	॥
बन्दौ पदमरोज सब करे	। जे विन काम राम के चरे	॥
सुक मनकाहि काहि मुनि नारद	। जे मुनि बर विज्ञानविचारद	॥
मनजं सबहि भरनि धरि सीधा	। करउ सपाजन आनि मुनीया	॥
जनकसुता जनकननि जानकी	। अतिवच प्रिय कह्यनिधान की	॥
ताके युग पद कमल मनाजं	। जासु सपा निरमल मनि पाज	॥
पुनि मन बचन करम रघुनाथक	। चरन कसल बन्दौ सब साधक	॥
राजिवनधन धरे धन साधक	। भक्तविपतिभजन सुखदायक	॥

दो० । गिरा अर्थ जल बोधि सम कहियत भिक्षु न भिक्षु ।

बन्दौ सोतारामपद जिनहि परम प्रिय सिख । १९ ॥

चौ० । बन्दौ रामनाम रघुवर के	। हेतु कषाण भागु चितकर के	॥
विधिहरिहरमय वेदप्रान से	। अगुन अनूपम गुनिधायन से	॥
मसामंन जोइ जपत महेष्ट	। कासीमनिहेतु उपदेष्ट	॥
महिमा जान जान गैरराज	। प्रथम पुजियत नामप्रभाज	॥
जान आदि कवि नामप्रताप	। भयउ सुद्ध करि लखटा जाप	॥
सहम नाम सम मुनि सिवबानी	। अपि जे बोध सिवसंग भवानी	॥
हरषे हेतु हेरि हर ही को	। किछ भूषण तियभूषण तो को	॥
नामप्रभाउ जान सिव नीके	। कालकूटफल दोनू रमी के	॥

दो० । कर्षाच्छतु रघुपतिभगति तुलसी मालि ददाव ।

रामनाम वर वरन युग सावध भादौ मास । २० ॥

चौ० । आखर मधुर मनोहर दोऊ	। वरन बिलोचन जन जिस जोऊ	॥
सुमिरत सुखभ सुखद सब काह	। लोक लाल परको नियाह	॥
कहत सुनत सुमिरत सुठि हीके	। राम लखन सम प्रिय तुलसी के	॥
बरनत बरन प्रीति निगताती	। ब्रह्म जीव सम बहज संघाती	॥
नर नारायण हरिम सुभाता	। जगपालक विशेष जनघाता	॥
भक्ति सतिय कस करन विभूषन	। जगहित हेतु विमल विधुपूषन	॥
स्वाद तोष सम सुगति सुधा के	। कमठ सेष सम धर वसुधा के	॥
जनमन मंजु कंज मधुकर से	। जोइ जकोमति हरि हलधर से	॥

दो० । एक हच एक मुकुट मनि सब वरनमपर जोउ ।

तुलसी रघुवर नाम के वरन विराजत दोउ । २१ ॥

चौ० । समुष्ट मरख नाम अह नामो	। प्रीति परखर प्रभु अनुनामो	॥
नाम रूप दोउ ईस उपाधो	। अकच जनादि सुखामुष्टि बाधो	॥
को बड़ छोट कहत अपराधू	। मुनि गन भेद समुष्टि हैं बाधू	॥

देखिय रूप नामआधीना । रूपज्ञान नहि नामविहीना  
 रूप विशेष नाम विन जाने । करतलगत न परहि पहिचाने  
 समिरिय नाम रूप विन देखे । आवत हृदय मनेह विमेषे  
 नामरूपगत अकथ कहानी । समझत सुखद न परत बखानी  
 अगुन सगुन बिच नाम सुसाखी । उभय प्रबोधक चतुर दुभाखी

दो० । रामनाम मनि दीप धर जोह देखरीद्वार ।  
 तुलसी भीतर बाहिरौ जौ चाहमि उजियार ॥ १५ ॥

चौ० । नाम जोह जपि जागहि योगी । विरति विचार प्रपंचवियोगी  
 ब्रह्म पुखहि अनुभवहि अनूपा । अकथ अनामय नाम न रूपा  
 जाना चाहि गूढ़ गति जेऊ । नाम जोह जपि जानहि तेऊ  
 बाधक नाम अपहि लय लाये । होहि सिद्ध अनिमादिरूपाये  
 जपहि नाम जन आरत भारी । मिटहि कुसंकट होहि सुखारी  
 रामभक्त जग चरि प्रकारा । सुकृती चरित अनघ उदारा  
 चहुँ चतुरन कह नाम अधारा । ज्ञानी प्रभुहि विमेष पयारा  
 चहुँ युग चहुँ युति नामप्रभाऊ । कलि विषय नहि आन उपाऊ

दो० । सकल कामनाहीन जे रामस्मरिष लोन ।  
 नाम सुप्रेमपियुषद्वद तिनहुँ किय मन मीन ॥ १६ ॥

चौ० । अगुन सगुन दोउ ब्रह्मरूपा । अकथ अगाध अनादि अनूपा  
 मोर मत बड़ नाम दुइते । किय जेहि युगनिज बसनिज व  
 प्रौढ़ सुजन जन जानहि जन को । कहउं प्रतीति प्रीति हृदिजनकी  
 एक दाहगत देखिय एकू । पावक युग सम ब्रह्मविवेकू  
 उभय अमम युग सुगम नाम ते । कहउं नाम बड़ ब्रह्म राम ते  
 व्यापक एक ब्रह्म अविनाशी । मत चेतन घन आनंदरासी  
 अस प्रभु हृदय अकृत अविकारी । सकल जीव जगदीन दुखारी  
 नामनिरूपन नामजनन ते । सोउ प्रगटैत जिमि मोख रतन ते

दो० । निरगुन ते रहि भांति बड़ नामप्रभाव अपार ।  
 कहउं नाम बड़ रामते निज विचार अनुसार ॥ १७ ॥

चौ० । राम भक्तहित नरतनु धारी । सहि संकट किय साधु सुखारी  
 नाम सुप्रेम जपत अनयासा । भक्त होहि दुदमं कवासा  
 राम एक तापसतिथ तारी । नाम कोटि खल कुमति सुधारी  
 अविहित राम सुकंतु सुता की । अहित सेन सुत कीन्ह विबाकी  
 अहित ह व दुख दाघ दुरसा । हंसर नाम जिमि रवि निशि नर  
 भजेउ राम आपु भवचाप । भवमदभजन नामप्रताप  
 दुइकवन प्रभु कोन्ह सुहावन । जनमन अमित नाम किय पावन  
 निधर निकर देखीउ रघुनंदन । नाम सकल कलिकालनिर्दहन

दो० । मेकरी मोक्ष मुनेकनि सुगति दोन रघुनाथ ।

नाम सुधारे अमित खल बहविरित गुनगात्र । १८ ॥

चौ० । राम सुकठ किमोचन दोख । राखे भरन जान सब कोख ॥

नाम अनेक गरीब निवाजे । लोक वेद बर विरद मिराजे ॥

राम भाङ्कपिकटक बटोरा । सेतुहेतु खम कीन्ह न थोरा ॥

नाम तंत भवविधु मखाही । करज निवार मजन मन मारी ॥

राम सकुल रन रावन मारा । शीघ्र सहित निज पुर पगु धारा ॥

राजा राम अवध रजधानी । गावत गुन सुर मुनि बर बानी ॥

मेवक सुमिरत नाम सप्रोती । बिनु खम प्रबल मोह दलजोती ॥

फिरत सबह मगन सुख अपने । नामप्रसाद सोच नहिं सपने ॥

दो० । ब्रह्म राम ते नाम बड़ बरदायक बरदानि ।

रामचरित सत कोटि महु लिय महेस जिय जानि । १८ ॥

चौ० । नामप्रसाद संभु अविनाशी । साज अमंगल मंगलराशी ॥

सुक बनकादि मिड्ड मुनि योगी । नाम प्रसाद ब्रह्मखभोगी ॥

नारद जानेउ नामप्रसापू । जग प्रिय हरि हर हरिप्रिय आपू ॥

नाम जपत प्रभु कीन्ह प्रमादू । भक्तभिरामनि भै पहलादू ॥

भव मगलानि जपउ हरिनामू । पायेउ अवल अनूपम ठामू ॥

मुमिरि पवनमत पावहु नाम । अपने बस करि राखेउ रामू ॥

अगर अजामिल गज गनिकाऊ । भए मुक्त हरिनाम प्रभाऊ ॥

कहउ कहाँ लुगि नाम बडाई । राम न सकाई नामगुन गाई ॥

दो० । रामनाम को कल्पतरु कलिकपाननिवास ।

जो सुमिरत भये भागते तुलसी तुलसीदास । २० ॥

चौ० । चहुं युगतीनि काल तिहुं लोका । भए नाम अपि जीव विशोका ॥

भेदपुगनमंतमत एह । सकल धर्मफल रामसंगह ॥

आन प्रथम युग मख युग हूजे । हापर परितोषत प्रभु पूजे ॥

कलि केवल मलमूल मलोना । पापघोनिधि अनमन मीना ॥

नाम कामतह काल करासा । सुमिरत समन सकल जगसा ॥

रामनाम कलि अभिमतदाता । हित परलोक लोकपितृमाता ॥

नहिं कलि कर्म न भक्ति बिषेकु । रामनाम अवलंबन एकु ॥

कालमेमि कलिकपटनिधान । नाम सुमति समरथ रघुमान ॥

दो० । रामनाम नरकेमरी कसककमिपु कलिकाल ।

जापक जन प्रह्लाद जिमि धारहि दक्षि सुरपाल । २१ ॥

चौ० । भाव बुभाव अवल सासवहु । नाम जपन मंगल द्विधि दसहु ॥

सुमिरि यो नाम रामगुनगाथ । करौ नार रघुनाथहि माथा ॥

ओरि बुधारहि यो सब भांती । जसु कृपा नहिं छल अवांती ॥

राम सुखानि कुशेवक मो है । निज दिशि देखि दयानिधि पौ  
 लोकोजं वेद मुखादेव रीती । विनय सुमत पहिचानत मीसी  
 मनी गरीव धामनर नागर । धंडित मूढ़ मलीन खजामर  
 मुकवि मुकवि निज मतिअनुहारी । दृष्टहि सराहत सब नर नारी  
 बाधु सुभान सुखोख नपाखा । ईस अंशभव परमैरुपाखा  
 मुनि मनमानहिं सबहिं सुधानी । भगित भक्तिमतिगति पहिचानी  
 यह प्राहृत महिपासुमुभाऊ । जानि सिरोमनि कोसलराऊ  
 रोहत राम वनेहनि दोते । को जग मंद मखिनमति मो ते

दो० । सठ सेवक की प्रीति रहि र खिहहिं राम छपासु ।  
 उपल किए जलजान ओहि सचिव मुमति कपि भासु । ३९ ॥  
 हौं ऊं कहावत सब कहत राम सहत उपहास ।  
 बाहेव सीतानाथ मे सेवक तुलसी दास । ४० ॥

चौ० । अति बड़ि मोरि टिठारि खोरी । मुनि अघ नरक ऊं नाक सिकोरि  
 समझि बहमि मोहि अपहर अपने । सो मुधि राम कहेन्ह नहिं सपने  
 मुनि अवलोकि मुसित चालु चहो । भक्ति मोरि मति खामि सराही  
 कहत नसाइ होर अति नोको । रोहत राम जानि जन जी को  
 रहत न प्रभुचित चूक किये की । करत सरति सैकार हिये की  
 ओहि अघ बधेउ बाध जिमि बाखी । फिरि मुकट मोड़ कोन्ह कुचाली  
 ओइ करतुति विभोषन केरो । रुपने ऊं सो न राम छिद्यहरी  
 ते भरतहि भेंटत सममाने । राजरुभा रघुबोर बखाने

दो० । प्रभु तहतार कपि डार पर ते किय आपु समान ।  
 तुलसी कहं न राम से साहेव सोलनिधान । ४१ ॥  
 रामनिकारि रावरो है सबही को नोक ।  
 ओ यह सांचो है सदा तौ मोको तुलसी क । ४२ ॥  
 रहिं बिधि निज गुन दोष कहिं सबहिं बज्रि सिर नार ।  
 वरनौ रघुवर बिसद जस मुनि कलिकलुष नसाइ । ४३ ॥

चौ० । पाण्डवल्का ओ कथा मुहारे । भरदाज मुनिवरहिं सुनारे  
 कहिहो भोर संबाद बखानी । मुनऊ सकल सज्जन मुख मानी  
 संभु कोन्ह यह चरित मलावा । बज्रि छाप करि समहिं सुनावा  
 सो सब काकभुंदिहि होना । रामभक्ति अधिकारी चीन्हा  
 तेहि वन पाण्डवल्का मुनि पावा । तिनह पुनि भरदाज प्रति गावा  
 ते खोता बकता सब बोला । समदरनी जानहिं हरि लोला  
 जानहिं तीनि काक निज जाना । करतखगत चाकलक समाना  
 खोरो के हरि भक्तमुजाना । कहहिं मुनिहं समझहिं बिधि गा

दो० । मे पुनि निज मुख मय मयी कथा सु सुकरखी ।

समुद्र मयी मय सागरवन तव चति रहैउ चखै । १०

साता सकता ज्ञाननिधि कथा राम की गढ़

किमि ममुयै यह जीव मय ककिमरुपरित बिमुख । ११

चौ० । तदपि कही गुह करहि कारा । समधि पगी कहु मनि चवकारा ॥  
भावाबंध करव मै मोई । मोरे मय प्रबोध जेहि धीरे ॥

अथ कहू बधि बिबेक बल मोरे । तन कहिहौ प्रिय हरि कं प्रेरे ॥

निज संदेह मोह भ्रम हरनो । कागै कथा भवसरिता तरनो ॥

बुध विखाम सकलजनरंजनि । रामकथा कलि क्लृपविभंजनि ॥

रामकथा कलिपक्षग भरनो । पुनि बिबेक पावक कहू हरनो ॥

रामकथा कलिकामद नारै । सुजन मजीवन मूरि सुहार्दै ॥

मोह वसुधा तल सुधातरंगनि । भवभंजनि भ्रमभंजभुचंगनि ॥

असुरमेनयम करकनि कदिनि । बाधुविबुधकुलहित गिरिगंधिनि ॥

संतसमाजपयोधि रमा सी । विस्वभारधर अक्षय हमा सी ॥

यमगनमहमहि जग धमुना सी । जीवनमुक्तिहेतु जग कासी ॥

रामहि प्रिय पावनि तुलसी सी । तुलसिदामसित प्रिय जलसी सी ॥

मिवप्रिय मेकल बैलसुता सी । सकल सिद्धिप्रद संपतिरासी ॥

सदगुन सुरगन अवधरिति सी । रववरभक्तिप्रेमपरिमति सी ॥

दो० । रामकथा मंदारिनी छिचकूट चित चाह ।

तुलसी सभग सनह वन सियरघुगौरविहार । १२

चौ० । रामचरित चिंतामनि चारु । संतममति तिथ सभग भिंगारु ॥

जगमंगल गुनयाम राम के । होनि मुक्ति धन धर्म धाम के ॥

सदनह ज्ञान विराग योग के । बिबुधवैद्य भव भीम रोग के ॥

जननि जनक सियरामप्रेम के । बीज सकल ज्ञत धर्म नैम के ॥

समन पाप संताप सोक के । प्रिय पालक परलोक लोक के ॥

सविव मुभट भूपति विचार के । कुंभज कोभउदधि अप र के ॥

काम कोह कलिमल करिगन के । कोहरिमावक जलमगवन के ॥

अतिथि पूज्य प्रियतम पुरारि के । कामद धन दारिद दवारि के ॥

मंच महामनि विषयव्यास के । मेटत कठिन कुचक भास के ॥

हरन मोहनम दिनकरकौर मे । सेवक सक्षिपाल जलधर मे ॥

अभिमतदानि देवतवर से । सेवत मुकुंभ सुखद हरि हर से ॥

सुकवि सद्गुनभ मन उदुमल से । रामभक्त जनजीवन धन से ॥

सकल मुक्तफल भूरि भोग से । जगहित निरुपधि बाधु छोन से ॥

सेवक मनमानय मराध से । पावन गंगतरंगमाध से ॥

दो० । सुपव कुतक कुचालि कलि कपट दंभ पावंच ।

दहन रामगुणधाम इति इधन सनत् प्रबंध । ४० ॥

रामचरित रामकंद हरिष मुखद सब काज ।

सज्जन कुमद चकोर चित हित त्रिसय सब काज । ४१ ॥

चौ० । कीच प्रअ जेहि भांति भवानी । जेहि विधि संकर कछा बखानी  
 सो सब हेतु कहव मै गाई । कथाप्रबंध विचित्र बनावी  
 जिन यह कथा सुनो नहिं छोई । जनि आचरज करि मुनि छोई  
 कथा अलौकिक सुनहिं जे जानी । नहिं आचरज करहिं अस जानी  
 रामकथा की मिति जग नाहीं । अस प्रतीति तिन के मन माहीं  
 नाना भांति रामचवनारा । रामायण सतकोटि अपारा  
 कल्पभेद हरिचरित सुहाये । भांति अनेक सुनीसन गये  
 करिय न संसय अस उर आनी । सुनिय कथा सादर रति मानी

दो० । राम अनंत अनंत गुण अमित कथाविस्तार ।  
 सुनि आचरज मानिहहिं जिन के विमल बिचार । ४२ ॥

चौ० । रहि विधि भव संसय करि दूरी । सिर धरि गुरुपदपंकजधूरी  
 पुनि सबही बिनवौं कर ओरी । करत कथा जेहि लाग न खोरी  
 सादर सिवहिं माइ अस माथा । बरनौं बिसद रामगुणगाथा  
 संवत मोरह सै इकतीस । करौं कथा हरिपद धरि सीसा  
 नौमौ भौमवार मधुमाधा । अवधपूरी यह चरित प्रकासा  
 जेहि दिन रामजन्म अति गावहिं । तीरथ सकल तहां धलि आवहिं  
 अमर नाग खग नर मुनि देवा । आय करहिं रघुनायकमेवा  
 जन्ममहोत्सव रचहिं मजाना । करहिं रामकलकीरति गाना

दो० । मज्जहिं सज्जनहृन्द वज्र पावन सरजूनीर ।  
 जपहिं राम धरि ध्यान उर सुंदर खाम सरीर । ४३ ॥

चौ० । दूरस परम सज्जन अह पांना । हरै पाप कह बेद पुराना  
 नदी पुनोत अमित महिमा अति । कहि न सकें भारदा विमलमति  
 रामधामदा पुरो मुहावनि । लोक समस्त विदित जगपावनि  
 चारि खानि जग जीव अपारा । अवध तजेतनु नहिं संभारा  
 सब विधि पुरो मनोहर जानी । सकल सिद्धिप्रद मंगलखानी  
 विमल कथा कर कोन्ह अरभा । सुनत नगाहिं काम मद दंभा  
 रामचरितमानस यह नामा । सुनत खवन पादय बिसामा  
 जब करि विषय जगल वन जरहीं । सीईं सुखो जे रहिं सर परहीं  
 रामचरितमानस सुविधावन । बिरसेव संभ मुहावन पावन  
 विविध दोष दुख दागिद दावन । कलि इच्छालि कलिकलुप नवान  
 रहिं मनेस निज खानस राखा । पाद समसब सिवावन भाखा

ताते रामचरितमानस वर । धरेष मान विषय हेरि परवि वर ॥  
 कही कथा सोद सुखद सुहारे । सादर सुगुण सुजन मन कारी ॥  
 दो० । जग मानस जेहि विधि भवौ जग प्रसन्न जेहि हेतु ।  
 अथ सोद कही प्रसंग सब सुनिर उमा हृवकेतु ॥ ४४ ॥

चौ० । संभषाद सुमति द्विय जलसी । रामचरितमानस कवि तुलसी ॥  
 करत मनोहर मति अनुहारो । सुजन सुचित सुनि केतु सुधारी ॥  
 सुमति भुमि धल हृदय अगाधू । वेद पुराण उदधि घन बाधू ॥  
 बरवहि रामसयस वर वारी । मधुर मनोहर मंगलकारी ॥  
 लोला मगन जो कहहि बखानी । सोद सखता करै मरुवाणी ॥  
 प्रेम भक्ति जो बरनि न जाई । सोद मधुरता सुसोतकताई ॥  
 सो जल सहित मालि हित होई । रामभक्तजनजीवन होई ॥  
 मधा महिगत सो जल पावन । सिमिटि फवेनमगु पसेउ मुहावन ॥  
 भरेउ मुमानस सिधिल धिराना । सुखद सोत हवि चारि चिराना ॥

दो० । सुठि सुंदर सुबाद वर विरचेउ बुद्धि विचारि ।  
 तेर यहि पावन सुभग सर घाट मनोहर चारि ॥ ४५ ॥

चौ० । सप्त प्रबंध सुभग सोपाना । ज्ञाननयन निरकृत मन माना ॥  
 रघुपतिमहिमा अगुन अबाधा । बरनव सोद वर वारि अगाधा ॥  
 रामसोजयस मलिन संघा सम । उपमा वीचि बिलास मगोरम ॥  
 पुरदनि मघन चारु चौपाई । युक्ति मंजु मनि सोप सुहाई ॥  
 कूद कोरठा सुन्दर दोहा । सोद बज्ज रंग कमल कुल दोहा ॥  
 अरथ अनूप सुभाव सुभाषा । सोद पराग मकरंद सुभाषा ॥  
 सहित पुंज मंजुल अलिमाला । ज्ञान विराग विचार मराळा ॥  
 धुनि अवरव कवितगन जाती । मीन मनोहर ते बज्ज भांती ॥  
 अर्थ धर्म कामादिक चारी । कहव ज्ञान विज्ञान विचारो ॥  
 नव रस जप तप योग विरागा । ते सब जलपर चारु तडागा ॥  
 मुहुती बाधु नाम मनमाना । ते विचित्र जलविहंग समाना ॥  
 संतसभा चहुँ दिशि अंबरई । कहुँ चतुर्दशत सम गारि ॥  
 भक्तिनिरूपन विविध विधाना । कृपा दया द्रुम कृत विताना ॥  
 मंचम नियम फल फल ज्ञाना । हरिपदरति रस वेद बखाना ॥  
 औरौ कथा अनेक प्रसंगा । तेर सुकर्षक बज्ज बरन दिहंगा ॥

दो० । पुष्टपटाटिका वाग वन सुख सविहंग विहाव ।  
 माखो सुमन मनेह जल मीन कोचन चार ॥ ४६ ॥

चौ० । जेग वहि चह चरित समरे । ते एहि ताल चतुर रसवारे ॥  
 सदा सुमहि सादर नर नारी । तेह सुर वर मानसार्थधकारी ॥



अति सखे जे विषयी सक कोना । इहिं घर निकट न साहिं अभ  
 सबक भेक सिवार समाना । इहां न विषयकथा रस नाना  
 तेहि कारण आयत हिच छवि । कामी काक बलाक विचारे  
 आवत इहि घर अति कठिनाई । रामरूपा विनु आइ न आई  
 कठिन कुसंग कुपंथ कराला । निह के बचन व्यास हरि ब्यास  
 गृहकारज नाजा जंजाला । तेंद अति दुर्गम हैल विद्याला  
 बन बज्र विषय मोह मद मागा । नदो कुतर्क भयंकर नागा

दो० । जे सदासंख रहित नहिं संतन कर साथ ।  
 तिन कहं मानस अगम अति जिनहिं न प्रियरचुनाथ । ४७ ॥

चौ० । जो करि कह जाइ पुनि कोई । जातहि नोद जुड़ाई होई  
 जड़ता जाइ विषम घर सागा । गयज्ज न मज्जन पाव अभागा  
 करि न जाय सर मज्जन पाना । फिरि आवै समेत अभिमाना  
 जो बहोरि कोउ पछन आवा । सर्गिन्दा करि ताहि सुनावा  
 सकल विघ्न व्यापहिं नहिं तेही । रामरूपा करि चितवहिं जेही  
 सोइ सादर सर मज्जन करहीं । महा धोर चर्याप न जरहीं  
 ते नर यह घर तजहिं न काज । जिनके रामचरित भल भाज  
 जो नहाइ यह इहि घर भाई । सो मतसंग करौ मन लाई  
 अस मानस मानसचखु पाहो । भइ कविवद्धि विमल अवगाह  
 बख्यौ हृदय आनंद उहाळ । उमगेउ प्रेम प्रमोद प्रवाळ  
 सलो सभग कविता सरिता सो । राम विमल जस जल भरि ता  
 सरज नाम सुमंगलमूला । लोक वेद मत मंजुल कूला  
 नदी पुगोत सुमानमदिनि । कलिमल तटतमूलनिकदिनि

दो० । सोता त्रिविध समाज पर राम नगर दुज्ज कूल ।  
 संतसभा अनाम अवध सकल सुमंगलमूल । ४८ ॥

चौ० । रामभक्ति मुरसरितहिं आई । मिली मुकीरति सरज सुहाई  
 सानुज रामभमरजस पवन । मिलेउ महा नद सोन सुहावन  
 युग बिच भक्ति देवधुनिभारा । सोहति रहित सुवर्णि विचारा  
 विविध ताप चासक त्रिमूहानो । रामरूप सिंधु समुहानो  
 मानसमूल मिली मुरसरिहीं । सुगत मजनमन पावनकरिहीं  
 बिच बिच कथा विविच विभागा । जनु सरितोर तीर बन बागा  
 समामहेस बिबाह वराती । ते जलसर अगमित बज्र भांती  
 रघुवरजसमनंदवधाई । भंवर तरंग मनेहरताई

दो० । बालचरित बज्र बंधु के बनज निपुल बज्र रंग ।  
 यथ रामो परिजन सुकृत मधुकर बारिबिहंग । ४९ ॥

चौ० । सोबलबंवरकथा सुहाई । सरित सुहावनि सो छवि छाई

नदी नाव पूर पथ चनेका	कष्ट सुख धार चरित्रका	॥
पुनि अनुभव परसर मोर	पथिकमाज सोर धरि मोर	॥
घोर धार मृगनाधारिमायो	घाट सुबंध राम दर बायो	॥
शानुन रामविवाहउकाह	यो सुभ उमन सुखद सब काह	॥
कहत सुनत हरषहि प्रसकाशी	ते सुहृती जन मरित बहाशी	॥
रामतिलकहित मंगल बाजा	पर्यटोग जनु जुरेउ बसाजा	॥
काहि सुमति कैको कोरी	परी जासु प्रक विपति चनेरी	॥

दो० । समन अमित उतपात सब भरतचरित अप धाम ।

कलिप्रघ खल अवगुनकथन ते जलमल बक काग । १० ॥

चौ० । कोरति सरित कर्ह छतु करी	समय सुहावन पार्वणि भूरी	॥
हिम हिमवैलसुताधिव्याल	मिधिर सुखद भुजगावैल	॥
बरनब रामविवाह समाज	यो मुदमंगलमय चतुराज	॥
योषम दुमह रामवनगमन	पथकथा खर आतष पवन	॥
वर्षा घोर निमाचररगुरी	सुरतुलसालि सुमंगलकारी	॥
रामराजसुख विनय बकाई	विषद सुखद मोर सरद सुहाई	॥
सतीशरोमनि सियबनगाथा	छोद गुन नमल ननुपम पाथा	॥
भरतसुभाउ सुधीतस्तुति	सदा एक रस बरनि न जाई	॥

दो० । आलोकनि कोलनि मिलनि प्रीति परसर दाम ।

भायप भलि चरु बंधु की जलमाधुरी सुवास । ११ ॥

चौ० । आरति विनय दीनता मोरी	लवता ललित सुमारि न खोरी	॥
अद्भुत सल्लिख सुनत गुनकारी	आस पियास मनोमलहारो	॥
राम सुप्रेमहिं पोषत पात्री	हरत सकल कलिकलधनानी	॥
भवलमधोषक तोषक तोषा	समन दुरित दुख दारिद दोषा	॥
काम कोह मद मोह नसावन	विमल विवेक विराग बढावन	॥
सादर मञ्जन पान किये ते	मिटहिं पाप परिताप हिये ते	॥
जिन यहि बारि न मानस धोये	ते कायर कलिकाल बिगोये	॥
दृष्टि निरखि रचिकरभवारी	फिरहिं मृगा जिमि जीव दुखारी	॥

दो० । मतिअनुहारि सुवारि बर गुनगन मन अन्वहार ।

सुमिरि भवानी संकरहिं कह कवि कथा सुहार । १२ ॥

भरदाज जिमि प्रसन्न किय याज्ञवल्क्य मुनि पाय ।

प्रथम मन्त्र संबाद भोद कहिहो हेतु बुझाय । १३ ॥

अब रघुपतिपद पैकंदहि हिच धरि पाय प्रगाढ़ ।

कहो यंगल मुनिवर्य कर मिलन सुभग संबाद । १४ ॥

चौ० । भरदाजमुनि कवि प्रथाम । जिमि रामपद प्रति अनुरागा ॥

तावत् सम दम दया निधाना । परमार सवय परम सुकान्ता  
 मांथ मकरगत रवि जब होई । तीर घपतिहिं आव रुम कोरे  
 देव दनुज किंचर नरखेजी । सादर मज्जहिं सकल किवेजी  
 पूजहिं माधवपद जलजाता । पराधिपत्य बट हर्षितमाता  
 भरद्वाज आसम अति पावन । परम रम्य मुनिवरमनभावन  
 तथा होइ मुनिचषयसमाजा । जाहिं ले मज्जन तीरधराजा  
 मज्जहिं प्रात समेत उडाहा । कहहिं परस्पर हरिगुनमाहा

दो० । ब्रह्मनिरूपन धर्मविधि वरनहिं तत्त्वविभाग ।  
 कहहिं भक्ति भगवंत की मंयुत ज्ञान विराग । ५५ ॥

चौ० । इहिं प्रकार भरि मकर महाधी । पुनि सम निज निज आसम ज  
 प्रति संयत अस होइ अगन्डा । मकर मज्जि गवनहिं मुनिहृन्दा  
 एक बार भरि मकर नहाय । सब मुनीस आसम निषि धाये  
 बाजवल्लभ मुनि परमबिबेकी । भरद्वाज राखेउ पद टेकी  
 सादर चरन सरोज पखारे । अति पुनीत अस्मन बैठारे  
 करि पूजा मुनि रुजस दखानी । सोखे अति पुनीत मृदुबानी  
 नाथ एक संसय बड मोरे । करतल बेदतत्त्व सब तोरे  
 कहत मोहि सागत भय साजा । जो न कहैं बड होइ अकाजा

दो० । संत कहहिं अस नोति प्रभु स्तुति पुरान जो गात्र ।  
 होइ न विमल बिबेक उर गुह मन किये दुराव । ५६ ॥

चौ० । अस विचारि प्रगटैं निज मोह । हरहु नाथ करि जन पर कोह  
 रामनाम कर अमित प्रभावा । संत पुरान उपनिषद गा  
 संतत जपत संभु अविनाशी । सिव भगवान ज्ञान राखी  
 आकर चारि जीव जग अहहीं । कासी मरत परम पद लहहीं  
 सोपि राममहिमा मुनिराया । सिव उपदेस करत करि दाया  
 राम कवन प्रभुपूजैं तोहीं । कहहु सुप्राद लपानिधि मोहीं  
 एक राम अवधेसकुमारा । तिन कर चरित बिदित संसारा  
 नारि विरह दुख लहैउ अपारा । भएउ रोष रज रावन मारा

दो० । प्रभु होइ राम कि अपर कोउ जाहि जपत विपुरारि ।  
 सत्यधाम सर्वज्ञ तुम कहहु विवेक बिसरि । ५७ ॥

चौ० । जैसे मिटै मोर भ्रम भारी । कहहु सो कथा नाथ बिसारी  
 यज्ञवल्लभ सोखे मनुष्यारि । तुमहिं बिदित रघुपतिप्रभुनारि  
 रामभक्त तुम मन क्रम बानी । चतुराई तुम्हारि मैं जानी  
 चरहु सुनै रामगुन गूढा । कोन्हैउ प्रह्व मनजं अति मूढा  
 प्रात समेत सादर मन सारि । कहत राम की कथा सारि

- महा मोक्षमहिम्न विचारत । रामकथाकथितो वराहा ॥  
 रामकथाविचित्रत वसन्त । वसंत वसन्त करहि मतिवारी ॥  
 ऐश्वर्य वसन्त कीच भवानी । महादेव तव कथा वसन्तानी ॥
- दो० । कही सो मतिवारी चर उमावधुवादा ।  
 मतिवसमय केहि हेतु जेहि सुनि मुनि मिटहि विषादपदा ॥
- चौ० । एक बार नेता पुन माहीं । संभु गये कुभज छवि पाहीं ॥  
 वसन्ततो जगजननि भवानी । पुत्रे अपि पखिलेदर जानी ॥  
 रामकथा मुनिवर्ष वसन्तानी । पुनो महेस परम दुख माणी ॥  
 अपि पूजा हरिभक्ति सुखाई । कही संभु अधिकारी पाई ॥  
 कहत सुनत रघुपतिगुणगाथा । कहु दिन तहां रहै गिरिनाथा ॥  
 मुनि सन बिदा मांनि त्रिपुरारी । चले भवन संग दण्डकुमारी ॥  
 तेहि अवसर भंजन महिभारा । हरि रघुवंस लीन अवतारा ॥  
 पितावचन तजि राजू उदासी । दंडकवन बिचरत अविनासी ॥
- दो० । हृदय विचारत जात हर केहि बिधि दरसन होइ ।  
 गुन रूप अक्षरेउ प्रभु गये जान सब कोइ । ५८ ॥
- सो० । मंकरउर अति होभ सती न जानहि मर्म कोइ ।  
 तुलसी दरसन होभ मन बुर लोचन साक्षी । ५९ ॥
- चौ० । रावनमरन मनुजकर राचा । प्रभुविधिवचन कीन चह सांसा ॥  
 जौ नहिं जाउ रहै पकतावा । करत विचार न बनत बनावा ॥  
 इहि विधि भये सोच बस ईसा । ताही समय जाइ दखीसा ॥  
 सोन्ह नीच मागीचहि संग । भयेउ तुरत होइ दपट कुरंगा ॥  
 करि कलमूढ हरी बैदेही । प्रभुप्रताप उर बिदित न तेही ॥  
 मृग बधि बंधु सहित हरि आये । आसुम देखि नयन जल काथे ॥  
 विरहविकल नर हव रघुराई । खोजत विपिन फिरत दोउ भाई ॥  
 कबहुं खोग बिगोग न जाके । देखा प्रगट बिरह दुख ताके ॥
- दो० । अति विचित्र रघुपतिचरित जानहि परम सुजान ।  
 जे मतिमंद विमोहबस हृदय धरहिं कहु आन । ६० ॥
- चौ० । संभु समय तेहि रामहिं देषा । उपजाइय अति हर्ष निषेधा ॥  
 भरि लोचन हवि सिंधु निहारी । कुशमय जानि न कीन्ह चिन्तारी ॥  
 जयसचिदानंद जगपावन । अस कहि चलेउ मनीजनसावन ॥  
 चले जात सिव सतीसमेता । पुनि पुनि पुकड़ित कमानिकेता ॥  
 सती सो दया संभु की देषी । उर उपजा मंदेह निषेधी ॥  
 संकर जगतबंध जगदीसा । मुर मर मुनि सब नावत सीसा ॥

- तिन नपसुतहिं कोन्ह परनामा । कहि सचिदानंद परनामा ।  
 भये मगन कवि तासु विलोकी । अजहं प्रीति उर रहति न री ।
- दो० । ब्रह्म जो व्यापक बिरज अज अकल अनोह अमोह ।  
 सो कि देह धरि होइ मर जाहि न जानत वेद । ६१ ॥
- चौ० । बिश्व जो सुरहित नरतनुधारी । सोउ सर्वज्ञ यथा त्रिपुरानी ।  
 खोजत सो कि अज्ञ इव नारी । ज्ञानधाम खोजति असुरानी ।  
 संभुगिरा पुनिमृषा न होई । मिव सर्वज्ञ जानत कोई ।  
 अम संसय मन भयउ अपारा । होइ न हृदय मोधप्रचारा ।  
 यद्यपि प्रगट न कहेउ भवानी । हर अंतरजामी सब जानो ।  
 मुनज्ज सती तव नारिसुभाज । संसय अस न धरिय उर काउ ।  
 जासु कथा कुम्भज अक्षि नाई । भक्ति जासु में मुनिहिं सुनाई ।  
 सोइ मम दृष्ट देव रवबीरा । सेवत जाहि सदा मुनि धीरा ।
- छं० । मुनि धीर योगी मित्र संतत बिसल मन जेहि ध्यावहीं ।  
 कहि नेति निगम पुरान आगम जासु कीरति गावहीं ॥  
 सोइ राम व्यापक ब्रह्म भुवननिकायपति मायाधनी ।  
 अवतरेउ अपने भक्तहित निजतन मित रवकुलमनी । ६२ ॥
- मो० । साग न उर उपदेस यदपि कहेउ सिव दार बड्ड ।  
 बोले बिहसि महेस हरि मायाबल जानि जिय । ६३ ॥
- चौ० । जो तुन्हरे मन अति संदेह । तो कि न जाइ परोक्षा लेह ।  
 तब लगि बैठि रहौ बटकाहीं । जब लभितुम ऐहज्ज मोहि प ।  
 जेमे जाइ सोइ भ्रम भारी । करज्ज सो जतन बिबेक बिचारी ।  
 चली सती शिव आचसु पारै । करहिं बिचार करौ का मारै ।  
 उहाँ संभु अस मम अनुमान । देखसुता कहि नाहिं कल्याण ।  
 मोरेज्ज कहे न संसय जाहीं । बिधि बिपरीत भलाई नाहीं ।  
 होइहि सोइ जो राम रवि राखा । को करि तर्क बहावइ साखा ।  
 अम कहि लगे जपन हरिनामा । गई सती जहं प्रभु दुखधामा ।
- दो० । पुनि पुनि हृदय बिचार करि धरि सीता कर रूप ।  
 आगे होइ चली पंथ तेहि जेहि आवत सुरभूप । ६४ ॥
- चौ० । लक्ष्मिन दीख उमा हंतेवेधा । चकित हृदय भ्रम भयउ बिसे ।  
 कहि न सकत ककु अति गंभोरा । प्रभुप्रभाव जानत कतिधीरा ।  
 सतीकपट जनेउ सुरखामी । समदरसी सब अन्तरजामी ।  
 सुमिरत जाहि मिटै अज्ञाना । सोइ सर्वज्ञ राम भगवाना ।  
 सबी कोन्ह चह बहउ दुराज । देखज नारिसुभावप्रभाज ।

- जोनि पाति प्रभु कीन्ह प्रणाम । पिता समेत कीन्ह निज नाम ॥  
 करेउ बहीरि कहाँ ह्वयेछे । बिपिन चकेलि फिरछे केहि पछे ॥
- १० । रामबचन सुहु मूढ सुनि उपजा अनि संकोच ।  
 सती सतीत महेस पद सती चदय बह कोच । ६३ ॥
- १० । मैं संकर कर कहा न साधा । निज चहान राम पद आधा ॥  
 जाद उतर अब देखौ काहा । उर उपजा अति दाहन दाहा ॥  
 जहना राम सती दुख पावा । निज प्रभाव कहु प्रमटि जनावा ॥  
 सती दोख कौतुक मग जावा । आगे राम सहित सिध भावा ॥  
 फिरि चितवा पाछे प्रभु देवा । सहित बंधु सिध सुंदर बेवा ॥  
 जह चितवति तह प्रभु आसीना । सेवहि मिदु मुनीस प्रवीना ॥  
 देखे सिव विधि बिबु अनेका । अमित प्रभाव एक तँ एका ॥  
 बंदत चरन करत प्रभुसेवा । विविधबेध देखे सब देवा ॥
- १० । सचो बिधानो रदिरा देखो अमित अनूप ।  
 जेहि जेहि बेध अजादि सुर तेहि तेहि तन अनुरूप । ६४ ॥
- १० । देखे अहं तहं रघुपति जेते । सक्तिन सहित सकल सुर तेते ॥  
 जीव सगसर जे संमारा । देखे सकल अनेक प्रकाश ॥  
 पूजहि प्रभुहि देव बड्ढ बेधा । रामरूप दूबर नहिं देवा ॥  
 अवलोकै रघुपति बड्ढतेरे । सीता सहित सुबेध अनेरे ॥  
 सोइ रघुवर सोइ लखिमन सीता । देखि सती अति भयो सतीता ॥  
 हृदय कंप तन सुधि कहु नाहीं । नयन मूँछि देखी अनु माहीं ॥  
 बड्ढरि बिलोकैउ नयन उबारी । कहु न दोख तहं द' छलमाही ॥  
 पुनि पुनि नाइ रामपद सीधा । सलो तहाँ जई रहि गिरिया ॥
- १० । गयो समीप महेस तब हंमि पछी कुललात ।  
 कीन्ह परीक्षा कवन विधि कहछ सत्य सब बात । ६५ ॥
- १० । सती समुझि रघुबीरप्रभाऊ । भय बस सिव सब कीन्ह दुराऊ ॥  
 कह न परीक्षा कीन्ह गोसाईं । कीन्ह प्रणाम तुम्हारि हि माई ॥  
 जो तुम कहाँ को मृषा न होई । मोरे मन प्रतीति अलि होई ॥  
 तब संकर देखउ धरि आना । सती जो कीन्ह चरित सब जाना ॥  
 बड्ढरि राममायहिं बिर भावा । जेरि बतिहि सीहि मूढ कहावा ॥  
 हरि दृष्टा भावी बलवाना । हृदय बिकारत बंधु सुखाना ॥  
 सती कीन्ह सीता कर बेधा । सिव उर मसल बिबाद बिबेधा ॥  
 जो अब करै सती सन प्रीती । मिटै भक्तिपथ होई अनती ॥

- दो० । परम प्रेम नहिं जाइ तजि किये प्रेम बड़ पाप ।  
प्रगट न कहत महेस कहु हृदय अधिक संताप । ६६ ॥
- चौ० । तबहिं संभु प्रभुपद सिर नावा । सुमिरत राखे हृदय अस आवा  
इहि तनु सतिहि भेट मोहि नाहीं । सिव संकल्प कीन्ह मन माहीं  
अस बिचारि संकर मतिधीरा । चले भवन सुमिरत रघुबीरा  
चलत गगन भर गिरा सुझाई । जय महेस भलि भक्ति बूझाई  
अस प्रन तुम बिनु करै को आना । रामभक्त समरथ भगवाना  
सुनि नभगिरा सतो उर सोच । पूछा सिवहिं समंत सकोच  
कीन्ह कवन प्रन कहऊ छपाला । सत्यधाम प्रभु दीनदयाला  
यदपि सतो पूछा बड़ भांतो । तदपि न कहउ चिपुरआरातो
- दो० । सतो हृदय अनुमान किय मब जाना सर्वज्ञ ।  
कीन्ह कपट में संभु मन नारि सहज जउ अज्ञ । ६७ ॥
- सो० । जल पय मरिस बिकाइ देखऊ प्रीति कि रीति भलि  
बिलग होइ रम जाइ कपट खटाई परतही । ७ ॥
- चौ० । हृदय मोव समुझत निज करनो । चिंता अमित जाइ नहिं बरनी  
छपासिंधु सिव परम अगाधा । प्रगट न कहउ मोर अपराधा  
संकर रुख अवलोकि भवानो । प्रभु मोहि तजेउ हृदय अकुलान  
निज अय समुझि न कहु कहि जोई । तपै अवां दव उर अधिकारै  
सतिहि समोच जानि छषकेतु । कहउ कथा सुंदर सुख हेतु  
बरनत पंथ विविध इतिहामा । बिखनाथ पड़ंचे कैलासा  
तह पुनि संभु समुझि प्रन आपन । बैठे बट तर करि कमलासन  
संकर सहज सख्य संभारा । लागि समाधि अखंड अपारा
- दो० । सतो बसहिं कैलास तब अधिक सोच मन माहिं ।  
मर्य न कोऊ जान कहु युग सम दिवस सिराहिं । ६८ ॥
- चौ० । जित नव सोच सतो उर भारा । कब जैहौं दुखसागर पारा  
मैं जो कीन्ह रघुपति अपमाना । पुनि पतिवचन मृषा करि जाना  
सो फल मोहि बिधाता दीन्हा । जो कहु उचित रहा सो कीन्हा  
अब बिधि अस बूझिय नहिं तोही । संकर विमुख जिआवऊ मोही  
कहि न जाइ कहु हृदय मलानी । मन महां रामहिं सुमिरि सयानी  
जो प्रभु दीनदयालु कहावा । आरतिहरन वेद जस गावा  
तौ मैं बिनस करौ कर ओरी । छूटौ बेगि देह अब मोरी  
जौ मोरे सिवचरन सनेह । मन कम वचन सत्य जन सह

दो० । तौ समदर्शी सुमित्र प्रभु करौ भो बंनि उपहार ।

होइ मरन जेहि बिनहि सख दुमह बिपत्ति बिहार । ६८ ॥

चौ० । इहि बिधि दुखित प्रजेशकुमारो । अकथनीय दाहन दुख भारी ॥  
 बीते संवत् सहस्र सतासो । तजी समाधि संभु अविनाशो ॥  
 रामनाम छिन सुमिरन लागे । जानेउ सती अगतपति जागे ॥  
 जाइ संभुपद बंदन कीन्हा । सगमुख संकर आसन दीन्हा ॥  
 लख कहन हरिकथा रसाखा । दच्छ प्रजेश भये तेहि काला ॥  
 देखा बिधि बिचारि सब सायक । दच्छहि कीन्ह प्रजापतिनाथक ॥  
 बड़ अधिकार दच्छ जब पावा । अति अभिमान हृदय तब आवा ॥  
 नहिं कोउ अस जनमेउ जग माहीं । प्रभुता पाइ जाहि मद नाहीं ॥

दो० । दच्छलिये मुनि बोलि सब करन लगे बड़ याग ।

नेवते सादर सकल सुर ओ पावत मख भाग । ७० ॥

चौ० । कियर नाग चिह्न गंधर्वा । बधुन समेत चले सुर सर्वा ॥  
 बिभु बिगंचि महेश बिहारी । चले सकल सुर याने बनाई ॥  
 सती बिलोके गगन विमाना । जात चले सुंदर बिधि नागा ॥  
 सुरसुंदरो करहि कल गाना । सुनत खवन छूटहि मुनिधाना ॥  
 पृच्छेउ ककु मिव कहेउ बखानो । पितायज्ञ सुनि कै हरषानी ॥  
 जौ महेश मोहि आयसु देही । कहुं दिन जाइ रहौं मिस एही ॥  
 पतिपरित्याग हृदय दुख भारो । कहैं न निज अपराध बिचारी ॥  
 बोली सती मनोहर बानी । भय संकोच प्रेमरस सानी ॥

दो० । पिताभवन उत्सव परम जौ प्रभु आयसु होइ ।

तौ में जाउं कृपायतन सांदर देखन सोइ । ७१ ॥

चौ० । कहेउ जोक मोरे मन भावा । यह अनुचित नहिं नेवत पठावा ॥  
 दच्छ सकल निज सुता मुखाई । हमरे बघर तुमहुं विचाराई ॥  
 ब्रह्मसभा हम सनु दुख माना । तेहि ते अजहुं करहि अपमाना ॥  
 जो विनु बोलै जाऊ भवानी । रहैं न बोल समेह न कामी ॥  
 यदपि मिव प्रभु पितु गुह नेहा । जाइय विनु बोलैऊ न संदेहा ॥  
 तदपि बिरोध मान जहं कोई । तहां गये कछान न होई ॥  
 भांति अनेक संभु समुदावा । भाहीबस न ज्ञान छर जावा ॥  
 कह प्रभु जाऊ जो बिनहिं मुखाय । नहिं भलि बात हमारे भाये ॥

दो० । कहि देखा हर जनन बड़ रहैं न दच्छकुमारि ।

दिखे मुख मन बंन तब बिदा किये निपुनारि । ७२ ॥

चौ० । पिताभवन जब गयी भवानी । दच्छपाव काऊ न बनमाती ॥



सादर भलेहि मिली एक माता । भगिनी मिलीं बहुत मुसुकाता ।  
 दच्छ न ककु पूकी कुरखता । सतिहिं विछोकि जरं सब गाता ।  
 सती जाइ देखेउ तब यागा । कतहुं न दीख संभ कर भागा ।  
 तब चित चढेउ जो संकर कहेऊ । प्रभुअपमान समुअ उर दहेऊ ।  
 पाकिल दुख न हृदय अब व्यापा । जस यह भयउ महा परितापा ।  
 यद्यपि अग दाहन दुख नाना । सब तेन कठिन जातिअपमाना ।  
 समुझि सोच तिहि भौ अति क्रोधा । बडु बिधि जननी कीन्ह प्रबोधा ।

दो० । मिथअपमान न जाइ सहि हृदय न होत प्रबोध ।  
 सकल समहि हठि हटकि तब बोली बचन सकोध । ०३ ॥

चौ० । सुनऊ सभासद सकल मुनिदा । कहो सुनो जिन्ह मंकर निंदा ।  
 सो फल तुरत लहव सब काह । भलो भाति पकिताव पिताह ।  
 संत संभ खीपति अपवादा । सुनिय जहां तहं अमि मर्यादा ।  
 काटिय तासु ओभ जु वसाई । खवन मूदि नहिं सलिय पराई ।  
 जगदातमा महेस पुराणी । जगतजनक सब के हितकारी ।  
 पिता मंदमति निंदत तेही । दच्छ सुकसभव यह देही ।  
 तजि हौं तुरत देख तेहि हेतु । उर धरि चंद्रमौलि टषकेतु ।  
 अस कहि योगअगिनि तनु जाइ । भयउ सकल मख हाहाकारा ।

दो० । सतो मान मुनि संभु गन लागे करन मख खीस ।  
 यज्ञविध्वंस विलोकि भृगु रक्षा कीन्ह मुनोम । ०४ ॥

चौ० ॥ ममाचार अव संकर पाये । बीर भद्र करि कोप पठाये ।  
 यज्ञविध्वंस जाइ तिन्ह कीन्ह । सकल सुरन्ह विधिवत फल दीन्ह ।  
 भद्र जग बिदित दच्छ गति छोई । जस ककु संभुमुख की छोई ।  
 यह इतिहास सकल जग जाना । ताते में संक्षेप बख ना ।  
 सतो मरत हरि मन धर भागा । जन्म जन्म सिवपद अनुगागा ।  
 तेहि कारन हिमगिगिटह जाई । सोइ जन्मी पार्वती तनु पाई ।  
 जवने उमा मैलगटह आई । सकल मित्रि संपति तहं लाई ।  
 जहं तहं मुनिन सुआसम कीन्ह । उचित वाम हिमभूधर दीन्ह ।

दो० । सदा सुमन फल सहित सब द्रुम नव नाना जाति ।  
 प्रगटो सुंदर मेल पर मनिआकर बडु भांति । ०५ ॥

चौ० । सरिता सब पुनोत जल बहई । खग खग रुधुप सुखी सब रहई ।  
 सबज बचर सब ओवन व्यामा । गिरि पर सकल करहिं अनुरागा ।  
 सोइ मेल गिरिजा यह चाये । जमि नर रामभक्ति के पाये ।  
 नित नूतन मंगल यह ताखे । जग्यादिक नाबहिं जस जाखे ।  
 नारद समाचार अब पाये । कौतुक हिमनिशिगेइ सिधाये ।  
 जेकराल कर जाइव कीन्हा । पठ पकारि हर आसन दीन्हा ।

- नारि सहित मुनिपद धिर नावा । चरनसलिल स्रव भवन बिचावा ॥  
निज सौभाग्य बज्रत गिरि वरना । सुता बोलि मेली मुनिचरना ॥
- दो० । चिकालज्ज सर्वज्ञ तुम गति सर्वत्र तुम्हारि ।  
कहज सुता के दोष गुन मुनिवर हृदय बिचारि । ७६ ॥
- चौ० । कह मुनि विहसि गूढ मृदु बानो । सुता तुम्हारि सकल गुनखानो ॥  
सुंदरि सहज सुखोल मयानो । नाम उमा अबिका भवानो ॥  
सब लच्छन संपन्न कुमारो । होइहि संतत पिबहि पियारी ॥  
सदा अचल एहि कर अहिवाता । इहि तें जम पैहहि पितु माता ॥  
होइहि पूज्य मकल जग माहीं । इहि सेवत कहु दुर्लभ नाहीं ॥  
• इहि कर नाम मुनिगि संसारा । तिय चठिहहि पतिव्रत अविधारा ॥  
मेल मुनिलच्छनि सुता तुम्हारो । सुनैज्जे जे अब अवगुन दुद चारो ॥  
अगुन अमान मातुपितुहोना । उदासीन सब संसय झोना ॥
- दो० । योगी जटिल इकाम तन जगन अमंगलभेष ।  
अस खामो इहि कहं मिलिहि परो हस्त असि रेख । ७७ ॥
- चौ० । सुनि मुनिगिरा मत्त जिय जानी । दुख दंपतिहि उमा हरषानी ॥  
नारदहं यह भेद न जाना । दसा एक समुझत बिलगाना ॥  
सकल सखी गिरिजा गिरि मयना । पुनक सरोर भंग जल मयना ॥  
होइ न मृषा दे पिआखा । उमा सो बचन हृदय धरि राखा ॥  
उपजेउ मिवपद कमल मनेह । मिलन कटिन मन यह संदेह ॥  
जानि कुअवमर प्रीति दुगई । सखाउहंग बैठि पनि आई ॥  
झूठि न होइ देवचरिषवानो । मोचहि दंपति सखी सयानी ॥  
उर धरि धीर कहेउ गिरिराज । कहज नाथ का करिय उपाज ॥
- दो० । कह मुनोस हिमवंत सुन जो विधि लिखा लिलार ।  
देव दनुज नर नाग मुनि कोउ न मेटनिहार । ७८ ॥
- चौ० । तदपि एक मै कहौं उपाई । होइ करै जौं देव सहाई ॥  
जस वर मै वरनेउ तुम पाहीं । मिलिहि उमहिं कहु संसय नाहीं ॥  
ज जे वर के दोष बखाने । ते सब मिव पह मै अनुमाने ॥  
जौं बिबाह संकर सन होई । सोधौ गुन सम कह सब कोई ॥  
जो अहिमेज मयन हरि करहीं । बुध कहु तिन कहं दोष न धरहीं ॥  
भानु लसानु सर्व रस खाहीं । तिन कहं मंद कहत कोउ नाहीं ॥  
सुभ अस सुभ सलिल स्रव बहहीं । सुरसरि कोउ न अपावन कहहीं ॥  
समरथ कहं नहिं दोष गुहाई । हरवि पावक सुरसरि की नाई ॥
- १० । जो अस हिखिखा करहिं नर जउ बिबेक अभिमान ।  
परहिं कल्प भरि नर्क महं जीव कि ईश समान । ७९ ॥

चौ० । सुरवरिजलजलवाहनि जावा । कवज न संत करहि तिहि पावा  
 सुरवरि मिलै सु पावन जैवे । दैम अनीसहि अंतर तैसे ।  
 संभु सहज समरथ भगवाना । इहि बिबाह सब विधि कल्याण  
 दुराराथ पै अहहि महेसु । आतु तोष पुनि किये कलेशु  
 जौ तप करै कुमारि तुम्हारी । भाविउ मेडि सकै त्रिपुरारी  
 यद्यपि वर अनेक जग माहीं । इहि कहि सिव तजि दूसर नाहीं  
 वरदायक प्रनतारतिभजन । लपासिंधु सेवक मनरजन  
 दक्षित फल विनु मिव आराधे । लहद न कोटि योग जप बाधे

दो० । अस कहि नारद सुमिरि हरि गिरिजहि दोह अनीस ।  
 होइहि बहि कल्याण अब संसय तजऊ गिरीस ॥ २० ॥

चौ० । कहि अब ब्रह्मभवन मुनि गयऊ । आगिल चरित सुनऊ अस भयउ  
 पतिहि दकांत पाय कह मयना । नाथ न मै समुझेउ मुनिबचना  
 जौ वर वर कुल होइ अनूपा । करिय विबाह सु अनुकूपा  
 नतु कन्या बर रहौ कुमारी । कंत उमा मम प्री पियारी  
 जौ न मिलिहि वर गिरिजहि योग । गिरि जल सहज हिं सब जो  
 सो बिचारि पति करऊ बिबाह । जेहि न बहोरि उर दाह  
 अस कहि परी चरन धरि सीसा । बोले सहित सनेह सीसा  
 बर पावक प्रगटै ससि मांहीं । नारदबचन अन्यथ हीं

दो० । प्रिया सोच परिहरऊ सवि सुमिरि ज सोभगवान ।  
 पारवती जिन निर्मयउ सोइ करिहिहि कल्याण ॥ २१ ॥

चौ० । अब जौ तुमहिं सुता पर नेह । तो अस जाइ सिरावन देह  
 करै सो तप जेहि मिलहिं महेसु । आन उपाय न मिटिहि कलेशु  
 नारद बचन सगभं सहेतु । सुंदर सब गुननिधि लषकेतु  
 अस बिचारि तुम तजि सय संका । सबहि भांति मंकर अकलंका  
 मुनि पतिबचन हर्ष मन माहीं । गयो तुरत उठि गिरिजा पाहीं  
 जमहिं बिलोकि नयन भरि बारो । सहित सनेह गोद बैठारी  
 बारहि बार लेति उर छाई । गदगद कंठ न कहु कंहि जाई  
 जगतमातु सर्वज्ञ भवानी । मातुसुखद बोली मृदु बानी

दो० । सुनऊ मातु मै दीख अस सपन सुनाऊ तोहि ।  
 रंदर गौर सुविप्र वर अस उपदेसेउ मोहि ॥ २२ ॥

चौ० । करऊ जाइ तप सैकुमारो । नारद कहा सो सत्य विचारो  
 मातु पतिहि पुनि सह मत भावा । तप सुखप्रद दुख दोष नसावा  
 तपबल रहै प्रपंच विधाता । तपबल बिजु दकल जगचाता  
 तपबल संभ करहिं संहारा । तपबल सेष धरहिं महिभारा

तपश्चरार सब सृष्टि भगानी । करजु जाइ तप सब किय जानी ॥  
 सुनत बचन बिभिनत महतारी । यपन सुनायेउ गिरिहिं हंकारो ॥  
 मातु पितहिं बडु बिधि समझाई । चली उमा तप रित हरषाई ॥  
 प्रिय परिवार किता अब माता । भये बिकल मुख आइ न बाता ॥

दो० । बेदगिरा मुनि आइ तब सर्वाहिं कथा समझाई  
 पारवतीमहिमा सुनत रह प्रबोधहिं पाई । ८३ ॥

चौ० । उरधरि उमा प्राणपतिचरना । जाइ बिपिनि छागी तप करना ॥  
 अति सुकुमारि न तनु तपयोगु । पतिपद सुमिरि तजेउ सब भोगु ॥  
 नित नव चरन उपज अनुगामा । बिसरो देह तपहि मन लागे ॥  
 संवत सहस्र मूल फल खाये । साक खाइ सत वर्ष गंवाये ॥  
 कइ दिन भोजन बार्हि कताखा । किये कठिन कइ दिन उपवास ॥  
 बेलगत महि परै सुखाई । तोनि सहस्र संवत सो खाई ॥  
 पुनि परिचरेउ सुखानेउ सर्वा । उमानाम तब भयउ अपना ॥  
 देखि उमहि तपखोज्यरीरा । प्रह्लागिरा भट गगन संभेरा ॥

दो० । भयउ मंगोरथ सुफल तब सुनु गिरिराजकुमारि  
 परिहइ दुखइ कलेश सब अरु मिलिहहिं त्रिपुरगिरि । ८४ ॥

चौ० । अस तप काऊ न कोइ भजानी । भये अनेक धीर मुनि जानी ॥  
 अब उर धरजु प्रह्लावरवानो । सत्य सदा संतत रुचि जानी ॥  
 आवै पिता बलावन जगहौ । हठ परिहरि घर जायजु तवहौ ॥  
 मिलहिं तुमहिं अब सप्त श्रुषीषा । जानेऊ तब प्रमान बागीषा ॥  
 सुनत गिरा बिधि गगन बखानी । पुनक गात गिरिजा हरषानी ॥  
 उमाचरित मै सुंदर गावा । सुनऊअंभु कर चरित सुखावा ॥  
 जब तें मतो जाइ तनु त्यागा । तब भि वमन भयेउ बिरागा ॥  
 जयहिं सदा रघुनाथकनामा । जइ तहं सुनहिं रामगुनधामा ॥

दो० । चिदानंद सुखधाम सिव बिगतमोहमदकाम  
 बिचरहिं महि धरि हृदय हरि सकल लोकअभिराम ॥ ८५ ॥

चौ० । कतऊं मुनिन उपदेसहिं जाना । कतऊं रामगुन करहिं बखाना ॥  
 सदपि अकाम तदपि भगवाना । भक्तबिरहदुखदखित सुजाना ॥  
 इहि बिधि गयेउ काळ बडु बीती । नित नव होइ रामपद प्रीती ॥  
 नेम प्रेम संकर कर देखा । अनिल हृदय भक्ति की रेखा ॥  
 प्रगटे राम हतअ छपासा । छपखोलनिधि तेज बिभासा ॥  
 बडु प्रकार संकरहिं सराहा । तुम बिनु अय जत को गिरवाहा ॥  
 बडु बिधि राम सिवहिं समझावा । प्रारवती कर जगु सुजावा ॥  
 अति पुनीत गिरिजा की करनी । बिसरि रहित छपानिधिं बरनी ॥

दो० । अब विनती मम सुनऊ सिव जो मो पर निज नेऊ ।  
जाद विद्याहउ सैलजहि यह मोहि मांगे देऊ । ८४ ॥

चौ० । कह सिव यदपि उचित चस नाहीं । नाचबचन पुनि मेटि न जाहीं  
बिर धरि आससु करिष तुम्हारा । परम धरम यह नाच हमारा  
मातु पिता गुरु प्रभु की बानी । विनहि विचार करिष सुभ जान  
तुम सब भांति परम हित कारो । आज्ञा निर पर नाच तुम्हारी  
प्रभु तोषेउ सुनि संकरबचना । भक्तिविवेकधर्मदुत रचना  
कह प्रभु हर तुम्हार प्रभु रहेऊ । अब उर राखेऊ जो हम कहैऊ  
अंतर्धान भये कस भाखी । संकर सोद मूग ति उर राखी  
तबहिं सप्त ऋषि सिव पद आये । बोले प्रभु अब बचन सुहाये

दो० । पारबती पद जाद तुम प्रेमपरीक्षा लेऊ ।  
गिरिहि प्रेरि पठयेऊ भवन दूरि करेऊ संदेऊ । ८५ ॥

चौ० । ऋषिन गौरि देखो तहं कैसो । मूरतिवंत तपस्या जैसो  
बोले मुनि सुन सैलकुमारी । करेऊ कवन कारन तप भारी  
कहि आराधऊ का तुम यहह । हम सन सत्य मर्म सब कहह  
सुमत ऋषिन के बचन भवानी । बोली गूढ मनोहर बानी  
कहत मर्म मन अति सकुचार्ह । हसिहऊ सुनि रमारि जड़ताई  
मन हठ परा न रुनै सिखावा । चरत बारि पर भीति उठावा  
नारद कहा सत्य सोद जाना । विनु पंखन हम चरहिं उड़ाना  
देखिय मुनि अविवेक हमारा । चाहत पति संकर अविकारा

दो० । सुमत बचन बिहसे ऋषय गिरिसंभव तब देह ।  
नारद कर उपदेश सुनि कहऊ बसे को मेह । ८६ ॥

चौ० । दण्डमुतन्ध उपदेसि न जाई । तिन फिरि भवन न डेरे आई  
विचकेतु कर घर उन घाहा । कनक कशिपु कर पुनि कस हाहा  
नारदसिख जु सुनिं भर नारो । अबसि भवन तीज होहिं भिखार  
मन कपटो तब सज्जन चीन्हा । आप गरिष सबही चहं कीन्हा  
तेहि के बचन मानि विखावा । तुम चाहऊ पति सहज उदावा  
निर्गुन निलज कुवेश कपालो । अशुल अगेह दिगंबर ब्याली  
कहऊ कवन सुख अब बर पाये । भल भलिऊ ठग के बौराये  
पंच कहें सिव सती निवाही । पुनि अबडेहि मरादनि ताही

दो० । अब सुख सोखत सोख नहिं भीख मांगि भव खांछि ।  
सहज एककिन के भवन कस कि नारि खटांछि । ८७ ॥

चौ० । अजहं मावऊ कहा हमारा । हम तुम कहं बर नीक बिचारा  
अति सुंदर सुधि सुखद सुखोला । गांवहिं बेद जासु जस सीला

- दूधनग्नि सकल गुनराशी । सीपति पुत्र वैकुण्ठिकाशी ॥  
 अब वर तुमहिं निहाउव खानी । सुनत बिहसि कह बचन भवानी ॥  
 सत्य कलक निरिभव तन एख । हठ न हूट हूटे बह होख ॥  
 कमकौ पुनि पमान ते होई । आरेज सहज न परिहर खोई ॥  
 नारदबचन न मै परिहरऊ । बसौ भवन उज्जयै नहिं डरऊ ॥  
 गुह के बचन प्रतीति न जेहो । सपनेऊ सुगम न मुख सिधि तेहो ॥

दो० । महादेव अबगुनभवन सिख सकल गुनधाम ।

जेहि कर मन रम जाहि सन ताहि ताहि सन काम । ८० ॥

- चौ० । औ तुम मिलिते उ प्रथम मुनीश । सुनतिउं सिख तुनारि धरि सीसा ॥  
 अब मै जका संभू हित हारा । को गुन दोषहिं करि बिचारा ॥  
 औ तुम्हरे हठ हृदय बिसेषी । रहि न जाइ बिनु किये बरेषी ॥  
 तौ कौतुकिअन्ह आलस नाहीं । बर कन्या कनेक जग माहीं ॥  
 जका कोटि लगि रगर हमारी । बरौं संभू नतु रहौं कुमारी ॥  
 तजौं न नारद कर उफदेउ । आपु कहहिं सत बार महेउ ॥  
 मै पा परौं कहै जगदंबा । तुम गृह गवनऊ भयउ बिलंबा ॥  
 देखि प्रेम बोले मुनिजानी । जय जय जय जगदंब भवानी ॥

दो० । तुम माया भगवान सिव सकल जगतपितृदात ।

नाइ चरन सिर मुनि चले पुनि पुनि रचितगात । ८१ ॥

- चौ० । जाइ मनिन्ह हिमवत पठावे । करि बिनती गिरिजहिं गृह ल्याये ॥  
 बहुरि सप्तर्षि सिव यह जाई । कथा उमा की सकल मुनाई ॥  
 भये मगन सिव सुनत सनेहा । हरषि सप्तर्षि गवने नेहा ॥  
 मन थिर करि तब संभू मुजाना । रुगे करन रघुनायकध्वाना ॥  
 तारक अमर भयेउ तेहि कासा । भुजप्रताप बल तेज बिघाला ॥  
 तेइ सब लोक लोकपति जीते । भये देव मुखसंपति रीते ॥  
 अजर अमर सो जीति न जाई । हारे सुर करि बिबिध खराई ॥  
 तब विरचि सन जाइ पुकारे । देखे बिधि सब देव दुखारे ॥

दो० । सब सन कहा बुझाय विधि दुनुजनिधन तब खोइ ।

संभुसुकसंभूत सत इहिं जीतै रम खोइ । ८२ ॥

- चौ० । मोर कहा मुनि करऊ उपाई । खोइहिं ईश्वर करिहिं सहाई ॥  
 सती औ तजी दण्डमख देहा । जगभी जाइ हिमाचलगैहा ॥  
 तेइ तप कोन्ह संभुपति लागी । सिव समाधि बैठे सब त्यागी ॥  
 यदपि अहै असमजस भारी । तदपि बात दक मुनऊ हमारी ॥  
 पठवऊ काम जाइ सिव पाहीं । करै होम संकरम माहीं ॥  
 तब हम जाइ सिवहिं मिर नाई । करवाउव बिबाह बरिबाई ॥

- रहि बिधि भखेहि देवदित होरे । मत अति नीक कहौ सब को ।  
 भेषुति मुरन कोन अति तेत । प्रगटेउ विषमधान सपकेत ॥
- दो० । सुगम कहौ निज विपति सब सुनि मन कोन विचार ।  
 संसारीध न सुख मोहिं गिहसि कहैउ पद भार । ८२ ॥
- चौ० । तदपि करवैं काज सुहारा । खुति कह परम धर्म उपकार ।  
 परहित लागि तजै जो देवी । संतत संत प्रमोदहि तेही ।  
 अब कहि खलेउ सकहि बिर नारै । सुमनधनुष कर सहित बहारे ।  
 चलत मार अब हृदय विचारा । सिवविरोध धुव मरन हमारा ।  
 तब आपन प्रभाव विस्तारा । निज बस कीन सकल हंसारा ।  
 कोपेउ जबहिं बारिचरकेत । इन मर्हि भिटे सकल खुतिसेत ।  
 प्रशुचर्यत्रत संयम कांत । धीरज धर्म ज्ञान विज्ञान ।  
 सदाचार जप योग विरागा । सभय विवेककटक सब भागा ॥
- छं० । भगने विवेक सहार सहित सो मभट संयुग महि मुरे ।  
 सदपथ परतकंदरन महं जाद तेहि अद्भर दुरे ॥  
 होनिहार का करतार को रखवार जग खरभर परा ।  
 दूमात्र केहि रतिनाय जेहि कहं कोपि धनुसर कर धरा ॥ ३ ॥
- दो० । जे मजोव जग अचर चर नारि पुरुष अस नाम ।  
 ते निज निज मर्याद तजि भये सकल बस काम । ८४ ॥
- चौ० । सब के हृदय मदनअभिमाखा । जाता निहारि नवहिं तरुणाखा ।  
 नदो उमगि अंबुधि कहं धारि । संगम करहिं तलाव तलारि ।  
 जहं असि दसा जड़न की बरनी । को कहि सकै सचेतन रणी ।  
 पसु पच्छी नभजलखचारी । भये कामबस समय सारी ।  
 मदनबंध व्याकुल सब लोका । निसि दिन नहिं अनाकहिं की ।  
 देव दनुज नर किन्नर बाला । प्रेत पिशाच भूत बैताला ।  
 इन को दसा नहिं कहैउ बखानी । सदा काम के वरे जाकी ।  
 सिद्ध बिरक्त महा मुनि योगी । तंति कामबस भये बियोगी ॥
- छं० । भये कामबस योभीस तापस पामरन की को कहै ।  
 देखहिं पराचर नारिमय जे ब्रह्ममय देखत रहै ॥  
 अबला बिकोकहिं पुरुषमय जग पुरुष सब अस्लामयं ।  
 दुरु दंड भरि जह्मांड भीतर कामहत कौतुक अयं । ४ ॥
- चौ० । धरा न काहू धीर सब के मन मनसिज हरि ।  
 जेहि राखेउ रघुवीर ते बरवै तेहि कूल मर्हि । ८ ॥
- चौ० । उभय घरी अब कौतुक भयज । जब सगि काम संभु पहं गयज ।  
 सिवहिं बिलोकि समंकेउ मांरु । भयज यथायित सब संसार ॥

भये तुरत जगजीव सुखारे । जिमि मद चतरि मये मलवारि ॥  
 रुद्रहिं देखि मदन भय माना । सुराधर दुषंभ भगवाना ॥  
 फिरत साज कहु कवि मरि जाई । मरुत कापि मय रघुहि जगई ॥  
 प्रगटैसि तुरत रघिर अतुलजा । सुकुजित यव नहराज निराज ॥  
 वन उपवन बाधिका मगामु । पश्य सुभन यह विद्याविधामा ॥  
 कहैं तहं जगु समगल अमुराग । देखि मुरतु मय समविज जाग ॥

द० । मायेउ मयीभव सुभसन वनभगता न परै कही ।  
 सीतल सुगंध मुमंद माहत मदन अनहसखा कही ॥  
 विकसे सरणि बडु कंठ गुंजत पुंज मंजल मधुकरा ।  
 कलहस पिक मुक सरस रव करि मान नासहि जसरा । ॥

दो० । सकल कला करि कौटि विधि हारेउ सेन समेत ।  
 चलो न अचल समाधि सिव कोपेउ इदवनिगत । ॥

चौ० । देखि रसाक विटपवरधाखा । तेहि पर चहेउ मदन मन माखा ॥  
 सुमनचाप निज सर ईधामे । अति रिच ताकि खवन लागि ताने ॥  
 काड़े विषम बिसिख उर लागे । कूटि समाधि संभु तब जागे ॥  
 भयउ ईसमन हंभ बिसेवी । नयन उचारि सकल दिशि देवी ॥  
 सौरभपल्लव मदन बिकोका । भयउ कोप कोपेउ चयलोका ॥  
 तब सिव तोसर नयन उचारा । शिवत काम भयउ जरि हारा ॥  
 हाहाकार भयउ जग भारी । उरपेचुर भये अचुर मुखारी ॥  
 समुझि काममुख सोचहि भोगी । भये अकंटक बाधक धोगी ॥

द० । योगी अकंटक भयेउ पतिगति मुनति रति मूर्छित भयो ।  
 रोदति वदति बडु भांति कदना करति संकर पदं गयो ॥  
 अति प्रेम करि बिनतो विविध विधि जोरि कर समुख रह्यो ।  
 प्रभु आमतोष कृपासु सिव अचला निरखि बोले कही । ॥

दो० । अब तें रति तब नाखकर होइहि नाम अमंग ।  
 बिनु कपु व्यापिहि खरहिं पुनि मुनु निज मिलन प्रसंग । ॥

चौ० । जब यदुवंश लख्य अवतारा । होइहि हरन महा मदिभारा ॥  
 लख्यतनय होइहि पति तोरा । बखल अन्वया होइ न मोरा ॥  
 रति मवनो मुनि संकरवागो । कथा अपर अब कहाँ बखानी ॥  
 देवन समाचार सब पावे । ब्रह्मादिक बैकुण्ठ सिधाये ॥  
 सब मर विजु बिरचि समेत । मये जहां सिव कृपानिकेत । ॥  
 पृथक् पृथक् तिग कोन प्रसंवा । भये प्रखल चंद्र अवांका ॥  
 बोले कृपाधिनु दुषकेत । कहूँ अमर आयेउ कोहि हेत ॥  
 कह विधि तुम प्रभु अंतरजानी । तदपि भक्तिवय विनवी खानी ॥



दो० । सकल सुरन को हृदय अथ संकर परम उदाह ।  
निज मथननि देखी कहहि नाथ तुम्हार विदाह । ८७ ॥

चौ० । यह प्रसव देखिब भरि सोचन । सो कहु करिब मदनमदमोच ।  
काम आरि रति कह बर दोहा । कृपासिधु सह अति भल कीन्हा ।  
सासति करि पुनि करहि पसाऊ । नाथ प्रभुन कर सहज सुभाऊ ।  
पारवती तप कीन्हा अपारा । करऊ तासु अब जंगीकारा ।  
मुनि विधिवचन समुझि प्रभुबानी । ऐसोइ होइ कहु सुख मानो ।  
तब देवन दुंदुभी बजाई । हरषि सुमन जय जय सुरसाई ।  
अवसर आनि सप्तअषि आये । तुरतहि विधि गिरिभवन पठा ।  
प्रथम गये जह रही भवानो । बोलि वचन मधुर हृदयानी ।

दो० । कहा हमार न सुनेऊ तब नारद कर उपदेश ।  
अब भी छूट तुम्हार प्रन जारेउ काम महेस । ८८ ॥

चौ० । सुनि बोसो मुसुकाइ भवानो । उचित कहइ मुनिवर विजानी ।  
तुम्हरे जान काम हर आरा । अब लगि संभुरहे सबिकारा ।  
हमरे जान सदा सिव योगी । अज अनवय अकाम अभोगी ।  
जौ मै सिव देखेउ अम जानो । प्रीति समेत कर्म मन बानो ।  
तौ हमार प्रन सुनेऊ मुनीसा । करिहहि सत्य कृपानिधि ईसा ।  
तुम जो कहा हर जारेउ मारा । सो अति बड़ आवेक तुम्हारा ।  
तात अनल कर सहज सुभाऊ । हिम तेहि निकट जाइ नहि का ।  
गये समोप सो अवसि नसाई । जमि संपाति निज पच्छ गवाई ।

दो० । हिय हरषे मुनिवचन सुनि देखि प्रीति बिद्याध ।  
चले भवानिहि नाइ धिर गये हिमाचल पास । ८९ ॥

चौ० । सब प्रसंग गिरिपतिहि सुनाव । मदनमदहन सुनि अमि न कषावा ।  
बज्ररि कहेउ रति कर बर दोहा । सुनि हिमवत बज्रन सुख माना ।  
हृदय विचारि संभुप्रभुताई । सादर मुनिवर किये मुकाई ।  
सुदिन सुनखत सुखरी सुहाई । बेगि वेदविधि जगन धराई ।  
पचो सप्तअषिन सोइ दीन्हा । गहिपद बिगय हिमाचल कीन्हा ।  
जाइ विधिहिं निज दीन्हा सो पाती । बाँचत प्रीति न हृदय समातो ।  
लगन बाँधि अज सबहिं सुनाई । हरषे मुनि सब सुरसमुदाई ।  
सुमनहृष्टि नभ बाजल बाजे । मंगलकलस दहऊं दिसि साजे ।

दो० । लगे संवारन सकल सुर बाँहन विविध बिमान ।  
होहि समुन मंगल सुभम करहि अपारा नाग । ९० ॥

चौ० । विविहि संभुगन करहि बिगारा । जटा मुकुट चहि मोर कवारा ।  
कुंकल कंकन पहिरे व्याका । तनविभूति बट कोहरिकाका ।

उद्विष्टाद सुंदर मिर मंदा	। मयन तीनि कपटीन सुमंता	॥
असल कंड वर मरिमाका	। अतिथ भव विवधन कपका	॥
कर चिह्नक चर उमर विराका	। चरि चरि चरि बाकहिमाका	॥
देखि विविधि सुखिनि सुमुकाही	। वरसावक दुखहिनि मन काही	॥
विष्णु विरचि आदि सुरमाता	। चरि चरि बाकन चरि वराता	॥
सुरमाज सब भांति समुदा	। नहिं वरात दूख चरुका	॥

तो० । विष्णु कहा चर विवधि तब बोलि सकल दिविराम ।  
विषम विषम होइ चरु सब निज निज रहित समाज ॥ १०१ ॥

चौ० । वर समुदा वरात न भारी	। हंसी करैइत पर पुर चारी	॥
विष्णु वचन सुनि मुर मुमुकाहे	। निज निज सेन रहित विखनाहे	॥
मनहीं मन मनेष मुमुकाही	। हरि को थन वचन नहिं जाही	॥
अति प्रिय वचन सुनत हरि केरे	। भूमी प्रेरि सकल गत टेरे	॥
शिवचनुसाधन मुनि सब पाछे	। प्रभुपद अलख सोस तिन नाचे	॥
नाना बाहन नाजा बेही	। विरसे शिवसमाज निज देवा	॥
कोउ मुखहीन विपुलमुख काह	। विनु पद कर कोउ बलपदबाह	॥
विपुलमुख कोउ मयनविहीना	। रिष्ट पुष्ट कोउ अति तनहीना	॥

हं० । तनुहीन कोउ अति पीन पावन कोउ अपावन तनु धरे ।  
भूषण कराख कपाखकर-सब सब खोनि तनु भरे ॥  
खर खान सुखर खगाख सुखगन बेध-अगति को गने ।  
बल निजि प्रेत पिशाच योगिनि भांति वरनत नहिं बने ॥ ० ॥

सो० । नाचहिं नाचहिं भीत परम तरंगी भूत सब ।  
देखत अति विपरीत बोखहिं वचन विविध विधि । ८ ॥

चौ० । जह दूखइ तहि बनी वराता	। कौतुक विविध होहिं मगु जाता ॥
रहां हिमाचल रचेउ बिताता	। अति विविध नहिं जाय बखाना ॥
मैल सकल जहं समि जन माहीं	। लघु विवाह नहिं वरनि विराहीं ॥
बन सागर नद भूही तलावा	। हिम गिरि सब कर्ह नेवत पठावा ॥
कामरूप सुंदर तनुधारी	। रहित समाज रहित वर नारी ॥
पाछे सकल हिमाचलगेहा	। गावहिं मंगल रहित खेहा ॥
प्रथमहिं गिरि बल्ल गृह संवराये	। यथायोग जहं तहं सब हाये ॥
पुरषोभा अचलोकि कुहाई	। लागै कंधु विरचिनिपुनाई ॥

हं० । समुखानि विधि की निपुणता अचलोकि पुरषोभा कही ।  
बन वान रूप तन्मान हरिता सुभनता सक को कही ॥  
मंगल विपुल तोरण पताका केतु गृह गृह सोहरी ।  
बनिता पुख सुंदर सुंदर अति देखि मुनिमन मोहरी ॥ ८ ॥

दो० । जगदंबा जहं जगतरो सो पुर भरनि न जाइ ।

बहुि बिह्वि संपति सकल जित नूतन अधिकार । १०१ ॥

चौ० । नगर निकट बरात सनि आई । पुर खरभर सोभा अधिकारि

करि बगुन सजि बाहुन बाजा । चले सैन सादर भगवाना

हिय हरष सुरसेन निहारी । हरिहि देखि अति भये सुखारी

मिवममाज जब देखन लागे । बिउरि चले बाहुन सब भागे

धरि धीरज तहं रहै सधाने । बालक सब सै जीव पराने

गये भवन पूछहिं पितु माता । कहहिं बचन मयकपित माता

कहिय कहा कहि जाइ न बाता । समकरधार किधौ बरिधाता

बर बौराह बरद चसवारा । बाल कपाल बिभूषन करार

दो० । तनु हार बाल कपाल भूषन नगन जटिल भयंकरा ।

संग भूत प्रेत पिशाच योगिनि बिकट मुख रक्तनी चरा ॥

जो जियत रहिहि बरात देखत पुन्य वज्र तिहिं कर बही ।

देखिहि सो उमाविवाह घर घर बात असि खरकन कही ८॥

दो० । समष्टि महेसममाज सब जननि जनक मुमुकाहिं ।

बाल वझाये विविध विधि निडर होउ उर माहिं । १०२ ॥

चौ० । सै भगवान बरातहिं आये । दिये सबहिं जनबास मुहाये

मैना सुभ आरती संवारो । संग सुमंगल गावहिं वारो

कंचनधार मोह बर पानो । परिकन चली हरहिं हरवानी

बिकट भेष जब रहहिं देवा । अवलनिउर भय भयेउ बिसेवा

भागि भवन पैठी अति चासा । गये महेस जहां जनबासा

मयना हृदय भयेउ दुख भारी । लोन्ही बोलि गिरीसकुमारो

अधिक सनेह गोद बैठारी । साम सरौं जनघन भरि वारो

जेद विधि तुम्हहिं रूप अस दीन्हा । तेद जेद बर बाउर कस कीन्हा

दो० । कस कोन बर बौराह विधि जेद तुम्हहि सुंदरता देई ।

जो फल चाहिय सुरतदहिं सो बरवस बहुरहिं लागई ॥

तुम सहित गिरि ते गिरौं दावक जरौं जलनिधि मंह परौं ।

घर जाव अपजस होउ जन जीवत विवाह न हौं करौं १० ॥

दो० । भवौं बिकल चवला सकल दुखित देखि गिरिगारि ।

करि बिलाप रोदति बहति सुतासनेह संभारि । १०३ ॥

चौ० । नारद करमै कहा बिगारा । भवन मोर जिन बसत उजारा

अस उपदेस उमहिं बिन दीन्हा । बौरै बरहिं लागि तप कीन्हा

सांछेउ जन के मोह न आवा । उदासीन धन धाम न जावा

पर चरबासक साव न भीरा । बाँधे कि जान प्रसव की भीरा

जननिहिं बिकल बिलोकि भवानी । बोली बतबिबेक सहु बाणी

अस बिचारि सौं बज्र मति मरता । सो न टरै जो रहै बिधाना

• करम लिखा जो बाहर नाह । तो कम दोष कमाएष काह ॥  
तुम बन मिटहिं कि बिधि के चंका । मातु बर्ष जनि खेड कलंक ॥

क० । जनि खेड मातु कलंक कहना परिहरइ अवसर नहीं ॥  
दुख मुख जो लिखा लिखार हमरे भाव जह पाउव नहीं ॥  
• सुनि उमावसन विनीत कोमल सकल अवस्था सोचहीं ।  
बहु भांति बिधिहिं लयाइ दूवन नयन बारि विमोचहीं ॥११॥

दो० । तेहि अवसर नारद सहित औ अपिषत् समेत ।  
ब्रह्माचार सुनि तुष्टिमिहिं गवने तुरत निकेत ॥ १०६ ॥

चौ० । तब नारद सबही समुझावा । पूरव कथा प्रथम सुनाव ॥  
मथना सद्यु सगुनमम वागी । जगदंबा तव सुता भवानी ॥  
अजा अनादि सक्ति अविनाशनि । सदा संभुअरंधगनिवासनि ॥  
जगमभवपावनसखकारिनि । निज रक्षा कोलावपुधारिनि ॥  
जनमो प्रथम देख्यटह जाई । नाम सती सुंदर तनु पाई ॥  
तहउं सती संकरहिं विवाहीं । कथा प्रसिद्ध सकल जग माहीं ॥  
एक बार आवति सिव संग । देखेउ रघुकुलकमलपसंगा ॥  
भयउ मोह सिवकहा न कोना । भ्रमवस बेप सीध कर सीना ॥

क० । मियवेष सती ओ कोन्ह तेहि अपराध संकर परिहरी ।  
हरविरह जाइ बहोरि पितु के यज्ञ योमानस करो ॥  
अब जनमि तुम्हरे भवन निज पति सागिदाहन तप किया ।  
अब जानि संसब तजऊ निरिजा सर्वदा संकरप्रिया ॥ १२ ॥

दो० । सुनि नारद के वचन तब सब कर मिटा विवाह ।  
इन मर्ष आपेउ सकल पुर घर घर बह संवाद ॥ १०६ ॥

चौ० । तब मथना हिमवत अनंदे । पुनि पुनि पारवतीपद बंदे ॥  
नारि पुरुष सिंधु चुबा मथाने । नगरलोन सब अति हरवाने ॥  
लगे होन घर संमल गतना । खजे सबहिं हाटकबट नामा ॥  
भांति अनैक भद्र जेवनारा । सुपवास जस कह्यु खवहारा ॥  
सो जेवनार कि खाइ बखानी । बसहिं भवन जेहि मातु भवानी ॥  
सादर बोले सकल बरानी । बिष्णु विरहिं देव सब जानी ॥  
बिबिध पांति बैठी जेवनारा । लगे परदेसन निपुन सुधार ॥  
बारिहन्द सुर जेवनारा । लानी देन नारि खदु बानी ॥

क० । नारी मधुर सुर देखि सुंदरि संग बचन सुनावहीं ।  
भोजन करहिं सुर अति बिसंब विनोद सुनि कषु पावहीं ॥  
जेवन जो बखौ अनंद सो मुख कोटिछं न परै कछौ ।  
अबवाइ दोनो पान मेवने बास जह जाको रखौ ॥ १३ ॥

श्री० । मैं जाना तुम्हारे गुण बोला । कहौ सुकल अथ रघुपतिबोला  
 सुनु मुनि आजु समानेन तेरे । कहि न जाय जस मुख मन सोने  
 रामचरित अति अमित मनोधा । कहि न सकहि यत कोटि प्रहरी  
 तदपि बधाकुत कहौ बखानी । सुमिरि गिरापति प्रभु अंगुपान  
 सारद दादनादि सब खाओ । राम सुखकर अंतर भाओ  
 जेहि पर कृपा करहि जन जानी । कविचर अखिर नयावधि बानी  
 प्रनजं सोइ कृपाकु रघुनाथा । बरनजं विरह तांनु मृगनाथा  
 परम रस्य गिरिवर कैलास । सदा जहाँ शिवउमा निवास

दो० । सिद्ध तपोधन सोनि जग सुख किवर मुनिहृन्द ।  
 बखहि तहाँ सुकली सकल सेवहि शिव सुखकन्द ॥ ११२ प्रसंग ॥

श्री० । हरिहरविमुख धर्म रत नाही । ते नर तहाँ न भूँझ जाही  
 तेहि गिरि पर बट बिटप विखा । नित नूतन सुंदर सब काखा  
 विविध समोर सुधीतस हाथा । शिवविश्राम झिटप सुनि जाय  
 एक बार तेहि तर प्रभु गथज । तह विसोकि घर अति मुख भा  
 निज कर उाधि नाम रिपहाला । बैठे बखसहि संसु कृपासा  
 कुंदरंदु बर गौर कीरा । भुज प्रलाप परिधन मुनिचीरा  
 तहन चहन संसुज सम चरना । गखदुति मत्तद्वदयतमहरना  
 भुजगभृतिभूषण त्रिपुरारी । आनन सरदचंद्रकविहारी

दो० । जटा मुकुट सुरचरित शिर लोचन नलिन विद्याल ।  
 नोककंठ सावन्निधि सोइ बास निधु आल ॥ ११४ ॥

श्री० । बैठे सोइ कामरिषु कैशे । धरे सरोर बान्ना रस जैशे  
 पारवतो भलि अबसर जानी । गई संसु पदं भातु भवानी  
 जानि प्रिया आदर अति कोआ । बाम भाग आसन हर दीन्हा  
 बैठो शिव समीप हरवाई । पूरबजन्मकथा चित आई  
 पतिव्रिय छेत अधिक अनुमानो । बिहसि उमा बौखी प्रिय बानी  
 कथा जो सकल लोकहितकारी । सोइ पूजन अई सैरकुमारी  
 बिलनाथ मज नाथ पुरारी । चिभुवन महिमा विदित तुम्हारे  
 घर अह अचर भाग नर देवा । सकल करहि पदपंकजसेवा

दो० । प्रभु समर्थ सबसु शिवं सकल कला गुणधाम ।  
 योगज्ञानवैराग्यनिधि प्रमत्तकल्पतरुनाम ॥ ११५ ॥

श्री० । जो मो पर प्रसन्न सुखरासी । जानिय सत्य मोहि निज दासी  
 तौ प्रभु हरज मोर अज्ञाना । कहि रघुनाथकथा विधि जाना  
 जासु भवन सुरतह तर होई । यह कि हरिद्रजनितदुख होई



दो० । श्रीरघुनाथरूप कर भासा । परमावर्द्ध भक्ति सुख पासा ॥  
मगन ध्यानरस रस धुन धुनि मन बाहिर कोष ॥

रघुपतिकथित मनेष तव चरित वरनै लौख । ११८ ॥

चौ० । सुठौ सख बाधि किनु जाने । निमि भुजम बिनु रनु पहिचाने ॥  
जेहि जाने कम आर हेराई । जाने यथा सपन भ्रम जाई ॥  
बंदौ बाहरूप घोर राम । सब निधि सुखम जपत जस ना ॥  
मंगलभवन चमंगलचारी । द्रवो छो दसरथचरिबिहारी ॥  
करि प्रनाम रामहिं बिपुरारी । हरषि सुधा सम गिरा सचारी ॥  
धन्य धन्य गिरिराज कुमारी । तुम समान नहिं कोउ उपकारी ॥  
पूछेऊ रघुपतिकथाप्रसंगा । सकल लोक जस पात्रनि मंगा ॥  
तुम रघुवीर चरण अनुगामी । कीन्हैऊ प्रख जगतहित लागी ॥

दो० । रामतपा ते पारवती सपनेऊ तव मन माहिं ।  
सोक मोह बंदेह भ्रम मम विचार कहु नाहिं । १२० ॥

चौ० । तदपि अर्थका कीन्हैऊ सोई । कहत सुनत सब कर हित सोई ॥  
जनि हरिकथा सुनी नहिं काना । सबनरंध अहिभवन समाना ॥  
मधनम संतदरस नहिं देखी । लोचन मोरपंख कर खेखा ॥  
ते सिर कटु लूमरि सम लुखा । जे न ममन हरिगुरुपदमला ॥  
जिन हरिभक्ति हदै नहिं आनी । जीवत सब समान ते प्राणी ॥  
जो नहिं करहि रामगुन गाता । जोह सुदादुरजीह समाना ॥  
कुलिष कठोर निठुर बोद छाती । सुनि हरिचरित न जो हरपाती ॥  
गिरिजा सुनऊं राम कर लीला । सुरहित दनुजबिसोहनलीला ॥

दो० । रामकथा सुरधेनु सम सेवत सब सुखदानि ।  
संतसभा सुरलोक बंस को न सुनै अप जानि । १२१ ॥

चौ० । रामकथा सुंदर करतारी । संसय विहंग उडावनिहारी ॥  
रामकथा कलि बिटप कुठारी । सादर सुन गिरिराजकुमारी ॥  
रामनामगुनचरित सुहाये । जस कर्म अमानित क्षुति माये ॥  
यथा अर्जत राम भगवाना । तथा कथा कीरति मुन बाबा ॥  
तदपि यथाश्रुत जस मति भोरी । कहिहों देखि प्रीति जति तोरी ॥  
उमा प्रख तव बहज सुहाई । सुखद संत बंसत मुहि भाई ॥  
एक बात नहिं सोहिं थोहानी । यदपि मोह सब कंचुड अवाणी ॥  
तुम जो कथा राम कोउ आवा । जेहि क्षुति दाव धरहिं मुनिबा ॥

दो० । कहहिं सुनहिं सब अधम नर पसे जे मोह पिबाष ।  
पाषंडी हरिपदविमुख जानहिं छठ न साष । १२२ ॥

सौ० । अथ अक्रोधि संघ समग्री । काई विषय मुकुर मम खानी ॥  
 खण्ट कपटी कुटिल विषयो । खपने छ संतपना नहिं देखी ॥  
 कहहिं ते वेदअर्थमत वाणी । जिनहिं न सुख काम नहिं खानी ॥  
 मुकुर अखिन यह नयन बिहीना । रामरूप देखहिं किमि दोषा ॥  
 जिन के अगुन न अगुन विवेका । जसहिं अखित वचन अनेका ॥  
 हरिमायावस जगत भ्रमाही । तिनहिं कहत कहु अचटित नाही ॥  
 बातुल भूतविषय मतवारे । ते नहिं सोखहिं वचन संभारे ॥  
 जिन छत महा मोह मदप्राना । तिन कर कष्ट करिय नहिं कामा ॥

सौ० । अथ निज हृदय विचारि तजि संघ अज रामपद ।  
 मुनि गिरिराजकुमारि अम तम रविकर वचन मम । १० ॥

सौ० । अगुनहिं अगुनहिं नहिं कहु भेदा । गावहिं मुनि पुरान बुध वेदा ॥  
 अगुन अरूप असख संघ जोई । भक्त प्रेमवस अगुन सो होई ॥  
 जो गुनरहित अगुन सो कैसैं । जस छिमउपस विखंग नहिं जैसैं ॥  
 जासु नाम अम तिमिर पतंगा । तिहिं किमि कहिय विमोहप्रसंगा ॥  
 राम सच्चिदानंद दिनेसा । नहिं तह मोहनिवालावसेवा ॥  
 सहज प्रकाश रूप भगवाना । नहिं तह पुनि मिथ्यानिवासा ॥  
 हरष विषाद ज्ञान अज्ञाना । जीवधर्म अहमिति अभिमाना ॥  
 राम ब्रह्म व्यापक जम जाना । परमानंद परब पुराना ॥

सौ० । पुरुष प्रसिद्ध प्रकासनिधि प्रगट परात्परनाथ ।  
 रघुकुलमनि मम खामि होइ कहि सिव नाथउ माथा । १२३ ॥

सौ० । निज अम नहिं समझहिं अज्ञानी । प्रभु पर मोह धरहिं जड प्राणी ॥  
 यथा गगन खनपटल निहारो । संपेउ भागु कहहिं कुविचारी ॥  
 चितव जो खोचन अंगुलि खायें । प्रगट युगल वधि तेहि के भायें ॥  
 उमा रामविषयक अथ मोहा । नभ तम धूम धरि जिमि सोहा ॥  
 विषय करन सुर जीव समेता । सकल एक ते एक सभेता ॥  
 सब कर परम प्रकासक जोई । राम अनादि अवधपति होई ॥  
 जगत प्रकाश प्रकाशक राम । मायाधीन ज्ञानगुणधाम ॥  
 जासु सत्ताता तें जड माथा । भास सत्य द्रव मोहसहाया ॥

सौ० । रजत शीप मर्ष भाव जिमि यथा भागुकरवारी ।  
 यदपि मृषा तिष्ठ काल होइ अम न सकै कोउ टारि । १२४ ॥

सौ० । हरिविधि अम हरिवास्तिरपरी । यदपि अवश्य देत दुख अहरी ॥  
 ज्यों खपने बिर काटै कोई । बिनु जानें दुख दूरि न होई ॥  
 जासु छपा अथ अम मिटि जाई । गिरिका खेर छपालु रघुप्राई ॥  
 आदि संत कोउ जासु न पावा । सतिअनुमान निगम अथ नावा ॥  
 बिनु पद सबै सुनि बिनु काना । कर बिनु कर्ष करै विधि नावा ॥



आनखरहित सकल रसभोगी । विनु बानी बक्ता बड़ योगी  
तनु विनु परस गयन विनु देशा । यहै ध्यान विनु बाम अपेक्षा  
अस सब भाँति अलौकिक करनी । महिमा जासु जाइ भाँहि बरनी

दो० । जेहि हमि गावहिं वेद बुध जाहि धरहिं मुनि ध्यान ।

बोह दसरथसुत भक्तहित कोसलपति भगवान । १२५ ॥

सो० । कासी मरत जम्बु अवलोकी । जासु नाम सब करौं बिषोकी  
सोह प्रभु मोर चराचरस्वामो । रघुवर सब उरअंतरजामी  
बिबसहु जासु नाम नर कहहीं । जम्बु अनेक संसित अध दहहीं ।  
सादर सुमिरन जो नर करहीं । भव बारिधि गोपद द्व तरहीं ।  
राम सो परमात्मा भवानो । तहँ भ्रम अति आविहित तव बानी ।  
अस संसय आनत उरमाहीं । ज्ञान विराग सकल गुन जाहीं ।  
सुनि शिव के भ्रमभंजन बचना । मिटि गइ सब कुतर्क की रचना ।  
भइ रघुपतिपद प्रीति प्रतीतो । दाखन अमभावना बीतो ॥

दो० । पुनि पुनि प्रभुपद कमल गहि जोरि पंकज पानि ।

बोली गिरिजा बचन बर मनहुं प्रेमरस सानि । १२६ ॥

सो० । सखिकर धम सुनि गिरा तुम्हारी । मिटा मोह सरदातप भारी ॥  
तुम लपलु सब संसय धरेऊ । रामलरूप जानि मोहि परेऊ ॥  
नाथलपा अब गछेउ विषादा । सुखी भइउ प्रभुवरनप्रसादा ॥  
अब मोहि आपनि किंकिर जानो । यदपि सहज जइ नारि अयानी ॥  
प्रथम जो मै पूछा सोह कहहु । जो मो पर प्रसन्न प्रभु अहहु ॥  
राम ब्रह्म चिन्माय अविनाशी । सर्वरहित सब उरपुरवासी ॥  
नाथ धरेउ नरतनु केहि हेतु । मोहि समुझाइ कहहु बृषकेतु ॥  
उमाबचन सुनि परम विनीता । रामकथा पर प्रीति पुनीता ॥

दो० । हिछ हरषे कामारि तव संकर सहज सुजान ।

बहु बिधि उमहि प्रसंसि पुनि बोले लपा निधान । १२७ ॥

सो० । सुनु सुभ कथा भवानि रामचरित मानस बिमल ।  
कहा भुबुखि बखानि सुना विहगनाथक गहड । ११ ॥  
सोह संवाद उदार जिहि बिधि भा आगे कहव ।  
सुनहु रामचवतार चरित परम सुंदर अनघ । १२ ॥  
हरिगुणनाम अपार कथा रूप अगनित अमित ।  
मै निज मति अनुसार कहौं उमा सादर सुनहु । १३ ॥

सो० । सुनु गिरिजा हरिचरित सुहाये । विपुल बिषद निगमागम गाये ॥  
हरिचवतार हेतु जेहि सोई । इदमित्यं कहि जाइ न सोई ॥  
राम अतर्क बुद्धि मन बानी । मत हमार अब सुनहु भवानी ॥

• तदपि संत मुनि वेद पुराणा । अथ ककु कहहिं स्वमतिअनुमाना ॥  
 तस मै सुमुखि सुनावउँ तोहो । समुझि परै अस कारन मोहो ॥  
 अब जब होइ धर्म की हानी । बाढहिं असुर अधम अभिमानो ॥  
 करहिं अनोति जाइ नहिं बरनो । सोदहिं बिप्र धेनु सुर धरनी ॥  
 तब तब प्रभु धरि विविध सरोरा । हरहिं छपाणिधि बज्जनपीरा ॥  
 दो० । असुर मारि यापहिं सुरन्हि राखहिं निज स्तुतिसेतु ।

जग बिखारहिं बिषद अस रामजन्म कर हेतु । १२८ ॥

चौ० । सोइ अस गाइ भक्त भव तरहीं । छपासिंधु जनहित तनु धरहीं ॥  
 राम जन्म के हेतु अनेका । परम विचित्र एक ते एका ॥  
 जन्म एक दुइ कहैं बखानो । सावधान सुनु सुमति भवानो ॥  
 द्वारपाल हरि के प्रिय दोऊ । अथ अइ बिजय जान सब कोऊ ॥  
 विप्रस्त्राप ते दूनों भाई । तामस असुर देखे तिन पाई ॥  
 कनककनिपु अइ हाटकलोचन । जगत बिदित सुरपतिमदमोचन ॥  
 बिजयी समर बीर बिख्याता । धरि बराहवपु एक निपाता ॥  
 होइ नरहरि पनि दूसर मारा । जन प्रहसाइसुख्य विखारा ॥

दो० । भये निराशर जाइ ते महाबीर बलवान ।  
 कुंभकर्ण रावन सुभट सुरबिजयी जग जान । १२९ ॥

चौ० । मुक्त न भयेउ हते भगवाना । तोनि जन्म द्विजवचनप्रमाना ॥  
 एक बार तिन के हित लागो । धरेउ सरोर भक्तअनुरागो ॥  
 कल्प अदिति तहां पितु माता । दमरय कौसल्या बिख्याता ॥  
 एक कल्प रहि बिधि अवतारा । चरित पवित्र किये संसारा ॥  
 एक कल्प सुर देखि दुखारे । समर जलंधर सग सब हारे ॥  
 संभु कीन्ह संगाम अपारा । इनज झहावल मरै न मारा ॥  
 परम सतो असुराधिपनारी । तेहि बल ताहि न जीत पुरारी ॥

दो० । हल करि टारेउ तसु व्रत प्रभु सुरकारज कीन्ह ।  
 अब तेइ आनेउ मरम तव स्त्राप कोप करि दीन्ह । १३० ॥

चौ० । तसु स्त्राप हरि कीन्ह प्रमाना । कौतुक निधि छपालु भगवाना ॥  
 तहां जलंधर रावन भयऊ । रन हति राम परम पद देखऊ ॥  
 एक जन्म कर कारन एहा । जेहि लागि राम धरी नर देहा ॥  
 प्रति अवतार कथा प्रभु केली । सुनि सुनि बरनी कविन छेली ॥  
 • नारदस्त्राप दीन्ह इक बारा । कल्प एक तेहि जनि अवतारा ॥  
 गिरिजा चकित भई सुनि बानी । नारद बिलम्बक मुनि आनी ॥  
 कारन कवन स्त्राप मुनि दीन्ह । का अपराध रमापति कीन्ह ॥  
 यह प्रथम मोहि कहइ पुरारी । मुनिजन मोह सो अचरज भारी ॥

दो० । बोले बिहसि महेस तब जानी मूढ न कोइ ।  
जेहि जस रघुपति करहिं जस सो तब तेहि छन छोइ । १३१ ॥

सो० । कहौ रामगुणगाथ भरदाज सादर मुनज ।  
भवभजन रघुनाथ भव तुलसी तजि मान मद । १४ ॥

सो० । हिमगिरिगुहा एक अति पावनि । बह समीप सुरसरित सुहावनि ॥  
आखम परम पुनोत सुहावा । देखि देवछवि मन अति भावा ॥  
निरखि बैलखी बिपिनबिभागा । भयेउ रमापतिपद अचुरागा ॥  
सुमिरत हरिहिं आपगति बाधो । सहज बिमल मन लागि समाधो ॥  
मुनिगति देखि सुरेश डेराना । कामहिं बोलि कीन्ह समाना ॥  
सहित सहाय जाऊ मम हेतू । पलेउ हरपि हिय जलसरकेतू ॥  
सुनासोर मन मई अति चासा । सहत देवछवि मम प्रबासा ॥  
जे कामो लोखप जग माहीं । कुटिल काक रव सबहिं डेराहीं ॥

दो० । सुख हाउ खे भाग सठ खान निरखि मृगराज ।  
होनि सेइ जनि जानि जउ तिनि मुरपति हिं न लाज । १३२ ॥

सो० । तेहि आखमहिं मदन जब गयेउ । निज माया वसंत निर्मयउ ॥  
कुसुमित विविध विटप बज्ररंगा । कूजहिं कोकिल गुंजहिं भृंगा ॥  
चलो सुहावनि चिविध वयारो । कामलमानु बढावनिहारी ॥  
रंभादिक सुरनारि नवीना । सकल असमसरकलाप्रवीना ॥  
करहिं गान बज्र तान तरंगा । बज्र बिध कीडहिं पानिपतंगा ॥  
देखि सहाय मदन हरषाना । कीन्हैसि पुनि प्रपंच विधि नाना ॥  
कामकला कहू मुनिहिं न व्यापी । निज भय डरेउ मनोभव पापी ॥  
सोम कि आपि सके कोउ तपसु । बड रखवार रमापति जासु ॥

दो० । सहित सहाय समीठ अति मानि हारि मन मै ।  
महेसि जाइ मुनिवरचरण कहि मुठि प्रारत बै । १३३ ॥

सो० । भयेउ न नारदमन कहू रोषा । कहि प्रिय बचन काम परिताषा ॥  
नार चरन खिर आबसु पाई । गयेउ मदन तब सक्षित सहाई ॥  
मुनि सुखोसता आपनि करनी । सुरपतिप्रभा जाइ सब बरनी ॥  
मुनि सब के मन आचरन आवा । मुनिहिं प्रसंसि हरिहिं खिर लावा ॥  
तब नारद मने बिज पाहीं । जोति काम अहमिति मन माहीं ॥  
बारचरित संकरहिं सुहावा । अति प्रिय जानि महेस दिखावा ॥  
बार बार बिनवज्र मुनि तोषी । बिमि यह कथा सुनायउ मोषी ॥  
तिनि जनि हरिहिं सुहावज्र कवज । चलेउ प्रपंच दुरायज तवज ॥

दो० । संभु दीन उपदेश दित ब्रह्म नारदहि मुखा ।  
भरदाज कौतुक बलज हरिदया बलदाय । १३४ ॥

दो० । राम कीन्ह चाहै मोह होई । करै अन्यथा अस नहिं कोई ॥  
 संभुबचन मुनिमनहिं न भाये । तब विरंचि के लोक सिधाये ॥  
 एक वार करतल सर धीना । मानत हरिगुन मानप्रवीना ॥  
 कीरनिधु गवने मुनिनाथा । जहं बस खीनिवास सुनिमाथा ॥  
 हरपि मिले उठि रमानिकेता । बैठे आसन अविधि समेता ॥  
 बोले विहसि सरासरराथा । बज्रत दिनहिं कीन्ही मुनि दाथा ॥  
 कामचरित नारद सब भाये । यद्यपि प्रथम वरजि शिव राधे ॥  
 अति प्रचंड रघुपति को माथा । जेहि न मोह अस को जन जाथा ॥

दो० । रुख बदन करि बचन मृदु बोले खीनगवान ।  
 तुम्हरे सुमिरन ते मिटाई मोह मार मद मान । १३५ ॥

चौ० । सुनु मुनि मोह छोड़ मन ताके । ज्ञान विराग हृदय नहिं जाके ॥  
 ब्रह्मचर्यव्रत रत मतिधोरा । तुमहिं कि करै मनोभव पीरा ॥  
 नारद कहेउ सहित अभिमाना । छपा तुम्हारि सकल भगवाना ॥  
 कहनानिधि मन दीख विचारी । उर अंकुरेउ गर्बतह भारी ॥  
 बेगि सो मैं डारिछौं उपारी । प्रन हमार सेवकहितकारी ॥  
 मुनि कर हित मम कौतुक होई । अवसि उपाय करव मैं सोई ॥  
 तब नारद हरिपद चिर नाई । चले हृदय अहमितिअधिकारि ॥  
 खीपति बिज माथा तब प्रेरी । सुनऊ कठिन करनी तेहि करी ॥

दो० । विरचेउ मगु महं नगर तेहि सत योजन विस्तार ।  
 खीनिवासपुर तें अधिक रचन विविध प्रकार । १३६ ॥

चौ० । बसहिं नगर सुंदर नर नारी । अनु वज्र मनसिज रति तनुधारी ॥  
 तेहि पुर बसै खीलनिधि राजा । अगमित हय गज सेन समाजा ॥  
 सत सुरेश सम बिभवविलासा । रूपतेजबलनीतिनिवासा ॥  
 विखमोहनो तासु कुमारी । खी विमोह जेहि रूप निहारी ॥  
 सो हरिमाथा सब गुनखानी । सोभा तासु कि जाह बखानी ॥  
 करै स्वयंवर सो अथवासा । आये तहं अगमित महिपासा ॥  
 मुनि कौतुकी नगर तेहि नयज । पुरवाणिन बन वृक्षत भयज ॥  
 मुनि सब चरित भूपरद आये । करि पूजा सब मुनि बैठाये ॥

दो० । आनि देखै नारदहिं भूपति राजकुमारि ।  
 कहऊ नाथ गुन दोष सब इति कर कह्य विचारि । १३७ ॥

चौ० । देखि राम मुनि चिरति निहारी । बड़ी बात खनि रहे निहारी ॥  
 बचन तासु बिकोकि सुकाने । हरत हय नहिं प्रगट प्रकाने ॥  
 जो इति वरै असर सो होई । समरकति तेहि नीत न कोई ॥

बेवहिं स कल सगार ताही । बरै सोलनिधि कन्या जाही ॥  
 लच्छन सब विचारि उर राखे । ककुब बनाइ भय सन भाषे ॥  
 सुता मुलच्छनि कहि न्यपमाहीं । नारद सले सोस मन माहीं ॥  
 करौ जाइ सोइ यतन विचारी । जेहि प्रकार मोहि बरै कुमारी ॥  
 जप तप कहु न होइ इहि काला । हे विधि मिलै कवन विधि बाला ॥

दो० । इहि अवसर चाहिय परम सोभा रूप बिसाल ।  
 जो बिलोकि रीझै कुंवरि तब मेलै जयमाल । १३८ ॥

चौ० । हरि सन मांगौ सुंदरताई । होइहि जात गह्वर अति भाई ॥  
 मोरै हित हरि सम नहिं कोऊ । इहि अवसर सहाय सो होऊ ॥  
 बज्र विधि विनय कीन्ह तेहि काला । प्रगटै प्रभु कौतुकी कृपासा ॥  
 प्रभु बिलोकि मुनिनयन जुड़ाने । होइहि काज हिये हरषाने ॥  
 अति आरत कहि कथा सुनाई । करज कृपा प्रभु होऊ सहाई ॥  
 आपन रूप देख प्रभु मोही । आन भांति नहिं पावउं ओही ॥  
 जेहि विधि नाथ होइ हित मोरा । करो सो बेगिदास मैं तोरा ॥  
 निज मायाबल देखि बिसाला । हिय हंसि बोले दीनदयाला ॥

दो० । जेहि विधि होइहि परम हित नारद सुनऊ तुम्हार ।  
 सोइ हम करव न आन कहु बचन न मृषा हसार । १३९ ॥

चौ० । कृपय मांगु रजव्याकुल रोगी । बैद न देइ सुभक्त मुनियोगी ॥  
 इहि विधि हित तुम्हार मैं ठयऊ । कहि अस अंतरहित प्रभु भयऊ ॥  
 मायाबिबस भये मुनि मूढा । समझौ नहिं हरिगिरा निगूढा ॥  
 गवने तुरत तहां छपिराई । जहां स्वयंवरभूमि बनारै ॥  
 निज निज आसन बैठे राजा । बज्र बनाव करि महित समारै ॥  
 भुनिमन हर्ष रूप अति मोरै । मोहि तजि आन बरिहि माह भोरै ॥  
 मुनिहितकारन कृपानिधाना । दीन्ह कुरूप न जाइ बखाना ॥  
 सो चरित्र लखि काऊ न पावा । नारद जानि सबहि सिर नावा ॥

दो० । रहे तहां दुइ बज्रगन ते जानहिं सब भेद ।  
 बिप्रभेष देखत फिरहिं परम कौतुकी तेव । १४० ॥

चौ० । जेहि समाज बैठे मुनि जाई । हृदय रूप अहमिति अधिकारै ॥  
 तहं बैठे महेशगन दोऊ । बिप्रभेषगति लखै न कोऊ ॥  
 करहिं कूट नारदहिं सुनाई । नीकि दीन्ह हरि सुंदरताई ॥  
 रीझिहि राजकुंवरि कबि देवी । इनहिं बरिहि हरि जानि बिसेवी ॥  
 मुनिहि मोह मन हाथ पराखे । हंसहिं संभुगन अति सपु पाखे ॥  
 यदपि सुनहिं मुनि अटपटि बाणी । समझि न परै बुद्धि भ्रमसानी ॥  
 नारद न लखत भौं चरित्र बिसेवी । सो स्वरूप न्यपकन्या देवी ॥

मर्कटवदन् अथंकर देही । देखत हृदय क्रोध भा तेही ॥

दो० । सखी संग लै सुंवरि तब चलि अनु राजमराल  
देखति फिरै महीप सब कर सरोज कलमाळ । १४१ ॥

चौ० । जेहि दिशि बैठे नारद फूलो । सो दिशि तेद न बिलोकी मूली ॥  
पुनि पुनि मुनि वकचहिं अनुसाही । देखि दसा हरगन मुसकाही ॥  
धरि नृपतनु तहं गयउ जवाला । सुंवरि हरषि मेलेउ जयमाला ॥  
दुलहिनि लै गौ लच्छिनिबासा । नृपसमाज सब भयेउ निरासा ॥  
मुनि अति बिकल मोह मति गाठो । मनि गिरि मई झूटि अनु गांठो ॥  
तब हरमन बोले मुसकाई । निज मुख मुकुर बिलोकउ जाई ॥  
अस कहि दोउ भागे भय भारो । बदन दोख मुनि वारि निहारी ॥  
भेव बिलोकि क्रोध अति बाढ़ा । तिनहिं खापे दोन्हा अति गाढ़ा ॥

दो० । होऊ निमाचर जाइ तुम कपटी पापी दोउ  
हसेऊ हमहिं सो लेऊ फल बज्जरि हसेउ मुनि कोउ । १४२ ॥

चौ० । पुनि जल दोख रूप निज पावा । तदपि हृदय संतोष न आवा ॥  
फरकत अधर कोप मन माहीं । सपदि चले कमलापति पाहीं ॥  
देहौं खाप कि मरिहौं जाई । जगत मोरि उपहास कराई ॥  
बोचहिं पंथ मिले दनुजारी । संग रमा सोइ राजकुमारी ॥  
बोले मधुर वचन सुरसाई । मुनि कहं चले बिकल को नारै ॥  
सुनत वचन उपजा अति क्रोधा । माया बस न रहा मन बोधा ॥  
पर संपदा सकळ नहिं देखी । तुमरे ईर्या कपट विमेषो ॥  
मथत सिंधु रुद्रहिं बौरायेऊ । सुरन प्रेरि बिष पान करायेऊ ॥

दो० । असुर मुरा बिष संकरहिं आपु रमा मनि चाह  
खारथमाधक कुटिल तुम सदा कपट व्यवहार । १४३ ॥

चौ० । परम स्वतंत्र न मिर पर कोई । भावै मनहिं करऊ तुम सोई ॥  
भलेहिं मंद मंदहिं भल करळ । विमय हर्ष न हिद्य ककु धरळ ॥  
उहकि उहकि परिकेऊ सब काळ । अति असंक मन सदा उहाळ ॥  
कर्ष सुभासुभ तुमहिं न बाधा । अब लगि तुमहिं न काळ साधा ॥  
भले भवन अब बायन दोन्हा । पावजगे फल आपन कीन्हा ॥  
बंछेऊ मोहि जवन धरि देहा । सोइ तनु धरऊ खाप मम येहा ॥  
कपिआकृति तुम कोन हमारी । करिहहिं कोस सहाइ तुम्हारी ॥  
मम अपकार कोन तुम भारी । नारिबिरह तुम होव दुखारी ॥

दो० । खाप सोस धरि हरषि हिद्य प्रभु सुरकारज कोन  
निज माया की प्रवृत्ता करपि कृपानिधि कोन । १४४ ॥

चौ० । जब हरि माया दूरि निवारी । नहिं तहं रमा न राजकुमारी ॥

तव मुनि अति यभोत हरिचरना । गहे पाछि प्रगतारत हरना ॥  
 मया होउ मम साप छपाखा । मम दृष्टा कह दीन दयाखा ॥  
 मै दुर्वचन कहेउ बज्जतेरे । कह मुनि पाप मिटहिं किमि मेरे ॥  
 अपज्ज जाइ संकर सतनामा । होइहि हृदय तुरत विस्वामा ॥  
 कोउ नहिं सिव समान प्रिय मोरे । अस प्रतीति त्वागेज्ज अनि भोरे ॥  
 जेहि पर कृपा न करहिं पुरारी । सो न पाव मुनि भक्ति हमारी ॥  
 अब छर धरि महि बिचरज्ज जाई । अब न तुमहिं माया नियरार्ह ॥

दो० । बज्ज विधि मुनिहिं प्रबोधि प्रभु तव भये अंतर्धान ।  
 सत्यलोक नारद पछे करत रामगुन गान । १४५ ॥

चौ० । हरगन मुनिहिं जात पय देखी । विगतमोह मन हर्ष बिसेधी ॥  
 अति सभोत नारद पद्य पाये । गहि पद आरत बचन सुनाये ॥  
 हरगन हम न विप्र मुनिराया । बज्ज अपराध कोन्ह फल पाया ॥  
 साप अनपद्य करज्ज छपाखा । बोले नारद दीनदयाखा ॥  
 निसिचर आच होइ तुम दोऊ । बैभव बिपुल तेज बल होऊ ॥  
 भुजबल बिस्र जितव तुम अहिआ । धरिहहिं दिखु मनुजतनु तहिआ ॥  
 समर मरन हरिहाय तुम्हारा । होइहज्ज मुक्त न पुनि संसारा ॥  
 पछे युगल मुनिपद सिर नाई । भये निसाचर कालहिं पाई ॥

दो० । एक कल्प इहि चेतु प्रभु लीन्ह मनुजचवतार ।  
 सुररंजन सज्जनसुखद हरि भंजन भुभार । १४६ ॥

चौ० । इहि विधि जन्म कर्म हरि करे । सुंदर सुखद बिचित्र घनेरे ॥  
 कल्प कल्प प्रति प्रभु चवतरहों । चार चरित नामा विधि करहों ॥  
 तव तव कथा मुनीसन गार्ह । परम पुनोत बिचित्र सुहार्ह ॥  
 विविध प्रसंग अनूप बखाने । करहिं न मुनि आचरज सयाने ॥  
 हरि अनंत हरिकथा अनंता । कहहिं सुमहिं बज्ज बिधिसुति संता ॥  
 रामचन्द्र के चरित सुहाये । कल्प कोटि कगि जाहिं न गाये ॥  
 यह प्रसंग मै कहा भवानो । हरिमाया मोहहिं मुनि जानो ॥  
 प्रभु कौतुकी प्रगतहितकारी । सेवत सुखम सकल दुखहारी ॥

सो० । सुर नर मुनि कोउ नाहिं जेहि न मोह माया प्रबल ।  
 अस बिचारि मन माहिं भजिय महाभाषापतिहिं । १५ ॥

चौ० । अपर चेतु सुनु बैलकुमारी । कहौं बिचित्र कथा बिसारी ॥  
 जेहि कारण सब अगुन अनूपा । ब्रह्म भये कोसल पुरभूपा ॥  
 जो प्रभु बिचिनि किरत तुम देखा । बंधु समेत किये मुनिभेदा ॥  
 जासु चरित अबकोकि भवानी । सतीसरीर रहिउ औरानी ॥

• अजङ्ग न काया मितति तुभारी । तासु चरित सुनु भयदचकारी ॥  
 सीता कीन्ह जो तेहि अवतारा । सो सब कहिहौ मति अनुकारी ॥  
 भरदास सुनि संकरवाजी । सकुचि सप्रेम कसी सुसुकारी ॥  
 लगे बहुरि बरनै लखकेतु । सो अवतार भयद जेहि प्रेता ॥

हो० । सो मैं तुम सब कहौ सब सुनु मुनीस मन कार ।  
 रामकथा कलिमखहरनि मंगलकरनि मुहार । १४७ ॥

हौ० । स्वार्थभू मनु सब वतकृपा । जिन ते भइ नरसहि चरुपा ॥  
 दंपतिधर्म आचरण जीका । अजङ्ग गाव सुति जिन की सीका ॥  
 नृप उत्तानपाद सुत तारु । भुव हरिभक्त भव सुत कासु ॥  
 लघुसुतनाम प्रियजन ताही । वेद पुराण प्रसंगत काही ॥  
 देवहूति पुनि तासु कुमारी । जो मुनि कर्दम की प्रिय नारी ॥  
 आदि देव प्रभु दोनदयाला । जठर धरेज जेहि कपिल कृपाळा ॥  
 सांख्यसाम्प्र जिन प्रमट बखाना । तत्त्वविचारनिपुन भगवाना ॥  
 तेह मनु राज कीन्ह बज्र काळा । प्रभुआयसु बज्र विधि प्रतिपाळा ॥

हो० । होइ न बिषय विराग भवन बसत भा चौधपन ।  
 हृदय बज्रत दुख लाग जका मखड हरिभक्ति विन । १४८ ॥

हौ० । बरबस राज सुतहिं तव दोन्हा । नारि समेत गवय वन कीन्हा ॥  
 तोरय वर जैमिष बिख्याता । अति पुनोत साधकछिदिदाता ॥  
 बमहिं जहां मुनि सिद्धसमाजा । तहं हिय हरचि पखे मनु राजा ॥  
 पंथ जात सोहहिं मतिधोरा । ज्ञान भक्ति अनु धरे खरीरा ॥  
 पङ्कजे जाइ धेनमति तोरा । हरचि नहाने निर्वास नीरा ॥  
 आये मिलन सिद्ध मुनि ज्ञानी । धर्मधुरंधर बप खचि जानी ॥  
 जहं जहं तोरय रचे सुहाये । मुनिन सकल साहर करवाये ॥  
 छसखरी मुनिपटपरिधाया । संतसभा गित सुनिहिं पुरोया ॥

हो० । दादस अखर मंच वर अपहिं सहित अनुराग ।  
 बासुदेवपद पंखुल दंपतिमन अति लाग । १४९ ॥

हौ० । करहिं अहार साक फल कंदा । सुमिरहिं ब्रह्म सचिदानंदा ॥  
 पुनि हरि हेतु करन तप लागे । वारिअहार मूक फल लागे ॥  
 जर अमिलाव निरंतर होई । देखिअ मखन परम प्रभु कोई ॥  
 अमन अखंड अमंत अनादी । जेहि चिंतहिं परमारथवादी ॥  
 नेति नेति जेहि वेद निरुपा । सिदानंद निरुपाधि अनुपा ॥  
 बंधु विरंचि बिष्णु भगवाना । उपजहिं जासु बंध ते नामा ॥  
 ऐसे प्रभु सेवकबध कहहौ । भक्त हेतु सीता तनु लहौ ॥  
 जौं यह बचन सत्य सुति भाषा । तौ हमार पूजिहिं अमिलाषा ॥



दो० । इहि विधि बोते बरष वट सहस्र बारि आहार ।  
समत सत सहस्र पुनि रहे समीरअधार । १४८ ॥

चौ० । बरष सहस्र दस त्तानेउ सोऊ । ठाढ़े रहे एक पग मज्जा ॥  
विधि हरि हर तप हेखि अपारा । मनु समीप आये बड्ड भारा ॥  
मांगऊ बर बड्ड भांति सुभाये । परम धीर नहि चलिहि चलाये ॥  
अस्त्रिमात्र होइ रक्षा सरीरा । तदपि मनामपि नहि मन पोरा ॥  
प्रभु सर्वज्ञ दास निज जानी । गतिअनन्य तापस व्यप रानी ॥  
मांगु मांगु बर भर नभ बानी । परम गंभीर कृपासुतमानी ॥  
सुतकजिआवनि गिरा सुहाई । सखनरत्र होइ घर जब आई ॥  
छट पट तन भयेउ सुहाये । मानऊ अबहि भवन ते आये ॥

दो० । खवन सुधा सम बचन मुनि पुलक प्रफुलित गात ।  
बोले मनु करि दंडवत प्रेम न हृदय समात । १५० ॥

चौ० । मुन सेवक सुगतर सुरधेनु । विधि हरि हर बंदित पदरेनु ॥  
सेवत सुलभ सकलसुखदायक । प्रनतपाल सचराचरनायक ॥  
जौ अनाद्यहित हम पर नेह । तौ प्रसन्न होय यह बर देख ॥  
जो सरूप ब्रह्म शिव मन माहीं । जेहि कारन मुनि जतन कराहीं ॥  
ओ भुसुडिमनमानसहंसा । समुन अगुन जेहि निगम प्रसंसा ॥  
देखहि हम सो रूप भरि लोचन । कृपा करऊ प्रनतारतिमोचन ॥  
दंपतिबचन परमप्रिय लागे । मृदुल बिनीत प्रेमरसपागे ॥  
भक्तबल्लभ प्रभु कृपा निधाना । बिस्वबास प्रगटे भगवाना ॥

दो० । नीलसरोइह नीलमनि नील नीरधर स्याम ।  
लाजहि तनु सोभा निरखि कोटि कोटि सत काम । १५१ ॥

चौ० । सरदमयंकवदन कदिसीवां । चारु कपोल चिबुक दर सीवां ॥  
अधर अहन रद सुंदर नासा । बिधुकर निकरविनिंदक नासा ॥  
नव प्रमंजु अंबकहवि नीकी । चितवनि ललित भावती नी की ॥  
भकुटि मनोबचापलबिहारी । तिलक ललाट पटल दुनिकारी ॥  
कुंडल मकर मुकुट शिर आजा । कुटिल केस जनु मधुपसमाजा ॥  
घर सीवला हरि ब्रह्मनासा । पदिकहार भवज मनिलासा ॥  
केरिकांधर पाद अनेल । बाजबिभूषण सुंदर नेल ॥  
करिकर कदिव प्रभुभ भुजदंडा । कटि निबंभ कर सर कोदंडा ॥

दो० । तखिमविनिंदक पीत पट चदर रेख बर सीनि ।  
पाणि मनोहर सीति जनु समुनभंवरकवि सीनि । १५२ ॥

चौ० । पदराजीव वरनि नहि आहीं । मुनिमन मधुप बसहि जेहि माहीं ॥  
बांभमान सोभति चनुकुआ । आदिसक्ति कविनिधि जनमूखा ॥

जासु अंग उपजहि गुनखानी । अनजित उमा रमा प्रह्वानी ॥  
 मृदुटिविखास जासु अंग होई । रामबामदिधि सीता सोई ॥  
 लविसमद्र हरिरूप बिलोकी । दकटकरहे बचनपट रोकी ॥  
 चितवहि सादर रूप अनूपा । दृष्टि न मानहि मनु सतकपा ॥  
 हर्षविवम तनुदशा भुखानी । परे इन्ह इव गहि पद पानी ॥  
 सिर परने प्रभु निज करकंजा । तुरत उठाये कहनापुजा ॥

दो० । बोले कृपानिधान पुनि अति प्रसन्न मोहि जानि ।  
 मांगज्ज वर जोइ भाव मन महादानि अनुमानि । १५२ ॥

चौ० । सुनि प्रभु बचन जोरि सुग पानी । धरि धीरज बोले मृदुवानी ॥  
 नाथ देखि पद कमल तुम्हारे । अब पूजे सब काम हमारे ॥  
 एक लालसा बड़ि मन माहीं । सुगम अंगम कहि जात सो माहीं ॥  
 तुमहि देत अति सुगम गुसाई । अंगम लागु मोहि निज कपिनाई ॥  
 यथा दरिद्र विबुधतह जाई । बज्र संपति मांगत मकुसाई ॥  
 तासु प्रभाव न जानै सोई । तथा हृदय मम संसय होई ॥  
 सो तुम जानज्ज अन्तरजामी । पुरबज्र मोर मनोरथ स्वामी ॥  
 सकुच बिहारी मांग नृप मोहीं । मोरे नहि अदेय कहु तोहीं ॥

दो० । दानि सिरोमनि कृपानिधि नाथ कहौ सतभाव ।  
 चाहौ तुमहि समान सुत प्रभु सन कवन दुराव । १५३ ॥

चौ० । देखि प्रीति सुनि बचन अमोले । एवमस्तु कहनानिधि बोले ॥  
 आप सरिस खोजौ कहं जाई । नृप तब तनय होइ मैं आई ॥  
 सत रूपहिं बिलोकि कर जोरे । देवि मांगु वर जो रुचि तोरे ॥  
 जो वर नाथ चतुर नृप मांगा । सोइ कृपालु मोहि अति प्रिय लागे ॥  
 प्रभु परंतु मुठि होति ठिठाई । यदपि भक्तहित तुमहि सुचाई ॥  
 तुम ब्रह्मादिकनक जगलामी । ब्रह्म सकल वर अंतर जामी ॥  
 अथ समुद्रत मन संसय होई । कहा जो प्रभु प्रमाण पुनि सोई ॥  
 ये निक भक्त नथि तब अहं । जो मुख पतविं सो अति लहई ॥

दो० । सोर सुख सोइ गति सोइ भगति सोइ निज वरन वनेज ।  
 सोइ विवेक सोइ रहति प्रभु मोहि कृपा करि देज । १५४ ॥

चौ० । सुनि मृदु गूढ रचिर वर रचना । कृपामिधु बोले खदु कपना ॥  
 जो कहु रुचि तुम्हरे मन माहीं । मैं सो दोन सन संसय माहीं ॥  
 मातु विवेक अलौकिक तोरे । कवज न निदिधि अनुभव मोरे ॥  
 बहि चरन मनु कहेउ बहोरो । नृप एक निजनी प्रभु मोरो ॥  
 सतविबधक तब पद रति होज । मोहि वर माग कहौ किन कोज ॥

मनि विनु पनि निमि बस विनुभीमा ॥ मम जीवन निमि तुमहि अधीना ॥  
 संस वर मांनि चरन गहि रहैऊ ॥ एवमसु कहनामिधि कहेऊ ॥  
 अब तुम मम अनुवासन मानौ ॥ बसउ जाइ सुखतिरजधानी ॥  
 सो० । तहँ करि भौन बिसास सत भये कहु कासपनि ॥  
 होरहुउ अवधमयास तव मै होव तुम्हार सुत ॥ १८ ॥

सौ० । दृष्टामस नरमेव संवारे ॥ होरहौ प्रगट निकेत तुम्हारे ॥  
 संस वसित देख धरि ताता ॥ करिहौ चरित भक्त सुदाता ॥  
 जे मनि सादर नर बडु आनी ॥ भव तरिहहि ममता मई त्यागी ॥  
 अ दिवनि जेहि कम उपजाया ॥ सोउ अवतरहि कोरि यह माया ॥  
 पुरउव मै अभिसास तुम्हारा ॥ सत्य सखि प्रन सत्य हमारा ॥  
 पुनि पुनि अस कहि कृपाणिधाना ॥ अन्तधान भये भगवाना ॥  
 दंपति उर धरि भक्ति कृपासा ॥ तेहि आसम निवसे कहु कासा ॥  
 समय पाद तनु तजि अनयासा ॥ जाइ कीच अमरावति बासा ॥

दो० । यह इतिहास पुनौ अति समधिं कहेउ हृषिकेतु ॥  
 भरद्वाज सुनु अपर पुनि रामकथा कर हेतु ॥ १५६ ॥

सौ० । सुनु मनि कथा पुनौ पुरानी ॥ जो गिरिजा प्रति मनु बखानी ॥  
 बिस बिदित इक केकय देख ॥ सत्यकेतु तहँ बसै नरसु ॥  
 धर्मधर धरि मीतिनिधाना ॥ तेज प्रताप भौल बलवाना ॥  
 तेहि के भये बगलसुत बीरा ॥ सबगुनधाम महारमधीरा ॥  
 राजधानी जेठे सुत आहो ॥ नाम प्रतापभानु अस ताहो ॥  
 अपर सुतहिं अरिमदन नामा ॥ भुजबल अतुल अचल संयामा ॥  
 भादहि भाद परस्पर प्रीतो ॥ सकल दोष हल बर्जित रीतो ॥  
 जेठे सुतहिं राज रूप दीन्हा ॥ हरिहित आपु गवन वन कोन्हा ॥

दो० । जब प्रतापरवि भयउ नृप पिरी दोहाई देख ॥  
 प्रजापाल अति वेदविधि कतऊ गही अवसेस ॥ १५७ ॥

सौ० । उपहित कारक सचिव मुजाना ॥ नाम धर्मरक्षि मुकुन्धमाना ॥  
 सचिव सधान बंधुबल बीरा ॥ आपु प्रतापपुंज रमधीरा ॥  
 सेन संग अतुरंग अपारा ॥ अमित सुभट सब समर जुझारा ॥  
 सेन बिलोकि राउ हरवाना ॥ यह बाजे गरुडे निसावा ॥  
 विजय हेतु फटकाइ बनाई ॥ बुद्धि बाधि उप अखेस बनाई ॥  
 यह तहँपरी अनेक करारै ॥ जीते सकल भूप परिपारै ॥  
 सत दीप भुजबल उप श्रीका ॥ लै सै हंउ हावि उप दीन्हा ॥  
 सकल अवनिमय तंनि कासा ॥ एक प्रतापभानु अविपासा ॥

दो० । लख बिस करि बाहुबल निज पुर कीन्हे प्रवेश ॥

सर्वधर्ममाजि सुख वेगहि सब मोह । १५८ ॥

सौ० । भूप भगवान् भव पाई । कामधेनु भर भूमि सुहाई ॥  
 सब दुख नहिनि प्रजा सुहाई । धर्मदोल मुंदर भर मोह ॥  
 सचिव धर्मदहि हरिपद जीतो । उपहित हेतु सिखावत जीतो ॥  
 गुरुवर मन्त्र पितर मन्त्रिदेवा । करै सदा सब सब की सेवा ॥  
 भूपधर्म जे वेद बखाने । सकल करै सादर सुखमाने ॥  
 दिन प्रति हेर विविध विधि दाना । सुखे साक्षर हर वेद पुराणा ॥  
 नामा वापी रूप तजाना । सुमन बाटिका सुंदर बाना ॥  
 विप्रभवन सुरभवन सुहाये । सब तीरथन विविध बनाये ॥

दो० । जहं जगि करै पुरान कुति एक एक सब धाम ।  
 बार सबस सबस नृप किये सहित अनुराम । १५९ ॥

सौ० । हृदय न कहु फल फलसंधाना । भूप विवेकी परम मुजाना ॥  
 करै जो धर्म कर्म मन बानी । बासुदेव अर्पित नृप जानी ॥  
 चढि बर बाजि बार दैक राजा । मृगया कर सब बाजि समाजा ॥  
 बिछावल गंभीर बन गजज । मृग पनीत बज्र मारत भयज ॥  
 फिगत विभिनि नृप दोख बराज । जनु बत दुरेख सचिहि सचि राज ॥  
 बड़ बिधु नहिं समात मुख माहीं । मनउं क्रोध बस उगलित माहीं ॥  
 कौल कराल दसनकविगार्द । तनु बिचास पोवर अधिकार्द ॥  
 घुसघुरात हयभारव पायें । चकित बिलोक्त कान उठावें ॥

दो० । मोल महीधरसिखर सम देखि बिचास बराज ।  
 सपरि चलेउ हय सटुकि नृप हांकि ब होर निबाज । १६० ॥

सौ० । आवत देखि अधिकरव बाजी । रसा बराज महतगति भाजी ॥  
 तुरत कोन्ह नृप सरसंधाना । महि बिलि नयेउ बिलोक्त बाजा ॥  
 तकि तकि तोर महीस चलावा । करि बस सुचर करीर बचावा ॥  
 प्रगटत दुरत बार मृग भाजा । रिसबस नृप चलेउ बस बाजा ॥  
 गयेउ दूरि धन गहन बराज । जहं माहीं मकवानिनिबाज ॥  
 अति अकेल बन बिपुल कषेस । तदपि न मृगमन तजै नरेस ॥  
 कोल बिलोकि भूप बड़ भोरा । भाजि पैठ निरिमुखा गंभीरा ॥  
 अगम देखि नृप अति पक्षितार्द । खिरेउ मृगमन परेउ सुहाई ॥

दो० । खेदबिष हयिनि कुपित राजा बाजि बलेस ।  
 खोजत बासुब करित बर बस निनु भयेउ अनेस । १६१ ॥

सौ० । खिरत विभिनि बासुन दक देवा । तहं बस बजति कपटमुनिदेवा ॥  
 बासु देव बस कीन्ह सुहाई । समर सेन तजि नयेउ पराई ॥  
 समर प्रतापमानु कर बाजी । बासुन अति कपटमन मुजानी ॥

गये उ न गृह मग वज्रत गलानी । मिला न राजहि नृप अभिमानी ॥  
 रिख उर मारि रंक जिमि राजा । बिपनि बसै तापस के साजा ॥  
 तासु समीप गवन नृप कीन्हा । यह प्रतापरवि तेह तब चीन्हा ॥  
 राउ दृषित नहि सो परिचाना । देखि सुभेव महामनि जाना ॥  
 उतरि तुरग ते कीन्ह प्रणामा । परम चतुर न कहैउ निज नामा ॥

दो० । भूपति दृषित बिलोकि तेह सर सर दीन्ह देखाइ ।

मज्जन पान समेत हय कीन्ह नृपति हरपाइ । १६२ ॥

चौ० । गै खम सकल सुखी नृप भयज । निज आखम तापस के गयज ॥  
 आसन दीन्ह अस्त्र विजानी । पुनि तापस बोला कहू बानी ॥  
 को तुम कस बन फिरज अकेले । सुंदर युवा जीव पद ले ॥  
 चक्रवर्ति के लखन तोरे । देखत दया लागि ति मोरे ॥  
 नाम प्रतापभागु अवनीसा । तासु सखि मे सुख मुनीसा ॥  
 फिरत अहेरहि परेउ मुछाई । बड़े भाग्य देखेउ को आई ॥  
 हम कई दुख भइ दरस तुम्हारा । जानत हौ कहू भल होनिहारा ॥  
 कह मुनि तात भयेउ बिधिहारा । योजन सत्तर नगर तुम्हारा ॥

दो० । निजा घोर गंभीर बन पंथ न सुख सुजान ।

बसज आजु अब जानि तुम जायेऊ होत किहान । १६३ ॥

तुलसी जसि भक्तिवता तेरे निके सहाय ।

आपु न चाहे ताहि पै किं ताहि तहां लेजाय । १६४ ॥

चौ० । अलेहि नाथ आयसु धरि सीसा । बांधि तुरग तह बैठ महीसा ॥  
 नृप वज्र भांति प्रसवेउ ताही । चरन बंदि निज भाग्य सराही ॥  
 पुनि बोलेउ गृह निरा सुहाई । जानि पिता प्रभु करै ठिठारै ॥  
 मोहि मुनीस सुत सेवक खानी । नाथ नाम निज कहऊ बखानी ॥  
 तेहि न जान नृप नृपहिं हो जाना । भूप सुहृदसु को कपट सधाना ॥  
 बैरी पुनि हूचो पुनि राजा । कलबल कीन्ह यहै निज काजा ॥  
 समझि राजसुख दुखित अरातो । अवा अनल हव सुजगै जातो ॥  
 सरल बचन नृप के सुनि जाना । बधर संभारि हृदय हरवाना ॥

दो० । कपट बोरि बानी सुकुल बोलेउ युक्ति समेत ।

नाम हमार भिखारि अब निर्धन रहित निकेत । १६५ ॥

चौ० । कह नये जे बिज्ञाननिधान । तुम बारिखे मलित अभिमाना ॥  
 बड़ा अपनपौ रहहिं दुगयें । अब बिधि कुसल कुभेव नगयें ॥  
 तेहिं ते कहहिं संत सुनि टैरे । परम अकिंचन प्रिय हरि केरे ॥  
 तुम सम अधन भिखारि अगेहा । होत बिरंचि सिवहिं बंदेशा ॥  
 बोसि बोसि तब चरन नमामी । मो पर कृपा करिय अब खामी ॥

- सच प्रीति भूपति की देवी । आप विषे बिस्वास बिसेवी ॥  
 सब प्रकार रामहिं अपनाई । बोलेउ अधिक समेह जगनाई ॥  
 सुन सति भाव कहीं मदिपाठा । रहां बसत बीते बड काळा ॥
- दो० । अब लजि मोहि व निसेउ कोउ मै न जगायेउ काउ ।  
 लोकेसायता भ्रम कर तप कानन दाउ । १६६ ॥
- सो० । तुलसी देखि सुखे भूषहिं मूढ़ न चतुर नर ।  
 सुंदर कीकिहिं ऐखि बचन सुधा सम अमन चरि । १८ ॥
- चौ० । तात गुन रहौ जग माहीं । हरि तजि किमपि प्रयोजन माहीं ॥  
 प्रभु जानत सब बिनिहिं जगये । कहउ कवन बिधि लोक रिहाये ॥  
 तुम सुचि सुमति परम प्रिय मोरे । प्रीति प्रतीति मोहि पर तोरे ॥  
 अब जो तात दुराखें सोही । दाहन दोष हरे प्रति सोही ॥  
 जिमि जिमि तापस कहे बडाबा । तिमि तिधि अपहिं होइ बिस्वासा ॥  
 देखा स्वयं कर्म मन बानी । तब बोला तापस प्रकाशानी ॥  
 नाम हमार एकतनु भाई । सुनि तब बोलेउ मुनि चिर नाई ॥  
 कहउ नाम कर कहे बखानी । मोहि सेक सति आपस जानी ॥
- दो० । पाँदि छटि जेवनी अबै तब वतपति भद्र मोरि ।  
 नाम एकतनु नेह तेहि देह न धरी बहोरि । १६७ ॥
- चौ० । जनि आचरन करउ मन माहीं । सुत तप ते दुख भे कह माहीं ॥  
 तपस ते जग सजे बिधाता । तपस ते बिबु भये परिचाता ॥  
 तपस संभु करहिं बहारा । तप ते अगम न कह भंशारा ॥  
 भयउ कपहिं मुनि प्रति अनुरागा । कथा पुरातन कहे सो ज्ञारा ॥  
 कर्म धर्म इतिहास जनेका । करे निरूपन विरति बिनेका ॥  
 उद्भव पावन प्रलय कहानी । कहै प्रीति आचरन बखानी ॥  
 सुनि महीच तापसब भयज । अग्रम नाम कहन तब कयज ॥  
 कह तापस तप जानौ तोही । कीन्हेउ कपट खानु भव मोही ॥
- सो० । सुन महीच अखि नीति जहं तहं नाम न कहहिं गूढ ।  
 मोहि तांहि पर प्रति प्रीति परम चतुरता निरखि तब । १७ ॥
- चौ० । नाम तुम्हार प्रतापदिनेषा । सख केतु तब पिता मरेषा ॥  
 गुरुप्रदाइ सब जानिब राखा । कहिय न जानाईं जानि अकाजा ॥  
 देखि तात जेवमदल सुधाई । प्रीति प्रतीति नीति निदुगाई ॥  
 उपजि परी जयता मन मोरे । कहैउ कथा निज बूझे तोरे ॥  
 अब प्रलय में संशय माहीं । मांग जो भूप भाव मन माहीं ॥  
 सुनि सुबचन भूपति हरबानी । गहि पद बिनय कीच बिधि नावा ॥  
 कृपाबिंधु मुनि दरसन तोरे । चारि मदारन करतल मोरे ॥

प्रभुहिं तथापि प्रथम बिक्रोकी । मांनि अगम नर होउं चखोकी ॥

दो० । वरामरनदुखरहित तनु समर न जीतैं कोउ

एकदम रिपुघोन महि राज कल्पसत होउ । १६८ ॥

चौ० । कह तापस नृप हेबर होऊ । कारन एक कठिन सुनु खोज ॥

कालौ तब पद नादहि खोजा । एक विप्रकुलकाड़ि महीसा ॥

तपसल विप्र सदा बरिखारा । तिन के कोप न कोउ रखवारा ॥

जौ विप्रन बस करजु नरेसा । तौ तब बस बिधि विप्र मरेसा ॥

चल न जगज्जुल सैं बरिखारि । सत्य कही दोउ मुजा मरेद ॥

विप्रखाप बिगु सुनु मझिपाखा । तोर नाथ नहिं कवनेउ काखा ॥

हरवेउ राउ बचन सुनि तास । नाथ न होइ मोर भव नाथ ॥

तब प्रवाद प्रभु कपनिधाना । मो कह प्रवकास कवना ॥

दो० । इवमस्त कहि कपटमुनि बोला कुटिल बहोरि ।

मिखन समार भुषास निज कहउ तो मोरिन खोरि ॥

चौ० । तानैं मै तोहि बरजौ राजा । कहे कथा तब बैरम भव ता ॥

कटे कवन यह परत कबानी । नाथ तुम्हार सत्यमम वा ॥

यह प्रगटे भयवा द्विजखापा । नाथ तोर सुनु मानुप्रता ॥

आन उपाय निधन तब नाहीं । जौ हरि हर कोपहिं न माहीं ॥

सत्य नाथ पद नहिं नृप भाषा । द्विजगुरुकोप कहऊ को राषा ॥

राखै गुह जो कोप बिधाता । गुह विरोध नहिं कोउ ग जाता ॥

जौ न चलव हम कहे तुम्हारे । होइ नाथ नहिं खोच नारे ॥

एकहि उर उरपत मन मोरा । प्रभु महिदेवखाप अति घोरा ॥

दो० । होहिं विप्र बस कवन बिधि कहऊ कृपा करि सोउ ।

तुम तजि दीनदयास निज चित न देखौ कोउ । १७० ॥

चौ० । सुनु नृप विविध बतन जग माहीं । कष्टसाध्य पुनि होहिं कि नाही ॥

अहै एक अति सुगम उपाई । तहां परजु एक कठिनाई ॥

मम आधीन युक्ति नृप होई । मोर जाव तब नगर न होई ॥

आजु लगे यह जब तैं भयऊ । काह के यह साम न गयऊ ॥

जो न जाव तब होइ अकाज । बना आर अममंजस आज ॥

सुनि महीप बोले रुदु बानी । नाथ निगम अस जोति बखानी ॥

बड़े बनेह लघुन पर करहीं । गिरि निज सिद्धन सदा दन धरहीं ॥

जलधि अगाध मौलि बह केनू । संतत धरनि धरत सिर रेनू ॥

दो० । अस कहि गहे नरेस पद खानी होऊ कपसु

मोहि लागि दुख सहिव प्रभु बखन दीनदयासु । १७१ ॥

बौ० । जावि नृपहिं पावन पाधीना । बोला तापव कष्टप्रवीना ॥  
 सत्य कहौ भूपति सुनु तोही । जग मंह नहिं दुर्लभ कहु मोही ॥  
 अवधि काज मै करिषौ तोरा । मन कम वचन भग्न मै मोरा ॥  
 योग युक्ति तप संवप्रभाज । फलै तवहिं जव करिष दुराज ॥  
 जौ नरैस मै करउ रघोई । तुम परबल मोहि जान न कोई ॥  
 जस सो बोह बोह भोग्य करई । बौह बोह तैव पावसु नमुवरई ॥  
 पुनि तिम के गृह जैव कोई । तव बस बोह भव सुनु बोई ॥  
 जाद उपाय रचउ नृप सेइ । संवत भरि संकल्प करैइ ॥

दो० । नित नूतन दिवस सखस सत बरेउ बलित परिवार ।  
 मै तुम्हरे संकल्प कवि दिवहिं करव जेकरार । १०५ ॥

बौ० । हरि विधि भूप कहु प्रति घोरे । बौहहरि कलक विप्र बस मोरे ॥  
 करिहरि विप्र होममल सेवा । तैहि प्रबल सखसि बस देवा ॥  
 और एक मोहि कहौ लखाज । मै बहिं केवन पावन पाज ॥  
 तुम्हरे उपरोक्षित कहु राधा । हरि आनख मै करि निज माया ॥  
 तपस तैहि करि जाय समाना । रविषौ दूधौ बरक परमाना ॥  
 मै धरि तासु भव सुनु राजा । सब विधि तौर बंधारव काजा ॥  
 मै नसि बहूत सखन सब कोजे । मोहि तोहि भूप भेंट दिन तीजे ॥  
 मै तपस तैहि तुरग समेता । पड़चैसौ बोकतहि निकेता ॥

दो० । मै आउव बोह भव धरि पहिचानेउ तव मोहि ।  
 जब एकांत बसाइ सब कथा सुनाउं तोहि । १०६ ॥

बौ० । सखन कोन नृप पावसु जानी । पावन जाद भेंट कलजानी ॥  
 समित भूप निद्रा प्रति आई । सो किमि बोह बोह कधिकारी ॥  
 काककेतु निविचर तप पावा । जेहि सुकुर बोह नृपहिं सुकावा ॥  
 परम मित्र तापव नृप केरा । जानै सो प्रति कष्ट घनेरा ॥  
 मेहि के सत सुत सह दस भाई । सब प्रति भजव देवदुन्दारी ॥  
 प्रथमहिं भूप समर सब मारे । विप्र संत सुर देखि दुखारे ॥  
 तैहि सब पाविस बरक संभारा । तापव नृप मित्रि मंत्र विचारा ॥  
 जेहि रिपुबल बोह रचेवि उपाज । भावीब न जान कहु राज ॥

दो० । रिपु तेजवी चकोर अपि लपु करि मनिष न ताउ ।  
 जवजं देत दुख रवि बसिहि विरचनमेसित राज । १०७ ॥

बौ० । तापव नृप निज सखसि विहारी । हरि निसेउ उडि भगवत सुखारी ॥  
 निवहि कहि सब कथा सुनार । यातुधान बोला सुख पार ॥  
 जब बाधउ रिपु सुनउ नरेका । बौ तुम कोन मोर कपटका ॥  
 परिहरि बोव रचउ तुम बोई । निनु औबधहिं जाधि विधि बोई ॥



कुल समेत रिपुमूल बहाई । चौथे दिवस मिलव मै आई ॥  
 तापस नृपहिं बहूत परितोषी । सखा महाकपटी अति रोषी ॥  
 भानुप्रतापहिं बाजि समेता । पञ्चचाक्षसि सोमतरि निकेता ॥  
 नृपहिं नारि पदं सयन कराई । हयगृह बांधेसि नृपहिं बनाई ॥

दो० । राजा के उपरोहितहिं हरि लंगयउ बहोरि ।  
 लै राखेसि गिरिखोह मह माया करि मति भोरि । १७५ ॥

चौ० । आपु बिरसि उपरोहित रूपा । परा आई तेहि मेज अनूपा ॥  
 जागेउ नृप अनभयउ बिहाना । देखि भवन अति अचरज माना ॥  
 मुनिमहिमा मन मह अनूमानो । उठे गवहिं जेहि जान न रानी ॥  
 कानन गयउ बाजि चढ़ि तेही । पुरनरनारि न जानेउ केही ॥  
 गये याम धूम भूपति आवा । घर घर उल्लव बाजु बधावा ॥  
 उपरोहितहिं देखि जब राजा । चकित बिसोकि सुमिरि सोद काजा ॥  
 धूम सम नृपहिं गह दिन तीनों । कपटीमुनिपद रह मति लोनों ॥  
 समय जानि उपरोहित आवा । नृपहिं मनो सख कहि समझावा ॥

दो० । नृप ह्वै पहिचानि गृह अमयस रहा न चेत ।  
 बरै तुरत सत बहस बर विप्र कुटुंब समेत । १७६ ॥

चौ० । उपरोहित जैववार बनाई । करव चारि विधि जस सुनि गाई ॥  
 मायामय तेह कीन्ह रसोई । संजैन बडु गनि सके न कोई ॥  
 विविध लहान कर आसिष रांधा । तेहि मई विप्रमासु खस रांधा ॥  
 भोजन कह सब विप्र मुखाये । पद पछारि सादर बैठाये ॥  
 परसन लागु जबहिं महिपाला । भई अकाशबानी तेहि काला ॥  
 विप्रहृन्ड उठि उठि गृह जाह । है बडि दानि अन्न जनि खाह ॥  
 भयउ रसोई भस्ममासु । सब दिज उठे मानि बिस्वासु ॥  
 भूप बिकल मति मोह भुजानी । भावोवस न आव मुख बानी ॥

दो० । बोले विप्र सकोप तब नहिं कहु कोन्ह विचार ।  
 जाइ निवाचर होऊ नृप मूढ सहित परिवार । १७७ ॥

चौ० । कचबंधु तै विप्र बोलाई । घालै लिये सहित समुदाई ॥  
 ईसर राखा धम चकारा । जेहि स ते समेत परिवारा ॥  
 संवत मध्य मास तब होऊ । जलदाता न रहिहि कुल कोऊ ॥  
 नृप सुनि साप बिकल अति चारा । भइ बहोरि बर गिरा अकासा ॥  
 विप्रहृन्ड साप बिचारि न दोन्हा । नहिं अपराध भूप कहु कोन्हा ॥  
 चकित विप्र सब सुनि नभवाली । भूप गये जई भोजनखानी ॥  
 तई न अमन नहिं विप्र सुचारा । फिरेउ राख मन सोच चकारा ॥  
 सब प्रसंग महिसुरन सुबाई । नसित परेउ खानी अनुसारी ॥

दो० । भूपति भावी सिटै नहिं बहपि न दूषन तोर ।  
किंचे चम्पवा होद नहिं विप्रस्वाप चति घोर । ५७ ॥

चौ० । अब कहि सब मरिदेव विधाये । समाचार पुरखोमन पाये ॥  
बोचहि दूषन दैवहिं देखी । बिरचत बँस काक किच जेहीं ॥  
उपरोहितहिं भवन पङ्कचारि । असुर तापबहिं खबरि जगारि ॥  
तेहि खल जहं तहं पथ मठाये । सजि सजि सेन भूप सब पाये ॥  
घेरिन्हि नगर निधान बजारि । विविध भांति गित होति सरारि ॥  
जूम मकल सुभट के करमी । बंधु समेत परेउ नृप धरमी ॥  
सत्यकेतुकुल कोद न बांछा । विप्रस्वाप किमि होद अबांछा ॥  
रिपुहिं जोति नृप नगर बसारि । निज निज पुर गये जयजय पारि ॥

दो० । भरद्वाज सुनु जाहि जव होत विधाता वाम ।  
धूरि मेह सम जनक यम ताहि व्याल सम दाम । ५८ ॥

चौ० । काल पाव मुनि सुनु होद राजा । भयउ निहाकर सचित समाया ॥  
इम सिर ताहि बीच बुझिदंका । रावन नाम होर बरिबंका ॥  
भूपधनुज परिमर्दन नामा । भयेउ सो सुभकरन बसधाया ॥  
सचिव जो रहा धर्मदहि कास । भयेउ विनाश बंधु कल तास ॥  
नाम विभोवन जेहि जन जाना । बिसभक्त विद्यामविधाया ॥  
रहे जे सुत सेवक नृप केरे । भये निहाकर घोर जेरे ॥  
कामरूप खल जिविब अनेका । कुटिल भयंकर विगत विवेका ॥  
रूप रहित द्विचक सब प्रायो । बरनि न जाइ बिसपरितायो ॥

दो० । उपजे बहपि पुनस्तुल्य पावन अमल अनुप ।  
तदपि महीसुरस्वापवस भये सकल अनुप । ५९ ॥

चौ० । कोन विविध तप लीजिउ भारि । परम उच सो बरनि न भारि ॥  
गयउ निकट तप देखि विधाता । मांगउ बर प्रथम मै ताता ॥  
करि विनतो पद गहि दसखीस । बोखेउ बचन सुनउ जगदीश ॥  
हम काळ कर मरहि न मारे । बानर मनुज जाति कुद वारे ॥  
एवमख तुम बड़ तप कीन्हा । मै ब्रह्मा मिछि तेहि बर दीन्हा ॥  
पुनि प्रभु सुभकरन पथ गथज । तेहि बिसोकि मन बिसाव भयज ॥  
जौ यह खल गित करउ अहारा । होदहि सब उजारि बहारा ॥  
सारद प्रेरि तासु मति केरी । मांगेहि गौद माव बछ केरी ॥

दो० । मयेउ विभोवन पाव तब कहा पुन बर मांग ।  
तेहि मांगेउ भगवतपद कमल अमल अनुराग । ६० ॥

चौ० । निर्वाहिं होद बर ब्रह्म विधाये । दक्षिंत ते अपने दक्ष पाये ॥  
मयतनजा मंदोहरि नामा । परम चंदरी कारि कछाया ॥

कोर मय दोन्ह रावणहि भागी । करे सो आतुधानपतिरागी ॥  
 संवित मयध नारि मखि पाई । पुनि दोउ मय निगहेसि जाई ॥  
 गिरि निपूठ दक बिंधु मधारी । विधिनिर्मित दुनैम कसि भारी ॥  
 कोर मयदानव बडुरि संभारा । कनकरचित मणिभवन अगारा ॥  
 भोगवती जय अहिबुल्लोका । अमरावति कस सकनिकाया ॥  
 तिन तें अधिक रम्य अति संका । जगनिष्ठात नाम तेहि संका ॥

दो० । खारि बिंधु मंधीर अति चारिउ विधि किरि पाद ।  
 कबककोट मनिखचित बुड वरनि न जाइ वनाइ । १८१ ॥  
 हरिरेरित निहि कस्य ओर आतुधानपति होय ।  
 सुरप्रतापी आतुलबल दस समेत बस होय । १८२ ॥

चौ० । रचें तहां निविचर भट भारे । ते सब सुरन समर संहारे ॥  
 अब तहां रहहि सक के प्रेरे । रणक कोटि यच्छपति केरे ॥  
 दममुख कनकु खबरि अशि पाई । मेन साजि मड घेरेसि जाई ॥  
 देखि बिकट भट बडि कटकाई । यच्छ जीव सै भये पराई ॥  
 फिरि सब नगर दसानन देवा । गद्यउ सोच मुख मद्यउ बिसेवा ॥  
 मंदर संहज अगम अनुमानी । कीन्ह तहां रावण रजधानी ॥  
 जेहि जय योग बांछि छह दोहे । मुखी सकल रजनीपर कीहे ॥  
 एक बार सुबेर पछं भावा । पुष्पक यान जीति सै भावा ॥

दो० । कौतुकहो कैलास पुनि लोन्हेसि जाइ उठाइ ।  
 मज्जं तौलि भट बाजुबल पुला अधिक सुख पाइ । १८४ ॥

चौ० । मुख संपति सुत मेन बहाई । जय प्रताप बल बुद्धि बहाई ॥  
 नित नतन सब बाडत जाई । जिभि प्रति लाभ होय अधिक जाई ॥  
 अतिबल सुभकरण अब भोगा । जेहि कसं नहिं प्रति भट न जाता ॥  
 करि मद पान सोय बट माया । जानत होइ तिहुं पुर भाया ॥  
 जौ दिन प्रति अहार कर सोई । बिल बनि सब चौपट होई ॥  
 समरधीर नहिं जाइ बखाना । तेहि सम अधिक न कोउ बलवाना ॥  
 बारिदमाद जेठ युत तास । भट मज प्रथम लोक जन जास ॥  
 जेहि न होइ रत बसुख कोई । सुरपुर जितहि परावन होई ॥

दो० । सुमुख अकंपन सुखिवरद भुसकेतु अतिकाय ।  
 एक एक जन जीति सक रस सुभटनिकाय । १८५ ॥

चौ० । कामरूप जानहिं सब माया । सपनेउ जिन के धर्म न दाया ॥  
 दममुख बैठ सभा एक वारा । देखि अमित आपन परिवारा ॥  
 सुतसमूह जन परिजन जाती । मने को पार निषाचरजाती ॥  
 सेन बिलोकि सहज अभिमाजी । बोला वचन कोधमदसानी ॥

सुवर्ण वस्त्र रत्न लोभाने । हमरे लिये विमुख बन्यो ॥  
 तेवसाय बलि करहि करार । देखि मरकट निमुखाई करार ॥  
 तिन कर मरेन एक विधि होई । कही सुधार सुवर्ण भन कोई ॥  
 दिनबीजन सब होत करार । सब कर मार करत तुम नारा ॥

दो० । सुधाहीन वस्त्रीन सुर वस्त्रहिं निशिदिशि पार ।  
 तब मारिही किं हाकिमी भली भांति अपनाए । १८६ ॥

चौ० । मेघनाद कहं पुनि संकरावा । दीन दीन बस बधर भड़ावा ॥  
 जे सुर समरधोर बसवाना । तिन के करिये को अभिमाना ॥  
 तिनहिं जीति रन आनहिं बांधी । उठि पुन पितृकुलासन बांधी ॥  
 इहि विधि सबही यज्ञा दीन्हा । आपन बखेड मदा कर लीन्हा ॥  
 यस्त दवानन डोस्त बन्यो । गर्जत गर्भ यस्त सुरवली ॥  
 रावन आगत युगेड बकोडा । देवन तकेड मेहरिखोडा ॥  
 दिगपालन के छोड विधाये । सुने बकल दवानन पाये ॥  
 पुनि पुनि सिंहनाद करि भारी । देह देवतनि गारि प्रचारी ॥  
 रनमदमन फिरि जन भावा । प्रति भट खोजत कतल न पावा ॥

॥ • । यही से छेपक । • ॥

नारद मिसे कहेसि मुसकाई । देव कहां ननि देख दिखाई ॥  
 मुगत अगल नारदहिं न भावा । सेतदीप तिहि तुरत पठावा ॥  
 सागर उत्तरि पार हो गयड । नारिहृन्द तह देखत भयड ॥  
 तिन सन कहा पतिन पछं जाऊ । कहेड कि आव निवारनाऊ ॥  
 तब मैं तिनहिं जीति संपाया । लै जैहो तुम कहं निज धामा ॥  
 मुगत बचन एक करड रिखानी । धाद अल गहि मगन लुखानी ॥  
 गई दूरि धरि धरि छकछोरा । नारिहि सिंधु मग अति कोरा ॥

दो० । गयो पताल अचेत हो मरै न विप्रप्रसाद ।  
 बावधान उठि गर्ज पुनि दिये न हरष निवाद । १८७ ॥

चौ० । जीतेसि नग नगर सब छारी । गयो बज्जिर बसिकोक सुराही ॥  
 बावन रावन आवत जाना । किये देवछवि वन अपमाना ॥  
 खेखत रहे नगर सिंधु माना । निज बस तिनहिं दीन भगवाना ॥  
 धाद धरा तिन पर लै आवे । नगर कारिगर देवन भावे ॥  
 बोलबाऊ दसकअर भाई । बिधि बह मठनि कहा को आई ॥  
 राखनि बांधि खिजाबहिं भारी । नाम न कहे यही बह मारी ॥  
 बावन होख बज्जत सलुवाना । तब कुड़ाय दिख छपनिधाना ॥  
 चला तुरत निवारनाहा । आज संक कहु नहिं मन माहा ॥

दो० । अति निर्खज दधारहित हिंसा पर अति प्रीति ।

समविमुख दसकन्ध सठ ता पर चाहत थीति । १८८ ॥

भरदाज सुनु बाहि जब होइ विधाता नाम ।

मनिजुं कांख होइ आइ तब कहै न कौड़ी दाम । १८९ ॥

चौ० । जहं कहुं फिरत देव दिज पावै । दंड सेइ बड्ड भास दिखावै ॥

इहि आचरन फिरै दिन राती । महा मखिन मन खलउतपाती ॥

बज्रि तरत पंपापुर आवा । बालि नाम कपिपति जिहि ठांवा ॥

अवलोकसि एक सरवरसोभा । जिहिं मन महा मुनिन्ह कर सोभा ॥

तहां कपोस करै निज ध्याना । दसकंधरहि देखि मुसुकांना ॥

तब रावन बोला करि क्रोधा । सकथानी कपि सठ बिन बोधा ॥

नाम तोर मुनि आचर्य धाई । दे कपि सुदु छाड़ि कदराई ॥

दो० । मोहि नीते बिनु यमर सुनु हृथा ध्यान तब कोस ।

कटकटाइ कह रजनिपर रहन तीनि वै बोस । १९० ॥

चौ० । बालि कहा सठि करिय न रारी । दसकंधर घर जाऊ बिचारी ॥

बल तुम्हार ऐसोइ है भाई । अजय चारि दिशि मै मुनि पाई ॥

इहि विधि बालि बज्रत समझाधा । कवनिजुं भांति बोध नहिं आवा ॥

तब सकोप उठि झपटि कपोसा । हुड़ गहि कांख चापि दससीसा ॥

बालिहि बिसरि गई मुधि तास । इहि विधि बिगत भए सठ मास ॥

एक दिवस रविचञ्जुलि साजा । कांख ते नियरि दधानन भाजा ॥

• निलज अशंक आब पुनि तहवां । कर जलकेलि सहसभुज जहवां ॥

दो० । लोभेउ जल भुजबोसबल बूड़न लगो समाज ।

सहसबाहु अति क्रोध मन मोहिं सम आन को आज । १९१ ॥

चौ० । जाइ दोख तहं रावन ठाड़ा । आसु बिपुल भुजबल जल बाड़ा ॥

मायाप्रबल महाबल भारी । लंकेखर कह धरिणि प्रहारी ॥

निरखि तिषन आचरज बिसाला । बांधि राख कहुं दिन बयसाला ॥

लज्जित दुष्ट मह करि रहई । रिस घर मारि कष्ट बड्ड बहई ॥

सकल आइ देखहिं नर नारी । मारहिं खात हवैं दै गारी ॥

नाम न कहै रहै सकुचाना । बड्ड विधि पूकहि नृपति सुजाना ॥

मृत्य करै रंभाहिक नारी । दसहु माघ दस दीपक बारी ॥

मुनि पुलखि तब जाइ हुड़ावा । पुनि नलकाप आइ तिहिं सावा ॥

दो० । मारन जात होख अति अनुपम सुंदरि नारि ।

चंदन पुष्प पत्र कर पूजन अलि निपुरारि । १९२ ॥

चौ० । देखि खर्वसी मन सकुचानी । तब रावन बोला खुदु बानी ॥

को तुम नारि नमन कह कोचा । लज्जाबस तिहिं कतर न होचा ॥

मनमदमत्त बिचार न करेऊ । धनपतिपुत्रबधूकर धरेऊ ॥

• सोनि ताहि पुनि संका आई । आदि कर्म कोन् पछिताई ॥  
 मन पछितार संच उर भयउ । सकेश्वर सांका कह गयेउ ॥  
 विकल उरसो संका कहि आई । नल कुवर सन ब. त. जगआई ॥  
 दोन साप सिन कोध चपारा । रावन बच होउ हथकारा ॥  
 चली साप सांका कह आई । दसकधर बैठा जिहि ठाई ॥  
 आगे आई ठाहि भर साप । निरखि दसानन अति भय कांवा ॥

दो० । सापहि संमीकार करि मन मई कोन् बिचार ।  
 दंड अचिन्त से लीन्त नहि रोयेउ संकसुधार । १८२ ॥

चौ० । दूत चार पठए अचि आत्मम । निरखि विहरिगण मुनिअधिवातम ॥  
 तिन सन तब पूछिं मुनि हाहा । कहऊ कुसल संकेसुभासा ॥  
 कुसल तासु यह मुनउ मुनीसा । कर तुम सन आवत दससीसा ॥  
 मुनि सो बचन महा भय पाई । करं बिचार विरति विचराई ॥  
 जिहि दरबार नोति नहि भाई । खलमंडलो मुनी तई भाई ॥  
 कहु बिन दिये नही कति आहो । घट भरि हथिर दिये तन पाहो ॥  
 दूतन्ह सौपि कहा मुनि जानो । भूपहिं कहैउ जार यह जानो ॥

दो० । घट उद्यमत हथ होइहउ सहित सकल परिवार ।  
 दूत तुरत घट लेगये संकापतिदरवार । १८४ ॥

चौ० । रावन घट लखि परंजलावा । तब दूतन मुनि बचन प्रकावा ॥  
 सुनि मुनिषाप उपज उर दाह । बोला घट खर उतार जाह ॥  
 यतन समेत धरनि धरि एह । जानि न पाव बात यह केह ॥  
 खेद घट जनक देख ते गये । गाइत केन मध्य तई भये ॥  
 जनक यक्षरचना तई ठयऊ । श्रीमीकरमल कर वन भयऊ ॥  
 प्रगटि अवनि ते अवसकुमारी । कन्या कज्जि लीन्ही उरगारी ॥  
 नाम जानकी परम पुनीता । नारद आई कहा पुनि सीता ॥  
 कहि सु कथा अचिराउ सिधाये । बज्जि दूत संकापुर आये ॥  
 चारि ठाव हारा संकेसा । देवन को बज्ज देत कसेसा ॥

॥ • । इहां तक । • ॥

रवि सखि पवन बदन धनुधारी । अग्नि काल सन सब अधिकारी ॥  
 किशोर धिक्कमैगुज सुर नाग । इति सबही के पंचहि जाना ॥  
 ब्रह्मसृष्टि जई कनि तनु धारी । दसमुखबसवती नर नारी ॥  
 आसु करहि सकल भयभीता । नवहि आई जित चरन बिनीता ॥

दो० । भुवमल बिख बस करि राखेहि कोउ न खतं ।  
 मंडलीक महिरावन रुख करै निज मंच । १८५ ॥  
 देव सब मंधर्न नर किशरनागकुमारि

जीति बरो निज बाहुनल बल सुंदरि वर नारि । १८६ ॥

सौ० । इंद्रजीत बन जो कहु कहैऊ । सो सब जनु पहिले करि रहेऊ ॥  
 प्रथमहिं जिन कहं आचरै दोन्हा । तिनह कर चरित सुनऊ को कोन्हा ॥  
 देखत भोग रूप सब प्रापी । निशिचर निकर देवप्रतितापी ॥  
 करहिं उपद्रव असुरनिकाया । नाना रूप धरहिं करि माया ॥  
 जेहि बिधि होइ धर्म निर्मला । सो सब करहिं वेद प्रतिकूला ॥  
 जेहि जेहि देव धेनु द्विज पौवहिं । नगर गाम पूर आहिं समावहिं ॥  
 सुभ आचरण कतजु नहिं होई । वेद बिप्र गुह मान न कोई ॥  
 नहिं ह्मिभक्ति यज्ञ रूप दाना । सपनेजुं सुनिच न वेद पुराना ॥

हं० । अप योग बिरागा तप मखभागा सवन सुनै दसवीसा ।  
 आपन छठि भावै रहै न पावै धरि सब घालै खोसा ॥  
 अस भट्ट अचारा भा संसारा धर्म सुनिच नहिं काना ।  
 तेहि बलु बिधि चारै देस निकारै जो कह वेद पुराना । १८७ ॥

सो० । बरनि न जाइ अयोति घोर निशाचर जो करहिं ।  
 हिंसा पर अति प्रीति तिन के पापहिं कवन मिति । १९ ॥

सौ० । बाटे बलु खल चोर जुआरी । जे खपट परधन परनारी ॥  
 मानहिं मातु पिता नहिं देवा । बाधुन सों करवावहिं सेवा ॥  
 जिन के यह आचरण भवानी । ते जानऊनिशिचर सम प्राणी ॥  
 अतिसय देखि धर्म को हानी । परम समीत धरा अकुलानी ॥  
 गिरिखनिबंधभार नहिं मोही । अस मोहि गंदह एक परद्रोही ॥  
 सकल धर्म देखहिं बिपरीता । कहि न सकै रावनभयभीता ॥  
 धेनुरूप धरि ददह बिचारी । गई तहां जइ सुर मुनि हारी ॥  
 निज संताप सुनावै रोई । काह ते कहु काम न होई ॥

हं० । सुर मुनि गंधर्वा मिछि करि सर्वा गये बिरौषि के खोका ।  
 संग गोतनुधारी भूमि बिचारी परम विकल भव खोका ॥  
 मझा सब जाना मन अनुसारा मोरो कहु न बसाई ।  
 आकरि तैं दाखी सो अविनाशी हमरो तोर ससाई । १८ ॥

सो० । भरनि धरऊ मन धोर कह बिरौषि हरिपद सुमिरि ।  
 जानत जन को पीर प्रभु भंजहिं दाहन बिपति । १९ ॥

सौ० । बैठे सुर सब कहहिं निचारा । कहं पाइस प्रभु करिष प्रकारा ॥  
 पुर बैसुं जान कह कोई । कोइ कह पयनिधि सह बसु खोई ॥  
 जाके रहस्य भक्ति अस प्रीती । प्रभु तेहि प्रगट सदा कह रीती ॥  
 तेहि बसाज गिरिजा में रहेऊ । अवसर पाव बचन हक कहेऊ ॥  
 हरि आपक सर्वत्र समाना । प्रेम तैं प्रगट होहिं मैं जाना ॥

देस काल दिशि विदिषिज माहीं । कबहुँ कहीं कहां प्रभु नाहीं ॥  
अगजगमय सबरहित बिरागो । पवन से प्रगट होहिं जिमि बागो ॥  
मोर बचन सब को मन माना । बाधु बाधु करि ब्रह्म बखाना ॥

दो० । सुनि विरंचि मन हर्ष तनु पुच्छक नयन वह मोर ।  
अस्तुति कर अज औरि कर सावधान सतिधीर । १८७ ॥

द्व० । जय जय सुरनायक जनमखदायक प्रनतपाल भगवंता ।  
गोद्विजहितकारी जय असुरारी सिंधुमताप्रियकांता ॥  
पालनमरुधरनी अहुतकरनी मर्म न जानै कोई ।  
जो सहज लपाखा दीगदयाखा करो दनुयह कोई । २० ॥  
जय जय अविनासी सबघटबाधी व्यापक परमानन्दा ।  
अभिगतिगोतोता चरितपनीता माधारहित मुकुन्दा ॥  
जेहि लागि बिरागो अति अनुरागो बिगतमोह मुनिहन्दा ।  
निमिवासर ध्यावहिं हरिगुन गावहिं जयति सच्चिदानन्दा । २१ ॥

जेहि सृष्टि उपाई विविध बनाई संग सहाय न दूजा ।  
सो करजु अचारी चित्त हमारी जानिय भक्ति न पूजा ॥  
जो भवभयभंजन जनमनरंजन गंजन विपतिबन्धना ।  
मन बच क्रम बागो काहिं सधानो करन सकल सुरदूया । २२ ॥  
सारद मति सेवां अवय असेवा जाकहुँ कोउ नहिं जाना ।  
जेहि दीन पिथारे वेद प्रकारे द्रवो सो सोभगवाना ॥  
भवभारिधमंदर सब बिधि सुंदर गुनमंदिर सुखपुंजा ।  
मुनि सिद्ध सकल सुर परम भय तुर नमत नाथ पदकजा । २३ ॥

दो० । जानि सभय सर भूमि मुनि वचन समेत समेह ।  
गगनगिरा गंधोर भर हरनि सोक सदेह । १८८ ॥

चौ० । कनि उरपज्ज मुनि सिद्ध सुरेसा । तुमहिं लागि धरिहौ नरभेसा ॥  
असन सहित मनुजअवतारा । लेशौ दिनकरबंस उदारा ॥  
कखप अदिति मँहा तप कोन्हा । तिन कह मै पूरन बर दोन्हा ॥  
ते दसरथकौसखाकृपा । कोसल परी प्रगट नरभूपा ॥  
तिन के मूह अवतरिहौ नाई । रनुकुलतिलक सो चारिउ भाई ॥  
नारद वचन सत्य सब करिहौ । परम सक्ति समेत दत्तदिहौ ॥  
हरिहौ सकल भूमिगहभाई । निर्भय होऊ देवसमुदाई ॥  
गगनब्रह्मवानो सुनि कावा । तुरत फिरै सर सदय मुदाना ॥  
तब ब्रह्मा धरनिहि समझावा । दभय भई भरोस जिअ आवा ॥

दो० । निज सोकहिं विरंचि गये देवदंडहिं, छिछाद ।  
बानरतनु धरि धरनि नई हरिधर सेवज जाद । १८९ ॥



चौ० । मये देव सब निज निज धामा । भूमि रहित पावेस बिद्यामा ॥  
 जो कहु आचरु मही दोन्हा । हर्ष देव बिलस न कीन्हा ॥  
 बनचरदेह धरो हिति साही । अतुलित मल प्रताप निज साही ॥  
 गिरि तह मल आबुध सब योग । हरिमारन चितवहि रनखोरा ॥  
 गिरि कानन जह तह भरिपूरी । रह निज निज अनौक रजि करी ॥  
 यह सब हरि चरित में भाषा । अब सो सुनऊ जो बोलहि राषा ॥  
 अबधपरी रघुकुलमनि राज । वेदविदित तेहि हरिच नाज ॥  
 धर्मधुरंधर गुननिधि जानी । हृदय भक्ति सति वारंगपानी ॥

दो० । कौसल्यादि नारि प्रिय सब आचरण पुनीत ।  
 पति अनुकूल प्रेम दूढ हरिपद कमल बिनोत । २०० ॥

चौ० । एक बार भूपति मन माहीं । भद्र गलानि मोरे सुत गाहीं ॥  
 गरुडह गये तुरत महिपाला । चरन लागि करि बिनय बिसाला ॥  
 निज दुख सुख रूप गहहि सुनायउ । कहि बसिष्ट बऊ विधि समुझायउ ॥  
 धरंऊ धोर होइहहि सुत चारो । त्रिभुवनविदित भक्तभयहारी ॥  
 संगी अविहि बसिष्ट बुलावा । पुत्र लागि सुभ यज्ञ करावा ॥  
 भक्ति सहित मुनि आहुति दोन्हे । प्रगटे अगिनि चरु कर लोन्हे ॥  
 बोले अनल प्रेम युत बानी । अति प्रसन्न नहि परे बखानी ॥  
 जो बसिष्ट कहु हृदय बिचारा । सकल काज भा सिद्ध तुम्हारा ॥  
 यह हवि बांटी देऊ रूप जाई । यथायोग जेहि भाग बनाई ॥

दो० । तव अदृश्य पावक भये सकल समहि समुझाई ।  
 परमानंद मगन नृप हर्ष न हृदय समार । २०१ ॥

चौ० । तवहिं राउ प्रिय नारि बुलाई । कौसल्यादि तहां बलि आई ॥  
 अर्धभाग कौसल्याहिं दोन्हा । उभय भाग आधे कर कीन्हा ॥  
 केकयि कहं नृप ली सो दयऊ । रहेउ सो उभय भाग पुनि भयऊ ॥  
 कौसल्या केकयो साय धरि । दोन्हे सुमित्रहि मन प्रसन्न करि ॥  
 हरि विधि गर्भ रहित सब नारी । भयउ हृदय चरित सुख भारी ॥  
 जा दिन ते हरि गर्भहि आधे । सकल लोक सुख संपति जाये ॥  
 मंदिर महं सब राजसिं रानी । सोभा सोल तेज की खानी ॥  
 सुखयुत कहुक काज बलि नयऊ । जेहि प्रभु प्रगट सो चकर भयऊ ॥

दो० । खेव सख यह सार तिथि सकल भये अनुकूल ।  
 सर यह सखर हर्षयुत रामनका सुखमूल । २०२ ॥

चौ० । नवमी तिथि मधुमास पुनीता । सुख पक्ष अभिजित हरिप्रीता ॥  
 मधु दिवस चति थीन न जानी । पावन काज लोकविद्यामा ॥  
 बीतस मंद सुरभि वह बाज । बसित सुर संतमन पाज ॥  
 वन कुसुमित गिरिवन मनिबारा । स्वर्णिं सकल हरिताकृतधारा ॥

• सो अवसर विरचि जव नामा । पक्षे सकल सुर बाधि विमाना ॥  
मगन विमल शंकुल सुरबूधा । गावहिं गुन बंधव वरूधा ॥  
वर्षहिं सुमन सुबंधलि बाजी । नरनर ममक दुन्दुभी बाजी ॥  
अस्तुति करहिं नाम जुनि देवा । बज्र बिधि सावहिं निज निज देवा ॥

दो० । सुरबमूह विनती करि पऊंचे निज निज धाम ।  
जगनिवास प्रभु परगटे अखिल लोकविशाम । २०१ ॥

हं० । भये प्रगट कृपाळा दीनदयाळा कौसल्याहितकारी ।  
हर्षित महतारी मुनिमनहारी अद्भुत रूपनिहारी ॥  
लोचनअभिरामा तनु चनखामा निज आयुध भुज चारी ।  
भूषण वनमाळा नयन विखाळा सोभासिंधु खरारी । २०२ ॥  
कह दुऊं कर जोरो अस्तुति तोरो केहि बिधि करौं भगता ।  
मायागुनजानातोत अमाना वेदपुराण भगता ॥  
कहनासुखसागर सब गुनआगर जेहि गावहिं सुति भंता ।  
सो मम हित छाँगी जनअनुरागी प्रगट भये स्वीकंता । २०३ ॥  
ब्रह्मांडनिकाया निर्मित माया रोम रोम प्रति वेद कहै ।  
मम उरसो बासो यह उपहासी सुगत धीर मति धिर न रहै ॥  
उपजा जव जाना प्रभुमुसुकाना चरित बज्रत बिधिकोय रहै ।  
कहि कथा सुनाई मातु बुझीई जेहि प्रकार सुतप्रेम लहै । २०४ ॥  
माता पुनि बौली सो मति डोली तजऊ तात यह रूपा ।  
कीजै भिसुलीला अति प्रिय खोला यह सख परम अनुपा ॥  
सुनि वचन सुजाना रोदन ठामा होइ बालक सुर भूपा ।  
यह चरित जे गावहिं हरिपदपावहिं तेन परहिं भवजूपा । २०५ ॥

दो० । निप्र धेनु सुर संतहित खीन मनुजभवतारि ।  
निज रक्षा निर्मित तनु मायागुनगोपार । २०६ ॥

हो० । सुनि त्रिबुद्धन परम प्रिय बाजी । संभ्रम खलि आरै सब राजी ॥  
हर्षित जहं तहं धीरं दाजी । आनंदमगन सकल पुराणी ॥  
दखरख पुनअन्न मुनि काना । आनंद मन्नामंद समानी ॥  
परम प्रेममगन बुलक खरीरा । साहत खडग करत मतिधीरा ॥  
आकर नाम सुगत सुभ होई । सोरे अहंभावना मुकु होई ॥  
परमानंद पुरि मग राजा । कहां बुझाई नका बज्र बाजा ॥  
मुह वसिष्ठ कहं सखत हंकारा । आये दिव्य वसिष्ठ बुधदारा ॥  
अनुपम बालक देखि न आई । रूपराशि गुन कहि न चिराई ॥

हो० । तव नांदोमुख आहु करि जातकर्म सब कीन्ह ।  
सटक धनु बचन अति कथ विप्रन कहं दोन्ह । २०७ ॥

चौ० । ध्वज पताक तोरण पर छावा । कहि न जाइ जेहि भांति बनाववा ॥  
 सुमनहृष्टि आकाश तें कोई । मङ्गलानंदमग्न सब कोई ॥  
 हृन्द हृन्द मिलि चलीं सुगार् । सहज भिन्नर किये छठि धाव ॥  
 कनक कलस मंगल भरि घारा । गावत पैठहि भूपदधारा ॥  
 करि आरतो निहावर करहीं । बार बार सिसुचरन परहीं ॥  
 मागध दूत बदिगन मायक । पावन गुन भावहि रक्षिनायक ॥  
 सर्वस दान दीन्ह सब काहू । जेहि पावा राखी नहिं ताहू ॥  
 गृगमद चंदन कुंकुम सींचा । मसी सकल बोधिन विच कीचा ॥

दो० । गृह गृह बाज बधाव सुभ । प्रगट भये मुखकन्द ।  
 हरषवत सब जहं तहं नगरनारिनरहृन्द । २०६ ॥

चौ० । केकयसुता सुमित्रा दोऊ । सुंदर सुत जनमत भदं ओऊ ॥  
 वह मुख संपति समय समाजा । कहि न सनै सारद अहिराजा ॥  
 अवधपरी सोहे दहि भांती । प्रभुहि मिलन आई जनु राती ॥  
 देखि भागु जनु मग सकुचानी । तदपि बनी संख्या अनुमानी ॥  
 अगारधूप जनु बड्ढ अधियारी । उडै अवीर मनहु अरुनारी ॥  
 मंदिर मनिसमूह जनु तारा । नृपगृहकलस सो इंदु उदारा ॥  
 भवन वेदधनि अति गृह बांणी । जनु खग मुखर समय सुखसानी ॥  
 कौतुक देखि पतंग भुलाना । एक मास तेहि जात न जाना ॥

दो० । मासदिवस का दिवस भा मरम न जाने कोई ।  
 रथ समेत रवि थाकेउ निशा कवन बिधि होई । २०७ ॥

चौ० । यह रहस्य काहू नहिं जाना । दिनमनि चले करत गुनगाना ॥  
 देखि महोत्सव मुर मुनि नागा । चले भवन बरनत निज भागा ॥  
 औरौ एक कहौं निज चोरी । मुन गिरिजा अति दृढ़ मति तोरी ॥  
 काकभुसुडि संग हम दोऊ । मनुजरूप जानै नहिं कोऊ ॥  
 परमानंद प्रेम मुख फूले । बोधिन फिरहिं मगन मनभूले ॥  
 यह सब चरित जान पे कोई । छपा राम की जा घर होई ॥  
 तेहि अवसर जो जेहि बिधि आवा । दोन्ह भूप जो जेहि मन भावा ॥  
 गज रथ गुरग हेम गौ होरा । दोन्ह नृप नाना बिधि चोरा ॥

दो० । मन संतोष सबनि के जहं तहं देखि असीध ।  
 सकल तनय चिर जीवहु तुलसिदास के ईश । २०८ ॥

चौ० । ककुब दिवस बोते दहि भांती । जात न जानहिं दिन यह राती ॥  
 मासकरन कर अवसर जानी । अष्ट बोखि पठये मुनि जानी ॥  
 करि पूजा अपति यस आवा । धरिय नाम जो मुनि मुनि रावा ॥  
 इन के नाम अनेक अबूपा । मै नृप कहव समति अबूपा ॥

• जो आनंदविंधु कलरासी । सीकर में बैलोका सुषःसी ॥  
 सो मुखधाम राम अथ नामा । अखिल लोक दासक बिद्यामा ॥  
 बिलभरन पोषन कर जोई । ता कर नाम भरत अथ होई ॥  
 जो के सुमिरन ते रियुनाथा । नाम सकुण दे प्रकाश ॥

दो० । लखधाम रामप्रिय सकल जगत आधार ॥

गुह बसिष्ट तेहि राखेउ लहिमन नाम उदार । २०८ ॥

चौ० । धरे नाम गुह हृदय विचारो । वेदतत्त्व नृप तव मत चारो ॥  
 मुनिजनधन सबस सिवप्राना । बालकेलिरस तेहि मुख माना ॥  
 बारहि ते निज हित पति जानो । लहिमन राम चरनरति मानो ॥  
 भरत मन्त्रह्न दूगौ भाई । प्रभुसेवक जस प्रीति बढ़ाई ॥  
 खाम गौर मंदर दोउ जोरो । निरखहि छवि जननी हन तोरो ॥  
 चारिउ सोलखपगुनधामा । तदपि अधिक सुखसागर रामा ॥  
 हृदयअनग्रह ददुप्रकाश । रुचत किरन मनोहर दासा ॥  
 कदञ्ज उहंग कवञ्ज कद पासन । मातु दुखारहि कहि प्रिय लालन ॥

दो० । औपक ब्रह्म निरंजन निर्गुन बिगतबिनोद ॥

सो अज प्रेमभक्तिवस कौसल्या की गोद । २१० ॥

चौ० । कामकोटिछवि ख्यामचरोरा । नील कंज बारिह गंभीरा ॥  
 अहन चरन पंकज नखजोती । कमलदखन बैठे जन मोती ॥  
 रेख कुलिस ध्वज अंकुस सोई । नूपर धुनि मनि मुनिमन मोई ॥  
 काटि किकिनी उदर चय रेखा । न भि गंभीर जान जेहि देखा ॥  
 भुज विमाल भुवनयुत भूरी । हिय हरिनखसोभा अति हूरी ॥  
 उर मनिहार पदिक को सोभा । विप्रचरुन देखत मन लंभा ॥  
 कंव कंठ अति चिबुक सुहाई । आनन अमृत रुदनछवि काई ॥  
 दुद दुद दसन अधर अह्नारे । न सा तिलक को बरनै पारे ॥  
 रुदर खवन सुबाह कपोला । अति प्रिय मधुर सुतोतर बोला ॥  
 नील कमल दोउ नयन बिसाला । बिकट भ्रुकुटि लटकनि बर भाला ॥  
 चिक्कन कच कुंचित मधुपारे । बज्र प्रकार रचि मातु मंवारे ॥  
 पीत झिगुलिथा तन पहिराये । जानुफानि बिचरत महि भाये ॥  
 रूप सकहि नहि कहि छुति सेवा । सो जानै सपनेऊ निन्द देवा ॥

दो० । सुखसंदोह मोहपर ज्ञानविरागज्योति ॥

दयति परम प्रेमबस कर सिंसु चरित मुनीत । २११ ॥

चौ० । इहि विधि राम जगत्पितुमाता । कोसकपूरवाचिनसुखदाता ॥  
 जिन रत्नमाय चरन रति माजी । लिन को यह गति प्रगट भवानी ॥  
 रघुपतिविमुख बलन कर कोरी । कवन सके भवबंधन होरी ॥

जीव चराचर सब करि रावे । सो माया प्रभु सो भय भावे ॥  
 अकुटिविलास नचावै ताही । सब प्रभु हाँसि भजिय कळ काही ॥  
 मन कम बचन हाँसि चतुराई । भजतहिं छपा करे रघुराई ॥  
 दहि विधि सिद्धविनोद प्रभु कोन्हा । सकल नगरबाघिन सुख दोन्हा ॥  
 सो उहंग कबहूँ हल्लारावै । कबहूँ पाखने घालि लावै ॥

दो० । प्रेममगन कौसल्या निशिदिन जात न जान ।  
 सुतसनेहबस माता बासपरित करि गान । २१२ ॥

चौ० । एक बार जननी अन्हवाये । करि सिंगार पलना पौढाये ॥  
 निज कुलदृष्टदेव भगवाना । पूजा हेतु कोन्ह पकवाना ॥  
 करि पूजा नैवेद्य चढावा । आपु गदै जहँ पाक बनावा ॥  
 बज्रि मातु तहँवाँ चलि आई । भोजन करत दोख रचराई ॥  
 गर जननी सिसु पद भयभीता । देखा बाल तहँ पुनि सता ॥  
 बज्रि आई देखा सुत सोई । हृदय कंप मन धोर न होई ॥  
 दहाँ उहाँ दुद बालक देघा । मति भ्रम मोहि कि आन बिसेषा ॥  
 देखि राम जननी अकुलानी । प्रभु हँसि दोन्ह मधुर मुसुकाणी ॥

दो० । दिखरावा मातहि निज अद्भुत रूप अखंड ।  
 रोम रोम प्रति राजहिं कोटि कोटि प्रखंड । २१३ ॥

चौ० । अगनित रवि समि शिव चतुरांगन । बड गिरि सरित सिंधु महि कानन ॥  
 काल कर्म गुन दोष मुभाऊ । सो देखा जो सुना न काऊ ॥  
 देखो माया मव विधि गाढी । अति सभित जोरे कर ठाढी ॥  
 देखा जीव नचावै जाही । देखी भक्ति जो होरै ताही ॥  
 तनु पुलकित मुख बचन न आवा । नयन मूँदि चरनग सिर नावा ॥  
 बिस्मयवन्ति देखि महतारी । भये बज्रि सिमुरूप खरारी ॥  
 अस्तुति करि न जाइ भयमाना । जगतपिता मै सुत करि जाना ॥  
 हरि जननिहि बड विधि समुझाई । यह जनि कतऊ कहसि मुन मारै ॥

दो० । बार बार कौसल्या विनय करै कर जोरि ।  
 अब जनि कबहूँ व्यापै प्रभु मोहि माया तोरि । २१४ ॥

चौ० । बालचरित हरि बड विधि कोन्हा । अति अनंद दासन कहँ दोन्हा ॥  
 ककुब काल बोते सब भाई । बड भये परिजनसुखदाई ॥  
 चूड़ाकरन कोन्ह गहूँ आई । बिप्र दृष्टिना पुनि बड पाई ॥  
 परम मनोहर चरित अपारा । करत किरत चारिख सुकुमार ॥  
 मन कम बचन अमोघर जोई । दसरथचजिर बिचर प्रभु सोई ॥  
 भोजन करत बुलावत राजा । कहि जावहिं तजि बालसमाजा ॥  
 कौसल्या जब बोलन जाई । ठुमुकि ठुमुकि प्रभु चलिहिं पराई ॥

निगम नेति शिव चंत न चावा । ताहि धरे जगनी वडि धावा ॥  
धूसर धूर भरे तन चावे । भूपति बिहंवि मोद बेडावे ॥

दो० । भोजन करत चपल चित्त हत उत अवसर पार ।  
भाजि चले किलकत बदन दधि चोदन लपटार । २१४ ॥

चौ० । बालचरित अति सरल सुहाये । सारद सेव संभु सुनि गाये ॥  
जिन कर मन हन मन नहिं राता । ते जगवंचित किये विधाता ॥  
भये कुमार अवधिं सब भाता । दीन जनेज मुख पितु माता ॥  
मुदग्टह मये पठन रघुपार । अलप काल बिधा सब पार ॥  
जाकी सहज स्वास सुनि चारी । सो हरि पद यह कौतुक भारी ॥  
बिद्याबिनयनिपुन गुनबीजा । खेलहिं खेल सकल नृपलोका ॥  
कर तल वान धनुष अति झोडा । देखत रूप चराचर मोहा ॥  
जिन बोधिन बिहरहिं सब भारी । यकित होहिं सब क्रोग लुगारी ॥

दो० । कोसलपुरवासो नर नारि हृद अह वास ।  
प्रानऊ ते प्रियलागहिं सब कहं राम लपाल । २१५ ॥

चौ० । बंधु संखा संग खेहिं बल्लार । मन मृगया नित खेलहिं जाई ॥  
पावन मृग मारहिं जिय जानी । दिन प्रति नृपहिं देकावहिं जानी ॥  
जे मृग रामवान को मारे । ते तनु तजि सुरलोक सिधारे ॥  
अनुज सखा संग भोजन करहीं । मातृपिताआजा अनुमरहीं ॥  
जेहि बिधि सुखो होहिं पुरखोगा । करहिं कृपानिधि खोर संयोगा ॥  
वेद पुरान सुनहिं मन लाई । आपु कहहिं अनुजहिं समुझाई ॥  
प्रातकाल उठि कै रजुनाद्या । मातृ पिता मुख नावहिं माद्या ॥  
आयसु मांगि करहिं पुर काजा । देखि चरित हरचहिं मन राजा ॥

दो० । व्यापक अकल अनोह अज निर्गन नामन रूप ।  
भक्त हेतु नाना बिधिहिं करत चरित अनूप । २१६ ॥

चौ० । यह सब चरित कहा मै गाई । आगिलि कथा सुनऊ मन लाई ॥  
बिस्वामित्र महामुनि जानी । क्यहिं विपिनि सुभ आरुम जानी ॥  
तहं जप ब्रह्म षोडश मुनि करहीं । अति भारीच सुबाऊहिं उरहीं ॥  
देखत यज्ञ निष्ठावर भावहिं । करहिं उपद्रव मुनि दुख पावहिं ॥  
माधितनयमन चिंता व्यापी । हरि बिनु मरिहिन निशिचर पापी ॥  
तब मुनिवर मन कीन्ह बिचारा । प्रभु अवतरेठ चरन महिभारा ॥  
इहि मिस देखौ प्रभुपद जाई । करि बिनती जानौ दौ भाई ॥  
ज्ञान विराम सकल मुनयवना । सो प्रभु मै देखब भरि नयना ॥

दो० । ब्रह्म बिधि करत मनोरथ जात न जानी वार ।  
करि मज्जन सरजू चखिअ गये भूपदरवार । २१७ ॥

चौ० । मुनि आगमन सुना जब राजा । मिलत गद्यत सैं विप्रसमाजा ॥  
 करि दंडवत नमिहि सनमानो । निज आसन बंठारिनि आनो ॥  
 चरन पखारि कोन्ह अति पूजा । मो सम आज धन्य नहिं दूजा ॥  
 विविध भांति भोजन करवावा । मुनिवर हृदय हर्ष अति पावा ॥  
 पुनि चरनन मेले सुत चारी । राम देखि मुनि बिहसि बिचारी ॥  
 भये मगन देखत मुखसोभा । अनु चकोर पूरन लोभा ॥  
 तब मन हर्षि बचन कह राज । मुनि अम लषा कोन्ह नहिं काज ॥  
 केहि कारन आगमन तुम्हारा । कहहु सो करत न लाउय बारा ॥  
 असुरसमूह मत्तावहिं मो हो । मैं पावन आखिउं दप तो हो ॥  
 अनुज समेत देहु रघुनाथा । निसिचर बध मैं होब सनाथा ॥

दो० । देहु भूप मनहर्षित तजहु मोह अज्ञान ।  
 धर्म सुयस्य दप तुम कहं दन कहं अति कल्याण । ११८ ॥

चौ० । सुनि राजा अति अप्रिय बानी । हृदयकंप मुखदति कुंभिलानी ॥  
 चौथेन पायेउं सुत चारी । विप्र बचन नहिं कहेहु बिचारी ॥  
 मांगहु भूमि धनु धन केषा । सर्वस देउं आजु मह रोषा ॥  
 देह प्राण तैं प्रिय कहू नाहीं । सोउ मुनि देउं निमिष दक माहीं ॥  
 सब सुत प्रिय मोहि प्राण कि नाई । राम देत नहिं बनै गोसाईं ॥  
 कहं निसिचर अति घोर कठोरा । कहं रंदर सुत परम किसोरा ॥  
 सुनि दपगिरा प्रेमसमानो । हृदय हर्ष माना मुनि जानी ॥  
 तब बसिष्ट बज्र विधि समुप्रावा । दपमंदेह नास कह पावा ॥  
 अति आदर हो तनय बुलाये । हृदय लाद बज्र भांति बिखाये ॥  
 मरें प्राणनाथ सुत दोऊ । तुम मुनि पिता आन नहिं कोऊ ॥

दो० । सौंपे भूपति अपिहि सुत बज्र विधि देह असोस ।  
 जनमोभवन गये प्रभु चले नाद पद धीस । १२० ॥

चौ० । पुरुषमिह दौ बीर हर्षि चले मुनिभयहरन ।  
 कृपाविंधु मतिधोर अखिल बिरूकारनकरण । १२१ ॥

चौ० । अहत नवन उर बाहु बिसाला । मोल जलज तन स्वाम तमाला ॥  
 कटि पट पीत कर्षे बर माथा । शचिर चाप सायक दुहुं हाथा ॥  
 स्वाम गौर सुंदर दौ भारी । बिस्वामिच महाविधि पारी ॥  
 प्रभु ब्रह्मन्यदेव मै जाना । मोहि रिम पिता तजेउ भगवाना ॥  
 चले जात मुनि दोन्ह दिखाई । सुनि ताड़का क्रोध करि धाई ॥  
 एकहि वान प्राण हनि लोन्हा । दोन जानि तेहि निज पद दोन्हा ॥  
 तब अपि निज माथहिं जिय जौन्हा । बिस्वामिधि कहं विद्या दीन्हा ॥  
 जाने साग न कुधा पिवावा । अतुलितबल तन तेम प्रकावा ॥

दी० । बाहुक सकल धर्मि करि प्रभु निज आसन आनि ।  
कंद मुख पल्ल भोजन दिखे भक्त हित आनि । १२१ ॥

चौ० । प्रातः कहां मुनि वन रघुराई । निर्भय ब्रह्म करुण तुम जाई ॥  
होम करन खाये मुनि छाती । आपु रहे भक्त की रक्षारी ॥  
सुनि मारीच बिबाधर कोही । छै सहाय धारा मुनिद्वीपी ॥  
बिनु फर वान राम तेहि मारा । सत योजना ना शगर पारा ॥  
पावकषर सुबाहु पुनि मारा । अनुज निवधिर कटक संघारा ॥  
मारि असुर दिजनिर्भयकारी । अस्तुति करहिं देव मुनि छाती ॥  
तहं पुनि ककुब दिवस रघुराया । रहे कोय विप्रन पर दाया ॥  
भक्ति हेतु ब्रह्म कथा पुराना । कहा विप्र यद्यपि प्रभु जाना ॥  
तब मुनि सादर कहा बुझाई । चरित एक देखि प्रभु जाई ॥  
धनुषयज्ञ सुनि रघुकुलनाथा । हर्षि चले मुनि घर के छाया ॥  
आसम एक दीख मग माहीं । खग खग जीव जन्तु तहं नाहीं ॥  
पूछा मुनिहि पिला प्रभु देखी । सकल कथा अपि कही बिसेषी ॥

दो० । गौतम नारि आपवस उपल देह धरि धीर ।  
चरन कमखरज चाहती कृपा करुण रघुवीर । १२२ ॥

कंद ।

परसत पद पावन धोकनमीवन प्रगट भई तपपुच्छ बही ।  
देखत रघुनायक जनसुखदायक समुख होर कर जोरि रही ॥  
अति प्रेम अधोरा पुखक करीर मुख नहिं आवै बचन कही ।  
अतिसय बड़भागी चरनन लागी युगल नखन जलधार बही । १२३ ॥

धीरज मन कीन्हा प्रभु कहं कीन्हा रघुपति कृपाभक्ति पाई ।  
अति निर्मल बागो अस्तुति ठानी ज्ञानगुण जय रघुराई ॥  
मैं नारि अपावन प्रभु जगपावन रावणरिपु जनसुखदाई ।  
राजिवलौचन भवभयनीचन पाहि पाहि सरनहिं पाई । १२४ ॥

मुनि खान जो दोन्हा अति भक्त कीन्हा परम अनुग्रह मैं मागा ।  
देखिअ भरि कोवन हरि भवकोचन यहै लाल धर कर आगा ॥

बिनती प्रभु सीरी मैं मति भीरी नाछन सर मागो आगा ।  
पदकमल परागारव अनुराग मम मन जखुप करि पागा । १२५ ॥

बेहि पद करगति परम पुनीता प्रगट भई सिव सीव धरी ।  
खोह पदपंकज बेहि पुजत अज मम बिह भरोख लपक करी ॥

इहि भांति सिंधारी गौतमनारी बारबार हरिचरण करी ।  
जो अति मन भावा सो बड़ जावा मैं पवित्रोक्त अणुद्वारी । १२६ ॥

दो० । एक भक्त दीनबंधु हरि कारणप्रदित कृपास ॥



तुलसिदास ठठ ताहि भजु काहि कपट अंजास । २२६ ॥

चौ० । सखे राम सखिमन मुनि संग । गये जहाँ जगज्जननि गंगा ॥  
 अनुज सहित प्रभु कीन्ह प्रनामा । बड्ड प्रकार सुख पायउ रामा ॥  
 गाधिसुवन सब कथा सुनाई । जेहि प्रकार सुरसरि मधि आई ॥  
 तब प्रभु सखिन समेत अन्हाये । विविध दान मधिदेवन पाये ॥  
 हर्षि सखे मुनि हृन्मुखहाये । बेनि विदेहनगर निधराया ॥  
 पुररम्यता राम जब देखी । हरये अनुज समेत बिधेवी ॥  
 वापी कृप सरित सर नासा । सखिल सुधा सम मनिधोपाना ॥  
 गुंजत मंजु मन्तरस भंग । कूजत कल बड्ड बरन बिहंगा ॥  
 बरन बरन बिकसे जलजाता । चिबिध समीर सदा सुखदाता ॥

दो० । सुमनवाटिका वाग बन विपुल बिहंगनिवास ।  
 फूलत फलत मुपलवित सोहत पुर चड्ड पास । २२७ ॥

चौ० । बने न बरमत नगरनिकाई । जहाँ जाहु मन तहाँ सुभाई ॥  
 सार वजार बिचित्र अटारी । मनिमय दीध अनु सकर संवारी ॥  
 धनिक बनिक बर धनद समाना । बैठे सकल बसु खे माना ॥  
 चौष्ट सुंदर लगी सुहाई । समत रहहि सुगंध सिंचाई ॥  
 मंगलमय मंदिर सब करे । चिचित जनु रतिनाथ चितेरे ॥  
 पुरमरमारि सुभग सखि सन्ना । धर्मबीज ज्ञानी गुनवन्ता ॥  
 अति अनुपम अंजु जनकनिवास । विचकहि बिबुध बिलोकि बिलास ॥  
 होत चकित चित कोट बिलोकी । सकल भुववसोभा जनु रोंकी ॥

दो० । धवल धाम मनि पुरट पट सुघटित लावा भांति ।  
 बिबलिनवास सुंदर सदन सोभा किमि कहि जाति । २२८ ॥

चौ० । सुभय द्वार सब सुखिकपाटा । भूपमीर नट जानघ भाटा ॥  
 बनी विद्याल बाजिनकवासा । हय गज रत्न संकुल सब कासा ॥  
 सार सखि सेवक बड्ड मेरे । उपग्रह मंदिर सदन सब करे ॥  
 पुरबाहिर बर सरित समीपा । उत्तरे बरं बरं विपुल मदीया ॥  
 देखि अनुप एक संवाराई । सब सुवास सब भांति सुहाई ॥  
 कौमिक कहेउ मोर मन लावा । इहाँ रहिब रघुबीर सुजाता ॥  
 भलेहि नाथ कहि कृपाविकेता । उत्तरे बरं मनिहृन्मुख समेता ॥  
 बिलागिन महामुनि जाये । समाचार निबिहापति पाये ॥

दो० । सन सखि सुखि भरि भद्र भपुर बर सुव्रजाति ।  
 सखे मिलन मुनिनाथ कहि मुदित राख रहि भांति । २२९ ॥

चौ० । कीन्ह प्रनाम धरनि धरि माया । दोन अवीस मुदित मुनि नाया ॥  
 बिमहन्ध सब सादर बंदे । जानि भाग्य बड्ड राख कबंदे ॥

• कुशल प्रसन्न कहि बारहि बारा । बिस्वामित्र न्यपहि बैठारा ॥  
 तेहि अवधर आये दौ भाई । मयै रहे देखन कुलवारी ॥  
 स्वाम गौर मृदु बचसकिधोरा । सोचनसुखर बिस्वचित्तोरा ॥  
 उठे सकल सब रघुपति आये । बिस्वामित्र निकट बैठाये ॥  
 भये सब सुखी देखि दौ भाता । बारि बिस्वोचन पुनकित गाता ॥  
 मूरति मधुर मनोहर देखी । भयउ विदेह विदेह विषयी ॥

दो० । प्रेम मनन मन आनि नृप करि विवेक धरिधीर ।

बोलेउ मुनिपद गार खिर गङ्गद गिरा गंभीर । २२० ॥

चौ० । कहऊ नाथ सुंदर दौ बासक । मुनिकुलतिषक कि न्यपदुलपासक ॥  
 ब्रह्म जो निगम नेति कहि गावा । उभय भेष धरि सोद कि आवा ॥  
 सहज विरामरूप मन मोरा । यकित होत जमि चंद्र चकोरा ॥  
 ताति प्रभु पृथ्वी सह भाऊ । कहऊ नाथ जनि करऊ दुराऊ ॥  
 इनहि बिषोक्त अति अनुरागा । वरबस मङ्गसुखहिं मन त्यागा ॥  
 कह मुनि बिहसि करेऊँ न्यप नीका । बचन तुम्हार न होद अलीका ॥  
 ये प्रिय सबहिं जहाँ जनि प्राणी । मन मुसुकाहिं राम सुनि बाणी ॥  
 रघुकुलमनि दसरथ को जाये । मन चित साणि नरेस पठाये ॥

दो० । राम लपन दौ बंधु बर रूपसील बलधाम ।

मख राखेउ सब साखि जनि भीति अचरु संघाम । २२८ ॥

चौ० । मुनि तव चरण देखि कह राज । कहि न सकौ निज पुन्यप्रभाऊ ॥  
 सुंदर स्वाम गौर दौ भाता । आनंददह को आनंददाता ॥  
 इन की भीति परस्पर पावनि । कहि न खार मन आव कुहावनि ॥  
 सुनऊ नाथ कह मुदित विदेह । ब्रह्म जोई दह सबस समेह ॥  
 पुनि पुनि प्रकुचि चित्तव भरनाह । पुनकित जगत्तर अधिक ब्रह्माह ॥  
 मुनिहिं प्रसंशि गत पर धीरा । चलेउ सिद्धार नगर आगनीरा ॥  
 सुन्दर बदन सुखद सब कावा । तरां बाध सौ दीन भुवावा ॥  
 करि पूजा सब निधि सेवकाई । गणउ राख मख बिदा कराई ॥

दो० । सबस बंधे रघुबंसमनि करि भोजन निखाम ।

बैठे प्रभु आता बसित दिवस रक्षा भरि धाम । २२८ ॥

चौ० । लखनइदव साखवा विषयी । जार जनकपुर बारव देखी ॥  
 प्रभुभय बडरि मुनिहिं सकुचाई । प्रगट न कहीँ मनहिं मुसुकाई ॥  
 राम अनुजमन की गति जानी । भक्तवत्सला हिय कुलबानी ॥  
 परम विनीत सकुचि मुसुकाई । बोले गुरुअनुवाचन पाई ॥  
 नाथ लखन पुर देखन चहरी । प्रभुबल्लभ उर प्रगटन कहरी ॥  
 जौ राउर आवसु मै पाऊँ । नगर देखाइ तुरत सौ आऊँ ॥

मुनि, मुनीय बच बचन सप्रीती । कसन राम राखऊ तुम नीती ॥  
धर्मसेतुपासक तुम तता । प्रेमविमल भेषक सुखदाता ॥

दो० । बार देखि आवऊ नगर बखनिधान ही भार ।  
करऊ मुखस बच के नयन सुंदर बदन हिसार । २२० ॥

चौ० । मुनिपद कमल बरि ही धाता । चले लोकलोचन सुखदाता ॥  
बासकहम् देखि कति सोभा । समे संग लोचन मन सोभा ॥  
पीत वसन परिकर कलि धाया । चाह चाप सर सोहत हाथा ॥  
तनु चमुरत सुसदनखोरी । खामस गौर अनोर कोरी ॥  
कहरिकंधर बाऊ निवासा । घर कति हरि नगमनिमासा ॥  
सुभग खनन सरसीदहलोचन । बदनमयंक तापचय मोचन ॥  
कामस कमकफूलकवि रेखी । चितवत चितहि चौरि अनु खेही ॥  
चितवनि चाह अछुटि बर बांकी । तिलकरेख सोभा अनु चांकी ॥

दो० । हरि चोतनी सुभग बिर भेषक कुचित कोस ।  
नखखिख सुंदर बंधु दोउ सोभा सकल सुदेख । २२१ ॥

चौ० । देखन नगर भूपमत आये । समाचार पुरवासिन पाये ॥  
धाये धामकाम सब छागे । मनऊं रंक निधि छूटन लागे ॥  
निरखि सखन सुन्दर ही भार । होहि सुखी लोचनफल पार । ॥  
युवती भवनझरोखनि लागी । निखहि राम रूप अनुरागी ॥  
कहहि परस्पर बचन सप्रीती । सखि दन कोटिकामकवि जीती ॥  
सुर नर असुर नाग मनि माधी । सोभा असि कज सुनियत नाधी ॥  
बिख चारि भुज निधि मुख चारो । बिकटभेष मुखपंच पुरारो ॥  
अपर देव अस को जग चाही । हरि कवि सखि पटतारि जाही ॥

दो० । बचकिसोर सुखमाखन खाम गौर सुखधाम ।  
संग संग पर बारिखे कोटि कोटि सत काम । २२२ ॥

चौ० । कहजु सखी अस को तनुधारी । जो न मोह यह रूप निहारी ॥  
कोउ सप्रेम बोली मृदु बानी । जो मै सुना सो सुजग बधानी ॥  
ये ही रूप दसरथ के ठोटा । बाल मरालनि के कल कोटा ॥  
मुनि कौसिकमख के रखवारे । जिन रन अजय निवाचर भारे ॥  
खामगात कल कंजबिलोचन । जो मारीस सुभुजमदमोचन ॥  
कौसल्यासुत सो सुखखानी । नाम राम धनुबाधकपानी ॥  
गौर किसोर भेष सर काहें । कर सर चाप राम के पाहें ॥  
सहिमन नाम राम लघुभाता । सुनु सखि तासु सुमिचा माता ॥

दो० । विप्रकाज करि बंधु दोउ मग मुनिबधू चधारि ।  
चाहे देखन चापमख मुनि चरवीं सब कारि । २२३ ॥

शौ० । देखि रामबलि कोउ दस कहरी । योग्य बागकी सब नर कहरी ॥  
 औ सबि हनुमंति देखि करवाय । मन परिहरि बलि करी निराय ॥  
 कोउ कह हनु भूपति मुखिआये । मुनि समेत बादर बनआये ॥  
 सबि परजु मन बाध न तराई । निधिन सबि मुखिआये समरी ॥  
 कोउ कह औ भय सबे विमाना । सब सब सुनिष पणिन कलवाता ॥  
 तो जानकिहि मिथिहि नर दस । माहिन आसी सब सदेस ॥  
 औ निधिनस सब बने संयोग । तो कतलान कोर सब कोन ॥  
 सबि हमरे अति आरति ताहि । कबजक सब आवाहि रहि गति ॥

दो० । माहिन हम कहं सुकळ सबि हनु कर दारवने दुरि ।  
 सब संघट तब होइ जन पुन्य पुराकत भूरि । १२७ ॥

शौ० । बोलौ अपर कहै सबि नोका । यहि विवाह अति हित सबरी का ॥  
 कोउ कह संकर बाध कठोरा । ये खामल खुदु गान किशोरा ॥  
 सब असमंजस सबे सवागो । सब सुनि अपर कहि खुदु बागी ॥  
 सबि हनु कह कोउ बनेउ सब कहरी । सब प्रभाव देखत कसु नही ॥  
 परसि जासु पदपंकजधूरी । तरी अहंछा हंत भय भूरी ॥  
 को कि रहै बिनु विवधनु तोरे । यह प्रतीति परिहरिय न भोरे ॥  
 जेहि बिचरि रहि कीय सवारी । तेह खामल नर रचेउ विचारी ॥  
 तासु बचन सुनि सब हरवागी । ऐकह कोउ कहहि खुदु बागी ॥

दो० । हिय हरवहिं नरवहिं मुनन मुमुखिं सुखोपनिहृन्द ।  
 जाहिं जहाँ जहं बंधु दोउ तहं तहं परमानन्द । १२८ ॥

शौ० । पुरपूरवदिसि गे हौ भाई । जहाँ धनवमकभूमि वगारी ॥  
 अति विस्तार बाह गच ठारो । बिमल वैदिका रुचिर सवारी ॥  
 चऊं दिसि कंचनमंच दिखावा । रचे जहाँ बैठहिं महिपावा ॥  
 तेहि पाहें समीप चऊं पावा । अपर मंच मंडकीबिलावा ॥  
 कलुक ऊंच सब भांति सुहाई । बैठहिं नगर लोग सब आई ॥  
 तिन को निकट बिसाक सुहाये । धवल भाम बज्र करन वनाये ॥  
 जहं बैठो देखहिं पुरनारो । यथायोग्य निज कुल अनुचारी ॥  
 पुरवाकक कहि कहि खुदु बचना । सादर प्रभुहिं देखावहिं रचना ॥

दो० । सब सिधु रहि मिशु प्रेमवस परसि मनोहर गति ।  
 तनु पुसकाहिं अति हर्ष हिय देखि देखि हौ भाति । १२९ ॥

शौ० । मिसु सब राम प्रेमवस जाने । प्रीति समेत निकेत दखाने ॥  
 निज निज रहि सब सोहिं मुकाई । सहित समेत जाहिं हौ भाई ॥  
 राम देखावहिं अनुजहिं रचना । कहि खुदु मधुर मनोहर वचना ॥  
 सबनिमेष महं भुवननिकावा । रचे जासु अनुवाकन मोका ॥

भक्त होत होर दीनदयाला । चितवत सकल धनमनसा ॥  
 कौतुक देखि रस गूढ पाहीं । जानि दिसव पाव मनमाहीं ॥  
 जासु नाच उर कर उर होई । भजनप्रभाव देखावत होई ॥  
 कहि बातें खुदु मधुर सुहाई । किये विहा बासक हरिआई ॥  
 दो० । समथ सप्रेम विनीत प्रति बहुत सखि दो भाई ।  
 गुरुपदपंकज आर सिर बैठे आचसु पार । २२७ ॥

चौ० । निशिप्रवेष्ट मुनि चाँदिसु दोन्हा । सबही संखाबंदन कीन्हा ॥  
 कहत कथा इतिहास पुरानी । हरि रजनि युग खाम सिरानी ॥  
 मुनिवर सखन कीन्हा तब जाई । लगे चरन चापन दौ भाई ॥  
 जिन के चरन खरोख लागी । करत विविध जप योग सिरानी ॥  
 ते दौ बंधु प्रेम अनु जीते । गुरुपदकमल पलोटत प्रीते ॥  
 बार बार मुनि आजा दोन्हा । रघुवर आह सखन तब कीन्हा ॥  
 चापत चरन लपन उर लाये । समथ सप्रेम परम सुख पाये ॥  
 पुनि पुनि प्रभु कर भोजताता । पौढे धरि उर पदजलजाता ॥

दो० । उठे लवन निशिबिगत मुनि अदनमिखाधुनि काम ।  
 गुरु ते पदिले जगतपति आगे राम मुजान । २२८ ॥

चौ० । सकल सौच करि आह सहाये । नित्य निवाहि गुरुहि सिर नाये ॥  
 समय जानि गुरुआचसु पार । लेन प्रसन्न बसे दौ भाई ॥  
 भूपबाग भर देखेउ जाई । जहं बसत छतु रही जुभाई ॥  
 लागे ब्रिटप मनोहर नाम । वरन वरन वर बेखिताना ॥  
 नव पल्लव फल सुमन सुहाये । निज संपति सुरतहरि सहाये ॥  
 चातक कोकिल कोर चकोरी । कूजत निहंम नचत कल मोरी ॥  
 मध्य बाग सर होइ सुहावा । मनिसोपान विषिच बनावा ॥  
 विमल सलिल सरसिज बज्र रंगा । जलखग कूजत गंजत धंगा ॥

दो० । बाग तड़ाग बिलोकि प्रभु हरये बंधु समेत ।  
 परम रत्न आराम यह जो रामहि सुख देत । २२९ ॥

चौ० । चजं दिशि शिते पूछि मासीन । खगे खेन दल फूल मुदित मन ॥  
 तेहि अवसर सीता तब जाई । निरिखा धनन जननि पठाई ॥  
 संग सखी सब सुभन सखानी । नावहिं जीव मनोहर जानी ॥  
 सर समीप निरिआख्य होइ । वरनि न आह देखि मन मोहा ॥  
 मज्जन करि सर सखी समीता । गई मुदित मन गौरिनिकेता ॥  
 पूजा कीन्हा अधिक अनुसूता । निज अनुरूप सुभन वर मांगा ॥  
 एक सखी विष संम विहाई । गई रही देखन फलवाई ॥  
 तेह दौ बंधु बिलोकेव जाई । प्रेमविषय सीता पद जाई ॥

- दो० । नाथ दया देवी चकिन पुनक नात बचनचन ।  
कहू कारण निज बरष कर पूछहि सब कहू बचन । २४० ॥
- चौ० । देखन बात सुवर दो आये । बचकिबोर सब भाति सुहाये ॥  
आम गौरि निमि कहौ बखानी । निरा चनचन नखन निज बानी ॥  
सुनि चरणी सब सखी बखानी । बिबहिष चति उतकटो जानी ॥  
एक कहहि नप सुन ते आसी । सुने जे मुनि सब आह कासी ॥  
निज निज रूप मोहनी करी । कीन्हे सबई मगरमरनारी ॥  
बरगत हनि कहं तहं सब कोनू । अबधि देखिये देखन कोनू ॥  
तासु बचन चति बिबहि सुहाये । दरष खानि खोचन चकुखाने ॥  
सखी अप करि प्रिय बखि कोई । प्रीति पुरातनि खलै न कोई ॥
- दो० । सुमिरि बीच मारदबचन उपजी प्रीति प्रीति ।  
चकित बिलोकिति बकल दिसि अनु बिसु गृहीत २४१ ॥
- चौ० । कंकनकिंकिनिनूपरधुनि सुनि । कहत खचन सन राम बृदध मुनि ॥  
मानऊ मदन दुन्दुभी दौन्ही । मनवा बिलबिलचय कहं कीन्ही ॥  
अम कहि फिरि चितए तेहि ओरा । सिवमुख बसि भये नखन चकोरा ॥  
भये बिलोचन चाह अपंचल । मनऊं सकुचि निमि तजेव दृगंचल ॥  
देखि बीचयोभा सुख पावा । बृदध बराहत बचन न आवा ॥  
अनु बिरंचि सब निज निपुनार्ई । बिरंचि बिल कहं प्रगट दिखार्ई ॥  
सुंदरता कहं सुंदर करई । हृदिगटह दीपबिद्या अनु बरई ॥  
अब उपमा कवि रहै जुठारी । केहि पटतरिच बिदेचकुमारी ॥
- दो० । बिचयोभा हिय बरनि प्रभु आपनि दया बिचारि ।  
लोले सुचिमन अनुज सन बचन समय अनुहारि । २४२ ॥
- चौ० । तात अनकतनया यह सोई । धनुषयज्ञ जेहि कारण होई ॥  
पूजन गौरि सखी लै आई । करति प्रकाश फिरति फलवाई ॥  
आसु बिलोकि अलौकिक योभा । बहज पुनोत मोर मन होभा ॥  
यो सब कारन आन बिधाता । फरकहिं सुभग अंग सुन भाता ॥  
रघवंधिन कर सहज सुभाऊ । मन कुपंच वन धरै न काऊ ॥  
मोहि प्रतिपद्य प्रतीति बिब करी । जेहि उपनेऊ परचारि न बेरी ॥  
जिन की कहहिं न रिष रन पीठो । नहिं लावहिं बर तिष मन कीठी ॥  
अंगन कहहिं न सिन के बाहीं । ते नर बर कोरे सब बाहीं ॥
- दो० । कहत बतकही अनुज सन मन सिधरूप जुमान ।  
मुखबरोजमकरंदखनि करत मधुप दव पान । २४३ ॥
- चौ० । चितवनि चकित बह दिसि बीता । कहं नये उपकिबोर मनबीता ॥  
नहं बिलोकि नृमवावकनखी । अनु तहं बरष कमबखितखी ॥

सता चोट तव सखिन कथामे । कामस गौर किशोर सुखमे ॥  
 देखि रूप सोचन कथामे । हरचे जन निम निमि सखिचामे ॥  
 सकं नयन रघुपतिकवि देखी । पलकतल परितरी विमोही ॥  
 अधिक सनेह देख भद्र भोरी । सरद-सखिहि जनु किन सुकोरी ॥  
 सोचन मगु रामहिं उर आसी । दोषे पलक कथाट मानी ॥  
 जब विय सखिन प्रेमवस जानी । कहि न सकहिं कहु मन सकुचानी ॥

दो० । सताभवन ते प्रगट भे तेहि अवनर दौ भार ।

निकसे जनु युग विमल बिधु जलदपटल बिलगार । २४४ ॥

चौ० । सोभासोव सुभम दौ बोरा । नील पीत जलजाभ सरोरा ॥  
 काकपच्छ शिर धोहत नीके । गुच्छा विच विच कुसुमकली के ॥  
 भास तिलक लमबिंदु सुहाये । खन सुभन भुवन हवि हाये ॥  
 बिकट मृदुटि कच धूवरवारे । नव रुरोजकोचन रतनारे ॥  
 चाहि बिबुध नासिका कपोला । हासविलास खेत जनु मोला ॥  
 मुखहवि कहि न जाइ मोहि पाहीं । ओ बिकोनि बड काम लजाहीं ॥  
 उर मनिमाल कंबु कल सोवां । कामकलभकर भुज बल सोवां ॥  
 सुमन समेत बाम कर दोना । सांवर कुंवर सखी सुटि लोना ॥

दो० । केहरिकटि पट पीत धर सुखमासोलनिधान ।

देखि भानुकुलभूषनहिं बिसरा सखिन रूपान । २४५ ॥

चौ० । धरि धोरज दक सखी सयानी । सोता सन कोलो गहि पानी ॥  
 बडारि गौरि कर ध्यान करेह । भूप किसै र देखि किन लोह ॥  
 सकुचि भीय तब नयन उचारे । रुकुख दौ रघुवंस निहारे ॥  
 गखसिख देखि राम की सोभा । सुमिरि पिताप्रन मन अमि लोभा ॥  
 परवस सखिन कखी जब सीता । भये गहद सब कहहिं समीता ॥  
 पुनि आउव रहि बिगिया काखी । अस कहि मन बिहंवी दक आखी ॥  
 गूढ़ गिरा सुनि सियसकुचानी । भये विलंब मातुभय मानी ॥  
 धरि बड धोर राम उर आनी । फिरि सपन मन पितु बस जानी ॥

दो० । देखनमिसु खग बिहंग तब फिरै बहोरि बहोरि ।

निरखि निरखि रघुवीरकवि बाढी प्रीति न धोरि । २४६ ॥

चौ० । जानि कठिन शिवकाय बिसुरति । खलो गखि उर कामल मूरति ॥  
 प्रभु जब जप्त जानकी जानी । सुखसनेह सोभाजनलानी ॥  
 परमप्रेममय खडू मधि कोखी । चाह चित्त भीतर खिखि कोखी ॥  
 गई भवानी भवन बहोरी । बंदि चरन कोखी कर खोरी ॥  
 जय जय जय निरिराजकिसोरी । जय महेस मुखचंदकोरी ॥  
 जय गजबदन कदावनमता । जगतजयनि दामिनिमुक्तिनाता ॥

नहि तब कहि मन्त्र अवधाना । समित प्रसाद देह मरि जाया ॥  
भयभीतिविवरणाध्वकारिनि । निखिनिमोहनि खलव विचारिनि ॥

दो० । पतिदेवता सुतीव मरि जायु प्रथम तब रोष ।  
महिमा समित न कहि सकहि बह्व बारदा रोष । २४० ॥

चौ० । सेवत तीहि सुखम फल चारी । बरदाचिनि निपुरारिपिचारी ॥  
देवि पूनि पदकमल तुन्दारे । सुर नर मुनि सब होहि सुखारे ॥  
मोर मनोरथ जानऊ लोके । बसऊ वहा घरपुर सबही के ॥  
कोन्हउं प्रगट न कारन तेही । अब कहि चरन मरे वैदेही ॥  
विनयप्रेमबस भई भवायो । खासा मास मरति मुसुकायो ॥  
सादर सिध प्रसाद घर धरेऊ । बोली गौरि हर्ष हिध भरेऊ ॥  
सुनु सिध सख खसोस हमारी । पूजिहि मनकांमना तुन्दारी ॥  
नारदबचन सदा सुचि सांचा । सो बर मिखिहि जाहि मन राचा ॥

छं० । मन जाहि राख्यो मिखिहि सो घर सहज सुंदर सांवरो ।  
कहनानिधान सुजान सील सनेह जानत रावरो ॥  
इहि भांति गौरि खसोस सुनि सिध सहित हिध हरपित पलो ।  
तुलसी भवानिहि पूनि पुनि पुनि मुदितमन मंदिर पलो । २२ ॥

खो० । जानि गौरि अनुकूल सिधहिध हर्ष न जाय कहि ।  
मंजुल मंगलमूल वाम अंग फरकन लगे । २४ ॥

चौ० । हृदय सराहत सीधसुनाई । गुरु समीप गवने हौ भाई ॥  
राम कहा सब कौशिक पाहीं । सरल सुभाव कुन्हा हल नाहीं ॥  
सुमन पाद मुनि पूजा कीन्ही । पुनि अर्पिस हौ भादन्ह दोन्ही ॥  
सफल मनोरथ होइ तुन्दारे । राम लखनू मुनि भये सुखारे ॥  
करि भोजन मुनिवर विज्ञानी । लगे कहन कह कथा पुरानी ॥  
विगतदिवध मुनि आथसु पाई । संथा करन पले हौ भाई ॥  
प्राची दिशि ससि खगेउ सुहावा । सिधमुख सरिस देखि मुख पावा ॥  
बज्ररि बिचार कोन्ह मन माहीं । कीधबदन सम हिमकर नाहीं ॥

दो० । लख सिंध पुनि बंधु विध दिन मसीन सकलंक ।  
सिधमुखसमता पाव किमि चंद्र बापुरो रंक । २४८ ॥

चौ० । छटै बडै बिरहिनिदुखदाई । छटै राऊ निज संधिधि पाई ॥  
कोकशोकप्रद पंकजदोही । अवगुन बज्रत चंद्रमा तोही ॥  
वैदेहीमुखपटतर दोन्हे । होइ दोष बड़ अनुचित कीन्हे ॥  
सिधमुखकवि बिधुआज बखानी । गुरु पंकपले निषा बड़ि जानी ॥  
करि मुनिचरनचरोज प्रनामा । आथसु पाद कीन्ह विज्ञाना ॥



- विगतमिवा रघुनाथको नामे । बधु निखोकि कहन सब कामे ॥  
 उगेउ अदन अबखो कहु ताता । पंकजकोकको कमलदाता ॥  
 बोले लघन ओरि धन पावो । प्रभुप्रभावदूषक मधु बावो ॥
- दो० । अहोदय सकुचे कुमुद उडुमनकोति मलीन ।  
 जिनि तुम्हार आगमन मुनि भये नृपति सकहीन । २४८ ॥
- चौ० । दप सब नखत करहिं उजियारी । टारि न सकहिं साप तम भारी ॥  
 कमल कोक मधुकर खग नामा । हरषे सकल निवाचवसाना ॥  
 ऐहिं प्रभु सब भक्त तुम्हारे । होइहहिं मूढे धनुष सुखारे ॥  
 उदय भानु बिनु खम तमनासा । दुरे नखत जगतेजप्रकासा ॥  
 रवि निज उदयबोध रघुराधा । प्रभुप्रताप सब नृपन दिखाया ॥  
 तब भुजबलमहिमा उदघाटी । प्रमट धनुषविघटनपरिपाटी ॥  
 बंधुबचन मुनि प्रभु मुसुकाने । होइ सुचि सहज पनीत अन्हाने ॥  
 नित्यक्रिया करि गुरु पद आये । चरनसरोज सुभग धिर नाये ॥  
 मतानंद तब जनक बुलाये । कौसिक मुनि पदं तुरत पठाये ॥  
 जगकविनय तिन आय सुनाई । हरषे बोलि लिये डौ भारी ॥
- दो० । मतानंदपद बंदि प्रभु बैठे गुरु पदं जाइ ।  
 चलउ तात मुनि कहउ तब पठवा जनक बुलाइ । २५० ॥
- चौ० । भीषस्यंवर देखिय जाई । ईस कहि धौं देहिं बड़ाई ॥  
 लघन कहा जसभाजन सोई । नाथ कृपा तब आपर होई ॥  
 हरषे मुनि सब मुनिवरबानी । दोन्ह असोस सबहिं सुख मागो ॥  
 पुनि मुनिहृन्द समेत कृपाला । देखन चले धनुषमखसाला ॥  
 रंगभूमि आये डौ भारी । अचि सुधि सब पुरबासि पाई ॥  
 चले सकल गडकाज बिसारी । बालक युवा जरठ बर भारी ॥  
 देखी जनक भीरि भर भारी । सुचि सेवक सब लिये हंकारो ॥  
 तुरत सकल लोगन पदं जाइ । आसन उचित देऊ सब काइ ॥
- दो० । कहि खडु बचन विनीत तिन बैठारे बर भारि ।  
 उतल मखम नीच लघु निज निज सब अनुहारि । २५१ ॥
- चौ० । राजकुंवर तेहि अवसर आये । मंगज मंगोहरता हवि काये ॥  
 गनसामर गौर बर बीरा । सुंदर खामस गौर बरीरा ॥  
 राजसमाज विशाखा करी । उडुगल मरं कपु युग विधु पूरे ॥  
 जिन के रही भावना जैसी । प्रभुमूरति देखी तिन नैसी ॥  
 देखहिं भूष महा रजबीरा । मंगज बीररव धरें बरीरा ॥  
 उगे कुटिल दप प्रधुहिं निहारी । मंगजं भावनाक मूरति भारी ॥  
 रहे असुर हल जो उपवेशा । तिन प्रभु प्रमट काख सम देवा ॥

दो० । बरबाधिन देखे दौ भाई । नरभजन कोचमलसराई ॥  
 कारि बिलोकिहि हरि विधि निज निज हरि चमक्य  
 जनु कोहत संगार धरि मूरति परम चमक्य । २५२ ॥

चौ० । विदुषन प्रभु विराटमय बीष । बड मुख सर पन कोचन बीषा ॥  
 जनकजाति चमकोकिहि कैरे । समन समे प्रिय सामहि कैरे ॥  
 सहित बिदेह बिलोकिहि रामी । चिनु सम प्रीति न जाति बखानी ॥  
 योगिन परम तनमन्य भाषा । सांत सुदु मन सहजप्रकाश ॥  
 हरिभक्तन देखेछ दौ भ्राता । इहदेव रव सकलसहाता ॥  
 रामहिं चितव भाव जेहि बीषा । सो सनेह मुख बहिं कलनीया ॥  
 उर अनुभवति न कहि सक कोज । कवन प्रकार कहि कवि कोज ॥  
 इहि विधि रहा जाहि जय भाज । तेर तय देखेछ कोचसराज ॥

दो० । राजत राजसमाज महं कोचसराजकिलोर ।  
 सुंदर सामल गौर तनु बिलबिलोचनचोर । २५३ ॥

चौ० । सहज मनोहर मूरति होज । कोटि काम उपमा लघु सोज ॥  
 सरदचंदनिंदक मुख नीके । नीरजनजन भावने जी के ॥  
 चितवनि चाह मारमदहरनी । भावति हृदय जाय नहिं बरनी ॥  
 कल कपोल सुति कुंडल खोला । चिबुक अधर सुंदर मुदु बोला ॥  
 कुमुदबंधु कर निंदक हासा । झकुटी बिकट मनोहर नासा ॥  
 भाल बिसाल तिलक झलकाहीं । कच बिलोकि अलिअवलि लजाहीं ॥  
 पीत चौतनी सिरन सुहाई । कुसुमकली बिच बीच बनाई ॥  
 रेखा हरि कंध कल पीवां । जनु चिनुवनसुखमा की सीवां ॥

दो० । कुंजरमनिकंठाकलित उर तुलसी की माल ।  
 हृषभकंध केहरिठवनि बलनिधि बाऊ बिसाल । २५४ ॥

चौ० । कटि ठनोर पीत प्रट बांधे । कर सर धनुष बाम वर कांधे ॥  
 पीत यज्ञउपवीत-सुहाई । गखसिख मंजु महा कवि हाई ॥  
 देखि लोग सब भये सुखारे । इकटक लोचन टरहिं न टारे ॥  
 हरये जनक देखि दौ भाई । मुनिपदकमल गये तय आई ॥  
 करि बिनती निज कथा सुनाई । रंगअवनि सब मुनिहि दिखाई ॥  
 जहं जहं जाहिं कुंजर वर दोज । तहं तहं प्रजित चितव सब कोज ॥  
 निज निज हरि रामहिं सब देवा । कोउ न जान कहु मर्म विषेवा ॥  
 भलि रचना वप सन मुनि कहेज । राणा मुदित महा सुख लहेज ॥

दो० । सब मंचन तें मंच इक सुंदर बिबद बिसाल ।  
 मुनि समेत दौ बंधु तहं बैठारे, महिपाल । २५५ ॥

सौ० । प्रसुहि देखि सब रूप हिय हारे । अनु राकेसवदय भये तारे ॥  
 चधि प्रतीति तिन के मन भाई । राम चाप तोरव सक बाझी ॥  
 विनु भंजेऊ भवधनुष निहाला । मेसिहि सीस रामजर भाझा ॥  
 अथ विचारि नवनरु सर भाई । जय प्रताप बल तेन बवाई ॥  
 बिहसे अपर भूप सुनि बानी । के अविनेक चंद चलिमागी ॥  
 तोरेछु धनुष बाध अकनाहा । विनु तोरे को सुवरि बिवाहा ॥  
 एक बार काखउ किन होई । विद्य गित समर जितव हम होई ॥  
 यह सुनि अपर भूप मुसुकाने । धर्यसील हरिभक्त बधाने ॥

सो० । सीय बिवाहव राम गर्व दूरि करि यपन कर ॥  
 जोति को सक संयाम दसरथ के रनबांकुरे । २५ ॥

सौ० । हृथा मरऊ जनि गास बजाई । मगसोदक नहिं भूख बुताई ॥  
 सिख हमारि सुनु परम पुनीत । जगदबा जानऊ जिय सीता ॥  
 जगतपिता रघुपतिहिं विचारी । भरि लोचन कबि लेऊ निहारी ॥  
 सुंदर सुखद सकल गुन राखी । ये दौ बंधु बंधु उर बासी ॥  
 सुधा समुद्र समीप बिहाई । मृगजल गिरखि मरऊ कत धाई ॥  
 करऊ जाइ जा कहं जोइ भावा । हम तो आजु जयफल पावा ॥  
 अथ कहि भले भूप अनुरागे । रूप अनूप बिखोकन लागे ॥  
 देखहिं सुर नभ चउ बिमान । वरपहिं सुमन करहिं कल गाना ॥

दो० । जानि सुचरसर सीय तन पठवा जनक बुलाइ ॥  
 चतुर सखी सुंदरि सकल बादर चलीं सिवाइ । २५६ ॥

सौ० । शिद्यसोभा नहिं जाइ सखानी । जगदंवि का रूपगुनखानी ॥  
 उपमा सकल मोहि लघु लागी । प्राकृत नारि अंगअनुरागी ॥  
 सीय बरनि तेहि उपमा देई । को कवि कहै अजय को लई ॥  
 जौ पटतरिय तोय सम सीया । जग अथ युवति कहां कमनीया ॥  
 गिरा मुखर तनुचरु भवानी । रति अति दुखित अतनु पति जानी ॥  
 विष वाहनी बंधु प्रिय जेही । कहिय रमा सन किमि बैदेही ॥  
 जौ कविमुधापयोनिधि होई । नरम रूपमय कच्छप होई ॥  
 सोभा रजु मंदर सुंगाह । मथै पाविपंकज निज माह ॥

दो० । रहि बिधि उपमै कछि जय सुंदरतामुखमूल ॥  
 तदपि सकोच समेत कवि कहहिं सीय सम तुल ॥ २५७ ॥

सौ० । चलीं संग लै सखी सवानी । गावति गीत मनोहर बानी ॥  
 सोह नवल तनु सुंदरि मारी । जगतजननि चतुसित कवि भारी ॥  
 भवन सकल सुदेस मुहाये । अंग अंग रहि सखिन बनावे ॥  
 रंगभूमि जय सिध पस धारी । देखि रूप मोहे नर नारी ॥

हरषि सुरन कुमुभी बजरी । हरषि प्रसन्न चक्षुर भारी ॥  
 पानिपरीत वीर्य बधमाया । वीर्यम पिबे सकल महिपाया ॥  
 वीर्य बलित पिबे रामरि पाया । भवे मोक्षक सब कर माया ॥  
 मुनि समीप बैठे ही भारी । समे सबधि वीर्यम मिथि भारी ॥

दो० । मुरमुखसोय समीप बनि देखि सोय बभुपायि ।  
 समी बिलोकेन बलिन तन रघुवीरधि पर पायि । २४८ ॥

चौ० । रामरूप सब विषयहि देखी । नर नारिन परिचरी निजेवी ॥  
 सोचहिं सकल कहत बभुपायी । विधि सन विनय करहिं मन मायी ॥  
 सब विधि बेगि जनक जउताई । मति हमारि अब देख सुझाई ॥  
 बिनु विचार प्रम तजि नरनाह । वीर्य राम कर करे विवाह ॥  
 अग भल कहहिं भाव सब काह । हठ कोन्ह प्रतज्ञ उर दाह ॥  
 यह लालसा मंगन सब कोनू । नर साँवरो जानकी कोनू ॥  
 तब बंदीजन जनक मुखाये । विरदावलो कहत पलि पाये ॥  
 कह रुप आद कहज प्रम मोरा । चले भाट द्विच हर्ष न धोरा ॥

दो० । बोले बंदी बचन नर सुनहु सकल महिपाय ।  
 प्रम बिदेह कर कहहिं हम सुजा उठाइ बिसाल । २४९ ॥

चौ० । नृपभुजबल विधु शिवधनु राह । गह्वर कठोर बिदित सब काह ॥  
 रावन बान महाभट भारे । देखि घरासन गवहिं विभारे ॥  
 सोइ पुरारिकोदंड कठोरा । राजसमाज आजु जेह तोरा ॥  
 चिभुवनजय समेत बँदेही । विनहि विचार वरै हठि तेही ॥  
 सुनि प्रम सकल भूप अभिलाषे । भट माकी प्रतिपद्य मन माषे ॥  
 परिकर बांधि उठे बकुलारै । चले दृष्टदेवन धिर नारै ॥  
 तमकि ताकि तकि शिवधनु धरही । उठह न कोटि भांति बल करही ॥  
 जिन के कहु विचार मन माही । पाप समीप महीप न जाही ॥

दो० । तमकि धरहिं धनु मूढ नृप उठह न चकहिं सज्जार ।  
 मनहुं पार भटबाहुबल अधिक अधिक गह्वरार । २५० ॥

चौ० । भूप सबह दय एकहि वारा । समे उठावन टरह न टारा ॥  
 उगे न संभुधरासन कैसै । कामीबचन समीपन जेसै ॥  
 सब रुप भवे सोम उपवांसी । जेसै बिनु विराम कलासी ॥  
 कीरति बिजय वीरना भारी । चले पापकर सबस वारी ॥  
 सीहत भवे चारि द्विच रामा । बैठे निज निज आद समाजा ॥  
 रुपन बिलोकि जनक नकुलाने । बोले तचन रोष अनु दाने ॥  
 दीप दीप के भूपति नाना । प्राये सुनि हम जो प्रम ठाना ॥

देव दनुज धरि मनुष्य चरौरा । विपुल वीर आये रणधीरा ॥  
 दो० । कुंवरि मनौहरि विजय वशि कीरति अति कमनीय ।  
 पावनहार विरंचि अनु रसेल न धनुदमनीय । २६१ ॥

चौ० । कहऊ काहि यह लाभ न भावा । काऊ न संकरपाप चढ़ावा ॥  
 रहो चढाउव तोरव भाई । तिल भरि भूमि न सेऊ कुड़ाई ॥  
 अब जनि कोउ भाई भट जानी । वीर बिहीन मनुष्य न जानी ॥  
 तऊ आस निज निज गृह जाइ । लिखा न बिधि बंदेहि बिबाह ॥  
 सुलत जाइ जौ प्रन परिहरजं । कुंवरि कुंवारि रहो का करजं ॥  
 जौ अनित्यौ दिनु भट भुंइ भाई । तौ प्रन करि होतौ न हंसाई ॥  
 जनकवचन सुनि सब जर जारी । देखि जानकिहि भये दुखारो ॥  
 माखे सवन कुटिल भर भाई । रदपुट फरकत नयन रिखौहै ॥

दो० । कहि न सकत रघुवीरडर कृपे वचन अनु वाग ।  
 गाइ रामपदकमल सिर बोले गिरा प्रमान । २६२ ॥

चौ० । रघुवंसिन महं जहं कोउ होई । तेहि समाज अस कहइ न कोई ॥  
 कही जनक जसि अनुचित बानी । विद्यमान रघुकुलमनि जानौ ॥  
 सुनऊ भानुकुलपंकजभाजू । कहौ सुभाव न कहु अभिमानू ॥  
 जौ राउर अनुसासन पाजं । कंदुक इव ब्रह्मांड उठाजं ॥  
 कांचे घट जिमि डारौ फोरो । सकौ मेह मूलक इव तोरो ॥  
 तव प्रतापमहिमा भगवाना । का वापुरो पिनाक पुराना ॥  
 नाथ जानि अस आथसु होऊ । कौतुक करौ बिखोकि य सोऊ ॥  
 कमलनाल जिमि पाप चढ़ावो । सतयोजन प्रमान लै धावो ॥

दो० । तोरौ कृपकदंड जिमि तव प्रतापबल नाथ ।  
 जौ न करौ प्रभुपदसपय पुनि न धरौ धनु हाथ । २६३ ॥

चौ० । सवन सकोप वचन कइ बोले । जगमगानि महि दिग्यग बोले ॥  
 सकल लोक सब भूप डेरावे । चियहिच इव जनक सकुषावे ॥  
 गूढ़ रघुपति सब मुनि मन माहौ । मुदित भये पुनि पुनि पुनकाहौ ॥  
 सैनहि रघुपति सवन निवारे । प्रेम समेत निकट बैठारे ॥  
 बिस्वामित्र समय सुभ जानी । बोले अति कनेह खडु जानी ॥  
 उठऊ राम तऊ अऊ अऊ । मेटऊ तात जनकपरितापू ॥  
 सुनि गूढ़वचन बैरव सिर भावा । इव बिबाद न कहु डर भावा ॥  
 ठाढ़ भये उठि सख सुभावे । ठवनि युवा मृगराज लजावे ॥

दो० । उदित उदयनिरिभंज पर रघुवर बालपतंग ।  
 बिकसे सैन्य वरोजवन हरषे लोचन अंग । २६४ ॥

चौ० । वपन केरि आका निधि नाकी । वचन नकत चकलीन प्रकाशी ॥  
 मानी मरिच कुमुद सकुचाने । कपटो भूप उल्लसक सुकामे ॥  
 भये विषोक्त कौक मुवि देवा । बरहहि सुमय जगावहि सेवा ॥  
 गुरुपद बंदि सचित अनुरागा । राम मुनिन सन आचसु मांगा ॥  
 सहजहि चले सकल जगत्सामी । मत्त मंजु कुंजर बर गामी ॥  
 चकत राम सब पुरनरनारी । पुलक पूरितनु भये सुखारी ॥  
 बंदि पितर सुर सुकृत संभारे । जौ कहु पुन्यप्रभाव हमारे ॥  
 तौ सिवधनुष मृगाल कि नारे । तोरहि राम मनेस मुसारे ॥

दो० । रामहि प्रेम समेत लखि सखिन समीप युवाह ।  
 सीतामातु बनेहवस वचन कहै दिलखार । ९५ ॥

चौ० । सखि सब कौतुक देखनहारे । जोउ कदाकत चित हमारे ॥  
 कोउ न बुझाह कहइ नय पार्श्व । ये दासक आदि हठ भल नारी ॥  
 रावन बान कुचा गहि पापा । हारे सकल भूप करि दापा ॥  
 सो धन राजकुंजरकर देखौ । बाल मराल कि मंदर खेहौ ॥  
 भूपवधानप सकल सिरानी । सखि विधिगति कहु जाय न जानी ॥  
 सोखी चतुर सखी खडु बानी । तेजवन्त लघु गनिय न रानी ॥  
 कहं कुंभज कहं मिथु अपारा । सोखेउ सुयस सकल संभारा ॥  
 रविमंडल देखत लघु जागा । उदय तासु बिभुवनतम भागा ॥

दो० । मंत्र परम लघु जासु बस विधि हरि हर सुर सर्व ।  
 महा मत्त गजराज कहं बस कृह संकुस खर्व । ९६ ॥

चौ० । काम कुसुमधनुषायक लीजे । सकल भुवन चपने बस कीजे ॥  
 देवि तजिय संदस सब जानी । मंजव धनुष राम सुनु रानी ॥  
 सखीवचन सुनि भद्र परतीतो । मिटा बिबाह बहो अति प्रीतो ॥  
 तब रामहि बिचोकि वेदेही । समथ हृदय बिसरति जेहि तेही ॥  
 मनही मन मजाय अकुलानी । होउ प्रवस महेस भवानी ॥  
 करउ सकल आपनि सेवकार । करि हित हरउ आपनहकार ॥  
 गननायक बरदासक देवा । आशु खने कौपी तब सेवा ॥  
 बार बार बिस्ती सुनि मोरी । करउ चायकृता कति घोरी ॥

दो० । देखि देखि रघुनीर तन सुर मनाव धरि धीर ।  
 भरे विचोचन प्रेमजल पुलकावली खरी । ९७ ॥

चौ० । नौके निरखि नयन भरि सोभा । पितृवन सुनिरि बहुरि मन सोभा ॥  
 सहस्र तात दाहव हठ ठाकी । समुद्रत गहि कहू खान न चानी ॥  
 सचिव समथ सिख देह न कोई । बुधमान बड अनुचित होई ॥  
 कहं धनु कुलिसउ आदि कठोरा । कहं खामख खडु गात बिधोरा ॥

विधि-कहि धाति धरै उर धीरा ॥ चिरिबसुवन किमि वैचिधि धीरा ॥  
 सकल सभा की मनि अर भोरी ॥ उर मोहि बसु पाय मनि तोरी ॥  
 निज जडता सोमन पर कारी ॥ सोऊ सबस रघुपतिचि विहारी ॥  
 चति परिताप सीय मन मारी ॥ लवनिमेष सुख सब चलि मारी ॥  
 दो० । प्रभुहि चितै पुनि चितै मदि राजत सोमन सोल ॥

खेलत मनविजयोम सुख धनु विधुमंडल डोह ॥ २६८ ॥

चौ० । गिरा अछिनि सुख प्रकट होकी ॥ प्रगट न लाख निवा अवलोकी ॥  
 सोचनजल रज्जु सोचनकोला ॥ जैसे परम लपनकर सोला ॥  
 सबुधी व्याकुलता बड़ि जानी ॥ धरि धीरज प्रतीति उर जानी ॥  
 तन मन बचन मोर मन साँचा ॥ रघुपतिपदखरोख मन साँचा ॥  
 तौ भगवान सकल उरवासी ॥ करिहहिं मुचि प्रपति की दासी ॥  
 जेहि के जेहि पर सत्य सनेह ॥ सो तेहि मिलत न कहू बदेह ॥  
 प्रभुतन चितै प्रेम प्रल ठाना ॥ लपानिधान राम सब जाना ॥  
 सिधहि बिलोकि तकोउ धनु कैये ॥ चितव गरुड लघु व्यासहि जैसे ॥

दो० । लपन लखेउ रघुबंसमनि ताकेउ हरकोइउ ॥  
 पुलकि गात बोले बचन चरन चापि मझांड ॥ २६९ ॥

चौ० । दिशकुंजरज्ज कमठअहि कोला ॥ धरज्जु धरनि धरि धीर न कोला ॥  
 राम चहहिं संकरधनु तोरा ॥ होऊ सजन सुनि आयसु मोरा ॥  
 चाप समीप राम जब आये ॥ नर नारिन सुर सुकत मनाये ॥  
 सब कर संसय अर अज्ञान ॥ मंद महोपन कर अभिमान ॥  
 भृगुपति केरि गर्व गह आई ॥ सुरमुनिवरन केरि कदराई ॥  
 सिध कर सोच जनकपहितावी ॥ रानिन कर दाहन दुखदावा ॥  
 संभुचाप बड़ वोहित पाई ॥ चढ़े जाद सब संग सलाई ॥  
 रामबाऊबल सिंधु अपारा ॥ चहत पार नहिं कोउ कनहारा ॥

दो० । राम बिलोके सोन सब चित छिख से देखि ॥  
 चितई सीय लपायतन जानी बिकल विसेधि ॥ २७० ॥

चौ० । देखी बिपुल बिकल बदेही ॥ निमिष बिहात कल्य सम तेही ॥  
 कपित वारि बिनु औ तन त्यागा ॥ मुये करै का सुधातडागा ॥  
 का बर्षा जब जलो सुखाने ॥ समय चूक पुनि का पहिताने ॥  
 सब जिय जानि जानकी देखी ॥ प्रभु पुलके लखि प्रीति विसेही ॥  
 गुरुहि प्रनाम मनहिमन कीन्हा ॥ चति लाख उठार धनु सोन्हा ॥  
 दमकेउ दामिनि निमि सब लखज ॥ पुनि धनु गभमंडल सम भवठ ॥  
 खेत चढ़ावत खेत गाहे ॥ काज न लखा देख सब ठाढ़े ॥  
 तेहि हन मख राम धनु तोरा ॥ भरेउ भुवन धुनि घोर कठोरा ॥

६० । भरि भुवन घोर कठोररव रतिवाति तमि मारन चले ।  
 पिछारहि दिग्गज डोल महि चरि कोल कूरम कलमले ॥  
 सुर अमुर मुनि कर कान दीन्हे सकल विकल विचारही ।  
 कोइउ भजेउ राम तुलसी जयति बचन उचारही । ६१ ॥

६० । संकरबाप लहान बागर रघुवरबाजबल  
 बूडे सकल समाज पड़े जे प्रसन्नहि मोहबल । ६२ ॥

वौ० । प्रभु दौ खंड बाप महि डारे । देखि लोग सब भये सुखारे ॥  
 कौमिकरूप बयोनिधि पावन । प्रेमवारि चवगाइ सुहावन ॥  
 रामरूप राकेस निहारी । बढी बीचि पक्षकावलि भारी ॥  
 बाजे नभ गहगहे निहाना । देवबधू नाचहिं करि गाना ॥  
 ब्रह्मादिक सुर सिद्ध मुनीस । प्रभुहि प्रसन्नहिं देखिं असीसा ॥  
 बरषहिं सुमन रंग बज्र मज्जा । गावहिं किछर भीतरसासा ॥  
 रहो भुवन भरि जय जय बानी । धनुषभंगधुनि जात न जानी ॥  
 मुदित कहहिं अहं तहं नर नारी । भंजेउ राम संभुधनु भारी ॥  
 ६० । बंदी मागध सुतगन बिरद बदहिं मतिधीर ।

करहिं निहावरि लोग सब हय मज धन मनि रीर । ६०१ ॥

वौ० । झांझ मृदंग संख सहनारि । भरि डोल दुन्दुभी सुचारि ॥  
 बाजहिं बज्र बाजने सुहाये । अहं तहं युमतिन मंगल गाये ॥  
 सखिन सहित हर्षित अति रानी । सुखत धान प्रसा जनु पानी ॥  
 जनक लहेउ सुख सोच बिहारि । पैरत यके याह जनु पारि ॥  
 खोहत भये भूप धनुट्टे । जैसे दिवस दोपछवि कूटे ॥  
 सियहि यमुल बरनिय केहि भांती । जनुचातकी पाइ जल खाती ॥  
 रामहिं लपन बिलोकत कैसे । ससिहि चकोरकिसोरक जैसे ॥  
 सतानंद तब आयसु दीन्हा । सीता गमन राम पद कीन्हा ॥

६० । संग सखी सुंदरि चतुरि गावहिं मंगल चार ।  
 गवनी बालमरालगति सुखम अंग नृपार । ६०२ ॥

वौ० । सखिन मथ सिय सोहति कैसे । कविगन मथ महाकवि जैसे ॥  
 कर खोज जयमाल सुहारि । बिलविजयशेखा जनुहारि ॥  
 तनु सकोच मन परम उकाहू । गूढ़ प्रेम लखि पौन काहू ॥  
 जाइ समीप रामकवि देखी । रहि जनु सुंदर विष अघरेही ॥  
 चतुर सखी लखि कहा बुझारि । पहिरावहु जयमाल सुहारि ॥  
 मूनत युगल कर माल उठारि । प्रेमबिबस पहिराहु न आरि ॥  
 खोहत जनु युग जलज समाना । ससिहि स्मृति देत जयमाल ॥



गावहिं कवि चवसोकि सहेली । सिध नयमाल राम खर मेखी ॥

सो० । रघुवरउर जयमाल देखि देव वरसहिं सुमन ॥

सकुचे सकल सुखाल जनु बिलोकि रवि कुमुदगन । २७ ॥

चौ० । पुर अह ज्योम बाजने बाजे । खल भये मलिन साधु सब गाजे ॥

सुर किलर नर नाग मनीषा । जय जय सब कहि देहिं असोसा ॥

नाचहिं गावहिं विबुधबधूटी । बार बार कुसुमावलि कूटी ॥

जहं तहं विप्र बेदधुनि करहीं । बंदी विरदावलि उषरहीं ॥

महि पाताल नाक यस व्यापा । राम बरी सिध भजेउ चापा ॥

करहिं आरती पुरनरनारी । देहिं निहावरि बिना बिसारी ॥

सोहत सोय राम की जोरी । कवि सृंगार मनहुं दक ठोरी ॥

सखी कहहिं प्रभुपद गज सीता । करति न चरनपरस अति भीता ॥

दो० । गौतमतिथगति सुरति करि नहिं परसति पद पानि ।

मन बिहसे रघुवंसमनि प्रीति अलौकिक जानि । २७३ ॥

चौ० । तब सिध देखि भूप अभिलाषे । कर कपट भूढ मन माषे ॥

उठि उठि पहिरि सनाह अभागे । जहं तहं गाल वजावन लागे ॥

खेज कुड़ाई सीध कह कोऊ । धरि बांधऊ नृपबालक दोऊ ॥

तारे धनुष चाँड़ नहिं सरई । जीवन हमहिं कुंवरि को बरई ॥

जौ बिदेह कहुं करै सहाई । जोतऊ समर सहित दौ भाई ॥

साधु भूप बोले सुनि बानी । राजसमाजहिं लाज लजानी ॥

वस प्रताप बीरता बड़ाई । नाक पिनाकहि संग सिधायी ॥

मोह सूरता कि अब कहुं पाई । अस बुधि तौ विधिमुहमसि लाई ॥

दो० । देखऊ रामहिं नयन भरि तजि दरवा मद मोऊ ।

लषनरोष पावक प्रबल जानि सबल जनि होऊ । २७४ ॥

चौ० । बैनतेयबलि जिमि सह काग । जिमि सह सहहिं नागअरिभाग ॥

जिमि सह कुसल अकारन कोही । सुख संपदा सहहिं सिवद्रोही ॥

लोभी लोलुप कीरति सहई । अकलंकता कि कामी सहई ॥

हरिपदविमुख परम गति साहा । तब तुम्हार लालच नरनाहा ॥

कोलाहल सुनि सीध सकाही । सखी सिवाह भई जहं रानी ॥

राम सुभाष चले गुह धाहीं । सिधसनेह वरगत मन माहीं ॥

रागिन सहित सोचवस सीधा । अबधौं विधिहिं कहा करनीया ॥

भूपवसन सुनि रत उत तकहीं । लषन रामउर बोलि न सकहीं ॥

दो० । अदन नयन झलुटी झुटिछ चितवत वपन सकोप ।

मनऊं मत्त गजगन निरखि सिंहकिशोरहि चोप । २७५ ॥

चौ० । खरभर देखि बिकल नरनारी । सब निशि देखि महीपन नारी ॥  
 तेहि अवसर बुनि विवधनुभंगा । आये भृगुकुलकमलपतंगा ॥  
 देखि महीप सकल सकुचामे । बाज छपट अनु सवा सुकामे ॥  
 गौर वरीर भूति भलि भ्राजा । भास बिबास विपुल विराजा ॥  
 सोम जटा वलि बदन मुहावा । रिसवस कहुक चदन जे आवा ॥  
 भृकुटो कुटिल नयन रिस राते । यहजहिं चितवत मनजं रिसाते ॥  
 हृषभ कंध पर बाहु विबाहा । चाह जनेउ मास मृगहाहा ॥  
 कटि मुनिबसन तन दुद बांधे । धनु सर कर कुठार कल कांधे ॥

दो० । सगभेष करनी कठिन वरनि न जार बरुष ।  
 धरि मुनि तनु अनु वीररस आये जहं सब भूप । २०६ ॥

चौ० । देखत भृगुपतिभेष करासा । उठे सकल मय बिकल मुभासा ॥  
 पितु समेत कहि कहि निज नामा । सगे करन सब दंडमंगामा ॥  
 जेहि मुभाय चितवहिं हित जानो । सो जानै अनु आयु खुटानी ॥  
 जनक बहोरि आय सिर गावा । सोय मुखास प्रणाम करावा ॥  
 आसिष दीन्ह सखी हरषानो । निज समाज सैगई सवामी ॥  
 विस्वामित्र मिले पुनि आई । पदसरोज मेले द्वौ भाई ॥  
 राम लखन दसरथ के ढोटा । दीन्ह असीस जार्नि भल ओटा ॥  
 रामहि चितय रहै धरि सोचन । रूप प्रपार मारमदमोचन ॥

दो० । बडरि बिखोकि बिदेह सन कहुक कहा अति भीर ।  
 पूकत जान अजान निमि थापेउ कोप वरीर । २०७ ॥

चौ० । समाचार कहि जनक सुनाये । जेहि कारण महीप सब आये ॥  
 मृत बचन फिरि अनत निहारे । देखे चापखंड महि डारे ॥  
 अति रिस बोले बचन कठोरा । कहु जहु जनक धनुष केर तोरा ॥  
 बेगि देखाउ मूढ़ ननु आजू । उलटौं महि जहं लगि तव राजू ॥  
 अति उर उतर देत तप नाहीं । कुटिल भूप हरषे मन माहीं ॥  
 सुर मुनि नाम नगर नरनारी । सोचहिं सकल चास उर भारी ॥  
 मन पक्रिताति सोय महंतारी । बिधि मंवारि सब बात बिगारी ॥  
 भृगुपति कर सुभाव मुनि सीता । अहं निमेष कस्य सम बीता ॥

दो० । सभय बिखोके सोम सब जानि जानकी भीर ।  
 हृदय न हर्ष बिषाद कहु बोले खोरखोर । २०८ ॥

चौ० ॥ नाथ संभुधनुभंजनिहारा । होइहि कोउ एक दास तुम्हारा ॥  
 आयसु कहा कहिय किन मोही । मुनि रिवाय बोले मुनि कोही ॥  
 सेवक होइ जो करै सेवकाई । अरिकरनी करि करि साराई ॥

मुनज्ज राम जेह सिवधनु तोरा । सहस्रबाहु सम सो रिप मोरा ॥  
 सो बिलगाउ बिहाद समाना । मनु मारे जैह सब राजा ॥  
 मुनि मुनिबचन लपन मुमुकाने । बोले परमुधरहिं अपमाने ॥  
 बज्र धनुहों तोरेउं छरिकारिं । कबहुं न असि रिस कीन्ह गोसाईं ॥  
 इहि धनु पर ममता केहि हेमू । मुनि रिषाय कह भृगुकुलकेतू ॥  
 दो० । रे नृपबालक कालबस बोखत तोहि न संमार । ॥

धनुहीं सम विपुलारिधनु बिदित सकल संसार । २७८ ॥

चौ० । लपन कहा हंसि हमरे जाना । मुनज्ज देव सब धनुष समाना ॥  
 का कति साभजीन धनु तोरे । देखा राम मये के भोरे ॥  
 क्ववत टूट रघुपतिहि न दोष । मुनि बिनु काज करिष कत रोष ॥  
 बोले चितय परमु की भोरा । रे सठ मुनेसि सुभाव न मोरा ॥  
 बालक बोलि बधा नहिं तोही । केवल मुनि जड़ जानेसि मोही ॥  
 बालब्रह्मचारो अति कोही । बिस्वबिदित क्वचीकुलद्रोही ॥  
 भुजबल भूमि भूप बिनु कोन्ही । बिपुल वार महिदेवन दोन्ही ॥  
 सहस्रबाहुभुजकुंदनहारा । परमु विष्णुकु महीपकुमारा ॥

दो० । मात पितहि जनि सोचबस करसि महीपकिसोर । ॥

गर्भन के अर्भकदलन परनु मोर अति घोर । २८० ॥

चौ० । बिहसि लपन बोले मृद बानी । अहो मुनीस महा भट मानों ॥  
 पुनि पुनि मोहि देखाव कुठारा । चहत उड़ावन फूँकि पहारा ॥  
 इहां सुहउवतिथा कोउ माहीं । जो तर्जनि देखत मगि हाँ ॥  
 देखि कुठार सरासन बाना । मै कहु कहा सहित जाना ॥  
 भृगुकुल समुझि जनेउ बिस्वोकी । जो कहु कहहु सही रिस रोकी ॥  
 मुर महिमुर हरिजन अह गाई । हमरे कुल दम पर न मुराई ॥  
 बधे पाप अपकीरति हारे । मारतहुं पां पयित तुन्दारे ॥  
 कोटि कुलिस सम बचन तुम्हारा । हथा धरज्ज धनु बान कुठारा ॥

दो० । जो बिलोकि अमुचित कहेउं कमज्ज महा मुनि धीर । ॥

मुनि सरोष भृगुबंसमणि बोले गिरा गंभीर । २८१ ॥

चौ० । कौशिक मुनज्ज मंद यह बालक । कुटिल कालबस निज कुलघालक ॥  
 भानुवंशराकेसकलंक । निपट निरंकुस अबुध असकृ ॥  
 कालकवर होइहि कुन माहीं । कहा पुकारि खोरि मोहि नाहीं ॥  
 तुम हटकज्ज जो चहज्ज उबारा । कहि प्रताप बल रोष हमारा ॥  
 लपन कहेउ मुनिसयस तुम्हारा । तुमहि अहत को बरनै पारा ॥  
 अपने मुख तुम आपनि करनी । बार अनेक भांति वज्र बरनी ॥

- नहिं मतोष तो पनि कहु कहल । अनि रिष रोकि दुख दुख कहल ॥  
 बोरहति तुम धीर अहोभा । गारो देत न पावजु सोभा ॥
- दो० । मर समर करनी करहिं कहि न जनावहिं पापु ।  
 विद्यमान रन धार रिपु कायर कहहिं प्रकापु । ६८२ ॥
- चौ० । तुम तौ काल राकि अजु लाव । बार बार मोहि लागि मुखावा ॥  
 घनत लपन के बचन कठोरा । परम मुधारि धरेज कर बोरा ॥  
 अब अनि देह दोष मोहि खोगू । कटुबाहो बालक बधयौ ॥  
 बाल विछोकि बजत मै हाथा । अब यह मरनधार भा थाथा ॥  
 कौसिक कहा हमिय अपराधू । बालदोषगुन समहिं न थाधू ॥  
 कर कठार में अकरन कोही । आगे अपराधी गृहइही ॥  
 उत्तर देत काडैं बिनु मारे । केवल कौसिक बोल तुम्हारे ॥  
 नत रहि काटि कठार कठोरे । गृहहिं हरिन होतेउत्तम धोरे ॥
- दो० । गाधिबुधन कह चरच चरि मुनिहिं हरिअरे मूछ ।  
 अजगव खंडेउ जय जिमि अजहुं न बूझ आवूझ । ६८३ ॥
- चौ० । कहेउ लपन मुनि सोलनपारा । को नहिं जान बिदित संसारा ॥  
 मातहिं पितहिं उरिन भये नोके । गृहस्थन रक्षा सोच बड़ जी के ॥  
 खो अजु हमरे माये काडा । दिन रजि मयेउ याज बजु बाडा ॥  
 अब आनिय व्यवहरिया बोली । तुरत देव मै पैसी खोली ॥  
 मुनि कटु बचन कठार मुधारा । हाहा कहि सब लोग पुकारा ॥  
 भृगुवर परम देखावजु मोही । बिप्र विचारि बचौ नपटोही ॥  
 मिले न कबहुं मभट रन गाडे । दिज देवता घरही के बाडे ॥  
 अनुचित कहि सब लोग पुकारे । रघुपति सैनहिं लपन निवारे ॥
- दो० । लपनउतर आऊति सरिस भृगुपतिकोप छवानु ।  
 बहत देखि जस सम बचन बोखि रघुकुलभानु । ६८४ ॥
- चौ० । नाथ करजु बालक पर होल । मुंडूधूमुख करिय न कोल ॥  
 औ पै प्रभुप्रभाव कहु जाना । तौ कि बराबर करत अयाग । ॥  
 औ लरिका कहु अनुचित करहीं । गुरु पितु मात मोद मन भरहीं ॥  
 करिय लपन सिंगु खेवक जानी । तुम सम सोल धीर मुनि जानी ॥  
 रामबचन मुनि कहुक जुड़ने । कहि कहु लपन बजुरि मनुकाने ॥  
 हंसत देखि नखविषि रिष खापी । राम तोर आता बड़ पापी ॥  
 गौर सरीर खाम मन माहीं । कालकूटमुख पदमेख नाहीं ॥  
 सहज टेढ़ अनुहरे न तोहीं । नोच मोच सम लखे न मोहीं ॥
- दो० । लपन कहेउ हमि मुनहुं मुनि क्रोध पाप कर मूल ।

जहि बस जन अनुचित करहिं सखहिं बिस्र प्रतिकूल २८५ ॥

चौ० । मैतुन्हार अनुसर मुनिराधा । परिहरि कोप करिय अब दाया ॥  
 टूट चाप नहिं जुरहिं रिसाने । बैठिय होइहहिं पाय पिराने ॥  
 औ अति प्रिय तो करिय उपाई । जोरिय कोउ बड़ गुनिय बुलाई ॥  
 बोलत सखनहिं जनक उराहीं । मष्ट करहुं अनुचित भल नाहीं ॥  
 धरयर कांपहिं पानरनारी । छोट कुमार खोट अति भारी ॥  
 भृगुपति मुनि मुनि निर्भय बानी । रिस तनु जरै होइ बलहानी ॥  
 बोले रामहिं देइ निहोरा । बंचौ विचारि बंधु लघु तोरा ॥  
 मन मलीन तनुमुंदर कैसे । बिषरसभरा कनकघट जैसे ॥

दो० । मुनि लक्ष्मिन बिहमे बज्ररि नयन तरेरे राम ।  
 गुरु समीप गवने सकुचि परिहरि वानी वाम । २८६ ॥

चौ० । अति विनीत मृदु सीतल बानी । बोले राम जोरि युग पानी ॥  
 मुनज्ज नाथ तुम सहज मुझाना । बालकबचन करिय नहिं काना ॥  
 बररे बालक एक सुभाज । इनहिं न सन्त बिदूषहिं काज ॥  
 तिन नाहीं कहु कनज विगारा । अपराधी मैं नाथ तुम्हारा ॥  
 छपा कोप बंध बंध गुहाई । मो पर करिय दास को नाई ॥  
 कहिय बेगि जेहि बिधि रिस आई । मुनिनाथक सोइ करिय उपाई ॥  
 कह मुनि राम जाइ रिस कैसे । अंजुं अनुज तव चितव अनैस ॥  
 इहि के कंठ कुठार न दोहा । तौ मैं कहा कोप करि कोन्हा ॥

दो० । गर्भ सखहिं अवनिपरवनि मुनि कुठारगति घोर ।  
 परनु अकल देखौं जियत बैरो भूपकिसोर । २८७ ॥

चौ० । बहे न हाथ इहे रिस काली । भा कुठार कुंठित नपचाती ॥  
 भयउ वाम बिधि फिरेउ सुभाज । मोरे हृदय छपा कसि काज ॥  
 आजु दैव दुख दुख सहवा । मुनि सौमिचि बिहासि मिर नावा ॥  
 बाउ कृपामूरति अनुकूला । बोलत बचन झरत जनु फूला ॥  
 औ पै छपा जरै मुनिगाता । क्रोध भये तनु राखु बिधाता ॥  
 देखु जनक हठि बालक खेह । कोन्ह चहत जइ यमपुर मेह ॥  
 बेगि करहुं किन आंखिन ओटा । देखत छोट छोट नपटोटा ॥  
 बिहंस लपन कहा मुनि पाहीं । मूंदिय आंखि कतजुं कोउ नाहीं ॥

दो० । परसुराम तब राम प्रति बोले बचन सक्रोध ।  
 संभु सरासन तोरि सठ करसि हमार प्रबोध । २८८ ॥

चौ० । बंधु कहै कटु संमत तोरे । तूं कल बिनय करसि कर जोरे ॥  
 कह परितोष मोर मंथामा । नाहित छाडु कहाउब रामा ॥

कल तजि करज समर सिवद्रोही । बंधु सहित नतु मारौ तोही ॥  
 भृगुगति तमकि कुठार उठाये । मन मुसकाहिं राम बिर नाये ॥  
 गुनज लखन कर हम पर रोष । कतज सुधारज ते बड़ दोष ॥  
 टट जानि संका सब काज । एक चंद्रमहिं यसै न राज ॥  
 राम कहैउ रिस तजिय मुनोरा । कर कुठार आगे यह सोरा ॥  
 जेहि रिस जाद करिय सोइ खामी । मोहि जानि आपन अनुगामी ॥

शो० । प्रभु सेवकहि समर कस तजज विप्र घर रोष ।

भेष बिल्लेकि कहैसि कहु बालकहं नहिं दोष । २८८ ॥

शौ० । देखि कुठार बानधनुधारी । भै सरिकहि रिस बीर विचारी ॥  
 नाम जान पै तुमहि न चीन्हा । बंस सुभाव उतर तेहि बीन्हा ॥  
 जौ तुम अवतज मुनि की नहिं । पदरज बिर बिस धरत गुहारी ॥  
 कमज चक अनजानत केरी । सहिय विप्रज कपा घनरी ॥  
 हमहिं तुमहिं सरवरि कस नाया । कहज तो कहाँ चरन कह माया ॥  
 राममात्र लघु नाम हमारा । परस सहित बड़ नाम तुम्हारा ॥  
 देव एक गुन धनुष हमारे । नव गुन परम पुनीत तुम्हारे ॥  
 सब प्रकार हम तुम सन हारे । कमज विप्र अपराध हमारे ॥

शो० । बार बार मुनि विप्रवर कहा राम सब राम ।

बोले भृगुपति सख होइ तुल्य बंधु सम नाम २८९ ॥

शौ० । निपटहि दिव करि जानेऊ सोही । मै अस विप्र सुनाऊ तोही ॥  
 चाप खुदा बर आउति जानू । कोप मोर प्रति मोर कृपानू ॥  
 समिध सेन चतुरंग सुहारे । महा महीष भये पसु चारे ॥  
 मै रहि परस काटि बलि दोहा । समरयज्ञ जग कोटिग कीन्हा ॥  
 मोर प्रभाव विदित नहिं तोरे । बोखसि निदरि विप्र के भोरे ॥  
 भंजैउ चाप दाप बड़ बाढा । अहमिति मनज जीति जग ठाढा ॥  
 राम कहा मुनि कहज विचारी । रिस प्रति बड़ लघु चूक हमारी ॥  
 कुअतहि टुट पिनाक पुराना । मै केहि हेतु करौ अभिमाना ॥

शो० । जौ हम निदरहिं विप्र बड़ि सख सुजउ भृगुनाथ ।

तौ अस की जग सुभट जेहि भयवष नावहि माथ २९० ॥

शौ० । देव दनुज भूपति भट नाना । समबल अधिक होइ बलवाना ॥  
 जौ रन हमहिं प्रचारय कोऊ । सरहिं सुखेन काज किन होऊ ॥  
 कंचिय तनु धरि समर सकाना । कुलकलक तेहि पावर जाना ॥  
 कहाँ सुभाव न कुलहि प्रमो । काखज उरहिं न रन रघुवंशी ॥  
 विप्रवंस की अशि प्रभुताई । अमथ होइ जौ तुमहि उरारी ॥  
 सुनि मृदु बड़ बचन रघुपति के । उचरे घटस परसुधरमति के ॥

गाम-रमापति कर धनु खेह । खैचऊ मोर मिटै संदेह ॥  
 देत चाप आपुहि छड़ि गयऊ । परसुराममन बिसर्य भयऊ ॥  
 दो० । जाना रामप्रभाव तव पुलक प्रफुलित गात ।

जोरि पानि बोले बचन प्रेम न हृदय समात । २८२ ॥

सौ० । जय रघुवंसनवनजवनभानू । गहनदनुजकुलदहनकसानू ॥  
 जय सुरविप्रधेनुहितकारी । जय मदमोहकोहभमहारी ॥  
 बिनयसीलकहनागुनसागर । जयति वचनरचना अति आगर ॥  
 संवकमुखद सुभग सब अंगा । जय सरीरकवि कोटिअनंगा ॥  
 करौ कहा मुख एक प्रसंसा । जय महिसमन मानसहंसा ॥  
 अनुचित बज्रत कहउं अज्ञाता । कमज कमामंदिर हो आता ॥  
 कहि जय जय जय रघुकुलकेतू । सुगुपति गये अपुहि तप हेतू ॥  
 अरभय कुटिल महोप डेराने । जह तह कायर अपुहि पराने ॥

दो० । देवन दोन्ही दुन्दभी प्रभु पर बरषहिं फूल ।  
 हरषे पुरनरगारि सब मिटा मोह भय सुल । ॥

सौ० । अति गहगहे बाजने बाजे । सबहि मनोहर न साजे ॥  
 यूथ यूथ मिलि सुमुखि सुनयनी । करहिं गान कल किलबयनी ॥  
 सुख बिदेह कर बरनि न जाई । जन्मदरिद्र मनऊं धि पाई ॥  
 बिगत चास भद्र सीय सुखारी । जनु बिधुउदय चारकुमारी ॥  
 जनक कीन्ह कौशिकहि प्रनामा । प्रभुप्रसाद धनु भंजु रामा ॥  
 मोहि कृतकृत्य कीन्ह दुऊं भाई । अब जो उचित सो कहिय गुसाई ॥  
 कह मुनि सुन नरनाह प्रवीणा । रहा बिबाह चाप अधीना ॥  
 टूटतही धनु भयउ बिबाह । सुर नर नागबिदित सब काह ॥

दो० । तदपि जाह तुम करऊ अब यथा वंस व्यवहार ।  
 बूझिबिप्रकुलद्विगुह बेद बिदित आचार । २८४ ॥

सौ० । दूत अवधपुर पठवऊ जाई । आनै नप दशरथहिं बुलाई ॥  
 मुदित राउ कहि भलेहि कपाला । पठये दूत अवधतेहि काला ॥  
 बज्ररि महाजन सकल बलाये । आइ सबनि सादर सिरनाये ॥  
 हाट बाट मंदिर सुरबासा । नगर संवारऊ चारिऊ पासा ॥  
 हरषि चले निज निज गृह आये । पुनि परिचारक बोलि पठाये ॥  
 रचऊ बिचित्र बितान बनाई । शिर धरि बचन चले सचु पाई ॥  
 पठये बोलि गनो तिनह नाना । जे बितानबिधिकुसल सुजाना ॥  
 बिधिहि बंदि तिनह कीन्ह अरंभा । बिरचे कनककेदोरींभा ॥

दो० । हरित मनिन के पत्र फल पद्म राग के फल ।

रचना देखि विचित्र गति मन बिरचि के भूल ॥ २८५ ॥

चौ० । बेनु हरित मनिमय सब कीन्ह । सरस सबन परहिं नहिं चीन्ह ॥  
 कनक कलित अहिबेलि बनाई । लखि नहिं परै सबन सुहाई ॥  
 तेहि के रचि पचि बंध बनाये । बिच बिच मुकुतादाम सुहाये ॥  
 मानिक मरकत कुलिश पिरोजा । खोरि कोरि पचि रचे खरोजा ॥  
 किये भंग बज्र रंग बिहंगा । गुंजहिं कृजहिं पवनप्रमंगा ॥  
 सुरप्रतिमा खंभन गहि काढी । मंगलद्रव्य लिये सब ठाढी ॥  
 चौके भांति अनेक प्राई । सिंदूर मनिमय खरज सुहाई ॥

दो० । सौरभपल्लव सुभग मृडि किबे गोसमनि कोरि ।  
 हेमवैर मरकतचवरि लसत पाटमयखोरि ॥ २८६ ॥

चौ० । रचे रुचिर बरबंदनदारे । मनहुं मनोभव फंद बंधारे ॥  
 मंगलकलस अनेक बनाये । ध्वजपताकपट चमर सुहाये ॥  
 दीप मनोहर मनिमय नाना । जाइ न बरनि विचित्र बिताना ॥  
 जेहि मंडप दुखहिनि बंदेही । सो बरनै अचि मति कवि केही ॥  
 दूलाह राम रूपगुनसागर । सो बितान तिहुं लोक उजागर ॥  
 जनकभवन की सोभा जैसी । गृह गृह प्रति पुर देखिय तैसी ॥  
 जेहिं तिरहुति तेहि समय निहारी । तेहि लघु लगे भुवन दसचारी ॥  
 जो संपदा जोखगृह सोहा । सो बिलोकि सुरनाथक मोहा ॥

दो० । बसै नगर जेहि लखि करि कपट नारि बर भेष ।  
 तेहि पुर की सोभा कहत सकुचु भारद मेष ॥ २८७ ॥

चौ० । पङ्कसे दूत रामपुर पावन । हरये नगर बिलोकि सुहावन ॥  
 भूपदार तिन्ह खवरि जगई । दसरथ थप सुनि लिये बुलाई ॥  
 करि प्रनाम तिन्ह पातो दोन्ही । मदित महीप आप उठि कीन्ही ॥  
 बारि बिलोचन बांचत पातो । पुलक गात आई भरि छातो ॥  
 राम लघन उर कर बर चोटी । रहि गये कहत न खाटी मोटी ॥  
 पुनि धरि धीर पत्रिका बांचो । हरषी सभा बात सुनि सांचो ॥  
 खेलत रहे तहां सुधि पाई । आये भरत सहित दौ भाई ॥  
 पूकत अति सनेह सकुचार्द । तात कहाँ ते पातो आई ॥

दो० । कुसल प्रानप्रिय बंधु दोउ अरहिं कहइ केहि देस ।  
 सुनि सनेहाने बचन बांचो बहुरि नरेस ॥ २८८ ॥

चौ० । सुनि पातो पुलक दौ ध्याता । अधिक सनेह समात न गाता ॥  
 प्रीति पुनीत भरत को देवी । सकल सभा सुख लहेउ बिसवी ॥  
 तब नृप दूत निकट बैठारे । मधुर मनोहर बचन उचारे ॥  
 भैया कहइ कुसल दौ बार । तुम नीके निज नयन निहारे ॥



सामन्त गौर धरे धनुभाषा । बय किसोर कौशिक मुनि साथा ॥  
 पहिचानेऊ तो कहऊ सुभाऊ । प्रेम बिबस पुनि पुनि कह राज ॥  
 जा दिन ते मुनि गये खिवाँरे । तब तें आजु साँचि सुधि पाई ॥  
 कहऊ बिदेह कवन बिधि जाने । मुनि प्रिय बचन दूत मुमुकाने ॥

दो० । मुनहु महीपतिमुकुटमनि तुम सम धन्य न कोउ ।  
 राम खवन जिन के तनय बिखविभूषन दोउ । २८८ ॥

चौ० । पूकनयोग न तनय तुम्हारे । पुरुषसिंह तिहुँ पुर उजियारे ॥  
 जिन के जस प्रताप के आगे । ससि मल्लीन रवि सीतल लागे ॥  
 तिन कहँ कहिय नाथ किमि चोन्हे । देखिय रवि कि दोप कर लोन्हे ॥  
 सीयस्वयंवर भूप अनेका । सिमिटे सुभट एक तें एका ॥  
 संभरारासन काऊ न टारा । हारे सकल भूप बरियारा ॥  
 तीनि लोक महँ जे भट मानो । सब की सक्ति संभधनु भानी ॥  
 सकै उठार सुरामर मेरु । सोउ हिय हारि गयउ कर फेरु ॥  
 जेहिँ कौतुक धिवसैल उठावा । सोउ तेहि सभा पराभव पावा ॥

दो० । तहां राम रघुवंसमनि मुनिय महा महिपाल ।  
 भंजेउ चाप प्रयास खिन जिमि गज पंकजनाल । २९० ॥

चौ० । मुनि सरोव भूगनायक आपे । बहुत भांति तिन आंखि देखाये ॥  
 देखि रामबल निज धनु दोन्हा । करि बहु विनय गवन बन कीन्हा ॥  
 राजत राम अतुलबल जैसे । तेजनिधान लखन पुनि तैसे ॥  
 कंपहिँ भूप बिलोकेत जाके । जिमि गज हरिकिसोर के ताके ॥  
 देव देखि तव बालक दोऊ । अवनि आंखि तर आव न कोऊ ॥  
 दूतबचनरचना प्रिय लागी । प्रेमप्रतापबीररसपागी ॥  
 सभा समेत राउ अनुरागे । दूतहि देन निहावर लागे ॥  
 कहि अनोति ते मदेउ काना । धर्म बिचारि सबहि सुख माना ॥

दो० । तब उठि भूप बसिहु कहँ दोन्ह पत्रिका जाइ ।  
 कथा सुनाई गुरुहि सब सादर दूत बुलाइ । २९१ ॥

चौ० । मुनि बोले मुनि अति सुख पाई । पुन्य पुरुष कहँ सहि सुख हारि ॥  
 जिमि सरिता सागर महँ जाहीं । यद्यपि ताहि कामना नाहीं ॥  
 तिमि सुख संपति बिनिहिँ बुलाये । धर्मसीलपहँ जाहिँ सुभाये ॥  
 तुम गुरुविप्रधेनुसुरसेवी । तसि पुनोत कौसल्या देवी ॥  
 सकतो तुम समान जग माहीं । भयउ न है कोउ होनेउ नाहीं ॥  
 तुम ते अधिक न्य बड़ काके । राजन राम हरिस सुत काके ॥  
 बीर विनोत धर्मव्रतधारी । गुनसागर कालक वर चारी ॥

- तुम कहं सर्व काल कल्याण । सबहु वरात ब्याह निसाना ॥
- दो० । चलेउ बेगि मुनि गुरुवचन भलेहि माथ सिर नार ।  
भूपति गवने भवन तव दूतहि बास दिवाद । १०९ ॥
- चौ० । राजा सब रनिवास बसाई । जनकपत्रिका बांछि सुनाई ॥  
मुनि संदेश सकल हरषानो । अपर कथा सब भूप बखानो ॥  
प्रेम प्रफुल्लित राजा रानी । मनहुं पिछिनि मुनि बारिदबानी ॥  
मुदित असीस देखि गुरुनारी । अति आनंदमग्न मरहतारी ॥  
लहि परस्पर अति प्रिय पानी । हृदय सगाह जुड़ावहिं छाती ॥  
राम लषन की कीरति करनो । बारहिं बार भूपवर वरनी ॥  
मुनिप्रसाद कहि दार विधाये । रानिन्ह तव महिदेव बुलाये ॥  
दिये दान आनंद समेता । चले विप्रवर आसिष देता ॥
- सो० । याचक लिये हंकारि दोन्ह निछावरि कोटि बिधि ।  
चिरजीवहु सुन चारि चक्रवर्ति दसरथ के । ११० ॥
- चौ० । कहत चले पहिं पट नाना । हरपि हुने गहगहे निसाना ॥  
समाचार सब लोगन पाये । लागे घर घर होन बधाये ॥  
भवन चारिदस भरेउ चक्राधू । जनकमुतारघुभीरविबाधू ॥  
मुनि सुभ कथा लोग अनुरागे । मग गृह गली संवारन लागे ॥  
यद्यपि अश्वघ सदैव मुहावनि । रामचरी मंगलमय पावनि ॥  
तदपि प्रीति की रीति मुहाई । मंगलरचना रची बनाई ॥  
ध्वज पताक पट चामर चारु । कावा परम बिचित्र बजारु ॥  
कनक कलस तोरनमनिआला । हरद दूध दधि अक्षत मांसा ॥
- दो० । मंगलमय निज निज भवन लोगन रचे बनाद ।  
बोथी सोचो चतुर सब चौके चारु पुराद । १११ ॥
- चौ० । जहं तहं यूथ यूथ मिलि आमिनि । सजि नवसप्त सकल युतिदामिनि ॥  
विधुबदनी मृगसावकलौचनि । निज सरूप रतिमानविमौचनि ॥  
गावहिं मंगल मंजुल बानी । मुनि कल रव कलकंठ लजानी ॥  
भूपभवन किमि जाइ बखाना । बिस्वबिमोहन रचेउ बिताना ॥  
मंगल द्रव्य अनोहर नाना । राजत ब्राजत विपुल निसाना ॥  
कतहुं बिरद बंदी छहरहों । कतहुं वेदधुनि भूसुर करहों ॥  
गावहिं मुंदरि मंगल मोता । छे छे नाम राम अरु सीता ॥  
बहुत उकाह भवन अति धोरा । मानहुं उमगि चला चहुं थोरा ॥
- दो० । सोभा दसरथभवन की को कवि बरने पार ।  
जहां सकल सुरसीसमनि राम, सीता अवतार । ११२ ॥

चौ० । भूष भरत पुनि लिये बुलाई । हय गज खंदन साजजु आई ॥  
 चलजु बेगि रघुवीरबराता । मुनत पुलक पूरे दौ आता ॥  
 भरत सकल साहनी बुलाये । आयसु दीन्ह मुदित उठि धाये ॥  
 रचि रुचि जीन तुरग तिन साजे । बर्न बर्न बर बाजि विराजे ॥  
 सुभग सकल सुठि चंचल करनी । अथ जिमि जरत भरत पगु धरनी ॥  
 नाना भांति न जाहिं बखाने । निदरि पवक नु चहत उड़ाने ॥  
 तिन सब क्यल भये अमवारा । भरत सरिस सब राज कुमारा ॥  
 सब सुंदर सब भूषनधारी । कर सर चाप तून कटि भारी ॥

दो० । करे कबोले क्यल सब मूर सुजान नवीन ।

युग पदचर असवार प्रति जे अस्मिकलाप्रवीन । ३०५ ॥

चौ० । बांधे बिरद बोर रन गाढे । निकसि भये पुरबाहिर ठाढे ॥  
 फेरहि चतुर तुरग गति नाना । हरषहि धुनि मुनि पनव निसाना ॥  
 रथ सारथिन बिचित्र बनाये । ध्वज पताक मनि भूषन छाये ॥  
 चंवर चारु किंकिनिधुनि करहीं । भानुयानसोभा अपहरहीं ॥  
 खामकन अगनित हय होते । ते तिन्ह रथन सारथिन जोते ॥  
 सुंदर सकल अलंकृत मोहैं । जिनहि बिलोकत मुनिमन मोहैं ॥  
 जे जल चलहिं थलहिं की नाई । टाप न बूझ वेग अधिकाई ॥  
 अल सल सब साज सजाई । रथो सारथिन लिये बुलाई ॥

दो० । चढ़ि चढ़ि रथ बाहिर नगर लागो जुरन बरात ।

होत सुगुन सुंदर सबहि जो जेहि कारज जात । ३०६ ॥

चौ० । कलित करिवरन्ह परी अंवारी । कहि न जाइ जेहि भांति संवारी ॥  
 चले मल्ल गज घंट विराजे । मनजु सुभग सावनघन गाजे ॥  
 बाहन अपर अनेक विधाना । सिविका सुभग सुखासन याना ॥  
 तिन चढ़ि चले बिप्रवरहदा । जनु तनुधरे सकल सति हदा ॥  
 मागध सूत बंद गुनगायक । चले यान चढ़ि जो जेहि लायक ॥  
 वेसर ऊंट बृषभ बज्र जाती । चले बस्तु भरि अगनित भांती ॥  
 कोटिन कांवर चले कहारा । बिबिध बस्तु को बरनै पारा ॥  
 चले सकल सेवकसमुदाई । निज निज साज समाज बनाई ॥

दो० । सब के उर निर्भर हरष पूरित पुलक सरीर ।

कबहिं देखिहैं नयन भरि राम लषन दौ बीर । ३०७ ॥

चौ० । गरजहिं गजघंटाधुनि घोरा । रथरव बाजि हींस चहुं ओरा ॥  
 निदरि घनहिं हूमरहिं निसाना । निज पराध कहुं सुनिय न काना ॥  
 महा भीर भूषति के द्वारे । राज होइ जाइ पखान पबारे ॥

चडो अटारिन देखिं नारी । लिखे आरती मंगल थारी ॥  
गावहिं गीत मनोहर नाना । अति अनंद नहिं जाद बखाना ॥  
तब सुमंत दुद खंदन खाजी । जोते रविहृद्यमंदक बाजी ॥  
दौ रथ रुचिर भूप पद्म आने । नहिं सारद प्रति जाहिं बखाने ॥  
राजसमान एक रथ भाजा । दूसर तेजपुंज अति राजा ॥

दो० । तेहि रथ रुचिर बसिष्ठ कहं हरषि चढाद नरेश ।  
आपु चढेउ खंदन सुमिरि हर गुरु गौरि गनेस । ३०८ ॥

चौ० । सहित बसिष्ठ भोह नृप कैसे । सुरगुरु संग पुरंदर कैसे ॥  
करि कलरीति बंदविधि राज । देखि सबहिं सब भांति बनाज ॥  
सुमिरि राम गुरुआयसु पाई । चले महीपति संख बजाई ॥  
हरष बिबध बिलोकि घराता । बरघहिं सुमन सुमंगलदाता ॥  
भयउ कोनाहल हय गज गाजे । थोम बरात बाजने बाजे ॥  
सरनरनारि सुमंगल गाई । सरम राग बाजहिं सहनारी ॥  
घंटघंटिधनि धरनि न जाई । सरौ करै पायक फहराई ॥  
करहिं विदूषक कौतुक नाना । हांरकुदल बल्लगानमुजाना ॥

दो० । तुरग नचावहिं कुंवर वर अंकनि मृदंग निमान ।  
नागर नट चितवहिं चकित डिगहिं नतालबिधान । ३०९ ॥

चौ० । धने न बरनत बनी बराता । होद अगुन सुंदर सुभदाता ॥  
चारा चाख बाम दिशि लीई । मनऊं सकल मंगल कहि देई ॥  
दाहिन काग मुखेत मुहावा । नेकुलदरस सब काऊन पावा ॥  
मानकुल बह चिविध बयारी । सघट सवाल आव बर नारी ॥  
खोबा फिरि फिरि दरस दिखावा । सुरभी सखुख सिमुहि पिआवा ॥  
मृगमाला दाहिन दिशि आई । मंगलगन जनु दोन्ह दिखाई ॥  
छेमकरो कह छेम विसेषी । खामा बाम सुतर पर देखी ॥  
सखुख आयउ दधि अह मोना । कर पुस्तक दुर विप्र प्रवीना ॥

दो० । मंगलमय कल्याणमय अभिमत फल दातार ।  
जनु सब सांचे होन हित भये सगुन एक बार । ३१० ॥

चौ० । मंगल सगुन सुगम सब ताके । सगुन ब्रह्म सुंदर सुत आके ॥  
गाम सरिस वर दुलहिनि सीता । समधी देसरथ जनक पुनीता ॥  
सुनि अम व्याह सगुन सब नाचे । अब कीन्हे विरचि हम सांचे ॥  
दाहि बिधि कीन्हे बरात पथाना । हय गज गाजहिं हनहिं निशाना ॥  
आवत जानि भागकुलकेट । मरितन जनक बंधायेउ सेठ ॥  
बोच बोच वर बाम बगाये । सुदूर सरिस संपदा काये ॥  
असम सयन वर बसन मुहाये । प्रावहिं सब निज निज मन भाये ॥

नित नूतन मुख लखि अनकूला । सकल बरातिन मंदिर भूला  
दो० । आवत जाति बरात बर सुनि गद्यगद्गे निमाण  
सजि गज रथ पदचर तुरग लेन चले अगवान । ३११ ॥

चौ० । कनककलस कल कोपर धारा । भोजन ललित अनंक प्रकारा  
भरे सुधा सम सब पकवाना । भांति भांति नहिं जाहिं बखाना  
फल अनंक बर बस्तु सुहाई । हरषि भेंट हित भूप पठाई  
भूषन बसन महामणि माना । खग मृग हय गज बज्र विध घाना  
गंगल सगुन सुगंध सुहाये । बज्रत भांति महिपाल पठाये  
दधि सिद्धा उपहार अपारा । भरि भरि कांवरि चले कष्टारा  
अगवानन जब दोख बराता । उर आनंद पुलक भर गाता  
देखि बनाव सहित अगवाना । मुदित बरातिन हने निशाना ॥

दो० । हरषि परस्पर मिलन हित ककुब चले बगमेल  
अन आनंद समग्र दुद मिलत बिहार सुबेल । ३१२ ॥

चौ० । बरषि सुमन सुरसुंदरि गावहिं । मुदित देव दुन्दभी बजावहिं  
बस्तु सकल राखी नृप आंग । बिनय कोन्ह तिन्ह अति अनुरागे  
प्रेम ममेत राउ सब लीला । भै वकसीस याचकन दोन्हा  
करि पूजा बज्र मान बड़ाई । जनवासे कहं चले लवाई  
बसन बिचित्र पांवड़े परहीं । नृपदसरथ ता पर पग धरहीं  
देखि धनद धनमद परिहरहीं । बरषि सुमन सुर जय जय करहीं  
अति सुंदर दोन्हेउ जनवासा । जहं सब कहं सब भांति सुपसा  
जानी मिय बरात पुर आई । कहु निज महिमा प्रजा जनाई  
हृदय सुमिरि सब सिद्धि बुलाई । भूप पऊनई करन ॥

दो० । मियआयसु मिर सिद्धि धरि गई जहां जनबास  
लिये संपदा सकल सुख सुरपुरभोगबिलास । ३१३ ॥

चौ० । निज निज बाम बिलोकि बराती । सुरमुख सकल सुलभ सब भांती  
त्रिभुवभेद कहु काऊन न जाना । सकल जनक कर करहिं बखाना  
मियमहिमा रघुनायक जानी । हरषे हृदय हेतु पहिचानी  
पितृआगमन सुनत दौ भाई । हृदय न अति आनंद समाई  
सकुचत कहि न सकत गुरुपाहीं । पितृदरसन लालच मन माहीं  
बिस्वामिच बिनय बड़ि देखी । उपजा उर बन्तोष बिसेषी  
हरषि बंधु दौ हृदय लगाये । पुलक भंग लोचन जल छाये  
चले जहां दसरथ जनवासे । मनहुं सरोवर तक पियासे ॥

दो० । भूप बिलोके अबहि मुनि आवत सुतन समेत ।  
उठेउ हरषि मुख सिंधु मई चले याह मी सेत । ३१४ ॥

१० । मुनिहि दंडवत कीन्ह महीषा । बार बार पहरज धरि सीषा ॥  
 कौशिक राउ खिये उर सारै । कहि शरीर पूछी कुवलाई ॥  
 पनि दंडवत करत दौ भाई । देखि नृपतिउर मुख न बनारै ॥  
 मत हिय सार दुखइ दुख मेटे । मृतक शरीर प्राण जनु भेटे ॥  
 पुनि वसिष्ठ पद धरि तिन नाथे । प्रेममदित मुनिवर उर साथे ॥  
 विप्रहृन्द बंदे दुखं भाई । मनभावति शरीर तिन्ह पारै ॥  
 भरत सहानुज कीन्ह प्रणामा । खिये उठार सार उर रामा ॥  
 शरषे लखन देखि दौ भाता । मिसे प्रेमपरिपूरित गाता ॥

१० । पुरजन परिजन, जातिजन याचक मंचो भीत ।

मिसे यथाविधि सबहि प्रभु परम कृपालु विनीत । ३१५ ॥

१० । रामहि देखि बरात न्जड़ानी । प्रीति की रीति न जाइ बढानी ॥  
 नृप समीप सोइहि सत चारी । जनु धन धर्मादिक तनुधारी ॥  
 सुतन्ह सहित दसरथ कह देखी । मुदित नगरनगरारि बिसेशी ॥  
 सुमन बरषि सुर हनहि निशाना । नाक नटो नाचहि करि गाना ॥  
 सतानंद अरु विप्रसविगन । मागध सुत बिदुष बंदोजन ॥  
 सहित बरात राउ सनमाना । आयसु मांगि फिरे अगवाना ॥  
 प्रथम बरात लगन ते सारै । ताते पर प्रमोदअधिकारै ॥  
 प्रह्लाद नंद लोग सब सहर्षी । बहउ दिवस निसि बिधि सन कहरी ॥

१० । रामशोयसोभाअवधि सुकृतअवधि दौ राज ।

अहं तहं पुरजन कहहि अस मिलि नरनारिसमाज । ३१६ ॥

१० । जनकसुकृतमूरति बैदेही । दसरथसुकृत राम धरि देही ॥  
 इन सम काज न सिव अवराधे । काज न इन समान फल साधे ॥  
 इन्ह सम कोउ न भयेउ जग माहीं । हे नहिं कतक होनेऊ नाहीं ॥  
 हम सब सकल सुकृत की राखी । भंये जग जगि जनकपुरवासी ॥  
 जिन जानकीरामहवि देखी । को सुकृती हम सरिस बिसेशी ॥  
 पुनि देखव रघुवीर विवाह । खेव भलो बिधि खोचनलाह ॥  
 कहहि परस्पर कोकिलबयनी । यहि विवाह बहू लाऊ सुनयनी ॥  
 बडे भाग बिधि बात बनाइ । नयनअतिथि होइहैं दौ भाई ॥

१० । बारहिं बार बनेइवस जनक बोला उव शोच ।

खेन आइहहि बंध दोउ कोटि काम कमनीय । ३१७ ॥

१० । विविध भीति होइहि पडनारै । प्रिय न काहि अस सासुर मारै ॥  
 तब तब राम खवनहिं निहारी । होइहहिं सब पुरखोउ सुखारो ॥  
 यखि अस राम खवन कर जोटा । तैसेइ भूप संग दुइ डोटा ॥

स्यास गौर सब अंग सुहाये । ते सब कहहि देखि जे आये ॥  
 कहा एक मै आज निहारे । अनु विरंचि निज हाथ सवारे ॥  
 भरत राम एकहि अनुहारी । सहसा लखि न सकहि नर नारी ॥  
 लषन सचमुदन इक रूपा । नखसिख ते सब अंग अनूपा ॥  
 मन भावहि मुख-बरनि न लाहीं । उपमा कहं त्रिभुवन कोउ नाहीं ॥

क० । उपमा न कोउ कहं दासतुलसी कतजं कबि कोबिद कहै ।

बलविनयविद्याधीलसोभासिंधु इन सम ये लहै ॥

परनारि सकल पसरि अंचल विधिहि बचन सुनावहीं ।

व्याहिय सुचारिउ भाइ इहिं पर हम सुमंगल गावहीं । ३४॥

सो० । कहहि परस्पर नारि बारि बिलोचन पुलक तनु ।

सखि सब करब पुरारि पुन्यपथोनिधि भूप दौतै । ३८ ॥

सो० । इहि विधिसकल मनोरथ करहीं । आनंद उमगि उमगि उर भरहीं ॥

जे नृप सोयस्वर्यवर आये । देखि बंधु सब तिन मुख पाये ॥

कहत रामअस विसद बिसाला । निज निज भवन गये महिपाला ॥

गये बोति कहु दिन इहि भांती । प्रमदित परजन सकल बराती ॥

मंगलमूल लगनदिन आवा । हिमच्छतु अगहनमास सुहावा ॥

यह तिथि मखत योग बर बाहू । लगन सोधि विधि कोन्ह बिचारू ॥

पठे दोन्ह नारद सन सोई । गुनो जनक के गनकन जोई ॥

सुनो सकल लोगन यह बाता । कहहि योतिषी अहहि विधाता ॥

दो० । धेनुधूलि बेला विमल मऊन सुमंगलमूल ।

विप्रन कहेउ विदेह सन जानि समय अनुकूल । ३१८ ॥

सो० । उपरोहितहि कहेउ मरनाहा । अब बिलंब कर कारन ॥

सतानंद तब सचिव बुलाये । मंगल कलस साजि सब ल्याये ॥

संख निमान पनव बड्ड बाजे । मंगल कलस मगुन सब साजे ॥

सुभग सुआभिनि गावहिं गोता । कहहि बेदधनि विप्र पुनोता ॥

खेन चले सादर इहि भांती । गये जहां जनवास बराती ॥

कोसलपति कर देखि सम्राज । अति लघु लगे तिनहि सुरराज ॥

भयेउ समय अब धारिय पाऊ । यह सुनि परा निमानन घाऊ ॥

गुहहि पूछि करि कुलविधि राजा । चले संग मुनि साजि सम्राजा ॥

दो० । भाग्यविभव अवधेस कर देखि देव ब्रह्मादि ।

लगे सराहन सहस मुख जानि जन्म निज बादि । ३१८ ॥

सो० । सुरन सुमंगल अवसर जाना । वरवहिं सुमन बजाय निमाना ॥

सिख ब्रह्मादिक विषधवरूपा । चढे विमानन्ह नाना यूथा ॥

प्रेम पुलक तन हृदय उकाळ ॥ चले बिलोकन रामविधाळ ॥  
 देखि जनकपर सुर अनुरागे ॥ निज निज लोक सबहि कहु लागे ॥  
 चितवहिं चकित बिलोकि बिताया ॥ रचना सकल अलौकिक माना ॥  
 नगरनागिनर रूपनिधाना ॥ सघर मुधर्म मुसोल सुजाना ॥  
 तिनहिं देखि सब सुर सुरनारी ॥ भये नखत अनु बिधुउजियारी ॥  
 बिधिहि भयउ आचरज बिसंधी ॥ निज करनी कहु कतउ न देषी ॥

१०० । भिव समुझाये देव सब जनि आचरज मुलाज ॥  
 हृदय बिचारज धीर धरि सिथरसुबीरबिबाज ॥ १२० ॥

१०१ । जिन कर नाम खेत जग माहीं ॥ सकल प्रमंगलमूल नसाहीं ॥  
 कर तन होहिं पदारथ चारी ॥ ते भिय राम कहैव कामारी ॥  
 रहि विधि संभु मुरन समुझावा ॥ पुनि आगे वर बसह चलावा ॥  
 दवन देखे दसरथ जाता ॥ महा मोद मन पुलकित गाता ॥  
 बाधुसमाज संग महिदेवा ॥ अनु तन धरे करहिं कहु केवा ॥  
 सोदत साय सुभग सुतचारी ॥ अनु अपवर्ग सकल तनुधारी ॥  
 भरकतकनकबरण वर ओरो ॥ देखि सुरन भद्र प्रीति न धोरी ॥  
 पुनि रामहिं बिलोकि हियहरषे ॥ नृपहिं भराहिं सुमन तिन बरषे ॥

१०२ । रामरूप नखसिख सुभग वारहिं वार निहारि ॥  
 पुलक गात सोचन सजल उमा समेत पुरारि ॥ १२१ ॥

१०३ । केकिंकठयुतिलामल अंगा ॥ तड़ित विनिंदक बसन सुरंगा ॥  
 धाहबिभूषन विविध बनाये ॥ मंगलमय सब भांति सुहाये ॥  
 सरदविमलविधुवदन सुहावन ॥ नयन मवलराजोवलजावन ॥  
 सकल अलौकिक सुंदरताई ॥ कहि न जाई मगधी मन भारे ॥  
 बंध मनोहर सोहहिं संगी ॥ जात नचावत चपल तुरंगा ॥  
 राजकुंवर वर बाजि नचावहि ॥ बंसप्रसंक विरद सुनावहि ॥  
 जेहि तुरंग पर राम बिराजे ॥ गति बिलोकि खगनायक लाजे ॥  
 कहि न जाई सब भांति सुहावा ॥ बाजिवेष अनु काम नचावा ॥

१०४ । अनु बाजिवेष बनाई मगसिज राम हित अति सोहहीं ॥  
 आपने बय बल रूप गुन गति सकल भुवन विमोहहीं ॥  
 जगमगित जीन जड़ाव जोति सुभोति मानिक तेहि कगे ॥  
 किंकिनि ललाम लगाम ललित बिलोकि सुर नर मनि ठगे ॥ १५ ॥

१०५ । प्रभमनसहिं लयलीन मन चलत बाजि हवि पाव ॥  
 भूपित उकुगन तड़ित घन अनु वर बरहि नचाव ॥ १२२ ॥

१०६ । जेहि वर बाजि रामे अववारा ॥ तेहि भारदंड न बरनै पारा ॥  
 संकर रामरूप अनुरागे ॥ नयन पंचदश अति प्रिय लागे ॥



हरि हित सहित राम जब जोहे	रमा समेत रमापति मोहे	॥
निरखि रामकवि विधि हरषाने	आठे नयन जानि पकिताने	॥
सुरसेनपउर बज्जत उल्लाह	विधि ते डेवढे लोचनल्लाह	॥
रामहिं चितव सुरेश सुजाना	गौतमस्त्राप परम हित माना	॥
देव सकल सुरपतिहि सिद्धाहीं	आजु पगंदर सम कोउ नाहीं	॥
मुदित देवगन रामहिं देखी	नृपसमाज दुजं हरष बिसेषी	॥

हं० । अति हर्ष राजसमाज दुजं दिसि दुन्दुभो बाजहिं धनो ।  
 वरषहिं सुमन सुर हरषि कहि जय जयति जय रघुकुलमनो ॥  
 रहि भांति जानि बरात आवत बाजने बज्ज बाजहिं ।  
 रानी सुआंसिनि बोलि परिकन हेतु मंगल साजहिं । ३२ ॥

दो० । मजि आरती अनेक बिधि मंगल सकल संवारि ।  
 चलीं मुदित परिकन करन गजगामिनि बर नारि । ३३ ॥

चौ० । बिधुबदनो मृगसावकलोचनि	सब निज तनुकवि रतिमदमोचनि ॥
पहिरै बरन बरन बर चोरा	सकल बिभुषन सजे सरीरा ॥
सकल सुमंगल अंग वनाये	करहिं गान कलकंठ लजाये ॥
कंकन किंकिनि नूपुर बाजहिं	चाल बिलोकि कामगज लाजहिं ॥
बाजहिं बाजन विविध प्रकारा	नभ अरु नगर सुमंगलचारा ॥
सची सारदा रमा भवानी	जै सुरतिय सुचि सहज सयानी ॥
कपटनारिबर भेष बनाई	मिलीं सकल रनिवासहि आई ॥
करहिं गान कल मंगल बानी	हरषबिबस सब काज न जानी ॥

हं० । को जान केहि आनंदबस सब ब्रह्म बर परिकन चली ।  
 कल गान मधुर निसान वरषहिं सुमन सुर सोभा भली ॥  
 आनंदकंद बिलोकि दूखस सकल हिय हरषित भई ।  
 अंभोजअवक अंबु उमगि पुअंग पुलकावलि हुई । ३७ ॥

दो० । जो सुख भा सियमातुमन देखि रामवरभेष ।  
 सो न सकहिं कहि कल्प सत सहस सारदा भेष ॥

चौ० । नयननोर हठि मंगल जानी	परिकन करहिं मुदित मन रानी ॥
वेदविहित अरु कुलव्यवहार	कोन्ह भली विधि सब परिचार ॥
पंचसन्धुनि मंगल गाना	पटपांवड़े परहिं बिधि नाना ॥
करि आरती अर्घ तिन दीन्हा	राम गवन मंडप तब कीन्हा ॥
दशरथ सहित समाज बिराजे	बिभव बिलोकि लोकपति लाजे ॥
समय समय सुर वरषहिं कूला	बांति पढ़हिं महिसुर अनुकूला ॥
नभ अरु नगर कोलाहल होई	आपन पर कंहु सुनै न कोई ॥
रहि बिधि राम मंडपहिं आये	अर्घ देह आसन बैठाये ॥

- १० । बैठारि आसन भारती करि निरखि बर सुख पावहीं ।  
मनि बसन भवन भरि वारहिं गारि मंगल गावहीं ॥  
ब्रह्मादि सुर बर विप्रभेष बनाइ कौतुक देखहीं ।  
अवलोकि रघुकुलकमलरविह्वलि सुफल जीवन लेखहीं ॥ ३८ ॥
- ते० । नाल बारी भाट नट रामनिहावरि पाद ।  
मुदित असोसहिं नाइ सिर रघु न हृदय समाइ ॥ ३९ ॥
- ते० । मिले जनक दसगथ अति प्रीतो । करि वैदिक श्रौतिक सब रीतो ॥  
मिलत महा द्यौ राज विराजे । उपमा खोजि खोजि कवि छाजे ॥  
लहो न कतहुं हरि हिय मानो । इन सम ये उपमा उर आनो ॥  
समधी देखि देव अमरागे । सुमन बगवि यस गावन लागे ॥  
जग विगंचि उपजावा जय ते । देखे सुने व्याह बड तब ते ॥  
सकल भांति सम साज समाज । सम समधी देखे हम आज ॥  
देवगिरा सुनि सुंदरि सांचो । प्रीति अलौकिक दुहुं दिशि माची ॥  
देत पांवड़े अर्घ्य सुहाये । सादर जनक मंडपहिं ल्याये ॥
- १० । मंडप बिकोकि विचित्र रचना रुचिरता गुनिमन हरे ।  
निज पानि जनक मुजान मव कहं आनि सिंहासन धरे ॥  
कुलदण्ड सरिस बसित पूजे बिनय करि आसिष लही ।  
कौमिकहिं पूजत परम प्रीतिकि रीति तौ न परै कहो ॥ ४० ॥
- ते० । वामदेव आदिक ऋषय पूजे मुदित महोस ।  
दिये दिव्य आसन सबहिं सब सग लही असीष ॥ ४१ ॥
- वै० । बज्ररि कीन्ह कोसलपतिपूजा । जानि दैव सम भाव न दृजा ॥  
कीन्ह जोरि कर बिनय बड़ाई । कहि निज भाग्य विभववज्रताई ॥  
पूजे भूपति सकल बराती । सम समधी सादर सब भांती ॥  
आसन उचित दिये सब काळ । कहौ कहा मुख एक उल्लास ॥  
सकल बरात जनक सगमानो । दान मान बिनतो बर वागो ॥  
विधि हरि हर दिसिपति दिनराज । जे जानहिं रघुबीर प्रभाज ॥  
कपटविप्रवरभेष बनाये । कौतुक देखहिं अति यक्ष पाये ॥  
पूजे जनक देव सम जागे । दिये सुआसन बिन पहिचाने ॥
- १० । पहिचान को केहि जान सबहिं अपान सुधि भोरो भई ।  
आनंदकंद बिलोकि दूखहु उभय दिशि आनंदमई ॥  
सुर लखे राम मुजान पूजे मानसिक आसय दये ।  
अवलोकि सर लसुभाव प्रभु को विबुध मन प्रमुदित भये ॥ ४० ॥
- ते० । रामचन्द्रमुखचन्द्रबि लोचन साद चकोर ।  
करत पान सादर सकल प्रेम प्रमोद न चोर ॥ ४१ ॥

૧૦૦ । સમય મિલોકિ સચિટ્ વૃક્ષાય । સાર સતાનંદ મુનિ આયે ॥  
 બેનિ કુંવરિ શ્રવ આનહુ જાર્દ । સહે મુદિત મુનિ આયસુ પાર્દ ॥  
 રાનો મુનિ ઉપરોક્તિવાની । પ્રમુદિત સચિન સમેત સયાની ॥  
 વિપ્રવધુ કુલટુહુ બુલાઈ । કરિ કુલરીતિ સુમંગલ ગાર્દ ॥  
 યાગિભેષ જો સુરવરબામા । સકલ સુભાથ સુંદરી સ્યામા ॥  
 તિતહિં દેશિ સુખ પાવહિં જારો । ચિનુ પદિયાનિ પ્રાન તે ધ્યારો ॥  
 વાર વાર મનમાનહિં રાનો । ઉમા રમા સારદ સમ જાની ॥  
 મીય યંવારિ સમાજ બનાઈ । મુદિત મંડપહિં ચલોં લિવાઈ ॥

૧૦૧ । ચલિ સ્યાર સોતહિં સહી સાર સજિ સુમંગલ ભામિનો ।  
 મવસત્ર સાજે સુંદરી મવ મનકુંજરગામિનો ॥  
 કલ ગાન મુનિ મુનિ ધ્યાન ત્યાગહિં કામકોકિલ સાજહોં ।  
 મંજોર નૂપુર કલિત કંકન તાલ ગતિ વર વાજહોં । ૪૧ ॥

૧૦૨ । સોહિતિ યનિતાહુન્દ મહં સહજ સહાવનિ યોય ।  
 કૃષિ લલનાગન મધ્ય જનુ સુખમા તિય કમનોય । ૪૨ ॥

૧૦૩ । સિયસુંદરતા વરનિ ન જાર્દ । લયુ મતિ વજ્રત મનોહરતાઈ ॥  
 આવત દેશિ વરાતિન સોતા । રૂપગણિ સવ ભાંતિ પુનીતા ॥  
 સવહિં મનહિં મન કોન્દ પ્રનામા । દેશિ રામ ભયે પૂરન કામા ॥  
 હરષે દસરથ સુતન સમેતા । કહિં ન જાર્દ ઉર આનંદ જેતા ॥  
 સુર પ્રનામ કરિ સર્વહિં ફલા । મુનિ અમોઘધુનિ મંગલમૂલા ॥  
 ગાન નિમાન કુલાહલ ભારો । પ્રેમ પ્રમોદ નગર નરનારી ॥  
 દહિં વિધિ સોય મંડગહિં આઈ । પ્રમુદિત સાંતિ પઢિં મુનિરાઈ ॥  
 તેહિં અવપર કરિ વિધિ વ્યવહાર । દુહુ કુલગુરુ સવ કોન્દ અચાર ॥

૧૦૪ । આચાર કરિ ગુરુ ગૌરિગનપતિ મુદિત વિપ્ર પૂજાવહોં ।  
 સુર પ્રગટ પૂજા લેહિં દેહિં અમોઘ મુનિ સુખ પાવહોં ॥  
 મધુપર્ક મંગલદ્રવ્ય જો જેહિં સમય મુનિમન મહં વહેં ।  
 ભરે કનક કોપર કલમ સવ કર લિયેં પરિચાર કરહેં ४૨ ॥

કુલરીતિ પ્રીતિ સમેત રવિ કદિદેત સવ સાર કરિયો ।  
 દહિં ભાંતિ દેવ પૂજાર સોતહિં સમગ સિદ્ધાસન દિયો ॥  
 સિયગમ અવલોકન પરસ્પર પ્રેમ કાઝ ન લલિ પરે ।  
 મનવૃદ્ધિવરવાનો અમોઘર પ્રગટ કવિ કેસે કરે । ૪૩ ॥

૧૦૫ । સોમસમય તનુ ધરિ અનલ ચતિ ક્ષિત આજ્ઞતિ લેહિં ।  
 વિપ્રભેષ ધરિ વેદ સવ કહિં વિવાહ વિધિ દેહિં । ૪૪ ॥

૧૦૬ । જનકશટમહિં જો જગ જાનો । સોયમાતુ કિમિ જાર્દ વચ્ચાનો ॥  
 સુયસ સુહત સુખ સુંદરતાઈ । સવ સમેટિ વિધિ રચો બનાઈ ॥

उभय आनि मनिबरन बलार्द । सुनत सुआसिनि सादर आर्द ॥  
 जनकवामदिसि मोह सुनयना । हिमगिरि संग बनी जनु मयना ॥  
 कनककलम मनिकोपर करे । सुचि सुगंध मंगलजल पूरे ॥  
 निज कर मुदित राउ अह रानी । धरे राम के आगे आनी ॥  
 पढ़हि वेद मुनि मंगल बानी । गगन सुमन छरि अवर जानी ॥  
 बर बिलोकि दंपति अनुरागे । पाय पुगीत पखारन आगे ॥

इ० । आगे पखारन पाय पैकज प्रेम तनु पुलकावली ।  
 नभ नगर गाननिमानजयधुनि उभगि जनु चउं दिसि चली ॥  
 अ पदधरोज मनोज्ञसरिउर सर सदैव विराजही ।  
 जे मूलत मुमिरत बिमलता मन सकल कलिमल भाजही ॥४४॥  
 जे परसि मनिबनिता लही गति रही जो पातकमर ।  
 मकरंद जिन को संभुसिर मुचिता अवधि सर वरनर । ॥  
 करि मधुप मुनि मन ये गिजन जे सेइ अभिमत गति लहे ।  
 ते पद पखारत भाग्यभाजन जनक जय जय सब कहें ॥४५॥  
 बर कुंवरि करतल ओरि साखोसार दो कुलगुरु करे ।  
 भयो पानियहन बिलोकि बिधि सुर मनुज मुनि आनंद भरे ॥  
 सुखमूल दूखद देखि दंपति पुलकतन ऊरुमें दिये ।  
 करि लोकवेदविधान कन्यादान नृपभूषन दिये ॥४६॥  
 हिमवत जिमि गिरिजा महेसहि हरिहिं सोसागर दर ।  
 तिमि जनक रामहिं मिय समर्पी विस्व कल कीरति नर । ॥  
 एक ठौर करि जोरी सुभग पुनि गोरी मूरति सांवरी ।  
 करि होम बिधिवत गांठि जोरी होन लागी भांवरी ॥४७॥

दो० । जयधुनि बंदो वेदधुनि मंगल गान निमान ।  
 मुनि हरषहिं बरषहिं बिबुध सुरतसुमन सुजान ॥ २३० ॥

चौ० । कुंवरि कुंवर कल भांवरि देखी । नयनलाभ सब सादर लोही ॥  
 आद न बरनि मनोहर जोरी । जो उपमा कइ कहिय सो थोरी ॥  
 राम सोय मुंदर परिहारी । जगमगाहिं मनिखंभन माही ॥  
 मनहुं मदनरति धरिबहु रूपा । देखहिं राम बिवाह अनपा ॥  
 दरसलाकसा सकुच न थोरी । प्रगटत दुरत बहोरि बहोरी ॥  
 भये मगन सब देखनिहारे । जनक समान अपान बिसारे ॥  
 प्रमुदित मुनि भांवरी फेरी । नेग सरित सब रीति निबेरी ॥  
 राम सोयसरि सिंदूर देखी । सोभा कहि न जात बिधि केही ॥  
 अरुन पराग अलख भरि नीके । ससिहि भूष अहि सोभ अमी के ॥  
 बज्रि बसिष्ट दोह अनुशासन । बर दुखहिनि बैठे एक आसन ॥

क० । बैठे बराधन राम जानकि मुदित मन दसरथ भये ।  
 तनु पुलक पुनि पुनि देखि अपने सुकृतसुगतफल मये ॥  
 भरि भुवन रक्षा उकाह रामविवाह भा सबही कहा ।  
 कहि भांति बरनि सिरात रचना एक मुख मंगल महा । ४८ ॥  
 तब जनक पाद बसिष्ठआश्रय व्याहसाज संवारिकै ।  
 मांडवी स्तुतिकोरति उरमिला कुंवर खड़े हकारि कै ॥  
 कुसकेतुकन्या प्रथम जो गुनशीलमुखधोभामयी ।  
 सबरोति प्रीति समेत करि सो व्याहि नृप भरतहि दयो । ४९ ॥  
 जानकी लघुभगिनी परम सुंदरि सिरामनि जानि कै ।  
 सो जनक दोन्ही व्याहि लघनहि सकल विधि सनमानि कै ॥  
 जहि नाम स्तुतिकोरति सुलोचनि सुमुखि सबगुनआगरी ।  
 सो दई रिपुदहनहि भूपति रूपमोलउजागरी । ५० ॥  
 अनुरूप बर दुलहिनि परस्पर लखि सकुचि हिय हरषहीं ।  
 सब मुदित सुंदरता सराहहि सुमन सुरगन वरषहीं ॥  
 सुंदरी सुंदर बरन बर सब एक मंडप राजहीं ।  
 जनु जोवउर चारिउ अवस्था बिभुन सहित बिराजहीं । ५१ ॥

दो० । मुदित अवधपति सकल सुत बधुन समेत निहारि ।  
 जनु पाये महिपालमनि क्रियन सहित फल चारि । ५२ ॥

चौ० । जस रघुवीरव्याह विधि बरनी । सकल कुंवर व्याहे तंहि करनी ॥  
 कहि न जाइ कहु दादज भूरी । रक्षा कनक मनि मंडप पूरी ॥  
 कंबल बसन बिचिर्ब पटोरे । भांति भांति बज्रमोल न थोरे ॥  
 गज रथ तुरग दाम आद दासी । धेनु अलंकृत कामदुहा सी ॥  
 बस्तु अनेक करिय किमि लेखा । कहि न जाइ जानहि जिन देखी ॥  
 लोकपाल अवलोकि सिहाने । लोन्ह अवधपति सब मुख माने ॥  
 दोन्ह याचकन्ह जो जेहि भावा । उबरा सो जनवांसाहि आवा ॥  
 तब कर जोरि जनक मृदु जानो । बोले सब बरात सनमानी ॥

क० । सनमानि सकल बरात आदर दान विनय बड़ाइ कै ।  
 प्रमदित महामनिहृन्द बंदे पूजि प्रेम खड़ाइ कै ॥  
 सिर जाइ देव मनाइ सब सन कहत कर संपुट कियो ।  
 सुरसाधु साहत भाव सिंधु कितोष जल अंजलि दियो । ५२ ॥  
 कर जोरि जनक बहोरि बंधु समेत कोसलराज सो ।  
 बोले मनोहर बचन सानि स्नेह सोल सुभाष सो ॥  
 संबंध राजन रावरे हम बड़े अब सब विधि भये ।  
 यह राज साज समेत सेवक जानिबी विनु गय लये । ५३ ॥

ये दारिका परिचारिका करि पालवी कहनामची ।  
 अपराध छमिषो बोलि पठये बज्जत हौं ठोठो दयो ॥  
 पुनि भानुकुलभूषण सकल सममान विधि समधी किये ।  
 कहि जात नहिं बिनतो परस्पर प्रेम परिपूरन दिये । ५४ ॥  
 हृन्दारकागन सुमन वरषाहिं राउ जमवांसहिं सखे ।  
 दुन्दुभीधुनि अब वेद धुनि नभ नगर कौतूहल भले ॥  
 तब सखो मंगल गान करति मुनीसचाटस पाइ कै ।  
 दूखइ दुलहिनिन सहित सुन्दरि चली कुहवर खाइ कै । ५५ ॥  
 दो० । पुनि पुनि रामहिं चितव सिय सकुचति मन सकुचय न ।  
 हरत मनोहर मीनछवि प्रेमपियासे नयन । ३३२ ॥  
 चौ० । स्याम सरीर सुभाय सुहावन । सोभा कोटिमनोजलजावन ॥  
 यावकयुत पदकमल सुहाये । मुनिमन मधुप रज्जु जहं छाये ॥  
 पीत पनीत मनोहर धोतो । हरत बालरवि दामिनिजोती ॥  
 कल किंकिनि कटिखूब मनोहर । बाहु विद्याल विभूषन सोहर ॥  
 पीत जनेउ महाकवि देई । करमद्रिका चोरि चित छेई ॥  
 सोहत ब्याहसाज सब साजे । उर आयत उरभूषण राजे ॥  
 पीत उपरना कांखा सोतो । दुहुं आंचरन्ह लग मनि मोती ॥  
 नयन कमल कल कुंडल काना । बदन सकल सौंदर्यनिधाना ॥  
 सुंदर भकुटि मनोहर नासा । भाल तिलक सुचि रहिर निबासा ॥  
 सोहत मौर मनोहर माथे । मंगलमय मुक्ता मनि गांथे ॥  
 छं० । गांथे महामनि मौर मंजुल अंग सब चित चोरहीं ।  
 पुरनारि सुंदर बर बिलोकहिं निरखिं छवि छन तोरहीं ॥  
 मनि बसन भूषण वारि आरति करछिं मंगल गावहीं ।  
 सुर सुमन वरषाहिं सृत मागध बाँद मुयस मुनावहीं । ५६ ॥  
 कुहवरहिं आने कुंवर कुंवरी मुआमिनिन्ह सख पाइ कै ।  
 अति प्रीति लौकिक रोति लागीं करन मंगल गाइ कै ॥  
 लहकौरि गोरि सिखाव रामहिं सोय सन सारद कहैं ।  
 रनिवास हासबिलासरसवस जनम को फल सब लहैं । ५७ ॥  
 निजपानि मनि मह देखि प्रतिमूरति स्वरूपनिधान को ।  
 चालति न भुजबल्लो बिलोकनि बिरहवस भर जानकी ॥  
 कौतुक बिनोद प्रमोद प्रेम न जाइ कहि जानहिं अली ।  
 बर कुंवरि सुंदर सकलसखिन लवाइ जनबासहिं चली । ५८ ॥  
 तेहि समय मुनिय असोस जहं तहं नगर नभ आनंद महा ।  
 चिर जियऊ जोरो चाह चारिउ मदित मन सब हो कहा ॥

- योगीन्द्र सिद्ध मनीष देव बिलोकि प्रभु दुन्दुभि हनी ।  
चले हरपि बरवि प्रभुव निज निज लोक जय जयजयभनी । ११८ ॥
- दो० । सहित बधूटिन कुंवर सब तब आये पितु पास ।  
सोभा मंगल मोद भरि उमगेउ जनु जनवास । ११९ ॥
- सौ० । पुनि जेवनार भयउ बड्ड भांती । पठये जनक सुलाह बराती ॥  
परत पांवड़े बसन अनपा । सुतन समेत गवन किय भूपा ॥  
सादर सब के पांव पक्षारे । यथायोग पीढ़न धरार ॥  
धोये जनक अवधपतिचरना । सोल समेह जाहि नहिं बरना ॥  
बड्डरि रामपद पंकज धोये । जे हर हृदय कमल महं गोये ॥  
तीनों भाद राम मम जानी । धोये चरन जनक निज पानी ॥  
आसन उचित सर्वाहिं रुप दोन्ह । बोलि सुपकारो सब लोन्ह ॥  
सादर लागे परन पनवार ॥ कनककील मनपरन संवार ॥
- दो० । सुपोदन मुरभीवरपि सुंदर स्वादु पुनीत ।  
कन महं सब के पसि ग चतुर सुभार विनीत । १२० ॥
- सौ० । पंचकौर करि जेवन लागे । गारि गाम सुनि अति अनुरागे ॥  
भांति अनेक परे पकवाना । सुधा सरिस नहिं जाहिं बखाना ॥  
पहसन लग सुभार सुजाना । व्यंजन विविध नाम को जाना ॥  
चारि भांति भोजन विधि गाई । एक एक विधि बरनिन जाई ॥  
हरस हचिर व्यंजन बड्ड जाती । एक एक रस अगनित भांती ॥  
जंवत देखिं मधुर धुनि गारी । लै लै नाम पुरुष अहं मारी ॥  
समय सुहावन गारि बिराजा । हंसत राउ सुनि सहित समाजा ॥  
इहि विधि सबही भोजन कोन्हा । आदर सहित आचमन लोन्हा ॥
- दो० । देख पान पूजे जनक दूसरथ सहित समाज ।  
जनवासे गवने मुदित सकलभूपसिरताज । १२१ ॥
- सौ० । नित नूतन मंगल पुर माहीं । निमिष सरिस दिन यामिनि जाहीं ॥  
बड़े भोर भूपतिमनि जागे । याचक गुन गन गावन लागे ॥  
देखि बर कुंवर वधुन समेता । किमि कहि जात मोद मन जेता ॥  
प्रातक्रिया करि गे गुरु पाहीं । महा प्रमोद प्रेम मन माहीं ॥  
करि प्रनाम पूजा कर ओरो । बोलै गिरा अमिय जनु बोरो ॥  
तुम्हरी रूप मुनिय मुनिराजा । भयउ आजु मम पूरन काजा ॥  
अब सब विप्र वलाह गुसाईं । देख धेनु सब भांति बनाईं ॥  
सुनि गुरु करि महिपाल बड़ाई । पुनि पठये मुनिहृन्द कुलाई ॥
- दो० । बामदेव शूर देवष्टपि बासमीक जाबालि ।  
आये मुनिवरनिकर तब कौसिकादि तपसालि । १२२ ॥

सौ० । दंडप्रमाण समर्पिं नृप कीर्त्या । पुनि प्रेमल वरावन दीर्घा ॥  
 चारि सत्क वर श्रेय समर्पि । कामपुरधि वल सील सुहार्द ॥  
 यव विधि सकल प्रसन्न कीर्ती । मुदित महीप अविन कर्ष दीर्घी ॥  
 करत विनय वज्र विधि नरनाथ । कहेउं चाजु वल कीर्तन काज ॥  
 पाद प्रसीध महीष अनंदा । सिधे शोचि पुनि याचकहृदा ॥  
 कमल वसन मनि हय गज पान्दव । दिधे वृद्धि दधि रविमुखनंदन ॥  
 चले पडत नावत गुनगाथा । जय जय जय दिनकरकुलनाथा ॥  
 दहि विधि रामविवाहउक्ता ॥ यकी न वरनि वरस मुख जाळ ॥

दो० । बार बार कौसिकचरम सीध नार कह राख ।  
 यह सब मुख मुनिराज तव कृपाकटाक्षप्रभा ॥ ११० ॥

सौ० । जनकसनेहभीलकरतुती । नृप सब भांति सराह बिभूती ॥  
 दिन उठि बिदा अवधपति मांगा । राखहि सहित जनक अनुरागा ॥  
 नित नूतन आदर अधिकारी । दिन प्रति सहस्र भांति पञ्जगारि ॥  
 नित नव नगर अनंद उक्ता । दसरथमवन सुहार्द न काज ॥  
 वज्रत दिवस बोते दहि भांती । जन सनेहरजु बंधे बराती ॥  
 कौसिक यतानंद तव कारि । कहो त्रिदेह पपहि समुझारि ॥  
 अब दसरथ कह आयुं देख । यद्यपि क्षाति न सकळ सनेह ॥  
 भखेहि नाथ कहि सचिव बुलाये । कहि जयजीव सीध तिन नाये ॥

दो० । अवधनाथ चाहत पखन भीतर करउं बनाइ ।  
 भये प्रेमवध सचिव मुनि विप्र समासद राव । ११८ ॥

सौ० । पुरवासी मुनि पखी बरमा । पूहत विकल परसर बाता ॥  
 सत्य गवन मुनि सब बिलखाने । मनहुं काज सरसिज कलुषाने ॥  
 जहं जहं आवत बसे बराती । तहं तहं बोध पखी नउ भांती ॥  
 विविध भांति मेवा पकवाना । भोजन खाव न जाइ बखाना ॥  
 भरि भरि वसन अपार कहारा । पठये जनक अनेक मुचारा ॥  
 तुरग साज रथकारि पथीया । सकल संहारे जय अह सीधा ॥  
 मत्त मत्त दस सिंधुर बाजे । जिनहि देखि दिगिजुजर लाजे ॥  
 कमल वसन मनि भरि भरि जाना । महिष वन कलुष निधि जाना ॥

दो० । दादव अमित न सकिय कहि दीन त्रिदेह यथोति ।  
 जो अवलोकत लोकपति लोकसंपदा योति । ११८ ॥

सौ० । सब समाज दहि भांति बनाई । जनक अवधपुर दीन पठारि ॥  
 खलिहि बरात युगत सब रानी । बिकल मोनगन जनु कलुष पानी ॥  
 पुनि पुनि सीध मोद करि खेहो । देह प्रसीध सिखावन देखी ॥  
 शोरहउं संत पिबहि पिबारी । चिर अधिवान प्रसीध समारी ॥



सासुवसरगुहयेवा करेह । पतिदख सखि चायसु अनुवरेह ॥  
 अतिमनहवस यकी यषानी । नारिभनं पिबवहिं खुदु बानी ॥  
 सादर सकल कुंवरि समुधार्ह । रानिन बार बार उर हार्ह ॥  
 बज्ररि बज्ररि भेंटहिं मन्तारी । कहहिं विरंचि रचो कल नारी ॥  
 दो० । तेहि अवसर भाइन बहिन राम भागुकुलकेतु ।  
 सोखे जनकमंदिर मुदित बिदा करावन हेतु । ३४० ॥

चौ० । चारिह भार सुभाय सुहाये । नगरनारिनर देखन धाये ॥  
 कोउ कह चलन चहत रहिं चाजू । कीन्ह बिदेह बिदा कर बाजू ॥  
 कोऊ नयन भरि रूप निहारो । प्रीय पाऊने भूसुत चारो ॥  
 को जानै कोहि मुकत यषानी । नयनअतिथि कीन्ह विधि चानी ॥  
 मरनबील जिमि पाव पिछवा । दुरतह लखे जग कर भुवा ॥  
 पाव नारकी हरिपद जेहे । इन कर दखन हम कह तेहे ॥  
 निरखि रामबोभा उर भरह । निज मन फनि मूरति मनि करह ॥  
 रहि विधि बरहि नयन फल देता । गये कुंवर सब राजनिकेता ॥

दो० । रूपनिधु सब बंधु सखि हरषि उठी रनिवासु ।  
 करहिं निहावरि चारतो महा मुदित मन बासु । ३४१ ॥

चौ० । देखि रामह बिअति अनुरागो । प्रेमबिषय पुनि पुनि पद लागो ॥  
 रचो न लाग प्रीति उर हार्ह । यहन सनेह बरनि किमि नार्ह ॥  
 भाइन बहिन बरहि अन्धवाये । ह रस चयन अति हेतु जेवाये ॥  
 बोखे राम सुखवसर जानो । सोलखनेहसकुचमय बानी ॥  
 राउ चवधपुर चहत बिधाये । बिदा होन दित हमहिं पठाये ॥  
 मातु मुदित मन चायसु देह । बालक जानि करव नित नह ॥  
 सुमत बचन बिलखेउ रनिवांसु । बोलि न सकहि प्रेमकां बांसु ॥  
 चदय समार कुंवरि सब सोन्ही । पतिन सौपि विनगो अति कीन्ही ॥

छं० । करि बिनय सिय रामहिं समर्पे जोरि कर पुनि पुनि कहै ।  
 बलिजाउ तात सुजान तुम कर्ष बिदित नति । यह की कहै ॥  
 परिवार पुरजन ओहि राजहि प्रानप्रिय बिय जानिबो ।  
 तुलसी वृकीचमनेह सखि निज किंकरी करि जानिबो । ३४० ॥

खो० । तुम हरिपूरनकाम जानिबिरोमनि भावप्रिय ।  
 जनमुननाहक राम दोषदखन कहनायतन । ३० ॥

चौ० । सब कहि रचो चरन गहि रानी । प्रेमबंध अनु निरा बजानी ॥  
 सुनि सनेहबानी बर बानी । बज्र विधि राम जानु खनबानी ॥  
 राम बिदा मांगत कर जोरो । कीन्ह प्रनाम बहोरि बहोरो ॥  
 साद चरीव बज्ररि बिर नार्ह । भाइन बहिन सबे रचनार्ह ॥

मंजु मधुर मुरति सर चाभी । भई बनेइचिचिच सब राभी ॥  
 पुनि धोरन धरि कुंवरि ईकारी । बार बार भेटहिं मरुतारी ॥  
 पञ्चपावहिं किरि मिळहिं बहोरी । बही परस्पर प्रीति न छोरी ॥  
 पुनि पुनि मिळति बखिन बिकनारै । बाकबस जनु धेनु खवारै ॥  
 दो० । प्रेमविवस नर नारि सब बखिन बहिन रनिवास ।  
 मानहुं कीन्ह विदेहपुर कदना विरह निवास । १११ ॥

चौ० । सुक सारिका जानकी जिखाये । कमकपिंकरन राखि पढ़ाये ॥  
 ब्याकुल कहहिं कहां बेदेहो । सुनि धोरन परिहरै न केहो ॥  
 भये बिकल सन खन रहि भांती । मनुजदवा कैथे कहि जातो ॥  
 बंधु समेत जनक तब आये । प्रेम समनि कोचन जल छाये ॥  
 बोल बिकोकि धीरता भागी । रचे कदावत परम बिरागी ॥  
 कोन्ह राउ उर छार जानकी । मिटो महा मर्याद ज्ञान को ॥  
 समझावत सब बखिब स्याने । कीन्ह सुभाव जनबधर जाने ॥  
 बारहि बार सुता उर छारै । बजि सुररि पाककी मनाई ॥

दो० । प्रेमविवस परिवार सब जानि सुखमन नरेव ।  
 कुंवरि चढ़ाई पाककी सुमिरे बिहू मनेव । ११२ ॥

चौ० । बडु विधि भूप सुता समझाई । नारिधर्म कुकरोति बिकारै ॥  
 दाखो दाख दिखे बडुतरै । सुनि सेवक जे प्रिय चिय करे ॥  
 बोल सकत ब्याकुल पुरबाखी । होहिं वगुन सुभ मंगलराखी ॥  
 भूसुर बखिब समेत समाजा । संग चले पञ्चपावन राजा ॥  
 रघु मज बाजि बरातिन बाजे । सुनि मधमहे बाजने बाजे ॥  
 दहरघ विप्र बोळि सब कोन्है । दान मान परिपूरन कीन्है ॥  
 चरन बरोन धूरि धरि बीबा । मुदित मदीपति पाद चबीबा ॥  
 मुमिरि मजानन कीन्ह पद्याना । मंगलमूल वगुन भये नाना ॥

दो० । सुर प्रमन बरबहिं हरहिं करहिं चपरा नान ।  
 चले चवचपति चवचपुर मुदित बजार निवास । ११३ ॥

चौ० । सब करि विनय महाजन खेरे । बाहर कलक कोलने डेरे ॥  
 भवन बसन बाजि नज दोने । प्रेम पोचि ठाढ़े कम कीने ॥  
 बार बार बिरदावलि भावो । फिरे सकल रामहिं उर रावो ॥  
 बडुरि बडुरि कोवकपति कहहीं । जनक प्रेमवस फिरा न चहहीं ॥  
 पुनि कह भूपति वचन बुझाये । फिरिय मदीप बूरि बजि जाये ॥  
 राउ बहोकि छतरि भये ठाढ़े । प्रेम प्रवाह बिकोचन बाढ़े ॥  
 नव विदेह बोले कर जोरी । वचन बनेइवधा जनु बोरी ॥  
 करौ कवन बिधि विनय बुझाई । महाराज भोचि दीन्ह बढाई ॥

दो० । कोवलयपति समधी वजन सममाने सब भाँति ।  
मिलन परस्पर विनय भाँति प्रीति न रह्य समानि । १३५ ॥

चौ० । मुनिमंडली अवक विर नावा । आशिरवाद कबहि सब पावा ॥  
बाहर पुनि भेंटे मामाता । कपटीजननिधि सब खाता ॥  
ओरि पंकरह फनि कुदाये । दोखे बचन प्रेम अनु जाये ॥  
राम करौ केहि भाँति प्रनवा । मुनिमहेशममनमानसदा ॥  
करहि धीम धोनी केहि छापी । कोह मोह ममता मद खापी ॥  
आपक मझ भलक भविनाही । चिदानंद निर्गुन मुनराभी ॥  
मन समेत केहि जान न जानी । तरकि न सकाई सकल अनुमापी ॥  
महिमा निगम नेति करि कह्यौ । जो तिऊँ काल एकरय रह्यौ ॥

दो० । नवनविषय मोकहं भयउ धो समस्तसुखमूल ।  
कबहिं सुखभ जनकोय कहं भये ईस अनुकूल । १३६ ॥

चौ० । कबहि भाँति मोहि दीन्ह बड़ाई । निज लम जानि लोह अपनाई ॥  
धोर बहस दस बारद सेवा । करहिं कपकोटिक भरि सेवा ॥  
मोर भाव्य राखर गुनगाथा । कहि न सिराई मुनिय रघुनाथा ॥  
मैं कहु कहौ हक बल मोरे । तुम रोझऊ मनेह मुठि धोरे ॥  
बार बार माँगौ कर ओरे । मझ परिहरे चरन अनि भोरे ॥  
सुनि बर बचन प्रेम अनु पोखे । पूनकाम राम परितोखे ॥  
करि बर विनय बरुन सममाने । पितु कौचिक बसिष्ट सम जाने ॥  
विनतो बडुरि भरत सग कीन्धी । मिलि सप्रेम पुनि आश्रिय दीन्धी ॥

दो० । मिले लवन निपुछदनहिं दीन्ह चवीस महोष ।  
भये परस्पर प्रेमवध फिरि फिरि नावहिं सोष । १३७ ॥

चौ० । बार बार करि विनय बड़ाई । रघुपति चले संग सब भाई ॥  
जनक गहे कौचिकपद आई । चरनरेनु विर नयनन आई ॥  
सुनु मुनोय सब दरसन तोरे । चरन न कहु प्रतीति मन मोरे ॥  
जो कुछ मुखय लोकपति कह्यौ । करत मनोरथ बहुचत कह्यौ ॥  
जो कुछ मुखय मुनिपुनि कह्यौ । सब सिधि तब दरसन अनुमापी ॥  
कोन विनय मुनिपुनि विर नाई । फिरि महोपति आश्रिय पाई ॥  
बली बरात निवाय बधाई । मुदित होट बड़ सब समुदाई ॥  
रामहिं निरखि रामनरनारी । पार नयनकल होहिं सुखारी ॥

दो० । बीच बीच बर बाव करि मगलोगन सुख होत ।  
सबध समीप कुंभीत दिन वडुंघी आव विनोत । १३८ ॥

चौ० । हने निवाध पनव बडु बाजे । भेरिचंडधुनि दस नव बाजे ॥  
झांझ कदंन विमकिनी बुझाई । दरस राम बाजे बहनाई ॥

पुरजन भावत सकनि वराता । मुदित सकल पुनकावलि वता ॥  
 निज निज सुंदर वदन वंदारे । पाट पाट चौखट सुंदारे ॥  
 मला सकल चरनजातिवारी । कई कई चौके पाद पुरारी ॥  
 बना बजार न जात बखाना । तोरन केतु पनाय विखारा ॥  
 सुपल पुंगिपल कदलि रवाया । रोये वसुध कदंब वनाया ॥  
 खगे सुभग तह परवत धरयो । अनिलय पावनपाव की करयो ॥

दो० । विविध भाति मंगल कलक मर मर रचे वंदारि ।  
 सुर मन्नादि विचारिं सब रघुवरपुरी निहारि । १७८ ॥

चौ० । भूपमवन तेहि अवसर बोहा । रचना देखि मदनमन मोहा ॥  
 मंगल सगुन मनोहरतारे । अथि विधि सुख वंदना सुधारे ॥  
 जग उकाह सब सहज सुधाये । तनु धरि धरि दवरचमूच पाये ॥  
 देखन हेतु राम बैँही । कष्ट साखवा होर न केही ॥  
 यूथ यूथ मिलि चली सुधाधिनि । विजयवि विदरहिं मदनविखाधिनि ॥  
 सकल सुमंगल सबी चारतो । गावहिं जनु वज्र भेष भारती ॥  
 भूपतिमवन कुलाहल होई । जाद न वरनि समय सुख होई ॥  
 कौसल्यादि राममहतारो । प्रेम निवस तनुदया विचारी ॥

दो० । दिखे दान विप्रन विपुल प्रीति गनेय पुगारि ।  
 प्रमुदित परम दरिद्र जनु पदारथचारि । १७९ ॥

चौ० । प्रेमप्रमोदविषय सब माता । खसहिं न चरन विधिज सब माता ॥  
 रामहरसहित प्रति अनुरागो । परिक्रमकाज सजन सब कारी ॥  
 विविध विधान बाजने बाजे । मंगल मुदित मुनिबा बाजे ॥  
 हरद दूब दधि पक्षव फला । पान पुष्टिफल मंगल मला ॥  
 अकत अंकुर रोचन काजा । मंजुल मंजरि तुलसि विराजा ॥  
 कुचे पुरटघट सहज सुधाये । मदनचकुनि जनु मोद वनाये ॥  
 सगुन सुमंथ न जाहिं वंछानी । मंगल सकल वज्रहिं सब रानी ॥  
 रचो चारतो विविध विधाना । मुदित लखहिं कल मंगल माना ॥

दो० । कमकदार भरि मंगलनि कमलकरनि किं वना ।  
 चली मुदित परिक्रम करन पुनकपलवित मान । १८० ॥

चौ० । धूपधूम नभ मेखक भयज । बावनवनमंड जनु बखज ॥  
 सुरतसुमनमाख सुर वरवहिं । मंगल वलाकधवलि मय करवहिं ॥  
 मंजुल अनिलय वंदनवारा । मंगल प्राकरिपुषप वंदारा ॥  
 प्रमटहिं दुरहिं चटख पर भासिनि । चाद चपल जनु दमकहिं दामिनि ॥  
 दुग्दभिधुनि धन मरवहिं बोहा । याचक पातक दादुर मोहा ॥  
 सुवि वर्गव वज्र वरवहिं वारो । सुखी सकल बलि पुरनवारी ॥

वस्ये जानि गुरु पापसु दीया । पुरप्रवेश रघुकुलमनि कीया ॥  
 कुमिरि बंधु गिरिजा अमराजा । मुदित मदीपति वहित रमाजा ॥  
 दो० । सोहिं समुन वरवहिं समन सुर दुग्दुभी वनार ।  
 विबुधबधु पापहिं मुदित मंगुल मंगल मार । ११२ ॥

चौ० । मानस सुत बंदि बट नामर । गावहिं जस तिऊं लोक उजागर ॥  
 जसधुनि विमल वेद वरवाजी । दस दिसि सुगिय सुमंगलजानी ॥  
 विपुल वाकने वाकन जाने । नभ सुर नगर कोय अनुरागे ॥  
 बने वराती वरनि न आही । महा मुदित स दुख न समाही ॥  
 पुरवागिन तव राउ अहारे । देखत रामहिं भये सुखारे ॥  
 करहिं निहावरि मनिमन बीरा । बारि विकोचन पुसक योरा ॥  
 आगति करहिं मुदित पुरनारी । हरवहिं निरखि कुंवर वर भारी ॥  
 बिबिका सुभन जोहार उभारी । देखि दुखहिनिह सोहिं सुखारी ॥

दो० । रहि बिधि सबही देत सुख पाये राजदुभार ।  
 मुदित मातु परिजन करहिं बधुन समेत कुमार । ११३ ॥

चौ० । करहिं चारतो बारहिं बारा । प्रेम प्रमोद कहे को पारा ॥  
 भूषन मनि पट जाना जाती । करहिं निहावरि अगमित भांती ॥  
 बधुन समेत देखि सुत भारी । परमार्थद मंगन महतारी ॥  
 पनि पनि बीच रामकवि देखी । मुदित सुफल जन जीवन देखी ॥  
 बखी बोधमय पनि पनि बाही । मान करहिं निज मुक्त सराही ॥  
 वरवहिं समन हनहिं जन देवा । गावहिं गावहिं कावहिं देवा ॥  
 देखि मनोहर पारित जोड़ी । बारद उपमा सकल उठोरी ॥  
 देत न वनहिं निपट सब जानी । दकटक रही रूप अनुरागी ॥

दो० । निगमनोति कुलरोति करि अरथ पांयदे देत ।  
 बधुन वहित सुत परिहि सब पक्षी बिबाद निकेत । ११४ ॥

चौ० । बारि निपावन सबज मुहाये । अनु मनोज निज पाप वनाये ॥  
 तिन पर कुंवर कुंवर देवारे । बादर पाव पुनीत पखारे ॥  
 भूप दीप वैदिक वेदविधि । पूजे वर दुखहिनि मंगलविधि ॥  
 बारहिंवार चारती करही । बजन बार चामर फिर डरही ॥  
 बसु चनेक निहावरि सोही । भरी प्रमोद मातु सब सोही ॥  
 पावा परम तत्व अनु बोधी । अमृत लही जन समतरोमी ॥  
 जनमार्क अनु पारव पावा । बंधहि कोचनसाभ मुहावा ॥  
 मूकबदन जस बारद होई । मानऊं खमर सुर जस पाई ॥

दो० । रहि सुख में सतकोटिनुन पावहिं मातु अनंद ।  
 भारन वहित बिबाहि कर पाये रघुकुलचंद । ११५ ॥

लोकरोति जगमो करहिं वरदुखहिनि कलुषादि  
मोह विनोद विनोकि वर राम मर्गहिं मुमुक्षादि । ११६ ॥

सौ० । देव पितर पूजे विधि लोकी । पूजो सकल वाक्या लोकी ॥  
सर्वहिं वदि मांगहि वरदाया । भादव वदि राम कछाया ॥  
अंतरहित सुर आसिष देहो । मुदित मातु अंपस भरि कोहो ॥  
भूपति बोधि वरातिन्ह सोने । चान बचन मनि भूषण दीने ॥  
आयसु पाद राखि घर रामहिं । मुदित गये सब निज निज धामहिं ॥  
पुरमरनारि सकल पहिराये । घर घर बाकहिं अमंदवधाये ॥  
याचकजन बाधहिं जोर जोर । प्रमुदित राख देहिं जोर जोर ॥  
सेवक सकल वननिधां जाग । परम किये दान समजाग ॥

दो० । देहिं अघोष कुहारि सब मार्गहिं गुनगनगाथ ।

तब मुह भूसुर वदित यह मदन कोन्ह नरनाथ । ११७ ॥

सौ० । ओ वसिष्ठ अनुवाचन दीन्हा । लोकवेदविधि सादर कीन्हा ॥  
भूसुरभोर देखि सब राजी । सादर छडो भाग्य वर जानो ॥  
पाथ पकारि सकल अन्ववाये । पुनि भकी विधि भूप केवाये ॥  
सादर दान प्रेम परिपोषे । दंत अघोष चले मन तोषे ॥  
वर विधि कोन्ह गाधिसुत पूजा । नाथ मोहि कम धन्य न कुजा ॥  
कीन्ह प्रसंवा भूपति भूरी । राजिन मुदित कोन्ह पगधूरी ॥  
भीतर भवन दीन्ह नरनाथ । मन मु गवत रच नूपरनिवाध ॥  
पूजे गुहपदकमल बहोरी । कोन्ह विनय मन प्रीति न कोरी ॥

दो० । बचन समेत कुमार सब राखिन वदित मघोष ।

पुनि पुनि वदत मुह परम देत अघोष मनीष । ११८ ॥

सौ० । विनय कोन्ह घर चति अनुरागे । सुन संपदा राखि सब जाने ॥  
नेम मांनि मृनिमायक सीन्हा । आंखिरवाद वदत विधि दीन्हा ॥  
छर धरि रामहिं गीय कछेया । वरवि कोन्ह मुह मदन निकेता ॥  
निप्रबधु कुलवद कुहारि । जोर पाव भजन पहिराई ॥  
वदरि मुकाद सखाविनि सीन्ही । दधि विचारि विनिमयि दीन्ही ॥  
मेनी नेम सोन सब कोहो । दधि अनुकय भक्तमनि दीन्ही ॥  
मिथ पाऊने पूजा के जाने । भूपति भकी भांति समजाने ॥  
देव देखि रजुबोर विवाह । वरवि प्रथम प्रथमि कछाह ॥

दो० । चले निखान बकाद सुर निज निज पुर मुख वार ।

कहत परावर राम जय हरच न हदय समार न ११९ ॥

सौ० । सब विधि सबहिं समदि नरनाथ । रक्षा हदय भरि पुरि-वकाह ॥  
जहं रनिवाध तहां पगधारे । वदित वधदिन कुंजर निहारे ॥

लिये मोद करि मोद समेता । को कहि सकै भयउ सुख जेता ॥  
 बधू समेत मोद बैजरी । बार बार हिय हरषि दुखारी ॥  
 देखि समान मुदित रनिबाधू । सब के कर आनंद बिसाधू ॥  
 कहेउ भूप निजि भवेउ बिसाह । सुनि सुनि हरष होत सब काह ॥  
 जनकराज गुन बोलि बहाई । प्रीति रीति संपदा सुहाई ॥  
 बहू विधि भूप आठ निजि बरनी । रानी सब प्रमुदित सुनि करनी ॥  
 दो० । सुतन समेत नहाइ नय बोलि लिये मृदजाति ॥  
 भोजन कीन्ह अनेक विधि घरी पांच गर राति । १६० ॥

चौ० । मंगलनान करहि बर मामिनि । भद्र सुखमूल मनोहर मामिनि ॥  
 चाँचे पान सब काजुन पाये । लगसुगंधभूषित कवि छाये ॥  
 रामहि देखि रजायसु पाई । निज निज भवन गले घिर नाई ॥  
 प्रेम प्रमोद बिमोद बहाई । समस्त समान सब हरताई ॥  
 कहि न सकहि सुनि सारद सेसु । वेद बिरचि मनेसु ॥  
 सो मैं कहौ कवनि विधि बरनी । भूमिनाग सिंघारे कि धरनी ॥  
 एष सब भांति सबहिं समजानी । कहि मृद बचन मुहाई रानी ॥  
 बधू हरिकिनी पर घर आई । राखेउ नयनपलक की नाई ॥

दो० । हरिका ललित जगदीश्वर सयन करावहु आर । ॥  
 सब कहि गे बिसामय्यर रामचरण पित साह । १६१ ॥

चौ० । भूपबचन मुनि बहज मुहाये । ज जित कनक मनि पलंग उवाये ॥  
 सुभन सुरभिपयकेन समाना । कोमल कलित सुपेती नाना ॥  
 उपवरहन बर बरनि न जाहीं । लग सुगंध मनिमंदिर माहीं ॥  
 रतनदोष सुठि साह चंदोवा । कहत न बने जान जेहि जोवा ॥  
 सेन हरि रचि राम छठाये । प्रेम समेत पलंग पौढ़ाये ॥  
 आजा पुनि पुनि भारद दोनी । निज निज सेन सयन तिन कीनी ॥  
 देखि साम खुदु सुमंज गाता । कहहि समेत बचन सब माता ॥  
 मारन बात भवावनि भारी । कहि विधि सात ताड़का मारी ॥

दो० । जोर निवाहार बिकट मठ समर गनै नहि काह । ॥  
 मारे कलिन कहाय किनि खल मारीच सुवाह । १६२ ॥

चौ० । मुनिप्रसाद बलि नात तुम्हारे । ईस अनेक करवरे टारे ॥  
 मकरखवारी करि दुहुं माई । गृहप्रसाद सब विद्या पाई ॥  
 मुनितिब तरो जगत पमधूरी । कोरति रही सुवन भरि घरी ॥  
 कमठगोठ पवित्र कठोरा । एषसमाज महं बिलधनु तोरा ॥  
 बिलखि प्रचल्य जानकि पाई । चाये भवन खादि सब माई ॥  
 सकल समानुषकर्म तुम्हारे । केवल कौशिक कृपा सुहारे ॥

- आजु सुकेश वन वन्य हमारे । देखि तात विधुबदन तुम्हारे ॥  
 जे दिन नवै तुमहिं विनु देखे । ते बिरहिं जनि पारहिं खोजे ॥  
 दो० । राम प्रतीची भातु सब कहि बिनीत घर बचन ।  
 सुमिरि बंधुगुरु विप्रपद किये नौदवस नखन । १६१ ॥
- चौ० । नीदहुं बदन बौह सुठि खोला । मनहुं बाँझ बरहीदह खोला ॥  
 घर घर करहिं जानरन नारी । देखिं परखर मंगल नारी ॥  
 पुरी बिराजति राजत रजनी । रानी कहहिं बिकोकहु बजनी ॥  
 सुंदरि बधुन बासु खै बौह । कमिपति जनु बिरजनि घर नौह ॥  
 प्रात पुनीत काख प्रसु आगे । बदनबहु बर बेखन आगे ॥  
 बंदो मागध गुनगन माथे । पुरजन द्वार कृपारन आथे ॥  
 बंदि विप्र सुर मुख पितु माता । पाइ अवीच मुदित सब भ्राता ॥  
 जननिन्ह सादर बदन निहारे । भूपति संत द्वार समु धारे ॥
- दो० । कोन्ह बौच सब सखज सुचि बरित पुनीत नहाइ ।  
 प्रातकिया करि तात पइ आथे पारिउ भाइ । १६२ ॥
- चौ० । भूप बिकोकि किये घर साई । बैठे हरषि रजावसु पाई ॥  
 देखि राम सब सभा जुड़ानी । खोजनखाभभवधि अनुमानी ॥  
 पुनि बसिष्ट मुनि कौशिक आन । सुभग आसनन मुनि पैठाये ॥  
 सुतन समेत पूजि पद आगे । निरखि राम हो घर अनुरागे ॥  
 कहहिं ब्रह्मिष्ठ धर्म रतिदाया । सुनहिं महीप बहिन रनिवाया ॥  
 मुनिमनमगम गाधिसुतकरनो । मुदित बसिष्ट विपुलविधि बरनी ॥  
 बोले वामदेव सब सांचो । कीरति कजित लोक तिहुं माचो ॥  
 सुनि आनंद भयउ सब काह । रामखनकर अधिक उहाह ॥
- दो० । मंगल मोद उहाह नित जाहिं दिवस रहि भांति ।  
 समी अवध अनंद भरि अधिक अधिक अधिकानि । १६३ ॥
- चौ० । सुदिन साधि करकंकन छोरे । मंगल मोद बिनोद न छोरे ॥  
 नित नव सुख सुर देखि बिहाही । अवधजका बाचहिं निधि पाही ॥  
 बिसाखिन चकन नित चहौ । रामकप्रेमकिनवस रचौ ॥  
 दिन दिन बहगुन भूपतिभाऊ । देखि बराह महामुनि राज ॥  
 भांजित बिदा राउ अनुरागे । सुतन समेत ठाढ़ मथे आगे ॥  
 गाथ सकल संपदा तुम्हारी । मे सेवक समेत सुत नारी ॥  
 करव सदा करिकन पर होइ । दरबन देत रहव मुनि मोइ ॥  
 अथ कहि राउ बहिन सुत रानी । परेउ करव मुख आव न बानी ॥  
 दीन्ह अवीच बिप्र बड भांति । खजे न प्रीति रीति कहि जाती ॥  
 राम समेन सख सब भाई । आचसु पाइ फिरे पऊपाई ॥



- दो० । रामरूप भूपतिभक्ति आह उक्ताह चन्द्र  
जात वराहत भवहिं मन मुदित गाधिकुलचन्द । १६६ ॥
- चौ० । वामदेव रघुकुलगुरु ज्ञानी । बज्ररि गाधिसुतकथा बखानी ॥  
सुनि मुनि सुजस मनहिं मन राज । वरगत आधन पुन्यप्रभाज ॥  
बज्ररे लोग रजायसु भयज । सुतन समेत नृपति गृह गयज ॥  
जहं तहं रामव्याहजस गावा । सुजस पुनीत लोक तिऊं हावा ॥  
आये व्याधि राम घर अब ते । बसे अनंद अवध सब तब ते ॥  
प्रभुनिबाह जस भयज उक्ताहा । सकहिं न बरनि गिरा अधिनाहा ॥  
कविकुलजीवन पावन जानी । रामधीयजस मंगलखानी ॥  
तेहि ते मै कहु कहा बखानी । करन पुनीत हेतु निज बानी ॥
- दो० । निज गिरा पावन करन कारन रामजस तुलसी कहौ ।  
रघुबीरचरित अपार बारिधि पार कवि कवने खहौ ॥  
उपवीतव्याह उक्ताह मंगल सुनहिं सादर गावहीं ।  
बैदेरामप्रसाद ते जन सर्वदा सुख पावहीं । ६९ ॥  
सुनि गाथ कहौ गिरीशकन्या धन्य अधिकारी सबी ।  
नित प्रीति नूतन सुनत हरिगुन भक्ति अनुपम ते खहौ ॥  
रघुबीरपद अनुराग जस सोभाणि बेनि मुझावई ।  
यह जानि तुलसीदास मन कम बचन हरिगुन गावई । ६९ ॥
- दो० । कठिन काल मलयसित तनु बाधन कहु क न होइ ।  
यह विचारि बिस्वास करि हरि सुमिरै बुध होइ । १६७ ॥
- चौ० । मन हरिपद अनुराग करज त्यागि नागा कपट ।  
महामोहनिसि जान खोवत बीते काल बज्र । १९ ॥  
बिचररघुबीरविबाह जे समेस्यार सुनहिं ।  
तिन कहं बदा उक्ताह मनसायतन रामजस । २१ । ॥

इति श्रीरामचरितमानसे सकलकलिकलुषविध्वंसने ।  
विमलविज्ञानवैराग्यसंतोषसम्पादनो नाम तुलसीकृत ॥  
वाल्मीकीयः प्रथमः सोपानः समाप्तः ॥ \* ॥



## अथ अयोध्याकाण्ड ॥

श्लोक ॥

वामाङ्गे च विभाति भूधरसुता देवापगा मस्तक ।  
 भाले वाल्विधुर्गले च गरुडं यस्योरसि व्यालराट् ॥  
 सोऽयं भूतिविभूषणः सुरवरः सर्वाधिपः सर्वदा ।  
 सर्वः सर्वगतः शिवः शशनिभः श्रीशङ्करः पातु माम् । १ ॥  
 प्रसन्नताम् यो न गतो भियेकतस्तथा न मन्धौ वनवासदुःखतः ।  
 मुखाम्बुजश्रीरघुनन्दनस्य मे सदास्तु तन्मञ्जुलमङ्गलप्रदम् । २ ॥  
 नीलाम्बुजश्यामलकोमलाङ्गम् सीता समारोपितवामभागम् ।  
 पाण्यौ महाशायकचारुचापम् नमामि रामम् रघुवंशनाथम् ॥ ३ ॥

दो० । ओगुहचरनसरोजरज निजमनमुकुर सुधारि ।

वरनौ रघुवरजस विमल जो दायक फल चारि । १ ॥

चौ० । जब ते राम व्याहि घर चाये । नित नव मंगल मोह बधाये ॥  
 भुवन चारि दस भुधर भारी । सुखत मेव वरदाई सुख बारी ॥  
 अधि सिधि संपति नदी सुहाई । उमगि अवध चबुधि कथं चारि ॥  
 मनिगन पुरनरनारिसुजाती । सुचि अमोक सुंदर सब भांती ॥  
 कहि न जाद कहु नगरविभूती । जनु रतनी बिरंचिकरदती ॥  
 सब बिधि सब पुरखोग सुखारी । रामचन्द्रमुख चन्द निहारी ॥  
 मुदित मातु सब सबी सहेली । फलित बिलोकि मनोरघवेली ॥  
 रामरूप गुन खील सुभाज । प्रमुदित होहि देखि सुनि राज ॥

दो० । सब के घर अभिजाव सब कहिं मनाद मनेव ।

चापु अहत जुवराजसद रामहिं देखिं नरेव । १ ॥

चौ० । एक समय सब रहित समाना । रामसभा रघुराज बिराजा ।  
 सकल सुखतमूर्ति नरनाथ । रामसुख सुनि चितिहि उल्लास ॥  
 यप सब रहिं कृपा अभिजावे । लोकप रहिं प्रीतिदय रावे ॥  
 विमुक्कन तीनि काक जन माहीं । भरिमान दसरथ सब नाहीं ॥

- मंगलमूल रामसुत जासु । जो कह्य कहिय थोर सब तासु ॥  
 राख सुभाव मुकुर कर कोन्हा । बदन बिलोकि मुकुट सम कोन्हा ॥  
 खन समीप भये सित केसा । मगई चौधपन अथ उपदेसा ॥  
 नृप ज्वराज राम कहं देख । जीवन जका सुफल करि लेह ॥
- दो० । अथ बिचारि छर आनि नृप मुदिन सुश्रवसर पाई ।  
 तनु पलकित मन मुदित अति गुरहि सुनायउ जाई । २ ॥
- चौ० । कहेउ भुञ्जाल सुनिय मुनिनायक । भये राम सब बिधि सब लायक ॥  
 सेवक सचिव सकल पुरबासी । जे हमार अरि मित्र उदासी ॥  
 सबहि राम प्रिय जेहि बिधि मोही । प्रभुअसीस जनु तनु धरि सोही ॥  
 विप्र सहित परिवार गुसाईं । करहि होह सब रौरेहि नाईं ॥  
 जे गुरुचरण रेनु सिर धरहीं । ते जनु सकल विभव बस करहीं ॥  
 मुहि समान अरु भयउ न दुजे । सब पायउं प्रभुपदरज पूजे ॥  
 अब अभिलाष एक मन मोरे । पूजिहि नाथ अनुग्रह तोरे ॥  
 मुनि प्रसन्न कहि सबज समेह । कहेउ नरेस रजायसु देख ॥
- दो० । राजन राउर नाम सब जस अभिमतदातार ।  
 फलचनुगामी महिपमनि मन अभिलाष तुम्हार । ४ ॥
- चौ० । सब बिधि गुरु प्रसन्न जिय जानी । बोलैउ राख सिहंसि मृदु बानी ॥  
 नाथ राम करिये ज्वराज । कहिय कृपा करि करिय समाज ॥  
 मोहि कहत अस होउ उहाल । कहहि लोग सब सोचनखाल ॥  
 प्रभुप्रसाद सिव सबै निवासी । यहै साक्षसा दक मन भासी ॥  
 पुनि न सोच तनु रहै कि जाऊ । जहि न होइ पाछे पछिताऊ ॥  
 सुनि मुनि दसरथचन सुहाये । मंगलमूल मोद अति पाये ॥  
 सुन नृप जासु बिमुख पछिताहीं । जासु भजन बिनु जरनि जाहीं ॥  
 भये तुम्हार तनय सो खामी । राम पुनीत प्रेमचनुगामी ॥
- दो० । केनि बिलंब न करिय नय साजिय सबै समाज ।  
 मुदिन सुमंगल तबहि क्य राम होहि ज्वराज । ५ ॥
- चौ० । मुदित महीपति मंदिर आवे । सेवक सचिव सुमना सुहावे ॥  
 कहि जवजीव सोध तिन बावे । भूप सुमंगलचन सुनावे ॥  
 प्रमुदित मोहि कहेउ गुरु आनू । रामहि राज रेजु ज्वराज ॥  
 जो पांचहि मत लागै नीका । करज हरिहि हिय रामहिं टीका ॥  
 मंचो मुदित सुगत प्रिय बानी । अभिमतबिरव परेउ जनु पानी ॥  
 बिनती सचिव करहिं कर जोरी । जियउ जनतपसि बरव करोरी ॥  
 जनमंगल भव काय विचारा । बेनहिं नाथ न काहव बारा ॥  
 न यहि मोद सुनि सचिवसुभाषा । बहत बेटप जनु लखी सुहावा ॥

१० । कहेउ भूप मुनिराम कर को जो चायसुहोर ।  
रामराजचमिके हित बेनि करउ थोर थोर । ॥

ते० । हरहि मुनीस कहेउ मृदु बानी । आनहु सकल सुतीर बानी ॥  
औवध मल फल फल नाना । कहे नाम गनि मंगल नाना ॥  
चामरचमरे बखन बडु भांती । रोमपाटपट अगनितजाती ॥  
मनिगन मंगलबसु अनेका । जो जन योग भूपचमिकेका ॥  
वेदविहित कहि सकल विधाना । कहेउ रचउ पुर विविध बिताना ॥  
पनस रसाळ पंगिफल केरा । रोपउ बीघिन पुर चऊं फेरा ॥  
रचउ मंजुमजिषौके चारु । कहउ बनावन बेनि बजारु ॥  
पूजउ गनपति मुद कुल देवा । सब विधि करउ भूमिसुरदेवा ॥

१० । ध्वज पताक तोरण कलस सजउ तरंग रथ नाम ।  
विर धरि मनिबरबचन सब निजनिज काजहिं जाग । ॥

१० । जेहि मुनीस जो चायसु दीन्हा । सो जनु काज प्रथम तेह कीन्हा ॥  
बिप्र साधु सुर पूजत राजा । करत राम हित मंगल काजा ॥  
सुनत रामचमिके सुहावा । बाज गहागह अवध बधावा ॥  
रामसोयतनु सगुन जनाये । फरकहिं मंगल अंग सुहाये ॥  
पुलकि सप्रेम परस्पर कहहीं । भरतआगमनसुख कहहीं ॥  
भये बडुत दिन अति अवसरी । सगुन प्रतीति भेंट प्रिय करी ॥  
भरत सरिस प्रिय को जग माहीं । यहे सगुनफल दूसर माहीं ॥  
रामहिं बधु सोच दिन राती । अंडन कमठदय जेहि भांती ॥

दो० । तेहि अवसर मंगल परम मुनि हरवेउ रनिबाध ।  
सोमित सखि बिधु बडुत जनु बारिधिबीचिमिलाय । ८ ॥

चौ० । प्रथम आद जिन्ह सबरि जनाये । भूपन सनव भूरि तिन पाये ॥  
प्रेम पुलकतनु मन अनुरागी । मंगलसाख सजग सब जानी ॥  
सौके चारु सुमिवा पूरी । मनिमय विविध भांति अति करी ॥  
आनंदमगन राममहतारी । दिये दान बडु बिप्र चंकारो ॥  
पूजेउ रामदेव सुर नागा । कहेउ बहोरि देन बलिमागा ॥  
जेहि विधि होइ रामकजाना । हेउ दया करि सो बरदाना ॥  
गावहिं मंगल कोकिलबानी । बिधुबदनी मृगसावकनयनी ॥

दो० । रामराजचमिके मुनि हितहरषी बर नारि ।  
सगीं सुमंगल सजग सब विधिचनुकूट निषारि । ८ ॥

चौ० । तब नरनाह बहिट बुलाये । रामधाम सिख देन पठाये ॥  
मुदआगमन सुनत रचुनाथा । द्वार आद नायेउ पद माथा ॥  
बादर चर्च हेइ बर जाने । धोरव भांति पनि धनमाने ॥

महे चरन सिख सहित बहोरी  
सेवकसदन खामिआमन  
तदपि उचित अस बोलि समीती  
प्रभुता तजि प्रभु कीन्ह सनेह  
आयसु होइ सो करिय गुहारि

। बोले राम कलककर जोरी  
। मंगलमूल अमंगलदमन  
। पठइल भाष काज अस नीती  
। भयउ पुनोत आजु मम गह  
। सेवक कहै खामिसेवकारि

दो० । सुनि सबेद्वाने बचन मुनि रघुवरहि प्रसन्न  
राम कस न तुम कहउ अस हंसबंसवतंस । १० ॥

चौ० । बरनि रामगुनखोखसुभाज  
भूप सजेउ अभिषेकसमाज  
राम करउ सब संयम आजु  
गुरु सिख देह राख पहं गथज  
जनमे एक संग सब भाई  
कर्मबेध उपवीत बिवाहा  
बिमलबंस यह अनुचित एका  
प्रहसप्रेमपकितानि सुहारि

। बोले प्रेमपुलकि मुनिराज  
। चाहत देन तुमहि ज्वराज  
। औ बिधि कुसल निबाहै काज  
। रामहृदय अस बिसय भयज  
। भोजन सयन केलि लरिकारि  
। संग संग सब भयउ उकाहा  
। अनुज निहाइ बड़ेहि अभिषेका  
। हरेउ भरतमन की कुटिलारि

दो० । तेहि अवसर आये लखन मगन प्रेम आनंद  
सनमाने प्रिय बचन कहि रविकुल कैरव चंद । ११ ॥

चौ० । बाजहिं बाजन विविध बिधाना  
भरतआगमन सकल मनावहिं  
हाट बाट घर गली अछारि  
कालिलगन भलि कंतिक बारा  
कनकसिंहासन सीय समेता  
सकल कहहिं कब होइहि काली  
तिनहिं सोहात न अवध बधावा  
घारइ बोलि बिनय सुर करहीं

। पुरप्रमोद नहिं जाइ बखाना  
। आवहिं बेगि नयनफल पावहिं  
। कहहिं परस्पर लोग लोगारि  
। पुजिहि बिधि अभिलाष हमारा  
। बैठहिं राम होइ चित दता  
। बिघ्न मनावहिं देव कुसाली  
। चोरहिं चांदनिराति न भावा  
। बारहिं बार पाव लै परहीं

दो० । बिपति हमारि निखोकि बड़ि मातु करिय सोइ आजु ।  
राम जाहिं बन राज तजि होइ सकल सुरकाजु । १२ ॥

चौ० । सुनि सुरबिनय ठाडि पकितानो  
देखि देव पुनि कहहिं बहोरी  
बिसय रष रहित रचराज  
जीव कर्मबस दुखसुखभायो  
बार बार नहिं चरन सकोची  
जं ब निवास नीच करतली  
आनिज काज बिदारि बहोरी

। भयिउ खरोखबिपिन हिमरातो  
। मातु तोहिं नहिं थोरिउ खोरी  
। तुम जानउ रघुवीरसुभाज  
। जाइस अवध देव हित खामी  
। खली बिचारि विबुधमति पोची  
। देखि न सकहिं पराद विबली  
। करिहै चाह कुसल कवि मोरी

- हरषि हृदय दहरधपुर चारै । जनु पददया दुषदुषदाई ॥
- १० । नाम मंचरा मंदमति चेरि केकयी केरि ।  
चवचपिठारी ताहि करि गई मिरा मति केरि । १३ ॥
- १० । देखि मंचरा नगर बनावा । मंगल मंजुल बाजु बधावा ॥  
पूहिवि खोगन काह उखाड़ । रामतिष्ठक सुनि भा कर दाड़ ॥  
करै बिचार कुनुडि कुमाती । होइ अकाज कवन बिधि राती ॥  
देखि साग मधु कुटिल किराती । जिमि गंव तकै खेचं केहि भांती ॥  
भरतमातु परं गद बिलखानी । का अगमनि हंसि हंसि कह रानी ॥  
उतर न देइ सो खेर उखाड़ । नारिचरित करि डारति आड़ ॥  
हंसि कह रानि गास बड़ तोरे । दीन्ह सवन सिख चव मन मोरे ॥  
तबहुं न बोखि चेरि बड़ि पापिनि । हाड़ै खाव कारि जनु बापिनि ॥
- १० । सभय रानि कह कहसि किन कुसल राम मधिपाल ।  
भरत सवन रिपुदमन सुनि भा कुबरीतर खाल । १४ ॥
- १० । कत सिख देइ हमहिं कोउ माई । गास करव केहि कर बस पाई ॥  
रामहिं काड़ि कुसल केहि आजु । जाहि नरेस देत जुबराजु ॥  
भा कौसल्या विधि नति दाखिन । देखत मर्ब रहत उर नाहिन ॥  
देखहु कस न जाइ सब सोभा । जो अवलोकि मोर मन सोभा ॥  
पूत बिदेस न खोच तुम्हारे । जानति हौ बच नाह हमारे ॥  
नौद बडत प्रिय खेज तुम्हारे । लखहु न भूपकपटचतुराई ॥  
सुनि प्रिय बचन कुटिल मन जानी । मुकी रानि अरु अरुगानी ॥  
पुनि अच कबहुं कहसि घरफोरी । तौ धरि जीव कड़ावौ तोरी ॥
- १० । काने खोरे कूबरे कुटिल कुधाली जानि ।  
तियविशेष पुनि चेरि कहि भरतमातु मुसकानि । १५ ॥
- १० । प्रियबादिनि सिख दीन्हें तोहीं । बपनेहु तो पर कोप न मोहीं ॥  
सुदिन सुमंगलदायक सोई । तोर कहा कर जा दिन सोई ॥  
जठ खामि सेवक लख भाई । बह दिनकरकुलरीति सदाई ॥  
रामतिष्ठक जौ बांचेहुं काखी । मांगु देउं मन भावत आखी ॥  
कौसल्या सम सब महतारी । रामहिं बहज सुभाव पिछारी ॥  
मो पर करहिं सनेह बिषेयी । मै करि प्रीतिपरीक्षा देखी ॥  
जौ बिधि जग देइ करि होइ । होहिं राम सिख पूत पतोइ ॥  
प्राण में अधिक राम प्रिय मोरे । तिन के तिष्ठक होम कब तोरे ॥
- १० । भरतवपस तोहि कय कहु परिहरि कपट दुराव ।  
हर्षमय सिखाव करहि कारण मोहि सुनाव । १६ ॥
- १० । एकहि बार आव सब पूजी । अब कहु कहव जोच करि दूजी ॥

कोरै योग कपार अभामा । भलौ कहत दुख रोरैऊ खाना ॥  
 कहर सुठ फर बात बनारै । ते प्रिय तुमहिं कहर मैं माई ॥  
 समझ कहव अब ठकुर सुहाती । नाहिं तो मौन रहव दिनराती ॥  
 करि कुरूप बिधि परवष कोन्हा । बवा सो कृनिष लखिअ ओ दोन्हा ॥  
 कोउ नप होख समैं का शानी । घेरि कांड़ि अब होव कि रानी ॥  
 जारै योग सुभाव हमारा । अनभल देखि न जाइ तुम्हारा ॥  
 तात कहुक बात अनुबारी । हमव देखि बड़ि चूक हमारी ॥

दो० । गुरु कपट प्रिय बचन बुनि तीय अधरबुधि रानि ।  
 सुरमायावस बैरिनिहि बुद्ध आनि पति आनि । १० ॥

चौ० । सादर पुनि पुनि पूकति ओही । खरोगान मृगो जनु मोही ॥  
 नहि मति फिरी अहै जहि भावी । रहखी घेरि घात भलि फावी ॥  
 तुम पूकजु मैं कहत उराजं । धरैऊ मोर घरफोरी नाजं ॥  
 मजि प्रतीति गडि बजु बिधि होखी । अवध साद साती जनु बोखी ॥  
 प्रिय विष राम कहा तुम रानी । रामहिं तुम प्रिय सो फर जानी ॥  
 रहै प्रथम अब सो दिन बोले । समय पाइ रिपु होहिं पिरीते ॥  
 भाग कमलकुलपोपनिहारा । बिनु जल जारि करै खोई हारा ॥  
 जर तुम्हारि यह सवति उपारी । कंधजु करि उपार बर बारी ॥

दो० । तुमहि न सोच मुहागबल निज बध लीनजु राव ।  
 मन मखीन मुँह मोठे नप राखर सरल सुभाव । १८ ॥

चौ० । चतुर गंभीर राममहतारी । बोच पाइ निज काज संवारी ॥  
 पठये भरत भूप ननिचौरे । राममातुमत जानव रोरै ॥  
 सेवहिं सकल सवति मोहि नौके । गर्बित भरतमातु बल पी के ॥  
 साख तुम्हार कौसिल्यहिं माई । चतुर कपट नहिं परत खबाई ॥  
 राजहि तुम पर प्रीति बिदेखी । सवतियुभाव बकै नहिं देखी ॥  
 रचि प्रपंच भूपहिं अपमाई । राम तिलक हित समन धराई ॥  
 इहि कुल उषित राम कहं टीका । सबहि मुहाइ मोहि सुठि नौका ॥  
 आगिलि बात समझि उर मोही । देउ देव फिरि सो फल ओही ॥

दो० । रचि पचि कोटिक कुटिखपन कोन्हेचि कपटप्रबोध ।  
 कहैचि कथा सत भौति कर जा तैं बड़े विरोध । १८ ॥

चौ० । भावीवच प्रतीति उर पाई । पूछि रानि निज वपस दिवाई ॥  
 का पूकजुं तुम खजंजु न जाना । हित अनहित निज पदु पहिचाना ॥  
 भये पाखदिन सजत समाधु । तुम बुधि पायेऊ मो वन आन ॥  
 खारच पहरिय राज तुम्हारे । कय कहे नहिं होख हमारे ॥  
 जौं अफय कहु कहव बनारै । तौ बिधि देवहि मोहि खजारै ॥

रामहिं तिखक काखि जौ भयज । तुम कहं विपतिबीज विधि बयज ॥  
रेखा खेचि कहौ बध भाखी । भामिनि भरज दूध की माखी ॥  
जौ सुत सहित करज सेवकाई । तौ घर रहज न चानु उपारी ॥

दो० । कद्रु विगतहि दोन्ध दुख तुमहि कौसिका देव ।  
भरत बंदिटस सेदहै रामलपन कर नेव । १० ॥

चौ० । केकयसुता सुनत कटु बानी । कहि न सकै कहु सखमि सुखानी ॥  
तनु पसेव केदखि जिमि कापी । सुबरी दसन जोह तब सापी ॥  
कहि कहि कोटिक कपटकहानी । धीरज धरज प्रबोधिचि रामी ॥  
कोन्हेसि कठिन पटार कुपाटू । जिमि न नहि फिरि उकठि कुकाटू ॥  
फिरा कर्म प्रिय लागु कुषाखी । बकिहि परादति मनज मराखी ॥  
मन मंथरा बात फिरि तोरी । दहिनि खाखि नित फरकति मोरी ॥  
दिन प्रति देखौ राति कुसपना । कहौ न तोहि मोहबस अपना ॥  
काह करौ सखि सुख सुभाज । दहिनि बाम जानौ नहिं काज ॥

दो० । अपने चलत न चाजु सगि अनभल काजक कोह ।  
कहि चच एकहि बार मोहि देव दुख दुख दोह । ११ ॥

चौ० । नेहर जल भरव बह जाई । जिअत न करव सवतिसेवकाई ॥  
अरिबस देव जिआवे जाही । मरन नीक तेहि जिअव न चाही ॥  
दोन बचन कह बज विधि रानी । सुनि सुबरी तिथमाया ठानी ॥  
अस कस कहज मानि मन जना । सुख सदाग तुम कहं दिन दूना ॥  
जो राउर अस अनभल ताका । सो पाँदहि यह फल परिपाका ॥  
जब ते कुमति मुना मै खामिनि । भूख न बासर मोह न घामिनि ॥  
पूका गुनिन्ह देख तिन खाँची । भरत भुआस होव यह खाँची ॥  
भामिनि करज तो कहौ उपपाज । है तुम्हरे सेवाबस राज ॥

दो० । परौ कृप तव बचन सनि सकौ पत पति त्यागि ।  
कहसि मोर दुख देखि बड़ कस न करव हित सागि । १२ ॥

चौ० । सुबरी करो सुबलि कैकेई । कपटकुरी उरपाहन टेंड ॥  
सखी न रानि निकट दुख कैसे । परै हरित जन बलि पसु जैसे ॥  
सुनत बात सुहु संत कठोरी । देति मनज मधु माऊर घोरी ॥  
कहे बेरि सुधि चहे कि नाहीं । खामिनिं कहेज कथा मोहि पाँहीं ॥  
दुद वर दान भूष बन घाती । मांगज चाजु जुहावज हाती ॥  
सुतहि राज रामहिं बनबाख । देज सेज सब सवति जकास ॥  
भूपति रामबचन जस करई । तब मांगज जेहि बचन न टरई ॥  
होद सकाज चाजु निव जीने । बचन मोर प्रिय मानज जीने ॥



दो० । बड़ कुचात करि पातकिनि कहैसि कोपगृह जाइ ॥  
काज संवारइ सजग सब सहसा जनि पतिआइ ॥ २३ ॥

चौ० । कुवरिहिं रानि प्रानप्रिय जानी । बार बार बड़ि कहै बखानी ॥  
तोहि सम हित न मोर संसारा । बड़े जात कर भविष्य अधारा ॥  
जो बिधि पुरव मनोरथ काखी । करौ तोहि सपुनारि चाखी ॥  
बहु बिधि चेरिहिं आदर देई । कोप भवन गवनी केकरी ॥  
विपति बीच बर्षा आतु चोरी । भुंर भद्र कुमति केकरी कोरी ॥  
पाइ कपट जस चंकरु जामा । बर होइ दस फल दुख परिनामा ॥  
कोपसमाजबाज बनि होई । राज करत तेहि कुमति बिगोई ॥  
राजनगर कोसाहस होई । यह कुचात कहु जान न कोई ॥

दो० । प्रमुदित पुनरनारि सब साजि सुमंगल चार ॥  
रक प्रविषहिं रक निकस्यों मोर भूपदरवार ॥ २४ ॥

चौ० । बासबसा सुनि हिस हरबाहों । मिलि दस पांच राम पद जाहों ॥  
प्रभु आदरहिं प्रेम पविषानी । पूरहिं कुचल छेम मृदु बानी ॥  
फिरहिं भवन प्रभुआचसु पाई । करत परस्पर रामबवाई ॥  
को रचबीर हरिस संसारा । छीक सनेह निवाहनिहारा ॥  
जेहि जेहि जोनि कर्मबस अमहों । तहं तहं ईस देहिं यह हमहों ॥  
सेवक हम खासी छियनाइ । होख नाथ यह खोर निवाइ ॥  
अथ अभिजाय नगर सब काइ । केकयसुताइदय अति दाइ ॥  
को न कुचगति पाइ नवाई । रहै न नोचमते गवआई ॥

दो० । बांझबनय साजइ नृप नय केकरीगेह ॥  
गवन निठरता निषट किय जनु धरि देह सनेह ॥ २५ ॥

चौ० । कोपभवन सुनि बकुचे राज । भयबस अगु मग परै न पाज ॥  
सुरपति बड़े बाहुबल जाके । नरपति रचहिं सकल दख ताके ॥  
जो सुनि तिथरिस गये पुछाई । देखइ कामप्रताप बड़ाई ॥  
दस कुलिय अखि अंगवनिहारे । ते रतिनाथ सुमनसर मारे ॥  
बभय नरेव प्रिया परै गयज । देखि दसा दुख दाहन भयज ॥  
भूमि सवन पट मोट पुराना । दिये डारि तनुभूषन माना ॥  
कुमतिहिं कस कुचपता छावी । अनचहिवात सोयु जनु भावी ॥  
जाइ निकट नृप कह मृदु बानी । प्रानप्रिया केहि हेतु रिखानी ॥

दो० । केहि हेतु रानि रिखानि परबत पानि पतिहि निवारई ।  
मानहुं बरोव सुचंगभासिनि विषम भांति निवारई ॥  
दुद बासना रवना दहन बर मर्म ठाहर देखई ।  
तुलसी नृपति भक्तिमतावध कामकौतुक लेखई ॥ १ ॥

दो० । बार बार कह राख सुमुखि सुखोचनि पिकवचनि ।  
कारन मोहि सुनाउ नजगामिनि निजकोप कर । १ ॥

चौ० । अनहित तोर प्रिया केर कोन्हा । केहि दुर बिर केहि सम बह कोन्हा ॥  
कहु केहि रंकिहि करौ नरेख । कहु केहि नृपतिं निकारौ देख ॥  
सकौ तोर चरि अमरुड मारी । कहा कीट बपुरे नर मारी ॥  
जानसि मोर सुभाव बरोख । तव मुख मम दृग चन्द चकोर ॥  
प्रिया प्राण सुत सर्वस मोरे । परिचन प्रिया सकल बस तोरे ॥  
जौ कहू कहौ कपट करि तोरी । भामिनि रामवपस सत मोरी ॥  
बिहसि मांगु मनभावति बाता । भुवन बाजु मनोहर नाता ॥  
चरी सुचरी समुधि निज देखु । बेगि प्रिया परिहरउ सुषेख ॥

दो० । बह सुनि मन मनि सपस बदि बिहसि उठी मतिमंद ।  
भुवन सजति बिलोकि नम मनउ किरातिनि पंद । २६ ॥

चौ० । पुनि कह राख मुहद जिघ जानो । प्रेमपुसकि मुहु मंजुष बाजी ॥  
भामिनि भयउ तोर मन भावा । घर घर नगर अनंद बधावा ॥  
रामहि देख कासि ज्वराजु । धनउ सुखोचनि मंगलबाजु ॥  
दसकि उठी सुनि बचन कठोरा । जनु दुर नखक पाक बरतोरा ॥  
ऐसी पोर बिहसि घर जोई । चोरमारि निमि प्रमट न रोई ॥  
जयो न भूप कपट चतुराई । कोटि कुटिल गुन गुरू पढ़ाई ॥  
सद्यपि नीतिनिपुन नरनाथ । नारिचरित जलनिधि अवगाथ ॥  
कपट यनेह बड़ाइ बहोरी । बोखो बिहसि नखन मुख मोरी ॥

दो० । मांगु मांगु पै कहउ पिघ कबहु देख न लेउ ।  
देन कहउ बरदान दुर तेउ पावत बंदेउ । २७ ॥

चौ० । जानेउ मर्म राख हसि कहई । तुमहि कोहाव परम प्रिय अहई ॥  
थातो राखि न मानेउ काज । बिहरि गयो मम भोर सुभाज ॥  
मठउ दोष हमहिं मनि देख । दुर के चारि मांगि किन लेख ॥  
रघुकुल रीतिबदा चलि चारि । प्राण जाइ बह बचन न जाई ॥  
नहिं चखत सम पातकपुत्रा । गिरि सम होहि कि कोटिक गुप्ता ॥  
सत्य मुख सब सुकत सुचारी । वेद पुरान बिदित मनि गारी ॥  
तेहि पर रामवपस करि चारि । सुकतयनेह अवधि रघुचारी ॥  
बात दृढ़ाइ कुमति हसि बोली । कुमति बिहंगकुलह जनु खोली ॥

दो० । भूपमनोरथ सुमन बन मुख सुविरंचयमाज ।  
भिक्षिनि जनु काजुन चहति बचन मयंकर बाज । २८ ॥

चौ० । सुनउ प्राणपति भाकत जो का । देख एक बर भरतहिं टीका ॥  
दूखर बर मांगौ कर जोरे । नाथ मनोरथ पुरवउ जोरे ॥

तापसभेष विषेष उदासी	। चौदह वर्ष राम बनबासी ॥
मुनि नियबचन भूपउर भोकू	। ससिकर हुवत बिकल जिमि कोकू ॥
मये बहमि कहु कहि नहिं आवा	। जनु सञ्चान बन झपटेउ लावा ॥
विवरन भयउ निपट महिपालू	। दामिनि हनउ मनजुं तह तासू ॥
माघ हाथ मूँदि दोउ सोचन	। तनु धरि सोच लागु जनु सोचन ॥
मोर मनोरथ सुरतरफूला	। फरत करिनि जनु हतेउ समुला ॥
अवध उजारि कोन्ह कैकेई	। दोन्हसि असल बिपत कै नई ॥

दो० । कवन अवसर का भयउ गयउं नारिबिस्वास ।  
योग सिद्ध फलसमय जिमि यतिहि अविद्यानास । २८ ॥

चौ० । इति बिधि राउ मनहिं मन दहई । देखि कुभांति कुमति अस कहई ॥
भरत कि राउर पूत न होहीं । आनेऊ मोल बेभाहि कि मोहीं ॥
जो मुनि सर मम लाग तुम्हारे । काहे न सोखेऊ बचन संभारे ॥
देऊ उत्तर अस कहइ कि नाहीं । मत्यमिंधु तुम रघुकुल माहीं ॥
देन कहइ बर अस जनि देह । तजइ सत्य जग अपथस खेह ॥
मत्य सराहि कहैउ बर देना । जानेऊ खेदहि मांगि सवेना ॥
सिवि दधीचि बलि जो कहु भावा । तनु धन तजेउ बचनपन रावा ॥
अति कटु बचन कहति कैकेई । मानजुं लोग जरे पर देई ॥

दो० । धर्मधुरंधर धीर धरि नयन उघरि राउ ।  
भिर भनि सोख उपास अति मारेसि मोहि कुठाउ । २९ ॥

चौ० । आने देखि भरति रिसि भारी । मनजुं रोषतरवारि उघारी ॥
मूढ कबुद्धि धार निठुराई । भरि कबरी जनु मान बगारि ॥
कखेउ मद्योप करास कठौरा । सत्य कि जीवन खेदहि मोरा ॥
बोले राउ कठिन करि छाती । बागी बिनय न ताहि सोहाती ॥
मोरे भरत राम दै चाखी । सत्य कहौं करि संकर साखी ॥
प्रिया बचन कस कहसि कुभांती । रोति प्रतीति प्रीति करि छाती ॥
अबसि दूत मै पठउब प्राता । ऐहें बेगि सुनन दौ आता ॥
मुदिन बाधि सब साज बजारि । देखौं भरतहिं राख बजारि ॥

दो० । लोभ न रामहिं राख कर बज्रत भरत पर प्रीति ।  
मैं बड़ छोट बिचार करि करत रहेउं नपनीति । ३० ॥

चौ० । रामसपथ सत कहौं सुभाऊ । राममातु मोहि कहा न काऊ ॥
मैं सब कोन्ह तोहि भिनु पूछे । तार्ति परेउ मनोरथ हूके ॥
रिस परिहृष अब मंगल साजू । कहु दिन मये भरत जुबराजू ॥
एकहि बात मोहि दुख लागी । बर दूसर असमंजस मांगी ॥
अमलं हरथ दहीत तैहि चांवा । रिस परिहास कि सांचजं चांवा ॥

कहु तजि रोष रामचपराधू । सब कोउ कहत राम मुठि साधू ॥  
तुल्य सराहमि करबि सनेह । अब मुनि मोहि परम संदेह ॥  
जामु मुभाव अरिउ अगुक्सा । सो किमि करहि मातु प्रतिकूसा ॥

दो० । प्रिया हाथ रिष परिहरउ मांगु बिचारि बिबेक ।

जेहि देखौ अब नयन भरि भरतराजअभिषेक । १२ ॥

चौ० । जियै मोग बह बारि बिहीना । मनि बिनु फनिक जियै दुखहीना ॥  
कहौ मुभाव न कूल मन माहीं । जीवन मोर राम बिनु नाहीं ॥  
ममझि देख तैं प्रिया प्रवीना । जीवन रामदरसआधीना ॥  
मुनि मृदु बचन कुमति अति जरई । मनहुं अगल आऊति घृत परई ॥  
कहुउ करउ किन कोटि उपाया । इहाँ न लागिहि राउरि माया ॥  
देहु कि लेहु अयस करि नाहीं । मोहि न बहु परिपंच सोहाहीं ॥  
राम साधु तुम साधु सुजाना । राममातु भलि तुम पहिचाना ॥  
जस कौसला मोर भल ताका । तस फल देउ उन्मै करि साका ॥

दो० । होत प्रात मुनिभेष धरि जौ न राम बन जाहि ।

मोर मरन राउर अयस नप समझउ मन माहि । १३ ॥

चौ० । अस कहि कुटिल भई उठि ठाढ़ी । मानहुं रोपतरंगिनि बाढ़ी ॥  
पापपहार प्रगट भई सोई । भरो क्रोधजल जार न जोई ॥  
दोउ बर कूल कठिन हठधारा । भंवर झूवरी बचन प्रचारा ॥  
ठाहति भूपरूपतइमूला । चलो विपति बारिधि अगुक्सा ॥  
अखी नरेस बात सब बाची । तिथमिनु मोष सोष पर नाची ॥  
गहि पद विनय कीन्ह बैठारी । जनि दिनकरकुल होहि कुठारी ॥  
मांगु माय अवहीं देउं तोही । रामविरह जनि मारहि मोही ॥  
राखु राम कहं जेहि तेहि भांती । नाहिंन करिहि अकस भरि हांती ॥

दो० । देखी व्याधि असाध्य उप पनेउ धरनि धुनि माय ।

कहत परम आरत बचन राम राम रघुनाथ । १४ ॥

चौ० । व्याकुल राउ विधिल सब गता । करनि कलसद मनहुं निपाता ॥  
कंठ मुख मुख आव न बानी । जिमि पाठीन दोन बिनु पाजी ॥  
पुनि कह कहु कठोर कैकोई । ममं पाहि अगु माऊर होई ॥  
जौ अंतउ अब करतव रहेज । मांगु मांगु केहि के बल कहेज ॥  
कुर कि होइ एक मनस मुखासू । संस्र ठठाइ कसाइव मासू ॥  
दानि कहाइव अब लपनाई । चाहिय हेमकुंजक रमाई ॥  
काइउ बचन कि धोरज अरु । जनि अबसा इव कहना कर ॥  
तनु निव तनय धाम बन धरनी । बलाधि कर्ष अन्धम नरनी ॥

दो० । मर्मबचन सुनि राउ कह कहुक दोष नहिं तोर ।

जागेउ मोहपिपास जनु कास कहावत मोर । २१ ॥

चौ० । चहत न भरत भूपद भोर । विधिबल कुमति बही उर तोरे ॥

यो सब मोर पापपरिनाम । कहु न बचाइ भयो विधि बाम् ॥

सुबध बलिहि किरि अवध सुहाई । सब गुनधाम रामप्रभुताई ॥

करिहै भाइ सकल सेवकाई । होइहै तिऊं पुर रामबहाई ॥

तोर कलंक मोर पक्षिताऊ । मयेउ न मिटिहि न जाइहि काऊ ॥

अब तोहि लोक लाग कह सोई । लोचनघोट बैठ मुख गोई ॥

जौजौं जियौ कहौं कर जोरो । तौजौं जनि कहु कहसि बहोरी ॥

किरि पक्षितहसि अंत अभागी । मारेसि गाय गारु सामी ॥

दो० । परेउ राउ कहि कोटि विधि काहे करसि निदान ।

कपटधयानि न कहति कहु जागति मनजुं मनान । २२ ॥

चौ० । राम राम रटि बिकस भुवाल । जनु बिन पंख बिहंग बिहाल ॥

उदय मनाव भोर जनि होई । रामहिं जाइ कहै जनि कोई ॥

उदय करउ जनि रबिकुलगुरा । अवध बिलोकि सुल होइ ऊरा ॥

भूपमति केकपनिठराई । उभय अवधि विधि रथो बनाई ॥

बिलपत नृपहिं भयउ भिनुसारा । बोनारनमंखधुनि द्वारा ॥

पठहिं भाट गुन गावहिं गायक । सुमत नृपहिं लागहिं जनु वाद्यक ॥

मंगल सकल सुहाइ न कैमें । सहगामिनोबिभूषन जैमें ॥

तेहि निशि भीइ परो नहिं काह । रामदरबसाकथा उहाह ॥

दो० । हार भोर सेवक सचिव कहहिं उदय रवि देखि ।

जागे अवजुं न अवधपति कारन कवन बिदेसि । २३ ॥

चौ० । पिकिले पहर भूप नित जागा । आजु हमहिं कउ अचरन जागा ॥

जाऊ सुमत जगावउ जाई । कीजिय काज रजावसु पाई ॥

मे सुमत नवमज्जिर पाहीं । देखि अमानक जात डेराहीं ॥

धार धार जनु जात न बेरा । मानजुं बिपतिविषादबेरा ॥

पूहत कोउ न उप्तर कहु देई । मे जेहि भवन भुव कैकोई ॥

कहि लखजोव बैठि बिर गाई । देखि भूपमति नवध सुहाई ॥

सोकविकस बिबरन महि परेउ । मानजुं कमलमूल परिहरेउ ॥

पचिव यभीत कहे नहिं पुखी । बोखी असुभ भरी सुभ हूखी ॥

दो० । परो न राजहिं भीइ निशि मर्म जानु जगदीव ।

राम राम रटि भोर किछ हेतु न कहेउ महीव । २४ ॥

चौ० । आनजुं रामहिं बेनि सुहाई । बसाचार तब पूछउ जाई ॥

बखो सुमत रावण्य जानी । उखी सुखाव कीन्ह कहु राखी ॥

सोचबिबध महि परै न पाऊ । रामहिं सोलि कहहिं का राज ॥  
 उर धरि धोरन गधउ दुखारे । पुकहिं सकल देखि मन मारे ॥  
 समाधान मन करि सबही का । गधे जहाँ दिनकरकुसुटीका ॥  
 राम सुमंतहिं आवत देखा । आदर कीन्व पित। सम खेखा ॥  
 निरखि बदन कधि भूपरजार् । रघुकुलदीपाहिं पसे सवाई ॥  
 राम कुभांति सचिव संग जाहीं । देखि लोग जहं तहं बिकसार्हीं ॥

दो० । आर दीख रघुवंसमनि नरपति निपट कुवाज ।  
 यहमि परेउ बध सिंहिनिहि मनऊं हड्ड मजराज । ३८ ॥

चौ० । सुखे अधर जरे सब चंगा । मनऊं दीन मनिहीन सुखंगा ॥  
 यहख समोप देखि कैकई । मानऊं मृत्यु चरी गनि देई ॥  
 कहनामय रघुनाथसुभाज । प्रथम दीख दुख बना न काज ॥  
 तदपि धीर धरि समय बिचारी । पुकी मधुर बचन महतारी ॥  
 मोहि कऊ मातु तात दुखकारन । करिय यज्ञ जेहि होइ निवारन ॥  
 सुनऊ राम सब कारन एह । राजहिं तुम पर बजत भनेह ॥  
 देन कहेउ मोहि दुइ बरदाना । मागेउं जो कहु मोहि सोहाना ॥  
 सो सुनि भयेउ भूप उर सोचू । हाकि न सकहिं तुम्हार सकोचू ॥

दो० । सुतयनेह इत बचन उत संकट परेउ जरेष ।  
 सकऊ तो आयसु सोष धरि मेटऊ कठिन कसेष । ४० ॥

चौ० । निधरक बैठि कहति कटु बानी । सुनत कठिनता अति अकुलानी ॥  
 बीभ कमान बचन घर जाना । मनऊं भूए मृदु लख समाना ॥  
 जनु कठोरपन धरे चरीरा । सोख धनुषविद्या बर बीरा ॥  
 सब प्रसंग रघुपतिहिं सुगई । बैठी जनु तनु धरि निठुराई ॥  
 मन मुसुकाहिं भानुकुलभानू । राम यहजमानंदनिधान ॥  
 बोखे बचन बिगत सब दूखन । मृदु मंजुल जनु बागविभूषन ॥  
 सुनु जमनी होइ सुत बड़ भागी । जो पितृमातृबचन समरागी ॥  
 तनय मातृपितृपोषनिहारा । दुखभ जमनी यहि संसारा ॥

दो० । मुनिजनमिसन विशेष वन सबहि भांति भक्त मोर ।  
 तेहि महं पितृपायसु बडरि संमत जमनी तोर । ४१ ॥

चौ० । भरत प्राणमिय पावहिं राजू । विधि सब विधि मोहि बन्धुख चाजू ॥  
 जौ न जाऊं वन ऐवेऊं काजा । प्रथम गनिष मोहि मुंड वमाजा ॥  
 सेव करउ कथमनह लागी । परिहरि अमिय सोहि विष मांजी ॥  
 तेव न पाइ अब समय पुकारि । देखु निवारि मातु मन जाहीं ॥  
 अब हक दुख मोहिं बिसेवी । निपट बिकल नरनाथक देवी ॥  
 सोरिहि बान पितहिं दुख मारी । होत प्रतीति न ओरिं मज्जारी ॥

राज धीर गुणवदधि अगाधू । भा मोतें कहु बड़ अपराधू ॥  
 जा तें मोहि न कहत कहु राज । मोर सपस मोहिं कहु बनि भाऊ ॥  
 दो० । बहज सरस रघुवरवचन सुमति कुटिल करि जान ।  
 चहै जोंक जिमि बक गति यद्यपि सलिल समान । ४९ ॥

चौ० । रहस्यो रानि रामरस्य पारि । बोलो कपट बनेह जगारि ॥  
 सपस तुम्हार भरत के आना । रेतु न दूसर में कहु जाना ॥  
 तुम अपराध योग नहिं ताता । जननी जनक बंधु सुखदाता ॥  
 राम बल तुम जो कहु कहल । तुम पितृमातृवचनरत अहल ॥  
 पितरिं बुझार कही बलि छोई । चौथेपन अघ अघस न होई ॥  
 तुम सम सुवन सुछत जेहि दीन्हे । उचित न तासु निरादर कीन्हे ॥  
 सागहिं सुमुखि वचन सुभ कैये । भगव गद्यादिक तीरथ जैये ॥  
 रामहिं मातृवचन सब भाये । जिमि सुरसरिगति सलिल सुहाये ॥

दो० । मै मुझां रामहिं सुमिरि यप पिरि करवट खोख ।  
 सचिव रामसागमन कहि विनय समय सम कीख । ५० ॥

चौ० । जब यप अकनि राम पग धारे । धरि धीरज तब नयन उघारे ॥  
 सचिव बभारि राख बैठारे । चरन परत यप राम निहारे ॥  
 लिये बनेह निकल उर सारि । गह मनि फनिक बजुरि जिमि पारि ॥  
 रामहिं चितै रहे जगमाझ । चलां बिलोचन बारिप्रवाझ ॥  
 भोकबिकस कहु कहे न पुरा । हृदय लगावत वारहिं बारा ॥  
 विधिहिं मनाउ राख प्रग माहीं । जेहिं रघुनाथ न कानन जाहीं ॥  
 सुमिरि महेसहिं कहहिं निहोरी । बिनती सुगड सदा सिय मोरी ॥  
 आसु तोष तुम औठरदानी । आरति हरज दीन जन जानी ॥

दो० । तुम प्रेरक सब के हृदयोंओ मति रामहि देख ।  
 वचन मोर तजि रहहिं घर परिहरि सोल बनेऊ । ५१ ॥

चौ० । अघम होउ बह सुखस नवाऊ । नरक परौ बह सुरपुर जाऊ ॥  
 सब दुख दुखस यहावऊ मोही । लोचनछोट राम अनि होही ॥  
 अघ मै गुनत राख नहिं बोला । पीपरपात सरस मन जोला ॥  
 रघुपति पितरिं प्रेमवस जानी । पुनि कहु कहेउ मातु अनुमानी ॥  
 देख काख चबवर अनुमारी । बोले वचन बिनोत विचारी ॥  
 तात कही कहु करौं डिठारि । अनुचित कर्म अनि करिकारि ॥  
 अति लघु बात जानि दुख पावा । काहे न कहि मोहि प्रथम जनावा ॥  
 देखि मुबारहिं पूछेउं माता । सुनि प्रथम भौ बोलत गाता ॥

दो० । मंगलसमय बनेहवस सोच परिहरिय तात ।  
 आचसु देख हरि निह कहि पुनक प्रभुनात । ५२ ॥

सौ० । धन्य जन्म जगतीतल तासु । पितरि प्रबोध चरित सुनि जासु ॥  
 चारि पदारथ करतल ताके । प्रिय पितु मातु प्रान हम जाके ॥  
 आयसु पालि जगफल पारै । ऐसी बेगहि होउ रजाई ॥  
 बिदा मातु वन आवौ मांगी । चलिहौं वनहि बहुरि पन छागी ॥  
 अब कहि राम गवन तब कीन्हा । भूप सोकवस उतर न दीन्हा ॥  
 नगर व्यापिगद बात सुनीहो । कुपत चढ़ी अनु सब तनु बीहो ॥  
 सुनि भये बिकल सकल नर नारी । बेलिबिटप अनु लाग दवारी ॥  
 जो जहं सुनै धुनै बिर सोई । वड़ बिषाद नहिं धोरन होई ॥

दो० । मुख ठुखहिं सोचन सबहिं सोक न हृदय समाद ।  
 मानहुं कहनारथकटक उतरा अवध बजाद । ४६ ॥

सौ० । भलि बनाइ बिधि बात बिगारी । जहं तहं देखिं केकयिहि गारी ॥  
 इहि पापिनिहि बूझि का परेऊ । छाव भवन पर पावक भरेऊ ॥  
 निज कर नयन काढ़ि चह दीखा । चारि मुधा बिष चारन चीखा ॥  
 कुटिल कठोर कुबड़ि अभागी । भर रघुवंश बेनबन चागी ॥  
 पल्लव बैठि पेड़ इन काटा । सुख मह मोरठाट इहिं ठाटा ॥  
 सदा राम इहिं प्राण समाना । कारन कवन कुटिल पन ठाना ॥  
 सय कह हं कवि नारिसुभाज । सब बिधि अगम अगाध दुराज ॥  
 निज प्रतिबिंब मुकुर गहि आई । जानि न जाइ नारिमति भाई ॥

दो० । का नहि पावक जरि सकै का न समद समाद ।  
 का न करै अबला प्रवल कहि जग काल न खाद । ४७ ॥

सौ० । का मुनाइ बिधि काह मुनावा । का दिखाइ चह काह देखावा ॥  
 एक कह भल भूप न कीन्हा । बर बिचारि नहिं कुमतिहि दीन्हा ॥  
 जो इटि भयउ सकलदख भाजनु । अबलाबिबस ज्ञान गुन रा अनु ॥  
 एक धर्मगरमिति पहिचाने । उपहि दोष नहिं देखिं सयाने ॥  
 सिविदधीचरिचंदकहागी । एक एक सन कहहिं बखानी ॥  
 एक भरत कर मयत कहहीं । एक उदामभाव सुनि रहहीं ॥  
 कान मंदि कर रद गहि जोहा । एक कहहिं यह बात अजीहा ॥  
 सुकृत जोइ अम कहत तुम्हारे । भरत राम कहं प्राणपियारे ॥

दो० । चंद्र खवै बह अमलकन मुधा होइ बिष तूल ।  
 सपनेछ कबछ न करहिं कहु भरत राम प्रतिकूल । ४८ ॥

सौ० । एक बिधातहि दूषन देखी । मुधा दिखाइ दोष बिष जेही ॥  
 खरभर नगर सोच सब काह । दुमह दाह उर मिटा उहाह ॥  
 बिप्रबधु कुलमान अठेरी । अ प्रिय परम केकयो केरी ॥  
 समी-दन बिष खील घराही । बचन मान सम सागहिं ताही ॥



भरत न प्रिय मोहि राम समाना । सदा कहहु यह सब जग जाना ॥  
 करहु राम पर सहज समेह । कहि अपराध आजु बन देख ॥  
 कहहु न कोन्ह भवति प्रवर्गह । प्रीति प्रतीति जान सब देख ॥  
 कौसल्या अब काह बिगारा । तुम जेहि लागि बज्र पुर पारा ॥

दो० । सोय कि पिय संग परिहृष्टिनिन कि रहिहहिं म ।  
 भरत कि भुजब राज पुर नृप कि जियहिं बिनु ॥ ४८ ॥

चौ० । अस बिचारि जिय काहु कोह । सोक कलंक कोहि नि होह ॥  
 भरतहि अवनि देहु जहराज । कानन कवन राम कर काज ॥  
 जाहिन राम राज कर भेष । धमधगीन बिषयरस रूपे ॥  
 गुरगुरह बसहिं राम तजि गेह । नृप मन अस बर दूसर लेह ॥  
 राम मरिम मुत कानन योग । कहा कहहिं मुनि तुम कह लोग ॥  
 जौ न मानिहो कहे हमारे । नहिं लागिहि कहु हाथ तुम्हारे ॥  
 जौ परिहास कोन्ह कहु होई । तौ कहि प्रगट अनावड सोई ॥  
 छठहु बेगि सोद करहु उपाई । जेहि बिधि सोक कलंक नसाई ॥

कं० । जेहि भांति सोक कलंक जाइ उपाइ करि कुल पालह ।  
 छठि फेर रामहिं जात यन जनि बात दूसरि चालह ॥  
 जिमि भानु बिनु दिन प्राण बिनु तनु चंद बिनु जिमि यामिनी ।  
 तिमि अवध तुलसीदास प्रभु बिनु ससुधि धौं मन भामिनी । २ ॥

खो० । सखिन्ह सिखावन दोन्ह मुंनत मधुर परिनाम छित ।  
 तेह कहु कान न कोन्ह कुटिल प्रबोधी कूबरी । २ ॥

चौ० । कतह न देह दुसहसख रुखी । मृगिहि चितव अनु बाघिनि भूखी ॥  
 बाधि असाधि जानि तिन त्यागी । चली कहति मतिमन्द अभागी ॥  
 राज करत रहि देव बिगोई । कोन्हेहि अस अस करै न कोई ॥  
 रहि बिधि बिलपहि पुरनरनारी । देहि कुचालिहि कोटिक गारी ॥  
 जरहिं बिषम जर सेहिं कषाया । कवन राम बिनु जीवन आसा ॥  
 बिकल बिषय प्रजा अकलानी । जिमि जलचरमन सूखत पानी ॥  
 अति बिषाद सब लोग सुगई । गये मातु पहं राम गुसाई ॥  
 मुख प्रयस बित चौगुन पाऊ । रहै सोच अनि राखहिं राज ॥

दो० । नव गयंद रघुवंसमणि राज अलान समान ।

छट जानि बनभवन मुनि घर आसंद अधिकान । ५० ॥

चौ० । रघुकुलतिलक जोरि बौ हाथा । मदित मातुपद नायड माथा ॥  
 दोन्ह असीस काट घर लीन्ह । भूषन बसन निहावरि कीन्ह ॥  
 बार बार मुख चूमति माता । नयननेहजल पुष्कित माता ॥  
 मोद राखि पुनि हृदय कनारी । खवत प्रेमरस पयद सुहारी ॥

प्रेमप्रमोद न कहू कहि जाई । रंक धनदपदबो जनु पाई ॥  
सादर सुन्दर बदन निहारो । बोखी मधुर बचन महतारो ॥  
कहेउ तात जननी बलिहारो । कवहि लगन मुदमंगलकारी ॥  
सुकृतसीलमुखसीव सुहार्द । जगल्लाम कहि अवध अपाई ॥

दो० । जेहि चाहत नर नारि सब अति आरत इहि भांति ।  
जिमि चातकि चातक दक्षित छटि सरद छतु स्थाति । ५१ ॥

चौ० । तात जाउ बलि बेगि सहाइ । जो मन भाव मधुर कहू साहइ ॥  
पितु समोप तव जायेऊ भैया । भइ बड़ि बार जाइ बलि मैआ ॥  
मातुवचन मुनि अति अनुकूला । जन सुनेहपुरतन के फूला ॥  
सखमकरन्दभरे सोमला । निरखि राम मन भर न भूला ॥  
धर्मधरीन धर्मगति जानी । कहेउ मातु मन अति खुदु बानी ॥  
पिता दोह मोहि काननराज । जहं सब भांति मोर बड़ काज ॥  
आयस देऊ मुदित मन माता । जेहि मुद मंगल कानन जाता ॥  
जनि सनेहवस डरपसि भोरे । आनंद मातु अनुयह तोरे ॥

दो० । बसं चारिदस विपिन बसि करि पितुवचन प्रमान ।  
आय पाय पुनि देखिहौं मन जनि करसि ममान । ५२ ॥

चौ० । बचन विनीत मधुर रघुवर के । सर मन लगे मातुडर करके ॥  
सहमि छुखि मुनि सोतल बानी । जिमि जवास पर पावस पानी ॥  
कहि न जाइ कहू हृदय बिपाद । जन बेहमे करि केहरिगाद ॥  
नयन बलिख तनु घरहर कांपो । मांजा मनहुं मोन कहं व्यापो ॥  
धरि धोरज सुतबदन निहारो । महुद बचन कहति महतारो ॥  
तात पितहि तुम प्रानपिशारे । देखि मुदित नित चरित तुंहारे ॥  
राज देन कहं सुभ दिन साधा । कहेउ जान बन केहि अपराधा ॥  
तात सुनावहु मोहि निदान । को दिनकरकुल भयउ लसान ॥

दो० । निरखि रामरख सचिवसुत कारन कहेउ सुझार ।  
मुनि प्रसंग रहि मूकगति दसौ वरनि गहि जाइ । ५३ ॥

चौ० । राखि न सकहि न कहि सक जाइ । दुल्लं भांति उर दाहन दाइ ॥  
लिखत सुधाकर लिखि गा राइ । विधिगति वाम यदा सब काइ ॥  
धर्ममनेह उभय मति घेरी । भइ गति सांप कुंडरि करी ॥  
राखौ सुतहि होइ अनरोध । धर्म जाइ अइ बंधविरोध ॥  
कहौं जान बन तौ बड़ि बानी । संकट सोच बिकल भइ रानी ॥  
बहुरि समझि तियधर्म बानी । राम भरत दौ सुतकुल जानी ॥  
बरख सुभाव राममहतारी । बोखी बचन धीर धरि मारी ॥  
तात जाउ बलि कोनेछ नीका । पितुआयसु सब सैन के टीका ॥

दो० । राज देन कहँ दीन्ह बन मुहि न सोच दुखलेस  
तुम बिनु भरतहि भूपतिहि प्रजहि प्रसङ कलेस । ५४ ॥

चौ० । जौ केवल पितु प्रायस ताता । तौ जनि जाऊ जाइ बलि माता ॥  
जौ पितु मातु कहँ बन जाना । तौ कानन सत अवध समाना ॥  
पितु बनदेव मातु बनदेवी । खग मृग चरन भरी हसेवी ॥  
अंतक उचित नृगहि बनबास । बय बिलोकि हिय होत हरास ॥  
बहु भागो बन अवध अभागो । जौ रयवंमतिलक तुम त्यागो ॥  
जौ मुन कहौ मंग मोहि लेह । तुम्हरे हृदय होइ संदेह ॥  
पुत्र परम प्रिय तुम सबही के । प्राण प्राण के जीवन जो के ॥  
ते तुम कहऊ मातु बन जाऊ । मै सुनि वचन बैठि पछिताऊ ॥

दो० । यह बिचारि नहिं करउ हठ झूठ सनेह बढ़ाइ ।  
मानि मातु के नात बलि सुरति बिसरि जनि जाइ । ५५ ॥

चौ० । देव पितर सब तुमहि गुसाई । राखऊ पलक नयन की नाई ॥  
अवधि अब प्रिय परिजन मोना । तुम करुनाकर धर्मधरीना ॥  
अस बिचारि सोइ करऊ उपाई । सबहि जियत जेहि भेंटऊ आई ॥  
जाऊ मुखेन बरहि बलि जाऊ । करि अनाथ जन परिजन गाऊ ॥  
सब कर आज मुक्तफल बीता । भये कराल काल बिपरीता ॥  
बहु विधि बिलपि चरन लपटानी । परम अभागिनि आपहि जानी ॥  
दाहन दुमह दाह उर व्यापा । बरनि न जाइ विलापकलापा ॥  
राम छठाइ मातु उर लावा । कहि मृदु वचन बडत समुझावा ॥

दो० । समाचार तहि समय सुनि सीय उठो अकुलाइ ।  
जाइ सासपगकमलयुग दि बैठि सिर नाइ । ५६ ॥

चौ० । दीन्ह अशेष सास मृदु बानी । अति सुकुमारि देखि अकुलानी ॥  
बैठि नमित मुख सोचति सोता । रूपरासि पतिप्रेमपुनोता ॥  
चलन चहत बन जीवनमाया । कवग मुक्त मन होइहि साथी ॥  
को तनु प्राण कि केवल प्राणा । विधि करतव कहु जात न जाना ॥  
चरु चरनमुख लेखति धरनी । नूपर मुखर मधुर कवि बरनी ॥  
मनऊ प्रेमबस बिनती करहीं । हमहि सीयपद जनि परिहरहीं ॥  
मंग बिलोचन मोचति वारी । बोलो देखि राममहतारी ॥  
तात मुनऊ सिय अति सुकुमारी । सामु समुद्र परिजनहिं पियारी ॥

दो० । पिता जनक भूपालमनि समुद्र भागुलभाज ।  
पति रविकुलकरवविपिन बिधु गुनरूपनिधान । ५७ ॥

चौ० । मै पनि पुत्रवधु प्रिय पारि । रूपरासि गुनसौख सुहार् ॥  
मदनपुतरि इव प्रीति बड़ाइ । राखेउ प्राण जानकिहि लार् ॥

कल्पवेलि जिमि बज्ज बिधि छाखी । सींचि सनेहसकिल प्रतिपाली ॥  
 फूलन फलत भये बिधि बामा । जानि न जाइ काह परिनामा ॥  
 पलगपोठ तजि मोद हिंडोरा । मिय न दोन पग अबनि कठोरा ॥  
 जीवनमूरि जिमि जुगवति रहेऊं । दोपवाति नहिं टारन कण्ठऊं ॥  
 सो मिय चलन रहति बन साधा । आयसु कहा होइ रघुनाथा ॥  
 चन्द्रकिरणसरसिक सकोरी । रविहस नयन सकी किमि कोरी ॥

दो० । करि केहरि निमिचर चरहिं दृष्ट जंतु बन भूरि ।

विषवाटिका कि सोह मुत सुभग मजीवनमूरि । ५८ ॥

चौ० । बन हित कोल किरातकिभोरी । रचो बिरंचि बिषयरमभोरी ॥

पाहनकमि जिमि कठिन सुभाऊ । तिनहिं कलेस न कानन काऊ ॥

कै तापमतिथ कानन योग । जिन तप हेतु तजा सब भोग ॥

मिय बन बमिहि तात कहि भांती । चित्रलिखित कपि देखि डेराती ॥

सुरसर सुभग बनजवनचारी । डाबरजोग कि रंमलुमारी ॥

अम बिचारि अस आयसु होई । मै मिख देखि जामकिहि सोई ॥

जौ मिय भवन रहै कह अवा । मो कह होइ प्रानअवलवा ॥

मुनि रघुबीर मातृप्रियबानी । सोल भनेह मुधा जनु बानी ॥

दो० । कहि प्रिय वचन विवेकमय कोह मातृपरितोष ।

सगे प्रबोधन जानकिहिअगटि बिपनिगुनदोष । ५९ ॥

चौ० । मातृ समीप कहत सकुचाहीं । बाले समीप समझि मन माहीं ॥

राजकुमारि सिखावन सुनछ । आन भाति अिय जनि कहु गुनछ ॥

आपन मोर लोक औ चहछ । बचन हमार भाणि घर रहछ ॥

आयसु मोर सामनेवकाई । सब बिधि भासिनि भवन भलाई ॥

इहि ते अधिक धर्म नहिं दूजा । सादर ससुकर पदपूजा ॥

जब जब मातृ करिहि मुधि मोरी । होइहि प्रेमबिकल मति मोरी ॥

तब तब तुम कहि कथा पुरानी । सुंदरि समुझायेछु मृदु बानी ॥

कहौ सुभाव सप्त सन मोहौ । मुमुखि मातृ हित राखौ तोहौ ॥

दो० । गृहश्रुतिमन्त्र धर्मफल पारथ विनहि कलेस ।

हठवस सब मंकट सहे गालब नज्जव नरेस । ६० ॥

चौ० । मै पनि करि प्रमाण पितृबानी । बेगि फिदव मुन मुमुखि सयाही ॥

दिवस जात नहिं लागहि बारा । सुंदरि सिखवन सुनछु हमारा ॥

जौ हठ कज्ज प्रेमवस बामा । तौ तुम दुख पावब परिनामा ॥

कानन कठिन भयंकर भारी । घोर घम हिम बारि बयारी ॥

कुच कंटक मग ककर मारा । चलब पयादेहि बिनु पदचारा ॥

चरनकमल मृदु मंजु तुम्हारे । मारग अगम भूमिधर भारे ॥

कंदर खोह नदी नद नारे । अगम अगाध न जारिहि निहारे ॥  
 भालु बाघ हक केहरि नागा । करहि नाद मुनि धीरज भागा ॥  
 दो० । भूमिसयन बलकछ बसन अघन कंद फल मूल ।  
 ते कि सदा सब दिन मिलहि समय समय अनुकूल । ६१ ॥

चौ० । नरअहार रजनीचर करहीं । कपटभेष विधि कौटिन धरहीं ॥  
 लागै अति पहार कर पाना । विपिनिविपति नहि जात वखाना ॥  
 ब्याल कराल बिहग ब्रज घोरा । निषिचरनिकर मारिनरघोरा ॥  
 डरपहिं धीर गहनमुधि आये । मृगछोचनि तुम भोरु मुभाये ॥  
 हंसगवनि तुम नहि बनयोग । मुनि अपयस देहि मोहि लोग ॥  
 मानसमलिल मुधाप्रति पाली । जियद कि खवगपधि मराली ॥  
 नवरमालबन बिहरन सीला । सोह कि कोकिल विपिन करीला ॥  
 रहइ भवन अघ हृदय विचारी । चन्द्रवदनि दुख कानन भारी ॥

दो० । सहज सुहृद गुरु स्नामिसिख जो न करै हित मानि ।  
 सो पक्षिताइ अघाह उर अवसि होइ हितदानि । ६२ ॥

चौ० । मुनि मृदु वचन मनोहर पो के । सोचनमखिन भरे बल सो के ॥  
 सीतल सिख दाहक भर कैसे । चकरहि सरदचाँदनी जैसे ॥  
 उतर न आव बिकल वैदेही । तजन चहत मोहि परम खनेही ॥  
 बरवस रोकि बिलोचनबारी । धरि धीरज उर अनि कुमारी ॥  
 लागि सासुपद कह कर जोरी । हंसव देवि बड़ि बिनय मोरी ॥  
 दोन्ह प्रानपति मोहि सिख भोई । जेहि विधि मोर परम हित होई ॥  
 मै पनि समझि दोख मन माहीं । पियवियोग सम दुःख जग नाहीं ॥

दो० । प्राननाथ कहनायतन मुंदर मुखद मुजान ।  
 तुम विनु रघुकुल कुमुदविधु सुरपुर नरक समान । ६३ ॥

चौ० । मातु पिता भगिनो प्रिय भाई । प्रिय परिवार सुहृदसमुदाई ॥  
 भामु ससर गुरु मुजन सह्राई । सुत मुंदर मुसील मुखदाई ॥  
 जहं छगि नाथ नह अह नाते । पिय विनु तियहि तरनि ते ताते ॥  
 तन धन धाम धरनि पुर राजू । पतिबिहीन सब सोकसमाजू ॥  
 भोग रोग सम भूषन भारू । यमयातना सरिस संसारू ॥  
 प्राननाथ तुम विनु जगमाहीं । मो कहं मुखद कतजं कोउ नाहीं ॥  
 जिय विनु देह नदी विनु वारी । तैसहिं नाथ पुरुष विनु नारी ॥  
 नाथ सकल सुख साथ तुम्हारे । सरदबिमलविधु वदन निहारे ॥

दो० । खग मृग परिजन नगर सर बल कल बिमल दुकूल ।  
 नाथ साथ सुरसदन सम पर्णसाल मुख मूल । ६४ ॥

चौ० । वन देवो वनदेव उदारा । करिहै सामु ससर सम सारा ॥

कुसुमिकसयवाधरो वृद्धाई । प्रभु संगे मंजु मनोजितुराई ॥  
 कंद मूल फल समिध चहाइ । अवध सौधसुख हरिष पहाइ ॥  
 कन कन प्रभुपदकमल बिलोकी । रहिहौं मुदित दिवस जिमि कोकी ॥  
 बनदख नाथ कहै बज्रतेरे । भय विषाद परिताप घनेरे ॥  
 प्रभुबियोगसुखस्ये समाना । सब मिला होहि न कृपामिधाना ॥  
 अस जिय जानि सुजानधरोमनि । खेदय संग मोहि छाड़ि जनि ॥  
 बिनती बज्रत करौं का खामी । कहनामच उरअंतरजामी ॥

१० । राखिय अवध तो अवधि लनि रहत जो जानिय प्रान ।  
 दीनबंधु सुंदर सुखद सोलसनेहनिधान । ६५ ॥

१० । मोहि मंगलसत न होइहि चारी । कन कन चरनचरोज निहारी ॥  
 सबहि भांति पियसंवा करिहौं । मारगजनित सकल खम हरिहौं ॥  
 पांव पखारि बैठि तहकाहौं । करिहौं बायु मुदित मन माहौं ॥  
 समकनसहित खाम तनु देखे । का दुख समस्य प्रानपरति पेखे ॥  
 सम सहि पर तनपल्लव डाखी । पाध पखोटिहि सब निवि दाखी ॥  
 बार बार मृदु मूरति जोखी । लागिहि ताप बघारि न मोखी ॥  
 को प्रभु संग मोहि चितवनि हारा । सिंहबधुहि जिमि सकल विचारा ॥  
 मै सुकुमारि नाथ बनयोगू । तुमहि उचित तप मो कह भोगू ॥

१० । ऐसेहु बचन कठोर मुनिजौ न हृदय बिकमान ।  
 तौ प्रभु विषम बियोगदुख सहिहैं पांमर प्रान । ६६ ॥

१० । अस कहि होय बिकल भइ भारी । बचनबियोग न मुकी संभारी ॥  
 देखि दया रघुपति जिय जाना । हठि राखे राखिहि नहिं प्राना ॥  
 कहि छुपाव भानकुलनाथा । परिहरि सोच चलहु बन साथा ॥  
 नहिं विषाद कर अवसर आजू । बेगि करहु वनगवनसमाज ॥  
 कहि प्रिय बचन प्रियहि समझाई । लगै मातुपद आसिष पाई ॥  
 बेगि प्रजादुख मेटव आई । जननी मिठुर बिसरि जनि जाई ॥  
 फिरिहि दया बिधि बज्रि कि मोरी । देखिहैं मै न मनोहर जोरी ॥  
 मुदित मुखरी तात कब होई । जननी जियत बदनबिधु ओई ॥

१० । बज्रि बच्छ कहि लाल कहि रघुपति रघुवर तात ।  
 कबहिं बुलाइ लगार उर हरवि निरखिहौं गात । ६७ ॥

१० । खलि सनेह कातरि महतारी । बचन न आव बिकल भइ भारी ॥  
 राम प्रबोध कीन्ह बिधि नाना । समस्य सनेह न जाइ बखाना ॥  
 तब जानकी साखपन लागी । मुनिध माख मै परम अभागी ॥  
 सेवासमय देव बन दीन्हा । मोर मनोरथ मुफल न कीन्हा ॥  
 तजव खोम जनि छावव होइ । कर्म कठिन कहु दोष न मोइ ॥

मुनि सियवचन सासु शकुलानो । दसा कवनि विधि कहौ बखानी ॥  
 बारहि बार लाइ उर लोचो । धरि धीरज मिख आसिष दीन्हो ॥  
 अचल होउ अहिवांत तुम्हारा । जब लगि गंगयमुनजलधारा ॥

दो० । शीतहिं सासु अशोक मिख दीन्ह अनक प्रकार ।  
 चलो नाइ पदपदुम सिर अति हित बारहिबार । ६८ ॥

चौ० । समाचार जब लहिमन पाये । व्याकुल बिलखि बदन उठि धाये ॥  
 कंप पुलक तन नयन मनोरा । गहे चरन अति प्रेम अधीरा ॥  
 कहि न सकत कहूँ सितवत ठाढ़े । मोन दीन अनु जल तें काढ़े ॥  
 सोच हृदय विधि का होनिहारा । सब सुख भूत मिरान हमारा ॥  
 मो कहं कहा कहव रघुनाथा । रखि रहै भवन कि लैहिं माथा ॥  
 राम बिलोकि बंध कर ओरै । देख गेह सब सन हन तोरै ॥  
 बोले वचन राम नयनागर । सोलमनेहमरलसुखमागर ॥  
 तात प्रेमबस अनि कदराह । समझि हृदय परिनाम उकाह ॥

दो० । मातु पितागहस्वामिमिख सिर धरि करहिं मभाय ।  
 लहेउ लाभ तिन जन्म के मतलु जन्म जग जाय । ६९ ॥

चौ० । अम जिय जानि सुनऊ मिख भाई । करौ मातुपितुपदमेवकाई ॥  
 भवन भरत रिपुदहन नाहीं । राउ छुट्ट मम दुख मन माहीं ॥  
 मैं बन जाउं तुमहि लै साथी । होइहि सब विधि अध गनाथी ॥  
 गुरु पितु मातु प्रजा परिवार । सब कहं परै दुसहदुख भार ॥  
 रहऊ करऊ सब कर परितोषू । नतल तात होइहि ब दोषू ॥  
 जामु राज प्रिय प्रजा दुखागी । सो नृप अवसि नक अधिकारी ॥  
 रहऊ तात असि नोति बिचारो । सुनत लषन भये ब ल भारी ॥  
 सियरे बदन सुखि गौ कैसे । परसत तुहिन तामरस जैसे ॥

दो० । उत्तर न आवत प्रेमबस गहे चरन शकुलाइ ।  
 नाथ दास मैं स्वामि तुम तजऊ तो कहा बसाइ । ७० ॥

चौ० । दोन्ह मोहि मिख नोकि गुसाई । लागत अगम अपनि कदराई ॥  
 मरवर धीर धर्मधराधारी । निगम नोति के ते अधिकारी ॥  
 मैं भिस प्रभु सनेह प्रतिगला । मंदगमह कि लेह मराला ॥  
 गुरु पितु मातु न जानौ काह । कहा सुभाव नाथ पतियाह ॥  
 जहं लगि जगत सनेह सगाई । प्रीति प्रतीति नोति निपुनाई ॥  
 मोर भवे एक तुम स्वामी । दीनबंध उर अंतरजामी ॥  
 धर्म नोति उपदेशिय ताही । कोरति भूति सुगति प्रिय जाही ॥  
 मग कम बवन चरनरत होई । लपासिंध परिहरिय कि रोई ॥

ते० । कहनाविंधु सुबंधु के सुनि मनु बचन विनीत ।  
समुझाये डर कार प्रभु जानि सनेह अभीत । ०१ ॥

ते० । मांगत बिदा मातु वन जाई । आवत बेनि बसत वन भाई ॥  
मुदित भये सुनि रघुबरबानी । भयेत काभ बहू मिटो गलानी ॥  
हरवितहरव मातु पद पाये । मनजं चंध फिरि सोचन पाये ॥  
जाइ अननियन नायेत माया । मन रघुनंदन जानकि बाया ॥  
पूछेउ मातु मखिनमन देखी । लखन कहेत सब कथा विदेही ॥  
गई सहमि सुनि बचन कठोरा । मृगी देखि जनु ईन चहुं चोरा ॥  
लखन लखेउ भा अनरघु आजू । इन सनेहवस करन चकाजू ॥  
मांगत बिदा समथ सकुचाहीं । जान संग विधि कहिहि कि नाही ॥

ते० । समुझि सुमिया रामविषयसुखीसुभास ।  
नृपसनेह लखि धुनेत बिर पापिनि कीन्ह कुदास । ०२ ॥

ते० । धीरज धरेत लुचवसर जानी । वधज मुहद बोली मनु बानी ॥  
तात तुम्हारि मातु बेदेही । पिता राम सब भांति सनेही ॥  
अवध तहां जइ रामनिवास । तहां दिवस जइ भानुप्रकाश ॥  
जोपै सोय रामवन जाहीं । अवध तुम्हार काज कहू नाही ॥  
गुह पितु मातु बंधु सुर भाई । सेइय सकल प्राण की नाई ॥  
राम प्राणप्रिय जीवन जो के । स्वारथरहित सखा सबही के ॥  
पूजनीय प्रिय परम जहांते । मानिय सबहि राम के नाते ॥  
अस जिय जानि संग वन जाइ । लेउ तात जग जीवनसाइ ॥

ते० । भरिभागभाजन भयेज मोहि समेत बलि जांउ ।  
जौ तुम्हार मन छाड़ि छल कीन्ह रामपद ठांउ । ०३ ॥

ते० । पचवती युवती जग धोई । रघुबरभक्त जाय सुत होई ॥  
नतह बांझ भलि वादि बियानी । रामविमल सुत ते हितहानी ॥  
तुम्हरेहि भाग राम वन जाहीं । दूसर हेतु तात कहू नाही ॥  
सकल मुकत कर फल सुत येइ । रामसीयपद सहज सनेइ ॥  
राग रोष हरषा मद मोइ । जनि सपनेउ इन के बस होइ ॥  
सकल प्रकार बिकार बिहारी । मन कम बचन करेउ सेवकारी ॥  
तुम कहैं वन सब भांति सुपाइ । संग पितु मातु राम विष जाइ ॥  
जहि न राम वन लखहि कखेसु । सुत सोइ करेउ रहै उपदेसु ॥

क० । उपदेस यह जेहि तात तुम्ह ते राम विष सुख पावहीं ।  
पितु मातु प्रिय परिवार पुरसुख सुरति वन बिसरावहीं ॥  
तुलसी सुतहि सिख देह आयसु देह पुनि आसिष दई ।  
रति होइ अविरल अमल मिथरघुबीरपद जित जित गई । ॥



सो० । मातुचरन सिर नाद लपन चले संकितहिसे ।  
बागु विषम तुराद मनहुं भाग मृग भागवस । ३ ॥

सौ० । गये लपन जई जानकिनाथा । भये मन मुदित पाद प्रिय साथा ॥  
बंदि रामचियचरन सुहाये । चले संग नृपमंदिर आये ॥  
कहहि परस्पर पुरनरमारी । भलि बनाइ विधि बात बिगारी ॥  
तनु हस मन दुख बदन मझोना । विकल मनहुं माखी मधु कीना ॥  
कर मीं जहि सिर धुन पछिताहीं । जनु बिनु पंख विभंग अकुलाहीं ॥  
भइ बड़ि भीर भूपदरबारा । बरनि न जइ विषाद अपारा ॥  
मचिव उठाइ राउ बैठारे । कहि प्रिय बचन राम पगु भारे ॥  
धिय समेत दौ तनय निहारी । व्याकुल भये भूमिपति भारी ॥

दो० । सोय महित सुत मुभग दोउ देखि देखि अकुलाद ।  
बारहि बार सनेहबस राउ लिये उर लाद । ७४ ॥

सौ० । सके न बोलि बिकल नरनाह । सोकबिबस उर दाहन दाह ॥  
नाइ सोम पद अति अनुरागा । उठि रघुनाथ बिदा तब मांगा ॥  
पितु अशोक आयमु मोहि दीजे । हर्षसमय बिस्मय कत कीजे ॥  
तात किये प्रिय प्रेमप्रमाद । अस जग जाइ होइ अपवाद ॥  
मुनि सनेहबस उठि नरनाह । बैठारे रघुपति गहि बाह ॥  
मुनहुं तात तुम कहं मुनि कहहीं । राम चराचरनाथक अहहीं ॥  
सुभ अह असुभ कर्म अनुहारी । ईस देइ फल हृदय बिचारी ॥  
करै जा कर्म पाव फल सोई । निगम नीति अस कह सब कोई ॥

दो० । और करै अपराध कोइ और पाव फलभोग ।  
अति बिचित्र भगवंतगति को जग जानै योग । ७५ ॥

सौ० । राउ राम राखन हितलागी । बज्रत उपाय कीन्ह कल त्यागी ॥  
लखेउ रामहस रहत न जाने । धर्मधुरन्धर धीर सयाने ॥  
तब नृप सोय लाइ उर कीनी । अति हित बज्रत भांति सिख दीनी ॥  
कहि बन के दुख दुख सुनाये । सासुसुरपितुसुख समुझाये ॥  
सियमन रामचरन अनुरागा । घर न सुगम बन अगम न लागा ॥  
औरौ सबहि सोय समझाई । कहि कहि बिपिनिबिपतिअधिकारै ॥  
सचिवनारि मुहनारि सयानी । सहित सनेह कहहि मृदु बानी ॥  
तुम कहं तौ न होइ बनबास । करहुं जा कहहि सपुर गुरु सास ॥

दो० । सिख सीतल हित मधुर मृदु सुनि सीतहि न सुहानि ।  
उरदचंदचांदनी लगत अनु चकई अकुलानि । ७६ ॥

सौ० । सोय सकुसबस उतर न होई । सो सुनि तमकि उठी कैकई ॥  
मनिपट भवभुजान आनी । आगे धरि बोखी मृदु बानी ॥

नृपहि प्राणप्रिय तुम रघुवीरा । सीस बनेह न झाड़हि भीरा ॥  
 सुलत सुयम परलोक नखाऊ । तुमहि जा न बन कहहि न राज ॥  
 अम बिचारि सोद करौ जु भावा । राम जननिमिख सुनि मुख पावा ॥  
 भूपहि बचन बान सम लागे । करहि न प्राण पवान अभागे ॥  
 सोकबिकल मूर्छित नरनाह । काह करिय कहु सुझ न काह ॥  
 राम तुरत मुनिभेष बनाई । सीसे जनक जननी बिर नाई ॥

दो० । सजि बनसाज समाज सब बलिता बंधु समेत ।  
 बंदि बिप्रमहचरन प्रभु चले करि सबहि चचेत । ७७ ॥

चौ० । निकसि बसिष्टदार भये ठाढ़े । देखे सोम बिरहदवडाढ़े ॥  
 कहि प्रिय बचन सबहि समझाये । बिप्रहृन्द रघुवीर बुझाये ॥  
 गुन सन कहि बरषासन दोन्हे । आदर दान विनय बज्र कोन्हे ॥  
 याचक दान मान सन्तोषे । मोत पनौत प्रेम परिपोषे ॥  
 दासी दास बुलाइ बहोरी । गुहहि सौं पि बंसे कर जोरी ॥  
 सब कर मार संभार गुमाई । करव जनक जननी की नाई ॥  
 बारहिबार जोरि युग पामो । कहत राम सब सन मृदु बानो ॥  
 सोद सब भांति मोर हितकारी । अहि ते रह नरनाह मुखारी ॥

दो० । मातु सकल मोरे बिरह जेहि न होहि दुखदोन ।  
 सो उपाय तुम करब सक पुरजन परम प्रबोन । ७८ ॥

चौ० । दहि बिधि राम सबहि समझावा । गुहपदपेश हरवि बिर नावा ॥  
 गनपति गौरि गिरीस मनाई । चले अयोध पाद रघुराई ॥  
 राम चलत अति भयेउ बिषादू । सुनि न जाह पर चारत नादू ॥  
 कुसुगन संक अवध अति थोकू । हर्षबिषादबिषय सुरलोकू ॥  
 मै मूर्खा तब भूपति जागे । बोकि सुमंत कहन अस लागे ॥  
 राम चले बन प्राण न जाहो । कहि मुख लागि रहत तनु माहो ॥  
 दहि ते कबनि क्या बलवाना । जो दुख पाद तजहि तनु प्राना ॥  
 पुनि धरि धोर कहहि नरनाह । सै रय बंग सखा तुम जाह ॥

दो० । सुठि सुकुमार कुमार दोउ जनकसुता सुकुमारि ।  
 रय चढ़ाह दिखराह बन फिरैऊ गये दिनचारि । ७९ ॥

चौ० । जौ नहिं फिरहिं धोर हो भाई । सत्यबिंधु दृढवत रघुराई ॥  
 तौ तुम विनय करेउ कर जोरी । फेरिय प्रभु मिथिलेयकियोरी ॥  
 जब सिख जानन देखि डेराई । कहेऊ मोरि बिख अघसर पाई ॥  
 बान ससुर अस कहेउ बदेख । पुनि फिरिय बन बज्रत कलेश ॥  
 पितृव्यह कबहुं कबहुं ससुराती । रहेऊ नशो दधि होइ तुम्हारी ॥  
 दहि बिधि करेऊ उपायकदवा । फिरत तो सोद प्राणअवधवा ॥

लै रघुनाथहिं ठाम बतावा । कहेउ राम सब भांति सुहावा ॥  
 पूरजन करि जहार मृदु आये । रघुवर संख्या करन सिधाये ॥  
 गुरु संवारि सायरी बजाई । कुस किलसल मृदु परम सुहाई ॥  
 सुचि फल मूल मधुर मृदु जानी । दोना भरि भरि राखेसि आनी ॥

दो० । मिय सुमंत भ्राता सहित कन्द मूल फल खाइ ।  
 सयन कीन्ह रघुवंसमनि पाय पल्लो टट भाइ । ८० ॥

चौ० । लठे लखन प्रभु सोवत जानी । कहि सचिवहिं सोवन मृदु बानी ॥  
 ककुब दूरि सजि बान सरासन । जागन सगे बैठि बोरामन ॥  
 गुरु बुलाइ परुहा प्रतोती । ठांव ठांव राखे अति प्रीती ॥  
 आपु लखन पद बैठेउ जाई । कटि भाथा खर चाप चढ़ाई ॥  
 सोवत प्रभुहि निहारि निपादा । भयेउ प्रेमवस हृदय बिषादा ॥  
 तनु पुलकित लोचन जल बहई । बचन सप्रेम लखन सन कहई ॥  
 भूपतिभवन सुसहज सुहावा । सुरपति सदन न पटतर पावा ॥  
 मनिमय रचित चारु चौवारे । जुनु रतिपति निज हाथ संवारे ॥

दो० । सुचि सुबिचित्र सुभोगमय सुमन सुगंध सुवास ।  
 पलंग मंजु मनि दीप जहं सब बिधि सकल सुपास । ८१ ॥

चौ० । विविध वसन उपधान तुराई । कीर फेन मृदु बिसद सुहाई ॥  
 तहं मिय राम सयन निसि करहीं । निज कृषि रति मनोजमद हरहीं ॥  
 ते मिय राम सायरी सोये । समित वसन बिन नाहि न जोये ॥  
 मातु पिता परिजन परबासी । सखा सुधील दास अरु दामी ॥  
 जगवहिं जिनहिं प्राण की नाई । महि सोवत सो राम गुमाई ॥  
 पिता जनक जग बिदित प्रभाज । समुर सुरेश सखा रघुराज ॥  
 रामचन्द्र पति सो बैदेहो । महि सोवति विधि बामन केही ॥  
 मिय रघुवीर कि कानन योगू । कर्म प्रधान सत्य कह लोग ॥

दो० । केकयनन्दिनि मंदमति कठिन कुटिलपन कीन्ह ।  
 जेहि रघुनंदन जानकिहि सुखअवसर दुख दीन्ह । ८२ ॥

चौ० । भर दिनकरकुलबिटपकुठारो । कुमति कीन्ह सब बिस दुखारो ॥  
 रामभोयमहिअवन निहाइ । भयेउ बिषाद निषादहि भारी ॥  
 बोले लखन मधुर मृदु बानी । ज्ञानविरागभक्तिरसधानी ॥  
 कोउ न काज दुख सुख कर दाता । निजकृतकर्मभोग सब भ्राता ॥  
 योग बियोग भोग भक्ष मंदा । हित अनहित मध्यम अमफंदा ॥  
 जनम मरन जहं लजि जग जालू । संपति बिषति कर्म अरु कालू ॥  
 धरनि धाम धन पूर परिवाहू । मं नरक जहं लजि आवहाहू ॥  
 देखिय सुनिष गुनिष मन माहीं । मोहमूल परमारथ नाहीं ॥

दो० । सपने होइ भिखारि नृप रंक नाकपति होइ ।  
जागे लाभ न हानि कहूँ तिमि प्रपंच जिय होइ । ८० ॥

चौ० । अस बिचारि नहिं दीजिय रोषू । यदि काहु नहिं दीजिय रोषू ॥  
मोहनिया सब सोबनिहारा । देखहिं लग्न अनेक प्रकारा ॥  
दहि जगयामिनि जानहिं सोनी । परमारथ परिपंचबिकोनी ॥  
जानिय तबहिं जीव जग आगा । अब सब दिवस बिखास बिरागा ॥  
होइ विवेक मोक्ष भ्रम भागा । तब रघुशेखरस अगुरागा ॥  
सखा परम परमारथ एऊ । मन क्रम बचन रामपद नेऊ ॥  
राम मनु परमारथरूपा । चबिगति अलख अनादि अनया ॥  
सकल बिकाररहित मतभेदा । कहि निति नेति निरुपाहिं वैदा ॥

दो० । भक्त भूमि भ्रसुर सुरभि सुर हित लागि लपासू ।  
करत चरित धरि मनुजतनु मुनत मिटै गजमासू । ८१ ॥

चौ० । सखा समुझि अस परिहनि मोह । सियरघुशेखरचरन रत होह ॥  
कहत रामगुन भा भिनुमारा । जागे जग मंगलदातारा ॥  
सकल बौच करि राम अन्हाये । सुखि सुमान बटकीर मंगाये ॥  
अनुज सहित मिर जटा बनाये । देखि सुमंत नयन जल काये ॥  
हृदय दाह अति बदन मलीना । कह कर ओरि बचन अति दीना ॥  
नाथ कहैउ अस कोसलनाथा । सै रथ जाऊ राम के साथे ॥  
बन दिखाइ सुरसरि अन्धवाई । आनेऊं बेगि फेरि द्वौ भारे ॥  
छयन राम धिय आनेऊं फेरी । संभय सकल सकोच निबेरी ॥

दो० । नृप अस कहैउ गुसाईं जम कहिय करौं बलि सोइ ।  
करि बिनती पावन परेउ दीन बास जमि रोइ । ८२ ॥

चौ० । तात लपा करि कीजिय सोई । जा तें अवध अनाथ न होई ॥  
मंजिहि राम उठाइ प्रबौधा । तात धर्ममगु तुम सब बोधा ॥  
मिवि दधौषि हरिचन्द नरेया । महे धर्म हित कोटि कलेशा ॥  
रंतिदेव बलि भूप सुजाना । धर्म धरेऊ यहि भकट नामा ॥  
धर्म न दूषर सत्य समाना । आगम निगम पुरान बखाना ॥  
मैं सोइ धर्म सुलभ करि पावा । तजे मो तिऊं पुर अपसव कावा ॥  
संभावित कहं अपयसलाह । मरनकोटि सम दाहन दाह ॥  
तुम सन तात बडत का कहऊं । दिये उतंर फिरि पातक लहऊं ॥

दो० । पितृपद यहि कहि कोटि बिधि बिनय करब कर जोरि ।  
चिन्ता कबनिऊ बात की तात करिय जानि मोरि । ८३ ॥

चौ० । तुम पुनि पितृ समान हित मोरे । बिनती करौं तात क्रूर मोरे ॥  
सब बिधि सोइ करतस्य तजारे । देख न पाव नृप बोध हमारे ॥

सुनि रघुनाथसचिवसंबादू । भयेउ सपरिजन विकल निषादू ॥  
 पुनि कहु लखन कहैउ कटु बानी । प्रभु बरजेउ बड़ अनुचित जानी ॥  
 सकुचि राम निज सपथ दिवाई । लखन मंदेह कहव जनि जाई ॥  
 कह सुमंत पुनि भूपसंदेस । सहि न सकिहि मिथ बिपिनकलेस ॥  
 जेहि बिधि अवध आव फिरि सीया । सोइ रघुनाथ तुमहि करनीया ॥  
 नतह निपट अवलंबविहीना । मै न जियब जिमि जल बिनु मोना ॥

दो० । मै के ससुरे सकल सुख जवहिं जहां मग मान ।

तब तहं रहब मुखेन सिय जव लगि बिपतिबिहान । ८४ ॥

चो० । बिनतो कोन्ह भूप जेहि भांती । आरति प्रीति न सो कहि जाती ॥

पितुमंदेस सुनि कृपानिधाना । सियहि दोन्ह सिख कोटि बिधाना ॥  
 मासु ससुर गच्छ प्रिय परिवार । फिरिऊ तो सब कर मिटै गुरार ॥  
 सुनि पतिवचन कहति बैदेही । मनहु प्रानपति परम सनेही ॥  
 प्रभु कहुणा मय परम बिवेकी । तनु तजि कांहर रहति किमि केकी ॥  
 प्रभा जाइ कह भानु बिहाई । कह चंद्रका चंद्र तजि जाई ॥  
 पतिहि प्रेममय बिनय मुनाई । कहति सचिव मन गिरा सुहाई ॥  
 तुम पितु ससुर सरिस हितकारी । उतर देउं फिरि अनुचित भारी ॥

दो० । आरतवस सखसुख भइउं बिलग न मानब तात ।

आरजसुतपदकमल बिनु वादि जहां लग नात । ८५ ॥

चो० । पितबैभवविलास मै दोठा । नृपमनिमुकुट मिश्रत पदपीठा ॥  
 सुखनिधानअस पितु गृह मोरे । पतिबिहीन मन भावन भोरे ॥  
 ससुर चक्रवर्त्य कोमलराज । भुवनचारदस प्रगट प्रभाज ॥  
 आगे होइ जेहि सरपति लेई । अर्द्धसिंहासन आसन देई ॥  
 ससुर एतादृस अवधनिवास । प्रिय परिवार मातु सम सास ॥  
 बिन रघुपतिपदपदमपरागा । मोहि कोउ सपनेहुं सुखद न लाग ॥  
 अगम पथ बन भूमि पहारा । करि केहरि सर सरित अपारा ॥  
 कोल किरात कुरंग बिहंगा । मोहि सब सुखद प्राणपति संग ॥

दो० । सासु ससुर सन मोरिऊति विनय करब परि पाय ।

मोरे सोच कनि करिय कहु मै बन सुखी सुभाय । ८६ ॥

चो० । प्राननाथ प्रिय देखर साधा । वीर धृतीनधरे धनु भाधा ॥  
 नहिं मनु कम अम दुख मन मोरे । मोहि कृगि सोच करिय जनि भोरे ॥  
 सनु सुमंत बिधबोतलबानी । भये विकल अनु कनि मनिहानी ॥  
 नयन न सुख सुनै नहिं काना । कहि न सकै कहु अति ककुलाना ॥  
 राम प्रबोध कोन्ह बड भांती । तदपि होइ नहिं बोतल जानी ॥  
 सतन सनेक साध पित कोन्हा । उचित उतर रघुनंदन दीन्हा ॥

मेति जार नहिं रामरजार् । कठिन कमंगति कहु न बषाई ॥  
रामनवनमियपद मिर जाई । फिर बनि क जिम मूर गंवाई ॥

दो० । रथ हांके हय रामतन हेरि हेरि हिरिनाहिं ।

देखि निषाद बिषादवस मिर धुनि धुनि पड़िताहिं । ८० ॥

चौ० । जासु बियोग विकलपसु ऐसे । प्रजा मातु पितु जीवहिं कैसे ॥

वरवस राम समंत पठाये । सुरसरितोर आपु बलि आवे ॥

मांगी नाव न केवट आना । कहै तुम्हार मरम मै जाना ॥

चरनकमलरज कहं सब कहई । मानुषकरनि मृगि कहु चहई ॥

कुचतु रिला भद्र नारि सुहाई । पाहन तेन काठकठि जाई ॥

तरनिउ मुनिचरणो होइ जाई । बाटपर मोरि नाव उड़ाई ॥

यह प्रतिप लै सब परिवार । नहिं जानौ कहु और कबार ॥

जौ प्रभु अवसि पार गा चहइ । तौ पदपदम पखारन कहइ ॥

हं० । पदपद्म धोइ चढ़ाई नाव न नाथ उतराई चहौं ।

मोहि राम राउरि आनि दसरथमपथ सब सांसी कहौं ॥

बरु तोर मारहिं लखन पै जब लगि न पांव पखारिहौं ।

तौ लगि न तुलसीदास नाथ लपलु पार उतारिहौं । ४ ॥

मो० । मुनि केवट क बैन प्रेमलपेटे अटपटे ।

बिहमे कहनाऐन चितै जानकौलखन तन । ४ ॥

चौ० । लपमिंधु बोले ममुकाई । भोद करहु जहि नाव न जाई ॥

बेगि आनि जल पांव पखाक । होत बिलंब उतारहु पाक ॥

जासु नाम मुमिरत एक वारा । उतरहिं नर भव मिधु अपारा ॥

सो कृपालु केवटहि निहोरा । जं किये अग तिहु पगहु ते घोरा ॥

पदनख निरखि देवसरि हरषी । मुनि प्रभुवचन मोहमति करषी ॥

केवट रामरजःयसु पावा । पानि कठवताभरि लै आवी ॥

अति आनंद उमगि अनुरागा । चरन सरोज पखारन लागा ॥

वरषि मुमन मर सकल मिहःहौं । दहि सम पन्यपद्म कोउ नाहौं ॥

दो० । पद पखारि जल पान करि आपु सहित परिवार ।

पितर पार करि प्रभुहि पुनि मुदित गयेउ लै पार । ८८ ॥

चौ० । उतरि ठाठ भये सुरसरिरंता । सीय राम गह लखन ममेता ॥

केवट उतरि दंडवत कोन्हा । प्रभु मरुचे दहि कहु नहिं दीन्हा ॥

पियहिय को भिष जाननहारो । मनिमुंदरी मन मुदित उतारो ॥

करेउ कृपालु लोउ उतराई । केवट चरन गयेउ अकुलाई ॥

नाथ आज हम काह न पावा । मिटे दोष दुख दारिदेदावा ॥

अमित काह मै कोन्हा मजरी । आज दोन्हा बिधि सब भरिपूरी ॥

अब कहूँ नाथ न चाहिय मोरे । दीनदयाल अनुपम तोरे ॥  
 फिरति बार जो कहूँ मोहि देवा । सो प्रसाद म सिर धरि सेवा ॥  
 दो० । ब्रजत कीन्ह हठ लखन प्रभु नहिं कहूँ केवळ सोई ।  
 बिदा कीन्ह कहनायतन भक्ति विमल, बर देई । ८८ ॥

सौ० । तब मञ्जन करि रघुकुलनाथा । पुनि पारधी नाथस माथा ॥  
 सिय सुरसरिहि कहा कर जोरी । मातु मगोरथ पुरइव मोरी ॥  
 पति देवर संग कुसल बहोरी । आइ करौँ जहि पूजा तोरी ॥  
 सुनि सियविनय प्रेमरसमानी । भइ तब विमल बारि बर वागी ॥  
 सुन रघुबीरप्रिया बैदेही । तब प्रभाव अग विदित न केही ॥  
 लोकर्य होहिं बिलोकत तोरे । तोहि सेवहिं सब सिधि कर जोरे ॥  
 तुम जो हमहिं बड़ि विनय सुनाई । छपा कीन्ह मोहि दोन्ह बड़ाई ॥  
 तदपि देवि मैं देख अमोघा । सुफल होन हित निज बागीसा ॥

दो० । प्राननाथ देवर सहित कुसल कोसला आइ ।  
 पूरिहि सब मनकामना सुजस रहिहि जग छाई । १०० ॥

सौ० । गंगबचन सुनि मंगलमुखा । मुदित भोय सुरसरि अलकूखा ॥  
 तब प्रभु गुहहि कहा घर जाऊ । सुनत सुख मुख भा उर दाऊ ॥  
 दीन बचन गुह कह कर जोरी । विनय सुनिथ रघुकुलमनि मोरी ॥  
 नाथ माथ रहि थ दिखारै । करि दिन चागि चरनमेवकाई ॥  
 जहि बज आइ रहव रघुराई । पर्नकटौ मै करब सुहाई ॥  
 तब मो कहूँ जस देव रजाई । सो करिहीं रघुबीरदुहाई ॥  
 मरज सनेह राम लखि तासु । मंग लोन्ह गुह हृदयकुलासु ॥  
 पुनि गुह जाति बोलि सब लोन्हा । करि परितोष बिदा तब कीन्हा ॥

दो० । तब गनपति सिय सुमिरि प्रभु नाइ सुरसरिहि माथ ।  
 सखा अनुज सिय सहित बज गवन कीन्ह रघुनाथ । १०१ ॥

सौ० । तेहि दिन भयेउ बिटप तर बामू । लखन सखा सब कीन्ह सुनासू ॥  
 प्रात प्रातकृत करि रघुराई । तीरथराज दीख प्रभु जाई ॥  
 शशिव सत्य सद्धा प्रिय नारी । माधव सरिस भीत हितकारी ॥  
 चारि पदारथ भरा भंडारू । पुन्यप्रदेस देस अति चारू ॥  
 क्लेश अगम गड़ गाड़ सुहावा । सपनेउ जिन्ह प्रतिपक्ष न पावा ॥  
 भन सकल तीरथ बर बीरा । कलुष अनीकदखन रनधीरा ॥  
 संगम सिंहासन सुठि सोहा । कृष अकृषवट मुनिमन मोहा ॥  
 चवर यमुनजल गगतर्गा । देखि होहिं दुखदारीदभंगा ॥

दो० । सेवहिं सुकली साधु सुचि पावहिं सब मनकाम ।  
 बंदी वेद पुरानमन कहहिं विमल गनयाम । १०२ ॥

चौ० । को कहि सबै प्रयागप्रभाऊ । कलसपुष्पकुञ्जरसुमराऊ ॥  
 अब तोरयपति देखि सुहावा । सुखसागर रघुवर सुख पावा ॥  
 कहि सिय अगुजहिं सबहिं सुनाई । सोमुख तोरधराजबड़ाई ॥  
 करि प्रनाम देखत बनबागा । कहत महातम अति अनुरागा ॥  
 रहि विधि आर बिसोकोउ बेनी । मुमिरत सकलसुमंगलदेनी ॥  
 मुदित अन्हार कीन्ह सिवसेवा । पजि यथाविधि तोरयदेवा ॥  
 तब प्रभु भरदाज पद आये । करत इउवत मुनि कर लाये ॥  
 मुनिमन मोद न कहू कहि आई । ब्रह्मानंदरास जनु पाई ॥

दो० । दोन्ह अघोष मगोष उर अति अनंद अम जानि ।  
 सोचनगोचर सुकृतफल मनउ किये विधि आनि । १०३ ॥

चौ० । कुसलप्रख करि आसन दोन्हा । पुजि प्रेम परिपूरन कीन्हा ॥  
 कंद मूल फल अंकर लोके । दिये आनि मुनि मनउ अमी के ॥  
 सोय लखन जन सहित मुहाये । अति रुचि राम मूल फल खाये ॥  
 भये विगतस्त्रम राम मुखारे । भरदाज मृदु बचन उपारे ॥  
 आजु मुफल तप तोरय जागू । आजु मुफल जप योग बिरागू ॥  
 मुफल सकल सुभ साधनसाजु । राम तुमहिं अबलोकत आजु ॥  
 लाभअवधि मुखअवधि न दूनी । तुम्हरे दरस आस सब पूनी ॥  
 अब करि लूपा देऊ बर एछ । निज पदसरसिज सहज सनेछ ॥

दो० । कर्म बचन मन छाड़ि कुल जब लगि जन न तुम्हारे ।  
 तब लगि मुख सपनेऊ नहीं किये कोटि उपचार । १०४ ॥

चौ० । मुनि मुनिबचन राम सकुचाने । भाव भक्ति आनंद अधाने ॥  
 तब रघुवर मुनिसुजस सुहावा । कोटि भांति कहि सबहिं सुनावा ॥  
 सो बड़ सो सबगुनगनगेछ । जहिं मगोष तुम आदर देख ॥  
 मुनि रघुवीर परस्पर नवहीं । बचन अगोचर सुख अनुभवहीं ॥  
 यह मुधि पाइ प्रयागनिवासी । बटु तापस मुनि सिद्ध उदासी ॥  
 भरदाजआस्त्रम सब आये । देखन दमरथमुवन मुहाये ॥  
 राम प्रनाम कीन्ह सब काछ । मुदित भये सहि कोचनकाछ ॥  
 देखिं अघोष परम मुख पाई । फिर मराहत भुंदरताई ॥

दो० । राम कीन्ह बिसाम निमि प्रात प्रयाग अन्हार ।  
 चले सहित सिय लखन जन मुदित मुनिहिं सिर नार । १०५ ॥

चौ० । राम सप्रेम कहेउ मुनि पाहीं । नाथ कहिय हम कहि मनु आहीं ॥  
 मुनि मुनि विहसि राम मन कहहीं । मृगम सकल मग तुम कह अबहीं ॥  
 साथ लागि मुनि सिध्य बलाये । मुनि मनमुदित पचप्रक आये ॥  
 सबहिं रामपद प्रेम अपारा । सबहिं कहहिं मनु दोख हमारा ॥



मनि बटु चारि संग तब दोन्हें । जिन्ह बड्ड जन्म सुकत बड्ड कीन्हें ॥  
 करि प्रनाम मनिआयस पाई । प्रमुदितहृदय चले रघुराई ॥  
 याम निकट जब निमरहि जाई । देखिहि दरस नारि नर भाई ॥  
 होहि मनाथ जन्मफल पाई । फिरहि दुहित मन संग पठाई ॥

दो० । विदा कोन्ह बटु विनय करि फिरे पाई मनवा ॥  
 उतरि अन्हाने यमनजल जो सरीर समझा ॥ १०६ ॥

सौ० । मनुत तोरबासी मर नारी । धाये निज निज काज बिमारी ॥  
 नयनराममियमुंटाताई । देखि करहि निज भाग्यबड़ाई ॥  
 अति लालसा मरहि मन माहीं । नांव गांव पूकत मकुचाहीं ॥  
 जेतिन महं बयलहुदु मयाने । तिन्ह करि युक्ति राम पहिचाने ॥  
 सकल कथा कहि तिनहि सुनाई । बनहि चले पितृआयसु पाई ॥  
 मनि सविषाद सकल पकिताहीं । रानो राय कोन्ह भल माहीं ॥  
 रामलवणमियरूप निहारो । सोचसनेहबिकल नर नारी ॥  
 ते पितु मातु कहो सखि कैसे । जिन पठये बन बालक ऐसे ॥

दो० । तब रघुरीर अनेक बिधि सखहि दिखावन दोन्ह ।  
 रामरआयमु सोस धरि गवन भवन तिन्ह कीन्ह । १०७ ॥

सौ० । पुनि मिय राम लवण कर जोरो । यमनहिं कीन्ह प्रनाम बहोरौ ॥  
 गवने सोय सहित दौ भाई । रवितनया करि करत बड़ाई ॥  
 पथि न अनेक मिलहि मगु जाता । कहाहि सप्रेम देखि दौ भाता ॥  
 राजलक्ष्मण सब अंग तुम्हारे । देखि सोच हिय होत हमारे ॥  
 मारग चलहु पयादेहि पाखे । जोतिष झूठ हमारे भाये ॥  
 अगम पंथ गिरि कानन भारो । तेहि मंह सोय नारि मुकुमारी ॥  
 करि कहारि बन जाहि न जोई । हम संग चलहिं जो आयसु होई ॥  
 जाव जहाँ लगि तहं पड़वाई । फिरव बहोरि तुमहिं खिर नाई ॥

दो० । रहि बिधि बूझहिं प्रेमबस पुलकगात जल नैन ।  
 कृपासिंधु फेरहिं तिनहिं करि विनती खुदु बैन । १०८ ॥

सौ० । जे पुर याम बसहिं मगु माहीं । तिनहिं नागसुरनगर सिंहाहीं ॥  
 कहि मुकूतो केहि चरा बसाये । धन्य पुन्यमय परम मुहाये ॥  
 अहं अहं रामचरण चलि जाहीं । तेहि ममान अमरावति नाहीं ॥  
 पुन्यपुत्र मगुनिकटनिबासी । तिनहिं सराहहिं सरपुरबासी ॥  
 जो भरि नयन बिलोकिहिं रामहिं । सोता लवण सहित घनस्यामहिं ॥  
 जेहि सर सरित राम अवगाहहिं । तिनहिं देवसरसरित सराहहिं ॥  
 जेहि तह तर प्रथ बैठहिं जाई । करहिं कल्पतह तामु बड़ाई ॥  
 परसि रामपदपद्मपरागा । मानति भूमि भूरि निज भागा ॥

दो० । काँह करहिं घन बिबुधगन बरघहिं सुमन सिद्धहिं ।  
देखत गिरि बन बिहग मृग राम चलै मनु जाहिं । १०८ ॥

चौ० । भीतः लखन सहित घुराई । गाँव निकट जब निरहरिं आई ॥  
सुनि सब बाज हड़ नर नारी । चलहिं तुरत मृगकाज बिहारी ॥  
रामलखनसिधकप निहारी । पाइ नखनफल होहिं मझारी ॥  
सजल नयन अति पलक सरोरा । सब भये मगन देखि हौं बोरा ॥  
वरनि न जाइ दसा तिन्ह केरी । लहौ रंक जनु सरमनिहोरी ॥  
एकहिं एक बोलि सिख देखीं । जोवनलाल जेजु कन एहीं ॥  
रामहिं देखि एक अनुरागे । चितवत चलै जात बंग लागे ॥  
एक नयनमगु कवि उर आनी । होहिं मिथिल तैनु मानव बानी ॥

दो० । एक देखि बटकाँह भलि डायि मृदुल टन पात ।  
कहहिं गंवारच कनक लस गवनव अबरहिं कि प्रात । ११० ॥

चौ० । एक कलस भरि आनहिं पानो । अंचदय नाथ कहहिं मृदु बानो ॥  
सुनि प्रिय बचन प्रीति अति देखी । राम कृपालु मसोल बिसेखी ॥  
आनी सोय समित मन माहीं । घरिक बिलब कीन्ह बटकाहीं ॥  
मृदित नारि नर देखहिं सोभा । रूप अनूप देखि मन सोभा ॥  
एकटक सब सोहहिं चहुं ओरा । राम चंद्र मुख चंद्र चकोरा ॥  
तनुनतमानवरन तनु मोहा । देखत कामकोटि मन मोहा ॥  
दामिनिवरन लखन मूठि नोके । नख सिख मंगल भावते नो के ॥  
मुनिपट कटिग कसे ठुनोरा । सोहत करकमलन्ह धनु तीरा ॥

दो० । जटा मुकुट सोखन सुभन उर भुज नयन बिबाध ।  
बरदपर्वबिधुबदन बर लसत दकनजाध । १११ ॥

चौ० । बरनि न जाइ मनोहर जोरी । सोभा अमित मोरि मति थोरी ॥  
रामलखनसिधमहरताई । सब चितवहिं मति मन चित लाई ॥  
थके नारि नर प्रेमपियासे । मनहुं मृगो मृग देखि दिखासे ॥  
सोय समोप पामतिय जाहीं । पकृत अति सनेह सकुचाहीं ॥  
बार बार सब लामहिं पाये । कहहिं बचन मृदु सरल मझाये ॥  
राजकुमारि विनय हम करहीं । तिथमभाव कहु पकृत हरहीं ॥  
स्वामिनि अविनय हमब हमारी । बिलगुन मानव जानि गंवारी ॥  
राजकुवर हौं सहज सखीने । इन ते लेखि दुति मरकत सोने ॥

दो० । खामल गौर किबोर बर सुंदर सुखमाहिन ।  
बरदपर्वरीनाथमुख बरदधरोहरनैन । ११२ ॥

चौ० । कोटिमनोजलजाबनिहारे । सुमखि कहइ कोन्हहिं तुम्हारे ॥  
सुनि सनेहमय मंजुल बानी । सकुचि सोय मन मज मंजुकारी ॥

तिनहिं बिलोकि बिलोकेषु धरनी । दुष्टं सकोच सकुचति वर वरनी ॥  
 सकुचि सप्रेम बालमृगनयनी । बोलो मधुर वचन पिकवचनी ॥  
 सहजसुभाव सुभग तनु गोरे । नाम लषन लघु देवर मोरे ॥  
 स्वामवरन विशालसुजनैना । अति सुंदर मोलत मृदु बैना ॥  
 बहुरि वदन विधु अंचल ठांको । पिय तन चित्ते होइ करि बांकी ॥  
 खंजन मंजु तिरीकन नयनी । निज पति कहै उ तिनहिं भिय सयनी ॥  
 भई मृदित सब यामवधटो । रंकन्ह रतनराशि जन लूटो ॥

दो० । अति सप्रेम सिय पाय परि बहुरि विधि देहिं असीस ।  
 सदा सोहाहिनि रहउ तुम अब लागि महि अहिषीस । ११३ ॥

चौ० । पारवती सम पति प्रिय होइ । देवि न हम पर काइव होइ ॥  
 पुनि पुनि बिनय कहिं कर जोरी । जौ दहि मारग फिरिय बहोरी ॥  
 दरसन देब जानि निज दासी । लखी सीय सब प्रेमपियासी ॥  
 मधुर वचन कहि कहि परितोषी । अनु कुमदिनी कौमुदोपोषी ॥  
 तबहिं लषन रघुवरहस्य जानी । पूछै मग लोगन मृदु बानी ॥  
 मृत नारि नर भये दुखारी । पुलकित अंग बिलोचन बारी ॥  
 मिटा मोद मन भये मसोने । विधि निधि दोन्ह लोन्ह अनु कीने ॥  
 समझि कर्मगति धोरज कीन्हा । सोधि मगम मग तिन्ह कहिदोन्हा ॥ ११४ ॥

दो० । लषन जानको सहित बन गवन कीन्ह रघुनाथ ।  
 फेरे सब प्रिय वचन कहि लिये लाद मन साथ । ११४ ॥

चौ० । फिरत नारि नर अति पद्धिताही । देविहिं दोष देहिं मन माहीं ॥  
 सहित बिबाद परस्पर कहहीं । बिधिकरतव सब उलटै अहहीं ॥  
 निपट निरंकुश निठर निसंकु । जेहिं ससि कीन्ह सहज सकलंकु ॥  
 रुख कल्पतह सागर खारा । तेह पठये बन राजकुमारा ॥  
 जौपै इनहिं दोन्ह बनबासू । कीन्ह दि विधि भोगबिस्वासू ॥  
 ये बिचरहि मग बिन पदचाना । रचे बाहि विधि बाहन नागा ॥  
 ये महि परहिं डासि कुस पाता । सुभन सेज कत कीन्ह विधाता ॥  
 तह तर बास इनहिं विधि दोन्हा । धवस धाम रसि कत सम कीन्हा ॥

दो० । जौ ये मुनिपटधर अटिल सुंदर सठि सुकुमार ।  
 बिबिध भांति भुवन बसन बादि किये करतार । ११५ ॥

चौ० । जौ ये कंद मूल फल खाहीं । बादि मुधादि असन जग माहीं ॥  
 एक कहहिं ये सहज मुहाये । आपु प्रगट भये विधि न बनाये ॥  
 जहं लागि वेद कहै उ विधि करबी । खवन नयन मन गोचर वरनी ॥  
 देखउ खोजि भुवत दसचारी । कहं अस पुरुष कहां अशि नारी ॥  
 इनहिं देखि विधि मन चनरागा । पटतह योग बनावन सागा ॥

कोन्ह बडत सम एक न आवे । तेहि दरवा बन आनि दुराखे ।  
 एक कहहि हम बडत न जानहि । आपुहि परम धन्य करि मानहि ।  
 ते पुनि पुन्यपुख सम लेखे । जे देखहि देखहि जिन्ह देखे ।  
 दो० । इहि विधि कहि कहि बचन प्रिय लेहि नयन भरि नीर ।  
 किमि खलिहै मारग अगम सुठि सुकुमार करीर । ११६ ॥

चौ० । नारिमनेह बिकल सब होहो । चकई साँझमय जिमि सोहो ।  
 मृदु पदकमल कठिन भग जानो । गहवरि हृदय कहहि मरु बाजो ।  
 परमत मृदल चरन अरुनारे । सकुचति मरि जिमि हृदय हमारे ।  
 जौं अगदीम दगहि बन दोन्हा । कस न समनिमय मारग कीन्हा ।  
 जौं मांगे पादय विधि पाहो । राखिय सखि दन्य आखिनमाहो ।  
 जे नर नारि न अवसर आवे । ते बिय राम न देखन पाये ।  
 मुनि मरुप पूछहि अकुलाई । अब लगि गये कहाँ लगि भाई ।  
 समरय धाड़ बिलोकहि आई । प्रमदित फिरहि नयनफल पाई ।

दा० । अबला भलक हृदु जन कर मोजहि पछिताहि ।  
 होहि प्रेमवस लोग हमि राम जहां जहं जाहि । ११७ ॥

चौ० । गांउं गांउं अम होइ अनंद । देखि भानकुलकैरवचंद ।  
 जे ककु समाचार मुनि पावहि । ते तप रातिहि दोष लगावहि ।  
 कहहि एक अति भल नरनाह । दोन्ह हमहिं जिन्ह सोचनलाह ।  
 कहहि परस्पर लोग लगाई । बातें सरल मनेह सुहाई ।  
 ते पितु मातु धन्य जे जाये । धन्य सो नर जहां तें आवे ।  
 धन्य सो सैल देस बन गाऊं । जहं जहं जाहिं धन्य सो ठाऊं ।  
 मुख पायो बिरंचि रचि तेही । जे दन्य के सब भांति मनेही ।  
 रामलघनमियकथा सुहाई । रही सकल मन कामन छाई ।

दो० । इहि विधि रघुकुलकमलरवि भग लोगन मुख देत ।  
 जाहिं चले देखत बिपिन बिय सौमिनि समेत । ११८ ॥

चौ० । आगे राम लघन पुनि पाछे । तापसभेय बिराजत काछे ।  
 उभय मध्य बिय सोहति कैसी । ब्रह्मा जीव बिच माया जैसी ।  
 बडरि कहाँ कवि अस मन बसई । जन मधु मदन मध्य रति लसई ।  
 उपमा बडरि कहाँ जिय जोहो । जन बुध बिधु बिच रोहिनि जोहो ।  
 प्रभुपदरेख बीच बिच बीता । भरहि चरन भगु चकहिं बभौता ।  
 सोचरामपदचक बराये । लघन चकहिं भग दाहिन बाये ।  
 रामलघनबियप्रोति सुहाई । बचन अगोचर किमि कहि जाई ।  
 खन मृग भगन देखि कवि होहो । लिये चोरि चित राम बटोहो ।

दो० । जिम्ह जिम्ह देखे पयिक प्रिय सीय सहित द्यौ भाइ ।  
भवमग अगम अनंद ते बिनु खम रहे सिराइ । ११८ ॥

चौ० । अजहुँ जाम उर सपनेऊ काज । बसहिं राम भिय लखन बटाऊ ॥  
रामधामपथ जाइहि सोई । जो पथ पाव कबहुँ मुनि कोई ॥  
तब रघुबीर खसित भिय जानी । देखि निकट बट सीतल पानी ॥  
तहँ बस कंद मूल फल खाई । प्रात अन्हाइ रघुराई ॥  
देखत बन सर मैत्र मुहाये । बालमोकप्रसन्न प्रभु आये ॥  
राम देखि मुनिवास सहावन । मंदर गिरि कानन जल पावन ॥  
सरनि मरोग बिटय बन फूल । गुञ्जत मंजु मधुप सरभूले ॥  
खग मृग बिपुल कुलाहल करहीं । रहित बैर प्रमदित मन सरहीं ॥

दो० । मुनि सुंदर आत्मन निरखि हरषे राजिवनै ।  
मुनि रघुवर आगमन मुनि आगे आये लैन । १२० ॥

चौ० । मुनि कहं राम दंडवत कीन्दा । आसिरबाद शिप्रवर दीन्दा ॥  
देखि रामकवि नयन जड़ाने । करि सनमान आसमहिं आने ॥  
तब मुनि आसन दिये मुहाये । मुनिवर अतिथि प्रानप्रिय पाये ॥  
कन्द मूल फल मधुर मंगाये । सिध भौमिनि राम फल खाये ॥  
बालमोकमन आनंद भारी । मंगलमूरति नयन निहारी ॥  
तब करकमल जोरि रघुराई । बोले बचन सवन मुखदाई ॥  
तुम त्रिकालदरसी मुनिनाथा । बिस्व बदरि जिमि तुम्हरे हाथा ॥  
अस कहि प्रभु सब कथा बखानी । जेहि जेहि भांति दोह बन रानी ॥

दो० । तातबचन पुनि सातुमत भाइ भरत अस राउ ।  
माकहं दरस तुम्हार प्रभु सब मम पुन्यप्रभाउ । १२१ ॥

चौ० । देखि पाय मुनिराय तुम्हारे । भये सकृत् सब सुफल हमारे ॥  
अब जहँ राउर आयसु होई । मुनि उद्देग न पावहिं कोई ॥  
मुनि तापव जिन ते दुख सहहीं । ते नरेश बिनु पावक दहहीं ॥  
मंगलमूल बिप्रपरितोष । दहै कोटि कूल भूसुररोष ॥  
अस जिय जानि कहिय सोइ ठाऊं । सिध भौमिनि सहित तहँ जाऊं ॥  
तहँ रसि बसिर परनतुनखाळा । बाध करौ कहुँ काल कृपाला ॥  
सहज सरल मुनि रघुवरबानी । साधु साधु बोले मुनिजानी ॥  
कस न कहहुँ अस रघुकुलकाठ । तुम पाखक संततसतिसेतू ॥

हं० । सतिमेतपाखक राम तुम जगदीश माया जानकी ।  
जो खजति जग पाखति हरति दख पाइ कृपनिधान की ॥  
जो बहससस अहोसमहिधर लखन सचराचरधनी ।  
सरकाज धरि नरराजतन, कले दखन खसनिखिरचनी । ४ ॥

शो० । राम वरूप तुम्हार बचनबनोकर बुद्धिपर ॥  
अभिगतिथकथ अपार नेति नेति नित निगम कह । ॥

चौ० । जग पेखन तुम देखनिहारे । विधि हरि संभु नचावनहारे ॥  
तेउ न जानहिं मर्म तुम्हारा । और तुमहिं को जाननिहारे ॥  
सो जानै जहि देख जगार । जानत तुम्है तुमहिं होर जार । ॥  
तुम्हरी कृपा तुमहिं रघुनंदन । जानत भक्त भक्तउरचंदन ॥  
चिदानंदमय दृष्ट तुम्हारी । विगतविकार जान अधिकारी ॥  
नरतनु धरेहु सत्त बर काजा । कहहु करहु अब प्राप्त राजा ॥  
राम देखि मुनि चरित तुम्हारे । जइ मोहहिं बुध होहिं मुखारे ॥  
तुम जो कहहु करहु अब सांसा । अब काहिय तब चाहिय नांसा ॥

दो० । पूकेहु मोहि कि रहौ कहाँ मै पकृत सकुचाउं ।  
जहं न होउ तहं देख कहि तुमहिं दिखावौं ठाउं । १२२ ॥

चौ० । मुनि मुनिवचन प्रेमरसधाने । सकुचि राम मन महं मुगुधाने ॥  
बालमोक हंसि कहहिं बहोरी । बानो मधुर अभिचरसवारी ॥  
मनहु राम अब कहौं निकोता । बसहु जहाँ सिध लखन समंता ॥  
जिन के स्वन समुद्र समाना । कथा तुम्हारी सुभग परि नागा ॥  
भरहि निरन्तर होहिं न पुरे । तिन के हिये सदन तब करे ॥  
लोचन चातक जिन करि राखे । रहहिं दरम अलधर अभिलाषे ॥  
निदरहिं मिधुभरितसरबारी । रूपबिंदु लहि होहिं मुखारी ॥  
तिन के हृदय सदन मुखदायक । बसहु लखन सिध सह रघुनायक ॥

दो० । यस तुम्हार मानस विमल हंसनि जोहा जाऊ ।  
मुकाहल गुनगन चुगहिं बसहु राम हिय ताऊ । १२३ ॥

चौ० । प्रभुप्रसाद मुचि सुभग सुबाधा । सादर जानु लहै नित नाधा ॥  
तुमहि निबंदिता भोजनकरहीं । प्रभुप्रसाद पट भक्षण धरहीं ॥  
सोम नवहिं सर गुरु द्विज देखी । प्रीति सहित करि विनय विवेकी ॥  
कर नित करहिं रामपदपूजा । रामभरोष हृदय नहिं दूजा ॥  
चरन रामतोष्य लखि जाहीं । राम बसहु तिन के मन माहीं ॥  
मंत्रराज नित अपहिं तुम्हारा । पूजहिं तुमहिं कतिन परिवारा ॥  
तर्पन होम करहिं विधि नागा । विप्र जेबाद कहिं बसु दागा ॥  
तुम ते अधिक गुरुहिं जिय जानी । सकल भाव सेवहिं समजानी ॥

दो० । सब करि मांगहि हक फल रामचरनरति होउ ।  
तिन के मन मंदिर बसहु सिध रघुनंदन दोउ । १२४ ॥

चौ० । काम क्रोध मद मान न मोहा । लोभ न लोभ न राम न डोहा ॥  
जिन्हके कपट दम नहिं भाखा । तिन के हृदय बसहु रघुराधा ॥

सब के प्रिय सब के हितकारी	। दुख सुख सरिस प्रसंसा भारी	॥
कहहि सत्य प्रिय बचन बिचारी	। जागत सोवत सरस तुम्हारी	॥
तुमहि काहि गति दूसरि नाहीं	। राम बसजु क उर माहीं	॥
जननी मम जानहि पर भारी	। धन पराय विष ते बिष भारी	॥
जे हरबहि परसंपति देखी	। दुखित होहि परविपति बिसेषी	॥
जिनहि राम तुम प्रानपियारे	। तिन के उर सुभ सदन तुम्हारे	॥

दो० । स्वामि सखा पितु मातु गुरु जिन के सब तुम तात ।  
तिन के मन मंदिर बसजु सोय सहित दौ भात । १२५ ॥

चौ० । अलग्न तजि सब के गुन गहरी	। विप्र धेनु हित संकट सहरी	॥
मोतिनिपुन जिन की जग लोका	। घर तुम्हार तिन के मन लोका	॥
गुन तुम्हार समुझहि निज दोख	। जेहि सब भांति तुम्हार भरोख	॥
रामभक्तप्रिय लागहि जेहो	। तेहि उर बसजु सहित बैदेही	॥
जाति पाति धन धर्म बड़ाई	। प्रिय परिवार सदन समुदाई	॥
सब तजि तुमहि रहै लौ लाई	। ता के हृदय बसजु रघुराई	॥
स्वर्ग नर्क अपवर्ग समाना	। जहं तहं दीख धरे धनुवाना	॥
मन कम बचन जो राउर चोरा	। राम करजु ताके उर उरा	॥

दो० । जाहि न चाहिय कबजुं कहु तुम सन सहज सनेह ।  
बसजु निरंतर ताम उर सो राउर निज गेह । १२६ ॥

चौ० । इहि बिधि मुनिबर ठाम देखाए	। बचन सप्रेम राममन भाए	॥
कह मुनि सुनजु भानुकुलनायक	। आत्मक कहौ समय मुखदायक	॥
चित्रकूटगिरि करजु निवास	। तहं तुम्हार सब भांति सपास	॥
मैल महावन कानन चारु	। करि कहरि मृग बिहंग बिहारु	॥
नदी पुनोत परान बखानो	। अचितीय निज तपबल आनो	॥
मुरसरिधार नाम मंदाकिनि	। जो सब पातक पोतक डाकिनि	॥
अबि आदि मुनिबर तह बसहो	। करहि योग जप तप तनु कसहो	॥
चलजु सफल सम सब कर करजु	। राम देजु गौरव गिरिवर रु	॥

दो० । चित्रकूटमहिमा अमित कहौ महामुनि गाढ़ ।  
चाढ़ अन्हाने सरित सर सोय सहित दौ भार । १२७ ॥

चौ० । रघुवर कहेउ खवन भख भाटू	। करजु कतजु अब ठाहरठाटू	॥
खवन दोख तब उतर करारा	। चजुं दिशि फिसौ धनुष जिमि नारा	॥
नदी पनच सर सम दम दाना	। सकल कलुष कलि बाछज नाना	॥
चित्रकूट जनु अचल सहरी	। शुक न घात माह मुठभेरी	॥
अब कहि खवन ठाम देखरावा	। थल बिकोकि रघुपति मुख पावा	॥
रमेख राममन देवन्ह जाना	। खले सहित सुरपति परधाना	॥

कोन्ह किरात भेष धरि आये । रघु उ पनतुनवदन मुखाये । ॥ १  
बरनिन जाइ मंजु दुर साक्षा । एक ललित कपु एक विद्यासा । ॥  
दो० । लपन जानकी सहित प्रभु राजत पर्ने निकेत ।  
सोह मदन मुनिभेष जनु रति चतुराज समेत । १२८ ॥

चौ० । अमर नाम किन्नर दिनपासा । चित्रकूट आये तेहि कासा । ॥  
राम प्रनाम कोन्ह सब काझ । मूढित देख कहि सोचनकाझ । ॥  
बरषि समन कह देवसमाज । नाथ मनाथ भये हम आज । ॥  
करि बिनतो दुख दुख मनाये । हरषित निज निज गेह सिंघाये । ॥  
चित्रकूट रघुनंदन हाये । समाचार सुनि सुनि मुनि आये । ॥  
आवत देखि मूढित मुनिहन्दा । कोन्ह उंठवत रघुकुलचन्दा । ॥  
मनि रघुवरहिं लाइ उर खेहीं । सुफल होन हित आषिय देखीं । ॥  
मियमौमिचिरामहवि देखहिं । बाधन सकल सुफल करि खेखहिं । ॥

दो० । यथायोग सममानि प्रभु विदा किये मुनिहन्दा ।  
करहिं योग जप यज्ञ तप निजआत्ममन खकन्दा । १२९ ॥

चौ० । यह मुधि कोन्ह किरातन पाई । हरषे जनु नव निधि घर आई । ॥  
कंद मूल फल भरि भरि दोना । चले रंक जनु कूटन सोना । ॥  
तिन महं जिन्ह देखे दौ भ्राता । और तिनहिं पूछहिं मनु जाता । ॥  
कहत मनत रघुबोरनिकाई । आथ सबन देखे रघुगढ़ाई । ॥  
करहिं जोहारि भेंट धरि आगे । प्रभुहिं बिलोकोत अति चनुरागे । ॥  
चित्र लिखे जनु जहं तहं ठाढ़े । पलकमगोर नयन जल बाढ़े । ॥  
राम मनेहमगन सब जाने । कहि प्रिय वचन सकल समजाने । ॥  
प्रभुहिं जोहारि बहोरि बहोरी । बचन बिनीत कहहिं कर जोरी । ॥

दो० । अब हम नाथ मनाथ सब भये देखि प्रभु पाथ ।  
भाग्य हमारे आगमन राउर कोयलराथ । १३० ॥

चौ० । धन्य भूमि बन पथ पहारा । जहं जहं नाथ पांव तुम धारा । ॥  
धन्य बिहग मृग काननचारी । सुफल जन्म भये तुमहिं निहारी । ॥  
हम सब धन्य महित परिवारा । देखि नयन भरि दरस तुम्हारा । ॥  
कोन्ह बाध भल ठाम बिचारी । ईहां सकल अहं रघुव सुखारी । ॥  
हम सब भांति करब सेवकाई । करि कहरि अहि बाध बगई । ॥  
बन बीड़ गिरि कंदर खोहा । सब हमार प्रभु पनु पनु जोहा । ॥  
तहं तहं तुमहिं अघेर खेलाउब । घर निष्ठर सब ठाम खेलाउब । ॥  
हम सबक परिवार समेता । नाथ न सकुचन आगुन देता । ॥

दो० । वेदवचन मुनिमन अमल ते प्रभु कहनाईन ।  
बचन किरातन के सुनत जिमि पितु बाधकनैन । १३१ ॥



चौ० । रामहि केवल प्रेम पिबारा । जानि लेऊ जो जाननिहारा ॥  
 राम सकल वनघर परितोषे । कहि मृदु वचन प्रेम परिपोषे ॥  
 विदा किये सिर नाद सिधाषे । प्रभुगुन कहत सुनत घर आये ॥  
 इहि विधि मीय सहित दौ भाई । बसहि बिपिन रामनिमुखदारी ॥  
 जब तें आई रहे रघुनाथक । तब तें भौ मंगलदायक ॥  
 फूनहि फलहि बिटप बिधि नामा । मंजु ललित वर बेलिविताना ॥  
 सरतह सरिस सुभाव मुचाये । मनहुं विबुधवन परिहरि आये ॥  
 गुञ्जत मंजुल मधुकरखेनी । चिविध बयारि बहै सुखदेनी ॥

दो० । नीलकंठ कलकंठ सुक चानिक चक्र चकोर ।  
 भाति भांति बोलहि बिहग खवनसुखद चितचोर । १३२ ॥

चौ० । करि केहरि कपि कोल सुरंगा । विगतवधर विहरहि हकसंगा ॥  
 फिरत अहेर रामकवि देषो । होहि मुदित मृगहृन्द बिशेषो ॥  
 विबुधविपिन जहं लजि जग माहीं । देखि रामवन सकल सिंहाहीं ॥  
 सुरमरि सरसद दिनकर कन्या । मेकलसुता गोदावरि धन्या ॥  
 सब सरि मिधु नदो नद नागा । मंदाकिनि कर करहि बखाना ॥  
 उदयप्रसागिरि अरु कैलास । मंदर मेरु सकल सुरवास ॥  
 मैल हिमाचल आदिक जेते । चित्रकूटयस गावहि तेते ॥  
 देव मुदित मन सुख न समाई । विनु खम बिपुल बढ़ाई पाई ॥

दो० । चित्रकूट के बिहंग मृग बेलि बिटप हनजाति ।  
 पुन्यपुञ्ज सब धन्य अस कहहि देव दिन राति । १३३ ॥

चौ० । नखनवंत रघुपतिहिं बिलोकी । पाद जगप्रफल होहिं बिलोकी ॥  
 परसि चरनरज अचर सुखारी । भये परम पद के अधिकारी ॥  
 सो वन बैल सुभाय सोहावन । मंगलमय अतिपावनपावन ॥  
 महिमा कहौ कवन बिधि ताख । सुखसागर जहं कीन्ह निवास ॥  
 यय पयोधि तजि अवध बिहारी । जहं सिय राम खपन रहे आई ॥  
 कहि न सकहिं सुख भा अस कामन । औ सत सहस होहिं सहसमान ॥  
 सो मै बरनि कहौ बिधि कहां । आवरकमठ कि मंदर लेहौ ॥  
 सेवहिं खपन कर्म मन बानी । जाद न सोख सनेह बखानी ॥

दो० । कन कन लखि सियरामपद जानि आप पर नेह ।  
 करत खपन खपने न चित बंधु मातु पितु नेह । १३४ ॥

चौ० । राम मंग सिय रहहिं मुखारो । पुरपरिजनमृदुहरति बिसारी ॥  
 कन कन पियविधुबदन निहारो । प्रमदित मनहुं चकोरकुमारी ॥  
 नाहनेह नित बहत बिलोकी । हरपित रहति दिवस जिमि कोकी ॥  
 सियमन रामचरन अचरामा । अवध सहस सम वन प्रिय लागी ॥

पर्मकुटी प्रिय प्रीतम संना । प्रिय परिवार कुर्मन विहंगा ॥  
 बाव सयूर सम मुनितिय मुनिवर । सयन समिध सम कंद मूल कर ॥  
 नाथ नाथ नाथरी मुहार्द । मयनसयन सत सम मखदाई ॥  
 सोकप होहि बिलोकत बास । तेहि कि मोह सक विषय बिलास ॥

१० । मुमिरत रामहिं तजहिं जन हन सम विषयबिलास ।

रामप्रिया जनजननि सिध कहु न पाचरज तास । १६५ ॥

१० । मोय लपन जेहि बिधि मुख लहरौ । सोइ रघुनाथ करै जोइ कह्यौ ॥  
 कहहिं पुरातनि कथा कहानी । मुनहिं लपन सिध जति मुख मानी ॥  
 जब जब राम अवध मुधि कर्यौ । तब तब बारि बिलोचन भर्यौ ॥  
 मुमिरि मातु पितु परिजन भाई । भरतसनेहसीलसेवकाई ॥  
 कृपाभिधु प्रभु होहि दुखारी । धीरज धरहिं कुममय बिचारी ॥  
 लखि मिय लपन बिलस होइ जाही । जमि पुरुषहिं अनसर परिहाही ॥  
 प्रियाबंधुगति लखि रघुनंदन । धीर कृपाजु भगवतचंदन ॥  
 लगे कहन कहु कथा पुनोता । मुनि मुख लहरिं लपन अर सीता ॥

१० । राम लपन सीता सहित सोहत पर्मनिकेत ।

जिमि बासव बसु अमरपुर सची जयंत समेत । १६६ ॥

१० । जगवहिं प्रभु विय अनुजहिं कैसे । पलक बिलोचनगोलक जैसे ॥  
 सेवहिं लपन मोय रघुबोरहिं । जिमि अविसेकी पुरुष सरीरहिं ॥  
 इहि बिधि प्रभु वन बसहिं मुखारी । खगमृगसुरतापसहितकारी ॥  
 कहेंउ रामवनगवन मुहावा । मुनहु मुमंत अवध जिमि आवा ॥  
 फिरैउ निवाद प्रभुहिं पऊंवाइ । सचिव सहित रघु देखेउ पाइ ॥  
 मंत्रो बिलस बिलोकि निवाहु । कहि न सकहिं जस अचहु विवाहु ॥  
 राम राम विय लपन पुकारो । परेउ धरमितल आकुल भारी ॥  
 देखि दखि दिखि हय हिहिमाहो । जिमि बिनु पंच बिहल चहुमाहो ॥

१० । नहिं हन चरहिं न पिचहिं जल मोचन सीचन बारि ।

आकुल अवेउ निवादगन रघुवर बाजि निहारि । १६७ ॥

१० । धरि धीरज तब कहहिं निवाहु । अब मुमंत परिहरहु विवाहु ॥  
 तुम पंडित परमारचक्रांत । धरहु धीर लखि बाम बिधाता ॥  
 विविध कथा कहि कहि कहु बानी । रघु बैठारौ बरबस आनी ॥  
 सोकसिधिल रघु सकहिं न बांकी । रघुवरविरहपीर कर बांकी ॥  
 तरफराहिं मगु चखहिं न चोरे । वन मृग मनुहु आनि रघु जोरे ॥  
 अटक परहिं फिरि बितवहिं पीछे । रामबिद्योग बिलस दुख तीछे ॥  
 जो कह राम लपन बैदेही । हिकरि हिकरि हय हेरहिं तेही ॥  
 बाजिविरहमति किमि कहि जाती । बिनु मनि कनिक बिलस जेहि भांती ॥

दो० । भये निषाद विषादबस देखत सचिव तुरंग ।  
बोखि सम्वक चारि तब दिये सारथी संग ॥ १३८ ॥

चौ० । गृह मारयिहि फिसौ पञ्चचारि । विरहविषाद बरनि नहिं जारि ॥  
समं अवध लै रथहि निषादा । होत कनहिं कन मगन विषादा ॥  
मोच समंत बिकल दुख दोना । धिक जीवन रघुबीर बिहोना ॥  
रहिहि न अंतउ अधम सरोक । यम न लहेउ बिकुरत रघुबीर ॥  
भये अयमअघभाजन प्राणा । कौन हेतु नहिं करत पयाना ॥  
अहह मंदमति अवसर चुका । अजउ न हृदय होत दुद टूका ॥  
मौजि हाय सिर धूनि पकितारि । मनउं छपन धनरासि गवारि ॥  
बिरद बांधि बर बोर कहाई । चले समरजनु सुभट पराई ॥

दो० । बिप्र बिंवको वेदविद संमत साधु मजाति ।  
जिमि धोखे मद पान करि सचिव मोच तेहि भांति ॥ १३८ ॥

चौ० । जिमि कुलीन तिय साधु सयानी । पतिदेवता कर्ममन बानी ॥  
रहे कर्मवम परिहरि नाह । सचिव हृदय तिमि दाहन दाह ॥  
लोचन सजल दृष्टि भद घोरी । सुनै न सवन बिकलमति भोरी ॥  
सुखहि अधर लागि मुख छाटी । जिय न जाइ छर अवधि कपाटी ॥  
बिबरन भयेउ न जाइ निहारी । मारेसि मनउं पिता महतारी ॥  
हानि मलानि विपुल मन व्यापी । यमपुर पंथ मोच जिमि पापी ॥  
बचन न आव हृदय पकितारि । अवध काह मै देखब जारि ॥  
रामरहित रथ देखिहि जोई । सकुचिहि मोहि बिलोकोत सोई ॥

दो० । धाड़ पृथ्विहिं मोहि जब बिकल नगरनरनारि ।  
उतर देब मै सबहि तब हृदय बज बैठारि ॥ १४० ॥

चौ० । पृथ्विहिं दोन दुखित सब माता । कहब काह मै तिनहिं बिधाता ॥  
पृथ्विहिं जबहिं लपनमहतारी । कहिहौं कवन संदेश सुखारी ॥  
रामजननि जब आदहि धाई । मुमिरि बच्छ जिमि धेनु लवारि ॥  
पूरत उतर देब मै तेहो । गवन राम लपन बैदेही ॥  
जइ पृथ्विहिं तेहि उतर देवा । जाइ अवध जब यह मुख खेवा ॥  
पृथ्विं जबहिं राउ दुखदोना । जीवन जासु रामआधीना ॥  
देहौं उतर कवन मुख लारि । आयेउं कुशल कुंवर पञ्चचारि ॥  
सुनत लपनसिखराममंदेख । तृन हव तनु परिहरब नरेख ॥

दो० । हृदय न बिदरत पंक जिमि बिकुरत प्रीतम गोर ।  
जागत सौं मोहि दोण्ड बिधि यह जातना सरीर ॥ १४१ ॥

चौ० । इहि बिधि करत पंथ पकितारि । तमघातोर तुरत रथ आवी ॥  
बिरा किये करि बिनय निषादू । फिरे पाय परि बिकल विषादू ॥

पैठत नगर सचिव बकुचारी । जगु मारेसि मूढ ब्राह्मण मारी ॥  
 बैठि बिटप तर दिवस नवांवा । साँझ समय तेँद अवसर पावा ॥  
 अवध प्रवेश कोन्ह सचिचारे । पैठु भवन रथ राखि दुचारे ॥  
 जिन्ह जिन्ह समाचार सुनि पाये । भूपहार रथ देखन चाये ॥  
 रथ पहिचानि बिकल सखि धोरे । गरहिं गात जिमि सातपथोरे ॥  
 नगर नगरिन ग्याकुल कोरे । निघटत जोर मीनजन जैसे ॥

१० । सचिवचागमन सुनत सब बिकल भई रनिवास ।

भवन भयंकर खान तेहि मानहु प्रेतनिवास । १४२ ॥

१० । अति आरत सब पृथ्वि रानी । उत्तर न आव बिकल भद्र बानी ॥  
 मुनै न खवन नयन गरिं रुझा । कहहु कहां नृप जेहि तेहि वृद्धा ॥  
 दामिन्ह दोख सचिवबिकलारै । कौमिच्छाटह गईं लिवादै ॥  
 जाद सुमन्त दोख कस राजा । समिधरहित जगु चंद विराजा ॥  
 अमन न सयन विभूषनहीना । परेउ भुमि तेल निपट मकीना ॥  
 खेद उषास सोच दहि भाँती । सुगपुर तेँ जगु खसेउ यथाती ॥  
 सेत सोच भरि छनकन छाती । जगु जरि पंख परेउ धंपाती ॥  
 राम राम कह राम खनेही । पुनि कह राम खवन बैदेही ॥

१० । देखि सचिव खयजीव कहि कीन्हैसि दंडप्रनाम ।

सुनत छटे ग्याकुल नृपति कैऊ सुमन्त कह राम । १४३ ॥

१० । भूप सुमन्त कोन्ह छर छाई । वृद्ध कहु अधार जगु पाई ॥  
 सहित खनेह निकट बैठारी । पूछत राख मयन भरि वारी ॥  
 राम कुसल कह सखा खनेही । कह रघुनाथ खवन बैदेही ॥  
 खानेऊ फेरि कि बनहिं सिधाये । सुनत सचिव सोचन जल छाये ॥  
 शोकबिकल पुनि पूछ नरेसु । कह मिथरामखवनखदेसु ॥  
 रामरूपगुनसोखसुभाऊ । सुमिरि सुमिरि छर सोचत गाऊ ॥  
 राज सुनाइ कोन्ह खनबासु । सुनि मन भयेउ न हरवहरासु ॥  
 सो सुत विकरत मयेन प्राना । को पायो बड मोहि समाना ॥

१० । खला राम सिख खवन जहं तहां मोहि पऊंवाड ।

नाहित पाहत खलन खब प्रान कहौं खत भाड । १४४ ॥

१० । पुनि पुनि पूछत मंचिहि राज । प्रीतम सुखनखदेस सुनाऊ ॥  
 मुनहु सखा सोद करिय उपाऊ । राम खवन सिख बेनि दिखाऊ ॥  
 सचिव धीर धरि कह सुदु बानी । महाराज तम पंडित जानी ॥  
 बोर मधीर धुरंधर देवा । साधसमान सदा तम सेवा ॥  
 जगु मरन सब दुख मुख भोगा । हानि खान प्रियमिखनविधीना ॥  
 कासकर्मवख होहि गुहारि । बरवख राति दिवस को नारि ॥

सक सर्वहि अह दस बिलखाही । ही मन धीर धरहि मन माही ॥  
 धीरज धरज विवेक बिचारी । कांछिय सोच सकल हितकारी ॥

दो० । प्रथम बास तमसा भयेउ दूसर सुरभरितोरी ।  
 न्हाइ रहे जलपान करि सिय समेत दौनोरी ॥ १४५ ॥

चौ० । केवट कोन्ह बज्रत सेवकाई । सो यामिनि सिंगबर शवाई ॥  
 होत प्रात बटकोर मंगावा । अटा मुकुट निज सीम बनावा ॥  
 रामसखा तब नाव मंगारि । प्रिया चढ़ाई चढ़े रघुराई ॥  
 लखन धरे धनुवान बनाई । आपु चढ़े प्रभुआयसु पाई ॥  
 बुबकल बिलोकि मोहि रघुवोरा । बोले मधुर वचन धरि धोरा ॥  
 तात प्रनाम तात मन कहेछ । बार बार पद पंकज गहेछ ॥  
 करबि पाय परि बिनय बहोरी । तात करिय जनि चिंता मोरी ॥  
 बनमगु मंगल कुमल हमारे । लप्या अनुग्रह पुन्य तुम्हारे ॥

क० । तुम्हरे अनुग्रह तात काजन जात सब सुख पाइहौ ।  
 प्रतिपालि आयसु कुमल देखन पाय पुनि फिरि आइहौ ॥  
 जननी सकल परितोषि करि परि पाय करि बिनती घनो ।  
 तुलसी करेऊ सोइ यतन जेहि विधि कुमल रह कोकलधनी । ५ ॥

सो० । गह मन कहव मंदेम बार बार पदपद्म गहि ।  
 करब सोइ उपदेस जेहि न सोच मोहि अवधपति । ५ ॥

चौ० । परजन परिजन सकल निहोरी । तात सुनायछ बिनती मोरी ॥  
 मोइ सब भांति मोर हितकारी । जातें रह नरनाइ सुखारी ॥  
 कहव मंदेम भरत के आये । नीति न तजव राजपद पाये ॥  
 पालजु प्रजहि कर्म मन बानी । मयेऊ मातु सकल सम जानी ॥  
 और निवाहव भायप भाई । करि पितुमातुसजनसेवकाई ॥  
 तात भांति तेहि राखव राज । सोच मोर जेहि करहि न काज ॥  
 लखन कहउ कहु बचन कठोरा । बरजि राम पुनि मोहि निहोरा ॥  
 बार बार निज सपथ दिवाई । कहवि न तात लखनलरिकाई ॥

दो० । कहि प्रनाम कहु कहन सिय सिय भरि सिधिस मनह ।  
 सकित बचन लोचन सजल पुलकपल्लवित देख । १४६ ॥

चौ० । तेहि अवसर रघुवररख पाई । केवट पारहि नाव चलाई ॥  
 रघुजलतिलक चले रहि भांतो । देखेउ ठाढ़ कुलिस करि कांती ॥  
 मै चापन किमि कहउं कलेसु । जिघत फिरैउ सै रामबदेसु ॥  
 अस कहि सचिव बचन रहिनयेऊ । हानिगलानिषोचवध भयेऊ ॥  
 सुगत समंतबचन नरनाइ । परेउ धरनि उर दासन दाइ ॥  
 तलफत बिषम मोह मन मांया । मांया मनहुं मीन कह व्यापा ॥

- करि बिलाप सब रोवहि रानो । मचा बिपति किमि जाह बखानी ॥  
सुनि बिलाप दुखहुं दुख लागी । धीरजहुं कर धीरज भागी ॥
- दो० । भयउ कोलाहल अवध अति सुनि नपरावर सोइ ।  
बिपुल बिहग बन परेउ निमि मानहुं कुलिय कठोर । १४० ॥
- चौ० । प्राण कंठगत भयेउ भुआलू । मनि बिहीन जमि खाकुल व्यालू ॥  
इंद्रिय सकल बिकल भइ भारी । जग सर सर बिजबन बिनु बारी ॥  
कौमल्या रूप दीख मखानी । रबिकुलरवि अंघये जग दीना ॥  
उर धरि धीर राममहतांगी । बोली बचन समस अनुहारी ॥  
नाथ समझि मन करिय बिचारू । रामबिद्योग पयोधि अपाकू ॥  
कर्णधार तुम अवधि जहाजू । चहुँउ सकल प्रिय बनिन समझू ॥  
धारज धरिय तो पाइय पाकू । नाहित बूझि सब परिचारू ॥  
जौ जिय धरिय बिनय प्रिय मोरी । राम लखन सिय मिलब बहोरी ॥
- दो० । प्रियाबचन मृदु सुनत रूप चितयउ आखि उचारि ।  
तलफत मोन मखीन जनु भीषत सोतल बारि । १४८ ॥
- चौ० । धरि धीरज उठि बैठ भुआलू । कहु सुमत कह राम लपालू ॥  
कहां लखन कह राम मनेहो । कह प्रिय पंचवधू बैदेही ॥  
बिलपत राउ बिकल कहु भांतो । भइ युग भरिष सिरातिन रातो ॥  
तापमअंधलापमधि आई । कौमल्याहिं सब कथा सुनाई ॥  
भयउ बिकल बरनत इतिहास । रामरहित धिक जीवन आमा ॥  
मो तन राखि करब मै काहा । जइ न प्रेमपन मोर निबाहा ॥  
हा रघुनन्दन प्राणपिरीते । तुम बिनु जियत बज्रत दिन बीते ॥  
हा जानकी लखन हा रघुवर । हा पितु हित चित चातक जगधर ॥
- दो० । राम राम कहि राम कधि राम राम कहि राम ।  
तनु परिहरि रघुवरविरह राउ गये सुरधाम । १४८ ॥
- चौ० । जियनमगफल दमरय पावा । अंड अनेक अमल यम हावा ॥  
जियत राम बिधुबदन निहारी । रामविरह मरि मरन मंजारी ॥  
सोकबिकल सब रोवहि रानो । रूप खोल बल तेज बखानी ॥  
करहि बिलाप अनेक प्रकारा । परहिं भूमि तल बारहिबाग ॥  
बिलपहिं बिकल दास अइदायो । घर घर रहन करहि परबायो ॥  
अंघयेउ आज भानकुलभाजू । धर्मअवधि गुनरूपनिधानू ॥  
नारी सकल कैकहिहि देही । नयनबिहीन कोन जग जेही ॥  
इहि विधि बिलपत गौन बिहानी । आये सकल महामूर्ति जानी ॥
- दो० । तब बसिष्ट मुनि समस सम कहि अनेक इतिहास ।  
भोक निवारउ सबहि कर निज निजान प्रकाश । १५० ॥

चौ० । तेल नाव भरि नृपतनु राखा । दूत बुलाइ बड्डरि अष भाखा ॥  
 धावहु बेगि भरत पहुँ जाइ । नृपमुधि कतहुँ कहहुँ जनि काइ ॥  
 दतने कहहुँ भरत सम जाई । गुह बुलाइ पठये हो भाई ॥  
 मनि मनिआयमु धावन धाये । चले बेगि सर बाजि सजाये ॥  
 अनरथ अवध अरभेउ जब ते । कुसगुन होहि भरत कहँ तब ते ॥  
 देखहि राति भयानक सपना । जागि कहहि कटु कोटि कलपना ॥  
 धिप्र जेवाइ देखि दिन दाना । भिवअभिषेक कहहि विधि माना ॥  
 मांगहि हृदय महेस मनाई । कुसल मातु पितु परिजन भाई ॥

दो० । रहि विधि सोचत भरत मन धावन पडुंजे जाइ ।  
 गुह अनुसासन सुवन सुनि चले गनेस मनाइ । १५१ ॥

चौ० । चले समोरबेगि हय हाँके । लावत सरित मैल बन बाँके ॥  
 हृदय सोच बडु कहुँ न सोहाई । अम जानहि जिय जाउं उडाई ॥  
 एक निमेष बरस सम जाई । रहि विधि भरत नगर नियराई ॥  
 अशगुन होहि नगर पैठारा । रटहि कुभांति कुखेत करारा ॥  
 खर मृगास बोलहिं प्रतिकूला । सुनि सुनि होहि भरतउर दुला ॥  
 स्त्रीहत सर सरिता बन बागा । नगर बिसेष भयावन लागा ॥  
 खग मृग हय गज जाहिं न जोये । रामबियोग कुरोग बिगोये ॥  
 नगरनारिनर निपट दुखारी । मलहुँ सबनि सब सपति हारी ॥

दो० । पुरजन मिलहिं न कहहिं कहुँ गंवहिं जोहारहिं जाहिं ।  
 भरत कुसल पूछि न सकहिं भय बिषाद मन माहिं । १५२ ॥

चौ० । हाट बाट नहिं जाइ निहारी । अनुपुर दस दिशि लागि दवारी ॥  
 आवत सुत सुनि कैकयनदिनि । हरषी रविकुलजलरुहचदिनि ॥  
 सनि आगतो मुदित उठि धाई । दारहिं भेंटि भवन लै भाई ॥  
 भरत दुखित परिवार निहारा । मानहुँ तुहिन बनजाना मागा ॥  
 कैकयी हरषित रहि भांती । मनहुँ मुदित दव जाइ किराती ॥  
 सुनहिं समाच देखि मन मारे । पृथति नैहर कुसल हमारे ॥  
 सकल कुमल कहि भरत सुनाई । पृथो निज कुलकुसलभलाई ॥  
 कहुँ कहँ तात कहाँ सब माता । कहँ भिय राम लखन प्रिय भ्राता ॥

दो० । सुनि सुतबचन सनेहमय कपटना भरि नैन ।  
 भरतलखन मन छुल सम पापनि बोली बेन । १५३ ॥

च० । तात बात मेँ सकल संवारी । भर संवारा सहाय बिचारी ॥  
 कहुँ काज विधि सोच बिगारेउ । भूपति सुरपतिपर पगु धारेउ ॥  
 सुनत भरत भये विकल बिषादा । अनुसहमेउ करि कहँनिनादा ॥  
 तात तात हा तात पुकारी । परउ भूमि तल ब्याकुल भारी ॥

सलत न देखन पायेउं तोही । तात न रामहिं बौपेऊ मोही ॥  
 बज्जर धीर धरि उठे संभारी । कइ पितुमरणहेतु मरुतागी ॥  
 सुनि सुतबचन कहति कैकई । मर्म पाछि जगु माजुर देई ॥  
 आदिहि ते सब आपनि करनो । कुटिल कठोर मुदित मन बरनो ॥

दो० । भरतहिं बिसरेउ पितुमरण सुनत रामबन गौन ।  
 हेतु अपन पुनि जानि प्रिय यकित रहे धरि मौन । १५४ ॥

चौ० । बिकल बिलोकि सुतहिं समुद्रावति । मनजुं जरे पर सोन लगावति ॥  
 तात राउ नहिं सोचन योगू । पिठर सुलत जब कीचेउ भोगू ॥  
 जीवन सकल जगफल पाव । अंत समरपतिसदन निधाये ॥  
 अस अनुमानि सोच परिहरइ । सहित समाज राजपुर काज ॥  
 सुनि सुति मरमेउ राजकुमारा । पाके हत जगु लागु समारा ॥  
 धोगज धरि भरि छेहिं लसावा । पापनि बचाई भाति कुलनावा ॥  
 औ पै कुहचि रह्यो अमि तोही । जनमत काहे न मारेबि मोही ॥  
 पेड़ काटि तें पल्लव सींचा । मीनजिअन हित बारि उकींचा ॥

दो० । हंसबंध दरदय जनक राम लखन मे भाद ।  
 जनको तू जनमो भई विधि तें कहा बसाद । १५५ ॥

चौ० । जब तें कुमतिकुमत जिय ठगज । खंड खंड होइ हृदय न मयज ॥  
 बर मांगत मन भई नहिं पीरा । जरि न जीइ मुंह परेख न कीरा ॥  
 भूपप्रतोति तोरि किमि कोन्यो । मरनकाल विधि मति हरिकीन्यो ॥  
 विधिजुं न नारिहृदयगति जानो । सकलकपटअसपवगुनखानो ॥  
 सरल सुभोल धर्मगत राज । भो किमि जानहिं तोयसुभाज ॥  
 अस को ओवजंतु जग माहीं । जोइ रघुनाथ प्रानप्रिय माहीं ॥  
 मे अति अहित राम तेउ तोहीं । को तू अहचि मया कज मोहीं ॥  
 जो हसि मो हसि मुंह मसि जाई । आंसि ओट उठि बैठहि जाई ॥

दो० । रामबिराधो हृदय तें प्रगट कीन्ह विधि मोहि ।  
 मो समान को पातको बादि कहौं कहु तोहि । १५६ ॥

चौ० । सुनि सचुन मातुकुटिलाई । जरहिं गात रिम कहु न बसाई ॥  
 तेहि अवसर कुबरी तेहं आई । बसन विभूषन विविध बनाई ॥  
 लखि रिमभरेउ लघनजघुभाई । बरत अनज घृतचाऊति पाई ॥  
 ऊमकि ज्ञात तकि कुवर मारा । परि मरभरि महि करति पकारा ॥  
 कुवर टूटै फूट कपाक । दलित दसन मुख अधिग्रहाक ॥  
 आहि ददय में काह नसावा । करत लोक फल अनदस पावा ॥  
 पनि रिपुहन लखि नख सिख खोटी । लगे घसीटन धरि धरि खोटी ॥  
 भरत दयानिधि दीन्ह कुड़ाई । कौरव्या पहिं मे दौ भाई ॥



दो० । मलिन वसन विवरन बिकल लमसरीर दुःखभार ।  
कनककमलवरबेलिवन मानऊं हनी तुषार । १५७ ॥

चौ० । भरतहि देखि मातु उठि धाई । मूर्च्छित अवनि परो झंव आई ॥  
देखत भरत बिकल भये भारी । परे चरन तनु दमा बिसारी ॥  
मातु तात कहि देखि आई । कहि सिय राम लखन दौ भाई ॥  
केकयि कत जनमो जग मांझा । जौ जनमो भई काहे न बांझा ॥  
कुलकुलक जेहि जनमेउ मोही । अपयसभाजन प्रियजनद्रोही ॥  
को बिभवन मोहि सरिस अभागी । गति असितोरि मातु जेहि लागी ॥  
पितु सुरपर बन रघुकुलकेतु । मै केवल सब अनरथ हेतु ॥  
धिक मोहि भयेउं, बेनुवन आगी । दुमह दाह दुखदृषनभागी ॥

दो० । मातु भरत के बचन मृदु सुनि पुनि उठी संभारि ।  
लिये उठाइ लगाइ उर लोचन मोचति बारि । १५८ ॥

चौ० । सरल सुभाय माय हिय लाये । अति हित मनऊं राम फिरि आये ॥  
भेंटउ बज्ररि लखनलघुभाई । सोक सनेह न हृदय समाई ॥  
देखि सुभाव कहत सब कोई । राममातु अमि काहे न होई ॥  
माता भरत गोद बैठारे । आंसु पौछि मृदु बचन सचारे ॥  
अजऊं बच्छ बलि धोरज धरह । कुसुमय समुझि सोक परिहरह ॥  
जनि मानऊ हिय हानि गलानो । कालकर्मगति अचटित जानी ॥  
काऊहि दोष देऊ जनि ताता । भा मोहि सब विधि वाम बिधाता ॥  
जो ऐसेऊ दुख मोहि जिआवा । अजऊं को जानै का तेहि भावा ॥

दो० । पितुआयसु भूषन वसन तात तजे रघुवीर ।  
बिस्मय हर्ष न हृदय कहु पहिरे बलकलचौर । १५९ ॥

चौ० । मुख प्रसन्न मन राग न रोष । सब कर सब विधि करि परितोष ॥  
चले बिपिन सुनि सिय संग लागी । रही न रामचरनअनुरागी ॥  
सुनतहि लखन चले उठि साथी । रहे न यतन किये रघुनाथी ॥  
तब रघुपति सबही मिर नाई । चले संग सिय अरु लघु भाई ॥  
राम लखन सिय बनहि मिधाये । गई न संग नं प्रान पठाये ॥  
यह सब भारन्ह आखिन्ह आगे । तउ न तजा तनु जीव अभागे ॥  
मोहि न लाज निज नेह सिहारो । राम सरिस सुत मै महतारी ॥  
जियै मरै भल भूपति जाना । मोर हृदय सत कुलिस समाना ॥

दो० । कौसल्या के बचन सुनि भरत सहित रनिवाम ।  
ब्याकुल बिलपत राजमृदु मानऊं सोकनिवास । १६० ॥

चौ० । बिलपहि बिकल भरत दौ भाई । कौसल्या लिय हृदय लगाई ॥  
भाति अनेक भरत समझाये । कहि बिबेक बर बचन सुनाये ॥

- भरतज मातु सकल समुहार्ह । कहि परानसुतिकया सुहार्ह ॥  
 कलविहोन सुचि सरल सुबाजी । सोल भरत कोरि युग पानी ॥  
 जे अघ मातु पिता मुद मारे । गाइगोठ महिसुरपुर आरे ॥  
 जे अघ तियवालकबध कोन्ह । मोत महीपति माऊर दोन्ह ॥  
 जे पातक उपपातक कहहीं । कर्मबचनमनभव कवि कहहीं ॥  
 ते पातक मोहि होउ विधाता । जौ यह होइ मोर मत माता ॥
- दो० । जे परिहरि हरिहरचरण भजहि भूतगन घोर ।  
 तिनकी गति मोहि देख विधि जौ जननी मत मोर । १६१ ॥
- चौ० । बेरहि वेद धर्म दहि लेहीं । पिसुन पराव पाप कहि देखीं ॥  
 कपटो कुटिल कलहप्रिय कोधी । वेदविदूषक विस्मविरोधी ॥  
 सोभी लंपट सोल लवारा । जे ताकहि परधन परदारा ॥  
 पावउ मै तिन करि गति घोरा । जौ जननी यह संमत मोरा ॥  
 जे नहि साधु संग अनुरागे । परमारपथविमुख अभागे ॥  
 जे न भजहि हरि नरतनु पारै । जिन्हहि न हरिहरमुखन सुहार्ह ॥  
 तजि स्तुतिपंथ बामपथ चलहीं । बंचक विरचि भेष जग कलहीं ॥  
 तिन की गति मोहि संकर देख । जननी जौ यह जानै भेज ॥
- हं० । मन बचन कर्म कृपायतन कर दास मै सुनु मातु रो ।  
 उर बसत राम सुजान जागत प्रीति अह कल पातुरो ॥  
 अघ कहत सोचन बहत जल तनु पुनक नख सेखत मही ।  
 हिय साय सिये बहोरि जननी जानि प्रभुपदरत सही । १६२ ॥
- दो० । मातु भरत के बचन सुनि सांचे सरल सुभाष ।  
 कहति रामप्रिय तात तुम सदा बचन मन काय । १६३ ॥
- चौ० । राम प्राण तें प्राण तुम्हारे । तुम रघुपतिहि प्राण तें प्यारे ॥  
 बिधु बिष चुवै खवै हिम आगी । होइ बारिबर बारि विरामी ॥  
 भये ज्ञान बह मिटे न मोह । तुम रामहिं प्रतिकूल न होह ॥  
 मत तुम्हारे अघ जो जग कहहीं । सो अपनेहुं सुख सुगति न लहहीं ॥  
 अघ कहि मातु भरत हिय साये । यन पय खवहिं नयन जल साये ॥  
 करत बिखाप बिपल दहि भांती । बैठे बीति गई सब राती ॥  
 बामदेव बसिष्ट मुनि आये । बसिव महाजन सकल बुलाये ॥  
 मुनि बड़ भांति भरत उपदेसे । कहि परमारथ बचन सुदेसे ॥
- दो० । तात हृदय धीरज धरऊ करऊ जो चबसर आजु ।  
 उठे भरत गुरुबचन सुनि करन कहें सब काजु । १६४ ॥
- चौ० । लपलु वेदबिहित अन्धबावा । परम विधिच विमान बनावा ॥  
 गहि पद भरत मातु सब राखी । रहीं राम दरसनार्थभिलाखी ॥

चंदनचगरभार बज्र चाये । अमित अनेक सुगंध सुहाये ॥  
 मरुजती रश्मि घिता बनाई । अनु सुगंधकोपान सुहाई ॥  
 हवि बिधि दाहक्रिया सब कीन्ही । विधिवत न्याद तिलांजलि दीन्ही ॥  
 सोधि मस्तुति सब वेद पुराना । कोन्ह भगत दसगावविधाना ॥  
 जहं जस मुनिवर आयसु दीन्हा । तहं तस सहस भांति सब कीन्हा ॥  
 भये बिसुद्ध दिये सब दाना । धनु बाजि गज वाहन नाना ॥

दो० । सिंहासन भूषण वसन द्रव्य धरणि धन धाम ।

दिये भगत लहि भूमिसुर भं परिपूरनकाम । १६४ ॥

चौ० । पितृ हित भगत कोन्ह जसि करनी । सो मुख साख जाइ नहिं बरनी ॥  
 सुदिन सोधि मुनिवर तब चाये । सकल महाजन सचिव बलाये ॥  
 बैठे राज सभा सब जाई । पठये बोलि भरत दौ भाई ॥  
 भरत बसिष्ट निकट बैठाये । नीतिधर्ममय बचन उचारे ॥  
 प्रथम कथा सब मुनिवर बरनी । केकयि कठिन कोन्ह जसि करनी ॥  
 भूपधर्मव्रतपथ्य मराहा । जेहि तनु परिहरि प्रेम निवाहा ॥  
 कहत रामगुनमोलसुभाज । मजल नयन पलक मुनिराज ॥  
 बज्ररि लपन नियप्रोति बखानी । सोकमनेहमगन मुनि जानी ॥

दो० । सुनऊ भरत भावो प्रबल बिलखि कहेउ मुनि नाथ ।

हानि लाभ जीवन मरण जस अपजय विधिहाथ । १६५ ॥

चौ० । अस बिचारि केहि दीजिय दोष । बर्थ काहि पर कीजिय रोष ॥  
 तात बिचार करऊ मन माहीं । सोचयोग दमरथ नृप नाहीं ॥  
 सोचिय विप्र जो वेदबिहीना । तजि निज धर्म विषयल्यलीना ॥  
 सोचिय नृपति जो नीति न जाना । जेहि न प्रजा प्रिय प्रान समाना ॥  
 सोचिय बैस्य लपन धनवानू । जो न अतिथिमिवभक्त सुजानू ॥  
 सोचिय तट्ट विप्र अपमानो । मुखर मानप्रिय ज्ञानगमा ॥  
 सोचिय पुनि पतिबंचक नारी । कुटिल कलहप्रिय दृष्टिारी ॥  
 सोचिय सटु निज व्रत परिहरई । जो नहिं गुह्य आयसु अमरई ॥

दो० । सोचिय गृही जो मोहबस करै धर्मपथत्याग ।

सोचिय यती प्रपंचरत बिगतबिबेकबिराग । १६६ ॥

चौ० । बैधानस मोद सोचन योग । तप बिहाय जेहि भावे भोग ॥  
 सोचिय पिसुन प्रकारन क्रोधी । जननि जनक गुह बन्धु विरोधी ॥  
 सब बिधि सोचिय परअपकारी । निजतनूपोषक निर्दय भारी ॥  
 सोचनीय सबहो बिधि सोई । जो न काड़ि कुल हरिजन होई ॥  
 सोचनीय नहिं कोसलराज । भुवन चारिदस प्रगट प्रभाज ॥  
 भयउ न दहै न अस होनिहार । भूप भरत जस पिता तुम्हारा ॥  
 बिधि हरि हर सुपति दिमिनाथा । बरनहिं सब दसरथगुनगाथा ॥

दो० । कहउतात केहि भाँति कोउ करिहि बराई ताम् ।

राम लखन तुम सबहुन सरिय मुचन सुचि जान् । १६७ ॥

चौ० । सब प्रकार भूपति बहभागी । यदि बिषाद किय तेहि लागि ॥  
 यह सुनि समझि सोच परिहरइ । भिर धरि राजरजायसु करइ ॥  
 राय रावपद तुम कहं दीया । पितावचन कर चाहिय कोना ॥  
 तज राम जेहि बचनहि जानी । तनु परिहरै रामबिरहानी ॥  
 नृपहि बचन प्रिय नहिं प्रिय प्राना । करउ तात पितुबचन प्रमाना ॥  
 करउ मोख धरि भूपरजाई । है तुम कहं सब भाँति भलाई ॥  
 परसुराम पितुआज्ञा राखी । मारी मातु कोक सब खाखी ॥  
 तनय यथानिहिं बौवन दसऊ । पितुआज्ञा चय चयन न भयऊ ॥

दो० । अनुचित उचित विचार तजि ज पाखिहिं पितुभै ।

ते भाजन सुखमजस के बसहिं समरपतिऐन । १६८ ॥

चौ० । अवसि नरेखबचन कर करइ । पालऊ प्रजा कोक परिहरइ ॥  
 सुरपरनृप पाइहिं परितोष । तुम कहं मुकत मुजस नहिं दोष ॥  
 बेदबिहित संमत सबही का । जेहि पितु देर मा पावै टोका ॥  
 करऊ राज परिहरऊ गलानी । मानऊं मोर बचन हित जानी ॥  
 मुनि मुख लखव राम-बैदेही । अनुचित कहइ न पंडित केही ॥  
 कौमल्यादि सकल महतागे । तेउ प्रजासुख कोहिं सुखारी ॥  
 माम तुम्हार राम सब जानिहिं । सो सब विधि तुम मन भल मानिहिं ॥  
 अपिऊ राज राम के आये । सेवा करैऊ मनह सुहाये ॥

दो० । कीजिय गुरुआयसु अवसि कहहिं सचिव कर जोर ।

रघुपति आये लखित जस तय तम वरव बहोर । १६९ ॥

चौ० । कौमल्या धरि धोरज कहई । पुत पितुगुरुआयसु अहई ॥  
 सो आदरिय करिय हित मानो । तजिय बिषाद कालगति जानी ॥  
 बन रघुपति सुरपर नरनाइ । तुम दहि भाँति तात बढगइ ॥  
 परिजन प्रजा सचिव कह आवा । तुमही त सब कह अव लवा ॥  
 लखि विधि बाम कालकठिनाई । धोरज धरइ मातु बलि जाई ॥  
 भिर धरि गुरुआयसु अनसरइ । प्रजा पालि परिजनदख हरइ ॥  
 गुरु के बचन सचिव अभिनंदन । मुनत भगतहिय हित ननु चंदन ॥  
 सुनो बहोरि मातुमदुबानी । सोलसमैह सरल रसमानी ॥

छं० । मानी सरल रस मातुबानी सनि भरत याकुल भये ।

लोचनबरोइह खवत भौलत बिरह उर अंकुर मये ।

सो दशा देखत समय तेहि विमरी सबहिं मुधि देह की ।

तुलसी बराहत सकल बादर सोव रहत मनेह की । ० ॥

शो० । भरत कमलकर जागि धर्यधरधर धीर धरि  
वनअमिय अनु बोरि देत सचित उत्तर समहि । ६ ॥

शो० । मोहि उपदेस दोन्हा गुरु नोका । प्रजासचिवसंमत सबही का  
मातु उचित पुनि आचस दोन्हा । अवसि सीस धरि चाहिय कोन्हा  
गुरु पितु मातु स्नामि हित बानी । सुनि मनमुदित करिय भल जानी  
उचित कि अनुचित किये बिचारु । धर्म जाइ मिर सातकभारु  
तुम तौ देऊ सरल सिख मोई । जो आचरत मोर हित होई  
यद्यपि यह समुझत हौं नोके । तदपि होत परितोष न जो के  
अब तुम विनय मोरि सुनि लेह । मोहि अनुहरत सिखावन देह  
उत्तर देउं हमब अपराधु । दुखित दोषगुन गनहिं न साध

दो० । पितु मुरपूर सिय राम बन करन कैहजु मोहि राज  
इहि ते जानहु मोर हित कै आपन बड़ काज । १०० ॥

शो० । हित हमार मियपतिमेवकई । सो हरिलोन्हा मातु कुटिलार्ह  
मैं अनुमानि दोख मन माहीं । आन उपाय मोर हित नाहीं  
मो कममाज राज कैहि लेखे । लखनरामसियपद विनु देखे  
बादि वसन विनु भूषनभारु । बादि बिरति विन ब्रह्मबिचारु  
महज मरीर बादि बड भोगा । विनु हरिभक्ति जाँय जप योगा  
जाय जाव विनु देह सुहाई । बादि मोर सब विनु रघुआई  
जाउं राम पद आयस देह । एकहि अंक मोर हित येह  
मोहि नृप करि आपन भल चहह । सो सनेहजुतावस कहह

दो० । कैकेयोमत कुटिलमति रामविमुख गतलाज  
तम चाहत मुख मोहवस मोहि से अधम के राज । १०१ ॥

शो० । कहौं साँच सब मुनि पतियाह । चाहिय धर्मसील नरनाह  
मोहि राज इठि दैहजु अबहीं । रसा रसातल जाइह तबहीं  
मोहि समान को पापनिबामो । जेहि लागि सीय राम बनबासो  
राय राम कहं कानन दोन्हा । बिकरत गमन अमरपुर कीन्हा  
मैं सठ सब अनरथ कर हतू । बैठि बात सब सुनउं सचेतू  
विनु रघुबोर बिसो किय गारु । रहै प्रान सहि जग उपहास  
राम पुनीत बिषयरस रुखे । लोखप भूप भोग के भुखे  
कहं लागि कहउं हृदयकठिनार्ह । निदरि कुलिस जेहि लैही बड़ाई

दो० । कारन तें कारज कठिन होइ दोष नहिं मोर  
कुलिस अस्थि तें उपल तें लोह कराख कठोर । १०२ ॥

शो० । कैकेयोभव तनु अनुरागे । पामर प्राण अघाई अभागे  
जो प्रिय बरह प्राण प्रिय लागे । देखव सुनव बडत अब आगे

लखन राम भिय कहं बन दीन्हा	। पठव चमरपुर पति हित कीन्हा ॥
सोन्ह विधवारन अपयस आप	। दीन्हेउ प्रजहि सोक संतापू ॥
मोहि दीन्ह मुख सयस सुराज	। कीन्ह केकयी सब कर काज ॥
दहि तें मोर काह सब नोका	। तेहि पर देन कहजु तुम टीका ॥
केकयिजठर जन्मि जग माहीं	। यह मोहि कहं कहू अनुचित माहीं ॥
मोरि बात सब विधिहि बनाई	। प्रजा पंच कत करजु सहाई ॥

दो० । यहयहीन पनि बातबस तेहि पनि बोही मार ।

ताहि पिआदस बाहनी कहजु कवन उपचार । १७४ ॥

चौ० । केकयिसअनयोग जग जोई	। चतुर बिरचि रचेउ मोहि सोई ॥
दसरथननय रामलघुभाई	। दीन्ह मोहि विधि बाहि बड़ाई ॥
तुम सब कहजु कड़ावन टीका	। राय राज सबही कहं नोका ॥
उतर देउं केहि विधि केहि केही	। कहजु मुखेन यथाहचि जेही ॥
मोहि कुमातु समेत बिहाई	। कहजु कहिहि को कीन्ह भलाई ॥
मोहि बिन को सचरावर माहीं	। जेहि सिधराम प्रानप्रिय माहीं ॥
परम हानि सब कहं बड़ लाज	। अदिन मोर नहि दूषन काज ॥
संयममोल प्रेमबस अहज	। सबै उचित सब जो कुछ कहज ॥

दो० । राममातु सुठि सुरक्षित मो पर प्रेम विमंथि ।

कहहि सुभाव सनेह बस भोरि दोनता देवि । १७५ ॥

चौ० । गुरु धिवे रुसागर जग जाना	। जिन्हहि बिस्र करवदरि समाना ॥
मो कहं तिनकमाज सजि सोऊ	। भा विधि विमुख विमुख सब कोऊ ॥
परहरि राम शीय जग माहीं	। कोउ न कहिहि मोर मत माहीं ॥
सो मै मुनब सहव सुख मानो	। अंतज कोष तहाँ जहं पानी ॥
उर न मोहि जग कहिहि कि पोचू	। परकोकज कर नाहिन सोचू ॥
एकै बड़ि उर दुसह दवारी	। मोहिं छानि भे सिधराम दुखारी ॥
जोवन लाज लखन भल पावा	। यह तनि रामवरन मन पावा ॥
मोर अज्य रघुवरबन लागी	। झूठ काह पहिताउं चभागी ॥

दो० । आपनि दाहन दोनता सर्वाह कहेउं समझाय ।

देखे बिनु रघुवीरपद जिय को जरनि न जाय । १७६ ॥

चौ० । आन उपाय मोहि नहि सुझा	। को जिय को रघुवर बिनु बूझा ॥
एकहि आंक दई मन माही	। प्रातकास जलहौं प्रभु पाही ॥
यद्यपि मै अनभल अपराधी	। भर मोहि कारन सकल उपाधी ॥
तदपि सरनसुख मोहि देवी	। छमि सब करिहहि छपा विसेवी ॥
सोल सकुच सुठि सरल सुभाऊ	। छपासनेहसदन रघुराऊ ॥
अरिज क अनभल कीन्ह न रामा	। मै बिनु सबक यद्यपि वामा ॥

तुम्हें पाँच मोर भल मानो । आयसु आमिष देख सुबानो  
जहि सुनि विनय मोहि जन जानी । आवहि बडरि राम रजधानी  
दो० । यद्यपि जन्म कमातु तें मैं सठ सदा सदोस ।  
आपन जानि न त्यागिहैं मोहि रघुबीरभरोस । १७६ ॥

चौ० । भरतवचन सब कह प्रिय लागे । रामसनेहसुधा अनु पागे  
लोग वियोग विषमविष दागे । मंच सजीव सुनत अन जागे  
मातु सचिव गुरु पुर भर भारी । सकल सनेह विकल मैं भारी  
भरतहि कहहि सराहि सराही । राम प्रेममूरतिन आही  
तात भरत अथ काहि न कहछ । प्रान समान राम प्रिय अछ  
जो पामर आपनि जड़तारै । तुमहि सुगाइ मर कुटिलारै  
सो सठ कोटिक पुरुष समेता । बसहि कल्प मर गरकनिकेता  
अहि अथ सबगुन अनि नहि गहई । हरै गरल दुख दारिद दहई

दो० । अवसि चलिय बन राम पद भरतमंच भल की ।  
सोकमिधु बूझत सबहि तुम अवलंबन दोन्ह । १७७ ॥

चौ० । भा सब के मन मोद न थोरा । जन घनधुनि स चातक मोरा  
चलव प्रात लखि निर्नय नीके । भरत प्रान प्रिय सबही के  
मुनिहि बदि भरतहि सिर नाई । चले सकल घर रा करारै  
धन्य भरत जीवन जग माहीं । सोलसनेह सरा जाहीं  
कहहि परस्पर भा बहु काजु । सकल चले कर कहि साजु  
जहि राखहि घर रऊ रखवारो । सो जानै अनु मरदनि मारो  
कोउ कह रहन कहिय नहि काछ । को न चहै जग जीवन लाछ

दो० । जगौ सुसंपति सदन सुख सुखद मातु पितु भार ।  
सम्यक् होत जो रामपद करै न मरुज सहाई । १७८ ॥

चौ० । घर घर बाहन साजहि जाना । हथ हृदय परमात पथाना  
भरत जाइ घर कोन्ह बिचार । नगर बाजि गज भवन भंडार  
संपति सब रघुपति के आही । जौ बिनु यतन चलौ तजि ताही  
तौ परिनाम न मोरि भलाई । पापिपिरोमनि सोइ दोहाई  
करहि स्नामिहित सेवक मोई । दूषन कोटि देह किन कोई  
अम बिचारि सुचि सेवक बोले । जे सपनेजं निज धर्म न डोले  
कहि सब मर्म धर्म सब भाषा । जो जेहि लायक सो तह राषा  
करि सब अतन राखिरखवारै । राममातु पद भरत सिधारै

दो० । आरत जमनी जानि सब भरतसनेह मुजान ।  
कहेउ सजावन पालकी सुखद सुखासन जान । १७९ ॥

चौ० । चक चकई दव पुर नरनारी । चलव प्रात घर आरति भारी  
आगत सब निशि भयउ बिहाना । भरत बुलाये सचिव मुजाना

करुण लेख सब तिलक समाज	। बगहिं देव मुनि रामहिं राजू ॥
बेग चलत मुनि सचिव जोहार	। तुरत तुरत रथ मान बंधारे ॥
चरुधारी अरु अग्निनिमाज	। रथ चढ़ि चले प्रथम मुनिराज ॥
विप्रहृन्द चढ़ि बाहन नाना	। चले सकल तपतेजनिधाना ॥
नगर लोग सब सजि सजि याना	। चिचकूट कहं कीन्ह पयाना ॥
मिविका सुभग न जाइ बखानो	। चढ़ि चढ़ि चलत भईं सब रानी ॥

दो० । सौंपि नगर सुचि सेवकनि सादर सबहिं चलाइ ।  
मुमिरि रामविषयरन तब चले भरत दौ भाइ । १८० ॥

चौ० । रामदरसहित सब नर नारी	। अनु करि करिनि चले तकि बारी ॥
बन भिवराम समझि मन माहीं	। मानुन भरत पयाइहिं आहीं ॥
देखि सनह लोग अनुरागे	। उतरि चले दृष गज रथ त्यागे ॥
जाइ समीप राखि निज डोली	। राममातु खुद बागो बोली ॥
तात चढ़त रथ बलि मत्तारो	। होइहिं प्रिय परिवार दुखारो ॥
तुम्हरे चलत चलहिं सब लोग	। सकल लोक हस गहिं मनु योग ॥
मिर धरि बचन चरन मिर गारि	। रथ चढ़ि चलत भईं दौ भाई ॥
तमसा प्रथम दिवस करि बाझ	। दूसर मोक्षतिहोर निबाझ ॥

दो० । पयप्रहार फल अवन दक निमि भोजन दक लोग ।  
करत रामहित नेम व्रत परिहरि भवन भोग । १८१ ॥

चौ० । सदैतोर बसि चले निहाने	। सुगवेरपुर सब नियराने ॥
समाचार सब सुनेउ निषादा	। हृदय विचार करै निषादा ॥
कारन कवन भरतवन जाहीं	। हे कछु कष्टभाव मन माहीं ॥
जापै जिय न होति कुटिखारि	। तो कत कोन्हि संग कटकारि ॥
जानहिं मानुज रामहिं भारी	। करौं चकटकर राज सुखारी ॥
भरत न राजनीति उर आनी	। तब कलक अब जीवनहानी ॥
सकल मरामर जुहिं जुझारा	। रामहिं समर न जोतनिहारा ॥
का आचार्य भरत अस करहीं	। नहिं विषवेसि अमियफल फरहीं ॥

दो० । अब विचारि गृह ज्ञाति मन करुण सब होइ ।  
दृष्टवाक्य बोझ तरनि कीजिय घाटारोइ । १८२ ॥

चौ० । होइ सजोदख रकोइ घाटा	। ठाटइ सकल मरन कै ठाटा ॥
मनुख लोह भरत मनलेख	। जियत न-सुरसरि उतरन देख ॥
समर मरन पुनि सुरसरितीरा	। रामकाज हन भंगु मरीरा ॥
भरत भाइ नृप मै जन मोषु	। बड़े भाग अमि पाइय मोष ॥
स्वामिकाज करिहौं रन रारी	। खसलहु धवल भुवन दमचारी ॥
तजहुं प्राण रघुनाथनिहारे	। दुहं हाथ मुद मोदक मोरे ॥
बाधुसमाज न जा कर लेखा	। रामभक्त मई आमन रेखा ॥



जाय जियत जग सो महिभाऊ । जननीयौवनबिटप कुठाह ॥  
 दो० । विगतविषाद निषादपति सबहि बड़ाय उकाह ॥  
 बुमिरि राम मांगिउ तुरत तरकस धनुष बनाह । १८३ ॥

चौ० । बेगहि भाइ सज्जु संजोऊ । सुनि रजाय कदराय न कोऊ ॥  
 भले नाथ सब कहहि सहर्षा । एकहि एक बड़ावहि कर्षा ॥  
 चले निषाद जुहारि जुहारी । सुर सकल रन हर्षै सुरारी ॥  
 बुमिरि रामपदपंकज पनहीं । भाया बांधि बड़ावहि भनहीं ॥  
 चागरि पहिरि कुंडि पिर धरहीं । फरसा बांस सेक सम करहीं ॥  
 एक कुचल चति ओइन खांडे । कूदहि गगन मगज्ज किति हांडे ॥  
 निज निज साज समाज बनाई । गुह राखतहि जुहारे जाई ॥  
 देखि सुभट सब साथक आने । लै लै नाम सकल सनमाने ॥

दो० । भाइऊ लावऊ धोख जनि चाजु काज बड़ मोऊ ॥  
 सुनि सरोष बोले सुभट बीर अधीर न होऊ । १८४ ॥

चौ० । रामप्रताप नाथ बल तोर । करहि कटक बिनु भट बिनु घोर ॥  
 जियत पांव नहि पाछे धरहीं । हंडमुंडमय मेदिनि करहीं ॥  
 दोख निषाद नाथ भल टोलू । कहैउ बजाउ जुझाऊ डोलू ॥  
 रतना कहत कौंक भर बांधे । कहैउ सकुनिअन्ह खत सुहाये ॥  
 बूढ़ एक कह सगुन बिचारी । भरतहि मिलिय न होइहि रारी ॥  
 रामहि भरत मनावन जाहीं । सगुन कहै अम विग्रह नाहीं ॥  
 सुनि गुह कहै लोक कह बूढ़ा । सहसा करि पकितहिं विमठा ॥  
 भरतसुभावसोल बिनु बूझै । बड़ि हितरानि जानि बिनु जूझै ॥

दो० । गहजु घाट भट मिमिटि सब लेउ मर्म मिलि जाय ॥  
 बूझि भिन्न अरि मथ्यगति तब तस करब उपाय । १८५ ॥

चौ० । कसब सनेह सुभाव सुहाये । बैर प्रीति नहिं दुरत दाये ॥  
 अस कहि भेंट संजोवन लागे । कंद मूल फल खग मांगे ॥  
 मोन पोन पाठीन पुराने । भरि भरि भार कदारन्ह आने ॥  
 सकल साज मजि मिलन सिधाये । मंगल मूल सगुन सुभ पाये ॥  
 देखि दूरि ते कहि निज नामू । कोन्ह मुनोसहिं दंडप्रनामू ॥  
 जानि रामप्रिय दोन्ह असोषा । भरतहि कहैउ ब्रह्माय मुनोषा ॥  
 रामसखा सुनि खंडव त्याग । चले उतरि उमगत अनरागा ॥  
 गांव जातिगुह गांव सुनाई । कोन्ह जुहारि माथ महि लाई ॥

दो० । करत दंडवत देखि तेहि भरत लोन्ह उर लाइ ॥  
 मनऊ लखन सन भेंट भर प्रेम न हृदय समाइ । १८६ ॥

चौ० । भेंट भरत ताहि अति प्रीती । लोग सिद्धाहिं प्रेम कै रीती ॥

धन्य धन्य धुनि मंगलमुखा	। सुर वराहि तेहि बरवधि कृपा ॥
लोक वेद सब भांतिहि जोषा	। जासु झाँह कुर करव धौषा ॥
तेहि भरि अंक रामलघुआता	। मिलत पुनक परिपूरित गाता ॥
राम राम कहि जे समुझाहीं	। तिगहि न पापपुण्य समझाहीं ॥
रहि तौ राम लाव कर कोन्हा	। कुल समेत जगपावन कोन्हा ॥
करमनामनस सुरवरि परई	। तेहि को कहउ सोव नहिं धरई ॥
चखटा नाम जयत जग आसा	। बासमीक भए मझ समाना ॥

दो० । सपथ सवर सब जमन जइ पाँवर कोख किरात ।

राम कहत पावन परम होत भुवनविख्यात । १८० ॥

चौ० । नहिं अचरन युग युग चलि आई	। केहि न दीन्ह रघुबीर वडाई ॥
रामनाममहिमा सुर कहहीं	। सुनि सुनि अवधखोग मुख कहहीं ॥
रामधखहि मिलि भरत सप्रेमा	। पूरहि कुसल सुमंगल हेमा ॥
देखि भरत कर सोल सनेह	। भा निषाद तेहि समय विदेह ॥
सकुच सनेह मोद मन बाढा	। भरतहि पितवत टकटक डाढा ॥
धरि धोरन पद बदि बहोरो	। विनय सप्रेम करत कर जोरो ॥
कुसल मुख पदपंकज पेखी	। मे तिउं काल कुसल निज लेखी ॥
अब प्रभु परम अनुराध तोरे	। सहित कोटि कुल मंगल मोरे ॥

दो० । समझि मोरि करतति कुल प्रभुमहिमा जिय जोर ।

जो न भजै रघुबीरपद जग विधिबंशित मोर । १८१ ॥

चौ० । कपटो कायर कुमति कुजातो	। लोक वेद बाहिर सब भांतो ॥
राम कोन्ह आपन जवहीं तें	। भयेउ भुवनभूषन तबहीं तें ॥
देखि प्रीति सुनि विनय मुहाई	। मिले बहोरि लखनलघुभाई ॥
कहि निषाद निज नाम सुवानो	। सादर सकल जुहारो रामो ॥
जानि लखन सम देहिं अयोसा	। जियइ सुखो सत लाख बरोमा ॥
निरखि निषाद नगरनरनारो	। भये सुखो अनु लखन निहारो ॥
कहहिं लहेउ यह जीवन लोह	। भेंटव रामभाइ भरि बाह ॥
सुनि निषाद निज भागबडाई	। प्रमुदित मन मई चलेउ खिवाई ॥

दो० । सनकारे सेवक सकल चले स्खामिहस पाह ।

घर तह तर घर बाग बन बास बनायेउ जाइ । १८२ ॥

चौ० । सुगवेरपुर भरत दीख जव	। भये सनेहस अंग भियल तब ॥
सोहत दिखे निषादहि लागू	। जन तन धरि विनय अनुराग ॥
रहि बिधि भरत सेन सब संग	। दीख जाइ जगपावन गंगा ॥
रामघाट कह कोन्ह प्रनामा	। भा मन मगन मिले जन रामा ॥
करहि प्रनाम नगरनरनारो	। मुदित ब्रह्ममथ बारि निहानो ॥

करि मञ्जन मांगहि कर जोरी । रामचंद्रपद प्रीति न छोरी ॥  
भगत करैउ मरचरि तब रेनु । सकल सुखद सेवक मरधेनु ॥  
जोरि पालि बर मांगौ एह । सीधरामपद सहज सनेह ॥

दो० । इहि बिधि मञ्जन भरत करि गुरुभक्तमासम पाद ।  
मातु नहानो जानि सब डेरा सले सवाइ । १८० ॥

चौ० । जहं तहं जोगन्ह डेरा कोन्हा । भरत मोध सबही कर लीन्हा ॥  
गुरुसेवा करि आयस पाई । राममातु पहिं गे हौ भाई ॥  
चरन चांपि कहि कहि खुदु बागी । जननी सकल भरत मनमानि ॥  
भाइहि सौंपि मातुसेवकाई । आपु निषादहिं लीन्ह बुलाई ॥  
सखे सखा कर सौं कर जोरे । मिथिल सरीर सनेह न थोरे ॥  
पूकत सखहिं सो ठाँव देखौ । नेकु नयन मनजरनि जुड़ाऊ ॥  
जहंमिय राम लखन निशि सोये । कहत भरे जल सोचनकोये ॥  
भरतबचन सुनि भयेउ विषादू । तुरत तहां लै गयेउ निषादू ॥

दो० । जहं मिथिया पुनोत तह रघुवर किय बिसाम ।  
अति सनेह सादर भरत कोन्हेउ दंड प्रनाम । १८१ ॥

चौ० । कृपसाधरो निहारि सुहाई । कोन्हे प्रनाम प्रदक्षिण लाई ॥  
चरनरेखरज आंखिन लाई । बने न कहत प्रीतिअधिकारी ॥  
कनकबिंदु दुइ चारिक देखे । राखे सीस सीय मम लेखे ॥  
मजलबि लोचन हृदय गलामो । कहत सखा मन बचन सुबानी ॥  
खोहत मोयबिरह दूतिहीना । यथा अवधनरनारि मलीना ॥  
पिता जनक देउ पटतर केही । करतल भोगयोग जग जेही ॥  
अमर भानुकुलभान भुआलू । जेहि मिहात अमराग पालू ॥  
प्राननाथ रघुनाथ गुसाई । जो बड़ होत सो राखे डारै ॥

दो० । पतिदेवता मुनीशमनि सीय साधरी देषि ।  
बिहरत हृदय न हहरि मम पवि ते कठिन बिमोचि । १८२ ॥

चौ० । लासनयोग लखनलघु लोने । भेन भाइ अस अहहिं न होने ॥  
पूजजप्रिय पितुमातुद्वारे । मियरघुबीरहिं प्रानपियारे ॥  
खुदु मूर्ति मुकुमार मभाऊ । ताति बाउ तन लागिन काऊ ॥  
ते बन महहिं विपति सब भांती । निदरे कोटिकुलिस यह कातो ॥  
राम जनमि जग कोनु उजागर । रूपमोल मुखसबगुनसागर ॥  
पूजन परिजन गुरुपितु माता । रामसभाव सबहिं सुखदाता ॥  
बेरिउ रामबुलाई करहीं । बालनि मिलनि विनय मन हरहीं ॥  
सारइ कोटि कोटिसत सेवा । करि न सकहिं प्रभुगनगन सेवा ॥

दो० । मुखस्वरूप रघुवंशमनि मंगलमोदनिधान ।  
ते भोवत कुस उासि महि बिधिगति अति बलवान । १८३ ॥

चौ० । राम मना दुख कान न काज । जीवनतह जिमि जनकन राज ॥  
 एकक नैन फनि मनि जेहि भांती । जगवहिं जगनि सकल दिन राती ॥  
 ते सब फिरेत बिपिनि एकचारा । कदमनफकफलचहारा ॥  
 धिक कै केयि अमंगलमला । भइसि प्रानप्रियतम प्रतिकूला ॥  
 मै धिकधिक अवउदधिं अभागी । सब उतपात भयउ जेहि लागी ॥  
 कुलकुलक करि सजेउ बिधाता । बाँदइओ मोहि कोन कुमाता ॥  
 मुनि मप्रम समझाव निषाद । नाथ करिय कन बादि विषाद ॥  
 राम तुमहिं प्रिय तुम प्रिय रामहिं । यह निरदोष दोष बिधि वामहिं ॥

हं० । बिधि वाम को करनी कठिन जर मातु कोनीं बावरो ।  
 तेहि राति पुनि पुनि करहिं प्रभु बादर सरासन रावरो ॥  
 तुमको न तुम सो राम प्रीतम कहत हौं सोई किये ।  
 परिनाम अंगल जानि अपने जानिये धीरज दिये । ८ ॥

शो० । अंतरजामी राम सकुच सप्रेम लपायतन ।  
 चलिय करिय बिसाम यह बिचार दुइ जानि मन । ७ ॥

चौ० । मखावचन मनि छर छरि धीरा । बास चले मजिरत रघुवीरा ॥  
 यह मधि पाइ नगरनरनारी । चले बिसोकन चारत भारी ॥  
 परदखन करि करहिं प्रमामा । देहि केकेयिहि खोरि निकामा ॥  
 भरि भरि बारि बिसावन संहो । वाम बिधातहिं दूषन देही ॥  
 एक सराहिं भरतमनेह । कोउ कह अपति निबाहेउ नेह ॥  
 नोदहि आपु सराहि निषादहिं । को कहि मकै विमोह विषादहिं ॥  
 दहि बिधि राति सोमसब जागा । मा भिनसार गुजारा लागी ॥  
 गर्हनि मुनाव चढाई मुहाई । नई नाव सब मातु चढाई ॥  
 दंड चारि मइ भा सब पारा । उत्तरि भरत तब सर्वाहिं संभारा ॥

दो० । प्रातक्रिया करि मातुपद बंदि गुरुहि बिर नाद ।  
 आगं किये निषादगन दोन्हेउ कटक चलाई । १८४ ॥

चौ० । कियेउ निषादनाथ अगुवाई । मातुपालको सकल चलाई ॥  
 साथ बलाह भाइ लख दोन्हा । विप्रन्ह सहित गवन गुरु कोन्हा ॥  
 आपु सुरसरिहि कोन्ह प्रनाम । मुमिरे लखन सहित विद्य राम ॥  
 गवने भरत पयादेहि पाये । कोतल संग जाहिं डोरिआये ॥  
 कहहिं भुवेक बारहिं बारा । होइय बाध अमल असवारा ॥  
 राम पयादेहि पाँव सिधाये । हम कहं रथ गज बालि बमाये ॥  
 बिर भर जाउं उचित अस मोरा । सब तें सेवक धर्म कठोरा ॥  
 देखि भरतगति सुनि मृदु वागी । सब सेवकगन गरहिं गलानी ॥

दो० । भरत तोसरे पहर कहं कीन्ह प्रवेस प्रयाग ।  
 कहत रामसिध रामसिध उमनि उमनि अनुराग । १८५ ॥

चौ० । फलका सुलकत पावन कहै । पंकजकोस ओषकन जैसे ॥  
 भरत पयादेहि आये आजू । भये दुखित मुनि सकल समाज ॥  
 खबरि लोन्ह सब लोग अन्हाये । कोन्ह प्रनाम त्रिवेनिहि आये ॥  
 सबहि मितासितनोर अन्हाने । दिये दान महिसुर सममाने ॥  
 देखत स्यामल धवल हिलोरे । पुलकसरोर भरत कर जोरे ॥  
 सकलकामप्रद तोरयगाऊ । वेदविदित जग प्रगट प्रभाऊ ॥  
 मांगौं भोख त्यागि निजधरम । आरत काहे न करहि कुकरम ॥  
 अम जिय जानि सुजानि सुदानो । सफल करौ जगयाचक बानो ॥

दो० । अर्थ न धर्म न काम रुचि गति न चाहौं निर्वाण ।  
 जग जग रति रामपद यह वरदान न आन । १८६ ॥

चौ० । जानहि राम कुटिल करि मोहो । लोग कहौ गुहमाहेबद्रोहो ॥  
 सातारामचरनरति मोरे । अनुदिन बढ़ौ अनुग्रह तोरे ॥  
 जलद जन्म भरि मुरति बिषारे । याचत जल पवि पाहन डारे ॥  
 चातकटनि घटंत घटि जाई । बड़े प्रेम सब भांति भलाई ॥  
 कनकहि बान चढ़ै जिमि दाहे । तिमि प्रीतमपद नेम निबाहे ॥  
 भरतबचन मुनि मांझ त्रिवेनी । भद्र मृदु बानि सुमंगलदेनी ॥  
 तात भरत तुम सब बिधि साधू । रामचरन अनुराग अगाधू ॥  
 बाहि गलानि करऊ मन माहौं । तुम सम रामहिं प्रिय कोउ नाहौं ॥

दो० । तनु पलके हिय हर्ष मुनि वेनिवचन अनुकूल ।  
 भरत धन्य कहि धन्य कहि नभ मुर बरषहिं फूल । १८७ ॥

चौ० । प्रमदित तोरयराजनिवासी । बैपानस बटु गृही उदासी ॥  
 कहहिं परस्पर मिलि दसपांखा । भरत मनेह सोल मुचि सांखा ॥  
 सुनत रामगुनगान सुहाये । भरद्वाज मुनिवर पद आये ॥  
 दंड प्रनाम करत मुनि देखे । मुरतिवंत भाग निज लेखे ॥  
 धाद उठाद लाद उर लोन्ह । दोन्ह अशेष कृतारथ कीन्ह ॥  
 आसन दोन्ह नाद सिर बैठे । चहत सकुच गृह जन भजि पैठे ॥  
 मुनि पूछव कहु यह बड़ सोचू । बोले अपि लखि सोल संकोचू ॥  
 मनुज भरत हम सब मुधि पाई । विधिकरतव पर कहु न बसाई ॥

दो० । तुम गलानि जिय खनि करऊ समझि मातुरकठनि ।  
 तात केकयिहि दोष नहि गई गिरा मति धूनि । १८८ ॥

चौ० । दहौ कहत भल कहिहिन कोऊ । लोकवेदबुधसंमत दोऊ ॥  
 तात तुम्हार बिमल यस नाई । पादहि लोकज वेद बड़ाई ॥  
 लोक वेदसंमत सब कहई । जेहि पितु राज देद सो लहई ॥  
 राज सत्यमत तुमहि सुलाई । देत राज सुख धर्म बड़ाई ॥

रामायन वन प्रवर्गसूक्त । सो मुनि सकल विद्वत्तरुणा ॥  
 सो भावीवस रात्रि चक्षुषी । करि सुखादि चतुर्गुणपतिनामी ॥  
 तदुत्तुम्हार चक्षुष्य अपराधु । कहे सो अधम चक्षुष्य चक्षुषु ॥  
 करनेउ राज तुम्हहि नहि दोष । रामहि होत सुमत संतोषु ॥

ते० । अब अति कोचेउ भरत भक्त तुम्हहि उचित मत एऊ ।  
 एकलसुमंगलसूक्त जन रघुवर चरनखेऊ । १८८ ॥

ते० । सो तुम्हार धन जीवन प्राप्ता । भूरिभान को तुम्हहि समाना ॥  
 यह तुम्हार चक्षुष्य नहि ताता । दशरथसुपुत्र रामप्रियभाता ॥  
 सुमङ्ग भरत रघुपतिमन माहीं । प्रेमपात्र तुम हम कौंच नाहीं ॥  
 लखनराममोतहि अति प्रेमी । निशि सब तुम्हहि सराहत बीती ॥  
 जाना मर्म अन्धात प्रयागा । मगन होहि तुम्हरे अनुसारा ॥  
 तुम पर अब खेह रघुवर के । सुखजीवन जगजस्य करु मर के ॥  
 यह न अधिक रघुवीरबड़ाई । प्रगतकुटुम्बपात्र रघुगर्दी ॥  
 तुम तौ भरत मोर मत येह । धरे देह जनु रामखेह ॥

ते० । तुम कहं भरत कलंक यह हम सब कहं उपदेह ।  
 रामभक्तिरससिंधु हित भा यह समय गनेह । १९० ॥

ते० । नव विधु विमल तात सब तोरा । रघुवरकिंकर सुमद चकोरा ॥  
 उदै सदा अद्यहि कबहू ना । अटिपि न जगमभ दिन दिन दूना ॥  
 कोक चिकोकोप्रोति अति करहीं । प्रभुप्रतापरविह्विति न हरहीं ॥  
 निशि दिन सुखद सदा सब काह । यवहिं न केकचिकरतव राह ॥  
 पूरन राम सुप्रेमपियूष । गदचपमामदोष नहि दूषा ॥  
 राम भक्ति सब अमिय असाह । कोचेउ सुखम सुधा बबुधाह ॥  
 भूप भगीरथ मुरवरि आनी । सुमिरत सकलसुमंगलखानी ॥  
 दशरथगनगन वरनि न जाहीं । अधिक कहा जेहि सम जन नाहीं ॥

ते० । आसु खेहसकोचवस राम प्रगट भे आब ।  
 जे हरद्विधनयनह कबहुं निरखे नाहि अबाब । १९१ ॥

ते० । कीरतिविधु तुम कीन्ह अनूपा । जहं सब राम प्रेमसुगन्धपा ॥  
 तात मलानि करउ निध आये । उरउ दरिद्रिहि पारस पाये ॥  
 सुमङ्ग भरत हम झूठ न कहहीं । सदावीन तापस वन रहहीं ॥  
 सब साधन कर सुखै सुखावा । लखनरामसिधदरसन पावा ॥  
 तेहि फल कर फल दरब तुम्हारा । अहित प्रयाग सुमान हमारा ॥  
 भरत धन्य तुम जग सब लखऊ । कहि अब प्रेम मगन मनि भयऊ ॥  
 सुनि मुनिवचन सभासद हरये । साध सराहि समन मर बचे ॥  
 धन्य धन्य धनि गगन प्रयागा । मनि मुनि भरत मगन अनुसारा ॥

दो० । पत्रकमात हिय राम सिय सजल सरोरह नैन  
करि प्रनाम मुनिमंडलिहि बोले रदगद बैन । २०२ ॥

चौ० । मुनिममान अह तोरणराजु । सांचिउ सपथ अवाह अकाजु  
दहि यल ओ कहु कहिय बनाई । दहि सम नहि कहु अघ अधमाई  
तुम मरवज कहौ मतिभाजु । उरअंतरजामी रघुराजु  
मोहि न मातुकरतव कर भोचु । नहि दुख जिय जग जानहि पोचु  
नाहिन डर बिगरहि परलोकु । पितउ मने कर नाहिन सोचु  
मुकत मयस भरि भुवन मुहाय । लंकमन राम गरिम सुत पाय  
रामबिरह तजि तुम इनभंग । भूपमोच कर कदन प्रसंग  
राम लखन सिय बिन पग पनेही । करि मुनिसेष फिरहि बने बनेही

दो० । अजिनबसन फल अखन महि मयन डासि कुस पात  
बसि तह तर नित सहत दुख हिम तप बरषा वात । २०३ ॥

चौ० । यह दुख दाह दहै नित छाती । भूख न वासर नीद न राती  
यह कुरोग कर औषध नाही । सोधेउ सकल बिसल मन माही  
मातु कुमत बढई अघमला । तेहि हमार हित कीन्ह बसला  
कलि कुकाठ कर कोन्ह कुयंच । गाहि अवधि पढ़ि कठिन कुमंच  
मोहि लगि यह कुठाट तेहि ठाटा । बालिषि सब जग बारहवाटा  
मिटि कुयोग राम फिरि आये । बसै अवध गहि आन उपाये  
भरतवचन मुनि मुनि सुख पाई । सबहि कोन्ह बडु भांति वडाई  
तात करजु जनि सोच बिसेषी । सब दुख मिटिहि र पद देखी

दो० । करि प्रबोध मुनिवर कहेउ अतिथि प्रानप्रिय हं  
कंद मूल फल फूल हम देखि लंजु करि कोऊ । २०४ ॥

चौ० । मुनि मुनिबचन भरतहिय सोचु । भयउ कुशवसर कठिन सकोचु  
जानि गहअ गुरुगिरा वहोरो । चरन बंदि बोले कर जोरो  
भिर धरि आयस करिय तुम्हारा । परम धर्म यह नाथ हमारा  
भरतवचन मुनिवरमन भाये । सुचि सेवक सब निकट बलाये  
चाहिय कोन्ह भरतपञ्जनाई । कंद मूल फल आनऊ जाई  
भले नाथ कहि तिन्ह सिर नाथे । प्रमदिते निज निज काज सिधाये  
मुनिहि सोच पाऊन बड नेवता । तसि पूजा चाहिय जस देवता  
मुनि अधि सिधि अनिमादिक आई । आथम होइ सो करै गुण्ये

दो० । रामबिरह व्याकुल भरत सानुज सकल समाज  
पञ्जनाई करि हरजु सम कहेउ मंदित मुनिराज । २०५ ॥

चौ० । अधि सिधि सिर धरि मुनिवरबानी । बडुभाणिनि आपुहि अनमानो  
कहहि परस्पर सिधिसमूदाई । अतुलित अतिथि रामलखभाई  
मुनिपद बंदि करिय सोइ आजु । होइ सुखी सब राजसमाज  
अन कहि हचिर रचे गृह नाना । जे बिलोकि बिलखहि बिमाना

भोगविभूति भरि भरि राखे । देखत जिनहिं अमर अभिराखे ॥  
दासी दास साज सब लोखे । जगवत रहहिं मनहिं मन दोखे ॥  
सब समाज मजि सिधि फल माहीं । जे सुख सखनेहुं घरपर माहीं ॥  
प्रथमहिं वाम दिखे सब कहौ । सुंदर मुखद बघावहि जेहौ ॥

दो० । बहुरि मपरिजन भरत कहैं अपि आयसु अस दोख ।  
विधिविस्मयदायक बिभव मुनिवर तप बल कीन्ह । २०६ ॥

चौ० । मुनिप्रभाव जब भरत बिलोका । सब सद्य लगे लोकपतिलोका ॥  
मुखममाज नहिं जाद बखानी । देखत बिरति बिचारहिं जानी ॥  
आसन मथन मुखन बिताना । बन बाटिका विषम खन नावा ॥  
सुरभि फल फल अमिय समाना । विमल बखानस विविध विधाना ॥  
असन पान सचि अमित अनी से । देखि सोम सङ्गपात जगो से ॥  
सुरसुरभी सुरत सबहो के । लखि अभिराख सुरेव बघी के ॥  
अतु बसंत बह विविध बयारी । सब कह मुखम पदार्थ चारी ॥  
सक चंदन मुनितादिक भोगा । देखि चर्वविस्मयबल कीना ॥

दो० । बंषति चकई भरत सक मुनिआयसु खेसवार ।  
तेहि निमि आसन पीजरा राखे भा भिनुवार । २०७ ॥

चौ० । कीन्ह निमज्जन तीरथ राजा । नाद मुनिहिं पिर रहित समाजा ॥  
अपिआयसु असोम सिर राखी । करि दंडवत निनय बद्ध भाषी ॥  
पथगति कुमल साथ सब लोखे । पले चिचकृदहि चित दोखे ॥  
रामसखा कर दोखे लागू । चलत देख धरि जन अनुरागू ॥  
नहिं पदचान सीध नहिं काया । प्रेम नेम अत धर्म अमाया ॥  
लघनरामसियपंचकहानी । पकृत मखहिं कहत मृदु बानी ॥  
रामवासथन बिटप बिलोके । उर अनुराग रहत नहिं रोके ॥  
देखिदसा सुर बरवहिं फूला । भर मृदु महि मगु मंगलमूला ॥

दो० । किये जाहिं छाया जलद सखद बहै बर बात ।  
तब मगु भयउ न राम कहैं जस भा भरतहि जात । २०८ ॥

चौ० । जइ चेतन जग जीव घनेरे । जे चितथे प्रभु जिन प्रभु चरे ॥  
ते सब भये परमपदयोग । भरतदरस भेषज भव रोग ॥  
यह बड़ि बात भरत कै माहीं । मुमिरत जिनहिं राम मन माहीं ॥  
बारेक राग कहत जग जेऊ । होत तरनतारन नर तेऊ ॥  
भरत रामप्रिय पुनि लख आता । कब न होइ मगु मंगलदाता ॥  
मिद्ध साधु मुनिवर अस कहहीं । भरतहिं निरखि हय हिय कहहीं ॥  
देखि प्रभाव सुरेवहिं सोचु । जग भल भलहिं पोच कहैं पोचु ॥  
गह सन कहैउ करहु प्रभु खोई । रामहिं भरतहिं भेंट न होई ॥



दो० । राम सकीर्त्तो प्रेमबस भरत सुप्रेमपयोधि ।  
बनी बात विमरन चहत करिष यतन हल सोधि । २०८ ॥

चौ० । वचन सुगत सुरगुरु मुसुकाये । सहस्रनयन बिनु सोचन जाने ॥  
कह गुरु बाहि होम हल झांठु । इहां कपट करि होइय भांठु ॥  
मायापतिसेवक सग माया । करियत उलटि परै सुरराया ॥  
तब कहु कोन्ह रामरस जानो । अब कुचालि करि होइहि हानी ॥  
सुनु सुरेश रघुनाथसुभाऊ । निज अपराध रिसाहिं न काऊ ॥  
जो अपराध भक्त कर करई । रामरोषपावक सो जरई ॥  
लोकजुं वेद बिदित इतिहासा । यह महिमा जानहिं दुरवासा ॥  
भरत बरिष को रामपनेहो । जेहि अप राम राम जपु जेहो ॥

दो० । मनजुं न आनिष अमरपति रघुवरभक्तप्रकाज ।  
अयस लोक परलोक दुख दिन दिन सोकसमाज । २१० ॥

चौ० । सुनु सुरेश उपदेश हमारा । रामहिं सेवक परम पिबारा ॥  
मानत मुख सेवकसेवकाई । सेवकबैर बैर अधिकारी ॥  
यद्यपि सम नहिं राग न रोष । गहहिं न पाप पुन्य गुन दाँष ॥  
कर्म प्रधान बिस्व करि राखा । जो जस करै सो तस फल चाखा ॥  
तदपि करहिं सम विषम बिहारा । भक्तअभक्तहृदय अनुभारा ॥  
अगुन अलेख अमान एकरस । राम सगुन भये भक्तप्रेमबस ॥  
राम सदा सेवकहचिराखो । वेद पुरान साधु सुर साखो ॥  
अस जिय जानि तजऊ कुटिलाई । करऊ भरतपदप्रोति सुहाई ॥

दो० । रामभक्त परहितनिरत परदुखदुखी दयाल ।  
भक्तशिरोमनि भरत तेँ जनि उरपज्ज सुरपास । २११ ॥

चौ० । सत्यसिंधु प्रभु सुरहितकारी । भरत रामआयसुअनुसारी ॥  
स्वारथबिषय विकल तुम होछ । भरतदोष नहिं राउर मोछ ॥  
सुनि सुरवर सुरगुरुवरमानो । भा प्रबोध मन मिटो गलानो ॥  
बरषि प्रसून हृषि सुरराज । लगे सराहन भरतसुभाऊ ॥  
इहि बिधि भरत चले मगु जाहीं । दृष्टा देखि मुनिसिद्ध सिद्धाहीं ॥  
जबहि राम कहि लेहिं उसासा । उमगत प्रेम मनजुं चहुं पासा ॥  
द्रवहिं वचन सुनि कुलिसपवाना । प्रजनप्रेम न जाइ बखाना ॥  
बोच वास करि समुनहिं आवे । निरखि नीर सोचन जल कूपे ॥

दो० । रघुवरवरन बिलोकि बर भारि समेत समाज ।  
होत बिरहवारिधि मगन चड़े विवेकजहाज । २१२ ॥

चौ० । समुनतीर तेहि दिन करि बाख । भयेउ समस सम सबहिं सुपाख ॥  
रातिहि घाटघाट की तरनी । आई अगनित जाइ न बरनी ॥

प्रातः पार भे एकहि खेवा	। तोषे राम सखा करि खेवा	॥
सखे चन्दाद नदिहि गिर नारि	। बाघ निषादनाथ लघु भारि	॥
आगे मुनिवर बाहन चाहे	। राजसमाज जार सब पाहे	॥
तेहि पाहे हौ बंधु पयाहे	। भुवन बचन सब रुति वाहे	॥
मेवक सुहृद सचिवसुत साखा	। सुमिरत सवन सीध रघुनाथा	॥
जहं जहं रामबासबिखामा	। तहं तहं करहि सूर्य प्रनामा	॥

दो० । मगुवासी गर नारि मुनि धाम काम तजि धार  
देखि स्वरूप सनेहस्य मुदित जन्मफल पार । २१३ ॥

चौ० । कहहि सप्रेम एक रक पारी	। राम सवन सखि होहि कि नारी	॥
वय बपु बरन रूप सोद चाखी	। सोल सनेह हरिष सम चाखी	॥
बेच न खो सखि सोय न संगी	। आगे खनी खखी चतुरंगी	॥
नहि प्रसन्न मुख मानस खेदा	। सखि संदेह होत रहि भेदा	॥
ताम तर्क तिथमन मन मानी	। कहहि सकल तोहि सम न मानी	॥
तेहि सराहि बानी फुर पूजो	। बोलो मधुर बचन तिथ दूजो	॥
कहि सप्रेम सब कथाप्रसंग	। जेहि बिधि रामराजरक्षभंग	॥
भरतहि बहुरि सराहन लागी	। सोल सनेह मुभाव सुभागी	॥

दो० । चलत पयाहे खात फल पिता दीन तजि राज  
जात मनावन रघुवरहि भरत सरिस को आज । २१४ ॥

चौ० । भायप भक्ति भरत आचरन	। कहत मुनत दुखदूषनहरन	॥
जो कह कहिय घोर सखि सोई	। रामबंधु अस काहे न होई	॥
हम सब सानुज भरतहि देखे	। भये धन्य युवतीजन केखे	॥
सनि गुन देखि दसा पड़िताही	। केकयिजननिधोग सत नाही	॥
कोउ कह दुषन रानिऊ नाहिन	। विधि सब भाति हमहि जो दाहिन	॥
कहं हम लोकोवेदविधिहीना	। लघुकुलतिथ करतति मलोना	॥
बसहि कुदंश कुगांव कुठामा	। कहं यह दरस पन्थपरिनामा	॥
अस अनंद अचरज प्रति यामा	। जनु मरभूमि कल्पतह जामा	॥

दो० । भरतदरस देखत खुलेउ मगु लोगन्ह कर भाग  
जगु सिंचलवाधिन्ह भयेउ विधिवस मुक्तभ प्रयाग । २१५ ॥

चौ० । निज गुन सहित रामगुननाथा	। सुनत जाहि सुमिरत रघुनाथा	॥
तीरथ मुनिआसन सुरधामा	। निरखि निमज्जहि करहि प्रनामा	॥
मनहीमन मांगहि सर खेह	। सीसरामपदपद्म सनेह	॥
मिलहि किरात कोलह बनबासी	। बैसानस बट यती उदासी	॥
करि प्रनाम पूछहि जेहि तेसी	। केहि बन सवन राम बैदेसी	॥
ते प्रभुसमाचार सब कहसी	। भरतहि देखि जन्मफल सहसी	॥

- जे जन कहहिं कुशल हम देखे । ते प्रिय रामलखन हम खेहे ॥  
 रहि बिधि बृद्धत सबहिं सुजानी । सुनत रामबनवासकहानी ॥
- दो० । तेहि वासर बसि प्रातहीं चले सुमिरि रघुनाथ ।  
 रामदरब को लालसा भरत हरिष सब साथ । १९६ ॥
- चौ० । मंगल सगुन होहिं सब काह । फरकहिं मुखद बिलोचन बाह ॥  
 भरतहिं महित समाज उहाह । मिलिहहिं राम मिटिहि दुखदाह ॥  
 करत मनोरथ अस जिय जाके । जाहिं सनेहसुरा सब हा के ॥  
 मिथिल अंग मग पगु डगि डोलहिं । विह्वल बचन प्रेमबस बोलहिं ॥  
 राममखा तेहि समय देखावा । मैलनिरोमनि सहज मुहावा ॥  
 जामु समीप सरितपयतोर । सीय समेत बंसहिं दौ बीरा ॥  
 देखि करहिं सब दंडप्रनामा । कहि जय जानकिजीवन रामा ॥  
 प्रेममगल अस राजसमाज । अन फिरी अवध चले रघुराज ॥
- दो० । भरतप्रेम तेहि समय जम तम कहि सकी न सेध ।  
 कविहि अंगम जिमि ब्रह्ममुख अहमम मलिन जनेषु ॥ १९७ ॥
- चौ० । सकल मनह मिथिल रघुवर के । गये कोस दूर दिनकर ढरके ॥  
 जल थल देखि वसे निधि बीते । कीन्ह गवन रघुनाथ पिराते ॥  
 उहाँ राम रजनीअवमेखा । जागे भीष रूपन अस देखा ॥  
 महित समाज भरत अनु आये । नाथविद्योग ताप तनु ताये ॥  
 सकल मलिनमन दोन दुखारी । देखी सामु आन अनुहारी ॥  
 भुनि मियमपन भरे जल जोचन । भये सोचबस सोचबिभीचन ॥  
 लपन मपन यह नोक न छोई । कठिन कुचाह मनाइहि कोई ॥  
 अस कहि बंधु समेत अन्हाने । पूजि पुरारि साधु मनमाने ॥
- कं० । मनमानि मुर भुनि बंदि बैठे उतर दिसि देखत भये ।  
 नभ धूरि खग मृग भूरि भागे बिकल प्रभुआत्मन गथे ॥  
 तुलसी उठे अबल्लोक कारण काह चित बचकित रहे ।  
 सब समाचार किरात कोल्हन आद तेहि अवसर कहे । १९८ ॥
- सो० । सुनत सुमंगल बेन मन प्रमोद तनु पुलकभर ।  
 सरदभरोहहैन तुलसी भरे सनेहजल । १९९ ॥
- चौ० । वज्रि मोचवस भे धियरमनू । कारण कवन भरतआगमनू ॥  
 एक आद अस कहा बहोनी । सेन संग चतुरंग न घोरी ॥  
 सो मनि रामहि भा अति मोचू । इत पितुवच उत बंधमकोचू ॥  
 भरतमुभाव समुझि मन माहीं । प्रभुचित हित धिति पावत नाहीं ॥  
 समाधान तब भा यह जाने । भरत कहे महं बाधु मयाने ॥  
 लघन लखेउ प्रभुददखसभाह । कहत समय सम नीति बिषाह ॥  
 बिन पके कक कहउ नुपाई । सेवक समय न ढीठ टिठाई ॥

तुम सर्वज्ञ विरोधनि शाली । आपनि समझि कहौ चमत्कारी ॥

दो० । नाथ कहइ सुठि कसकचित सोलसनेहनिधान ।  
कब पर प्रीति प्रतीति जिय जानिय आपु समान । ११८ ॥

चौ० । बिषयी जीव पार प्रभुतार । मूढ मोहबध होइ जगार ॥  
भरत नीतिरत बाधु बुजाना । प्रभुपद प्रेम सकल जग जाना ॥  
तऊ आजु राजपद पार । सब धर्ममग्याद मिटार ॥  
कुटिल कुबंघु कुअवरताकी । जानि राम बन बाध एकाकी ॥  
करि कुमंज मन बाजि समान । आय करन चरटक राज ॥  
कोटि प्रकार कसपि कुटिलार । आय दख बटोरि दौ भाई ॥  
जो जिय होति न कपट कुचाली । कहि सोहात रय बाजि गजाली ॥  
भरतहि दोष देह को जाये । जग बौराद राजपद पाये ॥

दो० । सखि मूढतिथयामो नऊख चढ़उ भूकिसरधान ।  
लोक वेद ते बिमुख भा अधम को बेनु समान । ११८ ॥

चौ० । सहसबुद्ध सुरनाथ निषंकु । कहि न राजमद दोष कलंक ॥  
भरत कीन्ह यह उचित उपाज । रिपु रन रंच न राखब काज ॥  
एक कीन्ह नहि भरत भलाई । निदर राम जानि सबवाई ॥  
समझि परिहि सो आजु बिसेषी । समर सरोच रामदख देषी ॥  
इतना कहत नीतिरस भूला । रनरसबिष्ट पलक जमि फूला ॥  
प्रभुपद बंदि सोम रज राघी । बोले मध्य सहज बल भाषी ॥  
अनुचित नाथ न मानब मोरा । भरत हमहि उपचार न थोरा ॥  
कहं लखि सहिय रहिय मन मारे । नाथ साथ धनु हाथ हमारे ॥

दो० । कविजाति रघुकुलजनम रामअनुज जग जान ।  
लातऊ मारे चहत बिर नीच को धूरि समान । ११९ ॥

चौ० । उठि कर ओरि रजायसु मांगा । मनऊ बीररस मोहत जागा ॥  
बांधि जटा बिर कटि कसि भाषा । माजि सरासन सायक हाथा ॥  
आजु राममेवकथस खोज । भरतहि समर सिखावन देऊ ॥  
रामनिरादर कर फल पार । सोवजु समरमेज दौ भाई ॥  
आइ बना भल सकल समाज । प्रगट करौ रिस पाकिनि आजु ॥  
जिमि करिनि कर दखे मृगराजु । खेद कपेटि लवा जमि बाजु ॥  
तैमहि भरतहि सेग समेता । कानज निदरि निपातौ खेता ॥  
जो सहाय कर बंकर आई । तदपि हतौ रन रामदोहाई ॥

दो० । अति सरोच भाषे लखन लखि सनि सपथप्रमान ।  
समय बिलोकत लोकपति चाहत अभरि भगान । १२० ॥

चौ० । जग भै मगन मगन भै बानी । लखनबाजुबल बिपल बखानी ॥

तात प्रताप प्रभाव तुम्हारा	। को कहि सक को जाननिहारा
अनुचित उचित काज कहु होई	। समझि कहि भल कह सब कोई
सहसा करि पाके पक्षितार्थी	। कहहिं वेद बुध ते बुध नार्थी
मुनि मुरबचन लखन मकुचाने	। राम सीध सादर सममाने
कहो तात तुम मोति सुहार्द	। सब ते कटिन राजमद भारी
जो अंचवत मातहि नष्ट तेई	। नाहिन साधुसभा जिन्ह सेई
सुनऊ लखन भल भरत सरीखा	। बिधिप्रपंच महं सना न दीखा

दो० । भरतहि होइ न राजमद बिधिहरिहरपद पाद ।

कबहुं कि कांजीसोकरनि कीरभिंधु बिनसाद । २१२ ॥

चौ० । तिनिर तहन तरनिहिं सक गिछई	। गगन मगन मकु मेघहिं मिछई
गोपदजल बूझिं घटयोनी	। सहज कसा न काड़िं कोनी
मसकफूक वर मेद उड़ाई	। होइ न नष्टमद भरतहिं भारी
लखन तुम्हारे सपथ पितृआना	। सुधि सुबंधु नहिं भरत समाना
सगुन कीर अवगुन जल ताता	। मिसे रचे परपंच बिधाता
भरत हंस रविबंस तड़ागा	। जनमि कोन्ह गुन दोष विभागा
गहिं गुन पय तजि अवगुन बारी	। निज यस जगत कीन्ह उजिआरी
कहत भरत गुनसीलसुभाज	। प्रेमपयोधि मगन रघुराज

दो० । सुनि रघुवरबानी विबुध देखि भरत पर हेतु ।

सकल धराहत राम सो प्रभु को कृपानिकेतु । २१३ ॥

चौ० । जौ न होत जग जका भरत को	। सकल धरमधुर धरनि धरत को
कबिकुल अमम भरतगुनगाथा	। को जानै तुम बिनु रघुनाथा
लखन राम सिध मुनि सुरबानी	। अति मुख लहेउ न जाइ बखानी
इहां भरत सब सहित सुहाये	। मंदाकिनी पुनीत अहाये
सरित समीप राखि सब खोगा	। मांगि मातुगदसचिवनियोगा
चले भरत जहं सिध रघुराई	। साथ निवाइनाय लघु भारी
समझि मातुकरतब सकुषार्थी	। करत सुतकं कोटि मन माहीं
राम लखन सिध मुनि मम नाजं	। उठि जनि अनत जाहिं तजि ठाजं

दो० । मातुमते महं जानि मोहिं जो कहु करहिं सो घोर ।

अथ अवगुन तजि सादरहिं समझि आपनी ओर । २१४ ॥

चौ० । जौ परिहरहिं मखिनमन जानी	। जौ समानहिं सेवक मानी
मोरे सरन राम की पनहीं	। राम सुखामि दोष सब जनहीं
जग यसभाजन चातक मीना	। नेम प्रेम निज निपुन मनीना
अथ मन गुनत चले मगु जाता	। सकुच सनेह सिधिल सब गाता

जेरति मनजं मातृकृत खोरो । चलत भक्तिवत् धीरं जधोरो ॥  
जव ममुप्रहिं रघुनाथमुभाज । तव पथ परत लतावत् पाज ॥  
भरतदसा तहि चवसर कैसी । जलप्रवाह जलप्रसिगति जैसी ॥  
देखि भरत कर खोच सनेह । भा निषाद तिहि सभस बिदेह ॥

१० । लगे होन मंगल सगुन सुनि गुनि कहत निषाद ।  
मिटिहि खोच होरहि हरष पुनि परिनाम विषाद । १२५ ॥

१० । सेवक बचन सत्य सब जाने । आसुस निकट जार निबराने ॥  
भरत दोख वनचैलसमाज । मरित कुधित जग पार मजाज ॥  
इतिभौति जग प्रजा दुखारो । विविधताप पोहित पथ भारो ॥  
जार सुराज सुदेस मुखारी । भई भरतगति तहि चवसारी ॥  
रामबामदन संपति भ्राजा । सुखी प्रजा जग पार सुराजा ॥  
मखिव विराग बिदेक नरेसु । विपिन महावन पावन देख ॥  
भट कमनोख सैल रजधानी । मांति समति सचि मंदिर रानी ॥  
सकल गंग संपन्न सुराज । रामचरनचास्ति चित चाज ॥

१० । जोति मोहमहिपाकदस सहित बिदेक भुषाव ।  
करत चकंटक राज पुर सुख संपदा सुकाव । १२६ ॥

१० । वनप्रदेस मनिबाध खनेरे । जग पर नगर गाव नग खेरे ॥  
विपुल विविध विरग मृग जाना । प्रजासमाज न जार बखाना ॥  
खरहा करि हरि बाध बराहा । देखि मरिष हुक बाज बराहा ॥  
बैर विहाद चरहिं एक बंजा । जहं तरुं जगज्जं बेन चतुरजा ॥  
सरना सरहिं मन नज नाजहिं । मनजं निखान विविधविधि बाजहिं ॥  
चक चकोर चातक युक्त पिकनन । कुजत मंजु मराज महितजन ॥  
अलिजन गावन बावन मोरा । जग मराज मंगल चक्र योग ॥  
बेलि बिटप हन धक्कल चक्रका । सब समाज मुदमनकमका ॥

१० । रामसैलकोभा निरखि भरतचटय प्रति प्रेम ।  
तापकलपकल पाद जिमि सुखी विराने बेम । १२७ ॥

१० । तव केवट जंचे चरि जारि । कहा भरत वन भुजा उठारि ॥  
नाथ देरु यह विपट विराहा । पाकरि जग रयाक तमाका ॥  
तिह तदवगुन मख बट खोहा । मंजु विराज देखि मन मोहा ॥  
नोक सखन पकल फल काहा । अविचल हाँस मखद सब काहा ॥  
मानजं तिमिरचदनमवगाही । विरही विधि उकेलि मजमा जो ॥  
तहि तह उरित समीप गुहाई । रघुवर वरन कट्टी जहं काई ॥  
तुलसीतदवर विविध यथाये । कज मिथपिच कज कवन कगाये ॥  
बटहावा खेदिका बनारि । सिय निजपानिखरोज बहाई ॥

दो० । जहं बैठे मुनिगन सहित नित सियराम सुजान ।

सुनिहिं कथा इतिहास सब आगम निगम पुरान । २९८ ॥

चौ० । सखा बचन सुनि बिटप निहारी । उमगे भरत विलोचन भारी ॥  
 करत प्रनाम सबे दौ भारी । कहत प्रीति मारद सकुचारी ॥  
 हर्षहि निखि रामपदचंका । मानहुं पारस पायेउ रंका ॥  
 राज सिर धरि दिय नैननि लावहि । रघुवरमिलन सरिस मुख पावहि ॥  
 देखि भरतगति अकथ अतीवा । प्रेम मगन मृग खग जड़ जीवा ॥  
 सखहि मनेहबिबस मग भूला । कहि सुपथ सुर वरवर्धि फूला ॥  
 निरखि मित्र साधक अनुरागे । सहज मनेह सराहन लागे ॥  
 होत न भूतल भाव भरत को । अचर सचर चर अचर करत को ॥

दो० । प्रेम अमिय मंदर विरह भरत पयोधि गंभोर ।

मयि प्रगटे सुरसाधु हित हपामिधुं रघुबीर । २९९ ॥

चौ० । सखा समेत मनोहर जोटा । सखउ न लखन सखन वन ओटा ॥  
 भरत दोख प्रभुआसम पावन । सकल सुमंगलसदन सुहावन ॥  
 करत प्रबंध मिट दुखदावा । जनु वीणो परमारथ पावा ॥  
 देखे भरत लखन प्रभु आगे । पूहुत बचन कहत अनुरागे ॥  
 सीध जटा कटि मुनिपट बांधे । तेन कैसे कर धनु कांधे ॥  
 वेदी पर मुनिसधु समाज । सीध सहित र रघुराज ॥  
 बल कलबसन जटिल तन स्त्रामा । जनु मुनिबेष को रति कामा ॥  
 करकमलन धनु बाधक फेरत । जो को जरनि ह दसि डेरत ॥

दो० । लखत मंजु मुनिमंडली मध्य सीध रघुनंद ।

जानवभा जनु तनु धरे भक्ति सचिदांगद । ३० ॥

चौ० । सानुज सखा समेत मगन मन । बिसरे हर्ष सोक मुखदुखगन ॥  
 पाहि नाथ कहि पाहि गुसाई । भूतल परे सखुट को नाई ॥  
 बचन सप्रेम लखन पछिछाने । करत प्रनाम भरत जिय जाने ॥  
 बंधुमनेह सरस दहि ओरा । उत साधिवीवाबरजोरा ॥  
 मिलि न जाइ नाहि गुदरत बनई । कवि लखनमन की गति भनई ॥  
 रहे राखि सेवा पर भाऊ । सटो चंग जनु खैच खेसाऊ ॥  
 कहत सप्रेम नाइ महि माछा । भरत प्रनाम करत रघुनाथा ॥  
 सटे राम मुनि प्रेम अधीरा । कहुं पट कहुं निबंध धनु तीरा ॥

दो० । बरबस लिये छठार उर लाखे हपानिधान ।

भरत राम की मिलनि लखि बिसरेउ सबहि अपान । ३०१ ॥

चौ० । मिल जगोति किमि जाइ बखानी । कवि सुलखनम कर्म मन बानी ॥  
 परम प्रेमपूरन दौ भारी । मन बुधि चित सबमिति बिसराई ॥

कहहु मनेम प्रगट को करई । केहि हाथा कबिमति जगुवरई ॥  
 कविहि चर्यआखरवख खाँचा । जगुवर ताकमतिहि नट नाचा ॥  
 जगम सनेह भरत रघुवर के । जह न जाइ मन बिधि हरि हर के ॥  
 सो मै बरनि कहौ केहि भाँतो । बाजु बराम कि गाइरताँतो ॥  
 मिलनि बिलोकि भरत रघुवर को । सुगम सभय धुकधकी धरकी ॥  
 समझाये मर मुख जड़ जागे । बरपि प्रसून प्रमथन लागे ॥

दो० । मित्रि मनेम रिपुसुदनहि केवट भेटेच राम ।

भूरि भाइ भेटे भरत सकिमन करत प्रनाम । १८२ ॥

चौ० । भेटे उ सवन लखकि खलु भाई । बज्रि निबाह सोन कर लाई ॥  
 पुनि मुनिगन दुष्ट भाइन्ह बड़े । अभिमत चाचिय पाइ जगई ॥  
 मानुज भरत उमनि जगुरागा । धरि मिर बिद्य पदपद्मपरागा ॥  
 पुनि पुनि करत प्रनाम छढाये । बिद्य करकमल परसि बैठाये ॥  
 साय पसाय दोन्ध मंग माहीं । मगन सनेह देहमधि न जाँ ॥  
 सब बिधि सानुकूल खसि सीता । भे चलोच कर अपउर बीता ॥  
 कोउ कहु कहँ न कोउ कहु पूछा । प्रेमभरा मन निज न न छुछा ॥  
 तेहि जगवर केवट धीरज धरि । जोरि पाणि बिलवत प्रनाम करि ॥

दो० । नाथ साय मुनिनाथ के मातु लकन पुरकोन ।

सेवक सेनप साँचव सब साय बिलक विवोग । १८३ ॥

चौ० । सीलसिंधु मुनि गृहपागमन । सीध समीप राखि रिपुदमन ॥  
 चले सबग राम तहि काळ । धीर धर्मधुर दोनदयाला ॥  
 गृहि देखि सानुज जगुरागे । दंडप्रनाम करन प्रभु लागे ॥  
 मुनिवर भाइ खिये कर लाई । प्रेम उमनि भेटे दो भाई ॥  
 प्रेम पलकि केवट केहि नाम । कोन् दूर ते दंडप्रनाम ॥  
 रामबन्दा खसि बरवस भेटे । जगु मरि छूटत सनेह समेटे ॥  
 रघुपतिभक्ति सुमंगलमुखा । नभ सराहि मुर बरवसि फुला ॥  
 दहि सम निपट मोच कोउ माहीं । बड़ बसिष्ट सन को जग माहीं ॥

दो० । जेहि खसि सवनज ते अधिक मिसे मुदित मुनिराज ।

सो सीतापतिभजन को प्रगट प्रतापप्रभाज । १८४ ॥

चौ० । चारत सीन राम सब जाना । कदनाकर मुजान भगवाना ॥  
 जो जहि भनि रहा अभिकापी । तेहि तेहि की तेसी दहि राकी ॥  
 सानुज मिलि पल मरि सब काज । कीन् दूरि दुख दाहन दाज ॥  
 यह भनि बात राम कै माहीं । जिमि चट कोटि एक गविकाहीं ॥  
 मिलि केवटहि उमनि जगुरागा । परजन सकल बराहसि भागा ॥  
 देखो राम दुखित महतारी । जगु मुनेजिपवकी हिम मारी ॥



प्रथम राम भेंटे कैकेई । सरल समाव भक्ति मति भई ॥  
 पग परि कोन्ह प्रबोध बहोरी । काल कर्म विधि सिर धरि खं री ॥  
 दो० । भेंटे श्रुवर मातु सब करि प्रबोध परितोष ।

अब ईशआधीन जन काऊ न दइय दोष । २२५ ॥

चौ० । गहतिथपद बदे दौ भाई । सहित विप्र तिय जे संग आई ॥  
 गग गौरि सम सब सममानो । देहिं असोस मुदित सुदु बानी ॥  
 गहि पद लखे सुमिनाथका । जन भेंटो संपति अति रंका ॥  
 पुनि जननी चरनन्ह हौ भ्राता । परे प्रेम आकुल सब गाता ॥  
 अति अनुगमन चंद उर आये । नयन सनेहसलिल आनवाये ॥  
 तेहि अवसर कर सखे बिषाद । किमि कबिकहे मूक जिमि स्वाद ॥  
 मिलि जननिहिं सानुज चराऊ । गुरु सन कहैउ कि धारिष पाऊ ॥  
 पुरजन पाह मनोबलिनबोग । जल छल तकि तकि उतरे खोग ॥

दो० । महिसुर मची मातु गुरु गने लोग लिये साथ ।

पावन आसन गमन किय भरत लघन रघुनाथ । २२६ ॥

चौ० । सोय आइ मुनिवरपग लागी । उचित असोस लही मन मांगी ॥  
 गुरुपतिनिहिं मुनितियन्ह समेता । मिलि सप्रेम कहि जाइ न जेता ॥  
 बंदि बंदि पद सिध सबही के । स मित्रवन लहे प्रिय जो के ॥  
 साम सकल जब सोय निहारी । मंदेउ नयन सहमि सुकुमारी ॥  
 परी बधिकवध मनजुं मराखी । काह कीन्ह करतार क्वाखी ॥  
 तिनहसिय निरखि निपट दुख पावा । सो सब सहियजो देव महावा ॥  
 जनकसुता तब डर धरि धोरा । नीलनलिनलोचन भरि मोरा ॥  
 मिली सकल सासुन्ह मिय जाई । तेहि अवसर कहना महि छाई ॥

दो० । लागि लागि पग सबनि मिय भेंटति अति अनुगम ।

हृदय असोसहिं प्रेमवध रहिहऊ भरो दोहाग । २२७ ॥

चौ० । बिकल सनेह सोय सब रानी । बैठन सबहिं कहैउ गुरु ज्ञानी ॥  
 प्रथम कहौ जगगति मुनिजाया । कहैउ कहुक परमारथगाथा ॥  
 रूप कर सुगुणगमन सुनावा । सुनि रघुनाथ दुसह दुख पावा ॥  
 मरनहेतु निज नेह बिचारो । भे अति बिकल धोर धुरधारी ॥  
 कलिस कटोर सुनत कहु बानी । बिलपत लघन सोय सब रानी ॥  
 सोक बिकल अति सकल समाज । मानजुं राज सकजेउ आज ॥  
 मुनिवर बहुरि राम समुदाये । सहित समाज सुसजित आनवाये ॥  
 प्रत निरबु तेहि दिन प्रभु कोन्हा । मुनिजुं कहै जल काऊ न खोन्हा ॥

दो० । भोर भये रघुनंदनहिं जो मुनि आसुस दीन्ह ।

खड़ा भक्ति समेत प्रभु सो सब सादर कोन्ह । २२८ ॥

शौ० । करि पितृक्रिया वेद अति करनी । भेदुनीत पातकतमतरणी ॥  
 आसु नाम पावक अथ तूखा । सुमिरत सकल सुमंगलमूखा ॥  
 सुहृ मो भवेत्तु साधुव्रत अथ । तीक्ष्ण आवाहन सुरचरि अथ ॥  
 सुहृ भये दुह वासर नीते । बोधे गृह वन राम पिरीते ॥  
 नाथ लोग सब निपट दुखारी । कन्द मूल फल अंबु चवारी ॥  
 मानुज भरत अचिन्त सब साता । देखि मोहिं एक जमि पुन जाता ॥  
 सब समेत परभारिष पाक । आपु रक्षा समरावति राक ॥  
 वज्रत कहेई सब किछेई डिगई । उचित होइ तब करिष मुगई ॥

शौ० । भर्मेष्टु कदवाधतन कय न कइउ अथ राम ।

खोन दुखित दिन दुर दरस देखि कइहि निधान । १८८ ॥

शौ० । रामवचन सुनि सभस्य समाम् । जय सकलधि सन्धिकस्य कवाम् ॥  
 सुनि मनिमिरा सुमंगलमूखा । भयेउ मगउ मारत अमकसा ॥  
 पावनपय तिऊ काक अन्दाहीं । जेहि बिक्रीकि अथभीच नवाहीं ॥  
 मंगलमूरति लोचन भरि भरि । निरखहिं हरवि दंडवत करि करि ॥  
 राम मैल वन देखन जाहीं । अष्ट मुख सकल सकल दुख नाहीं ॥  
 झरगा झरहिं सुधा सम बारो । विविध ताव हर विविध बधारी ॥  
 बिटप बेलि वन अगमित जाती । फल प्रदुन पक्षय वज्र भाती ॥  
 मुंदरि सिका सुखद तरङ्ग ही । आइ वरनि वनकवि कोहि पाहीं ॥

शौ० । सरनि सरोवर जलविहग कुजत मञ्जत भुज ।

बैरविगत बिहरत बिपिनि मृग विहंग वज्ररज्ज । १८९ ॥

शौ० । कोल्ह किरात भोल वनवासी । मधु सुचि सुंदर स्नादु सुधा सी ॥  
 भरि भरि परन कुटो रचि करी । कंद मूल फल अंबुजगरी ॥  
 सबहि देखि करि विनय प्रनामा । कहि कहि स्नाद भेद गुन नामा ॥  
 देखि लोग वज्र मोल न खेहीं । फेरत रामदोहाई देखी ॥  
 कहहिं सनेहमगन मृदु यात्री । मानत साधु प्रेम पहिचानी ॥  
 तुम सुकती हम मोच निषादा । पावा दरसन रामप्रसादा ॥  
 हमहिं अगम अति दरस तुम्हारा । अम मरुधरनि देवधरिधारा ॥  
 राम कृपाक निषाद नेवाजा । परिजन प्रजा अहिय सब राजा ॥

शौ० । यह जिय आनि सकोच तजि करिय कोई लखि नेऊ ।

हमहिं कतारथ करन लखि फल वन अंबुज खेड । १९० ॥

शौ० । तुम प्रिय पाऊन वन पगु धारे । सेवायोग न भाग्य हमारे ॥  
 देव कहा हम तुमहिं मुगई । ईश्वर पात किरातमिताइ ॥  
 यह हमारि अति बड़ि सेवकाई । खेहि न बावन बधन पुराई ॥  
 हम अड़ जीव जीवगनपाती । कुटिल दुखाकी कुमति कुजाती ॥

- पाप करत निमि वासर जाहीं । नहिं पट नहिं पेट नहिं पेट चघाहीं ।  
 खानेहु धर्मवद्धि कस काऊ । यह रघुनन्दनदरसप्रभाऊ ।  
 जग ते भूदपस निहारे । मिटे दुमद दुख दोष हमारे ।  
 बचन सुनत परजन अनुरागे । तिन्ह के भाग सराहन लागे ॥
- ह० । लागे सराहन भाग सब अनुरागबचन सुनावहीं ।  
 बोलनि मिलनि सियरामचरनमनेह लखि सुख पावहीं ॥  
 नर नारि निदरहिनेह निज सुनि कोलहभिलग्न को गिरा ।  
 तुलसी छपा रघुवंसमनि को जोह लै नौका तरा ॥ १० ॥
- सो० । बिहरहिं वन चहुँ ओर प्रति दिन प्रसादत लोग सब ।  
 जल ज्यों दादर मोर भये पोल पावसप्रथम ॥ ८ ॥
- चौ० । पुनरनारि मंगल अति प्रीती । वासर जात सक सम बीती ।  
 सोय सासुप्रतिवेच बनाई । सादर करहिं शरित सेवकाई ।  
 लखान मर्म राम किनु काह । मया सब भिय भया नाह ।  
 सोय सासु सेवावस कोनो । तिन्ह लखि सुख भिख खासिब दोन्ही ।  
 लखि भिय सहित रघुनन्दन दो भाई । कुटिल गनि पक्षिताद अघाई ।  
 अब जिय मधिं साधति कैकरी । मोहि न सोय विधि मोच न देई ।  
 लोकज वेद विदित कवि कहहीं । रामविमुख यल नरक न लहहीं ।  
 यह संसय सब के मन माहीं । राम गवन बिधि अवध कि नाहीं ॥
- दो० । निज न नौद नहिं भूख दिन भरत विकल सति सोच ।  
 मोच कोच बिच मगन जस मोनहिं सलिलसकोच ॥ १४९ ॥
- चौ० । कोन्हि मातुमिनु काल कुचाखी । रतिभोति जस पाकत माखी ।  
 कहि विधि होइ रामअभिवेकु । मोहि अब करत उपाय न एकू ।  
 अबसि फिरहिं गुरुवायसु मानो । मुनि पुनि कहव रः चि जानो ।  
 मातु कहें बज्रहिं रघुनाऊ । राम ननि हठ कः कि काऊ ।  
 मोहि अनुसर कर कतिक बात । तेहि महं कुममर राम विधाता ।  
 जो हठ करौ तो निपट कुकरमू । हरगिरि तं गुरुमेवकधरमू ।  
 एको सुक्ति न मन ठहरानो । मोचत भरतहिं रैनि सिरानो ।  
 प्रात अग्राह प्रभुहिं सिर लाई । बैठत पठय अथय सुलाई ॥
- दो० । गुरुपदकमल प्रनाम करि बैठे आयस पाद ।  
 विप्र महाजन कवि सब जुरे सभासद आद ॥ १५१ ॥
- चौ० । दोखे मुनिवर सकय समना । सुगऊ सभासद भरत सुजाना ।  
 धर्मधुरीन भानुकुभाजू । राजा राम खलव भगवानू ।  
 सत्यभिधु पाखक सतमेतू । रामजका जन मंगलहेतू ।  
 गुरु पितु मातु बचनअनुसारी । खलदखलन देवहितकारी ।  
 मोति प्रीति परमारथ स्तारय । कोउ न राम सम जान यथारथ ॥

- विधि हरि हर वचिरवि दिशिपासा । माया जीव करम कलिकासा ॥  
 वरिष मरिष जहं कमि प्रभुताई । योग भिक्षु निगमानम गाई ॥  
 करि विचार जिय देखहु नाके । रामरजाय जीव सबको के ॥
- १० । रामे रामरजायहस हम सब कर हित होइ ।  
 समष्टि सखाने करहु सब सब मिलि संमत होइ । २४४ ॥
- १० । सब कहं सुखद रामचभिषेक । मंगलमंग मोह मंग एक ॥  
 केहि विधि अवध सबहिं रघुराई । करहु समष्टि होइ करे उपाई ॥  
 सब सादर सुनि मुनिवरबागो । नव परमारज साराख बागो ॥  
 उत्तर न पाव लोग भे भोरे । तब छिग नाइ भरत कर जोरे ॥  
 भानुवस भे भूप घनेरे । अधिक एक ते एक बदेरे ॥  
 ज्योहेतु सब कहं पितु माता । कर्म सुभासुभ देर विधाता ॥  
 देखि देखस्यै सकल कल्याणा । चनि चयोव राखि जम जाना ॥  
 सो गुहाइ विधिमति जेह देकी । सबै को टारि टेक को टेकी ॥
- १० । बलिव मोहिं उपाव सब को सब मोर चभाज ।  
 सुनि बनेदमय बचन नरु हर उपका कनुराज । २४५ ॥
- १० । तात बात करि रामकथा हो । रामबिमुख सुख अपनेहु नाही ॥  
 सकुचौ तात कहत एक बाता । सरध तजहिं बंध सरबस जाता ॥  
 तुम्ह कानन मगनहु हो भाई । फिरिहं कहन चौथ रघुराई ॥  
 सुनि सुभ बचन हर्ष हो भाता । भे प्रभोद परिपूरन गाता ॥  
 मन प्रसन्न तन तेज विराजा । जगु जिय राउ राम भे राजा ॥  
 बज्रत जाम लोगन्ह लखु हानो । सम देख सुख सब रं वधिं रानो ॥  
 कह हं भरत मुनि कह। सो कोण्डे । फल जग जीवन चभिमत दीण्डे ॥  
 कानन करहुं जग भरि बास । रहि ते अधिक न मोर सुपास ॥
- १० । चंतजामो राम सिख तुम सरबज सुजान ।  
 जौ फर कहहुतो नय निज कीजिय बचन प्रमान । २४६ ॥
- १० । भरतबचन सुनि देखि घनेहु । सभा बहित मुनि भयेव पिदेहु ॥  
 भरतकीकर्महिमा जलनामो । मनि मति ठाढ़ि तीर चबसा की ॥  
 गा वह पार जतन बज्रु हेरा । पवति नाव न बोहिन बेरा ॥  
 और करहिं को भरतबड़ाई । सरभिषोप को सिंधु बसाई ॥  
 भरत मुनिहि मन भीतर पाये । बहिन समाज राम वह पाये ॥  
 प्रभु प्रनाम करि दोन्ह सुखायन । बैठे सब सुनि मुनिचमकायन ॥  
 बोले मुनिवर बचन विचारो । देख काळ अवसर चलचारो ॥  
 सुनहु राम सरबज सुजाना । धर्म नीति गुन ज्ञान निधाना ॥
- १० । सब के पर चंतर बज्रु जानहुं भाव कभाप ।  
 पुरजन जनको भरत हित होइ सो कहिय उपाव । २४७ ॥

चौ० । भारत कहहि बिचारि न काज । सुख जुआरिहि आपन दाज  
 मुनि मुनिवचन कहत रघुगज । नाथ तुम्हारेहि हाथ उपाज  
 सब कर हित रख राउर राखे । आयसु करिय मुदित फर भाखे  
 प्रथम जो आयसु मो कह होई । माथे मानि करौं सिख मोई  
 पनि जेहि कह जस होव रजाई । सो सब भांति करिहि सेवकाई  
 कह मुनि राम सत्य तुम भाषा । भरत सनेह बिचार न राषा  
 तेहि ते कहौ बहोरि बहोरो । भरतभक्ति मै मम मति भोरो  
 मोरे जान भरतहवि राखी । जो कीजिय सो सुभ सिव साखी

दो० । भरतविनयमादर सुनिय करिय बिचार बहोरि ।  
 करब साधुमत लोकमत नृप नय निगम निचोरि । २४८ ॥

चौ० । गुरुभनराग भरत पर दंषो । रामहृदय आनंद बिसेषो  
 भरतहि धर्मधुरंधर जानो । निज सबक तन मांस बानी  
 बोखे गुरु आयसु अनकूला । बचन मंजु मृदु मंगलमूला  
 नाथमपथ पितृचरनदोहाई । भयेउ न भुवन भरत सम भाई  
 जे गुरुपद अंबुज अनुरागो । ते लोकज वेदज बड़ भागो  
 राउर जा पर अस अनुरागु । को कहि सकै भरत कर भागु  
 खलि लघु बंधु बुद्धि सखुचाई । करत बदन पर भरत बड़ाई  
 भरत कहहि सो किये भलाई । अस कहि राम रहे अरगाई

दो० । तव मुनि बोखे भरत सम सब सकोच तजि तात ।  
 कृपासिधु प्रिय बंधु सन कहउ हृदय की बात । २४९ ॥

चौ० । मुनि मुनिवचन रामरख पाई । गुरु माहेव अनुकूल अघाई  
 खलि अपने भिर सब हरभारु । कहि न सकहि कहु करै बिचारु  
 पलकसगोर सभा में ठाढ़े । गोरज नयन नेहजल बाढ़े  
 कहव मोर मुनिनाथ निवाहा । इहि ते अधिक कहै मै काहा  
 मै जानौ निजनाथसुभाज । अपराधिऊ पर कोह न काज  
 मो पर कृपा सनेह बिसेषो । खसत खुनस कबहुं नहिं देषो  
 सिंसुपन ते परिहरेउ न संगु । कबहुं न कीन्ह मोर मन भंगु  
 मै प्रभुकृपारीति निज जोषी । हारेऊ खेल जितावाहि मोषी

दो० । मै हूं सनेहसकोचवस सनमुख कहेउ न दैन ।  
 हरसनहस न आजु लागि प्रेमपियासे नैन । २५० ॥

चौ० । विधि न सकैउ सवि मोर दुखारा । नीच नीच जननीसु पारा  
 इहौ कहत मोहि आजु न सोभा । आपनि समष्टि साध सुचि को भा  
 मातु मंदि में साध सुचाखी । उर अस आनत कोटि सुचाखी  
 फरेकि कोदवसि सुचाखी । मुकुता खै कि संवुक ताखी

सपनें दुःख कलेश न काह्य । मोर अभाग उदधि । अवनारु ॥  
 बिन समझे निज अक्षपरिपाक । जानेइ जाय जननि कह काकू ॥  
 हृदय हेरि हारेउ सब मोरा । एकहि भांति भलिहि भक्त मोरा ॥  
 गह गुहाई साहिब सिखरामू । जागत मोहि लोक परिणामू ॥

१० । साधुसभा प्रभु गुरु निकट कहौ सुखल सतिभाव ।  
 प्रेमप्रपंच कि झूठ फर जानहिं मनि रघुराज । २५१ ॥

१० । भूपतिमरन प्रेमपन राखी । जननीकुमति जगत सब साखी ॥  
 देखि न जाहिं बिकल महतारी । जरहि दुमह जर पुरनरमारी ॥  
 महीं सकल अनरघ कर मला । सो मुनि समझि यहीं सब मला ॥  
 मुनि बन गवन कीन्ह रघुनाथा । करि मुनिभेष लखन धिय साधा ॥  
 बिनु पनही अह प्यादेहि पाये । संकर साखि रघौं रहि बाधे ॥  
 वज्ररि निहारि निषादबनेल्ल । कलिय कठिन उर भयउ न बल ॥  
 अब सब आखिन्ह देखेउ आर । जियत जीव जइ धर्म सहाई ॥  
 जिनहि निरखि मग बांनि बौकी । तजहिं विषम दिय तामस तीकी ॥

१० । तेह रघुमंदन लखन धिय अनहित लागे जाहि ।  
 तासु तनय तजि दुख दुख देव सदाहिं काहि । २५२ ॥

१० । मुनि अति बिकल भरतवरधानी । शरति प्रीति बिलय नय मानी ॥  
 शोकमग्न सब रभा खभाक । मगज्ज कमलपन पशौ तुषार ॥  
 कहि अनेक विधि कथा पुरानी । भरत प्रबोध कीन्ह मुनि जानी ॥  
 बोले उचित वचन रघुमंद । दिनकरकुल कैरववन चंद ॥  
 तात जीय अनि करहु गलानी । ईशचधीन जीवनगति जानी ॥  
 तोनि काह्य चिभुवन मत मोरे । पुन्यसलोक तात तनु तोरे ॥  
 उर जानत तुम पर कटिलाई । जाइ लोक परलोक नयाई ॥  
 दोष देखि जननिहिं जइ तेई । जिनहु गुरुसाधुसभा नहिं मेई ॥

१० । मिटहिं शप परिपंच सब अखिलधर्मगल भार ।  
 लोक मुजस परलोक मुख मुमिरत नाम तुम्हार । २५३ ॥

१० । कहौ सुभाव सय सिय साखी । भरत भूमि रह राउरि राखी ॥  
 तात कुतर्क करहु जनिआये । बैर प्रेम नहिं दुरे दराये ॥  
 मुनिगन निकट बिहंग मृग जाहीं । बाधक अधिक विष्कोकि पराहीं ॥  
 हित अनहित पसु पंक्ति जाना । मानुषन गुनजाननिधःमा ॥  
 तात तुम्हहिं मैं जानौ लोके । करौ कहा अपमंश जी के ॥  
 राखउ राउ सत्य मोहि त्यागी । तनु परिहरेउ प्रेमप्रम लागी ॥  
 तासु वचन सेहत मन सोचु । तेहि ते अधिक तुम्हार सकोचु ॥  
 तापर गुरु मोहि पायउ दोष । अर्वाच जो कहहु अहाँ मोह कीन्ह ॥

दो० । मन प्रसन्न करि मकुच तजि कहहु कहे सो आज ।  
मत्यसिंधु रघुवरवचन सुनि भा सुखी समाज । २५४ ॥

चौ० । सुरगन सहित मभय सुरराज । सोचहिं चाहत होन अकाज ।  
करत बिचार वनत कहु नाहीं । रामसरन सब मे मनै माहीं ।  
बहुरि बिचार परस्पर कहहीं । रघुपति भक्तभक्तिबस अहहीं ।  
सुधिकरि अंबरोष दुर्वासा । भे सुर सुरपति निपट निरासा ।  
सहं सुरन्ह बड काल बिषादा । नरहरि किये प्रगट प्रह्लादा ।  
लगि लगि कान कहहिं धुनि माथा । अब सुरकाज भरत के हाथा ।  
आन उपाय न देखिय देवा । मानत राम सुसेवकसेवा ।  
दिय सप्रेम सेवज सब भरतहि । निज गुनसील राम बस करतहि ।

दो० । सुनि सुर मत सुरगुह कहैउ भल तुम्हार बड़ भाग ।  
सकल सुमंगलमूल जग भरतचरन अनुराग । २५५ ॥

चौ० । सीतापति सेवक सेवकाई । कामधेनु सत सरिस सुहाई ।  
भरतभक्ति तुम्हरे मन आई । तजहु सोच विधि बात बनाई ।  
देखु देवपति भरतप्रभाज । सहजसुभाव बिबस रघुराज ।  
मन धिर करहु देव उर नाहीं । भरतहि आगि रामपरिहाहीं ।  
सुनि सुर गुरुसुर संमत सोचू । अंतरजामी प्रभुहि सकोचू ।  
निज सिर भार भरत जिय जोना । करत कोटि विधि उर अनुमाना ।  
करि बिचार मन दोखी ठीका । रामरजायनु आपन जोका ।  
निज पन तजि राखेउ मन मोरा । कोह सनेह कोन्ह नहिं धोरा ।

दो० । कीन्ह अनुपह अमित अति सब विधि सीतानाथ ।  
करि प्रनाम बोले भरत जोरि जलजयगहाथ । २५६ ॥

चौ० । कहउं कहावउं का अब खामो । लपाअंबुनिधि अंतरजामी ।  
गुरु प्रथम साक्षि अनुकूला । मिट्टी मलिन मनकलपित सुला ।  
अपडर उरउं न सोच समखे । रविहि न दोष देव दिस भूखे ।  
मोर अभाग मातुकुटिलाई । विधि गीत विषम काल कठिनाई ।  
पांवरोपि सब मिलि मोहि घाला । प्रनतपाल पन आपन पाला ।  
यह नद रोति न रावरि होई । लोकहु वेद विदित नहिं गोई ।  
जग अनभल भल एक गुहार । कहिय होइ भल कासु भलार ।  
देव देवतर सरिस सुभाज । सनमुख बिमुख न काहुहि काज ।

दो० । जाइ निकट पहिचानि तरु कांहु समन सब सोच ।  
मांगत अभिमत पाव फल राउ रंक भल पोच । २५७ ॥

चौ० । सखि सब विधि गुहखामिसनेह । मिटेउ कोभ नहिं मन सदेह ।  
अब कहनाकर कीजिय सोई । जनहित प्रभुचित कोभ न होई ।

सो मेवक साहिबसकोची । निज हित चहै तासु मति पोची ॥  
 तबकहित साहिबसेवकाई । करै सकल सुख सोभ विहारी ॥  
 बारध नाथ फिरे सबहो का । किये रजाइ कोटिविधि मौका ॥  
 प्रह खारखपरमारखसाह । सकलसुखनफल सुगतिधिगाह ॥  
 तब एक बिनतो सुनि मोरो । उचित होइ तब करब बहोरो ॥  
 तिमकसमाज साजि सब आना । करिय सुफल प्रभु जो मन माना ॥

\* । सानुत्र पठइय मोहि बन कीजिय सबहि बनाव ।  
 नातर फेरिय बंध दोह नाथ चलौ मै साथ । २५८ ॥

\* । नतर जाहि बन तोनिउ भारी । बज्ररिय सीय बसित रघुगारी ॥  
 जहि बिधि प्रभु पसख मन होई । कहनासागर कीजिय सोई ॥  
 तब दोह सब मोपर भाह । मोरे नीति न धर्म बिचार ॥  
 कहौ बचन सब खारख चेत । रहत न चारत के चित चेत ॥  
 उतर देइ सुनि खामिरजारी । सो मेवक कलि जाज खजारी ॥  
 सब मै अवगुणउदधि अगाध । खामिसनेइ बराहत बाध ॥  
 सब कृपाल मोहिं सो मत भावा । सकुच खामिमन जार न पावा ॥  
 प्रभुपदपथ कहौ बति भाज । जगमंगल हित एक बपाज ॥

\* । प्रभु प्रसन्नमन सकुच तजि जो जेहि चाखु देव ।  
 सो सिर भरि भरि करिहि सब मिटिहि अनट अखरेव । २५९ ॥

\* । भरतबचन सुचि सुनि हिय हरवे । नाथ बराहि सुमन सुर बरवे ॥  
 अममंजस बस अवधनिवासी । प्रमुदितमन तापस बनबासी ॥  
 चुप रहि गे रघुनाथ सकोची । प्रभुमति देखि बभा सब कोची ॥  
 जनकदूत तेहि चबडर आये । मुनि बसिष्ट सुनि बेगि बुलाये ॥  
 करि प्रनाम तिन्ह राम निहार । बेध देखि भे निपट दुषार ॥  
 दूतन्हि मुनिवर पूछी बाता । कहउ विदेहभुपकपजाता ॥  
 सुनि सकुचाइ नाइ महि माथा । बोले चर बर कोरे बाधा ॥  
 बूझव राउर साहर साई । कुचकहेतु सो भवेउ गुवाई ॥

\* । नाहित कोचकनाथ के साथ कुचक गई नाथ ।  
 मिथिला अवध विसेध मै जग सब भयउ अनाथ । २६० ॥

\* । कोचकपतिमति सुनि जन कौरा । भे सब लोग लोकबस कौरा ॥  
 जेहि देखा तेहि समय विदेह । नाम यल अय लाग न केह ॥  
 राजकुचालि सुनत भविष्यकहिं । सुझन कहू जसमनि विनु आकहिं ॥  
 भरत राम रघुवर बनबास । भा मिथिलैरहि चदय बरास ॥  
 तप बूझे बुधवचिवसमाज । कहउ विचारि उचित का-आज ॥



ममुष्णि अवध असमंजस दोऊ । चलिथ कि रहिय न कह कह कोऊ ।  
 पति धीर धरि हृदय बिचारी । पठये अवध चतुर चर चारी  
 बुझि भरतमतभासकुभाऊ । चाखेऊ बेगि न होर सखाऊ ।

दो० । गये अवध चर भरतगति बुझि देखि करद्वति ।  
 चले चितकूटहि भरत चार चले तिरछति । २६१ ॥

चौ० । दूतन्ह आर भरत की करनी । जनकसमाज सधामति बरनी  
 सुनि गुरुपुरजन सचिव महीपति । भे सब सोच कनेह बिकसमति  
 धरि धीरज करि भरत बड़ाई । लिथे सुभट साहनी बुझाई  
 घर पुर देस राखि रखवार । हय गज रथ बऊ धान सवार  
 दूधरो साधि चले ततकाला । किय बिस्वाम न भगु महिपाळा  
 भोरहि आज नहाद प्रयागा । चले यमुनउतरन सब सागा  
 खबरि लेन हम पठये नाथा । तिन्ह कहि अस महि नाथेऊ माथा  
 माथ निरात कृमातरु दोन्ह । मुनिवर तुरत बिदा चर कीन्ह

दो० । सुनत जनकआगमन सब हरषेउ अवधसमाज ।  
 रघुगन्दनहिं सकोच बड़ सोचबिबस सुरराज । २६२ ॥

चौ० । गरद गलानि कुटिल कैकेयी । काहि कहै कहि दूषन देखी  
 अस मग आनि मुदित नर नारी । भयेउ बहोरि रहस दिन चारी  
 इहि प्रकार गत बाभर थोऊ । प्रात अन्हान लगे सब कोऊ  
 करि मञ्जन पूजहिं नर नारी । गनपति गौरि पुरारि तमारी  
 रमारसनपद बँदि बहोरी । बिनबहिं अंकलि अचल ओरी  
 राजा राम जानकी रानी । आनंदअवधि अवध रजधानी  
 सुखस बसे फिरि सहित समाजा । भरतहिं राम करहिं जुबराजा  
 इहि सुख मुधा कोचि सब काह । देव देह जगजीवनसा

दो० । गुरुसमाज भाइन्ह सहित रामराज पुर होउ ।  
 अकल राम राजा अवध सरिय मांग सब कोउ । २६३ ॥

चौ० । मुनि सनेहमय पुरजनबानी । निंदहियोग बिरति मुनि जानी  
 इहि बिधि नित्यकर्म करि पुरजन । रामहिं करहिं प्रनाम पुलकि तन  
 ऊँ व नीच मध्यम नर नारी । सहहिं दरस निज निज अनुहारी  
 भावधान सबही सन मानहिं । सकल सराहत रुपानिधानहिं  
 सरिकाई ते रघुवर बानी । पालत नीति प्रीति पवित्रानी  
 सालमको वसिंधु रघुराज । सुमुख सुलोचन सरसबुभाऊ  
 कहत रामगुनगन अनुरोग । सब निज भाग सराहन सामे  
 मह सम पुन्यपुञ्ज जग धोर । जिनहिं राम जानत करि मोरे

- दो० । प्रेममग्न तेहि समय सब मुनि जावत मिथिलेस ।  
वहिल सभा संभ्रम उठे रविकुलकमलदिनेस । २१४ ॥
- चौ० । आगे गवन कोन्ह रघुनाथा । भार सचिव मुद प्रजन बाधा ॥  
गिरिवर दीक्ष जनक सब जगहीं । करि प्रनाम त्याग राख तबहीं ॥  
रामदरस साखवां सदाइ । पक्षमन सेव कसेव न काइ ॥  
मन तह जह रघुवर बैदेही । विनु मन तनहुसवसवधि केही ॥  
जावत जनक पखे रहि भांजी । वहिल सभास प्रेममहमांजी ॥  
चाये निकट देखि चमुराये । सादर निजम परकार जाने ॥  
समे जनक मुनिजनपद बंद्य । साहिब प्रनाम कोन्ह रघुनंदन ॥  
भाहन वहिल राम मिथि राजहिं । पखे सवाह समेत समाजहिं ॥
- दो० । आसल सागर सांतरस पुरन पावन पाव ।  
वेन मगजुं कहनासरित लिये जात रघुनाथ । २१५ ॥
- चौ० । बोरति ज्ञान विरान करारे । वचन बखो किक्षत नद नारे ॥  
सोच उवाच बनीर तरंगा । धोरन तटतदवर कर भंगा ॥  
बिषम बिषाद तुरावति धारा । भय भ्रम भंवर अवत नपारा ॥  
कबट बुध विद्या बड़ि नावा । सकाई न खोर एक नहिं चावा ॥  
वनघर कोख किरात बिचारे । यके बिलोकि पथिक दिय हारे ॥  
आसल उदधि मिलो जव जाई । मनजुं उठेउ चंदधि अकुलाई ॥  
सोक बिकल हौ राजसमाजा । रहा न ज्ञान न धोरन जावा ॥  
भूप रूप मन सोख सराही । सोचहिं सोकधिंधु अवभाही ॥
- क० । अवगाहि सोकसमुद्र सोचहिं नारि नर व्याकुल महा ।  
दै दोष सकल सरोष बोलहिं वाम बिधि कीन्ही कहा ॥  
सुर सिद्ध तापस धोगिन मुनि दना देखि बिदेह की ।  
तुलसी न समरथ कोउ ओ तरि सक मरित सर सखनेह की । २१६ ॥
- सो० । किये अमित उपदेस जह तह जोगन्ह मुनिवरन ।  
धीरज धरिय नरस कहेउ बसिष्ट बिदेह सन । १० ॥
- चौ० । जास ज्ञानरवि भवनिखिनामा । वचन किरन मुनिकमलविकास ॥  
तेहि कि मोक्षमहिमा नियराई । यह सिखरामनेहवड़ाई ॥  
बिषयी साधक सिद्ध बयाने । बिबिध जीव जग वेद बखाने ॥  
रामसनेहसरस मन जासु । साधुसभा बड़ सादर तासु ॥  
सोह न राम प्रेम विनु ज्ञाना । कनधार विनु जिमि जलछाना ॥  
मुनि वडु बिधि बिदेह समझाये । रामघाट बस कोन अन्हाये ॥  
सकल सोकसकुल नरनारी । सो वासर बीतेउ विनु वारी ॥  
पस खग मृगन्ह न कोन्ह अहारा । प्रिय परिजन कर कवन बिचारा ॥

दो० । हौ समाज निमिराज रघु राज नहाने प्रात ।  
बैठे सब बट बिटप तर मन मलीन हस गात । २०६ ॥

चौ० । जे महिसुर दसरथपुरबासी । जे मिथिलापतिनगरनिबासी ॥  
सबसंगह जनकपुरोधा । जिन्ह जन मनु परमारख कोधा ॥  
सने कहन उपदेश अनेका । सहित धर्म गख बिरति विदेका ॥  
कौशिक कहि कहि कथा पुरानी । समुझाई सब समा सुधानी ॥  
तब रघुनाथ कौशिकहि कहैज । नाथ काखि जल निनु सब रहेज ॥  
मुनि कह उचित कहत रघुराई । गयइ बोति दिन पहर अझाई ॥  
अपिहस कहि कह तिरज्जतिराजू । दहां उचित महिं असन अनाजू ॥  
कहा भूप भल सबहि सोहाना । पाद रजासु सबे नहाना ॥

दो० । तेहि अवसर फल फूल दल मूल अनेक प्रकार ।  
सै आयै बनसर बिपुल भरि भरि कांवरि भार । २०७ ॥

चौ० । कामद भे गिरि रामप्रसादा । अवलोकत अपहरत विषादा ॥  
सर सरिता बन भूमिभिभागा । जनु उमगत आनंद अनुरागा ॥  
बेलि बिटप सब सफल रुफूला । बोहत खग मृग अति अनुकूला ॥  
तेहि अवसर बन अधिक उझाछ । विविध समीप मुखद सब काछ ॥  
जाइ न बरनि मनोहरताई । जनु महि करति जनकपडुनारै ॥  
तब सब लोग नहार नहारै । राम जनक मुनि आयसु पारै ॥  
देखि देखि तद्वर अनुरागे । जह तहं पूजन उत्तरन लागे ॥  
दल फल फूल कंद विधि नाजा । पावन सुंदर सुधा समाना ॥

दो० । सादर सब कह रामगुरु पठये भरि भरि भार ।  
पुजि पितर सुर अतिथि गुरु लगे करन फलहार । २०८ ॥

चौ० । इहि विधि बासर बोले चारी । राम निरखि नर नारि मुखारी ॥  
दुजं समाज अस रहि मन माहीं । बिनु सिय राम फिरन न जाहीं ॥  
सोता राम संग बनबासु । कोटि अमरपुर सरि सुपासु ॥  
परिहरि लपन राम बैदेही । जेहि घर भाव बाम विधि तेही ॥  
दाहिन दैव होइ जब सबही । राम समीप बसिय बन तबही ॥  
मंदाकिनि मज्जन तिजुं कासा । रामदरस मुदमंगलमासा ॥  
अटन रामगिरि बन तापसथल । असन अमिय सम कंद मूल फल ॥  
सुख समेत संवत दुइ साता । पल सम होहि न जानिय जाता ॥

दो० । इहि सुख योग न लोग सब कहहि कहा असि भाग ।  
सहज सुभाव समाज दुजं रामचरन अनुराग । २०९ ॥

चौ० । इहि विधि सकल मनोरथ करहीं । बचन सप्रेम सुनत मन चरहीं ॥  
सोयमातु तेहि समय घडाई । दासो देखि सुअवसर आई ॥

श्यामकाय सुनि सब धिक्कासु । चार जनकराजनिवासु ॥  
 कौसल्या सादर सनमानो । चासन दीप समथ सम आनी ॥  
 सोस सनेह करव दुहुं घोरा । इन्हि देखि सुनि कुलिक कठोरा ॥  
 पुष्पक विविध तनु बारि बिकोरन । मरि नख लिखन बनी सब कोरन ॥  
 सब सिखराममेस की मूरति । अनु करना बड भेष बिसरति ॥  
 सोयमातु कह विधिबुधि बांकी । त्रिमि पदकेनु खोर बनिटांकी ॥

दो० । सुनिष सुधा देखिष करव सब करतूति करग ॥

जई तई काक लखूक बक मानव सहत मरग ॥ २०० ॥

चौ० । सुनि मखोष कह देवि सुमिचा । विधिमति पति विपरीत विविचा ॥  
 जो छजि पाखै हरै बहोरी । बाककोसि सम विधिमति भोरी ॥  
 कौसल्या कह दोष न काज । कर्षाविवध दुख सुख छति काज ॥  
 कठिन कर्षागति जान विधाता । जो सुभक्तसुभक्तमंजसाता ॥  
 सर आद सोस सबही के । पतपति पति सब विविध आनी के ॥  
 देवि मोहबस सोविष बादी । विधिप्रपंच सब चंचल आनादी ॥  
 भूपतिजियबमरव सर आनी । सोविषसखि लखि निज हित जानी ॥  
 सोयमातु कह सत्य सुबानी । सुलती अवधि अवधपतिरानी ॥

दो० । लखन राम सिय आहिं बन भल परिनाम न पोष ॥

गहबरि हिय कह कौसल्या मोहि भगत कर सोष ॥ २०१ ॥

चौ० । ईशप्रसाद असोस तुम्हारी । सुत सुतबधू विबुध सरिवारी ॥  
 रामसपथ मै कोन्ह न काज । सो करि सखी कहौ सति भाज ॥  
 भरतमोलगुनविनयवडाई । भायप भक्ति भरोस भलाई ॥  
 कहत बारदज के मति होवे । सागर सोप कि जाहिं उलोवे ॥  
 जानौं सदा भरत कुलदीपा । बारबार मोहि कहेउ महीपा ॥  
 कसे कनक मनि पारिष पाये । पुरुष परिखियै समथ सुभाये ॥  
 अनुचित आजु कहव अस मोरा । लोक सनेह सद्यानप घोरा ॥  
 सुनि सुरसरि सम पावनि बानी । भई सनेह बिकल सबरानी ॥

दो० । कौसल्या कह धीर धरि सुनऊ देवि मिथिलोषि ॥

को विवेकनिधिवत्तमहि तुमहि बकै उपदेसि ॥ २०२ ॥

चौ० । रानि राय बन अवसर पाई । आपनि भाति कहव समझाई ॥  
 राखिय लखन भरत गवर्नाहिं बन । जो यह मन मानै मखोपमन ॥  
 तौ भल यतन करव सुविचारी । मोरे सोच भरत कर भारी ॥  
 गूढ़ सनेह भूत मन माखौ । रहे लोक मोहि लागत माखौ ॥  
 लखि सुभाव सुनि सरल सुबानी । सब भई मगल कदमरबजानी ॥

- नभ प्रसून सरि धन्य धन्य धुनि । मिथिल सनेह बिदू ओगी मुनि ॥  
 सब रनिवाम यकित लखि रहैऊ । तब धरि धीर सुमिषा कहैऊ ॥  
 देवि दंड युग यामिनि बीती । राममातु सनि लखी सप्रोती ॥
- दो० । बेगि पाय धारिय थलहि कह सनेह मति ॥  
 हमरे तौ अब ईसगति कै मिथिलेस सहाय । २०३ ॥
- चौ० । लखि सनेह सुनि बचन विनीता । जनकप्रिया गहि पांव पुनीता ॥  
 देवि उचित अस विनय तुम्हारी । दसरथ घरनि राममहतारी ॥  
 प्रभु अपने नीचहुं आहरहीं । अगिनि धूम गिरि सिर तन धरहीं ॥  
 सबक राउ कर्म मन सानी । मदा सहाय महेस भवानी ॥  
 गौरे भंग योग जग को है । दीप सहाय कि दिनकर सोहै ॥  
 राम जाइ बन करि सुरकाजु । अचल अवधपर करिहहिं राजु ॥  
 अमर नाग नर रामबाहुबल । सुख बसिहहिं अपने अपने थल ॥  
 यह सब यागबल्य कहि रावा । देवि न होइ मुधा मुनिभाषा ॥
- दो० । अस कहि पगु परि प्रेम अति सिध हित विनय सुनाइ ।  
 सिध समेत सिधमातु तब चली सहायमु पाइ । २०४ ॥
- चौ० । प्रिय परिजनहिं मिछी बैदेही । जो जेहि योग भांति तब तेही ॥  
 तापसभेस जानकिहिं देवी । मे सब बिकल बिषाद बिसेवी ॥  
 जनक रामगुह आयसु पाई । चले थलहिं सिय देखी आई ॥  
 लोन्हि लाइ उर जनक जानकी । पाऊनि पावनि प्रेमप्राण की ॥  
 उर उमगेउ अबुधि अनुरागु । भयउ भूप मन मनहुं प्रयाग ॥  
 मियसनेह बट बाढ़त जोहा । तापर रामप्रेम सिसु सोहा ॥  
 चिरंजीवि मुनि जानबिकल अनु । बूढ़त लहेउ बात अवलंबनु ॥  
 मोहमगन मति जहिं बिदेह की । महिमा मियरघुवरसनेह की ॥
- दो० । सियपितुमातु सनेहवस बिकल न सकी संभारि ।  
 धरनिमृता धीरज धरेउ समय मधर्म पिह रि । २०५ ॥
- चौ० । तापसभेस जनक सिय देवी । भयउ प्रेम परितोष बिसेवी ॥  
 पति पवित्र किये कुल दोऊ । सुयस धवल जग कह सब कोऊ ॥  
 जिति सुरसरि कीरतिमरि तोगी । गवन कीन्ह विधिअंड करोगी ॥  
 गंगअवनिथल तोनि बड़ेरे । दहि किये साधुसमाज घनेरे ॥  
 पितु कह सत्यसनेह सुबानी । सोय सकुचि मन माहं समानी ॥  
 पुनि पितु मातु लोन्हि उर लाई । सिख आबिष हित दोन्हि सुहाई ॥  
 कहति न सोय सकुच मन माहीं । दहां बसव रजनी भस्मजाहीं ॥  
 लखि रख राकिजनायउ राज । हृदय सराहत लील सुभाऊ ॥

दो० । बार बार मिलि भेंटि सिव बिदा कीन सनमानि ।

कहौ समयकिर भरतगति रागि सुबानि सखानि । २०६ ॥

चौ० । सुनि भुगल भरतव्यवहार । सोन मंथ मुधा खनि साक ॥  
 मृदे सजल नयन पुलकें तन । सजस संग्राहन कगे मंदिन मन ॥  
 मावधान सुनु सुमुखि सुलोचनि । भरतकथा भवबंधविमोचनि ॥  
 धरम राजनख जल्लाविचार । इहां चयामति मोर प्रचार ॥  
 सो मति मोरि भरत महिमाहीं । कहौ काह कलि कुचति न काहीं ॥  
 विधि गनपति अहिपति सिव बारद । कवि कोविद सुध बह्निबिचारद ॥  
 भरतचरित कौरति करतूतो । धर्म लोक गुन विमलविभूतो ॥  
 ममप्रत सुनत सुखद सब काह । मधि सुरमहिदधि निदरि सुधाह ॥

दो० । निरवधि गुन निरुपम पुरुष भरत भरत सम जानि ।  
 कहौ सुमेहि कि खेर सम कबिकुलमति सकुचानि । २०७ ॥

चौ० । अगम सबहि बरमत बर बरनो । जमि जलहीन मोन मगु धरनो ॥  
 भरतचमितमहिमा सुनु रागी । जानहि राम न सकहि बखानो ॥  
 बरनि सप्रेम भरतचतभाऊ । तिथनिष की इचि लखि कच राऊ ॥  
 बह्महि लखल भरत बन जाहीं । सब कर मल सब के मन माहीं ॥  
 देवि परगुल भरत रघुवर की । प्रीति प्रतीति जाद नहिं तरकी ॥  
 भरत बनेहचवधि ममता के । छापि राम खानि ममता के ॥  
 परमारथ स्वारथ मुख सारे । भरत न सपनेऊ मनहुं निहारे ॥  
 साधन सिद्धि रामपद नेह । मोहि लखि परत भरतमत येह ॥

दो० । भोरेहुं भरत न पेखिहहिं मन मधं रामरजारी ।  
 करिख न सोच बनेहवस कहेंउ भूप विलखारी । २०८ ॥

चौ० । रामभरतगुन गुनत समीतो । निमि दंपतिहि पलक सम भीतो ॥  
 राजममाज प्रात युग जागे । न्हाइ न्हाइ मरपूजन लागे ॥  
 ने नहाइ गुह पंच रघुराई । बन्दि चरन बोखे देख पाई ॥  
 नाथ भरत पूजन महतारी । मोखबिलस बनवास दुखारी ॥  
 सहित ममाज राख मिथिलेसु । बज्रन दिवस भं महत कलेसु ॥  
 उचित होइ सो कोजिय नाथा । हित सबहो कर रौरे हाथा ॥  
 अम कहि अति सकुचे रघुराऊ । मणि पलकें लखि सोल गुभाऊ ॥  
 तुम विनु राम सकल सुखसाजा । नरक जरिम दुहुं राजसमाजा ॥

दो० । प्राण प्राण के जीव के जिय मुख के मुखराम ।  
 तुमतजि तात सोहात गृह जिन्हहिं तिन्हहिं विधि वाम । २०९ ॥

चौ० । मो सुखकरम धरम जरिजाऊ । जहं न रामपदपंकजभाऊ ॥  
 योग कुसोम ज्ञान अज्ञान । जहां न रामप्रेम परधान ॥

तुम विनु दूखी मूखी तुम ते हो	। तुम जानऊ निज को केहि कोही	॥
राउरचावन निर सबही के	। विदित कपाकहि गति सब कीके	॥
आपु आखमहि धारिष पाऊ	। भये सनेहसिधिस मुनिराऊ	॥
करि प्रनाम तब राम सिधाये	। आवि धरि धोर जनक पद पाये	॥
रामवचन मुन सपदि सुनावे	। सोल सनेह सुभाव सुहावे	॥
महाराम सब कीजिय होई	। सब कर धर्म रहित हित होई	॥

दो० । ज्ञाननिधान मुञ्जान मुनि धर्मधोर नरपास ।  
तुम विनु सबसमसमन को समथ रहि काल । २८० ॥

चौ० । सुनि मुनिवचन जनक अनुरागे	। लखिगति ज्ञान विराम विरामे	॥
सिधिस सनेह मुनन मन माहीं	। आये इहां कोन्ह भल नाहीं	॥
रामहि राख कहे उ वन जाना	। कोन्ह आपु प्रिय प्रेम प्रमाना	॥
सम सब वन ते वनहि पठाई	। प्रसूदित फिरव सिधेक बढाई	॥
तापव मुनि सहिनु गति देयो	। भये प्रेमवस विकल बिसेयो	॥
समय समुद्रि धरि धोरन राजा	। चले भरत पद सहित समाजा	॥
भरत चाय जाने होय सोन्हा	। अवसर हरिष सुचावन दीन्हा	॥
तात भरत कह तिरछतिराऊ	। तुमहि विदित रघुबीरसुभाऊ	॥

दो० । राम कथ्यजन धर्मरत सब कर सोल सनेज ।  
संकट रहत सकीबवस कहिय जो चायसु देज । २८१ ॥

चौ० । मुनि तन पृथकिनवन भरि वारो	। बोले भरत धोर धरि भारो	॥
प्रभु प्रिय पूज्य पिता सम आपु	। कुलगद सम हित माय न आपु	॥
कौसिकादि मुनि रहित समाज	। ज्ञानचरनिधि आपुन आजु	॥
विषु सेवक आचमचनुगामी	। जानि मोहि सिद्ध देदय सामी	॥
इहि समाज चल सुमेव राउर	। मन मनोन मे बोखव राउर	॥
होटे बदन कहौ बहि बाता	। समव तात कहि बाँ विधाता	॥
आगम निगम प्रसिद्ध पुराना	। सेवाधरम कठिन बन जाना	॥
सामिधर्म खारखहि विरोधु	। बधिर चंध प्रेमहि न प्रबोधु	॥

दो० । राखि रामदख धर्मरत पराधोन मोहि जानि ।  
सब के संमत सर्वहित करिष प्रेम पदियानि । २८२ ॥

चौ० । भरतवचन मुनि देखि सुभाऊ	। रहित समाज बराहत राज	॥
सुगम चरन सुदु मंजुकठोर	। अर्थ समित जति पाखर धोर	॥
ज्यौं मुक मुकुर मुकर निज पानी	। गहि न जाद सब चहुन बानी	॥
भूप भरत मुनि बाधु समाज	। मे कह विवधकुमुदहिराज	॥
मुनि मुनि बोच विकल सब कोना	। मनजु मीनजन नववसकोना	॥

देव प्रथम कुलनुदमति देवी । निरखि विदेहसनेह विखेरी ॥  
रामभक्तिमय भगत निहारे । सुर स्तारणो वहरि चिष हारे ॥  
वह कह राम प्रेममय पंखा । भये चलेख सोचवय सेखा ॥

दो० । राम सनेहसको बसव कह सखोच मुरराज ।  
रचउ प्रपंचहि पंच मिलि नाहित भयउ अकाज । १८३ ॥

सौ० । सुरस सुमिरि सारदा सराही । देवि देव सरनामत पाही ॥  
करि भरतमति करि निज माया । पावु बिबुध कुल करि ब्रह्महाया ॥  
बिबुधविनय मुनि देवि ख्यानी । बोली सुर स्तारयि जइ जानी ॥  
मो मन कहउ भरतमति फेक । सोचन चहव न सुख सुमेक ॥  
बिधिहरिहरमाया बड़ि भारी । सो न भरतमति बकै निहारी ॥  
सो मति मोहि कहत कह भोरी । चंदनिकर कि चंद करि चोरी ॥  
भरतहृदय विषयारुनिवाह । तहं कि तिमिर जहं तरनिप्रकाश ॥  
अस कहि सारद गह बिधिलोका । बिबुध बिकल निजि मानजं कोका ॥

दो० । सुर स्तारणो मखीनमन कीन्ह कुमंच कुठाड ।  
रचि प्रपंच माया प्रबल भय भ्रम अरति उवाड । १८४ ॥

सौ० । करि कुचालि सोचत मुरराज । भरतहाय सब काज अकाज ॥  
गये जनक रघुनाथ समीपा । बनमानि सब रघुकुलदीपा ॥  
समय समाज धर्म अविरोधा । बोले तब रघुबंसपुत्रोधा ॥  
जनकभरतबंधाद सुनाई । भरत कहावति कही सुनाई ॥  
तात राम अब आयसु देख । सो सब करै मोर मत देख ॥  
मुनि रघुनाथ जोरि युग पानी । बोले बतल सरस खुदु बानी ॥  
विद्यमान आपुन मिथिलेख । मोर कहा सब भांति भदेख ॥  
राउर राखरकायबु होई । राउरि वपस बची बिर होई ॥

दो० । राम सपस मुनि मुनि जनक सकुचे बभा समेत ।  
बकल बिलोकिहि भरतमुख बने न उतार देत । १८५ ॥

सौ० । बभा बकुचवय भरत निहारी । रामबंधु धरि धीरव भारी ॥  
कुसमय देखि सनेह मंभारा । बड़त बिच निमि चटव निहारा ॥  
बोले क कलोचन मति कोनी । हरी बिमलगुनगन जगकोनी ॥  
भरतबिबेक सराह बिबाहा । जनायाव उधरे तेहि काहा ॥  
करि प्रणम सब कहं करकोरी । राम राउ मुद बाधु निहोरी ॥  
हमस बाधु अति अनुचित भोरा । कहल बदन मृदु बचन कठोरा ॥  
हिय मुमिरो सारद। सुहाई । मानस ते मुखपंकज भारी ॥  
बिमल बिबेक धर्म नयवासी । भरतभारती मंजु सरासी ॥



दो० । निरखि बिवेकबिलोचनन्हि मिथिल सनेह समाज ।  
करि प्रनाम बोले भरत सुमिरि सोय रघुराज ॥ १५६ ॥

चौ० । प्रभु पितु मातु सहृद मह स्वामी । पूज्य परम हित अंतरजामी ॥  
मरण सुमाहिब सोलनिधान । प्रनतपाल सरबज्ज भुजान ॥  
ममथ मरनागतहितकारी । गुनग्राहक अवगुन अधहारी ॥  
स्वामि गुमांदिह सहृद गुमांदि । मोहि समान मै स्वामिदोहाई ॥  
प्रभु पितुचन मोहबस पेखी । आयउं इहां समाज सकेली ॥  
जग भन पोच ऊंच अरु मोचु । अमी अमरपद माऊर मोचु ॥  
रामरजाय मेदि मन माहीं । देखा सुना कतहुं कोउ नाहीं ॥  
मो मै सब बिधि कीन्हि ठिठाई । प्रभु मानो सनेह सेवकाई ॥

दो० । छपा भलाई आपनी नाय कीन्ह भल मोर ।  
दूषन भे भूषन सरिस मयस चारु चहुं ओर ॥ १५७ ॥

चौ० । राउरि रीति सुबानिबड़ाई । जगत विदित निगमागम गाई ॥  
कुर कुटिल खल कुमति कलकी । नीच निमील निरीस निसकी ॥  
ते मुनि मरन सामुह आये । भूत प्रनाम किये अपनाये ॥  
देखि दोष कबहुं न उर आने । मुनि गुन साधु समाज बखाने ॥  
को साहिब सेवकहि नेवाजी । आप समान साज सब साजी ॥  
निज करतूति न समझिय सपने । सेवकसकुच मोच उर अपने ॥  
मो गुमांदि नहिं दूसर कोपी । भुजा उठाइ कहौं प्रल रोपी ॥  
पसु नाचत सुक पाठप्रबीना । गुनगति नट पठक अधीना ॥

दो० । सो सुधारि सनमानि जन किये साधुसरमोर ।  
को छपाल बिनु पालिहै बिरदावलिवरजोर ॥ १५८ ॥

चौ० । सोक सनेह कि बालमुभायें । आयउं राउरजायसु वार्यें ॥  
तबहुं छपाल हेरि निज ओरा । सबहि भांति भल मानेहुं मोरा ॥  
देखेउं पाय सुमंगलमुला । जानेउं स्वामि सहज अनुकूला ॥  
बड़े समाज बिलोकेउं भागू । बड़ो चूक माहिबअनुगागू ॥  
छपा अनुग्रह अंग अघाई । कीन्हि छपानिधि सब अधिकाई ॥  
राखा मोर दुलार गुसांदि । अपने सोल सुभाव भलाई ॥  
नाथ निष्ट मै कीन्ह ठिठाई । स्वामिममाज सकोच बिहाई ॥  
अबिनय बिनय यथारुचि बानी । कसिय देव अति आरत जानी ॥

दो० । सहृद भुजान सुमाहिबहि वज्रत कहब डिखोरि ।  
आबसु देइय देव अब सबय सुधारिय मोरि ॥ १५९ ॥

चौ० । प्रभुपदपद्मपरागदुहाई । सत्यमुकृतमुखसीम मुहाई ॥  
सौ करि कहौं हिये अपनेको । रुचि जागत सोवत सपनेकी ॥

। हजमनेह स्वामिसेवकाई	। स्वारथ कल फल चारि विहाई	॥
। भाजा सम नमुमा हिवसेवा	। सो प्रसद जन पावै देवा	॥
। प्रम कहि प्रेमविवस भे भारी	। पुलक मरोर बिलोचन बारी	॥
। प्रभुपद कमल गहे अकलाई	। समय मनेह न सो कहि आई	॥
। कृपामिधु मनमानि सुबानी	। बैठाये समीप गहि पानी	॥
। भरतविनय मुनि देखि सुभाऊ	। मिथिल सनेह सभा रघुराऊ	॥

रघुराउ मिथिल सनेह साधुसमाज मुनि मिथिलाधनी ।  
मन महं मराहत भरतभाष्यपभक्ति को महिमा घनी ॥  
भरतहि प्रसंसत विबुध वरघत मुमन मानस मलिन से ।  
तुलसी बिकल सब लोग मुनि सकुचे निरागम नलिन से । १२ ॥

० । देखि दुखारो दीन दुजं समाज नर नारि सब ।  
मधवा महा मलीन मये मारि मंगल चाहत । ११ ॥

। कपटकुवालिषोम सुरराजू	। पर अकाज प्रिय आपन काजू	॥
। काक समान पाकिरपुरीतो	। कली मलीन कजं ग परतोतो	॥
। प्रथम कुमति करि कपटसकेला	। सो उचाट सब के धिर मेला	॥
। सुरमाया सब लोग बिमोहे	। रामप्रेम अतिसय न बिहोहे	॥
। भये उचाट सब मन थिर नाही	। कन बनरुचि कन सदन सोहाई	॥
। दविध मनोगति प्रजा दुखारो	। सतिनिधुसंगम निमि बारी	॥
। दचित कतजं परितोष न लहहीं	। एक एक मन मर्म न कहहीं	॥
। कृखि हिय हयि कह कृपानिधानू	। सरिस खान मधवा निज बानू	॥

। ० । भरत जनक मुनिगम सचिव साधु सचेत विहाइ ।  
लगी दवमाया सबहि यथायोग जन पाइ । १८० ॥

। कृपामिधु लखि लोग दुखारे	। निज सनेह मुरपति कल भारे	॥
। सभा राउ गृह महि मंचो	। भरतभक्ति सब को मति पैचो	॥
। रामहिं चितवत चित्र लिखे से	। सरुचत बोलत बचन मिखे से	॥
। भरतप्रोति नित विनय बड़ाई	। मुनत मुखद वरनत कठिनाई	॥
। जाम बिलोकि भक्तिबलसु	। प्रेम मगन मुनिगम मिथिलेसु	॥
। महिमा तामु कहै किमि तुलसी	। भक्तिप्रभाव मतिहिय कलसी	॥
। आपु कोट महिमा बड़ि जानो	। कविकुलकानिमानि सकुचानो	॥
। कहि न सकत गुनरुचि अधिकारि	। मतिगति बालबचन की नारि	॥

दो० । भरतविमलसय बिमल बिधु मुमति चकोर कुमारि ।  
उदित बिमलजन हृदय नभ दकट करी निहारि । १८१ ॥

। भरतसुभावन सुगम निगमह	। लघुमतिचापलता कवि कमह	॥
। कहत मुनत सतिभाव भरत को	। सोयरामपद सोइ न रत को	॥

चौ० । कहत धर्म इतिहास सप्रोतो । भयेउ भोर निमि से मुख बीतो  
 निच निवाहि भरत दौ भाई । राम अचिगुरु भूमि पाई  
 महित समाज साज सब सादे । चले रामबल अटन पयादे  
 कोमल चरन चलत बिनु पनहीं । भै मृदु भूमि सकुचि मनमनहीं  
 कृम कंटक कांकरी कुगई । कटुक कठोर कुवसु दुगई  
 महि मंजुल मृदु मारग कीन्है । बहत समोर विविध सुख लीन्है  
 समन वरषि सर घन करि छाहीं । बिटप फूल फल दन मृदुलाहीं  
 मृग विलोकि खग बोलि मुबानी । सेवहिं सकल राम प्रिय जानी

दो० । मुलभ मिद्धि सब प्राकृतजं राम कहत जंमहात ।  
 रामप्रानप्रिय भरत कहं यह न होइ बड़ि वात । २८८ ॥

चौ० । रहि विधि भरत फिरत वन माहीं । नेम प्रेम लखि मुनि सकुचाहीं  
 पुन्य जलास्य भूमिबिभागा । खग मृग तरु दन गिरि बन वागा  
 चारु विचित्र पवित्र बिमेषी । बृहत् भरत दिव्य सब देषी  
 मुनि मन मुदित कहत ऋषिराज । हेतु नाम गुन पुन्यप्रभाज  
 कतजं निमज्जन कतजं प्रनामा । कतजं बिलोकत बन अभिरामा  
 कतजं बैठि मुनि आयामु पाई । मुमिरत सोय महित दौ भाई  
 देखि मुभाव मनेह मुमेवा । देखिं अभोम मुदित बन देवा  
 फिरहिं गये दिन पहर अढ़ाई । प्रभुपदकमल बिलोकहिं आई

दो० । देखे थल तीरथ सकल भरत पांच दिन मांझ ।  
 कहत मुनत हरिहरमयम गयउ दिवस भद्र सांझ । २९० ॥

चौ० । भोर न्हाइ सब जुरा समाज । भरत भूमिसुर तिरज्जतिराज  
 भल दिन आज जानि मन माहीं । राम कृपाल कहत सकुचाहीं  
 गुह दप भरत मभा अवलोकी । सकुचि राम फिरि अवनि बिलोकी  
 भोल मगहि मभा सब सोचो । कजं न राम सम स्वामि सकोचो  
 भरत मुजान राम रुख देषी । उठि सप्रेम धरि धोर बिमेषी  
 करि दंडवत कहत कर जोरो । राखी नाथ सकल रुचि मोरो  
 मोहि लागि सबहि सहेउ संतापू । बज्रत भांति दुख पावा आपू  
 अब गुसाई मोहि देखे रजाई । सेवौ अवध अवधि लागि जाई

दो० । जेहि उपाय पुनि पाय जन देखिय दीनदयाल ।  
 सो सिख देख्य अवधि लागि कोसलपाल कृपाल । २९१ ॥

चौ० । पुरजन परिजन प्रजा गुसाई । सब मुचि खरस सनेह सगाई  
 राउर बदि भल भवदुखदाह । प्रभु बिनु बादि परमपदलाह  
 स्वामि मुजान जानि सबही की । रुचि लालसा रहनि जन जी की

प्रगतपाल पालहिं सब काह ॥ देव दुहुं दिसि खोर निबाह ॥  
 अस मोहि सब विधि भरि भरोसो ॥ किये बिचार न मोच खरोसो ॥  
 चारति मोरि नाथ कर छोड़ ॥ दुहुं मिलि कोन्ह ठोठ इठि मोड़ ॥  
 यह बड़ दोष दूरि करि खामी ॥ तजि सकौच मिखरय अनगामी ॥  
 भरतबिनय सुनि सबहिं प्रसंसा ॥ खोर नीर बिबरन गति हंसा ॥

दो० । दोनबंधु मनि बंधु के बचन दोन हलहीन ॥  
 देस काल अवसर सरिस बोले राम प्रबोह ॥ २०२ ॥

चौ० । तात तुम्हारि मोरि परिजन को ॥ चित्ता गृहहि उपहि घर बन को ॥  
 माथे पर गृह मनि मिथिलेसु ॥ हमहिं तुमहिं सपनेहुं न ककेसु ॥  
 मोर तुम्हार परमपुष्यारथ ॥ स्वारथ सुयस धरम परमारथ ॥  
 पितृआयस पालिय दुहुं भाई ॥ लोक वेद भल भूपभलाई ॥  
 गृह पितु मातु खामि मिख पाले ॥ चलत सुमगु पग परत न खाले ॥  
 अस बिचारि सब मोच बिहारी ॥ पालहु अवध अवधि भरि आरि ॥  
 देस कोस परिजन परिवाह ॥ गुरुपदरजहि लाग करभाह ॥  
 तुम मनि मातु सचिव मिख मानी ॥ पालहु पड़मि प्रजा रजधानी ॥

दो० । मुखिया मुख सो चाहिये खान पान को एक ॥  
 पाले पोषै सकल अंग तुलसी सहित बिवेक ॥ २०३ ॥

चौ० । राजधर्म सरबस इतनोई ॥ जिमि मन मांइ मनोरथ गोई ॥  
 बंधुप्रबोध कोन्ह बड़ भांती ॥ बिन अधार मन तोष न सांती ॥  
 भरतसौल गृह सचिव समाजु ॥ सकुचसनेहबिबस रघुराजु ॥  
 प्रभु करि लपा पांवरी दोन्ही ॥ सादर भरत सोष धरि लोन्ही ॥  
 चरनपीठ कहनानिधान के ॥ जनयुगजामिक प्रजाप्राण के ॥  
 संपुट भरतमनहरतन के ॥ आवर युग जन जीवधतन के ॥  
 कुलकपाट कर कुसलकरम के ॥ बिमल नयन सेवा सुधर्म के ॥  
 भरत मुदित अवलंब लहे ते ॥ अस मुख जब सियराम रहते ॥

दो० । मांगेउ बिदा प्रनाम करि राम लिये उर लाद ॥  
 लोग उचाटे अमरपति कुटिल कुअवधर पाद ॥ २०४ ॥

चौ० । सो कुचालि सब कहं भद नीको ॥ अवधि आम सब जीवन जी की ॥  
 नतह लपन सियरामबिबोगा ॥ बहरि मरत सब लोग कुरोगा ॥  
 रामलपा अवरोव सुधारी ॥ बिबुधधार भद गुनद गोहारी ॥  
 भेंटत भुज भरि भाद भरत सो ॥ रामप्रेमरस कहि न परत सो ॥  
 तन मन बचन समगि अनुरागा ॥ धीरधुरंधर धीरज त्यागा ॥  
 बारिज सोचन मोचत वारी ॥ देखि दसा सुरबसा दुखारी ॥  
 मुनिगन मुदजन धीर जनक से ॥ ज्ञानजनक मन कसे कनकु से ॥

- जे विरवि निर्लेप उपाये । पदुमपत्र मिमि जलज सजाये ॥  
 दो० । तेउ बिजोकि रघुवर भरत प्रीति अनूप अपार ।  
 भये जगन मन तन बचन बहित विराम बिचार । २०५ ॥
- चौ० । जहाँ जनक गृहगति मति भोरी । प्रालतप्रीति कहत बनि खोरी  
 वरगत रघुवर भरत बिजोगी । सुनि कठोर कवि जानिहि खोगी ॥  
 जो सकोचबध अदृष्ट सुबागी । समथ सनेह सुमिरि सकुनबागी ॥  
 भेंटि भरत रघुवर समुपाये । पुनि रिपुदमन हरिहि हिय लाये ॥  
 मेवक मचिव भरतद्वय पाई । निज निज काज लगे सब जाई ॥  
 मुनि दाहन दुख दुख समाजा । लगे चलन के राजन साजा ॥  
 प्रभुपदपद्म बंदि हो भाई । चले सीध धरि रामरजाई ॥  
 मुनि तापस बन देव निहोरी । सब सनमानि बहोरि बहोरी ॥
- दो० । लखनहि भेंटि प्रनाम करि सिर धरि सियपदधूरि ।  
 चले सप्रेम अघोष मुनि सकलसुमंगलमूरि । २०६ ॥
- चौ० । मानव राम यपहि सिर नाई । कोन्ह बज्रत बिधि बिनय बड़ाई  
 देव दयावस बड़ दुख पावेऊ । सहित समाज काननहि आयेऊ ॥  
 पर पग धारिय देह असीषा । कोन्ह धीर धरि गमन महीषा ॥  
 मुनि महिदेव साधु सनमाने । बिदाकिये हरि हर सम जाने ॥  
 मासु समीप गए दौ भाई । फिरे बंदि पद आशिष पाई ॥  
 कौषिक बामदेव आवालो । परिजन पुरजन सखि सुचालो ॥  
 यथायोग करि बिनय प्रनामा । बिदा किये सब बानुज रामा ॥  
 नारि पुरुष लघुमन्थ बजरे । सब सनमानि कृपानिधि फेरे ॥
- दो० । भरतमातुपद बंदि प्रभु सुचि सनेह मिलि भेंटि  
 बिदाकोन सजि पालकी सकुच मोच सब भेंटि । २०७ ॥
- चौ० । परिजन मातु पितहि मिलि सीता । फिरो प्राणप्रियप्रेमपुनोत  
 करि प्रनाम भेंटो सब सासु । प्रीति कहत कविहिय न ऊँसासु ॥  
 मुनि सिख अभिमत आशिष पाई । रही सीध दुजं प्रीति समाई ॥  
 रघुपति पट, पालकी मंगारि । करि प्रबोध सब मातु चढ़ाई ॥  
 बार बार हलि मिलि दौ भाई । सम सनेह जननी पऊंछाई ॥  
 बाजि बाजि गज दाहन नाजा । भूप भरत इस कोन्ह पयाजा ॥  
 हृदय राम सिय लखन समेता । चले जाहि सब लोग अचेता ॥  
 बमद बाजि गज पसु हिय हारे । चले जाहि परबस मनमारे ॥
- दो० । गृहगृहतिवपद बंदि प्रभु सीता लखन समेत ।  
 फिरे हर्ष बिस्मय सहित आये परननिकेत । २०८ ॥
- चौ० । बिदाकोन्ह सनमानि निवाटू । चलेउ हृदय बड़ विरह बिपाटू ॥

कोल्ह किरान भिन्न वनचारी	। फेरे फिरे जोहारि कुचारी	॥
प्रभु सिध सवन बैठि बटकाहीं	। प्रियपरिजनविशेषन विलखाहीं	॥
भगत वनेह सुभाव सुबानी	। प्रिया अनुज वन कहत बखानी	॥
प्रोति प्रतोति वचन मन करनी	। सोमस राम प्रेमवचन वरनी	॥
तेहि चवसर खन मृग जलमोना	। चिचकूट पर चर मछोना	॥
विबुधनिलोकि दशरथपुर की	। वरषि सुमन कहि गति घर घर की	॥
प्रभु प्रनाम करि दीन धरोखी	। चले मुदित मन डर न धरोखी	॥

दो० । सानुज सोच समेत प्रभु राखत परनकुटोर  
भक्ति खान वैराग्य अनु सोहत धरे सरीर । ३०८ ॥

चौ० । मुनि महिपुर गुरु भरत भुषालू	। रामविरह सब पाज बेहालू	॥
प्रभुगुनघाम गुगत मन माहीं	। सब चपचाप चले मगु जाहीं	॥
समना उत्तरि पार सब भवज	। सो बासर बिनु भोजन गथज	॥
उत्तरि देवसरि दूधर बासू	। रामसखा सब कोन्ह मुपासू	॥
सई उत्तरि गोमती नहाये	। चौथे दिवस चवधपुर आवे	॥
जनक रहै पर बासर चारी	। राजकाज सब साज संभारी	॥
सौं पि मचिब गुरु भरतहि राज	। तिरहुति चले साजि सब साज	॥
नगरनारिनर गुरुसिख मानी	। बसे सुखेन रामरजधानी	॥

दो० । रामदरस खनि लोग सब करत नेम उपवास  
तजि तजि भुवनभोग मुख जिघत अवधि की आस । ३१० ॥

चौ० । सखि सुखेवक भरत प्रबोधे	। निज निज काज पाइ धिख सोधे	॥
पनि मिख दोन्ह बोलि लख भारी	। सौं पो सकल मातुमेवकारी	॥
भुषुर बोलि भरत कर जोरे	। करि प्रनाम सर बिनय निहारे	॥
ऊंच नीच कारज भल पोष	। आयसु देव न करव सकोष	॥
परिजन पुरजन प्रजा बुलाये	। समाधान करि सुवस वसाये	॥
सानुज गे गुरुगेह बहारी	। कहि दंडवत कहत कर जोरी	॥
आयसु होइ तो रहौं सनेमा	। बोलि मुनि तनु पुलक भप्रेमा	॥
समग्रव कहव करव तुम सोई	। धर्मसार जग होइहि जोई	॥

दो० । मुनिखिख पाइ असोस बड़ि जनक बोलि दिन साधि  
सिंहासन प्रभुपादका बैठारी निहपाधि । ३११ ॥

चौ० । रामजातुमुहपद सिर नाई	। प्रभुपदपीठरजायस पाई	॥
नदियाम करि परनकुटोरा	। कोह निवास धर्मधरधोरा	॥
जटाजूट सिर मुनिपटधारी	। महि खनि कुचसाथरी बंधारी	॥
असन बसन आसन व्रत नेमा	। करत कठिन अविधर्म अप्रेमा	॥
भुवन बसन भोग मुख भुरी	। मन तन वचन तजे दन ठुरी	॥
अवधराज सुरराज मिहाहीं	। दसरथधन खसि धनद लजाहीं	॥
तेहि पुर बसत भरत बिनु रामा	। चंवरीक जिमि चंक	॥

रमा विलास रामअनुरागो । तजत समन जिमि नर बड़ भागी ॥  
 दो० । रामप्रेमभाजन भरत बड़ी न यह करतृति ।  
 चातक हंस सराहियत टेकविवेकविभूति ॥ २१२ ॥

चो० । देह दिनहिं दिन दूबरि छोई । घट न तेज बल मुखवि सोई ॥  
 नित नव रामप्रेमप्रनयिनी । बड़त धर्मदल मन न मलीना ॥  
 जिमि जल मिघटत मरुद प्रकासे । बिलसत बेल सुवनज बिकासे ॥  
 सम दम संयम नेम उपासा । नखत भरतहिय बिमल अकासा ॥  
 ध्रुव विश्वास अवधि राकासी । स्वामिसुगति सुरवीथि बिकासी ॥  
 रामप्रेम विधु अरुल अदोषा । सहित समाज सोह नित सोषा ॥  
 भरतरहनि समझनि करतृती । भक्ति बिरति गुन विमल बिभूती ॥  
 बरनत सकल मकवि मकुचाहीं । सेवगनसगिरागम नाहीं ॥

दो० । नित पूजत प्रभुपांवरो प्रीति न हृदय समाति ।  
 मांगि मांगि आयमु करत राजकाज बड़ भांति ॥ २१३ ॥

चो० । पुलक गात हिय मिय रघुबोहू । जोह नाम जपु कोचन मोहू ॥  
 लपन राम मिय कानन बसहीं । भरतभौन वसि तप तनू कमहीं ॥  
 दुहुं दिसि ममसि कहत सब लोगू । सब बिधि भरत सराहनयोगू ॥  
 मुनि व्रत नेम साधु मकुचाहीं । देखि दसा मुनिराज लजाहीं ॥  
 परम पुनीत भरतआचरण । मधुर मंजु मुदमंगलकरनू ॥  
 हरन कठिन कलिकलष कलेशू । महामोह निषिदलन दिनेशू ॥  
 पापपञ्च कुञ्जर मृगराजू । समन सकल वंतापसमाजू ॥  
 जनरजन भंजन भवभाहू । राममनेह सुधाकरसाहू ॥

ह० । मियगमप्रेमपियूषपूरन होत जन्म न भरत को ।  
 मुनिमन अगम यम नियम सम दम विषम व्रत आचरत को ॥  
 दुःदाह दारिद्र दंभ दूषन सुयसमिम अपहरत को ।  
 कलिकाल तुलसी से सठहिं छठि राममनमुख करत को ॥ १३ ॥

सो० । भरतचरित करि नेम तुलसी जे सादर मनहिं ।  
 सोयरामपद प्रेम अवसि होइ भवरस बिरति ॥ १४ ॥

इति श्रीगामचरितमानसे सकलकलिकलषविध्वंसने  
 विमलविज्ञानवैराग्यसम्यादनो नाम तुलसीकृत  
 अयोध्याकाण्ड द्वितीयः सर्गः समाप्तः ॥

## अथ अरण्यकाण्ड ॥

ॐ ॥

मूलं धर्मतरोर्विवेकजलधेः पूर्णेन्दुमानन्ददं ।  
 तैराग्यामृजमास्करमघहरं ध्वान्तापहं तापहं ॥  
 माहामाधरपुञ्जपाटनविधौ खे संभवं शङ्करम् ।  
 वन्दे ब्रह्मकुलं कलङ्कशमनं श्रीरामभूप्रियम् ॥ १ ॥  
 सान्द्रानन्दपयोदसौभगतनम्योताम्बरं सुन्दरम् ।  
 पाणौ बाणशरासनं कटिलसत्तूणीरभारं वरम् ॥  
 राजीवायतनोचनं धृतजटाजटेन संशोभितम् ।  
 सीतालक्ष्मणसंयुतं पथिगतं रामाभिरामं भजे ॥ २ ॥

० । उमा रामगुण गूढ पंडित मुनि पावहिं विरति ।  
 पावहिं मोहिं बिमूढ जे हरिबिमुख न धर्मरति । १ ॥

० । पुरनरभरतप्रोति मे गाई । मति अनुरूप अनूप सुहाई ॥  
 अब प्रभुचरित सुनहु अति पावन । करत जे बन सुनरमुनिभावन ॥  
 एक बार चुनि कुसुम सुहाये । निज कर भूपन राम बनाये ॥  
 मोतहिं पहिराये प्रभु मादर । बैठे फटिकमिसा पर सुंदर ॥  
 सुरपतिमृत धरि वायमवेष्टा । सठ साहत रघुपतिबल देवा ॥  
 जिमि पिपीलिका सागर याहा । महामंदमति पावन साहा ॥  
 मोताचरन चांच हति भागा । मूढ मंदमतिकारन कागा ॥  
 चला रुधिर रघुनायक जाना । लोकधनुषमायक मंधाना ॥

१० । अति लुपास्त रघुनायक सदा दीन पर नेह ।  
 ता सन आद कोन्ह कृष्ण मूरख अवगुनगेह । १ ॥

१० । प्रेरित मंच ब्रह्मसर धावा । चला भाजि वायस भय पावा ॥  
 धरि निज रूप गयउ पितु पाहीं । राम बिमुख राखा तेंहि नाहीं ॥  
 भा निराख उपजी मन चाहा । यथा चक्रभय अषि दुबाहा ॥  
 ब्रह्मधाम सिवपुर सब सोका । फिरा समित आकुल भय सोका ॥



काष्ठ बैठन कहा न आही	। राखि को सकै राम कर द्रोही
मातृ मृत्यु पितृ ममन समाना	। सुधा होइ विष सुनु हरिजाना
मित्र करै शत्रु रिपु कै करनी	। ता कहं विबुधनदो बैतरनी
सब जग ताहि अनल ते ताता	। जा रघुबीर विमुख सुनु भाता
नारद देखा बिकल जयंता	। लागि दया कोमलचित मंता
पठवा तुरत राम पढ़ ताही	। कहसु पुकारि प्रमत्तहित पाही
आतुर सभय गहेसि पद जाई	। चाहि चाहि दयाल रघुनाई
अतुलित बल अतुलित प्रभुताई	। मै मतिमंद जानि नहि पाई
निजकृत कर्मजनित फल पायेउं	। अब प्रभु पाहि मरु नकि आयेउं
सुनि कृपालु अति आरतवानो	। एकनयन करि तब भवानी

शो० । कोन्ह मोहबस द्रोह यद्यपि तेहि कर बध उ ।  
प्रभु काड़ेउ करि कोह को कृपालु रघुबीर सम । २ ॥

शौ० । रघुपति चित्रकूट बसि नाना	। चरित किए स्तुति सुधा समाना
बहुनि राम अम मन अनुमाना	। होइहि भीरु सर्वाहि मोहि जाना
सकल मुनिन्ह सन विदा कराई	। सीता सहित चले दोउ भाई
अचि के आस्रम जब प्रभु गयऊ	। सुनत महा मुनि हरपित भयऊ
पुलकितपात अचि उठि धाये	। देखि राम आतुर चलि आये
करत दंडवत मुनि उर लाये	। प्रेमबारि दोउ जन अन्हवाये
देखि रामकवि नयन जुड़ाने	। सादर निज आस्रम तब आने
करि पूजा कहि बचन सुहाये	। दिखे मूल फल प्रभुमन भाये

शो० । प्रभु आसन आसीन भरि लोचन मोभा निरखि ।  
मुनिवर परम प्रबोध ओरि पानि अस्तुति करत । ३ ॥

कं० । नमामि भक्तवत्सलं कृपालु शीलकोमलं ।  
भजामि ते पदाम्बुजं अकामिनां स्वधामदं ।  
निकामश्रामसुंदरं भवामुनाथमंदरं ।  
प्रफुल्लकंजलोचनं मददिदोषमोचनं ।  
प्रलंबबाहुविक्रमं प्रभोप्रमेयवैभवं ।  
निर्घम चाप सायकं धरं त्रिलोकनायकं ।  
दिनेशबंशमंडनं महेशचापखंडनं ।  
मुनींद्रसंतरंजनं सुरारिवृन्दभंजनं ।  
मनोजवैरिबंदितं अजादिदेवसेवितं ।  
विष्णुद्वैबाधविघर्ह समस्तदूषणापहं ।  
नमामि इंदिरापतिं सुखाकरं सतां गतिं ।  
भजे मशकिसानुजं शचीपतिप्रियानुजं ॥

त्वद्विमुख ये मरा भजति हीनमत्सराः ।  
 पतति मे भवार्णवे वितर्कबोचिसंकुले ॥  
 विविक्तवासनाः सदा भजति मुक्तये मुदा ।  
 निरस्य इंद्रियादिकं प्रयांति ते गतिं स्वकं ॥  
 त्वमेकमद्वैतं प्रभुं निरीहमीश्वरं विभुं ।  
 जगद्गुरुं च शास्त्रं तुरीयमेवकेवलं ॥  
 भजामि भावबद्धं कृष्णमिनां सुदर्शनं ।  
 स्वभक्तकल्पपादपं समस्तसेव्यमन्यदं ॥  
 अनूपकपभूपतिं नतोहमुर्विजापतिं ।  
 प्रमोद मे नमामि ते पदाब्जभक्तिं देहि मे ॥  
 पठंति ये स्तव इदं नरादरेण ते पदं ।  
 भजन्ति मात्र संशयः त्वदोद्यभक्तिसंयुतः ॥

० । विनतो करि मुनि नारि सरि कह कर जोरि बहोरि ।  
 चरनधरोरुह नाथ अनि कबहुं तजै मति मोरि । १ ॥

० । अनुमुदया के पद गहि सोता	। मिल्खो बहोरि सुखीन विनोता	॥
उपपतिनोमन सुखअधिकारि	। आसिष देद निकट बैठारि	॥
दिवा बसन भुवन पहिरायै	। जे नित नूतन अमल सुहाये	॥
कह अविषधु सरल सुदु बानी	। नारि धर्म कहु व्याज बखानी	॥
मातु पिता भ्राता हितकारी	। मितप्रद सब मनु राजकुमारी	॥
अमितदानि भर्ता बेदेही	। अधम सो नारि जो सब न तेही	॥
धीरज धर्म मित्र अह नारी	। आपदकाल परसिअहि चारी	॥
हृद रोगबस अड धनहीना	। अध बधिर कोधी अति दीना	॥
ऐमेहु पति कर किये अपमाना	। नारि पाव यमपुर दुख माना	॥
एकै धर्म एक व्रत नेमा	। काय बचन मन पतिपद प्रेमा	॥
अग पतिव्रता चारि बिधि अहहो	। बेद पुरान मन्त सब कहहो	॥
उत्तम के अश बस मन मारो	। मपने ऊ जान पुरुष जग नारो	॥
मध्यम परपति देखै कैसे	। भ्राता पिता पुत्र निज जैसे	॥
धर्म बिचारि समुझि कुल रहई	। सो निकसु तिय स्तुति अश कहई	॥
बिनु अवसर भय तै रह जोई	। जानेऊ अधम नारि जग मोई	॥
पतिबचक परपति रति करई	। रौरव नरक कल्प सत परई	॥
ह्वन सुख लागि जनम सत कोटी	। दुख न समझु तेहि सम को सोटी	॥
बिनु सस नारि परम गति अहई	। पतिव्रत धर्म काहि कह गहई	॥
पति प्रतिकूल जगमि अह जाई	। बिधवा होइ पाइ तनजाई	॥

दो० । मुनिहि राम वड्ड भानि जगावा । जान न ध्यानजनित सुख पावा ॥  
 भूपरूप तब राम दुरावा । हृदय चतुर्भुजरूप दिखावा ॥  
 मुनि अकलाह उठा पुनि कैसे । बिकल होनमनि फनि वर जैसे ॥  
 आगे देखि राम तनुधामा । सीता अमज सहित सुखधामा ॥  
 परेउ लकुट इव चरनान्ध लागी । प्रेममगन मुनिवर बड्डभागी ॥  
 भुज बिसाल गहि लिये उठाई । परम प्रीति राखे उर लाई ॥  
 मुनिहि मिलत रमि मोह लपाला । कनकतरुहि जिमि भेंटु तमाला ॥  
 रामबदन बिलोकि मनि ठाढ़ा । मानहुं चित मांस लिखि काढ़ा ॥

दो० । तब मुनि हृदय धीर धरि गहि पद बारहिं बार ।  
 निज आत्मम प्रभु आनि करि पूजा बिबिध प्रकार । ७ ॥

चौ० । कह मुनि प्रभु मुनू बिनतो मोरो । अस्तुति करौ कवनि विधि तोरो ॥  
 महिमा अमित मोरि मति घोरो । रविममुख खद्योतप्रजोरो ॥  
 स्याम तामरकदाम सरोरं । जटामुकुट परिधन मुनिचोरो ॥  
 प. नि चाप मर कटि तनोरं । नामि निरंतर सीरघुचोरो ॥  
 मारविपिन घन दहन कमानं । संत सराक्षकानन भानं ॥  
 निमिसरकरिवकथ मृगराज । चातु सदा नो भवखग बाजं ॥  
 अरुननयनराजोव सुवेमं । मोतानयनचकार निममं ॥  
 हरहृदिमानस राजमरालं । नामि राम उरवाहुविमालं ॥  
 समयमर्प रामन उरगादं । समन मुककंस तर्क बिषादं ॥  
 भवभंजन रंजन मरयूथ । चातु सदा नो लुपावकथं ॥  
 निर्गुन मगुन विषम सम रूपं । ज्ञानगिरागातोतमरूपं ॥  
 अमल अखिलमनवद्यमपारं । नामि राम भंजन महिभारं ॥  
 भक्त कल्पपादपगारामं । तर्जन कोधलोभमदकामं ॥  
 अति नागर भवमागरसेतुं । चातु सदा दिनकरकुलकेतुं ॥  
 अतुलितभुजप्रताप बलधामं । कलिमलविपलविभंजन नामं ॥  
 धर्मवर्म नर्मद गुणधामं । संतत शं तनातु मम रामं ॥  
 यदपि बिरज व्यापक अविनाशी । सब के हृदय निरंतरबासी ॥  
 तदपि अमज सी सहित खरारी । बसतु मनसि मम काननचारी ॥  
 जे जानहि ते जानहु स्वामी । सगुन अगुन उरप्रंतरजामी ॥  
 जाकोमक्षपति राजिवनयना । कैंदा सो राम हृदय मम अयना ॥  
 अम अभिमान जाद जनि भोरे । मै सेवक रघुपति पति मोरे ॥  
 मुनि मुनिबचन राम मन भाये । बड्डरि हरषि मुनिवर उर लाये ॥  
 परम प्रसन्न जानु मुनि मोही । जे बर मांगु देउ सो तोही ॥  
 मुनि कह मै बर कबहुं न जांचा । समझि न पर अठ का सांचा ॥

महिं नोक सानै रघुशरि । सो मोहि देख दाससुन्दरि ॥  
 अबरल भक्ति बिरति बिजाना । होऊ सकलगुणज्ञाननिधाना ॥  
 भु आ दोह सो बर मै पावा । अब सो देख मोहि आ भाषा ॥  
 ॥ अनुज जानकी सहित प्रभु चापवानधर राम ।  
 मम हियगगन दंडु दब बसऊ सदानिकाम । ८ ॥

० । एवमस्त कहि रमानिवासा । हरषि रत्न कुंभजश्वि पासा ॥  
 उडुत दिवस गुरुदरसन पाये । भये मोहि रहि आसम आये ॥  
 सब प्रभु संग जाउं गुरु पाहीं । तुम कह नाथ निहारा जाहीं ॥  
 देखि रूपानिधि मुनिचतुशरि । लिये संग बिहमै दोष भारि ॥  
 पंथ कहत निज भगति अनूपा । मुनिआसम पऊंछे सुरभूपा ॥  
 तुरत सुतीकन गुरु पद गयऊ । करि दंडवत कहत अब भयऊ ॥  
 नाथ कोमलाधीस कुमारा । आये मिलन अगतआधारा ॥  
 राम अनुज समेत बैदेही । निभिदिन देव अपतहऊ जेही ॥  
 सुनत अगसि तुरत उठि धाये । हरि बिलोकि मोचन जल काये ॥  
 मुनिपदकमल परे दोउ भारि । श्वषि अति प्रीति लिये उर लाई ॥  
 सोदर कसल पूकि मुनि जानी । आसन पर बैटारि आनी ॥  
 पुनि करि बडु प्रकार प्रभुपूजा । मोहि सम भागवत महिं दजा ॥  
 अहं लगि रहं अपर मुनिहृन्दा । हर्षे सब बिलोकि मुखकन्दा ॥

० । मुनिसमूह महं बैठे मन्मुख सब की ओर ।  
 सरदरदु तम चितवत मानऊ निकर चकोर । ८ ॥

१० । तब रघुवीर कहा मुनि पाहीं । तुम सन प्रभु दगाउ कह जाहीं ॥  
 तुम जानऊ जहि कारन आयेंउ । ता तें तात न कहि समझायेउ ॥  
 अब सो मंत्र देख प्रभु मोही । जेहि प्रकार मार्गे मुनिदोही ॥  
 मुनि मुसकाने मुनि प्रभुबानी । पूछेऊ नाथ मोहि का आनी ॥  
 तुम्हरे भजन प्रभाव अधारी । जानौं महिमा कहूँ तुम्हारी ॥  
 डूमरि तह बिसाल तव माया । फल ब्रह्मांड अनेक निकाया ॥  
 जीव चराचर अंतु समाना । भीतर बसहिं न जानहिं आना ॥  
 ते फलभक्षक कठिन कराखा । तब भय उरत सदा मोउ काखा ॥  
 ते तुम सकललोकापति सारि । पूछेऊ मोहि मनुज की नाइ ॥  
 यह घर मार्गौ रूपानिकेता । बसऊ हृदय सो अनुज समेता ॥  
 अबरल भक्ति बिरति सतसंगा । चरनचरोरुह प्रीति अभंगा ॥  
 यद्यपि ब्रह्म अखंड अमंता । अनुभवगम्य मजहिं जेहि संता ॥  
 अस तब रूप बखानौं जानौं । फिरि फिरि मगन ब्रह्म रति मानौं ॥  
 संतत दास्य देख बडाई । ता तें मोहि पूछेऊ रघुशरि ॥

है प्रभु परम मनोहर ठाऊँ । पावन पंचवटी तंहि नाऊँ ॥  
 दृक्कवन पुनोत प्रभु करछ । उय स्नाप मुनिवर के हरछ ॥  
 बाम करछ तहँ रघुकुलराया । कीजै सकल मुनिन्ह पर दाया ॥  
 चखै राम मुनिआयस पाई । तुरतहि पंचवटी निर्यारै ॥

दो० । गोधराज सेां भेट भइ बडबिधि प्रीति बढाइ ।  
 गोदावरी निकट प्रभु रहै पनगटह काइ । १० ॥

चौ० । जब तैं राम कीन्ह तहँ बासा । सुखी भये मुनि बीतो आसा ॥  
 गिरि बस नदी ताल कवि काये । दिन दिन प्रति अति होहि सुहावे ॥  
 खगखगहृन्द अनंदित रहहीं । मधुप मधुर गुंजत कवि कहहीं ॥  
 मो बस बर नि न सक अहिराजा । जहाँ प्रगट रघुबीर विराजा ॥  
 एकवार प्रभु सुख आमीना । लक्ष्मिन बचन कहे अति दीना ॥  
 सुरनरमुनिसचराचरमाई । मै पकौं निज प्रभु की नाई ॥  
 मोहि ममझाइ कहजु माइ देवा । सब तजि करौं चरनरजमेवा ॥  
 कहजु ज्ञान विराग अह माया । कहजु सो भक्ति करजु जहि दायी ॥

दो० । ईश्वर जीवहि भेद प्रभु सकल कहजु समझाइ ।  
 जा तैं होइ चरन रति साक मोह भम जाइ । ११ ॥

चौ० । योरे मह सब कहौं बुझाई । सुनजु तात मति मन चित्त लाई ॥  
 मै अह मोर तोर तैं माया । जहि बस कीन्ह जीविकाया ॥  
 गो गाचर अहं लागि मन जाई । सो सब माया जानेजु भाई ॥  
 तंहि कर भेद सुनजु तुम मोऊ । विशा अपर अविद्या दाऊ ॥  
 एक दृष्ट अतिमय दुखरूपा । जा बस जीव पग भवकूपा ॥  
 एक रहै अग गुनबस जाके । प्रभु प्रेरित नहिं निज बल ता के ॥  
 ज्ञान मान अह एकौ नाहौं । देखत ब्रह्म समान सब माहौं ॥  
 कहिय तात सो परम विरागी । तन सम मिद्धि तोनि गुन लो गो ॥

दो० । माया ईस न आपु कहं जान कहिय सो जीव ।  
 बंधमोक्षप्रद सर्वपर मायाप्रेरक मोव । १२ ॥

चौ० । धर्म तैं विरति योग तैं जाना । ज्ञान मोक्षप्रद वेद बखाना ॥  
 जा तैं वेगि द्रवौं मै भाई । सो मम भक्ति भक्तमुखदाई ॥  
 सो स्वतंत्र अवलंब न आना । तंहि आधीन ज्ञान विज्ञाना ॥  
 भक्ति तात अनुपम सुखमला । मिलै ओ संत होहि अनुकूला ॥  
 भक्ति के साधन कहौं बखानो । सुगम पंथ मोहि पावहिं प्राणो ॥  
 प्रथमहिं विप्रचरन अति प्रीतो । निज निज कर्म निरत कृतिरौतो ॥  
 यह कर फल पुनि विषयविराग । तब मम धरम उपजु अनुराग ॥

खनादिक नव भक्ति दिडाहीं	मम खोला रति अति मन माहीं ॥
नितचरनपंकज अति प्रेमा	मन कम बचन भजन कूटनेमा ॥
रु पितु मातु बंधु पति देवा	सब मोहि कहं जानैं दूढ सेवा ॥
म गुन गावत पुलक बरीरा	गदगदगिरा नयन बह जोरा ॥
राम आदि मद दंभ न जा के	तात निरंतर बस मैं ता के ॥

बचन कर्म मन मोरि गति भजन करहि निःकाम ।

तिन्ह के हृदयकमल महं करौं सदा बिसाम । १३ ॥

० । भक्ति योग सुनि अति सुख पावा ।	लक्ष्मिन प्रभु चरनन्ह मिर गावा ॥
रहि विधि गये ककुद दिन बीतो	कहत बिराग ज्ञान गुन नीतो ॥
उपनखा रावन कै बहिनी	दृष्ट हृदय दारुन अस अहिनी ॥
चबटों सो गह एकबारा	देखि बिकल भइ युगल कुमारा ॥
आता पिता पुत्र चरगारी	पुरुष मनोहर निरखति नारी ॥
छोड़ बिकल सक मन नहिं रोकौ	जिमि रविमनि द्रव रविहिं बिलाकी ॥
नचिर रूप धरि प्रभु पछं आई	बोली बचन बज्रत मुमुकाई ॥
तुम मम पुरुष न मो मम नारी	यह संयोग विधि रचा बिचारी ॥
मम अनुरूप पुरुष अग माहीं	देखें खोजि लोक तिहुं नाहीं ॥
ता तें अब लगि रहिउं कुमारी	मन माना कहु तुमहिं निहारी ॥
सोतहिं चितइ कछो प्रभु वाता	अहं कुवार मोर जपु आता ॥
गद लक्ष्मिन रिपुभगिनो जानो	प्रभु बिलोकि बोलै मृदु बानी ॥
सुंदरि मुनूं सें उन्ह कर दामा	पराधीन नहिं तोर सुपामा ॥
प्रभु ममरथ कोमलपुरराजा	जो कहु करहिं उम्हें मय काजा ॥
मंवक सुख सह मान भित्तारी	बसनी धन सुभ गति व्यभिचारी ॥
लोभी अम सह चार गुमानो	नभ दहि दूध चहत ये प्रानो ॥
पुनि फिरि राम निकट सो आई	प्रभु लक्ष्मिन पछं बहुरि पटारै ॥
लक्ष्मिन कछा तोहि सो बरई	जो लम तोरि लाज परिहरई ॥
तब स्विसिआनि राम पछं गई	रूप भयंकर प्रगटति भई ॥
सोतहिं सभय देखि रघुराई	कहा अनुज मन मैं वृद्धाई ॥

१० । लक्ष्मिन अति लाघव सो नाक कान बिनु कोन्ह ।

ता के कर रावन कहं मनहुं चुनौतो दीन्हि । १४ ॥

१० । नाक कान बिनु भइ बिकरारा ।	जनु सव सैल गुरु के धारा ॥
खर दूधन पछं गद बिलपाता	धिक धिक तव पौरुष बल भ्राता ॥
तेहिं पृष्ठा सब कहैसि बुझाई	यातुधान सुनि मन बनाई ॥
धाये निमिचरनिकरबह्या	जनु मपच्छककलगरियुथा ॥
नाना बाहुन नानाकारा	नानाबुधधर धार अपारा ॥
सुपनखा आगे करि लोनी	अनुभवे सुतिनाशाहीनी ॥

- अमरगन अनित होरि भयकारी । मनहि न मृत्युदिवस सब झारी ॥  
 गर्जहि तर्रहि गगन उड़ाहीं । देखि कटक भट्टा पात हरषाहीं ॥  
 कोउ कह अियत धरज्ज दोउ भाई । धरि मारज्ज तिय लेज्ज कड़ाई ॥  
 पुरि पुरि नभमंदल रहा । राम बोलाइ अनुज मन कहा ॥  
 ले जानकिहि जाइ गिरिकंदर । आवा निमिचरकटक भयंकर ॥  
 रहेज्ज मजग मुनि प्रभु के वानी । चले महित सौ मरधनुपाजो ॥  
 देखि राम रिपुदल चलि आवा । दिहंमि कठिन कोटेंड चढावा ॥
- कं० । कोटेंड कठिन चढाई मिर जट जट बांधत मोह क्यों ॥  
 यरकतभेल पर लमत दामिनि कोटि भों युग भुजंग ज्यों ॥  
 कटि कमि निषंग विमाल भुज गहि चाप विमिख सुधारि कै ॥  
 चितवत मनहुं मृगराज प्रभु गजराजघटा निहारि कै ॥ ३ ॥
- सो० । आइ गय वगमेल धरज्ज धरज्ज धावत सुभट ॥  
 यथा विलोकि अकेल बालरविहि घेरत दनुज ॥ ६ ॥
- दो० । प्रभु विलोकि सर मकहि गहारी । यकित भई रजनीचर धारी ॥  
 मरिच बोलि बोले खर दूषण । यह कोउ मृपबालक नरभुषण ॥  
 नाग अमर मुर नर मुनि जेत । देखे जिते हत हम केत ॥  
 हम भरि जनम मुनज्ज सब भाई । देखो नहिं अमि संदरताई ॥  
 यद्यपि भगिनो कीन्ह कुम्पा । बध लायक नहिं पुंरुष अनुपा ॥  
 तुरत देखि निज नागि दुराई । जीवत भवन जाइ दोउ भाई ॥  
 मोर कहा तुम ताहि मुनावज्ज । तामु वचन सनि आतुर आवज्ज ॥  
 दूतन्ह कहा राम मन जाई । मुनत राम बोले मुमुकाई ॥  
 हम कुवो मृगया बन करहीं । तुम से खल मृग खोजत फिरहीं ॥  
 रिपु बलवत देखि नहिं डरहीं । एकवार कालज्ज मन सरहीं ॥  
 यद्यपि मनुज दनुजकुलघालक । मुनिपालक खलघालक बालक ॥  
 जों न होइ बल भर फिरि जाह्नु । समर विमुख मै हतौं न काह्नु ॥  
 रन चढि करिय कपट चतुराई । रिपु पर कृपा परम कदराई ॥  
 दूतन्ह जाइ तुरत सब कहैज्ज । मुनि खर दूषण डर अति दहेज्ज ॥
- कं० । उर दहेउ कहैउ कि धरज्ज धाये बिकट भट रजनीचरा ।  
 सर चाप तोमर मक्ति सुख कृपान परिघ परसु धरा ॥  
 प्रभु कीन्ह धनुषटकोर प्रथम कठोर घोर भयाबहा ॥  
 भये बधिर व्याकुल यातुधान न ज्ञान तेहि अवसर रहा ॥ ४ ॥
- दो० । सावधान होइ धाये जानि सबल आराति ।  
 लागे वरधन राम पर अस्त्र सस्त्र बज्ज भांति ॥

तिनह के आयुध तिल मम करि काटे रघुबीर ।  
 तानि सरासन स्वयन लागि पुनि काटे निज तोर । १५ ॥  
 तब चले वान कराल । फुलकरत जनु बड्ड बाल  
 कोपेउ समर खोराम । चले बिमिख निमित्त निकाम ॥  
 अवलोकि खरतर तोर । मुरि चले निमिचरबीर ।  
 भये कुट्ट तोनौ भाइ । जो भागि रन ते जाइ ।  
 तेहि बधब हम निज पानि । फिरे मरन मन महं ठानि । १५ ॥  
 आयुध अनेक प्रकार । मनमुख ते करहि प्रहार ।  
 रिपु परम कोपे जानि । प्रभु धनुष सर मधानि ॥  
 काटे बिपुल नाराच । लगे कटन दिकट पिमाच ।  
 उर सोम भुज कर चरन । जहं तहं लगे महि परन ॥  
 चिक्करत लागत बान । धर परत कुधर समान ।  
 भट कटत तनु मत खंड । पुनि उठत करि पापह ॥  
 नभ उडत बड्ड भुज मुण्ड । बिनु मौलि धावत रुंड ।  
 खग कंक काग सगाल । कटकटहिं कटिन कराल । १६ ॥  
 कटकटहिं जंबुक भूत प्रेत पिमाच खपार मचधी ।  
 वेताक वीर कपालताल बजाइ यागिनि नचधी ॥  
 रघुबीरवान प्रचेड खड्गहिं भटन के उर भुज मिरा ।  
 जहं तहं परहिं उठि लरहिं थरु धरु करहिं भयंकर गिरा ॥  
 अंतावरी गहिं उडिं गोध पिमाच कर गहिं धावही ।  
 संगमपुरवामी मनहुं बड्ड बाल गुडो उड़ावही ॥  
 मारे पकारे उर बिदार बिपुल भट कंहरत परे ।  
 अवलोकि निज दल दिकल भट निमिरादि खर दूधन फिरे ॥  
 सर मांऊ तांमर परम रान लपान एकहि बारही ।  
 करि कोप खोरघुबीर पर अगिनित निमाचर डारही ॥  
 प्रभु निमिष महं रिपुसर निवारि प्रचारि डारे सायका ।  
 दम दम बिमिख उर मांस मारे सकल निमिचरनायका ॥  
 महि परत उठि भट भिरत मरत न करत माया अति घनी ।  
 सुर डरत चौदह सहस्र प्रेत त्रिलोकि एक अवधधनी ॥  
 सुर मुनि सभय प्रभु देखि मायानाय अति कौतुक कयो ।  
 देखहिं परस्पर रास करि संगाम रिपुदल लरि मयो । १७ ॥  
 राम राम कहि तनु तजहिं पावहिं पद निबान ।  
 करि उपाय रिपु मारेउ कन महं रूपानिधान ॥  
 हरषित बरषहिं मुमन सुर वाजहिं गगन निमान ।  
 अकति करि करि सब चले सोभित बिबिध विमान । १८ ॥



चो० । अब रघुनाथ समर रिपु ओते । सुर नर मुनि सब के भय बोते ॥  
 तब लक्ष्मिन मोतहिं लै आये । प्रभुपद परत हरषि उर लाये ॥  
 मोता चितव स्याम सुद गाता । परम प्रेम लोचन न अघाता ॥  
 पंचवटी बसि लोचुनायक । करत चरित सुरमुनिसुखदायक ॥  
 धुआं देखि खर दूखन केरा । जाइ सुपनखा रावन प्रेरा ॥  
 योलो वचन कोध करि भारी । देस कोम कै सुरति बिमारी ॥  
 करमि पान मोवसि दिन राती । सुधि नहि तब मिर पर आराती ॥  
 राज नीति विनु धन बिनु धर्मा । हरिहिं ममर्पे विन सतकर्मा ॥  
 बिसा दिनु बिबेक उपजाये । सम फल पढे किये अरु पाये ॥  
 संग ते यतो कुसंन ते राजा । मान ते ज्ञान पान ते लाजा ॥  
 प्रीति प्रलय विनु मद ते गुनी । नामहिं बेगि नीति अमि सुनी ॥

मो० । रिपु रुज पावक पाप प्रभु अहि गनिय न कोट करि ।  
 अम कहि बिबिध बिसाप करि लागी रोदन करन । ७ ॥

दो० । मभा सांझ परि व्याकुल बहू प्रकार रुह रोइ ।  
 तोहि जियत दमकधर मोरि कि अमि गति होइ । १७ ॥

चो० । गनत मभामद उठ अकुलाई । समझाई गहि बांछ उठाई ॥  
 कह लंकम कहमि किन बाता । कहि तव नामा कान निपाता ॥  
 अवधनृपति दमरथ के जाये । पुरुषमिह वन खेलन आये ॥  
 ममुझि परो मोहि उत के करनी । रहित निमाचर करिहहिं धरनी ॥  
 जिन्ह कर भुजबल पाइ दमानन । अभय भये बिवरत मुनि कानन ॥  
 देखत बालक काल समाना । परम धीर धन्वी गुननाना ॥  
 अतुलितबलप्रताप डोउ आता । खलबधरत सुरमुनिसुखदाता ॥  
 मोभाधाम राम अम नामा । तिन्ह के मग नारि एक स्यामा ॥  
 रूपगामि बिधि नारि सवागो । रति सत कोटि तासु बलिहार ॥  
 तासु अनुज काटे सुति नामा । सुनि तव भगिनि करहिं पशिमा ॥  
 खर दूखन सुनि लगै पुकारा । इन महं सकल कटक उन्ह मारा ॥  
 खर दूखन तिसिरा कर घाता । सुनि दसषोष जरे सब गाता ॥

दो० । सुपनखहिं ममुझाई करि बल बोलेमि बहू भांति ।  
 गद्यउ भवन अति मोचबस नोद परो नहिं राति । १८ ॥

चो० । सुर नर असुर नाग खग माहीं । मोरे अनुचर कहं कोउ नाहीं ॥  
 खर दूषन मोहिं मम बलवंता । तिन्है को मारै विनु भगवंता ॥  
 सुरगजन भजनमहिभारा । औ भगवंत लोन्ह अवतारा ॥  
 तौ मैं जाइ बैर इठि करऊ । प्रभुर प्राण तजे भव तरऊ ॥  
 होइहि भजन न ताममदेहा । मन कम बचन मंत्र दूठ एहा ॥

। नररूप भूप सुत कोऊ । हरिहौ नागि जीति न दोऊ ॥  
 ला अकेल यान चरि तहवां । बस मारोच बिंधु तट जहवां ॥  
 हां राम जसि जुगुति बनाई । मुनज उमा सो कथा सुहाई ॥

लकिमन गये बनहिं जय लेन मूल फल कंद ।  
 जनकमुता मन बोले बिहमि कृपा मुखहृन्द । १८ ॥

। मुनज प्रियाव्रत रुचिर सुमोला । मै ककु करब जलित नरलीला ॥  
 न पावक मह करजु निबामा । जय सगि करौ निमाचर नामा ॥  
 यहिं राम सब कहा बखानो । प्रभुपद धरि हिय अनल समानो ॥  
 राज प्रतिबिंब राखि तहं सीता । तेमद रूप सुमोल बिनीता ॥  
 किमनहं यह मरम न जाना । जो ककु चरित रक्षा भगवाना ॥  
 समुख गयउ जहां मारोचा । नाइ माय स्वारथगत नीचा ॥  
 वनि नोच कै अति दुखदाई । जिमि अंकुस धनु उरग हिलाई ॥  
 यदायक खल कै प्रिय बागो । जिमि अकाल के कुमुभ भवानो ॥

करि पूजा मारोच तब सादर पूको बात ।

कवन हेतु मन व्यग अति अकसर आयहु तात । २० ॥

दसमुख सकल कथा तेहि आगे । कहो महित अभिमान अभाने ॥  
 तेज कपटसुग तुम कलकारो । जोहि बिधि हरि आनौ नृपनारी ॥  
 हि पुनि कहा मुनज दसभीमा । ते नररूप चराचरईमा ॥  
 । मो तात बैर नहिं कोजै । मारं मरिय जियाय ओजै ॥  
 सुनिमुख राखन गयउ कुमारा । बिन फर सर गघुपति मोहि मारा ॥  
 तन योजन आयउ कन माहीं । तिरु मन बैर किय भल नाहीं ॥  
 नइ गति कीट भट्ट को नाई । जहं तहं मै देखौ दोउ भाई ॥  
 गो नर तात तदपि अति रग । तिनहि बिरोध न आइहि पूरा ॥

० । जहि ताडिका सवाजु हति खंडेउ हरकोदंड ।

खर दूषन चिमिरा वधेउ मुनज कि अस बरिवेउ । २१ ॥

० । जाऊ भवन कुलकुमल विचारी । मुनत जग दोन्हमि बह गारी ॥  
 गुरु जिमि मूढ करमि सम बोधा । कछ जग मोहि समान को चोधा ॥  
 तब मारोच हृदय अनमाना । नवहि बिरोध नहिं कल्याना ॥  
 सक्ती मर्मा प्रभु मठ धनो । वैद्य बंदि कवि मान मगुनो ॥  
 उभय भांति देखा निज मरना । तब ताकेमि गघुनायक मरना ॥  
 उतर देत मोहि बधव अभाने । कम न मरौ गघुपतिपर लागे ॥  
 अस अयि जानि दमानन संग । सजा रामपदप्रमथभंग ॥  
 मन अति हृषं जनाव न तेहो । आज देखिहौ परम मनहो ॥

क० । निज परम प्रीतम देखि लोचन सुफल करि मुख पादहौ ।  
 सोमहित अनुज समेत रूपानिकतपद मन सादहौ ॥  
 निर्बानदायक कोध जा कर भक्त ऐसहि वस करी ।  
 निज पानि सर मंधानि सो मोहि बधहि मुखसागर हरी ॥ ८ ॥

दो० । मम पाँके धर धावत धरे सरामन बान ।  
 फिरि फिरि प्रभुहिं बिलोकिहौ धन्य न मो सम आन ॥ ९ ॥

चौ० । तेहि वन निकट दशानन गयऊ । तब मारीच कपट मयऊ  
 अति बिचित्र कहु वरनि न जाई । कनकदेह मनिरेसि बनाई  
 सीता परम रुचिर मृग देखा । अंग अंग मुमनोहर बेखा  
 मुनहु देव रघुबीर रूपाला । एहि मृग कर अति सुंदर काखा  
 मत्यमंथ प्रभु बध करि एही । आनहु चर्म कहति बैदेही  
 तब रघुपति जानत सब कारन । उठे हरषि सुरकाजसंवारन  
 मृग बिलोकि कटि परिकर बांधा । कर तल चाप रुचिर सर साधा  
 प्रभु लक्ष्मिनहि कहा ममुझाई । फिरत बिपिन निमिचर बड्ड भाई  
 सीता करि करेहु रखवारो । बुधि बिबेक बल समय बिचारो  
 प्रभुहिं बिलोकि लला मृग भाजी । धाये राम सरामन साजी  
 निगम नेति सिव ध्यान न पावा । मायामृग पाँके सोइ धावा  
 कबहु निकट पुनि दूर पराई । कबहुक प्रगटे कबहु रूपाई  
 प्रगटत दूरत करत कल भरी । एहि विधि प्रभुहिं गयो लै दूरी  
 तब तकि राम कठिन सर मारा । धरनि परेउ करि घोर पुकारा  
 लक्ष्मिन के प्रथमहि लै नामा । पाँके मुमिरेसि मन महं रामा  
 प्राण तजत प्रगटेसि निज देहा । मुमिरेसि राम समेत सनेहा  
 अंतर प्रेम तामु पहिचाना । मुनि दुर्लभगति दीन्ह मुजाना ॥

दो० । बिपल मुमन सुर बर्यहिं गावहिं प्रभुगनगाथ ।  
 निज पद दीन्ह अमर कहं दीनबंधु रघुनाथ ॥ १० ॥

चौ० । खल बधि तुरत फिरि रघुबीरा । मोह चाप कर कटि तूनीरा  
 आरतगिरा मुनी अब सीता । कह लक्ष्मिन मन परम समीता  
 जाहु बगि संकट अति भ्राता । लक्ष्मिन बिहसि कहा सुनु माता  
 भक्तुबिलास छटि लय होई । सपनेहु संकट परै कि सोई  
 मरमबचन अब सीता बेला । हरि प्रेरित लक्ष्मिनमन डोला  
 बनदिशि देव सौं पि सब काहू । चले जहाँ रावनसधिराहू  
 सन बीच दमकधर देवा । आवा निकट यती के भेषा  
 जाके डर सुर असुर डेराहौ । निशि न नोई दिन अस न साहौ  
 सो दममोस खान की नाई । इत उत चितै लला भडिहाई ॥

मि कुपय पग देत खगसा	रह न तेजबुधिवसतमलोषा	॥
ना विधि कछि कथा सुनाई	राजनोति भय प्रीति देख्योई	॥
ह सोता सुन यतो गुसाई	बोलेहु बचन दुष्ट को नाई	॥
व रावन निज रूप देख्यावा	भई सभय जब नाम सुनावा	॥
ह सोता धरि धीरज गाढा	आइ गये प्रभु रज्ज खल ठाढा	॥
जमि हरिबधुहिं कुद्र सस चाहा	भयेसि काखबस निसिचरनाहा	॥
नत बचन दसमोस रिसाना	मग मंह चरन बँदि मुख माना	॥

क्रोधवत तब रावन लोन्हिसि रय बैठाइ

चला गगन पथ आतुर भय रय हांकि न आइ । २४ ॥

हा जगदेक बीर रघुराया	केहि अपराध बिसारेहु टाया	॥
आरतिहरन सरन मुखदायक	हा रघुकुलमराज दिननायक	॥
हा लक्ष्मिन तुम्हार नहिं दोषा	मो फल पायेउ कीन्हें रोसा	॥
विविध बिलाप करति बैदेही	भूरिहृपा प्रभु दूरि सनेही	॥
विपति मोरि को प्रभुहिं सुनावा	पुरोडास सह रासभ खावा	॥
सोता कै बिलाप सुनि भारी	भये चराचर जीव दुखारी	॥
गोधराज मुनि आरतबानी	रघुकुलतिनकनारि पहिचानी	॥
अधम निसाचर लोन्हें आई	जिमि मलेहु बस कपिला गई	॥
सोते पुत्रि करगि अनि चासा	करिहौं यातुधान कै नासा	॥
धावा क्रोधवत खग कैस	हुटै पवि पथत पर जैसे	॥
रे रे दुष्ट ठाढ किन होहो	निर्भय खलेशि न जानेहि मोहो	॥
आवत देखि कृतांत समाना	फिरि दसकंधर कर अनुमाना	॥
को मैनाक कि खगपति होई	मम बल जान कहित पति सोई	॥
जाना जरठ जटायु एहा	मम कर तोरय छाडिहि देहा	॥
सुनत गोध क्रोधातुर धावा	कह सुनु रावन मोर सिखावा	॥
तजि जानकिहिं कुसल गृह जाहू	नाहित अस होदहि बज्रबाहू	॥
राम रोष पावक अति घोरा	होदहि सकल सभभ कुल तोरा	॥
उतर न देत दसानन थोधा	तबहिं गोध धावा करि क्रोधा	॥
धरि कच विरथ कोन्ह महि गिरा	सोतहि राखि गोध पुनि फिरा	॥
चोचन्ह मारि बिदारेसि देहो	दंड एक भर मर्का तेहो	॥
तब मक्रोध निसिचर खिसियाना	काटिसि परम केराख छपाना	॥
काटिसि पंख परा खग धरनी	सुमिरि राम करि अहुत करनी	॥
सोतहि यान चढ़ाइ बहोरो	चला उताइल चासन घोरो	॥
करति बिलाप जाति नभ सोता	व्याधविषस जनु मृगो सभोता	॥
गिरि पर बैठे कपिन्ह निहारो	कहि हरिनाम दोन्ह पट डारो	॥
एहि विधि सोतहिं जो सै गयऊ	वनअशोक मंह राखत भयऊ	॥

दो० । हरि परा खल बड विधि भय अरु प्रीति दिखाइ ।  
तब असोकपादप तर राखेसि जतन कराइ ॥  
जहि विधि कपटकुरंग संग धाड चले सीराम ।  
सो कहि मोता राखि उर रटति रहति हरिनाम । २५ ॥

चौ० । रघुपति अनजहि आवत देवी । दाहिज सिंता कीन्ह बिसेधी ॥  
जनकसुता परिहरैउ अकंखी । आयेऊ तात वचन मम पैली ॥  
निमिचरनिकर फिरहि वन माहीं । मम मन सीता आस्रम नाहीं ॥  
गहि पदकमल अनुज कर जोरी । सुनऊ नाथ कहु मोहि न खोरी ॥  
अनुज समेत गयउ प्रभु तहवां । गोदावरितट आस्रम जहवां ॥  
आस्रम देखि जानकीचामा । भये बिकल जम प्राकृत दोना ॥  
रा गनखानि जानकी सीता । रूप मोल त्रत नेम पुनीता ॥  
लहिमन समुद्रायें बड भांती । पृकत चक्रे लतातनपांती ॥  
हे खग मृग हे मधुकरखेली । तुल देखी सीता मृगनैनी ॥  
खंजन सुक कपात मृग सीता । मधुपर्निकर कोकिला प्रवीना ॥  
कुन्दकली दाडिम दामिनी । कमल सरद मसि अहिभामिनी ॥  
बरुनपाम मनोजधनु हंसा । गज केहरि निज सुनत प्रमंसा ॥  
खीफल कनक कदलि हरपाहीं । नेकु न मंक सकुच मन माहीं ॥  
सुनु जानकी तोहि बिनु आज । हरष सकल पाइ जनु राज ॥  
किमि सहि जात अनख तोहि पाहीं । प्रिया बेगि प्रगटमि कम नाहीं ॥  
एहि विधि खोजत बिलपत खानी । मनऊ महा बिहरी अति कामी ॥  
पूरनकाम राम सुखरामो । अनुजचरित कर अज अविनामो ॥  
आगे परा गोधपति देखा । सुमिरत रामचरन जिन्ह रेखा ॥

दो० । करमरोज सिर परमेउ लपामिधु रघुबीर ।  
निरखि राम कबिधाम मुख विगत भई सब पीर । २६ ॥

चौ० । तब कह गोध दचन धरि धीरा । सुनऊ राम भंजनभवभोरा ॥  
नाथ दशमन यह गति कीन्ही । तेहि खल जनकसुता हरि लीन्ही ॥  
ले दाखिऊ दिमि गयउ गुसाइ । बिलपति अति कुररी की नाइ ॥  
दरस लागि प्रभु राखेउ प्राणा । चलन चहत अब लपानिधाना ॥  
राम कहा तनु राखऊ ताता । मुख मुसुकाइ कही तेहि वाता ॥  
जा कर नाम मरत मुख आवा । अधमौ मुक होइ सुति गावा ॥  
सो मम सोचन गोचर आगे । राखौ देह नाथ केहि खागे ॥  
जल भरि नयन कहहि रघुराई । तात कर्म निज ते गति पाई ॥  
परहित बस जिन्ह के मन माहीं । तिन्ह कह जग दुखभ कहु नाहीं ॥  
तन तजि तात जाऊ मम धामा । देउ काह तुन्ह पूरनकामा ॥

जय राम रूप अनूप निर्गुन सुगुन गुणप्रेरक सही ।  
 दसशोसबाहु प्रचंड खंडन चंड मर मंडन मही ॥  
 पाथोदगात सरोजमुख राजीव आयत लोचन ।  
 नित नौमि राम कृपाक्ष बाहुबिद्याल भवभयमोचन ॥  
 बलमप्रमेयमनादिमज्जमथक्रमेकमगोचर ।  
 गोविंद गोपर दंडहर बिज्ञानघन धरनीधर ॥  
 जे राममंच अपत संत अनतजनमनरंजन ।  
 नित नौमि राम अकामप्रिय कामादिखलदलंगजन ॥  
 जहि स्मृति निरंजन ब्रह्म व्यापक विरज अज कहि गावही ।  
 करि ज्ञान ध्यान विराग योग अनेक मुनि जहि पावही ॥  
 सो प्रमट कहनाकंद सोभाष्टन्द अग जग मोहई ।  
 मम हृदय पंकज भृंग अंग अनंग बड हवि मोहई ॥  
 जो अगम सुगम स्तुभावनिर्भल असम सम सोतल सदा ।  
 पश्यन्ति यं योगी जतन करि करत मनगोबस यदा ॥  
 सो राम रमानिवास सन्तत दासबस चिभुवमधनी ।  
 मम उर बसउ सो समनस्यति आमु कीरति पावनी । ८ ॥

अविरल भक्ति मांगि बर गोध गयउ हरिभाम ।  
 तेहि को किया यथोचित निज कर कोन्ही राम । ९ ॥

० । कोमलचित अति दोनदयाला । कारन बिनु रघुनाथ कृपाला ॥  
 गोध अधम खग आमिषभोगी । गति दोन्ही ओ जाचत योगी ॥  
 सुनहु उमा ते खोग अभागी । हरि तजि होहि बिषयअनुरागी ॥  
 पुनि सोतहि खोजत दोउ भाई । चलै बिलोकत बस बडताई ॥  
 मकुल खता बिटप घन कामन । वहु खग मृग तह गज पंचानन ॥  
 आवत पंथ कबंध निपाता । तेहि सब कहौ स्थाप की दाता ॥  
 दुर्वासा मोहि दोन्ही स्थापा । प्रभुपद देखि मिटा सो पापा ॥  
 सुन गंधर्व कहौ मै तोही । मोहि न सुहाद ब्रह्मकुलडोही ॥  
 १० । मन क्रम बचन कपट तजि ओ कर भृशुरसेव ।  
 मोहि समेत बिरंचि खिब बस ता के सब देव । १८ ॥

१० । सापत ताडत परुष कहंता । बिप्र पूज्य अस गावहि संता ॥  
 पूजिय बिप्र सोलुगनहीना । सुद्र म गुनगनज्ञानप्रदीना ॥  
 कहि निज धर्म ताहि समुझावा । निअपटप्रोति देखि मन भावा ॥  
 रघुपतिचरनकमल मिर नारै । गयउ गगन आपनि गति पाई ॥  
 ताहि देद गति राम उदारा । सबरी के आसस पग धारा ॥  
 सबरी देखि राम गृह आये । मुनि के बचन समझि जिय भाये ॥  
 सरसिजलोचन बाहुबिद्याला । जटामकुट मिर उर बनमाला ॥

श्याम गौर सुंदर दोह भाई । सवरी परी चरन कपटार्ई ॥  
 प्रेममगन मुख बचन न जावा । पुनि पुनि पदसरोज सिर नावा ॥  
 मादर जल खेद चरन पखारे । पुनि सुंदर आसन बैठारे ॥

दो० । कंद मूल फल सुरस अति दिये राम कऊं आनि ।  
 प्रेम सहित प्रभु खाए बारंबार बखानि । २८ ॥

चौ० । पानि जोरि आगे भद ठाढ़ी । प्रभुहि बिलोकि प्रीति अति बाढ़ी ॥  
 कहि बिधि अदाति करौ तुम्हारी । अधम जाति मै अइमति भारी ॥  
 अधम तें अधम अधम अति नारी । तिन महं मै मतिमंद अचारी ॥  
 कह रघुपति सुनु भामिनि बाता । मानौ एक भक्ति कर नाता ॥  
 जाति पांति कल धर्म बड़ाई । धन बल परिजन गुन चतुराई ॥  
 भक्तिहीन नर सोहै कैसा । बिनु जल बारिद देखिय जैसा ॥  
 नवधा भक्ति कहौ तोहि पांही । मावधान मुनु धरु मन मांही ॥  
 प्रथम भक्ति मन्तव्य कर संगी । दूसरि रति मम कथाप्रसंगी ॥

दो० । गुरुपदपंकजमेवा तीसरि भक्ति अमान ।  
 चौथि भक्ति मम गुनगन करद कपट तजि गान । २९ ॥

चौ० । मंदजाप मम दृढ बिस्वासा । पंचम भजन सो खेद प्रकामा ॥  
 कठ दम मोल विरति बडु कर्मा । निरत निरन्तर सज्जनधर्मा ॥  
 सातव मम मोहि मय जग देखा । मो तें सन्त अधिक करि लेखा ॥  
 आठव यथालाभ सन्तोषा । सपनेहु नहि देखद परदोषा ॥  
 नवम सरल सय मन कलहोना । मम भरोम हिय हरष न दीना ॥  
 नव महं एकौ जिनह के होई । नारि पुरुष सचराच होई ॥  
 सोद अतिमय प्रिय भामिनि मोरे । सकल प्रकार भक्ति तोरे ॥  
 योगितन्दुलभ गति जाई । तो कहं आजु मुलभ भद सोई ॥  
 मम दरसनफल परम अनूपा । जीव पाव निज सहज सहपा ॥  
 अनकसुता के मुधि भामिनी । जानहि कऊ करिवरगामिनी ॥  
 पपासरहि जाऊ रघुराई । तहं होदहि सुयोविमताई ॥  
 सो सब कहिहि देव रघुवीरा । जानतहुं पूकहुं मतिधीरा ॥  
 बारबार प्रभुपद सिर नाई । प्रेम सहित सब कथा सुनाई ॥

हु० । कहि कथा सकल बिखोकि हरिमुख हृदय पदपंकज धरे ।  
 तजि योगपावक देह हरिपद लोन भद अहं नहिं फिरे ॥  
 नर विविध कर्म अधर्म बडु गत सोकप्रद सब त्यागहु ।  
 बिस्वास करि कह दास तुलसी रामपद अनुरागहु । १० ॥

दो० । जातिहीनि अचजन्म महि मुक्त कोन्हि असि नारि ।  
 महामंद मम सुख लहसि ऐमे प्रभुहि विसारि । ३ ॥

१० । चखे राम त्याग्य बग सोऊ । अतुलितबल नरकोहरि दोऊ ॥  
 बिरही हव प्रभु करत बिबादा । कहत कथा चमेक संवादा ॥  
 लक्ष्मिन देखु बिपिन कै सोभा । देखत कहि कर मन नहिं होभा ॥  
 नारि सहित सब खगमृगहन्दा । मानऊ मोरि करत हहिं निन्दा ॥  
 हमहिं देखि मृगनिकर पराहीं । मृगो कहहिं तुम कह भय नाहीं ॥  
 तुम आनंद करऊ मृगजाये । कंचनमृग खोजन ये भाये ॥  
 मंग लाइ करिनी करि खेहीं । मानऊ मोहि मिखावन देखीं ॥  
 माख सुचिन्तित पुनि पुनि देखिय । भूप सुखित बस नहिं लेखिय ॥  
 गखिय नारि यदपि उर माहीं । युवतो माख नृपति बस नाहीं ॥  
 देखऊ तात बसंत मुहावा । प्रियाहीन मोहिं भय उपजावा ॥

१० । बिरहविकल बलहीन मोहिं जानेधि निपट अकेल ।  
 सहित बिपिन मधुकर खग मदन कोइ बगमेल ॥  
 देखि गयउ भ्राता सहित तामु दूत सुनि बात ।  
 उरा कोन्हें उ मनऊ तब कटक छटक मन जात । २२ ॥

१० । बिटप बिसाल लता अरुझानी । विविध यितान दिथे अनु तानी ॥  
 कदल ताल बर ध्वजा पताका । देखि न मोह धीर मन जा का ॥  
 विविध भांति फूल तरु नाना । अनु वार्जित बने बज्र बाना ॥  
 कज कज मन्दर बिटप मुहाये । अनु भट बिलग बिलग होइ लाये ॥  
 कूजत पिक मानऊ गज माते । ठेक महोख ऊंट बिसराते ॥  
 मोर चकोर कोर बर बाजो । पारावत मरास सब ताजो ॥  
 तीतर लावक पदचरयथा । बरनि न जाइ मनोजबक्या ॥  
 रघु गिरि बिसा दुन्दुभो झरना । घातक बंदी गुमसन बरना ॥  
 मधुकर मुखर भेरि सहनाई । विविध बचारि बसीठी आई ॥  
 चतुरंगिनी सेन मंग लीन्हें । बिसरत सबहिं चुनौती दीन्हें ॥  
 लक्ष्मिन देखत कामअनीका । रहहिं धीर तिम्र कै जग लोका ॥  
 एहि के एक परम बल नारी । तेहि तें सबर सुभट सोइ भारी ॥

१० । तात तीनि अति प्रबल खल काम क्रोध अरु खोभ ।  
 मुनि विज्ञानधाममन करहिं निमिषि महं होभ ॥  
 खोभ के हस्का दंभ बल काम के केवल नारि ।  
 क्रोध के पद्व बचन बल मुनिवर कहहिं बिचारि । २३ ॥

वै० । गुनातीत सचराचरस्वामी । राम उमा सब अमरजामी ॥  
 कामिन्ह कै दीनता देखाई । धीरन्ह के मन बिरति दिवाई ॥  
 क्रोध मनोज खोभ मह भाषा । छूटहिं छकल राम की दाया ॥  
 सो नर इंद्रजाख नहिं भूला । आ पर होइ सो नट अनुकूला ॥  
 उमा कहौ मै अनुभव अपना । सत हरि भजन जगत सब सपना ॥



मुनु मुनि संतन के गुन कहऊं । जिन्ह ते मै उन्हे के बस रहऊं ॥  
 घटविकारजित अनघ अकामा । अचल अकिंचन मुषि मुखधामा ॥  
 अमितबोध अनोह मितभोगी । सत्यसंध कवि कोविद योगी ॥  
 सावधान मानमदहोवा । धीर धर्मगति परम प्रबीना ॥

दो० । मुनागार संसारदुख रहित विगतसंदेह ।  
 तजि मम चरनसरोज प्रिय तिन्ह कहं देह न गेह ॥ ४० ॥

चौ० । निजगुन सुनत स्रवन सकुषाहीं । परगुन सुनत अधिक हरषाहीं ॥  
 मम मोतख नहिं त्यागहिं नोती । सरल सुभाव सबहिं सन प्रीती ॥  
 अप तप व्रत दम संयम नेमा । गुरु गोविंद बिप्रपद प्रेमा ॥  
 लड़ा कृमा मइची दाया । मुदिता मम पद प्रीति अमाया ॥  
 बिरति बिवेक बिनय बिजाना । बोध यथार्थ वेद पुराना ॥  
 दंभ मान मद करहिं न काऊ । भूलि न देहिं कुमार्ग पाऊ ॥  
 गावहिं मुनहिं सदा मम लोला । हतुरहित परहितरत सीला ॥  
 मुनि मुनु साधुन्ह के गुन जेत । कहि न सकहिं भारद स्तुति तेते ॥

कं० । कहि सक न मारद सेष नारद मुनत पदपंकज गछे ।  
 अस दोनबंधु कृपाल अपने भक्तगुन निज मुख कह ॥  
 मिह नाद बारहिबार चरनन्हि ब्रह्मपुर नारद गथे ।  
 ते धन्य तुलसीदास आस विहाद जे हरिरंग रये ॥ ४१ ॥

दो० । रावनारिजस पावन गावहिं मुनहिं जे लोग ।  
 रामभक्ति दृढ पावहीं बिन विराग जप योग ॥  
 दीप मिखा मम युवतिजन मन जनि होमि पतंग ।  
 भजहि राम तजि काम मद करहि सदा मतसंग ॥ ४२ ॥

इति श्रीरामचरितमानसे सकलकलिकलुषविध्वंसने ।

विमलवैराग्यसम्पादनो नाम तृतीयः सर्गः ॥

समाप्तः शुभमस्तु सिद्धिरस्तु ॥ \* ॥

## अथ किसकिंदाकाण्ड ॥

श्लोक ।

कुन्देन्दीवरसुन्दरावतिबली विज्ञानधामावुभौ ।  
 शोभाकौ वरधन्विनौ श्रुतिनुतौ गोविप्रहृन्दप्रियौ ॥  
 मायामानुपरूपिलौ रघुरौ सहर्मवर्मौ हि तौ ।  
 सीताम्बेपणतत्परौ पथिगतौ भक्तिप्रदौ तौ हि नः ॥ १ ॥  
 ब्रह्माभोधिसमुद्भवं कलिमलप्रध्वंसनं चाव्ययं ।  
 श्रीमच्छम्भुमुखेन्दुसुन्दरवरं संशोभितं सर्वदा ॥  
 संसारामयभेपजं सुमधुरं श्रीजानकीजीवनं ।  
 धन्यास्ते कृतिनः पिबन्ति सततं श्रीरामनामामृतं ॥ २ ॥

मो० । मुक्तिजन्म महि जानि ज्ञानखानि अघहानिकर ।  
 अहं वम संभु भवानि मो कासो मेदय कम न ॥  
 जरत सकल मुरहृन्द विषम गरल जेहि पान किय ।  
 तेहि न भजसि मन मन्द को कृपाल संकर धरिम । १ ॥

सौ० । आगे चले वट्टरि रघुराया । रोपमक पर्वत निघराया ॥  
 तहं रह सचिव सहित मुगोवां । आगत देखि अतुलबलसीवां ॥  
 अति सभोत कह मुनु हनुमाना । पुरुष युगल बलरूपनिधाना ॥  
 धरि बटुरूप देखु तैं जाई । कहसु जानि जिय मेन बुझाई ॥  
 पठये बालि होहि मन मैला । भागौ तुरत तजौ यह मैला ॥  
 विप्ररूप धरि कपि तहं गयऊ । माय नाद पृकृत अस भयऊ ॥  
 को तुम स्यामलगौरमरोरा । कुरीरूप फिरऊ बन बीरा ॥  
 कठिन भूमि कामलपदगामी । कवन हेतु बिसरऊ बन लामो ॥  
 मृदुल मनोहर सुन्दर गाता । मरत दुसह बन आतप बाता ॥  
 को तुम तोनि देव महं कोऊ । नरनारायन को तुम दोऊ ॥

दो० । जगकारन तारन भव भंजन धरनीभार ।  
 की तुम अखिलभुवनपति सोन्ह मनजअपतार । १ ॥

चौ० । कोसलस दमरथ के जाये । हम पितृवचन मानि बन आये ॥  
 नाम राम लक्ष्मिन दोउ भाई । संग नारि मुकुमारि मोहाई ॥  
 दहा हरो निमिचर बैदेही । बिप्र फिरहि हम खोजत तेही ॥  
 आपन चरित कहा हम गाई । कहहु बिप्र निज कथा सुझाई ॥  
 प्रभु पहिचानि परेउ गहि चरना । सो मुख उमा जाइ नहि बरना ॥  
 पुलकित तन मुख आव न बचना । देखत हचिर बेप के रचना ॥  
 पुनि धोरज धरि अक्षुति कीन्ही । हरष हृदय निज नाथहि सोन्ही ॥  
 मोर न्याव मै पूछा साई । तुम पकड़ कस नर की गाई ॥  
 तव माया बस फिरौ भुलाया । ताते मै नहि प्रभु पहिचाना ॥

दो० । एक मै मंद मोहवस कुटिल हृदय अज्ञान ।  
 पुनि प्रभु मोहि बिचारउ दीनबंधु भगवान । २ ॥

चौ० । यदपि नाथ बडु अवगुन मोरे । सेवक प्रभुहि परै जनि भोरे ॥  
 नाथ जीव तव माया मोहा । सो निस्तरे तुम्हारेहि कोहा ॥  
 ता पर मै रघुबीर दोहाई । जानौ नहि कहु भजन उपाई ॥  
 सेवक मत पतिमातृभरोसे । रहै अघोष बने प्रभु पोसे ॥  
 अम कहि परेउ चरन अकुलाई । निज तनु प्रगट प्रीति उर छाई ॥  
 तव रघुपति उठाइ घर लावा । निज लोचन जस सौचि जुड़ावा ॥  
 मुनु कपि जिष मानसि जनि जना । तै मम प्रिय लक्ष्मिन तें दूना ॥  
 समहरसो मोहि कह सब कोऊ । सेवक प्रिय अनन्यगति सोऊ ॥

दो० । सो अनन्य जा के अशि मति न टरै हनुमन्त ।  
 मै सेवक सचराचर रूप खामि भगवन्त । २ ॥

चौ० । देखि पवनसुत पति अनुकूला । हृदय हरष बीतो सब सुखा ॥  
 नाथ सैल पर कपिपति रहई । सो सुघोव दास तव अहई ॥  
 तेहि सन नाथ मरचो कीजै । दीन जानि तेहि अभय करोजै ॥  
 सो सीता कर खोज कराइहि । जहं तहं मरकट कोटि पठाइहि ॥  
 एहि बिधि सकल कथा समुझाई । लिये दुआ जन पीठि चढ़ाई ॥  
 जब सुघोव राम कह देखी । अतिसय जन्म धन्य करि लेखा ॥  
 मादर मिलेउ गार पद माथा । भेंटउ अनुज सहित रघुनाथा ॥  
 कपि कर मन विचार यह रीती । करिहहि बिधि सो सन ये प्रीती ॥

दो० । तव हनुमन्त उभय दिसि की सब कथा सुनाइ ।  
 पावक साखी देइ के ओरो प्रीति दिहाइ । ४ ॥

चौ० । कीन्ही प्रीति कहु बीच न राधा । लक्ष्मिन राम चरित सब भाषा ॥  
 कह सुघोव नयन भरि बारी । मिलिहि नाथ मिथिलेसकुमारी ॥  
 मंत्रिन्ह सहित दहा एक बारा । बैठ रहेउ मै करत बिचारा ॥  
 गगनपथ देखी मै जाता । परबस परी बडुत बिलपाता ॥

राम राम हा राम पुकारी	। हमहि देखि दोन्हें पट जारी ॥
मांगा राम तुरत तेहि दोन्हा	। पट उर खार सोच अति कीन्हा ॥
कह सुयीव सुनहु रघुबीरा	। तजहु सोच मन आनहु धीरा ॥
सब प्रकार करिहौं सेवकाई	। जेहि बिधि मिलिहि जानकी आई ॥

१० । सखावचन सुनि हरखे कृपासिंधु बलसीव ।  
कारन कवन बसहु बग मोहि कहहु सुयीव । ५ ॥

१० । नाथ बालि अह मैं दोउ भाई	। प्रीति रही कहु बरनि न जाई ॥
मयसुत मायावी तेहि नाऊं	। आवा सो प्रभु हमरे गाऊं ॥
अर्द्धराति पुरदार पुकारा	। बाली रिपुबल सहै न पारा ॥
धावा बालि देखि सो भागा	। मैं पुनि गयेउ बंधु संग जागा ॥
गिरिवरगुहा पैठ सो जाई	। तबहि बालि मोहि कहा बुझाई ॥
परखेसु मोहि एक पखवारा	। नहिं आवौं तौ जानेसु मारा ॥
मामदिवस तहं रहेउ खरारी	। निसरी रुधिरधार तहं भारी ॥
बालि हतेमि मोहि मारिहि आई	। मिला देद तहं चलेउ पराई ॥
मंत्रिन्ह देखा पुर बिनु सारै	। दोन्हें मोहि राज बरिआई ॥
बाली ताहि मारि यह आवा	। देखि मोहि जिय भेद बढावा ॥
रिपु क्रम मोहि मारेसि अति भारी	। हरि कीन्हेंसि सर्वस अह नारी ॥
ता के भय रघुबीर कृपासा	। सकल भुवन मैं फिरें विहासा ॥
इहां स्थापवस आवत नाहीं	। तदपि समीत रहैं मन माहीं ॥
सुनि सेवकदुख दीनदयाला	। फरकि छठे दोउ भुजा बिहाला ॥

१० । सुन सुयीव मारिहौं बालिहि एकहि बान ।  
ब्रह्महृदयरनागत गयेउ न उबरिहि प्रान । ६ ॥

१० । जे न मित्र दुख होहि दुखारी	। तिनहैं बिकोक्त पातक भारी ॥
निज दुख गिरि सम रज करि माना	। मित्र के दुख रज भेद समाना ॥
जिन के असि मति सहज न आई	। ते सठ कत हठ करत मितारै ॥
कृपय निवारि सुपंच चलावा	। गुन प्रगटै अवगुनहिं दुरावा ॥
देत स्नेह मन संक न धरै	। बल अनुमान सदा हित करै ॥
बिपत्तिकाल कर सत गुन नेहा	। स्तुति कह संतमित्रगुन एहा ॥
आगे कह मृदु बचन बनाई	। पाहैं अनहित मन कटिआई ॥
जा कर बित अहिगति सम भाई	। अस कुमित्र परिहरेहि भलाई ॥
सेवक सठ नृप लपन कुनारी	। कपटौ मित्र सुख सम चारी ॥
सखा सोच त्यागहु बल मोरै	। सब बिधि छटव काज मैं तोरै ॥
कह सुयीव सुनहु रघुबीरा	। बालि महाबल अतिरनधीरा ॥
दुंदुभिअप्लितास दिखराये	। बिनु प्रयास रघुबीर कलाये ॥

देखि अमित बल बाढ़ी प्रीती	। बालि बधव दह भद परतीती
बारबार नावा पद सीसा	। प्रभुहि जानि मन हरष कपीसा
उपजा ज्ञान बचन तब बोला	। नाथ कृपा मन भयेउ अशोला
मुख संपति परिवार बढ़ाई	। सब परिहरि करिहौं सेवकाई
ये सब रामभक्ति के बाधक	। कहहि संत तव पद अवराधक
मत्र मित्र देख मुख जग माहीं	। मायाकृत परम रूप नाहीं
बालि परम हित जासु प्रमादा	। मिलेऊ राम तुम समन विषादा
मपनं जेहि सन होइ लराई	। जागे समुझत मन सकुचाई
अब प्रभु कृपा करहु एहि भांती	। सब तजि भजन करौं दिन राती
सुनि विरागसंयुत कपिबानी	। बालि बिहंसि राम धनुपानी
जो कहु कहेउ मृत्यु सब मोई	। मखा बचन मम मृष्टा न होई
नट मरकट दव सबहि नचावत	। राम खगम घेद अम गावत
लं सग्योव संग रघुनाथा	। चलै चाप मायक गहि हाथा
तव रघुपति सुग्रीव पठावा	। गर्जाम जाइ निकट बल पावा
मनत बालि क्राधातुर धावा	। गहि कर चरन नारि समुझावा
मनु पति जिनहि मिलेउ सुग्रीवा	। ते दोउ बंधु तेजबलमोवा
कोमलसमत् लज्जिमन रामा	। कालहु जीति सकहि संगमा

दो० । कह बाली सुनु भीरु प्रिय ममदरसी रघुनाथ ।

जो कदापि मोहि मारिहैं तौ पुनि होब मनाथ । ७ ॥

चौ० । अम कहि सला महा अभिमानी	। दन समान सुग्रीवहिं जानी
भिर उभय बाली अति तरजा	। मुठिका मारि महा धुनि गरजा
तब सुग्रीव बिकल होइ भागा	। मुष्टिप्रहार वज्र सम लागे
मैं जो कहु रघुबीर कृपाला	। बंधु न होइ मोर यह काला
एक रूप तुम आता दोऊ	। तेहि भ्रम तैं नहिं मारेउं भोऊ
कर परसा सुग्रीव मरीरा	। तनु भा कुलिस गई सब पीरा
मेली कंठ सुमन कै माला	। पठवा पुनि बल देइ बिसाला
पुनि नावा बिध भई लराई	। बिटप ओट देखहि रघुराई

दो० । बड्ड कल बल सुग्रीव करि हिय हारा भय मानि ।

मारा बालिहि राम तब हृदय मांझ सर तानि । ८ ॥

चौ० । परब बिकल महि सर के लागे	। पुनि उठि बैठ देखि प्रभु आगे
श्याम गात सिर जटा बनाये	। अरुन नयन सर चाप चढ़ाये
पुनि पुनि चितै चरन पित दोन्हा	। सुफल अन्न माना प्रभु चोन्हा
हृदय प्रीति मुख बचन कठोरा	। बाला चितै राम की ओरा
धर्महेतु अवतरेहु गुसाई	। मारेहु मोहि व्याध की नाई
मैं बैरी सुग्रीव पिआरा	। अवगुन कवन नाथ मोहि मारा

अनुजबधु भगिनी सुतनारी । सुनु सठ कन्या सम से चारी ॥  
 दन्ह कहुटि बिलोकै जोई । ताहि बधे कहु पाप न होई ॥  
 मठ तोहि अतिमय अभिमाना । नारि सिखावन करेसि न काना ॥  
 मम भुजबलआसित तेहि जानी । मारा रहसि अधम अभिमानो ॥

१० । सुनत राम स्वामी सन चलन चातुरी मोरि ।  
 प्रभु अजहं मै पापी अन्त काल गति तोरि । ८ ॥

११ । सुनत राम अति कोमल बानी । बालिबोम परमेउ निज पानी ॥  
 अचल करौ तन राखहु प्राणा । बालि कहा सुनु कृपा निधाना ॥  
 अन्न जन्म मुनि जतन कराहीं । अन्न राम कहि आवत नाहीं ॥  
 नाम नामबल संकर कामी । देत मयहि सम गति अभिनामी ॥  
 मम लोचनगोचर मोह आवा । बहुरि कि प्रभु अस बनिहि बनावा ॥

१२ । मो नयनगोचर आसुं गुन निति निति कहि मुति गावहीं ।  
 जिति पवन मन गो निरस करि मुनि ध्यान कबहुं क पावहीं ।  
 मोहि जानि अति अभिमानबस प्रभु कहै उ राखु मरोरहीं ।  
 अस कवन सठ हठि काटि मुरतरु वारि करिहि बवरोरहीं ॥  
 अध नाथ करि कहना बिलाकल देख जे बर मांगऊं ।  
 जेहि योनि जनमो कर्मबस तहं रामपद अमुरागऊं ॥  
 यह तनय मम मम विनयबलकन्यानप्रद प्रभु कीजिये ।  
 गहि बांह मुरनरनाह दाम आपन अंगद कीजिये । १ ॥

१३ । रामचरण दूठ प्रीति करि बालि कीन्ह तनु त्याग ।  
 सुमनमाल जमि कंठ ते गिरत न जानै नाग । १० ॥

१४ । राम बालि निज धाम पठावा । नगरलोग सब ब्याकुल धावा ॥  
 नानाबिध बिलाप कर तारा । छूटे कैसे न देख संभारा ॥  
 तारा बिकल देखि रघुराया । दीन्ह ज्ञान हरि कीन्हो माया ॥  
 किति अल पावक गगन समीरा । पंचरचित अति अधम मरीरा ॥  
 प्रगट सो तनु तब आगे सोवा । जीव नित्य केहि लगि तुम रोवा ॥  
 उपजा ज्ञान चरन तब लागी । कीन्हसि परम भक्ति बर मागी ॥  
 उमा दाहयोषित की नाई । सबहि नचावत राम गुनाई ॥  
 तब सुयोवहिं आयसु दीन्ह । मृतककर्म विधिवत सब कीन्ह ॥  
 राम कहा अनुजहिं समुद्राई । राज देख सुयोवहिं जाई ॥  
 रघुपतिचरन नाह करि माया । चले सकल प्रेरित रघुनाया ॥

१५ । लक्ष्मिन तुरत बुलाये पुरजन विप्रसमाज ।  
 राज दीन्ह सुयोव कहं अंगद कहं युवराज । ११ ॥

१६ । उमा राम सम हित जग माहीं । गुरु पितु मातु बंधु प्रभु नाहीं ॥

सुर नर मुनि सब कै यह रोती । स्वारथ लागि करें सब प्रीती ॥  
 बालिबाम ब्याकुल दिन राती । तनु बज्र बन चिंता जर कानी ॥  
 माद सुग्रीव कोन्ह कपिराज । अति कृपाल रघुबीर सुभाऊ ॥  
 जानतछं अस प्रभु परिहरहीं । काहे न बिपनिपाल नर परहीं ॥  
 पुनि सुग्रीवहि लोन्ह बुलाई । बज्र प्रकार टपनीति मिसाई ॥  
 कह प्रभु सुनु सुग्रीव हरोसा । पुर न जाउं दमचारि बरोभा ॥  
 मत घोषम बरषा अतु आई । रहिहीं निकट मैल पर काई ॥  
 अंगद सहित करछ तुम राजू । मन्तत हृदय धरछ मम काजू ॥  
 तब सुग्रीव भवन फिरि आये । राम प्रवर्षनगिरि पर काये ॥  
 दो० । प्रथमहिं देवन गिरि गुहा राखेउ रुचिर बनाइ ।  
 राम कृपानिधि ककुब दिन बास करहिंगे आइ । १२ ॥

चौ० । सुंदर बन कुमुमित अति मोभा । गुञ्जत मधुपनिकर मधुलोभा ॥  
 कंद मूल फल पत्र सुहाये । भये बज्रत जब ते प्रभु आये ॥  
 देखि मनोहर मैल अनपा । रहे तहं अनुज सहित सुरभूपा ॥  
 मधुकरखगमग्नतनु धरि देवा । करहिं मिद्ध मुनि प्रभु कै सेवा ॥  
 मंगल रूप भयउ बन तब ते । कोन्ह निवास रमापति जब ते ॥  
 फटिकमिला अति सुभ सुहाई । सुख आमीन तहां दोउ भाई ॥  
 कहत अनुज मन कथा अनेका । भक्ति बिरति नृपनीति बिवेका ॥  
 बरषाकाल मेघ नभ काये । गरजत छागत परम सुहाये ॥

दो० । लक्ष्मिन देखु मोरगन नाचत बारिद पेखि ।  
 गृही बिरति रत हरष अस विस्मभक्त कछु देखि । १३ ॥

चौ० । घनघमंड नभ गरजत घोरा । प्रियाहोन उरपत मन मोरा ॥  
 दामिनि दमकि रहत घन माही । खल कै प्रीति यथा थिर नाही ॥  
 बरषहिं जलद भूमि निथराये । यथा नवहिं बुध विद्या पाये ॥  
 बृन्दअघात सहै गिरि कैसे । खल के बचन सन्त सह जैसे ॥  
 कूट नदी भरि खलि उतराई । अस योरेछ धन खल इतराई ॥  
 भूमि परत भा ठाबर पानी । अनु जीवहिं माया लपटानी ॥  
 सिमिटि सिमिटि जल भरहिं तलावा । जिमि सदगुन सज्जन पछं आवा ॥  
 सरिताजल जलनिधि सह जाई । होइ अचल जिमि जिव हरि पाई ॥

दो० । हरित भूमि दनसंकुल समुद्रि परै नहि पंथ ।  
 जिमि पाषंड बाद ते गुप्त होहिं सदयंथ । १४ ॥

चौ० । दादरधुनि चहुं ओर सुहाई । बेद पछै अनु बटुसमुदाई ॥  
 नवपक्षव भे बिटप अनेका । साधकमग अस मिलि बिवेका ॥  
 अकं जवास पात बिनु भयऊ । अस सुराज खलउद्यम गयऊ ॥  
 खोजत पंथ मिलै नहि धूरी । करै कोष जिमि धर्महि दूरी ॥

ममिमपन्न मोह महि कैसी । उपकारी के संपति जैसी ॥  
 निमि तम घन खद्योत बिराजा । अनु दंभिन कर जरा समाजा ॥  
 महा दृष्टि चानि फूटि कियारी । जिमि सुतच होइ विगर्हि नारी ॥  
 रूपो निरावहि चतुर किसाना । जिमि बुध तजहि मोह मद माना ॥  
 देखियत चक्रवाक खग नाहीं । कलिहि पाइ जिमि धर्म पराहीं ॥  
 ऊसर बरसैं तन नहि जामा । जिमि हरिजन हिय अपज न कामा ॥  
 विविध जंतु संकुल महि भ्राजा । प्रजा बाडि जिमि पाइ सुराजा ॥  
 जहं तहं रहे पथिक थकि नाना । जिमि इन्द्रियगन उपजे जाना ॥

ते० । कबहुं प्रबल चल माहत जहं तहं मेघ बिलाहि ।  
 जिमि कपूत के ऊपजं कुलसद्गम नसाहि । १५ ॥

ते० । बरषा भिगत सरद छतु आई । लहिमन देखहु परम मुहाई ॥  
 फूलें काम सकल महि काई । अनु बरषाकृत प्रगट बूढाई ॥  
 उडित अगस्ति पंथ जल मोषा । जिमि लोभहि सोयैं मतेषा ॥  
 मरिता सर निर्मल जल मोहा । संत हृदय जय गत मद मोहा ॥  
 रम रम मधु मरितसरपानी । ममता त्याग करहि जिमि जानी ॥  
 जानि सरद छतु खंजन आये । पाइ समय जिमि सुकृत मुहाये ॥  
 पंक न रेनु मोह अमि धरनी । नीति निपुनरूप के अमि करनी ॥  
 जलसंकोच विकल भए मोना । अबध कुटुम्बी जिमि धनहीना ॥  
 बिनु घन निर्मल मोह अकासा । हरिजन हव परिहरि सब आसा ॥  
 कहुं कहुं दृष्टि सारदो थारी । कोउ एक पाव भक्ति जिमि सोरी ॥

ते० । चले हरषि तजि नगर नृप तापस बनिक भिखारि ।  
 जिमि हरिभक्ति पाइ छम तजहि आसमी चारि । १६ ॥

वै० । सुखो मोन जहं नोर अगाधा । जिमि हरिसरन न एकौ बाधा ॥  
 फूलें कमल मोह सर कैसे । निरगुन ब्रह्म सगुन भये जैसे ॥  
 गुञ्जत मधुकर मुखर अनूपा । सुंदर खगरव नामा रूपा ॥  
 चक्रवाकमन दुख निमि पेखी । जिमि दुर्जन परसंपति देखी ॥  
 चातक रटत तथा अति आहो । जिमि सुख लहइ न संकर दोहो ॥  
 मरदातप निधि मधि अपहरई । संतदरस जिमि पातक टरई ॥  
 देखि इंदु चकोर समुदाई । चितवहि जिमि हरिजन हरि पाई ॥  
 ममकदंष बोले हिमपाखा । जिमि द्विजद्रोह किये कुलनाबा ॥

दो० । भूमि जीवसंकुल रहे गये सरद छतु पाइ ।  
 मतगुह मिले जाहि जिमि संशय भ्रम समुदाइ । १७ ॥

वै० । वरषागत निर्मल छतु आई । मुधि न तात सीता के पाई ॥  
 एकवार कैसेहुं मुधि जानै । कालहु जीति निमिष मह जानै ॥



कतञ्ज र्हें जौ जीवति होई । तात जतन करि आनैं सोई ॥  
 सुयोवज्ज मुधि मोरि बिसारी । पावा राज कोस पुर नारी ॥  
 जेहि साथक मारा मैं बाखी । तेहि घर हतौ मूठ कहं काखी ॥  
 जासु लपा छूटै मर मोहा । ता कहं उमा किं सपने ज्ञ कोहा ॥  
 जानहि यह चरित मुनि जानी । निन्द रघुवीरचरन रति मानी ॥  
 लक्ष्मिन काधवंत प्रभु जाना । धनुष चढ़ाई गहं कर बाना ॥

दो० । तब अनुजहि समझावा रघुपति कहनासीव ।  
 भय देखी लै आवहु तात सखा सुयोव । १८ ॥

चौ० । इहां पवनसुत हृदय बिसारा । रामकाज सुयोव बिसारा ॥  
 निकट जाइ चरनन्हि सिर नावा । चारिज्ज बिधि तेहि कहि समझावा ॥  
 मुनि सुयोव परम भय माना । बिषय मोर हरिलोन्हें उ जाना ॥  
 अब मारुतसुत दूत समूहा । पठवहु जहं तहं बानरगूहा ॥  
 कहहु पाख महं आव न जाई । मोर कर ता कर बध होई ॥  
 तब हनुमंत बजायें दूता । सब कर करि मनमान बहता ॥  
 भय अब प्रीति नाति दिखराई । चले सकल चरनन्हि सिर नाई ॥  
 तेहि अवसर लक्ष्मिन पुर आयें । काध देखि जहं तहं कपि धायें ॥

दो० । धनुष चढ़ाई कहा तब जारि करों पुर कार ।  
 आकुल मगर देखि तब आयें उ बाहिकुमार । १८ ॥

चौ० । चरन नाइ सिर बिनती कीन्हो । लक्ष्मिन अभय बांह तेहि दोन्हो ॥  
 काधवंत लक्ष्मिन मुनि जाना । कह कपोम अति भय अकुलाना ॥  
 मुनु हनुमंत भंग लै तारा । करि बिनती समझाउ कुमारा ॥  
 तारा महित जाइ हनुमाना । चरन बंदि प्रभु सुजम बखाना ॥  
 करि बिनती मंदिर लै आये । चरन पखारि पलंग बैठाये ॥  
 तब कपोम चरनन्हि सिर नावा । गहि भुज लक्ष्मिन कंठ लावा ॥  
 नाथ बिषय मम मद कहूं नाहीं । मुनिमन मोह करै कुन नाहीं ॥  
 सुनत बिनोत बचन सुख पावा । लक्ष्मिन तेहि बज्ज बिधि समझावा ॥  
 पवनतनय सब कथा सुनाई । जेहि बिधि गये दूतसमुदाई ॥

दो० । हरषि चले सुयोव तब अंगदादि कपि साथ ।  
 रामानुज आगे करि आयें जहं रघुनाथ । २० ॥

चौ० । नाइ चरन सिर कह कर ओरो । नाथ मोहि कहूं नाहिन खोरो ॥  
 अतिभय प्रबल देव तव माया । छूटै राम करहु जौं दाया ॥  
 बिषयबिषम मुर नर मुनि स्वामी । मैं पावर पसु कपि अति कामी ॥  
 नारिनधनसर जाहि न स्वागा । घोर काध तमनिमि जा जाना ॥  
 लाभ पास जेहि घर न बंधाया । सो नर तुम समान रघुनाथा ॥

यह गुन साधन ते नहिं होई । तुम्हरी कृपा पाव कोइ कोई ॥  
तब रघुपति बोखे मुसुकाई । तुम प्रिय मोहि भरत जिमि भाई ॥  
अब सोइ जतन करहु मन लाई । जहि बिधि सोता कै सुधि पाई ॥

१० । एहि बिधि होत बतकही आये बानरयुध ।  
जानावरन सकल दिमि देखिय कीचबहूय । २१ ॥

१० । बानर कटक उमा मै देखा । सो मूरख जो करन यह खेखा ॥  
आइ रामपद नाबहिं माथा । निरखि बदन सब होहिं सगाथा ॥  
अम कपि एक न सेना माहीं । राम कुसल जेहि पूकी माहीं ॥  
यह कहु नहिं प्रभु कै अधिकार । बिस्वरूप व्यापक रघुराई ॥  
ठाठे अहं तहं आयसु पाई । कह सुयोव सबहिं समझाई ॥  
रामकाज अब मोर निहोरा । बानर युध जाऊ चहुं ओरा ॥  
जनकमुता कहं खोजहु जाई । मामदिवस महं आयहु भाई ॥  
अवधि मेटि जो बिन सुधि पाये । आवइ बनहिं सो मोहिं मराये ॥

१० । बचन सुनत सब बानर अहं तहं चले तुरंत ।  
तब सुयोव बुलाये अंगद नल हनुमंत । २२ ॥

१० । सुनहु नोल अंगद हनुमान । जामवंत मतिधीर सुजाना ॥  
सकल सुभट मिलि दांखन जाहु । सोतामुधि पकहु सब काहु ॥  
मन क्रम बचन सो जतन बिचारेहु । रामचंद्र के काज मवारेहु ॥  
भानु पीठ सेंदय उर आगो । स्वामिहि सर्व भाव कल त्यागो ॥  
तजि माया सेंदय परलोका । मिटिहि सकल भवसंभवमोका ॥  
देह धरे कर यह फल भाई । भजिय राम सब काम बिहाई ॥  
सोइ गुनज सोई बहभागो । जो रघुबीर चरनअनुरागो ॥  
आयसु मांगि चरन मिर नाई । चले हरषि सुमिरत रघुराई ॥  
पाहुं पवनतनय मिर नावा । जानि काज प्रभु निकट बुलावा ॥  
परमा भोस मरोहह पानी । कर मुद्रिका दीन्ह जन जानी ॥  
बहु प्रकार सोताहिं समझायहु । कहि बल बिरह बेगि तुम आयहु ॥  
हनुमत अन्ध सुफल करि जाना । चले हृदय धरि कृपानिधाना ॥  
येद्यपि प्रभु जानत सब बाता । राजनीति राखत सुरजाता ॥

१० । चले सकल बन खोजत सरिता मर गिरिखोह ।  
रामकाज लथलीन मन बिमरा तनु कर कोह । २३ ॥

१० । कतहुं होइ निमिचर मै भेटा । प्राण लेहिं एक एक चपेटा ॥  
बहु प्रकार गिरि कानन हरहिं । कोउ मनि मिलहि नहिं सब धरहिं ॥  
लागि द्रव्य अतिमय अकुलाने । मिले न जल घन गहन भुजाने ॥  
सुन हनुमान कीन्ह अनुमाना । मरन चहत सब बिन जलपाना ॥

चटि गिरिसिखर चङ्ग दिशि देखा । भूमिविवर एक कौतुक पेखा ॥  
 सकवाक बक हंस उड़ाहीं । बङ्गतक खग प्रविमर्हि तेहि माहीं ॥  
 गिरि तें उतरि पवनसुत आवा । सब कहं लै सो विवर दिखावा ॥  
 आगे कै हनुमंतहि लीन्हा । पेटे विवर बिलंब न कीन्हा ॥

दो० । दोख जाइ उपवन सर दर विकसित बङ्ग कञ्ज ।

मन्दिर एक हरि तरह बैठि नारि तपपुञ्ज । २४ ॥

चौ० । दूरि तें ताहि सबन्हि सिर नावा । पूछे निज वृत्तान्त सुनावा ॥  
 तेहि तब कहा करहु जलपाना । खाहु सुरस सुंदर फल नाना ॥  
 मञ्जन कीन्ह मधुर फल खाये । तासु निकट पुनि सब चलि आये ॥  
 ते सब आपनि कथा सुनाई । मै अब जाव जहां रघुराई ॥  
 मूंदहु नयन विवर तलि जाह्नु । पैहहु भीतहि जनि पकिताह्नु ॥  
 नयन मूंदि पुनि देखहिं बीरा । ठाढ़े सकल सिंधु के तीरा ॥  
 सो पुनि गई जहां रघुनाथा । जाइ कमल पद नायेउ माथा ॥  
 नाना भांति बिनय तेहि कीन्ही । अनपारिणी भक्ति प्रभु दीन्ही ॥

दो० । बदरी वन कहं सो गई प्रभु अज्ञा धरि मीम ।

उर धरि रामचरनयुग जे बंदत अज ईस । २५ ॥

चौ० । दहां विचारहिं कपि मन माहीं । बीतो अवध काज कहु नाहीं ॥  
 सब मिलि कहहिं परस्पर बाता । बिनु सुधि लिये करव का भाता ॥  
 कह अंगद लोचन भरि बारो । दृष्ट प्रकार भद्र मृत्यु हमारी ॥  
 दहां न सुधि मोता कै पाई । उहां गये मार्गहि कपिराई ॥  
 पिता बधे पर मार्गत मोही । राखा राम निहोर न ओही ॥  
 पुनि पुनि अंगद कह सब पाहीं । मरन भयेउ कहु समय नाहीं ॥  
 अंगद बचन सुनत कपि बीरा । बोलि न सकहि नयन बहु नीरा ॥  
 कन एक सोखमगन होइ गये । पुनि अम बचन कहत सब गये ॥  
 हम मोता कै सुधि लोके बिना । नहिं जेहहिं युवराज प्रणिना ॥  
 अम कहि सबनि सिंधु तट जाई । बैठे कपि सब दर्भ उमाई ॥  
 जामवन्त अंगददुख देखी । कहो कथा उपदेस बिसेधी ॥  
 तात राम कहं नर जनि मानहु । निर्गुनब्रह्म अजित अज जानहु ॥  
 हम सब सेवक अति बहुभागी । सन्तत मगनब्रह्म अनुरागी ॥

दो० । निज दृष्ट्वा प्रभु अवतरत सुर द्विज गो महि लागि ।

मगन उपासक संग तहं रहहि मोक्ष सब त्यागि । २६ ॥

चौ० । एहि बिधि कथा कहो बङ्ग भांती । गिरिकन्दरा सुनी संपाती ॥  
 बाहिर होइ देखि बङ्ग कीसा । मोहि अहार दोन्ह जनदीसा ॥  
 आज सबहि कहुं भञ्जन करज । दिन बङ्ग चलेउ अहार बिन मरज ॥  
 कबहु न मिल भरि खदर अहारा । आजु दोन्ह बिधि कहहि वारा ॥

करुण न मिलि भरि खदर अहारा	आजु दोष बिधि एक हि बारा ॥
इरपे गोध बचन सुनि काना	अब भा मरन सत्य हम जाना ॥
कपि सब उठे गोध कहैं देखी	जामवत मन खोच बिषेयी ॥
कह अंगद बिचारि मन माहीं	धन्य जटाग्र सम कोस नाहीं ॥
रामकायकारन तनु त्यागी	हरिपुर गयेउ परम बड़ भारी ॥
सुनि खग हरष भोकियुतबानी	आवा निकट कपिहु भवमानो ॥
तिन्है अभय करि पुरुषि आई	कथा सकल तिन्ह ताहि सुलाई ॥
सुनि संपाति बंधु कै करनी	रघुपति महिमा बड्ड बिधि बरनी ॥

१० । मोहि सै जाऊ सिंधु तट देव तिलांजलि ताहि ।

बचन सहाय करव मै पैहऊ खोजऊ जाहि । २० ॥

१० । अनुजक्रिया करि सागरतीरा	कह निज कथा सुनऊ कपिबोरा ॥
हम दोउ बंधु प्रथम तरुलाई	गगन गये रवि निकट उड़ाई ॥
तेज न सहि सक मै फिरि आवा	मैं अभिमानो रवि निचरावा ॥
अरे पंख अति तेज अपारा	परे भूमि करि छार चिकारा ॥
सुनि एक नाम चंद्रमा आहो	सागो दया देखि करि मोहो ॥
बड्ड प्रकार तहि ज्ञान सुनावा	देहजनित अभिमान कड़ावा ॥
बेता प्रह्ला मनुजतनु धरिहीं	तासु नारि निमिचरपति हरिहीं ॥
तासु खाज पठइहि प्रभु दूता	तिन्है मिले तैं होव पुनोता ॥
अमिहहि पंख करमि अनि चिंता	तिन्है देखाइ दिहेसु तैं मोता ॥
सुनि कै गिरा सत्य भद्र आजू	सुनि मम बचन करऊ प्रभुकाजू ॥
गिरिचिकुट ऊपर बस लंका	तहं रह रावन सहज असंका ॥
तहं अमोक उपवन अहं रहई	सोता बैठ सोच रत अहई ॥

२० । मैं देखौं तुम नाहो गोधहि दृष्टि अपार ।

बूढ़ भयउं न तो करतेउं ककुक सहाय तुम्हार । २८ ॥

२० । जं जावे सत योजन सागर	करै सो रामकाज अति आगर ॥
मोहि बिलाकि धरऊ मन धोरा	रामकथा कम भयउं सरीरा ॥
पापिउ जा कर नाम सुमिरिहीं	अति अपार भवसागर तरहीं ॥
तासु दूत तुन्ह तजि कदराई	राम हृदय धरि करऊ उपाई ॥
अस कहि गहड़ गोध जब गयऊ	तिन्ह के मन अति बिस्मय भयऊ ॥
निज निज बल सब काहें भाषा	पार जाइ कै सखय राषा ॥
अरठ भयउं अब कहै अहंसा	नहिं तनु रहा प्रथम वसंकेसा ॥
जबहिं त्रिविक्रम भयउं खरानी	तब मै तरुन रहैउं बल भारी ॥

२८ । बलि बांधत प्रभु बाडेउ सो तनु बरनि न जाइ  
उभय घनी महं दोहो सप्त प्रदक्षिण धाई । २८ ॥

चौ० । चंद कहै जाँच मैं पारा । जिघ संवध कहु फिरती बारा ॥  
 जामवन्त कह तुम सब लावक । पठदय किमि सबही कर नायक ॥  
 कहै रीरूपति सुनु हनुमाना । का सुप बाधि रहे बलवाना ॥  
 पवनतनयबल पवन समाना । बधि बिबेक बिज्ञाननिधाना ॥  
 कवन हो काज कठिन जगसाही । जौ नहिं तात होद तुम पाही ॥  
 रामकाज लागि तव अवतारा । सुनतहि भयेउ पर्वताकारा ॥  
 कनकबरन तन तेज बिराजा । मानहुँ अपर गिरन्ह कर राजा ॥  
 सिंहनाद करि बारहिं बारा । सोलहिं नाचउं जलनिधि खारा ॥  
 सहित सहाय रावनहिं मारी । आनउं रक्षां चिकूट उपारी ॥  
 जामवंत मैं पूछउं तोही । उचित सिखावन दीजऊ मोही ॥  
 एतना करेऊ तात तुम जाई । सीतहि देखि कहौ मुधि आई ॥  
 तब निज भुजबल राजिवनचना । कौतुक लागि संग कपिसयना ॥

क० । कपिसेन संग संहारि निमिचर राम सीतहि आनिहै ।  
 नयलोकापावन सुजस सुर मुनि नारदादि बखानिहै ॥  
 जो सुनत गावत कहत समुझत परम पद नर पार्वी ।  
 रघुबीरपद पाथीज मधुकर दाम तुलसी गावरी । २ ॥

दो० । भवभयजरघुनाथजस सुनहिं जो नर अस नारि ।  
 तिन कर सकल मनेरथ सिद्ध करहिं चिपुहारि । ३० ॥

सो० । मोलात्पल तन खाम काम कोटिमोभा अधिक ।  
 सुनिय तासु गुन राम जासु नाम अघखनबधिक । १ ॥

इति श्रीरामचरितमानसे सकलकलिकलुपविध्वंसने ।

विमलवैराग्यसम्पादनो नाम चतुर्थः सर्गः ॥

समाप्तः शुभमस्तु सिद्धिरस्तु ॥ \* ॥

## अथ सुन्दरकाण्ड ॥

॥ ४ ॥

शान्तं शाश्वतमप्रमेयमनघं गोवीर्यशान्तिप्रदम् ।  
ब्रह्माश्रमभुक्पण्डित्स्तेष्वमनिशं वेदान्तवेषं प्रभुम् ॥  
रामाख्यं जगदीश्वरं सुरगुरुं मायामनुष्यं हरिम् ।  
वन्दे ऽहं करुणाकरं रघुवरं भूपालचूडामखिम् ॥ १ ॥

नाना स्पृहा रघुपते हृदये ऽस्मदीये  
सत्यं वदामि च भवान्प्रखिलान्तरात्मा ।  
भक्तिम्प्रयच्छ रघुपुङ्गव निर्भरां मे  
कामादि दोषरहितं कुरु मानसञ्च ॥ २ ॥

अतुलितबलधामं स्वर्णशैलाभदेहं  
दनुजवनकृशानुं शानिनामग्रगण्यं ।  
मकलगुणनिधानं वानराखामधीशम्  
रघुपतिवरदूतं वातजातस्त्रमामि ॥ ३ ॥

वै० । जामवन्त के बचन सुहाए	। सुनि हनुमंत हृदय अति भाए	॥
तब लागि मोहि परेखेऊ तुम्ह भारी	। मोहि दुख कंद मूक फल खाई	॥
जब लागि आवउं सोतहि देखी	। हाइ काज मोहि हरय बिसेयी	॥
अस कहि नाइ खबन्त कहं माया	। खलैउ हरषि हिय धरि रघुनाथा	॥
मिधुतोर एक सुन्दर भूधर	। कोतुक कुदि खंडेउ ता ऊपर	॥
बार बार रघुवीर संभारो	। तरकैउ पवनतनय बल भारो	॥
जेहि गिरि चरन देइ हनुमन्ता	। खलैउ सो ना पाताक तुरन्ता	॥
जिमि अमोघ रघुपति कर बाना	। तेही भांति खलैउ हनुमाना	॥
जखनिधि रघुपतिदूत बिचारो	। तैं मैनाक होहि समभारो	॥

दो० । हनुमान तेहि परसा कर पुनि कोन्हे प्रनाम ।  
रामकाज कोन्हे बिनु मोहि कहां बिसाम ॥ १ ॥

सौ० । जात पवनसुत देवन्ध्र देवा । जानै कज्ज बल बुद्धि विमेषा ॥  
 सुरमानाम अहिन को माता । पठइन्हि आइ कही तेहि बाता ॥  
 आजु सुरन्ध्र मोहि दीन्ह अहारा । सुमत वचन कह पवनकुमारा ॥  
 रामकाज करि त्तिरि मै आवौ । सोता कै मुधि प्रभुहि मुनावौ ॥  
 तब तब बदन पडिठिहौं आई । सत्य कहौं मोहि जान द माई ॥  
 कवगज्ज जतन देइ नहिं जाना । यमधि न मोहि कहिउ हुनुमाना ॥  
 याजन भरि तेहि बदन पमारा । कपि तनु कोरि मुनि बिस्तारा ॥  
 भारह याजन मुख तेहि ठयऊ । तुरत पवनसुत वत्तिस भयऊ ॥  
 जम जम सुरमा बदन बढावा । तामु दून कपि रूप दिखावा ॥  
 मत याजन तेहि आनन कोन्हा । अति लघु रूप पवनसुत लोन्हा ॥  
 बदन पेटि पुनि बाहिर आवा । मांगी बिदा ताहि मिर नावा ॥  
 मोहि सुरन्ध्र जेहि लागि पठावा । बुधि बल मरम तोर मै पावा ॥

दो० । रामकाज सब करिहज्ज तुन्ह बलबुद्धिनिधान ।  
 आसिध दंड गई मो हरषि चले हुनुमान । २ ॥

सौ० । निमिचरि एक सिंधु महं रहई । करि माया नभ के खग गहई ॥  
 जाव जन्तु जे गगन उडाहौं । जल बिलोकि तिन्ह कै परकांही ॥  
 गहइ कहै सक सो न उडाई । एहि बिधि सदा गगनचर खाई ॥  
 मोइ कुल हुनुमान कह कोन्हा । तामु कपट कपि तुरतिहं चोन्हा ॥  
 ताहि मारि मास्तमत्त बोरा । बारिधि पार गयउ मतिधोरा ॥  
 तहां आइ देखी वन मोभा । गुंजत चचरीक मधुलोभा ॥  
 जाना तरु फूल फूल मुहाये । खगमृगहृन्द देखि मन भाये ॥  
 मैल बिसाल देखि एक आगे । ता पर कूदि चड़ेउ भय त्यागे ॥  
 जमान न कहु कपि कै अधिकारी । प्रभु प्रताप जो कालहि खाई ॥  
 गिरि पर चढ़ि लंका तेहि देखी । कहि न जाइ अति दुर्ग विमेली ॥  
 अति उतंग जलनिधि चहुं पासा । कनककोट कर परम प्रकासा ॥

क० । कनककोट विचित्र मनिहत सुंदरायत अति घना ।  
 चौहट्ट हट्ट बचइ बीघी चारु पूर दह बिधि बना ॥  
 गजबाजिखरनिकर पदचर रथबहुथहि को गने ।  
 बज्ररूप निधिरथयूथ अतिबल सेन बरनत नहिं बने ॥  
 बन बाग उपवन घाटिका सर कूप बापी मोहहौं ।  
 नरनागसुरगंधर्वकन्या देखि मुनिमन मोहहौं ॥  
 कज्ज मालदेह बिसाल मैल समान अति बल गर्जहौं ।  
 नाना अस्त्रान्ह भिरहि बज्रबिधि एक एकन्ह तजहौं ॥

करि जतन भट कोटिन्ह विकटतनु नगर चहुं दिशि रह्यही ।

कहुं महिष मानुष धेनु खर अज खल निषाचर भय्यही ॥

एहि लागि तुलसीदास इन्ह को कथा कह्य एक है कही

रघुबीरसर तोरय सरीरन्ह त्यागि गति पैहहि सही । १ ॥

१० पुरखवारे देखि बहू कपि मन कोन्ह बिचार

अति लघु रूप धरौं निशि नगर करौं पैसार । ३ ॥

१० । ममक समान रूप कपि धरो

लंकहिं चलेउ सुमिरि नरहरी ॥

नाम लंकियो एक निमिचरो

सो कह चलेसि मोहि निदरी ॥

जाने नाहि मरम सठ मोरा

मोर अहार लंक कर चोरा ॥

मुष्टिक एक महा कपि हनो

रुधिर बमत धरनो ठनमनो ॥

पुनि संभारि उठो सो लंका

जोरि पानि कर बिनय असंका ॥

जब रावनहिं ब्रह्मा वर दीन्हा

चलत बिचि कह्य मोहि चीन्हा ॥

बिकल होमि तैं कपि के मारे

तव जानिसु निमिचर महारे ॥

तात मोर अतिपुन बहता

देखेउ नयन राम कर दृता ॥

१० । तात स्वर्गअपवर्गमुख धरिय तुल्यैकअंग

तल न टाहि सकल मिलि जो मुखलव सतसंग । ४ ॥

१० । प्रविमि नगर कीजै सब काजा

हृदय राखि कोसलपुरराजा ॥

गरल मुधा रिपु करै भिताई

गोपद सिंधु अजल सितलाई ॥

गरुअ मुमेर रेनु सम ताहो

राम कृपा करि चितवहिं आहो ॥

अति लघु रूप धरैउ हनुमाना

पैठा नगर सुमिरि भगवाना ॥

मंदिर मंदिर प्रति करि सोधा

देखे जहं तहं अगिनित योधा ॥

गयेउ दसामनमंदिर माहीं

अति बिचि कहि जात सो नाहीं ॥

मयन किये देखा कपि तेहो

मंदिर महजुं न दोख बैदेही ॥

भवन एक पुनि दोख सोहावा

हरिमंदिर तहं भिख बनावा ॥

रामनामअंकित गृह सोहा

बरनि न जाइ देखि मन मोहा ॥

१० । रामायुधअंकित गृह सोभा वरनि न जाइ

नव तुलसी के हृन्द बहू देखि हरष कपिराइ । ५ ॥

१० । लंका निमिचरनिकरनिबासा

दहां कहां सज्जन कर बामा ॥

मन महं तरक करै कपि लाग्ना

तेहो समय बिभीषन आगा ॥

राम राम तेहि सुमिरन कीन्हा

हृदय हरष कपि सज्जन चीन्हा ॥

एहि मन छठि करिहौं पहिचानी

बाधु तेहो न कारजहानी ॥

बिप्ररूप धरि बचन सुनाए

सुमत बिभीषन उठि तहं आए ॥

करि प्रनाम पक्षी कथलाई

बिप्र कह्यु निज कथा बुझाई ॥



को तुम्ह हरिदास कह्यो मह कोरे । मोरे हृदय प्रीति अति होरे ।  
को तुम राम दीन अनुरागे । आवेछ मोहि करन बड़ भागे ।

दो० । तब हनुमंत कही सब रामकथा निज नाम ।  
सुनत युगल तनु पुलक मन मगन सुमिरि गुनयाम । ६ ॥

चौ० । मुनहु पवनसुत रहनि हमारी । जिमि दसनन्हि मह जीभ विचारी ।  
तात कवहुं मोहि जानि अनाया । करिहहि कृपा भाव अनया ।  
तामस तनु कहु साधन नाहीं । प्रीति न पद खोज मन माहीं ।  
अब मोहि भा भरोष हनुमंता । बिनु हरिकृपा मिलहि नहि संता ।  
जो रघुबीर अनुग्रह कोन्हा । तो तुम मोहि दरस हठि दोन्हा ।  
मुनहु बिभोषन प्रभु कै रीती । करहि सदा सेवक पर प्रीती ।  
कहहु कवन मै परम कुलीना । कपि चंचल सबही बिधि होना ।  
प्रात खरु जो नाम हमारा । तेहि दिन ताहि न मिलै अहारा ।

दो० । अस मै अधम सखा मुनु मोह पर रघुबीर ।  
कोन्ही कृपा सुमिरि गुन भर विलोचन नीर । ७ ॥

चौ० । जानतहुं अस स्वामि बिसारी । फिरहि ते काहे न होहि दुखारी ।  
एहि बिधि कहत राम गुनयामा । पावा अनिर्वाच्य बिस्वामा ।  
पुनि सब कथा बिभोषन कही । अहि बिधि जनकमुता तह रह्यो ।  
तब हनुमंत कथा मुनु भाता । दखा चाहौं जानकी माता ।  
युक्ति बिभोषन सकल मुनाई । चलेउ पवनसुत विदाकराई ।  
धरि सोद रूप गयेउ पुनि तहंवा । वन असोक मीता रह अहंवा ।  
देखि जनहिं मह कोन् प्रनामा । बैठिहि वीति जात निमि यामा ।  
लस तनु सोष अटा एक बेनी । अपति हृदय रघुपतिगुनसेनी ।

दो० । निज पद नयन दिये मन रामचरन महं खोन ।  
परम दुखी भा पवनसुत देखि जानकी दीन । ८ ॥

चौ० । तब पक्षव मह रक्षा सुकाई । करै बिचार करौं का भाई ।  
तेहि अवसर रावन तहं आवा । संग नारि बड किये बनावा ।  
बड बिधि खल सीतहि समुझावा । साम दान भय भेद दिखावा ।  
कह रावन मुनु सुमुखि सखानी । मंदोदरी आदि सब रानी ।  
तव अनुचरी करौं पन मोरा । एक बार बिलोकु मम ओरा ।  
दग धरि ओट कहति बैदेही । सुमिरि अवधपति परम खेही ।  
मुनु दसमुख खसोत प्रकाशा । कवहुं कि नखिनी करहि बिकाशा ।  
अब मन समझ कहति जानकी । खल युधि नहि रघुपतिवान की ।  
तब खने हरि जानेधि मोहीं । अधम निजज जाज नहि तोहीं ।

१० । आपुहि सुनि खद्योत सम रामहिं मान समान ।

एव वचन सुनि काठि अशि बोला अति खिसिमान । ८ ॥

१० । सीता तै मम हत अपमाना । काटौ तव बिर कठिन छपाना ॥

माहित सपदि मानु मम बानी । सुमुखि होत नत जीवनहानी ॥

म्याम सरोजदाम सम सुन्दर । प्रभुभुज करिकर सम दशकंधर ॥

मो भुज कंठ कि तव अशि घोरा । मुनु बठ अस प्रमान वन मोरा ॥

चन्द्रहास हर मम परिताप । रघुपतिविरहचमत्कृतताप ॥

सीतल निधि तव अशि बर धारा । कह सीता हर मम दुखभारा ॥

मुनत बचन पुनि मारन धावा । मयतनया कहि मोति बुझावा ॥

कहेसि सकल निमिसरिह बोलाई । सीतहि पास देखावज्ज जाई ॥

मास दिवस मह कह्य न माना । तो मै मारबि काठि छपाना ॥

१० । भवन गयउ दमकंधर दहां पिपाचिनिहृन्द ।

सीतहि त्राम दिखावहीं धरहि रूप बड मन्द । १० ॥

१० । त्रिजटानाम राख्यो एका । रामचरनरत निपन बिबेका ॥

मवहि बोलि मुनायसि सपना । सीतहि सेद करौ हित आपना ॥

मपन वाजर लंका जारो । यातुधानमेना सब मारो ॥

खर आच्छठ नगन दस सोमा । मण्डित बिर खंडित भुज बोषा ॥

एहि विधि सो देखिन दिशि जाई । लंका मनज्ज बिभीषन पाई ॥

नगर फिरौ रघुबीर दोषाई । तब प्रभु सीता बालि पठाई ॥

यह सपना मै कहौ बिचारो । होइहि मत्य गये दिन चारो ॥

ताम वचन सुनि तै सब डरी । जनकमुता के चरनन्हि परी ॥

१० । अहं तहं गदं सकल मिलि सीता कर मन सोच ।

मास दिवस सीते मोहि मारिहि निमिचर पोच । ११ ॥

१० । त्रिजटा मन बोली कर जारो । मातु विपतिमगिन तै मोरो ॥

तजौं देह कर बेग उपाई । दुमह बिरह अब नहि सहि जाई ॥

आनि काठ रचु चिता बनाई । मातु अनख पुनि देखे लग्गाई ॥

मत्य करहि मम प्रीति सयानो । मुनै को खवन सुख मम बानी ॥

सुनत बचन पद गहि समुझाएसि । प्रभु प्रतापबलमुजम मुनार्णसि ॥

निमि न अनख मिल मुन सुकुमारी । अब कहि सो निज भवन बिधारी ॥

कह सीता विधि भा प्रति कुला । मिलै न पावक मिटहि न सुला ॥

देखियत प्रगट भगन अंगारा । अवनि न आवत एकौ तारा ॥

पावकमय ससि खवत न आगी । मानज्ज मोहिं जानि हत भागी ॥

मुनहि बिजय मम बिटप अमोका । मत्य नाम कह हर मम सोका ॥

नतन किनखय अनख ममाना । देखि अनिनि तन करहि निदाना ॥

टासि परम बिरहाकुल सीता । सो हन कपिहि कल्प सम सीता ॥

मो० । कपि करि हृदय बिचार दीन्ह मुद्रिका डारि तब ।  
जनु अशोक अंगार दीन्ह हरषि उठि कर गंधर्व । १२ ॥

चौ० । तब देखी मुद्रिका मनोहर । रामनाम अंकित अति सुंदर ॥  
चकित पितवा मुदरी पहिचानी । हरष बिषाद हृदय अकुलानी ॥  
जाति को सकें अजय रघुगई । माया तें अमि रची न आई ॥  
घोता मन बिचार कर मामा । मधुर बचन बोलेष सुमाना ॥  
रामचंद्रगुन बरनख सांगा । सुनतहि भीता देख भागा ॥  
लागी सुनै खवन मन खाई । आदिष्ट तें सब कथा सुनाई ॥  
खवनासुत जिहि कथा सुनाई । काहि सो प्रगट होत किन भाई ॥  
तब हनुमंत निकट चलि गयऊ । फिरि बैठी मन बिस्मय भयऊ ॥  
रामदूत में मातु जानकी । मृत्यु मपय कहनाजिधान की ॥  
यह मुद्रिका मातु म आनी । दीन्ह राम तुम कहं सहिदानी ॥  
नर दानरहि संग कहु कैस । कही कथा भद संगति जैसे ॥

दो० । कपि के वचन सप्रेम मुनि उपजा मन विस्वाम ।  
जाना मन कम वचन यह कृपासिंधु कै दाम । १३ ॥

चौ० । हरिजन जानि प्रीति अति बाढी । मजल नयन रोमावलि ठाढी ॥  
बहुत विरहजलधि छनुमाना । भयेंछ तात मो कहं जलयांना ॥  
अब कहु कुसल जाउं बलिहारी । अनुज सहित मुखभवन खगारी ॥  
कोमलचित्त कृपालु रघुगई । कपि केहि हेतु धरी लिटुगई ॥  
महज बानि मेवकमुखदायक । कबहुँक सुगति करत रघुनायक ॥  
कबहुँ नयन मम मोतल ताना । होदहि निरखि स्याम मृदु गाता ॥  
बचन न आव नयन भर वारी । असह नाथ मोहि निपट विमारी ॥  
देखि परम विरहाकुल मोता । बोला कपि मृदु वचन विनीता ॥  
मातु कुसल प्रभु अनुज समेता । तब दुख देखी सो कृपानिकेता ॥  
जनि जननी मानऊ जिय जना । तुम तें प्रेम राम के दूना ॥

दो० । रघुपति कर संदेश अब सुनु जननी धरि धीर ।  
अब कहि गदगद भये भरे बिसोचन नीर । १४ ॥

चौ० । कहेउ रामबियोग तब सीता । मो कहं सकल भयेउ विपरीता ॥  
नवतरुकिमलय मगजं छसान । काखनिहा सम निशि ससि भानू ॥  
कुवलयविपिन कुन्तवन सरिसा । बारिद तप्त तेज अनु बरिसा ॥  
जेहि तरु रचे करत तेह पीरा । उरगस्त्रास सम विविध समीरा ॥  
कहेउ तें कहु दुख घाटि न होई । काहि कहौ यह जान न कोई ॥  
तब प्रेम कर मम अब तोरा । जानत प्रिया एक मन मोरा ॥  
सो मनु रहत सदा तोहि पाहीं । जानु प्रीति रस इतनेहि माहीं ॥

प्रभुसंदेश सुनत वैदेही	। मगन प्रेम तनुबुधि नहिं तेही ॥
कह कपि हृदय धीर धरु माता	। सुमिरि राम बचकषुद्धाता ॥
उर आनऊ रघुपतिप्रभुताई	। मुनि मममचन तजऊ कदराई ॥
१० । निमिचरनिकर पतन सम रघुपतिपान कृपानु	
जननी हृदये धीर धरु अरे निमाचर जानु । १५ ॥	
१० । औ रघुवीर होत मुधि पाई	। करते नहिं बिलंब रघुसाई ॥
रामदानरवि उये जानकी	। तमवरुधकह पातुधान की ॥
अबहिं मातु में जातु लवारी	। प्रभुआयसु नहिं रामदोहारी ॥
कहूक दिवस जननी धरु धीरा	। कपिन्ह सहित ऐहै रघुवीरा ॥
निमिचर मारि तोहिं लै जैहै	। तिजुं पुर नारदाटि जस गैहै ॥
है मुन कपि सब तुमहि समाना	। यातुधानभट अति बलवाना ॥
मोरे हृदय परम संदेश	। मुनि कपि प्रगट कीन्ह निज देहा ॥
कनकभूषणकार सरीरा	। समरभयंकर अति बलवीरा ॥
सीतामन भरोस तब भयऊ	। पुनि लघुरूप पवनमुत लघऊ ॥

१० । मुनु माता साखासुग नहिं बल बुद्धि बिमाल  
प्रभुप्रताप ते गहड़हो खाइ परम नद्य व्याल । १६ ॥

चौ० । मनमन्तोष मुनत कपिवानी	। भक्तिप्रतापते जबलमानो ॥
आमिष दोन्ह रामप्रिय जाना	। होऊ तात बलबोखनिधाना ॥
अजर अमर गुननिधि सुत होऊ	। करऊ वज्रत रघुनायक होऊ ॥
करऊ छपा प्रभु अश मुनि काना	। निर्भर प्रेम मगन हनुमाना ॥
बार बार नाहमि पद सोसा	। बोला बचन ओरि कर कोसा ॥
अब छतछात्य भयेउं मै माता	। आगिख तव अमोघ बिग्याता ॥
सुनऊ मातु मोहि अतिमय भूखा	। लागि देखि सुंदर फल रुखा ॥
मुनु मुन करै बिपिन रखवारी	। परम सुभट रजनीचर भारी ॥
तिन्ह कर भय माता मोहि नाहीं	। औ तुम मुख मानऊ मन माहीं ॥

दो० । देखि बुद्धिबलनिपुन कपि कहैउ जानकी जाऊ  
रघुपतिचरन हृदय धरि तात मधुर फल खाऊ । १७ ॥

चौ० । चला जाइ सिर पैठेउ बागा	। फल खायेसि तहतोरै लागी ॥
रहे तहां बज्र भट रखवार	। कहू मारैसि कहू जाइ पुकारे ॥
नाथ एक आवा कपि भारी	। तेहि असोकबाटिका उजारी ॥
खाएसि फल अरु बिटष छपारे	। रच्छक मरिदि मरिदि मरि पारे ॥
मुनि रावन पठये भट काका	। तिन्हहि देखि मरलेख हनुमाना ॥
सब रजनीचर कपि संहारे	। मये पुकारत कहू अधमारे ॥

पुनि पठयस तेहि अन्धकुमारा । सखा संग सै सुभट अपारा ॥  
चावत देखि बिटप गहि तरजा । ताहि निपाति महाधुनि गरजा ॥

दो० । कहु मारेसि कहु मरेसि कहु निजायेसि धरि धूरि ।  
कहु पुनि जाइ पुकारे प्रभु मर्कट बलभूरि । १८ ॥

चौ० । सुनि सुतबध संकेस रिखाया । पठयसि मेघनाद बलवाना ॥  
मारेसि जनि सुत बांधेसु ताही । देखिषु कपिहि कहाँ कर आही ॥  
चला इंद्रजित अतुलित योधा । बंधुनिधन सुनि उपजा क्रोधा ॥  
कपि देखा दाहन भट आवा । कटकटाइ गरजा अद धावा ॥  
अति बिसाल तइ एक उपारा । बिरथ कोन्ह संकेस काँरा ॥  
रहे महा भट ता के संग । गहि गहि कपि मरेसि निज अंगा ॥  
तिन्हहि निपाति ताहि सन बाजा । भिर युगल मानहुँ गजराजा ॥  
मुठिका मारि चढ़ा तइ जाई । ताहि एक ह्वन मुहका आई ॥  
उठि बहोरि कोन्हसि बज्र माया । जोति न जाइ प्रभंजनजाया ॥

दो० । ब्रह्मअस्त्र तेहि साधा कपि मन कोन्ह बिचार ।  
जौ न ब्रह्मसर मानौ महिमा मिटै अपार । १८ ॥

चौ० । ब्रह्मबान कपि कह तेहि मारा । परतिजु बार कटक संहारा ॥  
तेहि देखा कपि मुहकित भयज । नागपास बांधेसि सै गयज ॥  
जासु नाम अपि मुनहुँ भवानो । भवबंधन काटहि नर जानो ॥  
तामु दूत कि बंध तर आवा । प्रभुकारज सगि कपिहि बंधावा ॥  
कपिवंधन सुनि निमिचर धाये । कौतुक लागि सभा सब आये ॥  
दसमुख सभा दोख कपि जाई । कहि न जाइ कहु अति प्रभुताई ॥  
कर ओरे सुर दिसिप बिनोता । झकुटि बिलोकित सकल सभोता ॥  
देखि प्रताप न कपिमन सका । जिमि अहिगन महं गरुड असंका ॥

दो० । कपिहि बिलोकि दसानन बिहंसा कहि दुर्वाद ।  
सुतबध सुरति कोन्ह पुनि उपजा हृदय विषाद । २० ॥

चौ० । कह संकेस कवन तैं कोषा । कोहि के बल घांसेहि बन सीसा ॥  
कीधौं सवन सुने नहिं मोहौं । देखौं अति असंक सठ तोहौं ॥  
मारे निमिचर कोहि अपराधा । कहु सठ तोहि न प्रानकै बाधा ॥  
सुनु रावन ब्रह्मांडनिकाया । पाद जासु बल बिरचति माया ॥  
जा के बल बिरचि हरि ईसा । पालत सजत हरत दससीसा ॥  
जा बल सीस धरत हृदयानन । संडकोस समेत गिरि कामन ॥  
धरै जो विविध देह सुरसाता । तुम से सठन सिखावनदाता ॥  
हरकोदंड कठिन जेहि अंजा । तोहि समेत नृपदसमद अंजा ॥  
हर दूतन चिचिरा अद बाजी । बधे सकल अतुलितबलबाजी ॥

१० । आ के बसवखस ते जितेउ चराचर छारि  
तासु दूत मै आ करि हरि आनेउ प्रिय मारि । २९ ॥

१० । जानौ मै तुम्हारि प्रभुतारि । सहसबाहु बन परी सरारि ॥  
समर बालि बन करि अख पावा । सुनि कपिवचन बिहंसि बहरावा ॥  
खायेउ फल प्रभु खागो भखा । कपिसुभाव ते तोरेउ रुखा ॥  
सब के देह परम प्रिय खागो । मार्गहि मोहि कुमारगमागो ॥  
जिन्ह मोहि मारा ते मै मारे । तेहि पर बांधेउ तनय तुम्हारे ॥  
मोहि न कहु बांधे कर लाजा । कीन्ह यहौ निज प्रभु कर काजा ॥  
बिनतो करौ ओरि कर रावन । मुनहु मान तजि मोर सिखावन ॥  
देखहु तुम निज कहहि बिचारी । भ्रम तजि भजहु भक्तभयचारी ॥  
आ के उर अति काळ उरारि । जो सुर असुर चराचर खारि ॥  
ता सौ बैर कबहु नहि कोजै । मारे कहै जानको दोषै ॥

१० । प्रनतपाल रघुनायक कनकासिंधु खरारि  
गये सरन प्रभु राखिहै तब अपराध बिसारि । २९ ॥

१० । रामचरन पंकज उर धरहु । लंका अचल राज तुम करहु ॥  
अष्टिपुलसि अस विमल मयंका । तेहि सधि महं जनि होउ कलंका ॥  
रामनाम बिनु गिरा न सोहा । देखु बिचारि त्यागि मद मोहा ॥  
बधनहोन नहिं सोहा सुगरो । सबभूषनभूषित वर नारो ॥  
रामबिमुख संपति प्रभुतारि । जाद रही पाई बिनु पाई ॥  
सरितमूल जिन्ह सरितन्ह नाहीं । बरषि मथे पुनि तबहिं सुखाहीं ॥  
सुनु दसकंठ कहौ पनरोपो । बिमुख राम चाता नहिं कोपो ॥  
संकर सहस बिखु अज तोही । सकहिं न राखि राम कर डोही ॥

१० । मोहमूल बहुसुखप्रद त्यागहु तम अभिमान  
भजहु राम रघुनायक कृपासिंधु भगवान । २९ ॥

१० । यदपि कहो कपि अति हितवानो । भक्ति विवेक बिरति मय यानो ॥  
बोला बिहंसि महा अभिमानो । मिखा हमहिं कपि गुरु बह जानी ॥  
मृग्यु निकट आई खल तोही । लागसि अधम सिखावन मोही ॥  
उलटा होदहि कहै हनुमाना । मतिभ्रम तोहि प्रगट मै जाना ॥  
सुनि कपिवचन बजत खिखिआना । बेगि न हरहु मूढ कर प्राना ॥  
मुनत निषाचर मारन धावे । सखिवन्ह सहित विभीषन आवे ॥  
नाह सीध करि विनय बजता । नीति विरोध न मारिय दूता ॥  
आन दंड कहु करिय गुनारि । सबही कहा मंच अख भारि ॥  
मुनत बिहंसि बोला दसकंधर । अंग भंग करि पठदस बंदर ॥

दो० । कपि के ममता पुष्क पर चबही कच समुद्राह ।

तेल बोनि पट प्रांघि पुनि पयंक दंड जगार । २४ ॥

चो० । पुष्कहोन बन्दर तहं जाइहि । तब मठ निजनायहिं सौ आइहि ॥

जिन्ह सै कोन्हसि बज्रत बडाई । देखौ मै तिन्ह के प्रभुताई ॥

बचन सुनत कपि मन मुमुकाना । भट सहाय सारद में जाना ॥

यातुधान मुनि रावनबचना । लागे रचै मूढ सोइ रचना ॥

रहा न नगर वसन धृत तेला । बाढी पुष्क कीन्ह कपि खेला ॥

कौतुक कहि याये पुरबासी । मारहिं चरन करहिं बज्र हांसी ॥

बाजहिं डोल देहिं सब तारी । नगर फेरि पुनि पुष्क जारी ॥

पावक जरत देखि हनुमन्ता । भयउ परम लखु पुन्ता ॥

निबुकि चढउ कपि कनकचटागे । भई मभीत निषाचर मारी ॥

दो० । हृदिप्रति तेहि अवसर चलेउ मरुत उनचास ।

अटहास करि गरजा कपि बहि लाग अकास । २५ ॥

चो० । देह विमाल परम हटआई । मंदिर तें मंदिर चढि धाई ॥

जरदनगर भा लाग विशाला । छपट छपट बज्र कोटि कराळा ॥

तात मातु हा मुनिय पुकारा । एहि अवसर को ह्महि उबारा ॥

हम जो कहा यह कपि नहिं छोड़े । बानररूप धरे मर कोड़े ॥

साधुअवज्ञा कर फल ऐमा । जरे नगर अनाथ कर जैसा ॥

जारा नगर मिमिष एक माहीं । एक विभीषन कर गृह नाहीं ॥

ताकर दूत अमल जेहि मिरिजा । जरा न सो तेहि कारन मिरिजा ॥

उलटि पलटि सका सब जारो । कूटि परा पुनि सिंधु मझारो ॥

दो० । पुष्क बझाइ खोइ खम धरि लघरूप बहोरि ।

जनकमुता के आगे ठाढ़ भयउ कर जोरि । २६ ॥

चो० । मातु मोहि दीजे कहु चोखा । जैसे रघुनाथक मोहि दीखा ॥

सूडामनि उतारि तब दखऊ । हरष समेत पवनसुत लखऊ ॥

कहऊ तात अब मोर प्रनामा । सब प्रकार प्रभु पूजनकाया ॥

दोनदयाल बिरद संभारी । हरज नाथ मस सकट भारी ॥

तात सकसुत कथा सुनायेऊ । बानप्रतप प्रभुहि समझायेऊ ॥

मासदिवस महं नाथ न थावा । तौ पुनि मोहि जियत नहिं पावा ॥

कहु कपि केहि बिधि राखौ प्राणा । तुम हं तात कहत अब जाना ॥

तोहि देखि सोतल भइ छाती । पुनि मो कहं सोइ दिन सोइ राती ॥

दो० । जनकसुतहिं समझाइ करि बज्र बिधि धोरन दीख ।

जनकमल बिर जाइ कपि गवन राम पद कीन्ह । २७ ॥

० । चक्षु महा भुनि गरजेवि भारी । गर्भ स्रवहिं बुनि निखिचरवारी ॥  
 नांवि सिंधु शहि पारहिं नावा । सन्ध किलकिला कपिन्ह मुनाका ॥  
 हय सब बिलोकि हनुमाना । नूतन बख कपिन सब जाना ॥  
 मुख प्रमत्त तनु तेज विराजा । कोन्हेवि रामचंद्र के काजा ॥  
 मिले सकल अति भवे सुखानी । तलफत मोन पाव बिमि वारी ॥  
 चले हरवि रघुनायक पासा । पूछत कहत नवल इतिहासा ॥  
 तब मधुवन भोतर सब आये । अंगद सखात मधु फल खाये ॥  
 रखवार सब बरजै खाये । मुष्टि प्रहार हनत सब भागे ॥

० । आइ पुकारे ते सब बज ऊजार युवराज ।

मुनि सुगोव हरष कधि करि आये प्रभुकाज । २८ ॥

१० । जौ न होति सीताबुधि पारि । मधुवन के फल सकहि कि खारि ॥  
 एहि विधि मन बिचार कर राजा । आइ गये कपि सहित समाज ॥  
 आइ सबहिं नावा पद सोका । मिलेउ सबहिं अति प्रीति कपोसा ॥  
 पूछो कुसल कुसल पद देवो । रामहृपा भा काज बिसेषो ॥  
 नाथ काज कोन्हेउ हनुमाना । राखे सकल कपिन्ह के प्राना ॥  
 मुनि सुगोव बडरि तोहि मिलेऊ । कपिन्ह सहित रघुपति पक्ष चलेऊ ॥  
 राम कपिन्ह जब आवत देखी । किये काज मन हरष बिसेषा ॥  
 फटिक मिला बैठे दोउ भाई । परे सकल कपिचरमहि जाई ॥

१० । प्रीति सहित सब भेंटे रघुपति कहना पुनः ।

पूछो कुसल नाथ अब कुसल देखि पदकज । २९ ॥

१० । जामवन्त कह सुनु रघुराया । जा पर नाथ करउ तुम दाया ॥  
 ताहि सदा सब कुसल निरंतर । सुर नर मुनि प्रसन्न ता ऊपर ॥  
 सोर बिलखी बिलयो गुनसागर । तामु मुजस बचखोकर सवागर ॥  
 प्रभु को हृपा भयउ सब काज । बन्धा हमार मुफल भा आज ॥  
 नाथ पवनमत कोन्हे ओ करयो । सहसउ मुख न आइ सो बरनो ॥  
 बवनतनय के चरित सुहाये । जामवन्त रघुपतिहि मुनाये ॥  
 सगत कृपानिधि मन अति भाये । मुनि हनुमान हरषि हिस जाये ॥  
 कहउ तात केहि भांति जानकी । रहति करति नन्हा सप्रान की ॥

१० । नाम पावक राति दिन ज्ञान तुम्हार कषाट ।

खोजन निज पदचरित जाहि प्रान केहि बाट । ३० ॥

१० । चक्षु मोहि सुखामनि दोन्ही । रघुपति हृदय आइ सोर कीन्ही ॥  
 नाथ युगल खोजन भरि वातो । बचन कहउ कहु जनककुमारी ॥  
 अनुज समेत गहेउ अनुचरना । दोनबंधु प्रसन्नारतिहरना ॥  
 मन कम बचन अमलकराजो । केहि अपराध नाथ हौं त्यागी ॥



अवगुन एक मोर मैं जाना । बिकुरत प्राण न कोन्ह पथाना ॥  
 नाथ का नयनन्ह कर अपराधा । निररत प्राण करहि छठि बाधा ॥  
 बिरह अनिज तन तल्ल समोरा । स्वाम जरै ह्वनमाँह सरोरा ॥  
 नयन सबहि जल निज हित लागी । जरै न पाव देख बिरहानो ॥  
 सोता कै अति विपति बिसाला । बिगहि कहे भल दीनदयाला ॥  
 दो० । निमिष निमिष कहना निधि जाहि कषयसम कीति ।  
 बेगि चलयि प्रभु आनिये भुजबल खलदल जाति । ३१ ॥

चौ० । सुनि सोतादुख प्रभु सुखअयना । भरि आयै जल राजिवनयना ॥  
 बचन काय मन मम गति जाही । सपनें ब्रिपति किवसिय ताही ॥  
 कह हनुमंत विपति प्रभु सोई । जब तव मुमिरन भजन न होई ॥  
 कितिक बात प्रभु यातुधान की । रिपुहि जीति आनिवी जानकी ॥  
 मनु कपि तोहि समान उपकारी । नहिं कोउ सुरनरमुनि तनुधारी ॥  
 प्रतिउपकार करौं का तोरा । मनमुख होइ न सकत मन मोरा ॥  
 मुन मुत तोहि उरिन मैं नाही । देखें करि बिचार मन माहीं ॥  
 पुनि पुनि कपिहि चितव सुरजाता । लोचन नोर पुलक अति गाता ॥

गो० । सुनि प्रभुबचन बिलोकि मुख गात हरवि हनुमन्त ।  
 चरन परेउ प्रेमाकुल चाहि चाहि भगवन्त । ३२ ॥

चौ० । बार बार प्रभुचरै उठावा । प्रेममगन तेहि उठव न भावा ॥  
 प्रभुकर पकज कपि के सीसा । मुमिरि सो दसा मगन गौरीसा ॥  
 सावधान मन करि पुनि संकर । लामे कहन कथा अति सुंदर ॥  
 कपि उठाइ प्रभु हृदय लगावा । कर गहि परम निकट बैठावा ॥  
 कहु कपि रावनपाखित संका । कहि विधि दहेउ दुग अति बंका ॥  
 प्रभु प्रसन्न जाना हनुमाना । बोले बचन विगत अभिमाना ॥  
 साखाट्ग के बज्रि मनुषाई । साखा तें साखा पर जाई ॥  
 बांधि सिंधु हाटक पुर आरा । निसिचरगन बधि विपिन लजारा ॥  
 सो सब तब प्रताप रघुनाई । नाथ न कहु मोरि प्रभुताई ॥

दो० । ता कह प्रभु कहु अगम नहिं जा पर तुम अनुकूल ।  
 तब प्रताप बडवानलहिं जारि सकै खलु तूल । ३३ ॥

चौ० । सुनत बचन प्रभु बड सुखमाना । मन कम बचन दासनिज जाना ॥  
 मांगु बचन मुत बर अनुकूला । देखे आजु तुम कहं सुखमूला ॥  
 नाथ भगति अति सुखदायिनी । देखे कृपा करि अनपायिनी ॥  
 मुनि प्रभु परम सरल कपिवानी । एवमस्तु तब कहेउ भवानो ॥  
 उमा राम सुभाव जेहि जाना । ताहि भजन तजि भाव न आना ॥  
 यह संबाइ आस उर जावा । रघुपतिचरन भक्ति सोइ पावा ॥

प्रति प्रभुवचन कहहिं कपिहन्दा । जय जय जय कृपासु मुखकन्दा ॥  
 प्रव रघुपति कपि पतिहि बुलावा । कहा चले कर करछ बनावा ॥  
 दध बिलंब केहि कारन कोजे । तुरत कपिह कहि आयेसु दोजे ॥  
 कोतुक देखि समन बड बरषो । नभ ते भवन चले सुर हरषो ॥

० । कपिपति बेगि बुलाये आये घूयपयूय ।  
 नाना वरन अतुलबल बानरभासुबकूय । ३४ ॥

० । प्रभुपदपंकज नावहिं सोषा । गरजहिं भासु महाबल कोषा ॥  
 देखो राम सकल कपिषेना । चितर कृपा करि राजिवनयना ॥  
 रामकृपा बल पाइ कपिदा । भये पञ्चसुत मनजं गिरिंदा ॥  
 हरषि राम तब कोन्ह पयाना । सगुन भये सुन्दर सुभ नाना ॥  
 आसु सकल मंगलमयकोतो । तासु पयान सगुन यह मोतो ॥  
 प्रभुपयान जाना बेदेहो । फरकि बाम अंग अनु कहि देखो ॥  
 जोइ ओइ सगुन जानकिहिं होई । असगुन भयउ रावगहिं मोई ॥  
 चला कटक को वरनै पारा । गरजहिं बानर भासु अपारा ॥  
 नखआयध गिरिपादपधारी । चले गगन महि दृष्टा चारी ॥  
 कहगिनाइ भासु कपि करहो । उगमग महि दिग्गज चिह्नरहो ॥

० । चिह्नरहिं दिग्गज डोल महि गिरि कोल सागर खरभर ।  
 मन हरष दिनकर भोम सुरमनिनागकिन्नरदुखर । ॥  
 कटकहिं मरकट बिकट भट बड कोटि कोटिन्ध धावहो ।  
 जय राम प्रबलप्रताप कोसलनायगुनगन गावहो ॥  
 सहि सक न भार उटार अहिपति बारबारहि मोहई ।  
 गहि दसन पनि पुनि कमठ पृष्ठ कठोर सो किमि मोहई ॥  
 रघुबीर हचिर पयान प्रस्थिति जानि परम सोहावनी ।  
 अनु कमठखर्पर सर्पराज सुखिखत अविचल पावनी ॥ ५ ॥

१० । एहि विधि आइ कृपानिधि उत्तरै बागरीतोर ।  
 जह तह लागे खान फल भासु विपुल कपिबीर । ३५ ॥

वै० । उहां निवासर रहहिं सबंका । अब ते जाहि मखड कपि लंका ॥  
 निज निज गृह सब करहिं विचारा । नहिं निखिरकुल कर उबारा ॥  
 आसु दूत बल सरनि न जाई । तेहि आये पुर कवनि भलाई ॥  
 दूतिह सन मुनि पुरजनबानी । मन्दोदरी अधिक अनुलानी ॥  
 रहसि जोरि कर पतिपद लागी । बोली वचन मोतिरसपागी ॥  
 कन कर्ष हरि सन परिहरछ । मोर कहा अति हित हिय धरछ ॥  
 समुझत आसु दूत के करनी । सबहिं गभं रजनीचर धरनी ॥  
 तासु नार निज वचि बुझाई । पठवड पिय सो कसक भलाई ॥

तव कुलकमलविपिन दुखदार्द्री । सीता सीत निवा सम आई ॥  
 वनज नाथ सीता बिनु दोने । हित ननु नार संभु अज कीने ॥  
 दो० । रामवान अहिगन हरिष निकर निशाचर भेक ।  
 अब लमि पसत न तव लगि जतन करऊतजि टेक । २६ ॥

चौ० । सबन सुनो पठ ता करि बानी । बिहंसा अगत विदित अभिमानी ॥  
 यभय सुभाव नारि कर पांचा । मंगल मोहि मै मन अति कांचा ॥  
 जौ आवै मरकटकटकाई । जियहिं दिखारे निषिचर खाई ॥  
 कपहिं लोकय जा के पांचा । तासु नारि समीत बडि हांचा ॥  
 अस कहि बिहंशि ताहि उरसाई । चलेउ सभा ममता अधिकारै ॥  
 मन्दादरो हृदय कर चिंता । भयउ कल पर विधि बिपरीता ॥  
 बैठेउ सभा खबरि अति पारि । सिंधु पार सेना सब आई ॥  
 बड़ा स बसिव उषित मत कहल । ते सब हसे मष्ट करि रहल ॥  
 जितेउ मुरामुर तब सम नारी । नर बामर कोहि कोखे मारी ॥

दो० । सचिव वैद्य गुरु तोनि जौ प्रिय बोलहिं भय आभ ।  
 राज धर्म तनु तोनि कर होइ बंगैहिं नाम । २७ ॥

चौ० । मोर रावन कह बनी महाई । अमृति करहिं मुनायसमाई ॥  
 असुर जानि विभीषण आवा । भ्राताचरन सोष तेहि नावा ॥  
 पनि मिरु नार बैठ निज आसन । बोला बचन पाइ अनुसामन ॥  
 जौ तृपाल पूकेऊ मोहि माता । मति अनुरूप कहै हित ताता ॥  
 जौ आपन साहइ कल्याण । सुजय सुमति सुभगति सुख माना ॥  
 सो परनारिलिखार गुमाई । तजै चौथ के चंद कि नाई ॥  
 चौदह भुवन एक पति होई । भुत द्रोह तिष्ठै नहिं छोई ॥  
 गुमसागर नागर नर जाऊ । अलपलाभ भल कहै न जाऊ ॥

दो० । काम क्रोध मद सोभ सब नाथ नरक के पंथ ।  
 तेहि परिहरि रघुबीरहिं भजऊ भजहिं जहि संत । २८ ॥

चौ० । तात राम नहिं नरभूपाळा । भुवनेखर कालज के काला ॥  
 ब्रह्म अनामय अज भगवन्ता । व्यापक अजित अनादि अनन्ता ॥  
 गो द्विज धेनु देव हितकारी । कृपाधिनु मागधतनुधारी ॥  
 अमरअन भक्षण लक्ष्मणा । वेदधर्मरक्षक मुरजाता ॥  
 ताहि बेर तजि नाराय माया । प्रमत्तारतिभजन रघुनाथा ॥  
 देख नाथ प्रभु कहै बंदेही । भजऊ राम बिनु हतु बनेही ॥  
 हरन गये प्रभु ताऊ न त्यागा । बिसद्वेष्टाहकृत अथ जहि लाग ॥  
 जाय नाम अचलाचलबावन । मोर प्रभु प्रमट समुद्र जिय सबन ॥

बार बार पद लामुं विनय करुं दबही

परिहरि मान मोह मर भजत कोसकीची । २६ ॥

। माख्यंत प्रति कथिब बधावा । ताकु बखस बुनि प्रति कुल माना ॥
। त अजु तव नीलिबिडुवन । की घर भरत को कहत विभीषन ॥
। रिपुतकय कहत सठ दोऊ । दूरि न करत रहीं है कोऊ ॥
। माख्यंत यह बखस बहोरी । कहत विभीषन बुनि कर कोरी ॥
। पुमति कुमति बर के घर रहई । नाथ पुराव निगम सब कहई ॥
। जहां कुमति तह संपति माना । जहां कुमति तह विपतिनिदाना ॥
। तव घर कुमति बखी विपरीता । हित अनहित मागज रिपुकीता ॥
। काख राति निशिचरकुल करी । तेहि सोता घर प्रीति अनरी ॥

० । तात चरन महि मागजुं राखजुं मोर सुहार ।

सोता देऊ राम कहं अहित न होइ तुहार । ३० ॥

। बुधपरान प्रति संमत जानी । कही विभीषन नीति बखानी ॥
। सुनत दखाने उठा रिबाई । खल तोहि मृत्यु निकट अब आई ॥
। जियहि सदा सठ मोर जिवावा । रिपु कर पण्य मूढ तोहि भावा ॥
। कहसि न खल अब को जग माहीं । भुजबल जेहि जीता मै माहीं ॥
। मम पुर बसि तपविन्ह पर प्रीती । सठ मित्र जाइ तिन्हहि कजु नीती ॥
। अब कहि कोन्हसि चरनप्रहारा । अनुज गह पद चारहि बारा ॥
। तम पितु मरिब भलेहि मोहि मारा । रक्त भजे हित नाथ तुहारा ॥
। उमा संत कै रहइ बडाई । मंद करत जो करइ भलाई ॥
। सखि मंग लै नभ पथ मखज । सबहि सुनाइ कहत अब भयज ॥

१० । राम सत्यसंकल्प प्रभु सभा कालवस तोरि ।

मै रघुवीर सरन अब जाउं देऊ अजि खोरि । ३१ ॥

। चौ० । अब कहि चला विभीषन जवहीं । आयूहीन भयेउ सब तवहीं ॥
। माधुअवहा तुरत भवानी । कर कल्याण अखिल कै दानी ॥
। रावन अवहि विभीषन त्यागा । भएउ विभव विनु तवहि अभाना ॥
। चलेउ हरहि रघुनाथक पाहीं । करत मनोरथ बजु मंग माहीं ॥
। देखिहौं जाइ चरनजलजाता । चरन मृदुल सेवकमुखदाता ॥
। जे पद परबि तरी अविनारी । दंडककानन पावनकारी ॥
। जे पद जनकसुता घर छाये । कपटसुरंग संग धर धाये ॥
। हर घरसर सरोजपद जेई । अहो माग्य मै देखिहौं तेई ॥

२० । विन्ध पाबन्ह के पादुकनि भरत रहे मन छाइ ।

ते पद आजु बिछोकिहौं इन नयननि अब जाइ । ३२ ॥

चौ० । एहि विधि करत सप्रेम विचारा । आयेउ सपदि मित्रु एहि पारा ॥  
 कपिन्ह बिभीषन आवत देषा । जामा कोउ रिपुदूत बिसेषा ॥  
 ताहि राखि कपीस एहि आये । समाचार सब ताहि सुनाये ॥  
 कह सुयोव मुनहु रघुराई । आवा मिलन दसानन भाई ॥  
 कह प्रभु सखा बृक्षिये काहा । कह कपीस मुनहु नरनाहा ॥  
 जानि न जाइ निमाचरमाया । कामरूप कहि कारन आया ॥  
 भेट हमार लेन सठ आवा । राखिय बांधि भाँटि अम भावा ॥  
 सखा नीति तुम नीकि विचारी । मम पन सरनागतभयहारी ॥  
 मुनि प्रभुवचन हरष हनुमाना । सरनागतबल्लभ भगवाना ॥

दो० । सरनागत कह ज तजहिं निज अनहिता अनुमानि ।  
 ते नर पावर पापमय तिन्हहिं बिलोकत हानि । ४३ ॥

चौ० । कोटि सिप्रबध लागहिं जाह । आये सरन तजौं नहिं ताह ॥  
 मनुख होइ जीव मोहि अयहीं । जन्मकोटिअघ नासौं तबहीं ॥  
 पापबन्ध कर सहज सुभाऊ । भजन मोर तेहि भाव न काऊ ॥  
 जो पै दृष्टदय सो होई । मोरे मनुख आव कि सोई ॥  
 निर्मलमन अन सो मोहि पावा । मोहि कपट कल कट्ट न भावा ॥  
 भेट लेन पठवौ दसभीषा । तबहु न कहु भय हानि कपीषा ॥  
 जग महे सखा निमाचर जेते । लकिमन हनहिं निमिष मह तेते ॥  
 जो सभौत आवा सरनाई । रखिहौं ताहि प्रान की नाई ॥

दो० । उभय भाँति तेहि आनछ हँमि कह कृपानिकेत ।  
 जय कृपालु कहि कपि चले अंगद हनु समेत । ४४ ॥

चौ० । सादर तेहि आग करि मानर । चले जहाँ रघुपति कहनाकर ॥  
 दूरिहि ते देखे दोउ भाता । नयनामन्द दान के दाता ॥  
 बजरि राम कबिधाम बिलोको । रहेउ ठठुकि एक टक पल रोकी ॥  
 भुजप्रसन्न कंजारन सोचन । स्वामलगात प्रनतभयमोचन ॥  
 सिंहकथ आगत उर सोहा । आनन अमित मदनमन मोहा ॥  
 नयन नीर पुलकित अति गाता । मन धरि धीर कहो स्टु बाता ॥  
 जाय दशमन कर मैं आता । निमिषरबंस जनम मुरवाता ॥  
 सहज पाप प्रिय तामस देहा । यथा बल्लूकहि तम पर नेहा ॥

दो० । खवन सुषस मुनि आयेउ प्रभु भंजन भवभीर ।  
 चाहि चाहि आरतिहरन सरनमुखद रघुवीर । ४५ ॥

चौ० । अब कहि करत दंडवत देषा । तुरत उठे प्रभु हरष बिसेषा ॥  
 दोन वचन मुनि प्रभुमन भावा । भुज बिसाल गहि हृदय लगावा ॥  
 अनज सहित मिमि टिभवैठारी । सोले वचन भगतभयहारी ॥

जु लंकेश सहित परिवारा । कमल कूठाहर बाध तुम्हारा ॥  
 लसंडभी बसत दिनरातो । मखा धर्म निबधै कहि भांतो ॥  
 जानौ तुम्हारी सब रीतो । अतिनखनिपुन न आवि ज्योती ॥  
 ह भल बाम नरक कर ताता । दुष्टमंग अनि देह विधाता ॥  
 तव पद देखि कमल रघुराजा । जो तुम कीन्ह जानि जन दाया ॥

तव लागि कमल न जीव कहु सपनेहुं मन विमाम ।  
 जब लागि भजत न राम कहु भोक धाम तजि काम ॥ ४६ ॥

१ । तव लागि हृदय बसत खल नाना । लोभ मोह मखर मद माना ॥  
 तव लागि उर न बसत रघुनाथा । धरि चाप सायक कटि भाया ॥  
 समता तरुन तमो अधिचारी । रागद्वेष उलूक मुखकारी ॥  
 तव लागि बसत जीव मन माहीं । जब कगि प्रभुप्रताप रवि नाहीं ॥  
 प्रब मै कमल मिटे भय भारे । देखि रामपद कमल तुम्हारे ॥  
 तुम कपाल जा पर अनुकूला । ताहि न व्याप त्रिविधभवदुखा ॥  
 मै निमिषर अति अधमसुभाज । मुभ आचरन कीन्ह नहि काज ॥  
 जामु रूप मुनिधान न आवा । मो प्रभु हरषि हृदय मोहि लावा ॥

० । अहो भाग्य मम अमित अति राम कृपा मुखपुष्प ।  
 देखेउं नयन विरचिषिव मेव यगलपद कछ ॥ ४७ ॥

१० । मुनज मखा निज कहउँ सुभाज । जान भुषण्ड संभु गिरिजाज ॥  
 जौ नर होइ चराचरद्रोही । आवै मभय मरन तकि मोही ॥  
 तजि मद मोह कपट कल नाना । करौं सद्य तंहि साधु समाना ॥  
 जननी जनक बंधु सुत दास । तन धन भवन सुहृद परिवारा ॥  
 सब कै ममता ताग बटोरी । मम पद मनहि बांधि बरि डोरी ॥  
 समदरसी दुष्का कहु नाहीं । हर्ष मोक भय नहि मन माहीं ॥  
 अम सज्जन मम पर बस कैमे । लोभोहृदय बमै धन कैमे ॥  
 तुम मारिखे संत प्रिय मोरे । धरौं देह नहि आन निहोरे ॥

१० । मगनउपासक परम हित निरत नीति दुइ नेम ।  
 ते नर प्राण समान मम जिन के दिजपद प्रेम ॥ ४८ ॥

वै० । मनु लंकेश सकल गुन तोरे । तौ तुम अतिवद्य प्रिय मोरे ॥  
 रामवचन मुनि बागरयथा । सकल कहहि अय कृपाबद्धा ॥  
 मुनत विभीषन प्रभु कै बागी । नहि अघात खबनामन जानी ॥  
 पद अंबुज गहि बारहिबारा । हृदय समात न प्रेम अपारा ॥  
 मुनहुदेव बचराचरसामी । प्रनतपास परअंतजामी ॥  
 उर कहु प्रथम बागना रही । प्रभुपदप्रोति करित मो कहो ॥  
 अम कृपास निजभक्ति पावनी । देहु सदा विवमनभावनी ॥

- व्रमस्तु प्रभु कहि रनधीरा । मांगा तुरत सिंधु कर नीरा ॥  
 यदपि मखा तब दृष्टा नाहीं । मोर दरब आमोच जन माहीं ॥  
 अस कहि राम तिलक तेहि सारा । मुमनहृष्टि नम अई अपारा ॥
- दो० । शवनकोध चलत निज खास समोर प्रचल ॥  
 जगत विभीषन राखा दोन्हेउ राज अल ॥  
 जो संपनि निज रावनहि दोन्ह दिखे दस माघ ॥  
 छोद संपदा विभीषनहिं सकुचि दोन्हि रघुनाथ । ४२ ॥
- चौ० । अस प्रभु कहि मंजहिं जे आना । ते नर पनु बिन पृष्ठ विधाना ॥  
 निज जन जानि ताहि अपनावा । प्रभुभाव कपिअ मन भावा ॥  
 पुनि सरबल्ल सर्वकरवासी । सर्वरूप सबरहित उदासी ॥  
 बोले बचन नीतिप्रतिपासक । कारण मनुज दमजकुलपालक ॥  
 कुनु कपीम संकापनि मोर । केहि विधि तरिष जलधि मंभीरा ॥  
 मकुल मकर उरग झुजजाती । अति अगाध दुखार सब भांती ॥  
 कह संकोच सनऊ रघुनाथक । कोटिमिंधुसोषक तब सायक ॥  
 यद्यपि तदपि नीति अचि गार्ह । बिनय करिष सागर सन गार्ह ॥
- दो० । प्रभु तुम्हार कुलगुरु जलधि कहिहि उपास विचारि ।  
 बिनु प्रयास सागर तरिहिं सकल भासुकपिधारि । ५० ॥
- चौ० । मखा कसौ तुम जोकि उपाई । करिष दैव औ छोद सहार ॥  
 मंच न यह सहिममन भाव । रामबचन भुवि अति दुख पावा ॥  
 नाथ दैव कर कवन अरोवा । सोपिष सिंधु करिष मन रोसा ॥  
 कादरमन कहैएक अपारा । दैव दैव आससी पुकारा ॥  
 सुमत बिहंवि बोले रघुवीरा । ऐसह करब धरजु मन घीरा ॥  
 अस कहि लवल सिंधु तटगार्ह । बैठे पुनि मट दर्भ दशार्ह ॥  
 जवहिं विभीषन प्रभु पहिं आए । पाछे रावन दून पठाए ॥
- दो० । सकल चरित तिन देखेउ घरे कपटकपिदेह ।  
 प्रभुगुन हृदय सराहहिं सरनामत पर नेह । ५१ ॥
- चौ० । प्रगट बखानहि रामसुभाज । अति सप्रेम गा बिसरि दराज ॥  
 रिपु के दूत कपिन्ह तब जावे । सकल बांधि कपीस पहिं आने ॥  
 कह सुयोव सुनऊ सब कानर । अंग अंग करि पठवजु निमिचर ॥  
 मुनि सुयोवबचन कहि पावे । बांधि कटक चउं पास फिगये ॥  
 बरि प्रकार मारन कपि खाने । दोन पुकारत तदपि न त्यागे ॥  
 जो हमार हर नावा कावा । ताहि कोसलाधीस कै आना ॥  
 मुनि सहिमन सब निकट बुलावे । दबा खानि हंवि तुरत कुदावे ॥  
 बावन कर दीजेउ यह पातो । सहिमन बचन बांधु कुलजातो ॥

कहेउ मुखानर मूढ बन मन मंदेस उदार ।

बीता देह मिखउ न न जावा कास तुम्हार । १२ ॥

। तुरत नाद लहिमनपद भाधा ।	चखे दूत वरनत भुनगाधा ॥
। रहत रामयस लंका आधे ।	रावनवरन सोध तिन्ह नाथे ॥
। बहसि दसानन सूखी बाता ।	कहसि न सुक आपनि बुझसाता ॥
। नि कहु खबरि बिभीषन केरी ।	जाहि मृत्यु आई अति जेरी ॥
। तरतराज लंका सठ त्यागी ।	होइहि अब कर कीट अभागो ॥
। नि कहु भासुकीसकटकाई ।	कठिन कालप्रेरित चलि आई ॥
। तिन्हके जीवन कर रखवारा ।	भयउ मृदुलचित सिंधु बिचारा ॥
। कहु तपसिन्ह करि बान बहोरी ।	जिन्हके चहइ चाम अति मोरी ॥

० । को भर भेंट कि फिरि गये सवन सुयस सुनि मोर ।

कहसि न रिपुदक्षतेजबल वहुत चकित चित तोर । १३ ॥

। नाथे कुपा करि पूछेउ जैसे ।	मानउ कहा कोध तजि तेजे ॥
। मिला जाइ अब अनुर तुम्हारा ।	जातहि राम तिलक तेहि सारा ॥
। रावनदूत हमहि भुंजि काना ।	कपिन्ह बांधि दोन्हे दुख नागा ॥
। सवननासिका काटन साथे ।	रामपण्य दीन्हे हम त्यागे ॥
। पूछेउ बाध रामकटकाई ।	बदन कोटिहत वरनि न आई ॥
। नाना वरन भासुकपिधारी ।	बिकटानन बिसास भयकारी ॥
। जेहि पर देखेउ हतेउ सुते तोरा ।	सकल कपिन्ह महं तेहि बल खोरा ॥
। अमित नाम मटकठिन कराखा ।	अमित नागबल विपुल बिसाखा ॥

। दिविद मयंद मोल नल अंगद गद बिकटासि ।

दधिमुख केहरि निचठ सठ जामवन्त बहरासि । १४ ॥

। ये कपि सब सुखीव समाना ।	इन्ह सम कोटिन्ह गनै को नाना ॥
। रामरूपा अतुलित बल तियहीं ।	दनसमान अथलोकहि गिनहीं ॥
। अस मै सवन सुना दसकनर ।	पदमचठारइ यूथप बन्दर ॥
। नाथ कटक महं सो कपि माहीं ।	जो न तुमहिं जीतै रन माहीं ॥
। परम कोध सोजहिं सब बाधा ।	आथम पै न देखि रजुनाधा ॥
। सोचहिं सिंधु सहित उपयाधा ।	पुरहिं न तर धरि सुधर बिसाधा ॥
। मरिं मरद मिखवहिं दसबीधा ।	सैबद बचन कहहिं सब कीधा ॥
। गर्जहिं तरजहिं बहइ असंका ।	मानउ अपन चहत हरिं लंका ॥

। सहज सर कपिआसु सब सुनि सिर पर प्रभु रास ।

रावन कासकोटि कहं जीति सकहिं संशय । १५ ॥

। रामतेजबलबुधिविपुलाई ।

। सेव सहस्रत सकहिं न गई ॥



## अथ लंकाकाण्ड ॥

श्लोक ॥

- रामं कामारिसेव्यं भवभयहरणं कालमत्तेभसिंहं ।  
 योगीन्द्रं ज्ञानगम्यं गुणनिधिमजितं निर्मुक्तं निर्विकारम् ॥  
 मायातीतं सुरेशं खलवधनिरतं ब्रह्मवृन्दैकदेवं ।  
 वन्दे कन्दावदातं सरसिजनयनं देवमूर्वीशरूपम् ॥ १ ॥  
 शंखेन्दाभमतीव सुन्दरतनुं शार्दूलचर्माम्बरं ।  
 कालव्यालकरालभूषणधरं गङ्गाशशाङ्कप्रियं ॥  
 काशीशं कलिकल्पौघशमनं कल्याणकल्पद्रुमं ।  
 नैमीशं गिरिजापतिं गुणनिधिं श्रीशङ्करं कामहं ॥ २ ॥  
 यो ददाति सतां शम्भुः कैवल्यमपि दुर्लभं ।  
 खलानां दण्डकृद् योऽसौ शङ्करः शन्तनोतु मे ॥ ३ ॥
- दो० । कवनिमेव परमानन्दुग वरप कल्प सर चण्ड ।  
 भवसि न मन तेहि राम कहं काल कासु कोदण्ड । १ ॥
- सो० । सिन्धु वचन सुनि राम वचिव बोलि प्रभु अथ कहैउ ।  
 अब बिलंब कोहि काम करउ हेतु उतरै कटक ॥  
 सुनउ भानुकुलकेतु नामवन्त कर जोरि कह ।  
 नाथ नाम तव हेतु वर चहि भवसागर तरहि । १ ॥
- चौ० । यह लख बलधि तरत कति वारा । अथ सुनि पुनि कह पवनकुमारा ॥  
 प्रभुप्रताप बडवानलभारी । सोषेउ प्रथम पयोनिधिवारी ॥  
 तव त्रिपुनारिदहनबलधारा । भरेउ बहोरि भएउ तेहि खारा ॥  
 सुनि अति उक्ति पवनसुत केरी । हरये कपि रघुपतिजन हेरी ॥  
 नामवन्त बोले दोउ भाई । मलनोकाहि सब कथा सुनारै ॥  
 रामप्रताप सुमिरि मन माहीं । करउ हेतु प्रयास कहु नाहीं ॥  
 बोलि खिचे कपिनिकर बहोरी । सकल सुनउ विनती दक मोरी ॥

मचरणपंकज उर धरत । कौतुक एक भक्त कवि करत ॥  
वज्र मर्कटविकटवक्ष्या । आनन्द विद्वत्प्रिय के वृषा ॥  
नि कपि भालु चले करि वृषा । जय रघुवीरप्रतापबभूषा ॥

। अति उत्तम विरि पादप खोखरि खेहिं छडाई ।  
आनि देहिं मल नीलधिं रचहिं ते सेतु बनाई । ९ ॥

। सैल बिसाल आनि कपि देखीं । कंदुक दव नल भोल ते खेचीं ॥  
खि सेतु अति सुंदर रचना । बिहसि छपानिधि बोले वचना ॥  
रम रम्य उत्तम यह धरनी । महिमा अमित जार, नहिं करनी ॥  
रिहौं इहां संसृथापना । मोरे बहस करन कल्पना ॥  
अनि कपोस मज्ज दूत पडाये । मुनिवर सकल बोधि सै पाये ॥  
लंग थापि बिधिमत करि पूजा । सिव समान प्रिय मोहि न दूजा ॥  
खेवद्रोही मम भक्त कहावा । सो नर सपेक्ष मोहि न पावा ॥  
संकरबिमुख भक्ति यह मोरी । सो नारकी मूढ मति घोरी ॥

० । संकरप्रिय मम द्रोही खिद्रोही मम दास ।  
ते नर करहिं कलप भरि घोर नरक महुं बास । १ ॥

० । जे रामेस्वरदरसन करि रहिं । ते तनु तजि मम लोक सिधरिह हिं ॥  
जो गंगाजल आनि चढाईहि । सो सायुज्य मुक्ति नर पादहि ॥  
होइ अकाम जो कल तजि बेहहि । भक्ति मोरि तेहि संकर देरहि ॥  
मम कृतसेतु जो दरसन करीं । सो बिनु मम भवसागर तरहीं ॥  
रामवचन सब के जिय भाये । मुनिवर निज निज आत्म आये ॥  
गिरिजा रघुपति के यह रीती । सतत करहिं प्रसन्न पर प्रीती ॥  
बांधि सेतु नीलनल नागर । रामकृपा जय भयेक उवागर ॥  
बूझिं आनहिं बोरहिं जेई । भयेक उपलब्ध बोधित सम तेई ॥  
महिमा यह न अछधि कै करनी । पावन गुन न कछि कै करनी ॥

१० । खीरघुबीरप्रताप ते बिभु तरे पावाम ।  
ते मतिमंद जे राम तजि भजहिं नार प्रभु आन । ११ ॥

१० । बांधि सेतु अति सुदृढ बनावा । देखि छपानिधि के मन भावा ॥  
चखी सेन कहुं बरनि न जाई । नजहिं मरकटभटसमदारी ॥  
सेतुबन्ध ढिग पडि रघुराई । चितव छपाज धिभुबजतारी ॥  
देखन कह प्रभुकरनाकन्दो । प्रमट भये सब अक्षरद्वन्द्या ॥  
जाना मकर गळ सूर्य बोला । सतबोधनतम परमविद्या ॥  
ऐसेक एक तिन्हहिं करि छोडी । एकद के उर तेहिं डेराही ॥  
प्रभुहिं बिसीकत डरत न टारै । मग हरपित सब भवे सुखारै ॥  
तिनकी ओट न ईच्छिब वारी । मगन भवे हरिद्विज वारी ॥



॥ किं मानुष मोर विद्याय ॥ मोरहि सुख निहं पुरातन ॥

॥ अब कहि सोधन बारि नरि नरि नरि नरि नरि नरि ॥

नाथ भवतु रघुनाथहि नरक मोर नरि नरि ॥

॥ तब रावन भवतु पठाई ॥ कहि मानुष नरि प्रभुताई ॥

॥ पुन ते प्रिया दुखा नरि जाना ॥ जन मोखा को मोरि नरि जाना ॥

॥ रान सुवेर नरन नरि जाना ॥ सुखनरि नरि नरि नरि नरि ॥

॥ रव दनुष किन्नर नरि मोरे ॥ कवन वेतु नरि नरि नरि ॥

॥ नाना विधि तेहि कहि नरि नरि ॥ सभा नरि नरि नरि नरि ॥

॥ मन्दोदरी नरि नरि नरि ॥ काव नरि नरि नरि नरि ॥

॥ सभा नरि नरि नरि नरि ॥ करन नरि नरि नरि नरि ॥

॥ कहहि नरि नरि नरि नरि ॥ बार बार नरि नरि नरि ॥

॥ कहतु कवन भय करि नरि नरि ॥ नर नरि नरि नरि नरि ॥

१० । अब जो वचन नरन नरि कह प्रथम कर मोरि ॥

नोति विरोध न करि नरि नरि नरि नरि नरि ॥

१० । कहहि नरि नरि नरि नरि ॥ नाथ न पुर नरि नरि नरि ॥

॥ बारिधि नरि नरि नरि नरि ॥ तासु नरि नरि नरि नरि ॥

॥ कुधा नरि नरि नरि नरि ॥ नरि नरि नरि नरि नरि ॥

॥ सुनत नरि नरि नरि नरि ॥ नरि नरि नरि नरि नरि ॥

॥ जेहि नरि नरि नरि नरि ॥ नरि नरि नरि नरि नरि ॥

॥ सो भन नरि नरि नरि नरि ॥ नरि नरि नरि नरि नरि ॥

॥ तात नरि नरि नरि नरि ॥ नरि नरि नरि नरि नरि ॥

॥ प्रिय नरि नरि नरि नरि ॥ नरि नरि नरि नरि नरि ॥

॥ नरि नरि नरि नरि नरि ॥ नरि नरि नरि नरि नरि ॥

॥ प्रथम नरि नरि नरि नरि ॥ नरि नरि नरि नरि नरि ॥

दो० । नरि पाद फिरि नरि नरि नरि नरि नरि ॥

नरि नरि नरि नरि नरि नरि नरि नरि ॥

शो० । यह मत नरि नरि नरि नरि ॥ नरि नरि नरि नरि नरि ॥

॥ सुत नरि नरि नरि नरि ॥ नरि नरि नरि नरि नरि ॥

॥ नरि नरि नरि नरि नरि ॥ नरि नरि नरि नरि नरि ॥

॥ नरि नरि नरि नरि नरि ॥ नरि नरि नरि नरि नरि ॥

॥ नरि नरि नरि नरि नरि ॥ नरि नरि नरि नरि नरि ॥

॥ नरि नरि नरि नरि नरि ॥ नरि नरि नरि नरि नरि ॥

॥ नरि नरि नरि नरि नरि ॥ नरि नरि नरि नरि नरि ॥

॥ नरि नरि नरि नरि नरि ॥ नरि नरि नरि नरि नरि ॥

बाजहि तास प्रयासन श्रीका । नृत्य करहि चयकरा प्रवीर ।  
 दो० । सुनासीर सतप्रतिव सो समत करै बिसास ।  
 परम प्रबल रिपु श्रीर पर तदपि सोच नहि पास । ११ ॥

चौ० । दहा सुखेसीर रसुबीरा । उतरे सेनबहित अति भोरा ।  
 बिखर एक अंतग अति देखी । परम रत्न अति सुभ्र बिसेयी ।  
 तह तहकिहससमुमन सुहाये । कहिमन कहि मिज हाथ उसाये ।  
 ता पर रचिर सद्गुण सुनहाला । तेहि आसन आसीन कयाला ।  
 प्रभुहत सीम कपीस उहना । बास दासिन दिसि आप निर्वगा ।  
 दुऊँ कर कमल सुधारत डाना । कह सकैस संव कनि काना ।  
 बडभासी संगद सुभाजा । चरनकमल आपत बिधि नाना ।  
 प्रभु पाछे कहिमन श्रीरामन । कटि निधन कर बास सरासन ।

दो० । एहि बिधि कुवाहपुननधाम राम आसीन ।  
 ते नर धन्य जे भान एहि रहत सदा लखजोस ।  
 पूरव दिखि बिलोकि प्रभु देखा उदित मयंक ।  
 कहत सबहि देखउ बधिहि मृगपति सरिस अशंक । १२ ॥

चौ० । पूरव दिसि गिरिगुहा निवासी । परम प्रतापते जवजगामो ।  
 मलनागतम सुख विदारो । ससि केसरी मगनवनचारी ।  
 बिचुरे नभ मुकुताहसतारा । निजि सुंदरी केर सिंगारा ।  
 कह प्रभु बसि सह मेघकवार । कहउ काह निज निज मति भाई ।  
 कह सुयोव सुजउ रघुराई । बसि सह प्रगट भूमि कै झाई ।  
 भारेव राज बधिहि कह कोई । उर मह परो खामता सोई ।  
 कोउ कह जम बिधिदति मुख कीचा । मारभाग ससि कर हरि सीन्हा ।  
 छिद्र सो प्रगट हनुज्जर माहीं । तेहि मम देखिब नभ परिकाशी ।  
 प्रभु कह मरल बंधुबसि कोरा । अति प्रिय निज उर दोन्ह बसेरा ।  
 बिस संघत कर निकर पकारी । चारत बिरहवन्त नर नारी ।

दो० । कह हनुमंत सुजउ प्रभु बसि तुम्हार प्रिय दास ।  
 तव मूरति बिधुवर बसति सोई खामत भास ।  
 पवननय के बचन सुनि बिहसे राम संजान ।  
 दक्षिण दिसि अवलोकि प्रभु बोले कृपानिधान । १३ ॥

चौ० । देख बिबोधन दक्षिण भासा । घनघमंड दामिनीबिसासा ।  
 मधुर मधुर मरगत मगधोर । होर दृष्टि जनु कपल कठोरा ।  
 कहत बिभीषण सुजउ कृपासा । होर न तजित न बारिदभासा ।  
 लंका बिखर उपर जानारा । तह दमकंधर देखु अकारा ।

। मेघद्वारविरधारी । सोर कन्य बलद्वारा चतिकांरी ॥  
 दोदरी सवनताटका । सोर प्रभु कन्य बालिनीदमका ॥  
 जहिं तास मदन चमका । सोर रव-सरक सुमङ्ग सुरधवा ॥  
 ३ मुसुकान बभुषि चमिमाया । चाप पदार बाण बंधाया ॥

। हन मुकुट ताटका तन हते एकही बाण ।  
 सव के देखत महि परे मर्म न कोऊ जान ॥  
 अस कौतुक करि रामवर प्रविसे चार निधन ।  
 रावन सभा समक बस देखि महारसभंग । १४ ॥

। कंप न भूमि न महत विमेषा । अस सस कहु नयन न देया ॥  
 । चहिं सब निज हृदय मझारी । असगुन मजब भवकर भारी ॥  
 समस्त देखि सभा भव पाई । विहसि बचन कह युनि वनाई ॥  
 मरे गिरे ममत सुम जाही । मुकुट परे कस चमगन ताही ॥  
 यन करहु निज निज मरु जाई । गवने भवन सकल भिरे नाई ॥  
 । न्दोदरी मोच पर बसेऊ । अब ते सवन पर महि खसेऊ ॥  
 । जल नयन कह युग कर ओरी । सुनऊ प्राणपति विगतो मोरी ॥  
 । त राम विरोध परिहरऊ । जानि मनुज जनि हट मन धरऊ ॥

। बिस्वरूप रघुवंमनि करहु बचन बिस्वास ।  
 लोककल्याण वेद कर चंग चंग प्रति जासु । १५ ॥

० । पद पाताल सोस चमधामा । अपर लोक चंग चंग बिस्वामा ॥  
 । मुकुटिबिलास भवकर काखा । नयनदिवाकर कचनमोखा ॥  
 । जासु जान असगोकुमारा । निमि पद दिवस निसेव अपारा ॥  
 । सवन दिसा दस बेह बखानी । माहत लगत निगल निज बानी ॥  
 । अधर लोभ बस दयन करखा । माया हाथ लाऊ बिनकाया ॥  
 । भानन भनल भुपति जोहा । उतपति पावन मजब लखोहा ॥  
 । रोम राजि अहादस भारा । चलि सैक सहित मजबारा ॥  
 । उदर उदधि अध गो जातना । अग मय प्रभु कहै मऊ कल्या ॥

१० । चंचकार शिवबुद्धि भजसन चविचित महान ।  
 मनुज बास सुपरावर रूपरासि भगवान ॥  
 । अस बिचारि सुन प्राणपति प्रभुवन वैर विशार ।  
 प्रीति करहु रघुनोरपद सम चविवात न जाइ । १६ ॥

१० । बिहसा नारिबचन सुनि जाना । चहो मोहमहिमा बखाना ॥  
 । नारि सुभाव कय कवि कहौ । चवगुन पाठ करा कर राखौ ॥  
 । साहस अहत चपकता भावा । भव चविके चहौच अदावा ॥  
 । रियु कर रूप सकल ते गोवा । चति बिबाह भव मौषि सुनावा ॥

- दो वव भिवा बहव बह कोरे । समुष्टि परा प्रवाद बह तोरे ॥  
 जामेउ भिवा नीरि सुभारै । बहि बिधि कहेऊ नीरि सुभारै ॥  
 तव वतकही मूढ बलकोपनि । समुष्टत सुखइ सुगत भवनीपनि ॥  
 मन्दोदरि मन कहि कइ ठमक । पियहि काकमन मलिकमभवज ॥
- दो० । एहि बिधि करत विनोद बड प्रान प्रगट इषकथ ।  
 बहव बहक बहपति कथा मनो मंदबध । १० ॥
- दो० । सुखी सुखी न वेत बहपि सुभावरवहिं बहव ।  
 मूरखइदय न चेत नौ गुद निकहिं निरहिं बिब । ९ ॥
- चौ० । रही प्रात जाने रचुराई । पहा मन बह बहिं बुझाई ॥  
 कहउ बेनि का करिष सुभाई । जामवन्त कह पद बिहनाई ॥  
 सुनु सर्वज्ञ बहकउरबासी । बुधिवल्लभधर्मगुनरासी ॥  
 मंच कहउ निज मति अनुभाषा । दूत पठाइष बासिकुमारा ॥  
 लोक मंच बह के मन माना । अंगद बह कह छपानिधाना ॥  
 बाधितनय बुधिवल्लभगुनधामा । संका जाउनात मम कामा ॥  
 बडत बुझाइ तुमहि का कहउ । परम चतुर मै जानत चहउ ॥  
 काब हमार तासु छित होई । रिपु घन करउ बतकही खोई ॥
- सो० । प्रभुअज्ञा धरि मोख चरनबन्दि अंगद उठेउ ।  
 खोइ गुनसागरईस राम छपा जापर करउ ॥  
 खयं बिहू तब काब नाथ मोहि आइर इचउ ।  
 अबनिआरि अवरान तनु पुखकित हरयित हिये । २ ॥
- चौ० । बंदिचरन उर धरि प्रभुताई\* । अंगद चलेउ सबहि मिह नाई ॥  
 प्रभुप्रताप उर सखज अवंका । रन बांजुरा बासिसुत बंक ॥  
 पुर पैठत रावक कर बेठा । खेलात रहा होइ गई भे ॥  
 बातहिं बात करष बडि आई । युगल चतुल बल पनि तहनाई ॥  
 तेहि अंगद कहि ज्ञात उठाई । गहि पद पडकेउ भूमि भवाई ॥  
 निमिचरनिकर देखि भट भारी । जहं तहं चले न सकहिं पुकारी ॥  
 एक एक घन मर्म न कहहीं । समुष्टि तासु बध रुप करि रहहीं ॥  
 भयउ कोलाइल नगर मझारी । आवा कपि संका जेइ जारी ॥  
 अब धौं काह करिहि करतारा । अति समीत बह करहिं बिचारा ॥  
 विनु पूछे मनु देखिं देखी । जेहि बिचोखु खो आर सुझाई ॥
- दो० । मखौ बभाइरवार तव सुमिरि रामपदकथ ।  
 बिहउबनि हत अत पितब धीर नीर बहपुत्र । १८ ॥
- चौ० । तुरित निजापर एक यडावा । समाचार रावर्माह जनावा ॥

। त विरंचि बोला दूखोका	। चानु डोखि कथां कर कोका	॥
वसु गह दून वल्ल भाये	। कपि कुलरहि बोलि होर भाये	॥
मद कीक दयापन बेला	। रहित प्रान अलखनिरि बेला	॥
भा सिठप गिर खन कलावा	। रोमावली कला मनु बावा	॥
ख नाहिका नयन अह कला	। निरि कंदरा बोध अनुवावा	॥
वस सभा मन केहु न मुरा	। बासितनन प्रति दयावारा	॥
ठेठ सभायद कमि कथं देही	। सोलखन भा कला विमोही	॥

। यथा मत्त मत्तवत्त अहं संधानम चलि आह ।

रामप्रताप सुनिरि मन बैठ सभा विव नाह । १८ ॥

। कह दूखकंथ कवन में बंहर	। में रघुवीरदूत दूखकंधर	॥
। म जनकहि तोहि रचो सितार	। तव दितकारन प्रायेस भार	॥
। तम कुल पुखल कर माली	। विव विरंचि पूखल वल्ल माली	॥
। र पायेऊ कीयेऊ सब काला	। जीतेऊ लोकपाल सब राजा	॥
। प चभिमान मोह बस बा	। हरि चानेऊ बीता जनदबा	॥
। प्र सुभ कहा सुनैऊ तुम मोरा	। सब अपराध छविहिं मनु तोरा	॥
। मन गहऊ ठम कंठ कुठारी	। परिजन रहित खन निज मारी	॥
। बादर जनकसुता करि चामे	। एहि विधि चलऊ सकल भय त्यागे ॥	॥

० । प्रमत्तपाख रघुबंधमनि चाहि चाहि अब ओहिं ।

चारन निरा सुगत प्रभु अभय करहिंने तोहिं । २० ॥

० । रे कपि पोत न बोखु संभारी	। मठ न जानहि मोहि सुरारी	॥
। कऊ निज नाम जनक कर भाई	। कोहि माते मानिए सितार	॥
। अंगद नाम बासि कर बेटा	। तासो कवज भार रहि मेंटा	॥
। अंगद बचन सुगत सकुचाना	। रहा राखि बाबर में जाना	॥
। अंगद ताही बासि कर बासक	। उमजेऊ बंध जनक कुलपालक	॥
। गर्भ न मयेऊ व्यर्थ तुम्ह जायेऊ	। निज मुख तापसदून कथायेऊ	॥
। अब कऊ कुलस बासि कथं अहरी	। विरंचि बचन तव संनद कहरी	॥
। दिन दूख मये बासि पंथ बाई	। बसेऊ कुलस सखा सर बाई	॥
। राम विरोध कुलस अब होई	। सो सब तोहि सुनाइहि होई	॥
। सनु सठ भेद होइ मन ताके	। सी रघुवीर हृदय नहि जाके	॥

। १० । हम कुलपालक प्रता तुम्ह कुलपालक दूखीय ।

अथौ बधिर न अब कहहिं नवन काल तव बीय । ११ ॥

। १० । विव विरंचि सुर मुनि समुदाई	। चाहत बासु चरन सेकाई	॥
। तासु दूत होइ हम कुल बोरा	। ऐवऊ मति कर निहद न तोरा	॥



सुनि कठोर बासी कवि कोरी । कहत दशमन नवन तरेरी ॥  
 खल तव कठिन बचन कह्यो कह्यो । नीति धर्म में जानत कह्यो ॥  
 कह कपि धर्म कोपना कोरी । समज सुनो कन परनिष्ठ कोरी ॥  
 देखी नवन मुख रत्नपाटी । नृपि न मनेछ धर्मनभाषी ॥  
 कान नाक बिनु भविषि निहारी । कमा कोनहु दुख धर्म बिचारी ॥  
 धर्मशोकता तब सब जानी । पावा दरस समजुं सब भाषी ॥

दो० । कनि कवचवि कह्यो कनि कवि ठठ बिकोनु मम वाञ्छ ॥  
 शोकपास बस निवृत्त बसि पयन हेतु बन राञ्छ ॥  
 पुनि नभसर मम करनिकर कमलनि कर करि वाञ्छ ॥  
 सोभत श्वेत मराज हव मधु सहित केकाञ्च । २९ ॥

चौ० । तुम्हरे कटक माधु सुनु अंगद । मो सज निरिहि कवन चोधा वद ॥  
 तव प्रभु मारिविरह लक्ष्मीना । अनुज तासु दुख दुखित मलीना ॥  
 तुम सुघोव कूलदुम होऊ । अनुज हमार भीरु अति भोज ॥  
 जामवन्त मन्त्री अति बड़ा । सो कि हई अब समर अछड़ा ॥  
 सिष्यकर्म जानहिं नकुलीना । है कपि एक महाबलसीला ॥  
 आवा प्रथम नगर जेहि जारा । सुनत बचन कहं बालिकुमारा ॥  
 सत्य बचन कहु निबिचरनाहा । सांचेजुं कोष कोन पुर दाहा ॥  
 रावननगर अनाप कपि इहई । सुनि अब बचन सत्य को कहई ॥  
 जो अति सुभट सराहेछ रावन । सो सुघोव कर लघ धावन ॥  
 चलै बडत सो बीर न होई । पठवा खबर सेन हम सोई ॥

दो० । सत्य नगर कपि जारेछ बिनु प्रभु आयसु पाइ ॥  
 फिरि न गयए सुघोव पहिं तेहि भय रहा खकाइ ॥  
 सत्य कहैछ दशकंठ सब मोहि न सुने कहु कोइ ॥  
 कोउ न हमारे कटक अथ तोषन सरत जो सोइ ॥  
 प्रीति विरोध समान बन करिय नीति अहि आहि ॥  
 औ मृगपति बध मेहुकहिं भल कि कहै कोउ ताहि ॥  
 यद्यपि लघुता राम कहं तोहि बधे बड दोष ॥  
 तदपि कठिन दशकंठ सुनु कनिजाति कर रोष ॥  
 बल उक्ति धनु बचन सर हदै दहेउ रिपुकोष ॥  
 प्रतिउत्तर संडविन मनजुं काडत भट दशवीष ॥  
 हंसि बोलेछ दशमोखि तब कपि कर बड गुन एक ॥  
 जो प्रतिवाचै मासु चित करै उपाद अनेक । ३० ॥

चौ० । धन कोष जो निव प्रभुकाया । जहं तहं नाचहिं परिहरि जाया ॥

वाचि कृदि के कोम रिपारि	। यतिहि न करे कर्म भिनुनाई	॥
अंगद खासिबान सब भागी	। भुवन सब करहि रक्षि भागी	॥
जै भुवनाइ करन सुभावा	। सब कहु रदहि भारी नहि कावा	॥
कह कपि तब सुन गाँवगाँव	। सब पवनपुन मोहि सुनाई	॥
वन विधवि सुन बलि बुर कारा	। तदपि न तेहि कहुँ हान चकारा	॥
छोर विचारि तब प्रहसि सुहाई	। दसकम्बर जे कोहि दिहाई	॥
देखेउ चार को कहु कपि भावा	। तुम्हरे काम न रोख न भावा	॥
जौ बसि मति पितु बालेऊ कोषा	। कहि सब जवन हवा दसकावा	॥
पिताहि खाद खातेउ पुनि तोषी	। चर्यों समुझि परा कहु मों रो	॥
वालि विमल बसभाजन बानी	। हतौ न तोहि सभस अभिमानो	॥
कहु रावन रावन जग कोते	। मै निज सबन सुनेउ सुन तेते	॥
बलिहि जितन एक गखउ पताला	। राखेउ बांधि बिसुन दसकावा	॥
खेसहि बालक मारहि जाई	। दया लागि बलि होन कुराई	॥
एक बहोरि सखसभुन खेला	। धार धरा जिमि जगु निघेला	॥
कौतुक लागि भवत छै भावा	। सो पुसहि सुनि खाद कुरावा	॥

दो० । एक कहत मोहि सकुच अति रहा वालि को काँख ।

इन महं रावन तेँ बदन सदा बरहि तजि जाँख । २७ ॥

चौ० । सुन सठ छोर रावन बसयोला	। हरनिरि जानु जासु भुजकीला	॥
जानु उमापति जासु सुराई	। पूजेउ जेहि सिर सुमन चढ़ाई	॥
सिर सरोज निज करन उतारो	। पूजेउ अमित बार चिपुरारी	॥
भुजबिक्रम जानहि दिगपाला	। सठ अजडं जिन के उर साला	॥
जानहि दिगगत्र उरकठिनाई	। जब जब भिरेउं जाद बरिचारी	॥
जिन के दसन कराख न फूटे	। उर लागत मूकक रव टूटे	॥
जासु चलत डोहत दमि धरनी	। चढ़त मत्त गज जिमि लघु तरनी	॥
छोर रावन जग बिदित प्रतापी	। सुनहि न सबन अफोक प्रलापी	॥

दो० । तेहि रावन कहं लघु कहवि नर कर करवि बखान

रे कपि बरैर खरै खरै अब जाना तब ज्ञान । २८ ॥

चौ० । सुनि अंगद सकोप कह बानी	। बोलु बंभारि अथन अभिमानो	॥
सखसबाहुभुज गहन अपारा	। दहन अनल सम जासु कुठारा	॥
जासु परस बागर खर धारा	। बूडे कप अगमित बडु बारा	॥
तासु मरै जेहि देखत भागा	। सो नर को दसहीन अभाना	॥
राम मनुष कस रे सठ बंभा	। धन्यो काम नही पुनि मंभा	॥
पसु सुखधेनु कल्पवृक्ष दवा	। अखदान खर रव बीकवा	॥

वेगतेय कल बहि बह्मसामन । विनामनि पुनि उपक इवामन  
सुन मतिमंद साव वैकुण्ठा । साव कि बधुपतिभनति यमुण्डा  
दो० । सेन बहित तव मान भवि वन उबारि पुर जारि ।  
कव रे वठ वधुमान कवि मयउ जो तव सुन भारि । २६ ॥

चौ० । सुनु रावन परिहारि चतुरारि । भजहि नटपाविंधु रघुशरारि  
औ कल भयेवि राम कर द्रोही । मन्त्रा बट्ट बक राखि न तोही  
मूढ मृषा भनि मारवि माका । रामबैर अथ होइहि शाका  
तव विरमिकर कपिध की भागे । परिहहि धरनि रामसर लागे  
तव विर कंदुक सम ते भाजा । खेसिहहि मा कोस चौमाना  
जबहि वनर कोसहि रघुनाथक । कूटिहहि अति करास बड सावक  
तव कि बखिहि बल मास तुम्हारा । अस बिचारि भजु राम उदारा  
सुगत वचन रावन पर करार । अरत महानक जनु वृत परा

दो० । कुलकरन सब बन्धु मम सुत प्रसिद्ध यकारि ।  
मोर पराक्रम नहि सुनेहि जितउं चराचर सारि । २७ ॥

चौ० । वठ साखाम्बन मोरि बहारि । बांधा विंधु इहै प्रभुतारि  
सांधहि खग अनेक बारोबा । खर न होहि ते सुनु सब कीबा  
मम सुन सागर बल लख पुरा । कव कूड़े बड्ड सर कर सुरा  
बोव पबोधि अगाध अपारा । का अस दोर जा पाइहि पारा  
दिगपासन मै मोर भराबा । भूपसुअस खल मोहि सुनाबा  
औ पै वनर सुभट तव नाबा । पुनि पुनि कहहि जासु गुनगाथा  
तौ बसोठ पठवत कोहि काजा । रिपु वन प्रीति करत नहि छाजा  
हरगिरिमथन निरखु मम बाह । पुनि वठ कपि निज प्रभुहि बराह

दो० । सुर कवन रावन हरिख खकर काटि जेहि सोस ।  
जुने अलख अति हरष बड्ड बार साखि गौरीस । २८ ॥

चौ० । अरत विखोकोठ जबहि कपाळा । विधि के सिखे संक निज भाळा  
नर के कर आपन बध बोधी । हसेउं जानि विधि गिरा अमांधी  
से उ मम समुझि सोच नहि मोरे । सिखा विरचि जरठ मतिभोरे  
आन बीरबल वठ मम आने । पुनि पुनि कहहि साव पति त्यागे  
कव चंगड वलकल मन भाहीं । रावन तोहि उमान कोउ जाहीं  
साजवना तव कहज सुभाज । निज मुख निज मन कहहि न काज  
विर यह खेल कया पितरही । तातें बार कोस तें कही  
सो भुजबल राखेउ कर बाखी । जीतेउ बरबबाड बलि बाखी  
सुनु मतिमंद बहि सब पर । काटे सोच कि होइहि सुरा  
इंद्रजालि कज कहि क कीरा । काटे निज कर सकल वीरा

तो० । करहिं बतन सोहवस आर बहहिं बरहस्य ।

ते नहिं कर बहावसीं कसि देखु मतिबद्ध । ॥

तो० । अब जनि बत बडावस्य करही । सुन मन बचन मान परिहरही ॥

दसमुख मैं न बयोही आयेक । अब बिचारि रघुवीर पठायेक ॥

बार बार अब कहेह कथाका । नहिं मगारियस बसे सुनाका ॥

मन मई समुझि बचन प्रभु करे । सहेस कठोर बचन बड तेरे ॥

माहित करि मुखमंजक तोरा । छे आनेस कीमहि बरकोरा ॥

जानेउ तब बस अधम सुरारी । सुने हरि आनेहि परनारी ॥

तैं निशिचरपति नई बहला । मैं रघुपतिसेक कर कृता ॥

जौ न राम अपमानहि करखं । तोहि देखत अब कौतुक करखं ॥

तो० । तोहि पटक मधि येन बति चौपट करि तब नाच ।

तब सुमतिन समेत बड जनकसुतहि छे जाय । ॥

तो० । जौ अब करखं तदपि न बड़ाई । मयोहि बधे कहु बहिं मधुवारी ॥

कौस कामवस छपिन बिलोडा । भति दरिद्र जनही बति बूढा ॥

बडा रोगवस समेत कोधी । बिबु बिबुस सुमिअकविरोधी ॥

तनुपोषक मिंदक अपमानो । जोमत सब सम चौदह प्रानी ॥

अब बिचारि खस बधौं न तोखी । अब जनि रिउ अपमानहि ओखी ॥

सुनि सकोप कह निशिचरनाथा । अधर दखन बनि मौजत हाथा ॥

रे कपि अधस मरन अब बहसी । छे।टे बदन बात मधि काहसी ॥

कटु जपसि जइ कपि बस जाके । बलप्रताप बुधि तेज न ता के ॥

तो० । अगुन अमान जान तेहि कीन्ह पिता बन बाध ।

बो दुख अब सुनतोबिरह पुनि निधि दिव मन पाव । ॥

जिन्ह के बस कर नई तोहि ऐसे मनुज अवेक ।

काहिं नियाकर दिवस निमि मूड समुझ तबि टेक । ॥

चो० । अब तेहि कीन्ह राम के निंदा । कोधवला तब भयउ कपिंदा ॥

हरिहरनिंदा सुनहिं ओ काना । होइ पाव कोषान बमाना ॥

कटकटान कपिकुञ्जर भारी । दोउ सुनइइ तमकि मधि भारी ॥

ओखी धरनि उभाबइ खने । बसे भाजि भव मावनपने ॥

निरत संभारि उठा दबकधर । भूतल परे मसुट बति सुंदर ॥

कहु तेहि छे निज विरहिं बंवारे । कहु अंगद प्रभु पाव बंवारे ॥

आगत मसुट देखि बनि भाने । दिनहीं छूक परन बिधि जाने ॥

को रावन करि कोष बजाये । कखिय चोरि आगत बति जाये ॥

कह प्रभु इहि बनि उदर डेराइ । कक न बरनि केहु नहिं राख ॥

बे किरोट दबकधर करे । जोमत काहि तबय के अरे ॥

दो० । तर्कित यवनसुत कर मयेक आनि कने मनुष्य  
कौतुक देखिहि आसु कपि दिनकर धरिष प्रकाश ॥  
उहाँ सकोप दधानन सब सम कहत रिखाइ  
धरज कपिहि धरि बारज सुनि संगद मुसुकाइ । २९ ॥

चौ० । एहिबधि बेनिमुभट सब थावहु । खाऊ भाष कपि जहँ जहँ पावहु ॥  
मरकटहीन करहु महि माई । विघ्नत धरहु तापस दोउ भाई ॥  
पुनि सकोप बोखेउ जबराना । गास बजावत तोहि न लाजा ॥  
मह गर काटि मिलन सुलवातो । बल बिलोकि बिहरति नहि छातो ॥  
रे चियचोर कुमारनगानी । खलमखरासि मनुमति कामी ॥  
सन्निपात जखसि दुबाहा । भयेसि कासब बल मनजादा ॥  
या को फल पावहुगे जाने । बानर आसु चपेटन्ह लागे ॥  
राम मनुज बोखत सब बाजी । गिरहि न तव रचना अभिमानी ॥  
गिरिहि रचना संखष माहीं । सिरन समेत समर महि माहीं ॥

चौ० । जो नर जौँ दसकअ बालि बधेउ जहि एकै घर  
बीसहु सोचन अन्य धिक तव जया कुजाति जउ ॥  
तव सोनित की धास टावत रामसायकनिकर  
तमउ तोहि तेहि बाध कहु जयक निधिर अधम । ४ ॥

चौ० । मैं तव दहन तोरिबे लायक । बाधसु मोहि न दीन्ह रघुनायक ॥  
आबि रिसि होत दहौ मुख तोरौ । खंका महि समुद्र महँ बोरौ ॥  
गुलर फल समान तव खंका । बसहु मध्य तुम्ह जमु अखंका ॥  
मैं बानर फल खान न बारा । आयसु दीन्ह न राम उदारा ॥  
जुगति सुनत रावन मुसुकाई । मूठ सिखे कहँ बडत सुठाई ॥  
बालि न कबहुँ गास सब मारा । मिलि तपसिन्ह तैं भयंसि खवारा ॥  
सांचहु मै खवार भुजबोहा । जौँ न उपारौँ तव दस जोहा ॥  
रामप्रताप समुझि कपि कोपा । बभा मांझ पल करि पद रोपा ॥  
जौँ मम चरम सकसि सठ टारौ । मिरहि राम खोता मै चारौ ॥  
सुनहु सुभट सब कहँ दसबोहा । पद गहि धरति पकारहु कीचा ॥  
रन्ध्रभोत आदिक बखवाना । हरसि उठे जहँ तहँ भट नाजा ॥  
छपटहिं करि बल बिपुल उपाई । पद न टरै बैठाहिं फिर जाई ॥  
पुनि उठि छपटाहिं सुरचारतो । टरै न कीच चरस एहि भाँती ॥  
पुहव कुयोगी जिनि उरगारौ । मोह बिटप कहिं सकहिं उपारौ ॥

दो० । कोटिन्ह मेवनादसम सुभट उठे हरवार  
छपटहिं टरै न कपिचरन पुनि बैठाहिं फिर नार ॥

भूमि न जावन कपिचरण देखत रिपुमद भाग ।

कोटि विघ्न ते संत कर भवजिनि नीति न त्याग । २७ ।

सौ० । कपिचरण देखि सकल हिय चरि । उठा चाप कपि के परचरि ॥  
 बहत चरण कह बाँसि कुमारा । मम पर मैं न तोर उचारा ॥  
 नहि न रामचरण बड जाई । सुमत पितरा मन प्रति बसुचारी ॥  
 मयेउ ते जहत खी बन गई । मध्य दिवस निमिषहि सोचै ॥  
 बिहासन बैठेउ खिर गई । मानहु मंपति सकल मंगरै ॥  
 जगदात्म प्रानपति रामा । तासु भिमुख किमि कह बिरामा ॥  
 उमा राम को भक्तुदिविवाहा । होर बिष्य युनि पावै नाका ॥  
 दन ते सुखिय सुखिय दन करै । तासु दूत पन कहु किमि डरै ॥  
 पुनि कपि कहौ नीति बिधि माना । मान न ताहि काळ निघुरामा ॥  
 रिपुमद मधि प्रभु सुखय सुनायो । वह कहि बखोउ कालिद्वेषाचो ॥  
 इतौ न खेत खेकार खेकार । तोहि चवहिं का करौ क्यारै ॥  
 प्रथमहिं तासु तनय कपि मारा । दो युनि रावन भयो दुखरा ॥  
 बाहुधान चंगदपन देखी । भव बाहुक सब मये विदेही ॥

सौ० । रिपुचल धरि हरि कपि बाधितनय बसपुत्र ।  
 पुत्रकयरोर मयन बल महे रामपदकल ॥  
 सांझ जानि दशकंठधर भवन गयो बिलकार ।  
 मंदोदरो रावनहि बडरि कहा समुपार । २८ ॥

सौ० । कंत समुपति मन तनहु कुमतिहो । सोच न समर तुमहि रघुपतिहो ॥  
 रामानुज लघुरेख खचारी । खो नहिं सांघेउ अघि मनुचारी ॥  
 पिय तुम ताहि जितय संघामा । जा के दूत केर कह कामा ॥  
 कौतुक सिन्धु सांघि तव संका । चाखउ कपि केहणी चरंका ॥  
 रखवारे प्रति बिपिन उजारा । देखत तोहि चणक तेहि मारा ॥  
 जारि सकल पुर कीचेहि हारा । कहा रवा बल मय तुचारा ॥  
 चव पति मृगा नाक जनि मारहु । मोर कहा कहु हृदय बिचारहु ॥  
 पति रघुपतिहि अपति जनि मानहु । जगजननाथ बाहुकल मानहु ॥  
 वानप्रताप जान मारीचा । ताम कहा नहिं मानेहु नीचा ॥  
 जनककथा जगजित सुवपाका । रहेउ तुमहुं बल अतुल बिबाका ॥  
 भूमि धनुष जानको बिवाही । तव संघाम जितेहु किम ताही ॥  
 सरपतिवत जानै बल घोरा । राखा जियत चांछि नहिं पौरा ॥  
 सुपनखा कै मति तुम देखी । तदपि चंदन नहिं काज बिदेही ॥

सौ० । बधि विराध करदुखहि खोका इतेउ कबंध ।  
 बाधि एक घर मोरेउ तेहि जानहु दशबंध । २९ ॥

चौ० । जेहिं जलनाथ बंधावौ रेखा । अतरेय सेन समेत सुवेला ॥  
 काहगोक दिनकर कुलकीट । दूत पठायेउ तव हित देखे ॥  
 यभा मांछ जेह तव बल मथा । करिकहूँ मरं सुमवति यथा ॥  
 चंगद हनुमत अनुचर जा के । रनबांकुरे वीर अति बांके ॥  
 तेहि कहं पिब पुनि पुनि जर कहल । मुधा मान जमता भद बहल ॥  
 अहह कन हत राम विरोधा । कास विवस जम उपज न बोधा ॥  
 कास दंड नहि काज न मारा । हरे धर्म बल बुद्धि विचारा ॥  
 निकट कास जेहि आगत बाई । तेहि भ्रम होइ तुम्हारिहि नाई ॥

दो० । दुइ सुत मारेउ दहेउ पूर अजऊँ पूर पिब देऊ ।  
 छपासिधु रघुनाथ भजि नाथ विमल जस खेऊ । २६ ॥

चौ० । नारिबचन सुनि विचिख समाना । सभा गथछ उठि होत विहाना ॥  
 बैठेउ नार विहासत फूली । अति अभिमान पाय सब भूली ॥  
 दहां राम अमदहि बुलावा । आइ परब पंकज धर नावा ॥  
 अति आदर बसोप बैठाती । बोले विहंसि छपासु खरारी ॥  
 बालितनय अति कौतुक मोही । तात सख कज पूरौ तोही ॥  
 रावन याहुधानकुलटोका । भुजबल अतुल नामु जग खोका ॥  
 तासु मुकुट तुम चारि चलाये । कहज तात कवनो विधि पाये ॥  
 मुनु सर्वज्ञ प्रगत मुखकारो । मुकुट न होइ भुपगुन चारी ॥  
 काम दान अह दंड विभेदा । उपर बसहि नाथ कह वेदा ॥  
 नीति धर्म के चरन सुहाये । अस जिय जानि नाथ पहं पाये ॥

दो० । धर्महोन प्रभुपदविमुख काखविषय दसवीच ।  
 तेहि परिहरि गुन पाये मुनऊँ कोसलाधीन ॥  
 परम चतुरता खवन सुनि विहंस राम उदर ।  
 समाचार पुनि सब कहे गढ़ के बालिहूमार । २७ ॥

चौ० । रिपु के समाचार जब पाये । राम अचिब सब निकट बुलाये ॥  
 लंका बाँके चारि दुचारा । केहि विधि कामिध करज विचारा ॥  
 तब कपोल अक्षेय विभीषन । सुमिरि हृदय दिनकरकुलभूषन ॥  
 करि विचार तिन मंत्र हुदाय । चारि चवौ कपि कटक कनका ॥  
 यथायोग सेनापति कोन्हे । सुषय सकल मोखि तब खीन्हे ॥  
 प्रभुप्रताप कहि सब समुदाये । सुनि कपि चिंतकाइ करि पाये ॥  
 हरबित रामचरण धरि बाँधहि । नहि निरिबिचार वीर सब धावहि ॥  
 गरजहि तबजहि भाकु कलीक । जय रघवीर कोसलाधीन ॥

- जानत परम दुर्गति संका । प्रभुप्रताप कपि चले सबका ॥  
घटाटोप करि चहुं दिशि घेरी । मुसहि निवाच बजावहि भेरी ॥
- दो० । जयति राम जय कश्मिन् जय कपीस वपीस ।  
गर्जहि विजयनाद कपि भासु महा बलवीर्य ॥ ३८ ॥
- चौ० । लंका भयउ कोकाहल भारी । सुना दशानन अति चहकारी ॥  
देखउ बनरन्ध केरि ठिठारै । बिहंसि निवाचरमेन बहारै ॥  
आये कीस काख के प्रेरै । कृधावल सब निविचर भेरै ॥  
अस कहि चहुहास सठ कोना । टट्ट वैठे चहार बिधि दीना ॥  
सुभट सकल चारिउ दिशि जाऊ । धरि धरि भासु कोस सब जाऊ ॥  
उमा रावणहि अस अभिमाना । जिमि टिडिम खग सुत उताना ॥  
चले निवाचर आचसु मांगी । गहि कर मिदिपाल वर जानी ॥  
तोमर मुकुर परसु प्रचंडा । सुल लपान पगिच निरिखंडा ॥  
जिमि अहनीपलनिकर निहारो । धावहि सठ खन मोखचहारो ॥  
चोख भंग दुख तिन्हिंन सुझा । तिमि भाखे मनुआइ अणुझा ॥
- दो० । नानायुध कर चाप धरि घातुधान बल बीर ।  
कोटकंगूरनि चडि गये कोटि कोटि रनधीर ॥ ३८ ॥
- चौ० । कोटकंगूरनि सोहहिं कैसे । मेह के संगनि अनु खन बैसे ॥  
बाजहिं डोल निवान जूझाऊ । सुनि धुनि होइ भटनि मम चाऊ ॥  
बाजहिं भेरि गहोरी अपारा । सुनि काहर उर जाहिं दरारा ॥  
देखि न जाइ कपिन्ह के ठहा । अति विवाहलन भासुसुभहा ॥  
धावहिं गजहिं न खचउट छाटा । पवन फोरि करहिं गहि बाटा ॥  
कटकटाइ कोटिन भट नरचहिं । दमन छोड काटहि अति तरचहिं ॥  
उत रावन हत रामदोहाई । जयति कपति कपि पदो करारै ॥  
निविचर सिखरसमूह उझावहि । कूदि धरहिं कपि घेरि चलावहि ॥
- हं० । धरि कुभर खंकभङ्ग सकट भासु गढ़ पर डारही ।  
सुपदहिं चरन बहिपटक सहि भजि चलत बडरि प्रचारही ॥  
अति तरल तहन प्रताप तजहिं तमकि मढ़ चडि चडि गये ।  
कपि भासु चडि मंदिरनु जाइ तह रामकंस नावत भये ॥ १ ॥
- दो० । एक एक गहि निविचर पुनि कपि चले पराह ।  
अमर चापु इउ भट तिरहिं धरनि परा चाह ॥ ३० ॥
- चौ० । रत्नप्रताप सब कश्मिन् । मरहिं निविचर सुभटककल ॥  
चले दुर्ग सुनि बरिहात बलर । जय रामबीर प्रतापविचार ॥  
चले निवाचरनिकर करारै । प्रबलबल निजि बलकायारै ॥



हाहाकार भयो पुर भारी । रोवहिं बाकक आरत भारी ॥  
 सब मित्रि देखि रावनहिं भारी । राज करत जेहि मृत्यु प्रकारी ॥  
 निज दल विपक्ष सुना तेहि काना । फेरि सुभट लंकेश रिशाना ॥  
 जो रन विमुख फिरा मै जाना । हा मै हतन करास कपाना ॥  
 धर्म सब खाइ भोग करि जाना । समरभूमि भए बल्लभ प्राना ॥  
 उग्र वचन सुनि सकल डेराने । पछे क्रोध करि सुभट सजाने ॥  
 समुख मरन बोर कै सोभा । तव तिन्ह तजा मर कर सोभा ॥

दो० । बल्ल भायुध धरि सुभट सब भिरहिं प्रचारि प्रचारि ।  
 बाहुक कोन्ह भालुकपि परिच विमुखन मारि । ४१ ॥

चौ० । भयआतुर कपि भागन जाने । यद्यपि उमा गतिहिं जाने ॥  
 कोउ कह कहं चंगद हनुमन्ता । कहं नल मोल द्विदि बल्लवन्ता ॥  
 निज दल विपक्ष सुना हनुमाना । पण्डितद्वार रक्षा बल्लवाना ॥  
 मेघनाद तहं करै सराई । टूट न द्वार परम कठिनाई ॥  
 पवनतनय सग भ्राता कोधा । गरजेउ प्रलयकास सम सोधा ॥  
 कूदि सक गड ऊपर आवा । गहि गिरि मेघनाद कहं धावा ॥  
 भजेउ रथ सरथी गिपाता । ताहि हृदय मरै मारेखि साता ॥  
 दुखरे दल बिकल तेहि जाना । सांदन घालि तुरत घर आना ॥

दो० । चंगद सुना पवनसुत गड पर गएउ चक्रेक ।  
 रनवांझुरा बालिपुन तरकि पलेउ कपि खेक । ४२ ॥

चौ० । युद्ध बिरुद्ध कुद्ध दोउ बंदर । रामप्रताप सुमिरि उर अंतर ॥  
 रावनभवन पड़े दोउ धाई । करहिं कोसलाधीय दोहाई ॥  
 कलध सहित गहि भवन दुहावा । देखि निराचरपति भय पावा ॥  
 नारिहृन्द कर पोछहिं कानो । अब दुर कपि आये उतपातो ॥  
 कपि, कोला करि तिन्हिं डेरावहिं । रामचंद्र कर सुजय सुनावहिं ॥  
 पुनि कर गहि कंचन के खंभा । कहैनि करिउ उतपत अरंभा ॥  
 गजिं परे रिपुकटक मझारो । लागे मरै मुजबल भारो ॥  
 काऊहिं सात अपेटन कोइ । भजेउ न रामहिं सो पक्ष सोइ ॥

दो० । एक एक सोई मरैहिं तोरि चलावहिं मुख ।  
 रावन जाने परहिं ते जनु फूटहिं दधिकुछ । ४३ ॥

चौ० । महा महा मुखिया जे पावहिं । ते पर गहि प्रभु पास चलावहिं ॥  
 कहहिं विभीषन तिन्ह के मामा । देखि राम तिन्ह हूं निज धामा ॥  
 सब मनुजाइ दिजामिषभोगी । पावहिं गति जो जानत सोगी ॥  
 उमा राम मरुचित कहवाकर । बैरभाव सुमिरत सोहि निजिघर ॥  
 देखिं परम गति सो बिच जानी । अब कपालु को कहउ भवानो ॥

अस प्रभु मुनि ब भजहिं श्रम त्वागो । नर मतिमंद ते परम चभागी ॥  
 अंगद अहं हनुमान प्रवेशा । कोन दुर्म अहं कह अवधेशा ॥  
 लका दोउ कपि सोहहिं कैसे । मजहिं सिंधु दुद मंदर जैसे ॥  
 दो० । भुजबल रिपुदल इनमजि देखि दिवस कर अंत ।  
 कृदे युगल विगतसम आये जहं भवत ॥ ४४ ॥

चौ० । प्रभुपदकमल सोस तिनह नाये । देखि सुभट रघुपतिमन भाये ॥  
 राम कृपा करि युगल निहारे । भये विगतसम परम मुखारे ॥  
 गये जानि अंगद हनुमाना । फिरे आननकरकटभट नाजा ॥  
 यातुधान प्रदोषवत्त पारै । धाये करि दसवीस द्वादरै ॥  
 निशिचरअनी देखि कवि फिरे । जहं तहं कटकटाद भट मारे ॥  
 दोउ दल प्रबल प्रचारि प्रचारो । सरत सुभट नहिं मानहिं हारो ॥  
 महा वीर निशिचर सब कारे । नाजा बरन प्रसीमुख मारे ॥  
 सबल युगल दल सम बल बोधा । कौतुक कात सरत करि कोधा ॥  
 प्राविट सरद यथोद घबरे । सरत मनहुं साहस के प्रेरे ॥  
 अनिप अकपन अहं अतिकावा । विचलत वैन कोन हूह माया ॥  
 भयउ निमिषि महं अति अधियारा । हटि होइ दधिरौपय हारा ॥

दो० । देखि निविड तम दसजं दिशि कपिदल भयल वभार ।  
 एकहि एक न देखहि जहं तहं करहिं पुकार ॥ ४५ ॥

चौ० । सकल मरम रघुनाथक जाना । लिये मोलि अंगद हनुमाना ॥  
 समाचार सब कहि समुझाये । मुगत कोपि कपिमुखर धाये ॥  
 पुनि लुपाखुं हंसि चाप मझावा । पावकसायक सपदि चलावा ॥  
 भयउ प्रकास कतहुं तम नाहीं । ज्ञानउदय जिनि संसय भाहीं ॥  
 भाव बलीमुख पार प्रकासा । धाये हरषि विगतसमचावा ॥  
 हनुमान अंगद रन गाजे । हांक मुगत रजनीचर भाजे ॥  
 भागत भट पटकहिं धरि धरनी । करहिं भाखु कपि अहंभुत करनी ॥  
 गहि पद डारहिं सामर साहीं । मकर उरन छव धरि धरि खाहीं ॥

दो० । कहु मारे कहु सायल कहु मरु चल पराद ।  
 मजहिं भाखु बलीमुख रिपुदलमेल निचकार ॥ ४६ ॥

चौ० । निजा जानि कपि चारिउ अनो । आये जहाँ कोसलाथनी ॥  
 राम कृपा करि चितवा जवहीं । भये विगतसम वागर तवहीं ॥  
 उहाँ दवावन सचिव संकारे । सब रन कहैसि सुभट जे मारे ॥  
 आधा कटक कपिन मंजना । कहउ बेनि का करिउ निचारा ॥  
 माखवत्त अति सरत निचाचर । गदगमातुपितमसंघो बर ॥  
 बोखा बचन जोति अति प्रकल । वनहुं तात कहु मोर चिकारन ॥

जब ते तुम सीता चरि जानी । अब नुन होहि न आहि बखानी ॥  
 वेद पुरान जासु सब जानी । तासु बिमुख काउ न दुख पावौ ॥  
 दो० । चिरखाह आता चरित मद्य कैटभ बखवान  
 जेहि मारेउ सोर अंतरैउ छपाविउ मनवान ॥  
 कालरूप बलबनदहन मनागार जनबोध  
 विव विरचि जेहि सेवहि ता सौ कवन विरोध । ४० ॥

चौ० । परिहरि बैर देउ बैदेही । भजउ छपानिधि परम सनेही ॥  
 ता के बचन बान सब लागे । करिया मुख करि आहि अभागे ॥  
 बूढ भयेचि नत मरतेउ तोही । अब जनि नखन देखावहि मोही ॥  
 तहि अपने मन अम अनुमाना । बधौ रहत एहि छपानिधाना ॥  
 सो उठि गयउ कहत दुर्वादा । तब सकोप बोखेउ घननादा ॥  
 कौतुक प्रात देखियउ मोरा । करिहौ बज्रत कहौ का थोरा ॥  
 सुनि सुतबचन भरोसा आवा । प्रीति ममेत अंक बैठावा ॥  
 करत बिचार भयउ भिनु सारा । लागे कपि पुनि सहं दुआरा ॥  
 कोपि कपिन दुर्घट गढ घेरा । नगर कोलाहल भयउ घनेरा ॥  
 बिबिधायुध धरि निमिचर धाये । गढ ते पर्वतमिखर दहाये ॥

कं० । ठाहि महोधरसिखर कोटिन्ह बिबिध बिधि गोला चले ।  
 घहरात जिमि पविपात गर्जत अनु प्रलय के बादले ॥  
 मर्कट बिकट भट जुटत कटत न खटत तनु अर्जर भये ।  
 गहि मैल तेहि गढ पर चलावहि जहं मो तह निमिचर हये ॥

दो० । मेघनाद सुनि स्वन अस मढ पुनि हँका आर  
 उतराओ घोर दुर्ग ते मनमुख चलेउ बजाइ । ४८ ॥

चौ० । कहं कोसलाधोम दोउ आता । धन्वी सकललोकबिख ॥  
 कहं मल नील द्विबिद मयोवां । अंगद हनुमंत बलसीवा ॥  
 कहां विभीषन आताद्रोही । आज सठहि हठ मारेउ ओही ॥  
 अस कहि कठिन बान मंधाने । अतिसय कोध स्वन समि ताने ॥  
 सरसमूह सो छाउँ लागे । अनु मपच्छ धावहिं बलु नागा ॥  
 जहं तह परत देखि रहि बानर । मनमुख होइ न सक तेहि अवसर ॥  
 जहं तह भागि चले कपि रोका । बिधरो सब छिं यदु के रेका ॥  
 सो कपि भाखु न रन मई देखा । कोन्हैयि जेहि न प्राक्अवसेखा ॥

दो० । दस दस सर सब मारेछि परे भूमि सब बीर  
 बिजनाद करि जना मेघनाद बल धीर । ४८ ॥

चौ० । देखि पवनसुत कटख बेहाला । कोधवला अनु धायेउ काला ॥  
 महा बैल एक तुरित उपारा । अति रिड मेघनाद पर दारा ॥

जावत देखि लखे नभ खोरे । रघु वारसी तुरन मन खोरे ॥  
 बार बार पसारत हनुमान । निकट न जान करन सो जाना ॥  
 रघुपति निकट नखइ चबनादा । नाना भांति करै दुखादा ॥  
 अस्त्र सस्त्र आयुध सब डारे । कौतुकहीं प्रभु काटि मियारे ॥  
 देखि प्रताप मूढ़ खिसियाना । करै जान माया विधि नाना ॥  
 जमि कोउ करै गढ़इ सौं खेला । उरपावहि नहि लग्न सपेला ॥

दो० । आसु प्रबलमायावस शिव बिरचि बसु छोट

ताहि देखै निमिषर निजमाया मतिछोट । ५० ॥

चौ० । नभ चढ़ि बरष बिपल अंगारा । महि तें प्रगट होइ जलधारा ॥  
 नाना भांति पिशाच पिशाचो । मारु काटु धुनि बोकहि नाचो ॥  
 विष्टा पृथ इधिर कच हाड़ा । बघ कबहु उपल बज्र हाड़ा ॥  
 बरषि धूरि कीन्हि अंधियारा । सुप्त न आपन हाथ पकारा ॥  
 कपि अकुलाने माया देखे । सब कर मरन सना एहि लेखे ॥  
 कौतुक देखि राम मुसुकाने । भये सभोत सकल कपि जाने ॥  
 एक वान काटो सब माया । जमि दिनकर हर तिमिर निकाया ॥  
 लपाइहि कपि भालु बिलोके । भये प्रबल रन रहि न रोके ॥

दो० । आयसु मांनि राम पहि अंगदादि कपि साथ

लहिमन चले कुट्ट है वान सरामन हाथ । ५१ ॥

चौ० । कृतजनयन उर बाहु विधासा । हिमगिरि निभ तनु ककु एक लासा ॥  
 उहां दमानन सुभट पठाये । नाना अस्त्र सस्त्र गहि धाये ॥  
 भुधर नख विटपायधधारी । धाए कपि जय राम पुकारी ॥  
 भिर सकल जोरिहि सन जोरी । दत उत जघरच्छा नहि थोरी ॥  
 मुठिकन्ह सातन्ह दांतन्ह काटहि । कपि जयमोल मारि पुनि डांटहि ॥  
 मारु मारु धरु धरु धरु मारु । सोस तोरि गहि भुजा उपाहु ॥  
 अरि रव पूरि रही नव खंडा । धावहि जह तह दूज प्रचंडा ॥  
 देखहि कौतुक नभ सुरहृन्दा । कबहुक बिसय कबहु अमन्दा ॥

दो० । इधिर गाइ भरि भरि जमेउ उपर धूरि उड़ाइ

जनु अंगार राखि पर मृतकधूम रझो लाइ । ५२ ॥

चौ० । घायल बोर बिराजहि कैसे । कुसुमित किंसुक के तह जैसे ॥  
 लहिमन मेचनाद दोउ घोधा । भिरहि परस्पर करि अति कोधा ॥  
 एकहि एक सकै नहि जीतो । निमिषर कल बल करै अनीतो ॥  
 कोधवत तब भयल अमता । अजेउ रघु वारसी तुरंगा ॥  
 नाना विधि प्रहार कर सेवा । राक्षस भयल जानअवसेवा ॥  
 रावनसुत निजमन अनुमाना । बंकट भयल हरिचि मम प्राना ॥

वीरपातिनी हाकेहि बाँगी । तजपुत्र लहिमन छर खानी ॥  
 मरहा भई बलि के खाने । तब बलि मयउ निकट मय त्यागे ॥  
 दो० । मेघनाद धम कोटिहत बोधा रहे उठाइ ।  
 जगदाधार सेव किमि उठर चले खिचिआइ । ५३ ॥

चौ० । सुगु गिरिजा कोषानल जासु । जारै भुवन चाग्दिस भासु ॥  
 सक संगम जोति को तासो । सेवहि सुर भर भग जगजाही ॥  
 यह कौठहल जाने जन बोई । जापर छपा राम के बोई ॥  
 बंधा भई किरी दोउ बाहनी । छने संभारन निज निज आनी ॥  
 व्यापक ब्रह्म अजित सुबनेसर । लहिमन कहाँ कइ कइनाकर ॥  
 तब समि सेह आयेउ हनुमाना । अनुज देखि प्रभु जीति दुख माना ॥  
 कामवन्त कह बैस सुवेना । लंका रहे को पथ छोला ॥  
 धरि लघुरूप गयेउ हनुमन्ता । आनेउ भवने सँ तुलना ॥

दो० । राम पदारविंद सिर नाथउ आइ सुघेन ।  
 कहा नाम गिरि औषधी जाऊ पवनसुत खेन । ५४ ॥

चौ० । रामचरण सरविज छर रायो । चला प्रभजनसुत चल भायो ॥  
 उहाँ दूत एक मरम जगावा । रावन कासनेमिष्टु आवा ॥  
 दसमुख कहा मरम तेइ सुना । पुनि पुनि कासनेमि सिर धुना ॥  
 देखत तुमहिं नगर जेहिं आरा । तासु पथ को रोकनहारा ॥  
 भजि रघुपतिहि करऊ हित अपना । तजौ नाथ अब दृष्टा कलपना ॥  
 नील कज तनु सुंदर खामा । हृदय राखु लोचनाभिरामा ॥  
 अहंकार ममता मइ त्यागु । महा मोह निशि सोवत जागु ॥  
 काल खाल कर भष्मक जोई । सपनेऊं समर कि जीतिय सोई ॥

दो० । सुनि दसकंध रिखान अति तेहि मन कोन बिचार ।  
 रामदूतकर मरउ यह यह खल रत मलभार । ५५ ॥

चौ० । अम कहि चला रचेसि मग माया । घर मंदिर घर वाग बनाया ॥  
 मातहतसुत देख्यसुभ आसुम । मुनिहिं बूझि जल पिअउं जाइ खम ॥  
 राक्षस कपटभेष तइं सोहा । मायापतिदूतहिं यह मोहा ॥  
 जाइ पवनसुत नाचउ माया । लाग सो कहै राममनगाया ॥  
 होत महारन रावन रामहि । जितिहहिं राम न संख्य था महि ॥  
 इहाँ भये मै देखौं भाई । ज्ञान दृष्टिबल मोहि अधिकारी ॥  
 मांगा जल तेहिं दोनू कमण्डल । कह कपि नहिं अखाउं छोरे जल ॥  
 घर मज्जन करि आतुर आवड । दिखा देउं ज्ञान जेहि पावड ॥

दो० । सर पैठत कपिपद महा मकरो तब अकुलान ।  
 मारो सो धरि दिखतनु चली गगन चहिं जान । ५६ ॥

चौ० । कपि तब दरब भरइ निःपाया । मिटा तात मुनिवर कर साया ॥  
 मुनि न होइ यह निशिचर घोरा । मानहु सख बचन कपि मोरा ॥  
 अथ कहि गई अपहरा जवहीं । निशिचर निकट गयो कपि तवहीं ॥  
 कह कपि मुनि मुदरहिना छोड़ । पाछे हमहिं मन्त्र तुम देख ॥  
 सिर खंगूर लपेटि पहरा । निज तनु प्रगटहि मरती बारा ॥  
 राम राम कहि हाडेहि प्राणा । सुनि मन हासि चले अनुमाना ॥  
 देखा सैन न औषधि कीन्हा । सहसा कर उपाहि गिरि कीन्हा ॥  
 गहि गिरि निशि नभ धावन भयउ । अवधपुरी ऊपर कपि गयउ ॥

दो० । देखा भरत बिबाह अति निशिचर मन अनुमानि ।  
 बिनु फेर सायक मारेउ चाप खनन लागि तानि । ५० ॥

चौ० । परेउ मर्हिं अहि जागत सायक । सुमिरत राम राम रघुनाथक ॥  
 मुनि प्रियवचन भरत तब धाये । कपि समीप अति आतुर पाये ॥  
 बिकल बिलोकि कौच उर छाया । जागत मर्हिं बहु भाति जगवा ॥  
 मुख मलीन मन भयउ दुखारी । कहत बचन भरि कौचन वारी ॥  
 जहि बिधि राम बिमुख मोहि कीन्हा । तेहि पुनि यह दान्न दुख दोन्हा ॥  
 जौ मोरे मन बच यह काया । प्रीति रामपद कमल जमाया ॥  
 तौ कपि होउ बिलतलम सुखा । जौ मो पर रघुपति अनुकूला ॥  
 सुनत बचन उठि बैठ कपोला । कहि जयजयति कोयलाधोवा ॥

सो० । खोह कपिहि उर लार पुलकित तन कोचन यमल ।  
 प्रीति न हृदय समार सुमिर राम रघुकुलतिलक । ५१ ॥

चौ० । तात कुसल कछ सुखनिधान की । सहित अनुज यह मातु जानकी ॥  
 कपि यह चरित समाख बखाने । भये देखी मन मर्हिं पुकिताने ॥  
 यहह दैव मै कत जग जायेउ । प्रभु के एकौ काज न जायेउ ॥  
 जानि कु अवसर मन धरि धीरा । पुनि कपि मन बोले बलवीरा ॥  
 तात गहह होइहि तोहि जाता । काज नसाइहि होत प्रभाता ॥  
 चहु मम सायक सैन समेता । पठवौ तोहि जह लपानिकेता ॥  
 सुनि कपिजन उपजा अभिमाना । मोरे भार खलिहि किमि बाना ॥  
 रामप्रभाउ बिचारि बहोरी । बदि चरन कह कपि कर कोरी ॥

दो० । तब प्रताप उर राखि प्रभु जैहौ नाथ तुरल ।  
 अथ कहि आचस पाय पद बंदि चले अनुमल ॥  
 भारतवाञ्छनलकोकजन प्रसुपदप्रीति अपार ।  
 मन मज्ज जात करारल पुनि पुनि यवनकुमार । ५२ ॥

चौ० । इहां राम खलिमनहि निचारी । बोले बचन मनुष अनुचारी ॥  
 चहुंराति जह कपि मर्हिं जानो । राम बडाइ अनुज उर कायो ॥

सकल न दुखित देखि मोहि काज । बंधु सदा तब मृदुल सुभाज ॥  
 मम हित लागि तजेऊ पितु माता । यहउ विपनि हिम आतप बाता ॥  
 सो अनुराम कहाँ अब भाई । छठहु न सुनि मम चवविकलाई ॥  
 जौ जनयो बग बंधुबिछोड़ । पितावचन जनयो नहिं छोड़ ॥  
 सुत बित नारि भवन परिवारा । होहिं जाहिं जग बारहिं बारा ॥  
 अब विचारि जिस जानहु ताता । मिलै न जगत सहोदर आता ॥  
 यथा पंख बिनु छग अति दीना । मनि बिनु फनि करिवर करहीना ॥  
 अम मम जिवन बंधु बिनु तोही । जौ अह दैव जियावै मोही ॥  
 जेहौ अवध कवन मुहु छलाई । नारिहेतु प्रिय भार गवाई ॥  
 बह अपजस सहतेउ जग माहीं । नारिहानि बिसय तति माहीं ॥  
 अब अपखोक बोक सुत तोरा । सहिहि कठोर निहुर उर मोरा ॥  
 निज जननी के एक कुमार । तात तासु तुम्ह प्रणयधारा ॥  
 सौपेसि मोहि तुमहि गहि पानी । सब विधि सुखद परम हित जानी ॥  
 छतर काह दैहौ तेहि जाई । उठि किन मोहि सिखावहु भाई ॥  
 बहु विधि सोचत सोचबिमोचन । स्वत सलिल रा । दसखोचन ॥  
 उमा एक अखंड रघुराई । नरगति भगत छ । दिखारै ॥

सो० । प्रभु प्रज्ञाप सुनि कान विकल भये बागरनिकर ।  
 आह मयेउ हनुमान जिमि कहना महं बीररस ॥

सो० । हरषि राम भेटेउ हनुमाना । अति हतज्ञ प्रभु प सुजाना ॥  
 तुरत बैद्य तब कोन्हि उपाई । उठि बैठे सकिमन पाई ॥  
 हृदय लाइ प्रभु भेटेउ आता । हरपे सकल भासु रजाता ॥  
 कपि पुनि बैद्य तहां पऊंवावा । जेहि विधि तवहि ताहि खेद आवा ॥  
 यह हत्तांत दयानि सुनेऊ । अति बिषाद पुनिपुनि सिर धुनेऊ ॥  
 व्याकुल कुम्भकरन पहिं आवा । विविध अतन करि ताहि जगावा ॥  
 आगा निश्चर देखिय कैसा । मानहुं काळ देह धरि बैसा ॥  
 कुम्भकरन बूझा कहु भाई । काहे तव मुख रहे सुखारै ॥  
 कथा कहौ सब तेहि अभिमानो । जेहि प्रकार सीता हरि आनी ॥  
 तात कपिन्ह सब निश्चर मारे । महा महा योधा सहारे ॥  
 दुरमुख सुररिपु मनुजचहारी । अट अतिकाय अकंपन भारी ॥  
 अपर सहोदर आदिक बीरा । परे समर महि सब रनधीरा ॥

दो० । सुनि दयकंधर वचन तब कुम्भकरन बिलखान ।  
 जगदंबा हरि लागि सठ अब चाहत कखान । ५८ ॥

सो० । भल न कोन्ह तैं निश्चरनाह । अब मोहि आह जमायेहि काहा ॥  
 अजहं तात त्यागि अभिमाया । अजहं राम होहि कखाना ॥

ह दसपीय मनुज रघुनाथक । जाके हनुमान से वाचक ॥  
 चरह बंधु तैं कीन्ह सुटारै । प्रथमहि मोहि न जगाहि चारै ॥  
 कोन्हउ प्रभुविरोध तेहि देवक । सिव विरचि सुर का के सेवक ॥  
 नारद मुनि मोहि ज्ञान जो कहा । कहतेउं तोहि समथ निवहा ॥  
 अब भरि अंक भेंटु मोहि भाई । लोचन सुकस करौं नैं खाई ॥  
 स्वाम गात सरबोदह लोचन । देखौं जाइ तापवधमोचन ॥

दो० । राम रूप गुन समिरत मगन भयव कन एक ।

रावन मांगेउ कोटि घट मद अब मरिष्य अनेक । ६० ॥

चौ० । मरिष्य खाद करि मदिरा पाना । गरजा बज्जा घात समाना ॥  
 कुम्भकरन दुर्मद रन रंगा । चला दुर्म तजि सैन न संगी ॥  
 देखि विभीषन आगे आबज्ज । परेउ चरन निज नाम सुनाबज्ज ॥  
 अनुज उठार हृदय तेहि लायो । रघुपतिभक्त जानि मन भायो ॥  
 तात सात रावन मोहि मारा । कहत परम पित मन्य विचारा ॥  
 तेहि गलानि रघुपति पतिं आयेऊं । देखि दीन प्रभु के मन भायेऊं ॥  
 सुनु सुत भयेउ काखवस रावन । सो कि मान अब परम विद्यावन ॥  
 धन्य धन्य तैं धन्य विभीषन । भयेउ तात निषिचरकुलभूषन ॥  
 बंधुबंध तैं कीन्ह उज्ज्वार । भजेउ राम मोभासुखवागर ॥

दो० । बचन कर्म मन कपट तजि भजेउ राम रनधीर ।

जाऊ न निज पर सुख मोहि भयेउं काखवस बोर । ६१ ॥

चौ० । बंधुवचन सुनि फिरा विभीषन । आयेउ जहं त्रैलोक्यविभूषन ॥  
 नाथ भूधराकारचरोरा । कुम्भकरन आवत रनधीरा ॥  
 एतना कपिन्ह सुना जब काना । किलकिलाद धाये बकावना ॥  
 लिये उठाइ बिटप अब भूधर । कटकटाद डारहि ना ऊपर ॥  
 कोटि कोटि निरिषिखरप्रहारा । करहि भासु कपि एक एक वारा ॥  
 मुखौ न मन तन टासौ न टासौ । जमि नल अकंपकनि को आसौ ॥  
 तब माहतसुत मुठिका हन्यो । परेउ धरनि बाकुल खिरधुन्यो ॥  
 पुनि उठि तेहि मारेउ हनुमन्ता । घुमिंत भूतल परेउ तुरन्ता ॥  
 पुनि नल नोलहि अबनि पकारेवि । जहं तहं पटाकि पटाकि भट डारेवि ॥  
 चलो वल्लोमुखधेन पराई । जति भय चिति न कोउ समुहाई ॥

दो० । अंगदादि कपि मर्दित करि समेत सुघोष ।

कांस दावि कपिराज कहं चला अमितबलबोव । ६२ ॥

चौ० । उमा करत रघुपति नखीखा । खेल गवड़ जमि चहिनन मीखा ॥  
 भकुटि भक्त काखहि जो खाई । ताहि कि सोई देखि कराई ॥  
 अनपावनि कोरति विचारिचहि । माद नार भवनिधि नर तरिचहि ॥



मुदहा गर मावतसुत जाना । सुघोवहि मन खोजन जाना ॥  
 सुघोवहु नै मुदहा बीतो । निमुकि मखेउ तेहि सुतक प्रसीतो ॥  
 काटेसि दशन मासिका जाना । गरजि चकास चलेउ तेहि जाना ॥  
 गहेउ चरन गहि भूमि पकारा । अति लावव छटि पुनि तेहि मारा ॥  
 पुनि आयेउ प्रभु पछि वलवाना । जयति जयति जय उपनिधाना ॥  
 नाक कान काटे जिय जानी । फिरा क्रोध करि भइ मन म्लानी ॥  
 सवज भोम पुनि बिनु सुति नासा । देखत कपिल छपजी चासा ॥  
 दो० । जय जय जय रघुवंसमनि धाये कपि दै छह ।  
 एकहि बार तासु पर डारेन्ह गिरितहु छह । ६२ ॥

चौ० । कुम्भकरन रनरंगबिरहा । मनमुख चला काल जनु कुहा ॥  
 कोटि कोटि कपि धरि धरि खार् । जनु टोडो मिरिगुहा समार ॥  
 कोटिन्ह महि अरोर मन मर्दा । कोटिन्ह मौजि मिलाव महिगर्दा ॥  
 मुख नासा स्रवनन्ह को बाटा । निभरि पराहिं भासकपिठाटा ॥  
 रनमदमत्त निशाचर दर्पा । बिस्स रमहि जनु एहि विधि अर्पा ॥  
 सुरे सुभट सब क्रिहिं न करे । रुझ न नयन सुनहि नहिं टेरे ॥  
 कुम्भकरन कपिक्रौञ्च बिहारी । सुनि धायी रजनीचरधारी ॥  
 देखो राम बिकल कटकाई । रिपुअनोक नामा विधि आई ॥

दो० । सुनु सुघोव बिभीषन अजुज संभारेउ बैन ।  
 मै दूधै खलवलदलहि बोले राजिव नैन । ६४ ॥

चौ० । कर सारंग साज कटि भाया । अरिदलदलन चले रघुनाया ॥  
 प्रथम कोन्ह प्रभु धनुषटफोरा । रिपुदल बधिर भयेउ सुनि सोरा ॥  
 बलसंध छाड़े सरलच्छा । कालसर्प जनु ससे सपच्छा ॥  
 जह तह चले विपुल माराचा । लगे कटन भट बिकट पिशाचा ॥  
 कटहिं चरन छर सिर भुजदंडा । बज्रतक बोर होहिं अतलंडा ॥  
 घुमिं घुमिं घायल महि परहीं । छटि संभारि सुभट पुनि सरहीं ॥  
 लागत बाज जलद जिमि गाजहिं । बज्रतक देखि कटिन छर भाजहिं ॥  
 रुड प्रचंड मुख बिनु धावहिं । धर धर मार मार भुनि गावहिं ॥

दो० । हन महं प्रभु के साथकन्हि काटे बिकटपिशाच ।  
 पुनि रघुबीर निर्वन मजुं प्रविसेउ सब माराच । ६६ ॥

चौ० । कुम्भकरन मन दोख बिचारी । इति हन मौझ निशाचरधारी ॥  
 भा अति क्रुद्ध महाबल बीरा । किछो खगनायकनाद गंभीरा ॥  
 कोपि महीधर खेर उपारी । डारे कहुं भरकटभट भारी ॥  
 चावत देखि सैब प्रभु आवे । सरणि कोटि रज सब करि डारे ॥  
 पुनि धनु तानि कोपि रघुनायक । छाड़े अति कराल बज्रनायक ॥

तनु महं प्रविष्टि विचरि कर जाहीं । जिमि दामिनि कन जाँच समझाहीं ॥  
 होनित खसत सोइ तन कारे । जनु कछुसगिरि मेरुधनारे ॥  
 विकल बिलोकि भासु कपि धाये । बिहंसा जहिं निकट कपि पाये ॥  
 दो० । महा नाइ करि गजां कोटि कोटि गहि कोच ।  
 महि पटकै गजराज रव अपघ करै दसबाँध । ६६ ॥

चौ० । भागे भासु बलौमुखयथा । एक बिलोकि जिमि मेरुधनारे ॥  
 चले भाजि कपि भासु भवानो । विकल पुकारत चारत बाजो ॥  
 यह निशिचर दुकास सम चहई । कपिकुदंश परन अब चहई ॥  
 ह्वावाविधर राम खरारी । पाहि पाहि प्रनतारतिचारी ॥  
 सकहन बचन सुनत भगवाना । चले सुधारि सरासन बाजा ॥  
 राम सेन निज पाईं घालो । चले सकोप महाबलवाली ॥  
 खेचि धनुष सर सत बंधाने । छूटे तीर वरीर समाने ॥  
 लागत सर धावा रिसभरा । कुधर उगमगत डोकनि धरा ॥  
 कोन्ह एक तेहि सैख छपाटी । रघुकुलनिलक भुजा सोइ काटी ॥  
 धावा बामबाहुगिरिधारी । प्रभु सोइ भुजा काटि महि पारी ॥  
 काटे भुजा सोइ खल कैसा । पच्छीन मंदरगिरि जैसा ॥  
 उघ बिलोकनि प्रभुहि बिलोका । यसन चहत मानउं पचसोका ॥

दो० । करि चिह्नार घोर अति धावा बदन पकारि ।  
 गगन सिद्ध सुर नामित हाहा हेति पुकारि । ६७ ॥

चौ० । सभय देव कहनानिधि जान्यौ । खवन प्रयंत सरासन तान्यौ ॥  
 विमिखनिकर निशिचरमुख भरेज । तदपि महाबल भूमि न परेज ॥  
 सरन्हि भरा मुख सनमुख धावा । कालवान खजीव जनु आवा ॥  
 तब प्रभु कोपि तीर सर खीन्हा । धर तें भिख तासु बिर कीन्हा ॥  
 सो बिर परेउ दखान आगे । विकल भयेउ जिमि कनिमनि त्यागे ॥  
 धरनि धवै धर धाव प्रचंडा । तब प्रभु काटि कीन्ह दुर खंडा ॥  
 परेउ भूमि जिमि नभ तें भूधर । हठ दाबि कपि भासु निचावर ॥  
 तासु तेज प्रभुबदन समाना । सुर मुनि सबहि चंचभव माना ॥  
 सुर दुन्दुभी बजावहिं हरबहिं । अमृति करहिं सुमन बड बरषहिं ॥  
 करि बिनतो सुर सकल सिधाये । तेही समय देवछपि पाये ॥  
 गगनोपरि हरिगनगन गाये । इचिर वीररघ प्रभु मन भाये ॥  
 बेनि हतउ खल मुनि कहि गये । राम समरमहि सोभत मये ॥

इ० । बंधामभूमि विराज रघुवति अतुलबल सोमावनी ।  
 कमबिंदु मुखरानीव लोचन दक्षिण तनु होनितकनी ॥

कोपि महतस्तु चंगद धाव	। इति चिह्नक उर धरनि निराधे	॥
प्रभु न हं छायेसि सुख प्रचडा	। सर इति कृत अगम युग खंडा	॥
उठि बहोरि मरनि जुवराजा	। इतिह कोपि तेहि धाव न बाजा	॥
फिरे बोर रिपु मरै न मारा	। तब बाबा करि बोर चिकारा	॥
सहिमनमन अस मंच कुडावा	। इति पाणिहि मै बज्जत खेळावा	॥
आवत देखि कुट्टु जनु काळा	। सहिमन झावे निमित्त कराळा	॥
देखेसि आवत पवि सम बाजा	। तुरत भयो खल अंतरधामा	॥
बिबिध बेव धरि करै करारै	। कवज्जंक प्रगट भवज्जं दुरिगारै	॥
देखि अजय रिपु उरपे कोसा	। परम कुट्टु तब भवेउ अहीसा	॥
मुमिरि कोससाधोषप्रतापा	। सर संधान कोच करि दापा	॥
हाडा बाज मांझ उर कागा	। मरतो वार कपट सब त्यागा	॥

दो० । रामाजुज कहं राम कहं अस कहि छायेसि प्रान ।  
धन्य धन्य तव जगनी कह चंगद हनुमान । ७२ ॥

चौ० । बिनु प्रयास हनुमान उठायो	। संकादार राखि पुनि आयो	॥
तामु मरन सुनि सर गंधर्वा	। उठि विमान आये नभ खर्वा	॥
बरहि सुमन दुहुमो बजावहि	। खोरघुबोरविमलजय गावहि	॥
जय अगम जय अगदाधारा	। तुम्ह प्रभु सब देवनि निखारा	॥
अस्तुति करि सुरसिद्ध सिंघाये	। सहिमन कुपासिधु पवि आये	॥
सुतवध सुना दशानन जबहौ	। मुरझित भयष परेश महि तबहौ	॥
मन्दोदरी बदन कर भारी	। उर ताडति बज्ज भांति पुकारो	॥
नगरखोज सब आकुल सोचा	। एकस कहहि दयकंधर पोचा	॥

दो० । तब दयकांठ बिबिध विधि समुझारै सब कारि ।  
मखरकूप जगत सब देखेउ हृदय विचारि । ७३ ॥

चौ० । तिनहि ज्ञान उपदेशा रावण	। आपुन मंद कथा सुभ पावन	॥
पर उपदेश कुसल बज्जते	। जे आचरहि ते नर न खनेरे	॥
निसा बिरानि भयष भिनुसारा	। जमे भालु कपि चारिजं दारा	॥
सुभट बुझार दशानन बोळा	। रनखनमुख जा कर मन डोळा	॥
सो जबहौ बह जाळ परारै	। संजुन बिमुख भये न भकारै	॥
निज भुजबल मै बैर बढावा	। देखौ उत्तर जो रिपु उठि आवा	॥
अस कहि महतवेग रथ खाला	। बाजहि सकल जुझाज्ज बाजा	॥
चले बोर सब अतुलितबही	। जनु कुज्जल कै थांधी खली	॥
अबगन जमित हेहि नेहि काळा	। मगर न कुजबल सर्वविधाळा	॥

- ६० । अतिवर्धे नमस् न वनम वनमन खरहिं वायुध वायुधे ।  
भट निरत रथे ते वाचि नम चिह्नरत भावहिं वायुधे ॥  
मो मायु मीध करक कररव खान बोखहिं अति धने ।  
वनु काखदूत वनूक बोखहिं वषम परम भयावने ॥ ४ ॥
- ७० । ताहि कि वपति वनम वन वपनेऊ मन विखाम ।  
भूतद्रोहरत मोहवच रामविमुख रतकाम ॥ ०५ ॥
- ८० । चलेउ निवासरकटक अपारा । चतुरंगिनी अमी वज्र धारा ॥  
विनिध भांति वाहन रथ चामा । विपुल वरन पताक ध्वज माना ॥  
चले मत्त गजयुध घनेरे । प्राविटजसद महत जनु प्रेरे ॥  
वरन वरन बिर दैतनिकाया । समरसुर जानहि वज्र माया ॥  
अति विचित्र वाहनी बिराजो । वीर वसंत सेन जनु बाजो ॥  
चलत कटक दिगबिंधुर उमहीं । कुभित पयोधि कुधर उममगहीं ॥  
छटो रेनु रवि गणक छपाई । महत शक्ति वसुधा चक्रसाई ॥  
पनव निखान खोररव बाजहिं । महाप्रकाश को जनु जब बाजहिं ॥  
भेरि नफोरि बाज सहसाई । माह राम सुभट सुखसाई ॥  
केहरिनाह वीर सब करहीं । निज निज सब पौरुष चक्रहीं ॥  
कहे दशमन वनज सुभट्टा । महेंद्र भावकपिनि को ठट्टा ॥  
हैं मारिहैं भूप दोह मारैं । सब कहि कमलुख खोज देंमार् ॥  
यह सुधि सकल कहिनि जब पाई । धावे करि रघुवीरसुहाई ॥
- ९० । धावे विशाल कराल मर्कट भावु कास वमान ते ।  
मानऊ खपण्ड छडाहिं भूधरहृन्द नाना वान ते ॥  
नख दशन सैव महाद्रुमायुध सबस संक न मानहीं ।  
जब राम रावन मत्तमज मृगराजसुखस बखानहीं ॥ ५ ॥
- १०० । दृजं दिशि जब अवकार करि निज निज जोरी जानि ।  
भिरे वीर हत रामहीं उत रावणहिं बखानि ॥ ०६ ॥
- ११० । रावन रथी बिरध रघुवीरा । देखि विभीषण भयव अघोरा ॥  
अधिक प्रीति मत्त भा मदेहा । बहि चरन कह कहित कोहा ॥  
नाथ न रथ नहि तनु पदवाना । केहि विधि जितव वीर बखवाना ॥  
सुनऊ सखा कह छपानिधाना । केहि जब होइ को कहंन जाना ॥  
खोरज धीरज तेहि रथ पाका । बल्य वीर वृद्ध भ्रमा पताका ॥  
बल विवेक दम परहित धारे । हमा छपा समता रज कोरे ॥  
दशमजन चारही बुजाना । बिरति धर्म वल्लोच छपाना ॥  
दान परसु सुधि बनि जयंदा । वर विजान कहनि कोहंदा ॥

अमल अमल मन मोन समान ॥ सम सम विमल विखीनुन माना ॥  
 कदव अमर विमलपुष्पा ॥ एहि सम विमलपुष्पा व दूजा ॥  
 मया धर्ममय अरु रथ जाके ॥ भीतन करुण कतउं रिपु ताके ॥

दो० । महा अमल संसार रिपु भीति करै सो बीर ॥  
 जा के अरु रथ सोरु वृद्ध सनत सखा अतिधीर ॥  
 मुनि प्रभुवचन विभीषन अरुि सहे पदकण्ठ ॥  
 ऐहि मिमि मोहि उपदेसैऊ राम कृपासुखपुञ्ज ॥  
 उत प्रचार दसकंधर इत अंगद हनुमान ॥  
 सरत निवासर भाखु कपि करि निज निज प्रभुआन ॥ ७७ ॥

चौ० । सुर ब्रह्मादि विद्व मुनि नागा ॥ देखत रन सभ चढे विमाना ॥  
 हम ह्र उमा रहे तेहि संगी ॥ देखत रामचरित रथरगा ॥  
 सुभट समररथ दूजं दिवि सुते ॥ कपि बलवीर रामचर ता ते ॥  
 एक एक सन भिरहि प्रचारहि ॥ एकएक सन मरिहो पारहि ॥  
 मारहि काटहि धरहि पहारहि ॥ सोय तोरि सोयन मारहि ॥  
 उदर विदारहि भुजा उपारहि ॥ गहि पद चबनि पत भट डारहि ॥  
 निमिचरभट मरि भाटहि भाखु ॥ ऊपर डारि देहि बाखु ॥  
 बोरबलामुख यहुविहरे ॥ देखियत विपुल क मनु कुहरे ॥

छं० । कुहरे कृतान्त बलान केपितु अवत योगित राखही ॥  
 मरिहि निवासरथकभट बलवत सन जिमि गाउ ॥  
 मारहि चबेटहि डांठि दांतनि काटि खातन मी ॥  
 चिल्लरहि मकंठ भाखु हल बल करहि जेहि बल ॥ जही ॥  
 धरि गाळ फारहि उर विदारहि गळ अंतावरि मेकही ॥  
 प्रहलादपति जनु विविध तनु धरि समरअंगन खेलही ॥  
 धर माह काटु पछार घोर गिरा गमन मरि भरि रही ॥  
 जय राम जो हन तें कुलिय कर कुलिय तें कर हन रही ॥ ६ ॥

दो० । निज दल विचलत देखेहि बीसभुजा दस पाप ॥  
 रथ अहि चलेउ दवानल फिरऊ फिरऊ करि दाव ॥ ७८ ॥

चौ० । धारण परम कुहरे दसकंधर ॥ सनमुख सले ह्रदै बंदर ॥  
 गहि कर पादप सबल पक्षारा ॥ डारनि ता पर एकहवारा ॥  
 लागहि सैल बल तनु तास ॥ खंड खंड होर फूटहि आस ॥  
 चला न चबल रहा रथ होयो ॥ रनदुमंद रावन अति कोयो ॥  
 इत उत सपति दपति कपि कोभा ॥ मरहै जान भयो अति कोभा ॥  
 चले पराह आखु कपि नागा ॥ पाहि पाहि अंगद हनुमाना ॥

पाहि पाहि रघुवीर जुवाई । यह कह्यो बार काय की मारै ॥  
तेहि देखे कपि सकल पराने । देख्यो बाप कायक बंधने ॥

१० । संधानि धनु सरनिकर छाड़ेचि उरन निमि कपि आनहीं ।  
रहे पुरि सर धरणी गगन दिशि विदिशि कहं कपि भागहीं ॥  
भयो प्रति कोलाहल बिकल कपिदल भास्यो कहिं आतुरे ।  
रघुवीर कह्यो बंधु भारतबंधु अनरक कहिं ॥ ० ॥  
दो० । निज दल बिकल देखि कटि कपि निगता धनु हाथ ।  
सहिमन चले सकुल होइ नार रामपद माथ ॥ १५ ॥

चौ० । रे खल का आइसि कपिआसू । मोहि बिलोक्य तोर सैं कासू ॥  
खोजत रहेउं तोहि सतवैती । आजु निपाति जुझावैं कही ॥  
अस कहि छाड़ेचि बान प्रचंडा । सहिमन किये सकल मत खंडा ॥  
कोटिन्ह आयुध राख्य डारे । निजप्रमाण करि काटि निवारे ॥  
पुनि निज बानन्ह कोन्ह प्रहारा । सख्य भंजि मारयो मारा ॥  
सत सत सर मारे दसभाखा । गिरिखंगनि सनु गिरिचंदि बाला ॥  
पुनि सत सर मारा उर माहीं । परेउ धरनिवस सुखि कासू नाहीं ॥  
उठा प्रवस पुनि मुरका आगो । छाड़ेचि मरु दीन्ह को बायो ॥

हं० । सो ब्रह्मदत्त प्रचंड मकि समस्त सर आगो मयो ।  
पल्यो बोर बिकल उठाव दसमुख चतुर्मुख मरिमा रयो ॥  
ब्रह्मांड भुवन विराज जाके एकसिर निमि रजकनी ।  
तेहि यह उठावन मूढ रावन जान नहि विभुवनधनी ॥ ८ ॥  
दो० । देखि पवनसुत धाएउ बोलत बचन कठोर ।  
आगत कपिहिं हनेउ तेहि मुष्टिप्रहार प्रघोर ॥ ८० ॥

चौ० । जानु टेकि कपि सहिमन निरा । उठा संभारि बज्रत रिय भरा ॥  
मुठिका एक ताहि कपि मारा । परेउ सैल सनु बज्रप्रहारा ॥  
मुरका गई बज्ररि सो जाना । कपिल बियुक्त मरावन कामा ॥  
धिग धिग मम पौरुष धिग मोहो । जौ ते जियत रहेचि सुरद्रोहो ॥  
अस कहि सहिमन कहं कपि आगो । देखि दसगन निराध पायो ॥  
कह रघुवीर समुझि जिय आता । तुम हज्रांतकचक सुरवाता ॥  
सुनत बचन उठि बैठ कपाला । गई गवन सो मकि कराता ॥  
पुनि कोइउ बान नहि धाये । रिपु समुल प्रति आतुर आवे ॥

हं० । आतुर कहोरि विभक्ति सख्य सन वति कायक निपरी ।  
मिल्यो धरनि दसबंधर बिकलतन बान सत बैसी रिबौ ॥

बारही दूबर बाहि रथ तेहि तुरत संका से मथौ ।

रघुवीरबधु प्रतापपुत्र बहोरि प्रसुचरनहि नथौ । ८ ॥

दो० । रघा देवानन बाहि करि करै सातु कसु संज

राम विरोध विजय चहत बठ बठवस भति भज । ८१ ॥

चौ० । रघा विभीषन सब सुधि पाई । सपदि आइ रघुपतिहि सुभाई ॥

नाथ करै राख्य एक सामा । बिहू भवै नहि मरिहि जामा ॥

पठवऊ नाथ बेगि भठ मंदर । करहि विधंष नाव दसकंधर ॥

प्रात होत प्रभु सुमट पठाये । हनुमदाहि भंड सब धाये ॥

कौतुक कृदि चढे कपि संका । पैठे राखनभवन असंका ॥

पञ्च करत जगहीं वो देवा । सकल कपिन्ह भा क्रोध विसेवा ॥

रन तें निखन भागि ग्यह जावा । रघा आइ बकमान जगावा ॥

जब कहि भंड भारा जाता । चितव न बठ सारथ मनराता ॥

दो० । नहि चितव जब करि कोप कपि नहि दहन सातन मारहीं ।

धरि केव बाहि निकारि बाहर तेति दीन पुकारहीं ॥

तब चढेऊ कुहु कृतांत सम गहि चरन बागर जारई ।

एहि बीच कपिन्ह विधंष कृत मख देखि मन मई हारई । १० ॥

दो० । यज्ञ विधुंसि सुख कपि आये रघुपति प स

चलेउ निवाचर कुहु है त्यागि जिवन के आच । ८२ ॥

चौ० । चलत होहिं भति असुभ भवकर । बैठहिं गोध उडारि छि पर ॥

भयउ कालवस काउ न माना । कहसि बनावऊ युहुना ॥

बसो तमोचरभनो अपारा । बज्र गज रथ पदाति वारा ॥

प्रभुसमुख धाये खल कैसे । सलभसमूह जनस ब्रजे ॥

रघा देवतन अमुति कोन्ही । दाहन विपति हमहि एहि दोन्ही ॥

जब जनि राम खेलावऊ एही । नतिसय दुखित होति बैदेही ॥

देवबचन सुनि प्रभु भुसुकावा । अठि रघुवीर सुधारे बाना ॥

कटाजूट हठ बांधे माये । सोइहिं सुमन बोच विच गांये ॥

चहन नखन बारिद तनु सामा । अखिल लोकलोचन अभिरामा ॥

कटितट परिकर कखो निवंगा । कर कोइउ कठिन सारना ॥

दो० । बारन कर सुंदर निवन सिंहीमुखाकर कटि कखौ ।

भुजदंड पीन मनोहराखत छर धरा सुरपद लखौ ॥

कह दाध तुलसी जबहिं प्रभु सर पाप कर फेरन खौ ।

ब्रह्मांड दिग्गज कमठ चहि मधि पिंधि भुधर जगमने । ११ ॥

० । सोभा देखि करवि सुर वरविहि सुमन चकार ।  
जय जय ब्रह्म कदवानिधि कविवरगुणधामार । ८२ ॥

१० । एही बीच निषाचरको	। कथमथाति आई चति बनी	॥
देखि चले बगमुख कपिमहा	। प्रलयकाल के अनु बगवहा	॥
शक्ति मुख तरवारि चमकहि	। अनु दय दिशि दामिनी दमकहि	॥
गज रथ तुरंग चिकार कठोरा	। गरजहि मगज बलाहक घोरा	॥
कपि संगूर विपुल नभ छाये	। मगज रन्ध्रनु उर मुदाये	॥
उठो धूरि मानहुं अलधारा	। बामबुन्द मर दृष्टि अपारा	॥
हुकुं दिशि पर्वत करहि प्रचारा	। बक्षपात अनु बारहिबारा	॥
रघुपति कोपि बान झरिकाई	। घाघल भे निषाचरबमुदाई	॥
लागत बान बीर चिकारही	। घुमि घुमि जह तह मधि परही	॥
खरहि सैल अनु निर्झरवारी	। सोनितपरि कादरभयकारी	॥

हं० । कादरभयंकर दधिरसरिता चली परम अपावनी ।  
दोउ कूल दल रथ रेत चक अवत बहति मयावनी ॥  
जलजंतु गज पदचर तुरंग खर विविध बाधन को मने ।  
खर शक्ति तोमर सर्प चाप तरंग चर्म कमठ घने । १९ ॥

दो० । बीर परहिं अनु तीर तर मज्जा बज्ज बह फेन ।  
कादर देखि खराहि तह सुभटन के मन चैन । ८४ ॥

चौ० । मज्जाहिं भूत पिशाच बेताला	। प्रमथ महा झोटिन करावा	॥
काक कंक लै भुजा उड़ाही	। एक ते कीमि एक खेर खाही	॥
एक कहहि ऐसिउ बौघाई	। चठहु तुम्हार दरिद्र न जाई	॥
कहरत भट घाघल तट गिरे	। जह तह मगज अर्जुनल परे	॥
खैचहि गोध आत तट भये	। अनु बगवती खेलाहि चित दये	॥
बज्ज भट बहहि चड़े खग जाही	। जिमि नावीर खेलाहि चरि माही	॥
योगिनि भरि भरि खप्पर संचहि	। भूत पिशाच बधू नभ मर्षहि	॥
भट कपालकरताल बजावहि	। सामुझा नामा विधि नावहि	॥
जबुकनिकर कटकट कहहि	। खाहि जंझाहि अघार दण्डहि	॥
कोटिन्ह दण्ड मुख विनु ओझहि	। दोष परे मधि जय जय बोजहि	॥

हं० । बोजहिं जो जय जय मुख दण्ड प्रचण्ड विरविनु धावही ।  
खप्परिन्ह खम्भ जलुविक्रि जुझहिं सुभट भट्य ठहावही ॥  
बानर निषाचरनिकर जंझाहि रामबल दर्पित भये ।  
संध्यामध्याम सुभट बोजहिं रामचरनिकरनिह दये । १९ ॥



दो० । रावन हृदय विचार भा निशिचरसंहार  
मैं सकल कपि भाखु बड माया करौ अपार ॥

चौ० । देवन्द प्रसूति पचादे देवा । उपजा हर अति कोम विमेषा ॥  
हरपति निज रघु तुरत पठावा । हरष सहित मातसि लै आवा ॥  
तैजपुत्र रघु दिख अनया । हरपि चहुँ कोसलपुरभूषा ॥  
चंचल तुरंत मनोहर चोरी । अजर अमर मन सम गतिकारी ॥  
रघावु रघुनाथहिं देखी । धाये कपि बल पार विमेषी ॥  
सहो न जाइ कपिन्ह के मारी । तब रावन माया विस्तारी ॥  
सो माया रघुबोरहिं बाँची । लहिमन कपिन्ह सो मानी बाँची ॥  
देखी कपिन्ह निसाचरचनो । अनुज सहित बड कोसलधनी ॥

छं० । बड राम लहिमन देखि मर्कट भाखु मन अति अपहरे ।  
अनु चितलिखित समेत लहिमन जहँ सो तहँ चितवहिं खरे ॥  
निज मेन अकित बिलोकि हंसि सर आप सजि कोसलधनी ।  
माया हरो हरि निमिष महँ हरयो सकल मर्कटधनी । १४ ॥

दो० । बडारि राम सब तन चितय बोले वचन गंभीर ।  
हँद युद्ध देखहु सकल समित भये अति बीर । ८६ ॥

चौ० । अस कहि रघु रघुनाथ चलावा । विप्रचरनपंकज सिर नावा ॥  
तब संकेस क्रोध उर लावा । गर्जत तर्जत मझुख धावा ॥  
ओतेहु जे भट सयंग माहीं । सुनु तापस मै तिन्ह सम माहीं ॥  
रावन नाम अमल अस जाना । लोकय जा के बंदीखाना ॥  
खर दूषन विराध तुम्ह मारा । बधेहु व्याध हव बालि बेपारा ॥  
निशिचरनिकरबभट संहारेहु । कुम्भकरन घननादहिं मारेहु ॥  
आज बैर सब लेख निबाही । जौ रन भूष भाजि नहिं जाही ॥  
आज करौ खलु काख हवाखे । परेहु कठिन रावन के पाखे ॥  
सुनि दुर्बचन कोसलस जाना । बिहांस बचन कह कृपानिधाना ॥  
सत्य सत्य सब तब प्रभुतारै । अन्यसि जनि देखाइ मनुष्यारै ॥

छं० । जनि अयपना करि सुजस नासहि नीति सुजहि करहि हमा ।  
संसार महँ प्रह्व चिविध पाटल रघुनय मनस समा ॥  
एक सुमनप्रद एक सुमनफल एक फलर कोबल खानहीं ।  
एक कहहिं कहहिं करहिं अजर एक करहिं कहत न बायहीं । १५ ॥

दो० । रामवचन सुनि बिहसा मोहि सिखावत ज्ञान ।  
बैर करत नहिं तब हरे अब जाने प्रिय मान । ८७ ॥

चौ० । कहि दुर्बचन कुट्ट दयकंधार । सुनिह बसाल जान जाँके सर ॥

मानाकार छिखीमुख धाये । दिशि चर विदिशि जगज्जगदि छाये ॥  
 पावक सर छाये रघुवीर । हन मरुं करे निशाचरतीरा ॥  
 छाड़िषि तीव्र सक्ति छिचिचार्द । बान संग प्रभु खेरि चलाई ॥  
 कोटिभ चक तिसुख पवार । विम प्रयास प्रभु काटि निवार ॥  
 निफल होहिं रावनसर कोसे । छल के बकस मनोरथ कोसे ॥  
 तब सत बान सारथी मारेसि । परेउ भूमि जस राम पुकारेसि ॥  
 राम कृपा करि सुत उठावा । तब प्रभु परम कोप कह पावा ॥

० । भय क्रुध युद्ध विरह रघुपति चान सायक कसमसे ।  
 कोदंडधुनि अति चण्ड सुनि मनुजाद सब माहत पसे ॥  
 मंदीदरी सर कप कपति कमठ भू भूधर पसे ।  
 चिकरहिं दिग्गज दसन गति महि देखि कौतुक सर पसे । १६ ॥

१० । तानेउ चाप खवन छगि छाये विविध कराख ।  
 राम मागनगन पसे छहछहात जनु आख । ८८ ॥

१० । चले बान सपक्क जनु उरगा । प्रथमहि हतेउ सारथी तुरगा ॥  
 रथ विभंजि हति केतु पत्ताका । गर्जा अति अंतर बस पाका ॥  
 तुरत चान रथ चढ़ि छिचियाना । चख पख छाड़ेसि विधि नाना ॥  
 निफल होइ सब छयम ता के । जिमि परद्रोहनिगत मनसा के ॥  
 तब रावन दस सुख चलावा । बाजि चारि महि मारि गिरावा ॥  
 तुरंग उठार कोपि रघुनायक । खैचि सरासन छाड़ेउ सायक ॥  
 रावनसिर सरोजवनचारी । चलि रघुवीरसिकीमुखधारी ॥  
 दस दस बान भाख दस मारे । निशरि गये चक इधिरधारी ॥  
 खवत रुधिर धायेउ बखबाजा । प्रभु पुनि कृत भनु सर संभाजा ॥  
 तोम तोर रघुवीर पवार । भुजनि बसेत शीघ्र महि पारे ॥  
 राम बहोरि भुज । सिर छोने । काटतही पुनि भये गवीने ॥  
 प्रभु बज्ज बार बाज्ज फिर जये । कटत छड़िति पुनि नूतन भये ॥  
 पुनि पुनि प्रभु काटत भुज सोया । अति कौतुकी कोसकाभीजा ॥  
 रहे छार नभसिर चर बाज्ज । मागजं चमित केतु सर राज्ज ॥

६० । जनु राज्ज केतु अनेक नमपथ खवन वोजित धावहीं ।  
 रघुवीरतोर प्रचंड छागहिं भूमि गिरिष न पावहीं ॥  
 एक एक सर चिरनिकर हंसे नभ उड़त हमि सोवहीं ।  
 जनु कोपि दिनकर करनिकर जहं तह विधुमुद सोवहीं । १० ॥

१० । जिमि जिमि प्रभु चर मासु सिर तिमि तिमि होहिं चवार ।  
 केवल विषय विरह जिमि मित नित नूतन मार । ८९ ॥

चौ० । दशमुख देखि चिरनि की बाड़ी । विहरा करन की रिक नाली ॥  
 नरनेउ मूढ़ मया अभिमानो । धावत दसउ बरावन तातो ॥  
 समरभूमि दशकांधर कोखो । बरषि बरन रघुपतिरय तोखो ॥  
 दन एक रय देखि न परेज । जनु निहाइ मय छिनकर दुरेज ॥  
 हाहाकार सूरज मय कीन्हा । तब प्रभु कोषि कामुक कीन्हा ॥  
 सर निवारि रिपु के बिर काटे । ते दिशि बिदिशि गवन सहि पाटे ॥  
 काटे बिर नभ मारन धावहि । जय जय धुनि करि भय उपजावहि ॥  
 कहं सहिमन सुयोव कपोता । कहं रघुबीर कोषलाधीसा ॥

हुं० । कहं राम कहि चिरनिकर धावें देखि मकंठ भोजि चखे ।  
 संधानि धनु रघुवंसमनि बसि सरन्हि बिर बेधे भजे ॥  
 बिरमासिका कर कालिका गहि हृन्द हृन्दनि बडु मिली ।  
 करि बधिरघरि मखन मनऊं संधामबट पूजन चली । १८ ॥

दो० । पुनि दसकंठ कुट्टु कै काड़ी यक्ति प्रचंड ।  
 चली बिभोवन जनमुख मनऊं काळ कर दंड । २० ॥

चौ० । आवत देखि यक्ति अति बोरा । प्रनतारतिभंजन प्रन मोरा ॥  
 तुरत बिभोवन पाछे मेला । मनमुख राम सहेउ सो मेला ॥  
 लगि यक्ति मुहो कहु भई । प्रभुलत खेल सूरज विकलई ॥  
 देखि बिभोवन प्रभु कम पायउ । गहि कर गदा कुट्टु कै धायेउ ॥  
 रे कुभाग्र सठ मंड कुमुद्धे । ते सुर नर मनि नाग बिरहू ॥  
 सादर खिन्न कहं सोस चढाये । एक एक के कोटिन्ह पाय ॥  
 तहि कारन मल अब लगि नांछ्यो । अब तव कास सोस पर नांछ्यो ॥  
 रामबिमुख सठ चह संपदा । अस कहि जनेसि मांस उर गदा ॥

हुं० । उर मांस गदाप्रहार घोर कठोर लागतम्महि परा  
 दसबदनखोजित खवत पुनि सभारि धावो रियभरा ॥  
 दोउ भिरे अति बल मलयुद्ध बिरहू एकहि एक हने ।  
 रघुबीर बल दर्पित बिभोवन चालि नहिं ता कहं गने । १८ ॥

दो० । उमा बिभोवन रावनहिं मनमुख चितव कि काळ ।  
 सो अब बिरत कास को कीरघुबीरप्रभाउ । २१ ॥

चौ० । देखा समित बिभोवन भारी । धाएउ हनुमान गिरिधारी ॥  
 रघुतुरंग सारथी निपाता । हृदय मांस मारेसि तेहिं लाता ॥  
 ठाढ़ रहा अतिकपितगाता । गयउ बिभोवन जहं जनचाता ॥  
 पुनि रावन कपि हनेउ प्रचारी । चलेउ मगन कपि पुच्छ पचारी ॥  
 मरषि पुच्छ कपि बसिउ उड़ाना । पुनि फिरि भिरेउ प्रवह हनुमाना ॥

करत चकल पुनः चकलप्रीति । हर्षि हर्षवत्त करि कोष ॥  
 सोहिं नमः कल वल वल करी । कलकविनि सुमेरु वल करी ॥  
 बुधिवल निधिवर वर न बाको । तव मादतस्त प्रभु वभाको ॥

० । रंभारि खोरबुधोर खोर प्रचारि कपि रावनवयो ।  
 मधि परत पुनि छठि सरत देवन युनक्त कर्ष वय वय भयो ॥  
 हनुमन्तकट देखि मर्कट भालु कोधातुर वसे ।  
 रनमन्त रावन सकल सुभट प्रचंड भुज वल दखनसे । २० ॥  
 १० । तव रघुबोर प्रचारे धाये कीच प्रचंड ।  
 कपिदल प्रवल देखि तिहि कीन्ह प्रमट पाचंड । २१ ॥

१० । अन्तरधान भयो छन एका । पुनि प्रगटे खल रूप अनेका ॥  
 रघुवरकटक भालु कपि जेते । जहं तई प्रगट दखानन तेते ॥  
 देखे कपिन अमित दसबोसा । जहं तई भजे भालु चर कोसा ॥  
 भागे बानर धरिं न धीरा । चाहि चाहि कडिमन रघुवीरा ॥  
 दऊ दिशि धावहिं कोटिन रावन । नर्कहिं खोर कठोर भयावन ॥  
 उरे सकल सुर चले पराई । जय कै आच तमऊ चर भाई ॥  
 सब सुर जिते एक दसकंधर । अब वल भये तकऊ गिरिकंदर ॥  
 रहे विरचि संभु मुनि जानी । जिन जिन प्रभुमहिमा कहू जानी ॥

६० । जाना प्रताप ते रहे निर्भय कपिन्ह रिपु माने फुरे ।  
 चले बिचलि मर्कट भालु सकल रूपालु पाहि भयातुरे ॥  
 हनुमन्त अंगद मोल नल अति बल खरत रनबांकुरे ।  
 मर्दहिं दखानन कोटिकोटिन्ह कपटभूभट चंकुरे । २२ ॥

२० । सुर बानर देखे बिकल हंसउ कोमलाधीस ।  
 सजि खरन एक खर हते सकल दसबोस । २३ ॥

३० । प्रभु छन मह माया सब काटी । जिमि रविउये जाहिं तम फाटी ॥  
 रावन एक देखि सुर हरये । फिरे सुमन वल प्रभु पर बरये ॥  
 भुज उठाइ रघुपति कपि फेरे । फिरे एक एकनि तव टेरे ॥  
 प्रभुवल पाइ भालु कपि धाये । तरल तमकि बंधुन मरिं आये ॥  
 अस्तुति करत देव तेहि देखे । भयउं एक मै रन के सेखे ॥  
 सठऊ सदा तुम मोर मरायल । यम कहि कोपि नगन पर धायल ॥  
 हाहाकार करत सुर भाने । खलऊ जाऊ कह मोरे आगे ॥  
 देखि बिकल सुर अंगद धायो । कूदि खरन महि भूमि गिरायो ॥

४० । नहि भूमि पाखौ जात माखौ बालिसुत प्रभु फई मयो ।  
 रंभारि छठि दखकंड खोर कठोर रव मरगत भयो ॥

करि हाय हाय कहाइ दस बंधानि कर बद्ध करवाई ॥ १९० ॥  
 किये सकल भट चावल भवाकुल देखि निमन वल करवाई । १९१ ॥

दो० । तब रघुपति रावन के नीच भुजा कर पाव । २० ॥  
 काटे बज्जत बड़े पुनि जिमि तीरथ कर पाव । २१ ॥

चौ० । सिरभुजवाडि देखि रिपु कोरी । भाकु कपिन्ह रिपु मरै घनेरी ॥  
 मरत न मूत्र कटेज सुत्र सोरा । धावै कोपि भाकु भट कीरा ॥  
 बासितमध मादति नल नोखा । वानरगात्र दृविदबलसीखा ॥  
 बिटप महोधर करहि प्रहारा । खोर गिरि तर गहि कपिन्ह सो मारा ॥  
 एक नखनि रिपु मपुव बिहारी । भागि चरहि एक सातनह मारी ॥  
 तब नल नोख सिरनि चडि मखेज । नखनि लिलार बिदारत भयेज ॥  
 दधिर देखि बिबाद कर भारो । तिनै धरन कबं भुजा पयारी ॥  
 महेनजाहिं करहि पर किरिही । जगु युग मधुप कमल बन चरही ॥  
 कोपि कूदि दोउ धरंषि बहोरो । महि पटकत भजे भुजा मरोरी ॥  
 पुन मकोप दस धनु कर लीखे । सरनि मारि घावल कपि कोखे ॥  
 हनुमदादि मुरकित करि बंदर । पाइ प्रदोष हरव दसकंधर ॥  
 मुरकित देखि सकल कपि बीरा । जामवन्त धाएउ रनधोरा ॥  
 संग भल भूधरतद्वारी । मारन लगै पचारि पचारी ॥  
 भयउ क्लृप्त रावन बलवाना । गहि पद महि पटकै भट जाना ॥  
 देखि भाकुपति निज दल घाता । कोपि मांझ उर मारेसि छाता ॥

क० । उर सात घात प्रचंड लागत बिकल रथ ते महि बरा ।  
 गहि भाकु बोलउ कर मनउं कमलनि वसे निधि मधुकरा ॥  
 मुरकित बिलोकि बहोरि पद हति भाकुपति प्रसुपहि गयो ।  
 निशिजानि खंदन जाखि तेहि तब सुत घनन करत भयो । २०१ ॥

दो० । मरहा बिगत भाकु कपि सब चाये प्रभु पाव ।  
 निशिचर सकल रावनाहिं खेरि रहे अति पाव । २०२ ॥

चौ० । तेहि निधि मरं सीता पदं जाई । चिजटा कहि सब कथा सुनाई ॥  
 सिर भुज वाडि सुगत रिपु कोरी । सीता उर भर पाव घनेरी ॥  
 मख मलीन उपजी मन चिंता । चिजटा सन बोलो तब सीता ॥  
 होइहि कथा कहसि किन माता । कहि विधि मरिहि बिलकुलदाता ॥  
 रघुपति घर किर कटेज न मरई । विधि बिपरीत चरित सब करई ॥  
 मोर जभाय सिखावत बोहो । जे हरौ हरि पद कमल बिलोहो ॥  
 जेहि हत कनक कपड खन छूटा । खज्ज सो देव मंदि पर छूटा ॥  
 जेहि विधि मोहि दुख दुख कहाइ । कहिमन कबं कटु कथन कहाइ ॥

रघुपतिविरह सखिचर करी । तकि तकि मार मार बड़ करी ॥  
 हेमउ दुख जो बासु मम माना । होर बिधि ताहि विवाह माना ॥  
 बड़ बिधि करति विवाह जानकी । करि करि कर्नात कृपामिधान की ॥  
 कह बिजटा वनु राजकुमारी । उर भर कामत करी सुगरी ॥  
 प्रभु ताते उर हनहि न लो । रहि के हृदय बसति बेदेही ॥

१० । रहि के हृदय बस जानकी जानकी उर मम बाह है ।  
 मम उर सुवन अनेक सागन बाग सब कर बाह है ॥  
 सुनि बचन हरष विषाद मग प्रति देखि पुनि बिजटा कहा ।  
 अब मरिहि रिपु रहि बिधि सुनि सुहरि तजहि बचन कहा ॥१४॥

ते० । काटत विर होरहि बिकल कुटि जा रहि तब जान ।  
 तब रावनहि के हृदय मउ मरिहहि राम सुजान ॥६॥

हो० । अब कहि बज्र भाति समुझाई । पुनि बिजटा निज भवन सिधायी ॥  
 राम सुभाव सुमिरि बेदेही । उपजी विरहदया प्रति तेही ॥  
 निशिहि सखिहि निंदति बड़ भांति । युग सम भई विराति न रातो ॥  
 करति विलाप मनहि मग भारी । राम विरह जानकी दुखारी ॥  
 जब प्रति भयेउ विरह उर दाह । परकल बाम मथन चह दाह ॥  
 सगुन विचारि धरी मन धोरा । अब मिलिहहि कृपासु रघुवोरा ॥  
 दहाँ अहँ निशि रावन जाना । निज मारिय सन कोछन जाना ॥  
 मठ रनभूमि कड़ाएनि मोही । धिग धिग अधम मंदमत तोही ॥  
 तेहिपद गहि बड़ बिधि समुझावा । भोर भये रघु बहि पुनि भावा ॥  
 सुनि सागमन दसानन केरा । कपिदल खरभर भदल चनेरा ॥  
 जह तह भूधर बिटप उपारी । धाये कटकटाइ भट भारी ॥

हं० । धाये जो मकट बिकट भासु करास कर भूधरधरा ।  
 प्रति कोप करहि प्रहार मारत भजि सखे रजनीधरा ॥  
 बिचलार दल बलबल कोसन घेरि पुनि रावन लियो ।  
 बड़ दिशि चपेठनि मारि मखनि बिदारि तन बाहुन लियो ॥१५॥

रो० । देखि महा मरकट प्रबल रावन कीच विचार ।  
 अंतर हित होर निमिष मह कृत मायाविहार ॥ ८० ॥

कह्य तोमर ।

जब कीच तेहि पाचंड । भये प्रगट जंतु प्रचंड ॥  
 बैलाख भूत पिपाच । कर धरे धनुमाराच ॥  
 योनिनि मंद करवाच । दक दाव जनम कपाच ॥  
 करि बल कोनित पान । मारहि करहि बड़ मान ॥  
 धर नाह कोकहि थोर । रहि पुनि युनि बड़ थोर ॥  
 मख बाह बाहहि जान । तन कमी कीच करान ॥

मयं माहिं मर्यद माहि । तयं वरत देवहि माहि ॥  
 भवे विकल सनर भाव । पुनि सान माहि बाव ॥  
 ययं तयं यकित करि कोय । मरजोर मरुति दहयोय ॥  
 कहिमन कपीय वसेत । भवे सकल मीर अचेत ॥  
 हा राम हा रघुनाथ । कहि सुभट मीरहि हाथ ॥  
 एहि बिधि सकल वल तोरि । तेहि कोन कपट बहोरि ॥  
 प्रगटेसि बिपुल हनुमान । धाये गये पाषाण ॥  
 तिन्ह रामं चरे जाइ । चहुं दिशि बहय बनार ॥  
 मारुत धरुत जनि जाइ । कटकटहि पूंछ उठार ॥  
 दहदिसि संगूर विराज । तेहि मध्य कोसलराज । २६ ॥

कं० । तेहि मध्य कोसलराज सुन्दर स्यामतन सोभा लखी ।  
 जनु इन्द्रधनुष अनेक की बर बारि तुंग तमाखही ॥  
 प्रभु देखि हरष बिषाद उर सुर बदत जय जय जय करी ।  
 रघुबोर एकहि तीर कोपि निमेष मयं माया हरी ॥  
 मायाविगत कपि भालु हवै बिटप गिरि गहि सब फिरे ।  
 मरनिकर छाड़े राम रावनबाहुमिर पुनि महि गिरे ॥  
 लीरामरावनसमरचरित अनेक कल्प जो गावहीं ।  
 सत मेष सारद निगम कवि तेउ तदपि पार न पावहीं । २७ ॥

दो० । ताके गुनगन कहू कह जइमति तुलसीदास ।  
 जिमि जिज बल अनुरूप तं माहो उठै अकास ॥  
 काटे मिर भुज बार बड मरत न भट लंकैस ।  
 प्रभु कोइत मुनि भिदु सुर व्याकुल देखि कलैस । २८ ॥

चौ० । काटत बड़हि सोयसमुदाई । जिमि प्रतिलाभ लोभअनि काई ॥  
 मरै न रिपु सभ भयउ बिसेषा । राम बिभोषनतन तब दे ॥  
 उमा काळ मर जाकी ईका । सो प्रभु जन कर प्रीति परोका ॥  
 सुन सर्वज्ञ पराचरनाथक । प्रनतपाळ सुर मुनिसुखदायक ॥  
 नाभिकुण्ड पियूष बर था के । नाथ जियत रावन बल ता के ॥  
 सुनत बिभोषनवचन छपाळा । हरषि गये कर वान कराळा ॥  
 असुभ होन खने तब नावा । रोवहिं खर खगल बड खाना ॥  
 बोलहिं खग जनचारनिहेठ । प्रगट भये नभ जइ तयं कोठ ॥  
 दहदिसि दाह होन अति खाना । भयउ पर्व बिनु रविचपराना ॥  
 मंदोदरिउर कंषति भभी । प्रतिमा खवहिं नखनजन वारी ॥

कं० । प्रतिमा दहहि पविपात नभ अति बात बह डोलति लखी ।  
 बर्हीव बहाईक दधिर कच रच असुभ अति बक को कहो ॥

पुनःपुनः कर्मिणः विद्योतिषु नमः पुनः विद्योतिषु नमः पुनः विद्योतिषु नमः ;

सुखं यन्मया कृतं तस्मात्तु प्रयुज्यते चाप्यसहजो हतः कथं । ३० ॥

१० । खेचि पराधन कवन कनि हाडे मर एकनीस  
रघुनाथकहाचक चले मानहुं कास फनीस । ८८

रघुनाथकदाचन चले मानहुं काल प्रतीक । ८८

॥० । सायक एक नामिअर सोवा	। अवर जगे बिर भुज करि रोवा	॥
लै मिर बाऊ चले नाराचा	। बिरभुजहीन दंड मरि नाचा	॥
धरनि धरै धर धाव प्रचंडा	। तब वर इति प्रभु कुत युग खंडा	॥
गजेंड मरत घोर रव भारी	। कहाँ राम रन इतौ प्रचारी	॥
डोली भूमि मिरत दयकंधर	। कुमित सिंधु बरि दिग्याल भूधर	॥
धरनि परेख दौ खंड बहाई	। पावि भासुमकंटकमुदारी	॥
मंदोदरि आगे भुज सोसा	। धरि वर चले जहां जगदीसा	॥
प्रविसे सब निषंग महं जाई	। देखि वरनंद दुखुभो बजारी	॥
तासु तेज समान प्रभुआनन	। वरये देखि मधु पातुगानन	॥
जय जय धुनि पूरी जगहा	। जय रघुवीर प्रबलभुजहा	॥
वर्षाई समन देवसुनिट्ट्या	। जय कपाल सब जयति मकुन्दा	॥

कथं ।  
 जय कृपाकन्दं मकुन्द दृढहरण वरन सुखप्रद प्रभो ।  
 खलदलविदारन परमकारन काह्नोक्त वदा विभो ।  
 सुर सुमन वरवाहिं हरण संकुल बाज दुन्दुभि गङ्गहो ।  
 संग्रामशङ्कन रामशङ्क शनैः शनैः शनैः शनैः ।  
 मिरजटासुकुट प्रसून विषविष शक्ति मनोहर राजहो ।  
 जनु नीलगिरि पर तडित पटल समेत छत्रमण भाजहो ।  
 भुजदंड सर कोदंड फेरत दधिरकन तन शक्ति वने ।  
 जगदायमनो तमास पर बैठी विपल सुख पापने । ११

दो० । कृपादृष्टि करि दृष्टि प्रभु प्रभय किये सुरद्वन्द ।  
भास कोस सब हरषे जय मुखधाम मुकुन्द । १०० ॥

चौ० । पतिविरहं दूखत मंदोदरी	। मुरझित विकस धरनि कंसि परी ॥
युवतिहृद रोषति उठि धारि	। तैवि चढाह रावन पडि चारि ॥
पतिगति देखि ते करहिं पुकारा	। छूटै कच गहि बधुव संभारा ॥
उर ताड़ना करहिं बिधि नाना	। रोषत करहिं प्रतापबकाना ॥
तव बस नाथ डोल नित धरनी	। तेजसीव पावक बनि तपनी ॥
सेव कमठ बहि बकहिं न भारा	। सो तनु भूमि परे भरि क्षारा ॥
बदन कुवेर सुरेव समीरा	। रन कलक धर काज न धीरा ॥
भुजबल जितेऊ कास यम चारि	। चाकु परेऊ चमत्त की चारि ॥



जगत विदित तुम्हारी प्रसुताई । सुत परिक्रम बस बरनि न जाई ॥  
 राम विमुख अब बास तुम्हारा । रहा न सुख कोउ रोकनिहारा ॥  
 तब बस विधिप्रपञ्च सब सोचा । सभे दिगिप नित नावहिं माथा ॥  
 अब तब फिर भुज जंकुल खोली । राम विमुख यह अनुचित सोही ॥  
 कालविवश पति कहा न माना । अमजगनाथ मनुज करि जाना ॥

इ० । जानेहु मनुज करि हनुजकामनदहनपावक हरि स्वयं ।  
 जेहिं नमत शिवब्रह्मादि सुर पिय भजेहु नहि कहनामयं ॥  
 आज्ञा तें परद्रोहरत पापौघमय तब तन अर्थ ।  
 तुमहें दियो निज धाम राम नमामि ब्रह्म निरामयं । ३२ ॥

दो० । अहह नाथ रघुनाथ हम छपामिंधु नहि आन ।  
 योगिहृद दुर्लभ गति तोहि दोन्हि भगवान । १०१ ॥

चौ० । मंदोदरीवचन मुनि काना । सुर मुनि सिद्ध सबन्हि सुख माना ॥  
 अज महिम नारद वनकादी । जे मुनिवर परमारथवादी ॥  
 भरि सोचन रघुपतिहिं निहारी । प्रेममगन सब भये सुखारी ॥  
 रुदन करत देखी सब भारी । गयेउ बिभोषन मन दुख भारी ॥  
 बंधुदमा बिलोकि दुख कीन्हा । तब प्रभु अनुजहिं आयुम दोन्हा ॥  
 लक्ष्मिन तेहि बहू विधि समुझायो । बहुरि बिभोषन प्रभु पहिं आयो ॥  
 कृपादृष्टि प्रभु ताहि बिलोका । करहु क्रिया परिहरि सब भोका ॥  
 कोन्हि क्रिया प्रभुआयुम मानो । विधिवत देमकाल जिय जानो ॥

दो० । मंदोदरी आदि सब देह तिलाञ्जलि ताहि ।  
 भवन गई रघुपति मुनमन बरनति मन माहि । १०२ ॥

चौ० । आद बिभोषन पुनि सिह नाथो । कृपामिंधु तब अनुज बलायो ॥  
 तुम कपोस अंगद नल नोला । जामवन्त माहति नयधोला ॥  
 सब मिलि जाहु बिभोषन साथी । सारेहु तिलक कहेउ रघुनाथा ॥  
 पितावचन मै नगर न आवौ । चाप सरिस कपि अनुज पठावौ ॥  
 तरत सखे कपि मुनि प्रभुबचना । कोन्हो आद तिलक की रचना ॥  
 सादर सिंहासन बैठारो । तिलक सारि अमृति अनुसारी ॥  
 जोरि पानि सबहो फिर नाथे । सहित बिभोषन प्रभु पहिं आथे ॥  
 तब रघुबीर बोलि कपि सोन्हे । कहि प्रिय बचन सुखी सब कीन्हे ॥

इ० । किये सुखो कहि जानो सुधा सम बस तुम्हारे रिपु दहो ।  
 पाथी बिभोषन राज तिहुं पुर अब तुम्हारी नित नथो ॥  
 सोहि सहित सुभ कीरति तुम्हारी परम प्रीति जो नारहो ।  
 वंशारविंधु अपार बार प्रयास विन नर पादहो । ३३ ॥

१० । प्रभु के वचन सुन सुनि नहिं चचाहिं कसिपुत्र ॥  
बार बार खिन्न नहिं नहिं सकल सकल ॥ १०३ ॥

१० । पुनि प्रभु बोखि लिये हनुमाना । संका जाऊ कहै भगवाना ॥  
समाचार आनकिहि सुनावऊ । तासु कुसल कै तुम बलि आवऊ ॥  
तब हनुमान अंगर महं धाये । सुनि निमिचरी निवाचन धाये ॥  
बहु प्रकार तिन्ह पूजा कीनी । जनकसुता दिखाइ पुनि दीनी ॥  
दूरिहि तैं प्रनाम कपि कीन्हा । रघुपतिदूत आनको चीन्हा ॥  
कहऊ तात प्रभु कृपानिकेता । कुसल अंगुल कपिसेन समेता ॥  
सब विधि कुसल कोसलाधीसा । मातु समर जोयो दबसीसा ॥  
अबिसल राज बिभोवन साधो । सुनि कविबचन हरष हर कायो ॥

१० । अति हरष मन तन पुलक लोचन सजल कह पुनि पुनि रमा ।  
का देख तोहिं बिलोक महं कपि किमपि नहिं बागो समा ॥  
सुनु मातु मै पायो अखिल जगराज आजु न संख्यं ।  
रन जोति रिपुदल बंधुयुत पत्नीमि राम नमामयं । १०४ ॥

१० । सुनु सुत सद्गुन सकल तब हृदय बधऊ हनुमंत ।  
सानुकुल कोसलपति रहऊ समेत अनंत । १०५ ॥

चौ० । अब सोइ जतन करऊ तुम ताता । देखौ नयन आमभूदगाता ॥  
तब हनुमान राम पहिं आई । जनकसुता की कुसल सुनाई ॥  
मुनि संदेस भानुकुलभूषन । बोखि लिये जुबाराज बिभीषन ॥  
मातुसुत के संग सिधावऊ । सादर जनकसुता लै आवऊ ॥  
तुरतहि सकल गये अहं सीता । सेवहिं सब निमिचरी बिनीता ॥  
बेगि बिभीषन तिन्हहिं सिखायो । तिन्ह बहु बिधि मज्जन करवायो ॥  
बहु प्रकार भूषन पहिराये । सिविका बचिर साजि पुनि ध्याये ॥  
ता पर हरषि चढ़ी बैदेही । सुमिरि अवधपति परम समेही ॥  
बेतपानि रणक चऊ पाया । चले सकल मन परम ऊलासा ॥  
देखन भालु कीम सब धाये । रणक कोपि निवारन धाये ॥  
कह रघुबीर कहा मम मानऊ । सोताहि यथा प्रयादे आनऊ ॥  
देखऊ कपि अनवी की नार्ह । बिहसि कहा रघुनाथ गुसाई ॥  
सुनि प्रभुवचन भालु कपि हरषे । नभ तैं सुरन्ध सुमन बहु बरषे ॥  
सीता प्रथम अंगल महं राखी । प्रगट कोन यह अंतर बाखी ॥

दो० । तेहि कारण कहनानिधि कहे कहक दुर्वाद ।  
सुगत जासुधानो सब लागीं करन निवाद । १०६ ॥

चौ० । प्रभु के वचन सीस करि सीत । सीसी मन कम नचन पुनीता ॥  
 सहिमन होऊ चम को गोरो । पावक प्रगट करतु सुख को ॥  
 मुनि सहिमन सीता के बागो । विरह विवेक भ्रमन चखायो ॥  
 सोचन रामस करि कर होऊ । प्रभु सब कहु कहि सकल स जोऊ ॥  
 देखि रामस सहिमन भास । पावक प्रगट काठ बड सास ॥  
 पावक प्रगट देखि बैदेही । हृदय हरष गहि भय कहु तेही ॥  
 जौ मन बच कम कम कर माहीं । तजि रघुबीर आग गति माहीं ॥  
 तौ कृपानु सब कै मति जाना । मो कह होऊ सोखंड समाना ॥

हं० । सीखंड कम पावक प्रगट कियो सुमिरि प्रभु मैथिली ।  
 जय कीर्तन महेकव दितचरण रति अति निर्मली ॥  
 प्रतिबंध यह सौकिक कलंक प्रचंड पावक महं जरे ।  
 प्रभु चरित काऊ न लखे सुर मुनि बिहू सब देखि परे ॥  
 धरि रूप पावक पानि गहि स्त्री मत्य स्तुति जननि न जो ।  
 जिमि कोरसागर रदिरा रामहि सज्जपि आनि सो ॥  
 सो रामबामविभाग राखति रुचिर अति सोभा भली ।  
 नव नील कोरज निकट मानऊ कमकर्मकम की कली । २५ ॥

हो० । वरपाहिं सुमन हरषि सुर बाजहिं गमन निशान ।  
 गावहिं किन्नर सुरवधू नाचहिं चटो बिमान ॥  
 जनकसुता समेत प्रभु सोभा अमित अपार ।  
 देखि भालु कपि हरष जय रघुपति सुखसार । २६ ॥

चौ० । तब रघुपति अनुबाधन पाई । मातलि खड्ड चरण बिर लाई ॥  
 आये देव मदा स्वारथी । वचन कहहिं जनु परमारथी ॥  
 दोनवधू दयाल रघुराया । देव कीन्ह देवन पर दाया ॥  
 बिस्वद्रोहरत यह खल कामी । निज अघ गयउ कुमारगामी ॥  
 तुम समरूप ब्रह्म अविनाशी । सदा एकरस सहज उदासी ॥  
 अकल अगुन अज अनघ अनामय । अजित असोच सति कहनामय ॥  
 मोन कमठ सुकर नरहरौ । बामन परसु रामवपु धरौ ॥  
 जब जब नाथ सुरन्ह दुख पावो । माना तनु धरि तुम्हहि नखावो ॥  
 यह खल मलिन सदा सुरद्रोही । कामलोभमदरत अति कोही ॥  
 अधम विरोमनि तव यह पावा । यह हमरे मन बिखाव आवा ॥  
 हम देवता परम अधिकारी । स्वारचरत प्रभुभक्ति मिथारी ॥  
 भवप्रवाह समेत हम परे । अब प्रभु पाहिं बरन चलसरे ॥

हो० । करि विनती सुर बिहू सब रहे कहं लंड कर जोरि ।  
 अतिसम मन पुकारि विधि अस्तुति करन बहोरि । २७ ॥

जय राम कृष्ण सुधाभास हरे । रघुनाथक सायकस्यधरे ॥  
 भववारन सुखसिंहि प्रसो । गुनवागद वागद वाच विप्रो ॥  
 तन काम कालेक समुप हरो । गुन वाचत चिह्न सुनिन्द कवी ॥  
 जय पावन राखन भाव कदा । खगनाथ सदा करि कोप कदा ॥  
 जनरंजन भजन लोकभय । गतक्रोध सदा प्रभु बोधमय ॥  
 अवतार सदा अपरमेश्वर । महिभारविभक्त्य ज्ञानमय ॥  
 अज व्यापकमेकमयादि सदा । कदनाकर राम नमामि सुदा ॥  
 रघुवंश बभूवन् दूषणदा । कृत भूय विभोवन् दीव्य सदा ॥  
 गुनज्ञाननिधान ज्ञानायक । नित राम नमामि विभु विरच ॥  
 भुजदंड प्रचंड प्रतापवन् । खलहृन्दनिर्धर महाकुलवन् ॥  
 विनु कारन दीनदयालु हित । कृषिधाम कल्याणि रक्षाधरित ॥  
 भवतारन कारनकाजपर । मनुष्यभय दाहकदीपधर ॥  
 सर चाप मनीहर शीघ्र धर । जलजाह्नलोत्पन्न भूषण ॥  
 सुखमंदिर सुंदर स्वरामन । मद मार सुभा समसाधन ॥  
 अनवर्य अखंडन गोचरगो । सबरूप सदा सब होइ न गो ॥  
 इति वद वदति नदति कथा । रविचातप भिन्न न भिन्न कथा ॥  
 कृतकृत्य विभो सब वागद ये । निरखंति तवानन वादर ये ॥  
 धिक जोवन देवसरीर हरे । तव भक्ति बिना भव भूषि परे ॥  
 अब दीनदयालु दया करिये । मति मोरि विभेदकरी हरिये ॥  
 जेहि तें विपरीत क्रिया करिये । दुख सो सुख जानि सुखी हरिये ॥  
 खलखंडन मंडन रम्य कमा । पदपंकजधरित धनु कमा ॥  
 नृपनाथक दे वरदानमिदं । परनाम्न प्रेम सदा सुमदं ॥२६॥

दो० । विनय कीन्ह चतुरांगन प्रेम पुलक अनि गात ।

सोभा सिंधु बिलोकत लोचन नहीं चयात । १०८ ॥

चौ० । तेहि अवसर दसरथ तहं पाये । तनय बिलोकि गयन कल हाये ॥  
 अनुज सहित प्रभु बंदन कीन्हा । आशिरवाद पिता तब दीन्हा ॥  
 तात सकल तव पुष्टप्रभाज । जीयो अजय निशाचरराज ॥  
 सुनि सुतवचन प्रीति अति बाढ़ी । गयन सज्जल रोमावलि ठाढ़ी ॥  
 रघुपति पितहि प्रेमवचन जाना । चिते प्रथम दोनेउ दृढ़ जाना ॥  
 ता तें उमा मोच्छ नहि पायो । दसरथ भेद भक्ति मन जायो ॥  
 समुपपासक मोच्छ न लोही । तिन्ह कर्ष नाम भक्ति निज दीही ॥  
 बार बार करि प्रसुचि प्रनामा । दसरथ हरवि गये सुर धामा ॥

दो० । अनुज जानकी सहित प्रभु कुपक कोठलापीव ।

सोभा देखि हरवि मन चसुनि कर वुरईव । १०८ ॥

## इन्द्र तोमर ।

जय राम सोभाधाम	। दासक प्रगत विस्राम	॥
धृत चोम वर सर चाप	। भुजदंड प्रबल प्रताप	॥
जय दूषणारि खरारि	। मर्दन निशाचर धारि	॥
यह दृष्ट मारे नाथ	। भय देव सकल सनाथ	॥
जय हरन धरनोभार	। महिमा उदार अपार	॥
जय रावणारि कृपाक्ष	। किये मातृधाम विहास	॥
लंकेश अतिबल गर्व	। किये बल सुर गंधर्व	॥
मुनि सिद्ध खन नर नाम	। हठि पंच सब के लाग	॥
पर द्रोहरत अति दुष्ट	। पायो सो फल पापिष्ट	॥
अब सुनऊ दोनदयाल	। राजीवनयनबिसाल	॥
मोहिं रक्षा अति अभिमान	। नहि कोउ मोहि समान	॥
अब देखि प्रभुपदकंज	। गतमान प्रद दुखपुंज	॥
कोउ ब्रह्म निर्गुन ध्याव	। अत्यक्त जेहि स्तुति गाव	॥
मोहि भाव कोसलभृप	। स्त्रीराम सगुन स्वरूप	॥
बैदेहि अनुज समेत	। मम हृदय करऊ निकेत	॥
मोहि जानिये निजदास	। दे भक्ति रमानिवास । ३०	॥

कं० । दे भक्ति रमानिवास वासहरन सरनसुखदायक ।  
 सुखधाम राम नमामि कामअनेकहवि रघुनायक ॥  
 सुरहृन्दरंजक इंदभंजन मनुजतनु अतुलितबलं ।  
 ब्रह्मादिसंकरसेव्य राम नमामि कहनाकोमलं । ३८ ॥

दो० । अब करि कृपा बिलोकि मोहि आयसु देऊ कृपास ।  
 काह करौ मुनि प्रिय वचन बोले दोनदयाल । ११० ॥

चौ० । सुनु सुरपति कपि भालु हमारे । परे भुनि निशिरन्ध जे मारे ॥  
 मम हित लागि तजे इन्ह प्राणा । सकल जियाउ सुरेस सुजाना ॥  
 सुनु खगस प्रभु कै यह बानी । अति अगाध जानहिं मुनि ज्ञानी ॥  
 प्रभु सक निभुवन मारि जियार्द । केवल सकहिं दोनि बहार्द ॥  
 सुधा वरषि कपि भालु जिजाये । हरषि उठे सब प्रभु पद पाये ॥  
 सुधाहृष्टि भै दुज दख ऊपर । जिधे भालु कपि नहिं रजनीचर ॥  
 रामाकार भये तिन के मन । मुक्त भये छूटे भवबंधन ॥  
 सुरअधिक सब कपि यह रोका । जिधे सकल रघुपति की ईका ॥  
 रामवरिस को दीनहितकारी । कोन्ह मुक्त निशाचर धारी ॥  
 खल मलधाम कामरत रख्यन । नति पारि ओ मुनिवर पावन ॥

सुमन वरवि सब सुर चक्षे चहि चहि हरिचर विमान ।  
 देखि मु खखर राम कहि आवे संभु मुजान ॥  
 परम प्रीति कर ओरि युग नखिन नयन भरि बारि ।  
 पुलकित तन गदगद गिरा विनय करत चिपुगारि । १११ ॥

इन्द ।

मामभिर चक्षु रघुकुलनाथक । धृत वर चाप हरिचर कर मायक ॥  
 मोह महाघनपटल प्रभंजन । संसयविपिन घनल सुररंजन ॥  
 अगुन बगुन गुनमंदिर सुंदर । भ्रम तम प्रसन्न प्रताप दिवाकर ॥  
 काम क्रोध मद मग पंचानन । बसहु निरंतर जनमन काजल ॥  
 विषय मनोरथपुच्छ कंजबन । प्रबल तुषार उदार पारमन ॥  
 भव बारिध मंदर परमंदर । बारघ तारघ संसृति दुखार ॥  
 स्वामगात राजीवबिखोचन । दोनबंधु प्रनतारतिमोचन ॥  
 अनुज जानकी महित निरंतर । बसहु राम रुप मम उर चंतर ॥  
 मुनिरंजन महिमंडलमंडन । तुलसिदाम प्रभु चाकबिखंडन । ११२ ॥

० । नाथ जबहिं कोमलपुर होइहि तिलक तुम्हार ।  
 कृपासिंधु मै आवत देखन चरित उदार । ११२ ॥

० । करि बिनती जब संभु सिधाये । तब प्रभु निकट बिभीषन आवे ॥  
 नाद चरन धरि कछु मृदुबानी । बिनय सुनहु प्रभु सारंग पानी ॥  
 मकुल सदल प्रभु रावन माछो । पावन अछ बिभूषन बिसाखी ॥  
 दोन मखोन होनमति जानो । मो पर कृपा कीन्ह बज्र भीतो ॥  
 अब जनगृह पुनोत प्रभु कीजै । मखन करिष बमर खन कीजै ॥  
 देखि कोष मंदिरसंपदा । देखु कृपालु कपिल कहि मुदा ॥  
 सब विधि नाथ मोहिं अपनादय । पुनि मोहिं सहित अवधपुर जादय ॥  
 सुनत बचन मृदु दोनदयाला । सजल भये दोउ नयन बिसाखा ॥

१० । तोर कोष गृह मोर सब सत्य बचन सुनु आत ।  
 भरत दया सुमिरत मोहि निमिष कल्प सम जात ॥  
 तापसभेष जात कृष अथ निरंतर मोहि ।  
 देखौं बेनि यो कतम कह सखा निहोरों तोहि ॥  
 बीते अवधि जासुं जौं निघत न पावहुं कोर ।  
 सुमिरत अनुजप्रीति प्रभु पुनि पुनि पुनक-वरीर ॥  
 करहु कल्प अरि राख दुख मोहि सुमिरेहु अन्न माहि ।  
 पुनि अन्न खाक सदसुख जहां सत सब जाहि । ११३ ॥

चौ० । सुनत विभोषन बचन राम के । हरहि गहे सब कृपाधाम के ॥  
 बानर भाखु सकल हरषामे । प्रभुपद नहि सुन बिमल बखाने ॥  
 बज्ररि विभोषन अवन सिधाये । मनिगन बचन विमान भराये ॥  
 लै पण्यक प्रभु आनि राधा । हंसि कै कृपामिधु तब भाषा ॥  
 चरि विमान सुन बखाने विभोषन । गगन जाइ बरषु पट भुवन ॥  
 नभ पर जाइ विभोषन तबहीं । बरि दिखे मनि अंबर सबहीं ॥  
 जोइ जोइ मन भावै सोइ सोहीं । मनि मुख मलि करि कपि देखीं ॥  
 हंस राम ली अनुक समेता । परम कौतुकी न निकेता ॥

दो० । मनि जेहि ध्यान न पावहि नेति नेति कह वेद ।  
 कृपामिधु जोइ कपिन्ह सन करत अनेक बिगोद ॥  
 समा योग अप दान तप जाना व्रत मख नेम ।  
 रामकृपा नहि करहि तसि अस निखेवस प्रेम । ११४ ॥

चौ० । भाखु कपिन्ह पट भुवन पाये । पहिरि पहिरि रघुपति पाहि आये ॥  
 जाना जिनिय देखि सब कोसा । पुनि पुनि हंसत कोसलाधोषा ॥  
 चितै सबनि पर कोनो दाया । बोले मधुर बचन रघुराया ॥  
 तुम्हरे बख मै रावन माखो । तिलक विभोषन कह पुनि साखो ॥  
 निज निज गृह अब तुम सब जाह । समिरेऊ मोहि डरपेऊ अनि काह ॥  
 सुनत बचन प्रेमाकुल बानर । ओरि पानि बोले सब सादर ॥  
 प्रभु जो कहऊ तुमहि सब बोहा । हमरे हेत बचन सुनि मोहा ॥  
 दोन जानि कपि किये सनाया । तुम्ह वैकोकरैस रघुनाथा ॥  
 सुनि प्रभुबचन आज हम मरहीं । मयक कहूँ खगपतिहित करहीं ॥  
 देखि रामरस बानर रोका । प्रेममगन नहि गृह कै रंका ॥

दो० । प्रभुप्रेरित कपि भाखु सब रामरूप छर राखि ।  
 हरष बिषाद सहित बखे बिनय विविध विधि भाषि ॥  
 कपिपति नोख रोकपति अंगद नल हनुमान ।  
 सहित विभोषन अपर जे युथप कपि बखवान ॥  
 कहि न सकहि कहु प्रेमकर्म भरि भरि सोचन बारि ।  
 समुख चितवहि राम तन मयन निमेष निवारि । ११५ ॥

चौ० । अतिवय प्रीति देखि रघुराई । लोन्है सकल विमान चढाई ॥  
 मन मंह विप्रचरन छिरे भाषी । उत्तर दिशिहि विमान चलायो ॥  
 चलात विमान कोकाइल होई । जब रघुवीर कहै सब कोई ॥  
 सिंहासन प्रति उख मनोहर । जो समेत बैठे प्रभु ता पर ॥  
 राजत राम सहित कामिनी । मेहखुलु अनु अब हामिनी ॥  
 हरि विमान बखेउ प्रति जातुर । कोनो सुमनहृष्टि हरषे सुर ॥

राम सुखद वसि विविध वसाहो । वनेर हर हरि निर्मलकारी ॥  
 प्रगुन होहि सुंदर पञ्च प्रकाश । वनवसि निर्मल नम साका ॥  
 कह प्रभुबीर देखु रत्न सोमा । वसिजन रत्न वसो रत्नबीता ॥  
 हनुमान अंगद के मारे । रत्न मरि परे विवाहर भारे ॥  
 कुम्भकरन रावन दोष भाई । रत्न वनेच सुरमुनिदुखदाई ॥

० । रत्न वसु बाँधो वर वसने विन सुखधाम ।  
 सीता सहित कृपाविध संभुधि कीन्ह प्रनाम ॥  
 जहं जहं कृपाविधु वन कीन्ह वास विनाम ।  
 सकल देखावे जानकिहि कहै वसन्ति के नाम । ११५ ॥

१० । तुरत विमान तहाँ वसि जावा । दंडकवन जहं परम सुखावा ॥  
 कुम्भजादि मुनिनाथक भाँजा । गये राम सब के सखावा ॥  
 सकल वसिन्ध वन पाँद असीवा । चिचकुट भावे सगदीवा ॥  
 तहं करि मुनिन्ह करे बंतोवा । पक्षा विमान तहां न सोवा ॥  
 बज्ररि राम जानकिहि दिखाई । यमुना कसिनसहरनि सुहाई ॥  
 पुनि देखो सुरचरी पुनीता । राम कहा प्रनाम कह सीता ॥  
 तोरयपति पुनि देखु प्रकाश । निरखत जगैकौटिचय भाँजा ॥  
 देखु परम पावनि पुनि बेनी । हरमिषोक सुरसोकनिबेनी ॥  
 पुनि देखु अवधपुरी अति पावनि । चिचिधताप अवरोम नवावनि ॥

१० । सीता सहित अवध कहं कीन्ह कृपाव प्रनाम ।  
 सकल मयन तम पुनकिंत पुनि पुनि हरवित राम ॥  
 पुनि प्रभु आर चिबेनी हरवित मयन कीन्ह ।  
 कयिन्ह सहित निग्रह कहं दान विविध विधिदीन्ह । ११७ ॥

१० । प्रभु हनुमन्नाहि कहा बुझाई । धरि बटुरूप अवधपुर काई ॥  
 भरतहिं कुसल हमार सुनायेउ । समाचार सै तुम वसि जायेउ ॥  
 तुरत पवनसुत गवनत मयल । तब प्रभु भरदाज पहिं मयल ॥  
 गावा विधि मुनि पूजा कीन्ही । अस्तुति करि पुनि आविष दीन्ही ॥  
 मुनिपद बहिं सुगंध कर जोरी । पढ़ि विमान प्रभु पक्षे बहोरी ॥  
 रत्न निवाह सुना प्रभु भावे । नाव भावे कह लोग बुझाये ॥  
 सुरचरि काँचि जान जव आयो । उत्तरेउ तट प्रभुभावसु पायो ॥  
 तब सीता वनी सुरचरी । बज्र प्रकार पुनि चरननि परी ॥  
 दीन्ह अयोधे हरवि मय मीमा । सुंदरि तब वसिवात यमना ॥  
 सुनत मुवा आयो प्रेमाकुश । भावे निकट परम सुखसुख ॥  
 प्रभुहि सहित निखोकि बैदेही । परेउ अवनि तब सुधि भाई तेही ॥  
 परम प्रीति निखोकि रघुदाई । हरवि सडाइ विना हर काई ॥



६० । चित्तो हृदयं चारं कृपानिधानं सुखानं रामं रामायणी  
 पैठारि परमं स्त्रीरवली सुखं सो करी शीतली ॥  
 सब सुख प्रदं कज विद्योकि विरचि करै सेव्य जे  
 सुखधाम पूरन काम राम नमामि राम नमामि ते ॥  
 सब मोति केधम निषाद सो हरि भरत ज्यो हरि चारवो ।  
 मतिमंद तुलसीदास सो प्रभु मोहरव विहरावो ॥  
 यह रावनादिचरिच पावन रामपदरतिप्रद भदा ।  
 कामादिहर विज्ञानकर सु विद्व मणि गावहि मुदा । ४० ॥

६० । यमरविजय रघुवीर के चरित सुनाहिं सुमान  
 विजय विवेक विभूति नित तिनिहिं देखिं भगवान् ॥  
 यह कलिकाव मलायतन मन करि देखु विचार  
 श्रीरघुनाथ नाम तजि नाहिन आन अधार । ११८ ॥

इति श्रीरामचरितमानसे सकल कलिकलुषविध्वंसने ।

विमलज्ञानसम्पादनो नाम षष्ठः सोपानः ॥

समाप्तः ॥ \* ॥ \*

## अथ उत्तरकाण्ड ॥

श्लोक ॥

केकीकस्याभनीलं सुरवरविखसदिप्रपादाजचिह्नं ।  
 शोभाय्यं पीतवस्त्रं सरसिजनयनं सर्वदा सुप्रसन्नं ॥  
 पाणौ नाराचचापं कपिनिकरयुतं बन्धुना सेव्यमानं ।  
 नैमीशं जानकीशं रघुवरमनिशं पुण्यकाकुटरामं ॥ १ ॥  
 कोशलेन्द्रपदकञ्जमञ्जुलौ कमलयोनिमहेश्वरान्दितौ ।  
 जानकीकरसरोजसाक्षितौ चिन्तकस्य मग्नभङ्गसङ्गिनौ ॥ २ ॥  
 कुन्दइन्दुदरगौरसुन्दरं अम्बिकापतिमभीष्टसिद्धिदं ।  
 कारुण्योक्तकलकञ्जलौचनं नैमिशरुमनश्चमोचनं ॥ ३ ॥

श्लो० । रक्षा एक दिन अवधि कर अति आरत पुरकोय ।  
 कहं तहं सोचहिं नारि नर लघतनु रामविधोय ॥  
 सगुन होहिं सुंदर सकल मन प्रसन्न सब कोर  
 प्रभुआगमन जनाव जनु नगर रम्य चरुं फोर ॥  
 कौसल्यादिक मातु सब मन चमंद अस होर  
 आयेउ प्रभु सिध अमुकयुत कहन चहत सब कोर ॥  
 भरतनयनभुज दक्षिण पारकत बारहिं बार  
 जानि सगुन मन हरय अति जागे करन विचार ॥ १ ॥

श्लो० । रक्षेउ एक दिन अवधि अधारा । समुझत मन दुख भयउ अपारा ॥  
 कारन कवन नाच नहिं आयेउ । जानि कुटिल विधि मोहि बिहरायेउ ॥  
 अहह धन्य लक्ष्मिन बहु भानी । रामपदारविन्द अमरानी ॥  
 कपटी कुटिल मोहि प्रभु सोन्हा । ता ते नाच सङ्ग नहिं कोन्हा ॥  
 जौ करनी समझै प्रभु जीरी । नहिं निहार कल्प बल कोरी ॥  
 जगज्जगन प्रभु जान न काज । दीनबन्धु अति मृदुलसुभाज ॥  
 मोरे बिष भरोउ बूढ कोई । निखिहहिं राम गुनन सुख होई ॥  
 बीते अवधि रविहिं जौ जना । अथम कवन कन नहिं बजना ॥



जो जेहिहि तेहिहि छवि जागति । काकहनु कह सब मज्जाहारि ॥  
 एक एक करि कह कथा कहि । पुन देखि देवाचर पुराहि ॥  
 अवधपुरी प्रभु पावत जागि । करि बरज बोला के जागि ॥  
 भर बरज प्रति निमेष जागि । यहि बोलावनि विविध यमोरा ॥

० । प्ररहित मुख पुराण प्रभु प्रभु प्रभु प्रभु प्रभु ॥  
 चले बरज प्रति प्रेमजन ककुब कपाजिबोत ॥  
 बरजनि चली बरजनि निरकहि नमन विमान ॥  
 देखि मधुर बरज प्ररहित बरजि मुखन के नाम ॥  
 राकावधि रज्जुवति वृत्तिविंधु देखि बरजाने ॥  
 बहेठ कोठाइल करत जनु भारि तरन यमान । ॥

तौ । इहां भातकुचकमलदिवाकर । कपिल देखावत नगर मनोहर ॥  
 मुन कपीस संगद लकेसा । पावनि पुरी दक्षिण यह देवा ॥  
 यद्यपि सब वैकुण्ठ बखाना । वेदपुराणविदित सब जाना ॥  
 अवध पुरी सम प्रिय महि सोऊ । यह प्रसंग जानै कोऊ कोऊ ॥  
 जगभूमि मम पुरी सोझबनि । उत्तर दिशि यह बरज पावनि ॥  
 जा मज्जन में बिनुहि प्रधाया । मम मनोप पावहि नर बाया ॥  
 प्रति प्रिय मोहि इहां के बायी । मम धायादा पुरी मुकराबी ॥  
 हरये सब कपिमुनि प्रभुजानी । धन्य अवध जो राम बखानी ॥

तौ । आगत देखि सोन सब कृपाविंधु अनवाव ।  
 नगर निकट प्रभु प्रेरैउ उत्तरे भूमि विमान ॥  
 उत्तरि कहेउ प्रभु पुष्पकहिं तुम सुबैर पद जाऊ ।  
 प्रेरित राम बखैउ सो सब विरह प्रति ताऊ । ॥

चौ । आये भरत संग सब लोग । कृतानु सोरधुबीरविद्योमा ॥  
 वामदेव बसिष्ठ मुनिनायक । देखे प्रभु महि भरि धनु पायक ॥  
 धार धरे गुदचरन सरोवर । समुद्र बसित प्रति पुष्पक मनोहर ॥  
 भेंटि कुबज बृद्धि मुकुरादा । हमरे कुबज तुम्हारिहि दाया ॥  
 सकल विमान कहं नमस्तुताया । धरमधुधर वसुधुधरनाया ॥  
 नहे भरत पुनि प्रभुपदबंधक । नमत निमहिं बरकर पुर मुनि आज ॥  
 परे भूमि महि छठल छठाये । सब करि कृपाविंधु पर दाये ॥  
 आनक बात सोन सबे ठाये । नवराजीवननमन सब दाये ॥

हं० । राभीमकीवन सखत जल तनु सखित सुखकावलि बनी ।  
 अति प्रेम प्रवस कनक प्रभुसिद्धि मिले प्रभु प्रियुवनधनी ॥  
 प्रभु मिलित प्रभुसिद्धि योही जो पद जात प्रभु उपमा कही ।  
 अतः प्रेम प्रवस कनक तनु अति मिलित वर सुखमा कही ॥  
 वृक्षत कृपाविधि सुखसुख अतः हि वृक्षत जेनि न आवी ।  
 वनु सिवा ही सुख वचन मन ते बिबि ज्ञान जो पावै ॥  
 नव सुख को वृक्षतास अतः ज्ञानि ज्ञान दायन दिखौ ।  
 वृक्षत विरहवारी को वृक्षत निधान को वृक्षत करि कहि कहौ ॥ २ ॥

दो० । सधन चोर मन मुदितमन धनी नही जिनि जेट ।  
 तिमि सुधोव विभीषन प्रभुहि भरत की जेट ॥  
 पनि प्रभु वरपित वनुवन भेटे वरव वनाद ।  
 छद्मिन भेटे भरत पुनि प्रेम न वदथ समार ॥ ३ ॥

चौ० । भरतप्रभुज सखिमन तब भेटे । दुसह विरहसंभव दुख भेटे ॥  
 सोताचरन भरत खिर गावा । अनुज समेत परम सुख पावा ॥  
 प्रभु बिलोकि हरषे पुरवाही । अनित विधोग विपति सब नाही ॥  
 प्रेमातुर सब लोग निहारी । कौतुक कोन्ह कृपासु खरारी ॥  
 अमित रूप प्रगटे तेहि काखा । यथाजोग मिलि सबहि कृपाला ॥  
 कृपावृष्टि रघुवीर बिलोकी । किए सकल नर नारि विभोकी ॥  
 हन मंथ सबहि मिले भगवाना । उमा भरम प्रव काहु न जाना ॥  
 एहि विधि सबहि सुखी करि रामा । आगे सखे सीखगुनधामा ॥  
 कौसल्यादि मातु सब धार । निरखि बच्छ जनु धेनु कवाई ॥

हं० । जनु धेनु बालक बच्छ तजि टह परन मन पर बस ॥  
 दिन अंत पुरवस सवत धन उकार करि धावत भई ॥  
 अति प्रेम प्रभु सब मात भेटो वचन मृदु बड विधि कहे ।  
 गर विषम विपति बियोगभव तिन हरष सुख अगिगित कहे ॥ २ ॥

दो० । भेटत तनय सुमित्रा राम चरन रति जानि ।  
 रामहि मिलत कैकई वदथ वृक्षत वनुचानि ॥  
 छद्मिन सब मातन्व मिले हरषे आधिष पाद ।  
 कैकई कह पुनि पुनि मिले मन कर होम न बाद ॥ ३ ॥

चौ० । वासुध सबनि मिलो वैदेही । चरननि ज्ञानि हरष अति तेही ॥  
 देहि अकोव कछि सुखसाता । होख अचल तुम्हार अहिवाता ॥  
 सब रघुमति सुखकमल बिलोकिहि । मंगल ज्ञानि नमन जल राकहि ॥  
 कनकधार आरती कनारहि । बार बार प्रभु मात निहारहि ॥

नामा भांति निहावरि करहीं । परमावंद करव कर भरहीं ॥  
 कौसल्या पुनि पुनि रघुवीरहि । पितवति अपाधिं रघुवीरहि ॥  
 इदय विचारति बारहि बार । कमल भांति संकायति मारा ॥  
 यति सुकुमार सुगन्ध जे वारे । निशिचर सुभट अहावक मारे ॥

१० । कहिमन यह बीता रहित प्रभुहि विबोकि जात ।  
 परमाणद मगन मन पुनि पुनि पुनक्ति जात । ८ ॥

१० । संकायति कपीय यह मोखा । कामकंत कमल सुम मोखा ॥  
 हनुमदादि सब बाहर बोझ । धरे मनेहार मनुष्य बरोझ ॥  
 भरत मनेह सोख जत मेला । बाहर कर भरमहि अति मेला ॥  
 देखि नगरवाधिन्ह कै रोली । सकल प्ररायहि मनुष्यदोली ॥  
 पुनि रघुपति यह सखा मोखाह । मुनिपद कामकत सकल सिखाह ॥  
 गुह बसित सुखपूज्य हनारे । रघु को ज्ञा हनुमन्-रत्न हारे ॥  
 ए सब सखा सुगन्ध मुनि जेरे । भए समर कामर कर्क जेरे ॥  
 मम हित खानि ज्ञा हनु हारे । भरतज ते मोहि अधिक पिहारे ॥  
 सुनि प्रभुवचन मगन यह भए । निमिष निमिष अपगत सुख भए ॥

१० । कौसल्या के चरनन्ह पुनि तिन्ह नाएउ माय ।  
 आसिध दोन्ह हरपि तुन्ह प्रिय मम बिनि रघुनाथ ॥  
 \* सुमनहटि नभ संकुल भवन चले सुखकंद ।  
 चढी अटारिन्ह देखहि नगरनारि वर हंद । ८ ॥

चौ० । कंचन कलस विविध संवारे । सबहि धरे खनि निज निज हारे ॥  
 बंदनवार पताका केढ । सबनि बनाए मंगल चेढ ॥  
 दोघी सकल सुगंध सिचार् । मग्नमनि रचि बज्र सौक पुरार् ॥  
 नामा भांति सुमंगल बाजे । हरपि नगर निगान बज्र बाजे ॥  
 जह तह नारि निहावरि करहीं । देखि कपीय यह कर भरहीं ॥  
 कंचनधार चारती नामा । जवती यजे करहिं सुम नामा ॥  
 करहिं चारती चारतिहर के । रघुकुलकमलविपिन दिनकर के ॥  
 पुरखोभा संपति कल्याणा । निगम सेव चारदा बखाना ॥  
 तेउ हह चरित देखि ठगि रहहीं । उमा तासु मुन नर किमि कहहीं ॥

दो० । बारि कुमुदिकी अवध कर रघुपतिविरह हिलेव ।  
 यह भव विकसित कई निरपि राम राकेव ॥  
 कोहिं कयन सुम निविध विधि बाकहिं मगन निहाव ।  
 बुरवरनारि कमल करि भवन चले मगनाव । १० ॥

चौ० । प्रथम काशी बैरव की बगानी । प्रथम तीर्थ सब मर भगानी ॥  
 ताहि प्रवीणि बहुत भुक्त होनी । मुनि निज भवन सब हरि कोनी ॥  
 कथाविंधु तब मंदिर आए । पुरनरमणि मुनी सब आए ॥  
 गुरु बसिह दिन किम कोनाई । चाबु मुनी मुनिन सब आई ॥  
 सब दिन देख हरि अमलावन । रामचंद्र बैरवि सिंहावन ॥  
 मुनि बसिह के बचन सोनाए । सुनत सकल विप्रन अति भाए ॥  
 कहहिं बचन सुंद विप्र अनेका । जग अभिराम राम अभिका ॥  
 अब मुनिवर विखंड नहिं कीजे । महाराज कहं लिखक करीजे ॥

दो० । तब मुनि कहैं सुमन सब सुनत चले हरिवाइ ।  
 रथ अनेक लख बाजि बड तुरत सवारे जाइ ॥  
 कहैं तहं भावन पटै मुनि अंगल द्रव्य मगाइ ।  
 हरम समेत बसिह पद मुनि सिद्ध नाइछ जाइ । ११ ॥

चौ० । अवधपुरी अति हरि बगानी । देवन सुमनहटि हरि खाई ॥  
 राम कहा बैरव कोनाई । प्रथम सबन अमलावन जाई ॥  
 सुनत बचन अहं तहं जन भाए । सुघोवादि तुरत अमलावन ॥  
 मुनि कदनाजिनि भरत हंकारे । निज कर राम जटा निहारे ॥  
 अमलावन प्रभु तोनिज भाई । भगतवक्ता कथास रच्यो आई ॥  
 भरत भाव प्रभु कोमलताई । सेव कोटि सत सकहिं न जाई ॥  
 मुनि निज जटा राम विवराए । गुरु अनुसासन मानि नहाए ॥  
 करि मज्जन प्रभु भुवन साजे । अंग अंग कोटि हवि खाजे ॥

दो० । सामुन सादर जानकिनि मज्जन तुरत कराइ ।  
 दिव्य वसन हर भुवन अंग अंग सजे बगै ॥  
 रामबामदिवि सोभित रमा रूपगुनखानि ।  
 देखि सामु सब हरवित जग सुफल करि जानि ।  
 मुन खगेव तेहि औसर ब्रह्मा शिव मुनिहृद ।  
 अति विमान आए सब सुर देखन मुखकां । १२ ॥

चौ० । प्रभु विस्कोकि मुनि मन अनुराग । तुरतहि दिव्य चिन्तावन सांगा ॥  
 रवि सम तेज सो हरनि न जाई । बैठे राम दिव्य सिद्ध जाई ॥  
 जनकमुता समेत रच्यो आई । पेशि प्रह्वै मुनि समुदाई ॥  
 वेदमंत्र तब दिव्य कथारे । नम सुर मुनि सब अर्पति पुकारि ॥  
 प्रथम लिखक बसिह मुनि कोना । पुनि सब विप्रन आबु होना ॥  
 सुत विस्कोकि हरषी मज्जारी । बार बार आरती उतारी ॥  
 विप्रन दान विविध विधि दीये । जायक सकल अनायक कीये ॥  
 सिंहावन पर विधुवन जाई । देखि सुरन दुखी बगै ॥





जे ब्रह्म चमकहेतमबुभुवमन्त्र मनवर आवही ।  
 ते कष्टक जानक माय हम तव समनवच नित गावही ॥  
 कदवाचतन प्रभु सदनुवाकर देव यह घर मां ।  
 मन बचन कर्म विचार तजितव चरन हम अनुरागही । ५ ॥  
 दो० । सब के देखत वेदन्त विनती कोन्हि सदा ।  
 अंतरधान भए पुनि गए ब्रह्मआगार ॥  
 बेगतेव सुनु संभु तव आए वह रघुवीर ।  
 विनय करत गहनद गिरा पूरित पुलक सरीर । १४ ॥

तोटक ।

जय राम रमारमन्त समन । भवतापमबाकुल पाहि जन ॥  
 अवधेय सुरेश रमेश विभो । सरवागत मागत पाहि प्रभो ॥  
 दयबोध विनायक भीष्मभुजा । कृत दूरि साक्षमहिभूरिदजा ॥  
 रजनीचरहंद पतन रचे । सरपावकलेज प्रसुंद रहे ॥  
 महिमंडलमंडन चारुतर । धृत सायक चाप निवंग वरं ॥  
 मद मोक्ष महा समता रजनी । तमपुंज दिवाकरतेजअगो ॥  
 मनजाद किरात निपात किए । मृग खोम कुभोग सरेन हिए ॥  
 इति नाथ अनाद्यन्त्रि पाहि हरे । विषयावन पांवर भस्त्रि परे ॥  
 बल रोग वियोगनि खोग चये । भवदंष्ट्रिनिरादर के फेक ये ॥  
 भवसिंधु अगाध परै नर ते । पदपंकज प्रेम न जे करते ॥  
 अति दोन मकोन दुखी नितही । निम्न के पद पंकज शीति नहीं ॥  
 अवलंब भवतकथा निम्न के । प्रिय संत अनांत सदा तिन के ॥  
 नहि राम न खोम न मान महा । निम्न के सख वैभव वा विपदा ॥  
 एहि ते तव सेवक होत सुखा । मुनि त्याजत खोमभरोस सदा ॥  
 करि प्रेम निरंतर नेश क्रिये । पदपंकज सेवत सदा द्विये ॥  
 सम मानि निरादर आदरही । सब संत सुखी निचरत मही ॥  
 मुनिमानसदासक संन भजे । रघुवीर ब्रह्मरूपभीर अजे ॥  
 तब नाम जपानि नमानि करी । अवरोममहोदय मानसरी ॥  
 गुन खोख कृपा परमाधान । मनमानि निरंतर खोरमन ॥  
 रघुवन्द निकदह हंदु सन । अहिपास विखोखहीन जन । १ ॥

दो० । बार बार नर मानों करवि देऊ खीरन ।  
 पदचरोन अनमनकी भक्ति सदा सतजन ॥  
 वरनि समायति रासगुन हरहि नय केसाव ।  
 तब प्रभु कपिन्ह दिखाइ सब विधि सुखप्रद वाव । ११ ॥

० । सुनि सगपति यह कथा पावनी । विविधिताय सगपदावनी ॥  
 महाराज कर मुनि अभिषेका । मुनि सदाहि नर विरति विवेका ॥  
 ज सकास नर मुनि के नावहि । सुख संपति पावा विधि पारहि ॥  
 सुदुर्लभ सुख करि मन माहीं । अंतकास रघुपतिपर भाहीं ॥  
 मुनि विमुक्त विरत यह विषय । सदाहि भगति गति संपति नई ॥  
 सगपति रामकथा मै बरनी । सुमतिविलास पावहुखरनी ॥  
 विरति विवेक भगति वृद्ध करनी । मोहनदी काह सुंदर तरनी ॥  
 नित नव मंगल कोसलपुरी । हरति सदाहि कोन सब कुरी ॥  
 नित नद प्रीति रामपद पंकज । सब के निरुद्धि नमत विव मुनि अज ॥  
 मंगल बज्ज प्रकार पहिराए । द्विजराज दान नावा विधि पाए ॥

१० । मछानंद भगन कपि सब के प्रभुपद प्रीति ।

जात न जाने दिवस निशि गए माघ पट प्रीति । १६ ॥

१० । विरते यह सपनेछ सुधि माहीं । जिमि परहोइ वत मन माहीं ॥  
 तब रघुपति सब सखा बोलाए । आर सबहि सार सिद्ध भाए ॥  
 परम प्रीति समीप बैठारे । भगत सुखद सुदु बचन उचारे ॥  
 तुम्ह अति कोन्हि मोरि मेवकाई । मुख पर केहि विधि करौ बड़ाई ॥  
 ता ते मोहि तुम्ह अति प्रिय लागे । मन छित लागि भजनसख त्यागे ॥  
 अनुज राज संपति बैदेही । देख गेह परिहार सनेहौ ॥  
 सब मन प्रिय नहि तुम्हहि समाना । मुखा न कहौ मोर यह जाना ॥  
 सब के प्रिय सेवक यह नीलो । मोरे अधिक दास पर प्रीती ॥

दो० । सब यह काज सखा सब मनेछ मोहि वृद्ध नेक ।

सदा सर्वमत सर्वहित लागि करेउ प्रति प्रेम । १७ ॥

चौ० । सुनि प्रभुवचन मनन सब भइ । को पुन कथा विरति यह गइ ॥  
 एकटक रहे जोरि कर आगे । सदाहि न अब कपि गति अनुरागे ॥  
 परम प्रेम तिन्ह कर प्रभु देवा । कथा विविधि विधि जान विवेका ॥  
 प्रभुसखाय कहु कथन न पारहि । पुनि पुनि बातकरीस निवारहि ॥  
 तब प्रभु भूषण बचन अगाइ । नावा दन सम्यक पहिराइ ॥  
 सुधीवहि प्रसन्नहि पहिराइ । सब मन निज प्राप्त बनाइ ॥  
 प्रभुप्रेरित सहिमत पहिराइ । सकासि रघुपति मन भाइ ॥  
 अंगद बैठि कथा कहि कोका । प्रीति देखि प्रभु ताहि न मोका ॥

दो० । जानवत जीकोरि सब पहिराइ रघुनाथ ।

द्विज धरि रामरूप सब चले गइ यह भाष ॥

तब अंगद छति गइ विह बल्लभ मनन कर जोरि ।

अति विनीत बोखेउ बचन अंगद प्रेमरस जोरि । १८ ॥

चौ० । सुनु सर्वज्ञ कृपासुखविंधो । दीनदयाकर चारतबंधो ॥  
 भरतो बेर नाथ मोहि बाखो । गयो तुम्हारेहि कोहो चाखो ॥  
 असरनसरन बिरहु संभारी । मोहि जनि तजहु भगनहितकारी ॥  
 मोरे तुम्ह प्रभु गृह पिठु माता । जाउं कहाँ तजि पदसुखाता ॥  
 तुम्हहि बिचारि कहउ नरनादा । प्रभु तजि भवनकुल मम काहा ॥  
 वाक्क क जानबुद्धिबलहीना । राखउ चरन आनि जग दीना ॥  
 नोच टहल टहल कै सब करिहौ । पदपंकज बिछोकि भव तरिहौ ॥  
 अब कहि चरन परेउ प्रभु पाही । अब जनि नाथ कहउ मरिहौ ॥

दो० । अंगदबचन बिलोत सुनि रघुपति कहनाथोव ।  
 प्रभु छठार डर आएउ सजजनयनराजोव ॥  
 निज डर माक बचन मनि बासितनय पहिराह ।  
 बिदा कीन्हि भगवान तब बड प्रकार समझाह । १८ ॥

चौ० । भरत अजुन सौमिकि समेता । पठवन चले भगतकृतसेता ॥  
 अंगद हृदय प्रेम नहि घोरा । फिरि फिरि चितव राम की ओरा ॥  
 बार बार कर दंडप्रणामा । मन अब रहन कहहि मोहि रामा ॥  
 रामबिछोकिनि बोलनि चलनी । सुमिरि सुमिरि सोचत हमि मिलनी ॥  
 प्रभुमुख देखि बिनय बड भाषी । चलेउ हृदय पदपंकज राखी ॥  
 अति आदर सब कपि पडवाए । भारन्ह सहित भरत पुनि आए ॥  
 तब सुयीव चरन नहि नामा । भांति बिनय कीन्ही हनमाना ॥  
 दिन दस करि रघुपतिपदसेवा । पुनि तब चरन देखिहौ देवा ॥  
 पुन्यपुंज तुम्ह पवनकुमारा । सेवउ जाइ कृपाआगारा ॥  
 अब कहि कपि सब चले तुरंता । अंगद कहै सुनउ हनुमंता ॥

दो० । कहेउ हनुमत प्रभु है तुम्हहि कहौ कर जोरि ।  
 बार बार रघुनाथकहिं सुरति कराएउ मोरि ॥  
 अब कहि चलेउ बासिष्ठस फिरि आएउ हनुमंत ।  
 तासु प्रीति प्रभु बन कहौ मगन भए भगवंत ॥  
 कुलिशउं पाहि कठोर अति कोमल कुसुमउं पाहि ।  
 चित खगेव अब राम कर समझि परै कहु काहि । २० ॥

चौ० । पुनि कृपाक छिचो बोलि निवादा । दोन्हे भूषन बचन प्रसादा ॥  
 जाउ भवन मम सुमिरन करेउ । मन कम बचन धर्म अनुसरेउ ॥  
 तुम्ह मम सखा भरत सम आता । सदा रहेउ पुर आवत जाता ॥  
 बचन सुनत लपजा मुख भारी । परेउ चरन भरि छोचन बारी ॥  
 चरननखिज डर धरि मरि आता । प्रभुसुभाव परिजननि कुवाता ॥

वृषतिचरित देखि पुरबासी । पुनि पुनि कहहि धन्य कुशरासी ॥  
 । मराज बैठै चैलोक । हरषित मरु मरु सब सोका ॥  
 ह न कर काह्य बन कोई । रामव्रताप विषमता कोई ॥

। वरनासम निज निज धरम निरत बेदपथ छोम ।  
 सकहिं सदा पावहिं सुख नहि भय सोक न रोम । २१ ॥

० । दैहिक दैविक भौतिक तापा । रामराज नहि काह्यहिं व्यापा ॥  
 । अब नर करहिं परस्पर प्रीती । सकहिं सुखमनिरत कुति मोती ॥  
 । वारिउ चरन धरम जग जानी । पूरि रक्षा सधनेऊ सब नानी ॥  
 । रामभगतनिरत नर अब नारी । सकल परम गति के अधिकारी ॥  
 । प्रप्यमृत्यु नहि कवनिउ पीरा । सब सुंदर सब बिषय सरीरा ॥  
 । नहि दरिद्र कोउ दुखो न दीना । नहि कोउ अनुध न लख्यनहीना ॥  
 । सब निर्दम धरमरत पुनो । नर अब नारि चतुर सब गुनी ॥  
 । सब गुनज्ञ सब सज्जित जानी । सब कृतज्ञ नहि कष्ट सजानी ॥

० । रामराज नभनेस मुन सचराचर जग माहि ।  
 । काल कर्म मुभाउ गुन कृत दुख काह्यहि माहि । २२ ॥

। भूमि सप्त सागर मेखला । एक भूप रघुपति कोखला ॥  
 । भुवन अनेक राम प्रति जाख । यह प्रभुता कह ब्रह्म न ताख ॥  
 । सो महिमा समझत प्रभु कोरी । यह वरनात हीनता घनेरी ॥  
 । सोउ महिमा खनेस जिन्ह जानी । फिरि एहि चरित तिनकरति जानी ॥  
 । सोउ जाने कर फल यह सोख । कहहिं महा मुनि वरद मुकीछा ॥  
 । रामराज कर सुख संपदा । वरनि न सकै कनोइ सारदा ॥  
 । सब उदार सब परउपकारी । विप्रचरकसेवक नर नारी ॥  
 । एक नारि अंतरत सब छारी । ते जन सब कम प्रतिहितकारी ॥

। दंड यतिन कर भेद जह नर्तक चक्षुसमाज ।  
 । भीतक भगहिं सुनिष सब रामचंद्र के राख । २३ ॥

। फूलहिं फूलहिं सदा तब खलन । रहहिं एक सब मन पंचामन ॥  
 । खग मृग वीह्य वैर विकारी । सबनि परस्पर प्रीति करारी ॥  
 । कूजहिं खन खन नानी हंदा । सबय चरहिं बन करहिं चमंदा ॥  
 । शीतल सुरभि प्रसन्न सब मंद । मुंजत चलि को चलि मकरंदा ॥  
 । सता बिटप जाने मधु चवहीं । मन भावलो धेनु पक्ष चवहीं ॥  
 । ससिसंपन्न सदा रह धरनी । चेत्य भद्र कृतकुम के करनी ॥  
 । प्रमटो निरिन्ह विविधि मनिकावी । जनदाता भूप कम जानी ॥  
 । सरिता सकल बहहिं नर नारी । शीतल चमक साद सुखकारी ॥

बाग्न निज मरजादा रह्यो । करहिं रज तटहि नर कइहीं ॥  
 वरविज संसृज सकल तपामा । प्रति प्रसन्न दसदिशविभामा ॥  
 दो० । विधु मरिचूर अयूयनि रवि तप येनेहि काज ।  
 मांनि वारिद देहिं कल रामचंद्र के राज । २४ ॥

चौ० । कोटिनि बाधि मेध प्रभु कीन्हे । दान अनेक दिजय कइ दीन्हे ॥  
 क्षुतिपथपाकक धरमधुरधर । गुनातीत घर भो सुंदर ॥  
 पति अनुकूल सदा रह्यो सीता । सोभा खानि सुधास विनीता ॥  
 जानति कृपाविंधुप्रसुताई । सेवति चरण कमल मन लाई ॥  
 यद्यपि गृह धैरक सेविकिनी । विपुल सकल सेवविधि गुनी ॥  
 निज कर गृह परिचरना करई । रामचंद्रचायस अनुसरई ॥  
 जेहि विधि कृपाविंधु कृपामानद । सोर कर सी सेवा विधि जानद ॥  
 कौसल्याहि पास गृह भाहीं । सेकर सवनि आन भद जाहीं ॥  
 उमा रमा प्रह्लादिवहिता । अगदंवा धैर्यमनिहिता ॥

दो० । जासु कृपा कटाक्ष सुर चाहत चितवन सोर ।  
 रामपदारविंदुरति करति सुभासहि सोर । २५ ॥

चौ० । सेवहिं पावकूल सब आई । रामचरवरति अनि धिकारी ॥  
 प्रभुमुख कमल विजोकात रह्यो । कवड कृपाज हमहिं कइहीं ॥  
 राम करहिं आत्मचर भोजी । नामा भांति सिखावो भोजी ॥  
 चरविज रह्यो मर के भोगा । करहिं सकल सुरकुल भोगा ॥  
 चरनिधि विधिहि मवाका रह्यो । सोरसुखोरचरवरति ॥  
 दूर सुत सुंदर सीता आए । सब सुख वेद पुरानन ॥  
 होउ विजयो विजयो मुनसंदिर । हरिप्रतिविंभ मनउ जत सुंदर ॥  
 दूर दूर सुत सब आत्मन करे । भए रूप मुन सीता घनरे ॥

दो० । ज्ञान गिरा मोतोम सब भाषा मन गुन पाव ।  
 सोर सचिदाचंद धन कर कर चरित उदार । २६ ॥

चौ० । प्रात काळ चरजू करि मज्जन । बैठहिं रमा रंग दिज सज्जन ॥  
 वेद पुरान बसिष्ठ बखानहि । सुगहिं राम यद्यपि सब जानहि ॥  
 अनुग्रह दंडन भोजन करहीं । देखि सकल जननी सुख भरहीं ॥  
 भारत सचुचन दोषी आई । सहित पवनसुत उपवन आई ॥  
 ब्रह्महिं बैठि राममुखावा । कह इनुमान सुमति अवगाहा ॥  
 सुमत विमल मुन प्रति मुख पावहिं । बहुरि बहुरि करि विमल कहावहिं ॥  
 सब के गृह गृह जोहिं कुरामा । रामचरित पावन विधि बागा ॥  
 नर चर बाधि रसज्जनमरिधि । करहिं दिवस निशि आन न जानहिं ॥

। अथपुनरोवाचिन् कर सुख संपदासमाज ॥

वहस्य सेव महि कचि यकचिं जहं नय राम विराज ॥ २७ ॥

। नारदादि सनकादि मुनीना । दूरवज्र क्षान्ति कौशकाधीना ॥  
 इन प्रति सकल अथोष्ठा आचरि । देवि जगत् विराम विहराचरि ॥  
 । आनन्दमनिरचित सदाशरी । नामा रत्न रश्मि मय शरी ॥  
 । र चञ्च पास कोट चति सुंदर । रचे कंगूरा रत्न रत्न कर ॥  
 । वपस्विनकर अनोक कगाई । अनु चेरी समरावति आई ॥  
 । अहि बज्र रत्न रचित मय कांठा । जो विष्णोकि मुनिवरजन दांठा ॥  
 । अथ धाम ऊपर कभ मुंजत । कभम ममज्ज रविचक्षुति निंदत ॥  
 । उ मनिरचित सरोखा आचरि । अह अह प्रति मनिदीप विरामचिं ॥

। मनिदीप राजचिंभवन आचरिं देहरी चिमुनरपी ।  
 मनिचंभ मीति विरचि चिरपी कनक मनि सारका कपी ॥  
 सुंदर मनोहर मदिरायत चमिर रश्मि पट्टिम रपी ।  
 प्रति हार हार कपाट पुरत वनाद वज्रमयनि जपी ॥ २८ ॥

० । चाह चिपकासा अह अह मनि किसे कभम ।  
 रामचरित जे विरज मुनि ते मन केहि सोराह ॥ २९ ॥

। सुमनवाटिका जगदि जगदी । विविधि मीति करि कानन वनाई ॥  
 कता कचित बज्र क्षान्ति सुसाई । पूजाचिं सदा वसंत कि माई ॥  
 मुंजत मधुकर मधुकर मनोहर । माहत चिबिध सदा वज्र सुंदर ॥  
 नाना खन बाकनविधि निजहार । बोहत मधुर कथात कोराह ॥  
 मोर हंस सारस वाराह । भवनवि पर कोभा चमिपावत ॥  
 जहं तहं देखाचिं निज परिकारी । बज्र विधि कुवाचिं कल करारी ॥  
 सुक सारिका पहावहि बासक । कचञ्च राम रसुपति जगदासक ॥  
 राजकुमार सकल विधि बाह । बोधी चौहट रश्मि वनाह ॥

० । बाजार चाह न बचै करकत बह बिनु मय मारय ।  
 जहं भूप रामनिवास तहं की संपदा किमि मारय ॥  
 बैठे बजास सराफ बनिज अनेक ममज्ज सुंदर ते ।  
 सब सुखी सब सचरित सुंदर नारि नर सिद्ध करत जे ॥ ३० ॥

दो० । उत्तर दिशि करक बह निमंज जल गंभीर ।  
 बांधे बाह मनोहर कलक पंक नहि मोर ॥ ३१ ॥

चौ० । दूरि करक रश्मि की जाटा । जहं जल विचरिं मजिजबडाटा ॥  
 पमिषट परम मनोहर नामा । तहां न सुख करचिं कलाजा ॥  
 राजपाट बह विधि सुंदर नर । मज्जहि तहां मय चरित नर ॥

तीर तीर देवय के मंदिर । बड़ दिवि निच के उपवन सुंदर ॥  
 कऊ कऊ भरिता तीर लहायो । बरहिं आनरत मुनिबनको ॥  
 तीर तीर सुखिका सुहारे । हृन्द हृन्द बड़ मुनिबनको ॥  
 पुरखोभा कहु भरनि न काई । बाहेर नगर परस बरिचारी ॥  
 देखत पुरी अखिअ अब भासा । बन उपवन बापिका तवामा ॥

क० । बापी तवाम अनप रूप मनोहरायत सोहरीं ।  
 सोपान सुंदर नीर निर्मल देखि सर मुनि मोहरीं ॥  
 बड़ रंग कंज अनेक खन कूकहिं मधुप गुंजारहीं ।  
 चाराम रस्य पिक्काहिं खगरव बन पयिक चंकारहीं । ८ ॥

दो० । रामायण जहं राजा सो पुर भरनि कि बाह ।  
 अनिमादिक सुख संपदा रही अवध सब छार । ३० ॥

चौ० । जहं तहं नर रघुपतिगुन गावहिं । बैठि परस्पर रहै सिखावहिं ॥  
 भजत प्रगतप्रतिपादक रामहिं । सोभासीकरूपगुनधामहिं ॥  
 जलजल बिकोचन आमलगातहिं । पक्षक नयन हृष सेवकजातहिं ॥  
 धृत घर बरिचर चाप दूरीरहिं । संत कंज बन रवि रनधोरहिं ॥  
 काख कराख व्यास खगरामहिं । नमत राम अकाम ममता अहि ॥  
 सोभ मोह मृगजय किरातहिं । मनसिअ करि हरिजन सुखदातहिं ॥  
 संघय लोक निबिड तम भानुहिं । दनुज गहन घन दहन कपानुहिं ॥  
 जनकसुता समेत रघुवीरहिं । कस न भजत अंजन भवभीरहिं ॥  
 बड़बाधना मयक हिमराजहिं । सदा एकरव अज अविनामिहिं ॥  
 मुनिरंजन अंजन महिभारहिं । तुलसिदास के प्रसुहिं छदारहिं ॥

दो० । एहि विधि नगरनारिनर करहिं रामगुन जान ।  
 खानुकूल घर घर रहहिं संतत कृपानिधान । ३१ ॥

चौ० । जब ते रामप्रताप खगेडा । उदित भयो अति प्रबल दिनेसा ॥  
 परि प्रकाश रहत निऊ लोका । बड़तेऊ सुख बड़तैअ मन लोका ॥  
 जिन्हहिं लोक ते कहौ बखानी । प्रथम अविद्या निशा नशानी ॥  
 अथ ललक जहं तहां लुकाने । काम क्रोध कैरव लुकाने ॥  
 विविध कर्म नून काख मुभाज । ये चकोर सुख लहहिं न काज ॥  
 मसर मान मोह मद चोरा । हृष कर ऊपर न कवनिऊ चोरा ॥  
 धरम तवाम ज्ञान विज्ञाना । ये पंकज बिकसे बिबि जाना ॥  
 सुख संतोष विराज विदेका । बिकत लोक ये कोख खगेका ॥

दो० । जब ज्ञानरहि का के घर जब करे प्रकाश ।  
 अखिने बाकहिं प्रथम के कहे ते पावहिं नाश । ३२ ॥

। आतङ्ग संहित राम एक वारा ।	संन परम मित्र कवचकुमारा ॥
दर उपवन देखन गह ।	यव तह कुसुमित पल्लव गह ॥
नि समथ समकादिक आए ।	तेजपुंज मुन खोख सुचार ॥
ह्यानंद सदा कवचलोभा ।	देखत बाहक बज्रकासीभा ॥
प धरे अनु चारिउ वेदा ।	समदरसी मुनि विमतविभेदा ॥
गमा बचन बचन यह तिनहो ।	रघुपतिचरित होइ तहं मुनहो ॥
। हां रचे समकादि भवानी ।	जहं घटसंभव मुनिवर ज्ञानी ॥
। मकथा मुनिवर बज्र वरनी ।	ज्ञानखोनि पावक जिमि चरनी ॥

० । देखि राम मुनि आवत हरषि दंडवत कोण ।  
सागत पूछि पीत पट प्रभु बैठन कहं दीन । ३३ ॥

० । कोण दंडवत तोनिउ भारि ।	संहित पवनसुत सुखचधिकारि ॥
मुनि रघुपतिह्वि अतुल बिलोकी ।	भए मनन मन सकं न राकी ॥
स्यामल गात मंगोदह खोचन ।	भुंदरतामंदिर भवमोचन ॥
एकटक रहे निमेष न जावहि ।	प्रभु कर जोर खोख नवावहि ॥
तिन्ह कै दसा देखि रघुवीरा ।	सवत नयनजल पुनक मरीरा ॥
कर गहि प्रभु मुनिवर बैठारे ।	परम मनोहर बचन उचारि ॥
आजु धन्य मै मुनऊ मुनीसा ।	तुम्हरे दरस जाहिं यद्य सीसा ॥
बड़े भाग पादव सतसंगा ।	बिनहि प्रयास होहि भवभंगा ॥

१० । संतसंग अपवर्ग कर कामी भव कर पंच ।  
कहहि संत कवि कोविद सुनि पुरान सदपंच । ३४ ॥

१० । मुनि प्रभवचन हरषि मुनिचारी ।	पुनकित तनु अमृति अनुसारी ॥
जय भगवंत अनंत अनामय ।	अनघ अनेक एक कतनामय ॥
जय निर्गुन जय जय गुनबागर ।	सुखमंदिर सुंदर अति नामर ॥
जय इंदिरारमन जय भूधर ।	अनुपम अज अनादि सोभाकर ॥
ज्ञाननिधान अमान मानप्रद ।	पावन मुनस पुरान वेद वद ॥
तज कृतज्ञ अज्ञताभंजन ।	नाम अनेक अनाम निरंजन ॥
सर्व सर्वगत सर्वउराखय ।	बनसि सदा हम कहुं परिपालय ॥
इंदविपति भवार्द विमर्जय ।	इदि बधि राम काम मद मजय ॥

२० । वरमानंद कृपायतन मन परिपूरनकाम ।  
प्रेमभक्ति अनपावनी हेऊ हमहि सीराम । ३५ ॥

३० । हेऊ भक्ति रघुपति अति पावनि ।	निविध ताप भवहापनवावनि ॥
प्रनतकाम मुरधनु कल्पतरु ।	होइ प्रयस होनि प्रभु लख वर ॥
भवहारिधि कुंभज रजनाचक ।	देवत सुखम सकलसुखाचक ॥



जनसंभव दास्य दुःख दारय । दीनसंधु समता विहाय ॥  
 चाय चाय वृथादिनिवारक । विषय विवेक विरति विहाय ॥  
 भूपमौलिमणि मङ्गलधरनी । देहि भगति संसृतिपरि तरनी ॥  
 मुनिमग्नमानस हृद्य विरतर । चरनकमल बहिर अङ्ग संकर ॥  
 रघुकुलकेतु सेतु सुति रक्षक । कास कर्म सुभावगुणमण्डक ॥  
 तारन तरन चरन सब दूखन । तुल्यविदास प्रभु चिमुक्कनभूषण ॥

दो० । बार बार अमृति करि प्रेम सहित सिद्ध नाद ।  
 ब्रह्मभवन सनकादि ने अति अभिष्ट वर पाद । ३६ ॥

चौ० । सनकादिक विधिलोक विधाए । आतन्धु रामचरण सिद्ध नाए ॥  
 पूकत प्रभुहिंसकक सबुचाची । चितवहिं सब माकतंसत पाची ॥  
 सुनो चहहिं प्रभुमुख के बानी । जो सुनि होइ सकलधमहानी ॥  
 अंतरबानी प्रभु सब जाया । बूझत कहऊ काह अनुमाना ॥  
 ओरि पानि कह तब हनुमंता । सुनऊ दीनदयाल भगवंता ॥  
 नाथ भरत कह पूजन चहहीं । प्रसन्न करत केन सकुचत चहहीं ॥  
 तुम्ह जानऊ कपि मोर सुभाष । भरतहि मोहिं न अंतर काऊ ॥  
 सुनि प्रभुबचन भरत गये चरना । सुनऊ नाथ प्रनतारतिहरना ॥

दो० । नाथ न मोहिं संदेहक कह मपनेऊ सोक न मोह ।  
 केवल कृपा तुझ्याहि कृपानंदसंदोह । ३७ ॥

चौ० । करौ कृपानिधि एक ठिठाई । मै सेवक तुम्ह जन मुखदाई ॥  
 संतनू के महिमा रघुसाई । बहू विधिबेद पुरानन्धु माई ॥  
 सोमुख तुम्ह पुनि कोन्हि बड़ाई । तिन पर प्रभुहिं प्रीति अधिकारी ॥  
 सुना चहौ प्रभु तिन कर लच्छन । कृपामिंधु गुन ज्ञान विषयजन ॥  
 संत अवंत भेद बिखगारै । प्रनतपास मोहिं कहऊ बसाई ॥  
 संतनू के लच्छन सुनु आता । अनिजित सुति पुराण विज्ञाता ॥  
 संत अवंतनहि के अपि करनी । जिमि कुठार चंदन आचरनी ॥  
 काटे परसु मज्जय सबु भाई । निज गुन देर संगंध बसाई ॥

दो० । तातें सुरसोयन्धु चढत जगवत्तम सोखत ।  
 चमक दाहि पीठज जनहिं परसुबदन यह दंत । ३८ ॥

चौ० । विषय सबपट सोख मुक्तकर । परदुख दुख मुख मुख देखे वर ॥  
 सम अभूत रिपु किमद विरागी । कोमासरय हरय भय त्यागी ॥  
 कोमल चित दीनन्धु सर दाया । मय बच कम जग जलजि आमाया ॥  
 सबहिं मानप्रद आप आमायी । भरत प्राण वस्य वस्य ते प्राणी ॥  
 विगतकाय सम जगप्रदायक । पांति बिहति किमती मुद्रितायक ॥

। तलता सरसता मयची । दिवपरभीति धरन मनुष्यी ॥  
 सब सख्यन बचहिं जासु खर । जागेऊ तात संत संतल खर ॥  
 म दम निवम भीति नहिं डोखहिं । परस बचन कबहुं नहिं बोखहिं ॥  
 । निंदा कसुति उभये सम ममता मम परकंभ ॥  
 ते सखन मम प्राण प्रिय गुनमंदिर सुखपुंज । ३८ ॥

। सुनऊ अमंतन केर सुभाज । भुलेऊ बंगति करिष न काज ॥  
 तेन्ह कर संग सदा दुखदाई । जिमि कपि कहिं चाखै हरदाई ॥  
 बलन्ह हृदय अति ताप बिसेखी । जरीहिं सदा परसंपति देखी ॥  
 महुं कऊ निंदा सुनहिं पराई । हरये जगज परी निधि पाई ॥  
 काम क्रोध मद लोभ पराधन । निंदक कपटी कुटिब मकाधन ॥  
 वयस अकारन सब काळ बो । जो कर हित अनहित ताळ बो ॥  
 झूठ देना झूठर देना । झूठ भोजन झूठ चवेना ॥  
 बोखहिं मधुर बचन जिमि मोरा । खाहिं महा अहि हृदय कठोरा ॥  
 \* । परद्रोही परदार रत परधन पर अपराह ।  
 ते नर पांवर पापमय देह धरे मनुजाद । ४० ॥

। लोभद ओठन लोभद डायन । सिखोहरपर यमपुर पाय न ॥  
 काळ के औ सुनहिं बडाई । खास खेहिं जम जूझी चारै ॥  
 जब काळ के देखहिं बिपती । सुखी भए मानऊ जन वपती ॥  
 स्वारथरत परिवार बिरोधी । लंपट काम लोभ अति क्रोधी ॥  
 मातु पिता गुह बिप्र न मानहिं । आपु गए अह घाजहिं चानहिं ॥  
 करहिं मोहबस द्रोह परावा । संत संग हरि कथा न भावा ॥  
 अवगुनसिंधु मंदमति कामी । वेद बिदूषक परधनस्वामी ॥  
 बिप्रद्रोह सुरद्रोह बिसेवा । दंभ कपट जिय धरे सुवेवा ॥

। ऐसे अधम मनज खल कलबुग जेता नाहिं ।  
 दापर कलुक हंड बड होइरहिं कलियुग माहिं । ४१ ॥

। परहित करिष धर्म नहिं भाई । परपोड़ा सम नहिं अधमाई ॥  
 निरनख सकल पुरान वेद कर । कहउं तात जानहिं कोबिद नर ॥  
 नर खरीर धरि जे परपोरा । करहिं ते सहहिं महा भवभोरा ॥  
 करहिं मोहबस नर अच नामा । स्वारथरत परलोक नयाना ॥  
 कालरूप तिनह कहैं जे भाता । सुभ अर असुभ करम फलदाता ॥  
 अस बिचारि जे परम बयाने । भवहिं मोहिं बखति दुख जाने ॥  
 त्यागहिं कर्म सुभासुभदायक । भवहिं मोहिं सुरनरभुविनायक ॥  
 संत अर्चन के मन आवे । ते न परहिं नवनिज कहिं रावे ॥

दो० । सुनऊ तात मायाकृत गुन यह दोष अनेक ।  
गुन यह समय न देखिअहि देखिय सो अनिके । ४९ ॥

चौ० । सोमुखबचन सुनत सब भाई । हरषे प्रेम न हृदय समाई ॥  
करहि किय अति बारहि बारा । इनमानहिअ हरष अपारा ॥  
पुनि रघुपति निज मंदिर गए । एहि विधि चरित करत नित गए ॥  
बार बार नारद मुनि आवहिं । चरित पुनोत राम के गावहिं ॥  
नित नव चरित देखि मुनि जायौ । ब्रह्मलोक सब कथा कह्यौ ॥  
सुनि बिरंचि अतिसय सुखमानहिं । पुनि पुनि तात करऊ गुन गावहिं ॥  
सनकादिक नारदहिं सराहहिं । यद्यपि ब्रह्मनिरत मुनि आवहिं ॥  
सुनि गुनगान समाधि बिचारी । सादर सुनहिं परम अधिकारी ॥

दो० । जीवगमुक्त ब्रह्मपर चरित सुनहिं तजि ध्यान ।  
जे हरि कथा न करहिंरति तिन्ह के हिय पावान । ४९ ॥

चौ० । एक बार रघुनाथ बोलाए । गरुडिज पुरवासी सब आए ॥  
बैठे सभा भंगदिज सज्जन । बोले बचन भगतभयभंजन ॥  
सुनऊ सकल प्रजन मम बानी । कह्यौ न कहु ममता उर जानी ॥  
नहि अनोति नहि कहु प्रभुताई । सुनऊ करऊ जौ तुन्हहि सोहाई ॥  
सोई सेवक प्रियतम मम सोई । मम अनुमासन मानै जोई ॥  
जौ अनोति कहु भाष्यौ भाई । तौ मोहि बरजऊ भय बिसराई ॥  
बड़ भाग मानुषतन पावा । सुरदुर्लभ सब यद्यन्ह गावा ॥  
साधनधाम मोच्छ कर दारा । पाद न जेहि परलोक संवारा ॥

दो० । सो परन दुख पावै सिर धुनि धुनि पछिताइ ।  
काखहिं कर्महिं देखिअहिं भिया दोष लगाइ । ४४ ॥

चौ० । एहि तन कर फल निषय न भाई । स्वर्गो स्वल्प अंत दुखदाई ॥  
नरतन पाइ विषय मनु देखौ । पकटि सुधा ते सठ विष खेहौ ॥  
ताहि कबहुँ भल कहै न कोई । गुंजा गहै परसमनि खोई ॥  
आकर चारि लच्छु चौराखी । योनि भ्रमत यह जिव अविनासी ॥  
फिरत सदा माया कर मेरा । काल कर्म सुभावगुन घेरा ॥  
कबहुँक करि कहना नरदेही । देत ईष बिनु हेतु सनेही ॥  
नरतन भवचारिधि कहै बेरो । यक्षुख मरत अनयह मेरो ॥  
करनधार सदगुर बूढ गावा । दुखभ याज सुखभ करि पावा ॥

दो० । जो न तरे अवसागर नरबमान प्रिय पाइ ।  
सो कृतनिंद्यो जंदमनि आत्माहमनि जाइ । ४५ ॥

१० । जौ परकोक दहा सुख बरह ॥ सुनि मम बचन सुदय बूढ नरह ॥  
 सुलभ सुखद मारन सब भार ॥ भगति मोरि प्रराव कुटिल नार ॥  
 ज्ञान अगम प्रत्युह अनेका ॥ साधन कठिन न मन कहंटेका ॥  
 करत कष्ट बहू पावै कौज ॥ भक्तिहीन प्रिय मोहि न खोज ॥  
 भक्ति स्वतंत्र सकलसुखखानी ॥ बिनु सतसंग न पावहि प्राप्ती ॥  
 पुन्यपुंज बिनु मित्रहि न संता ॥ सतसंगति संसृति कर संता ॥  
 पुन्य एक जग मज्जु नहि दुखा ॥ मन कम बचन विप्रपदपा ॥  
 सानुकूल तेहि पर मुनि देवा ॥ जो तजि कपट करै दिग्वेवा ॥

ते० । औरौ एक गुप्त मत सबहि कहौ कर जोरि ॥  
 संकरभजन बिना नर भगति न पावै मोरि । ३४ ॥

वौ० । कहहु भगतिपथ कवन प्रयासा ॥ योग न ज्ञान अप तप उपवासा ॥  
 सरल सुभाव न मन कुटिलाई ॥ यथास्वाम संतोष बढाई ॥  
 मोर दाम कहाइ नरचासा ॥ करै तो कहहु कहाँ बिखासा ॥  
 बहूत कहौ का कथा बढाई ॥ योहि आचरन बख मै भाई ॥  
 बैर न बियह आस न चासा ॥ मुखमय ताहि भदा सब आसा ॥  
 अनारंभ अनिकेत अमानो ॥ अनघ अरोष दण्ड बिजानो ॥  
 प्रीति मदा मज्जनसंमर्गा ॥ हन सम विषय स्वर्ग अपवर्गा ॥  
 भक्तिपच्छ बूढ नहि सठताई ॥ दुष्ट तर्क सब दूरि बढाई ॥

दो० । मम गुनयाम नामरत गत समता मद मोह ॥  
 ता कर सुख मोह जागै परानंदसंदोह । ३५ ॥

चौ० । सुनत मुधा सम बचन राम के ॥ गच्छे सबनि पद कृपाधाम के ॥  
 जननि जनक गुर बंधु हमारे ॥ छपानिधाम प्राण तैं प्यारे ॥  
 तन धन धाम राम हितकारी ॥ सब बिधि तुम्ह प्रनतार्तरारी ॥  
 अमि मित्र तुम्ह बिनु देह न कौज ॥ मातु पिता स्वारथत शोख ॥  
 हेतुरहित जग युग उपकारी ॥ तुम्ह तुम्हार सेवक असुरारी ॥  
 स्वारथ मीत सकल जग माहीं ॥ सपनेहुं प्रभु परमारथ माहीं ॥  
 सब के बचन प्रेमरस माने ॥ सुनि रघुनाथ हृदय चरमाने ॥  
 निज निज गृह गए आयमु पाई ॥ बरनत प्रसुबतकही सुहाई ॥

दो० । जमा अवधवासी नर नारि कृतारथरूप ॥  
 ब्रह्म बन्धिदानंदमय रघुनाथक जह भूप । ३६ ॥

चौ० । एक बार बलिष्ठ मुनि जाए ॥ जहाँ राम सुखधाम बुढाए ॥  
 अति आदर रघुनाथक कोना ॥ पद पकारि पादोदक कीना ॥  
 राम सुबहु मुनि कह कर जोरो ॥ छपाविंधु विजिनी कहु मोरो ॥

देखि देखि आचरन तुम्हारा । होत मोह भ्रम एवम् अपारा ॥  
 महिमा अमित नहि कहि जाना । मैं कहि भाँति कहौ भगवाना ॥  
 उपरोक्षितो कर्म अति मंदा । वेद पुराण सुकृति कर निंदा ॥  
 जब न सोचै मैं तब विधि मोहो । कहा सोम आमे सुत तोहो ॥  
 परमात्मा प्रभु नररूपा । होइ रहि रघुकुल भूषण भूपा ॥

दो० । तब मैं हृदय बिचारा योग यज्ञ मत दान ।

आ कछु करिय सो पैहौ धर्म न एहि सम आन । ४८ ॥

चौ० । जप तप नियम योनि निज धर्मा । सुति संभव नाना सुम कर्मा ॥  
 ज्ञान दया दम तोरणमज्जन । जहँ सगि धरम कहत सुति सज्जन ॥  
 आगम बिगम पुराण अनेका । पढ़े सुने कर फल प्रभु एका ॥  
 तब पदपंकज प्रीति गिरंतर । सब साधन कर यह फल सुन्दर ॥  
 छूटे मल कि मलहि के धोए । घृत कि पाव कोउ बारि बिछोए ॥  
 प्रेम भगति जस बिगु रघुराई । अभि अंतर मल कबहुँ न जाई ॥  
 सोइ सर्वज्ञ तज सोइ पंडित । सोइ गुनग्रह बिज्ञान अखंडित ॥  
 दण्ड सकल लच्छनयुत सोई । जा के पदसरोज रति होई ॥

दो० । नाथ एक बर मानौ राम कृपा करि देख ।

जन्म जन्म प्रभुपदकमल कबहुँ छटै अनि नेछ । ५० ॥

चौ० । अस कहि मुनि समिष्टग्रह आए । कृपासिंधु के मन अति भाए ॥  
 हनुमान भरतादिक आता । संग छिये सेवकमुखदाता ॥  
 पुनि कृपाक्ष पुरवाहिर गए । नज रथ सुरंग मगावत भए ॥  
 देखि कृपा करि सकल सराहे । दिये उचित निज निज जोर चाहे ॥  
 हरन सकल सम प्रभु सम पाई । गए जहाँ सोतल अमराई ॥  
 भरत दीन निज बचन उचारी । बैठे प्रभु सेवहिं सब भारी ॥  
 माइतयुत तब माइत करी । पुछकि वपुष सोचन अस भारी ॥  
 हनुमान सम नहि बड़भांगी । नहि कोउ रामचरनचनुरागी ॥  
 निरिमा जाबु प्रीति सेवकारी । बार बार प्रभु निज मुख मारी ॥

दो० । तेहि अवसर नारद भुनि आव करतल बोग ।

मावन लागे रामकलकीरति सदा नबोन । ५१ ॥

चौ० । मामवलोकाय पंकजलोचन । कृपाविलोकिनि सोचविमोचन ॥  
 नीलतामरव सोम कामधरि । हृदयकंठमकरंद मधुष हरि ॥  
 जातुधानवदपदचमन । मुनिवत्सनरंजन अघनजन ॥  
 असुरवधि तब हृद कलावलि । चंदनचंदन दीनजननाहक ॥  
 भुजबल विपलभार अति खंडित । खरदूषणविराधवध पंडित ॥

रावनादि सुखरूप भूषणर । सब दखतकुमुद सुधाकर ॥  
सुख पुराज विहित विमलानन । गावत सुर मुनि कंतकमानन ॥  
कादनीक व्यसोकमदबानन । सब विधि सुख कोकलानन ॥  
कलिसलमयन नाम ममताहन । तुलसिदास प्रभु पाहि प्रमल मन ॥

१० । प्रेम सहित मुनि नारद वरनि रामगुनगाम ।  
सोभासिंधु हृदय धरि गए जहाँ विधिधाम । ३२ ॥

१० । गिरिजा मुनिकु बिबद यह कथा । मैं सब कहौ भौरि मति सदा ॥  
रामचरित मतकोटि अपारा । सुति सारदा न बरनै पारा ॥  
राम अनंत अनंत गुनानी । अक्ष कर्म अनंत नामानी ॥  
जलभीकर मन्त्रिज गमि जाहीं । रघुपतिचरित न बरनि धिराहीं ॥  
विमल कथा हरिपददासनी । भगति होइ मुनि अनपायनी ॥  
उमा कहौ सब कथा सुहाई । जो भगुनि सुमपतिहि सुनाई ॥  
ककुब रामगुन कहैं बखानी । अब का कहौ सो कहहु भवानी ॥  
मुनि सुभ कथा उमा हरिवाणी । बाखी अति विनीत मुकु बाणी ॥  
धन्य धन्य मैं धन्य पुरारी । सुनैं रामगुन भवभयहारी ॥

१० । तुम्हरो कृपा कृपायतन सब कृतकृत्य न मोह ।  
आनेउं रामप्रताप प्रभु चिदानंदमोह ॥  
नाथ तबानन खसि खवत कथा सुधा रघुवीर ।  
खवनपुटन्हि मन पान करि नहि अघात मतिवीर । ३३ ॥

चौ० । रामचरित जे सुनत अघाहीं । रस बिसेषि जाना तिन्ह जाहीं ॥  
खोवनमुक्त महाभूमि जेऊ । हजिगुन सुनहि निरंतर तेऊ ॥  
भवसागर यह पार जो पावा । रामकथा ता कहैं बूढ नावा ॥  
बिषदन्ह कहैं मुनि हरिगुनघामा । खवन सुखद यह मनअभिरामा ॥  
खवनवंत अक्ष को जन जाहीं । जाहि न रघुपतिचरित सोहाहीं ॥  
ते जडजीव निजासकषातो । जिन्हहि न रघुपतिकथा सोहातो ॥  
हरिचरित जानस तुम्ह नावा । मुनि मैं नाथ अमित सुख पावा ॥  
तुम्ह जो कहौ यह कथा सुहाई । कामभसुनि नरई प्रति नाई ॥

दो० । विरति ज्ञान विज्ञान बूढ रामचरण अति प्रेह ।  
बाधसतन रघुपतिभक्तनि मोहि परम प्रेह । ३४ ॥

चौ० । नरपदस अहं सुमऊ पुरानी । कोऊ एक होइ धरममतापानी ॥  
धर्मवीर कोटिक अहं कोई । विषयविमुख विद्वानस कोई ॥  
कोटि विरक्त अक्ष सुति कहैं । यत्नक ज्ञान यत्नक कोइ कहैं ॥  
ज्ञानवंत कोटिक अहं कोऊ । जोकसमुक्त बहूँ जन सोऊ ॥

तिन्म वदन् नरं सनत्कुमारो । दुर्लभं ब्रह्मलीनं विज्ञानो ॥  
 धर्मवीर्यं विरक्तं चह मातो । जीवनमन्त्रं ब्रह्मपरं प्राप्नो ॥  
 सव तेनो दुर्लभं सुरराया । रामभक्तिरतं नतमदमाया ॥  
 सो हरिभक्ति काग किमि पारै । विस्वनाथ मोहि कहउ बुझारै ॥  
 दो० । रामपरायण ज्ञानरत गुनागार मतिधीर ।  
 नाथ कहउ केहि कारण पाएउ कामसरीर । ५१ ॥

चौ० । यह प्रभुचरित पवित्र मोहावा । कहउ रुपाल काग ॥ ५२ ॥ पावा ॥  
 तुम्ह केहि भांति सुना मदनारी । कहउ मोहि अति कौतुक भारी ॥  
 गहउ महाज्ञानी गुनरायो । हरिसेवक अतिनिकटनिवासी ॥  
 तेहि केहि हेतु काग सन जाई । सुनो कथा मुनि निकर बिहारी ॥  
 कहउ कवल विधि भा संवादा । दोउ हरि भक्त काग उरगादा ॥  
 गौरिगिरि। सुनि वरपे सुझारै । बोले सिव बादर मुख पारै ॥  
 धन्य सता पावन मति तोरी । रघुपतिचरन प्रीति नहि थोरी ॥  
 सुनउ परम पुनीत इतिहास । जो मुनि सकल सोकभ्रम नासा ॥  
 उपजे राम चरनविस्वासा । भवनिधि तर नर विनहि प्रयासा ॥

दो० । ऐसर प्रभु विहंगपति कीन्ह काग सन जाइ ।  
 सो सब बादर कहिहौं सुनउ जमा मन जाइ । ५३ ॥

चौ० । मै किमि कथा सुनी भवमोचनि । सो प्रबंध सुख सुमुखि सुकोचनि ॥  
 प्रथम दृष्टमदृष्ट तब चकलारा । यही नाम तब रहा तुम्हारा ॥  
 दृष्टमदृष्ट तब भा अपमाया । तुम्ह अति कोध लजे तब प्राणा ॥  
 मम अनुचरण कीन्ह सखभंगा । जानउ तुम्ह सो सकल प्रसंगा ॥  
 तब अति सोच भयो सब मोरे । खुसी भएउं विद्योग प्रिय तोरे ॥  
 सुंदर बन गिरि बहिन लहाया । कौतुक देखत फिरौं बिरागा ॥  
 गिरि सुमेर उत्तर दिशि दूरी । नोख बैल एक सुंदर भूरी ॥  
 तासु कनकमय सिंहर सुहाए । पारि पाइ मोरे जब भाए ॥  
 तिन्म पर एक एक बिटप प्रियाला । बट पीपर पाकरी रयाला ॥  
 बैलोपरि सर सुंदर घोहा । मनिपोषान देखि मन मोहा ॥

दो० । बीतल भमक मधुर जल जलज विपुल बज्र रंग ।  
 कूजत कल रव हंसवन मुजत मंजुल अंत । ५४ ॥

चौ० । तेहि गिरि हरिचर बहै खन छोरे । तासु नाथ कल्यांत न छोरे ॥  
 मायाकृत मुन दोष भवेका । मोह मनोज याहि अविवेका ॥  
 रहे व्याधि बमल जन भागी । तेहि गिरि निकट कहउं कहि जाही ॥  
 तब बधि हरिहि भवै किमि कामा । सो सुन जमा रहित चुरागा ॥

नीपर तह तर खान हो करई । बाप चह्यं सकरि तर करई ॥  
 थावहाइ कर मानस प्रभा । तजि हरिमयन जाय बहि दुखा ॥  
 घट तर कह हरिकथामिसंग । थावहि सुनहि जनेक बिधाना ॥  
 रामचरित बिचित्र बिधाना । प्रेम बसित कर साइर माना ॥  
 सुनहिं सकल मति बिसल मराणा । बसहिं निरंतर को मेहि लखा ॥  
 जब मैं जाइ सो कौतुक देखा । उर उपमा आनद बिषया ॥

१० । तब कहू काह मराजतनु धरि तहं कीन्ह विवाह ।  
 साइर सुनि रघुपतिमुन पुनि पाएउं कैलाह । ५८ ॥

१० । गिरिजा कहेउं सो सब इतिहास । मै जेहि समय गहलं खन पाया ॥  
 अब सो कथा सुनउं जेहि हेत । गएउ काम पछि खगलकहेत ॥  
 जब रघुनाथ कीन्ह रममोखा । समझत चरित हीन मोहि मोखा ॥  
 इंद्रजीतकर आपु बंधायो । तब नारद मुनि नक्ष पठायो ॥  
 बंधन काटि गयो उरगादा । उपजा इदय प्रथं विवादा ॥  
 प्रभुबंधन समझत बल भांती । करत विचार उरमजाराती ॥  
 व्यापक ब्रह्म विरज बायोसा । माया मोह पार परमोसा ॥  
 सो अवतार सुनेउं जग मोही । देखेउं सो प्रभाव कहु नाही ॥

१० । मवबंधन तें छुटहीं नर अपि जा कर नाम ।  
 खर्व निषाकर बांधेउ नामपाय धोर राज । ५९ ॥

वै० । जाना भांति मनहिं समझावा । प्रगट न जान इदय धन लावा ॥  
 खेद खिल मन तर्क बढाई । भयो मोहवत तुलरि हि नारै ॥  
 साकुल गएउ देवरिषि प्राही । कहेसि मो बंधन सिम मन माही ॥  
 सुनि नारदहि ज्ञानि भति दाया । सुनु खन प्रथम राज की लाया ॥  
 जो ज्ञानिन्ह कर चित अपहरई । बरिचाई बिसोइ मन करई ॥  
 जेहि वल्ल वार नचाका मोही । सोइ खायो विहंगपति तोही ॥  
 महामोह उपजा उर तोरे । मिटिहि न बेनि कहे खग मोरे ॥  
 चतुरानन पहि जाइ खगेवा । सोइ करेउ जेहि सोइ निदेया ॥

दो० । अब कहि चके देवरिषि करत रामयुन जाग ।  
 हरिमायावस बरकत पुनि पुनि परस सुजग । ६० ॥

वै० । तब खगपति बिरंचि पद गहल । निज बंदेइ सुमागत भयल ॥  
 सुनि बिरंचि रामचरि किज लाया । बकुलि प्रताप प्रेम कर दाया ॥  
 मन मह करै विचार विधाता । माया बह कहि कोविद ज्ञाना ॥  
 हरिमाया कर जनिम प्रधाया । स्मृत नार जेहि मोहि नचाका ॥  
 अमजगमय सब मन उपराजा । नहि थाकरा मोह खगराजा ॥



तब बोले बिबि निरर कुहरी । जान अचेह राम प्रसुनारी ॥  
 बैसत सब रसि पवि आस । तात अगत वृद्ध जनि कास ॥  
 नह होरहि तैव संस्रवानी । सबउ बिहंग सुगत विधिबानी ॥

दो० । परमातुर बिहंगपति आरउ तब मो पाव ।  
 जात रहैउ कुवेरसह रहिउ उमा कैलाष । ६१ ॥

चौ० । तेहि मम पद बादर सिह मावा । पुनि आपन संदेह सुनावा ॥  
 सुनि ता करि निगतो कहुबानी । जैन रहित मै कहेउ भवानी ॥  
 मिसेउ नहर आरुष मई मोही । कवन भांति समुझावौ तोही ॥  
 तबहि होर तब संस्रव अंत । नव वृद्ध कास करिष सतसंवा ॥  
 सुनिव सबै हरिकथा सुनारी । नाना भांति मुनिष जो मारी ॥  
 सीधे मई आदि मय कवधाना । प्रभु प्रतिपाद रास भगवाना ॥  
 निनि हरिकथा जोनि कइ आई । पठवउ तर्हा कुनऊ ठुन आई ॥  
 नारहि सुनन वक्तव्य संदेहा । रामचरन होरहि पति मोहा ॥

दो० । विनु सतसंवा न हरिकथा तेहि विनु मोह न भाव ।  
 मोह नह विनु रामपद होर न दूढ अनुराग । ६२ ॥

चौ० । मिमकि न रकुमनि विनु अनुराग । किए छोन जय ज्ञान परमा ॥  
 उत्तर दिशि सुंदर गिरि बीजा । तइ रस कामभसुं सोखा ॥  
 रामभगतिपथ परम प्रयोग । ज्ञानीसुनस्यह वृद्ध काखीना ॥  
 रामकथा सो कहु निरंतर । बादर सुनहि बिबिध बिहंग वर ॥  
 जार सुनऊ तह हरिगुण भूरी । होरहि मोहनित दुख दूरी ॥  
 मै अब तेहि सब कहा बुझाई । चखेउ हरि मम पद सिर नारी ॥  
 ता तें जमा न मै समुझावा । रघुपतिहृपा मरम मै पावा ॥  
 होरहि कोन कवऊ अलिमाणा । भो खोवै सह कृपानिधाना ॥  
 कहु तेहि तें पुनि मै नहि राखा । समुझै खग खगषी कै भाषा ॥  
 प्रभुमाया बलवत भवानी । जाहि न मोह कवन अथ ज्ञानी ॥

दो० । ज्ञानी मग पियोगनि विधुवन पति कर जान ।  
 ताहि मोह भाषा नर पावर करहि गुमान ॥  
 बिव बिरसि कइ मोह को रै बपुरा जान ।  
 सब जिय जानि मरहि मुनि मोवापति भगवान । ६३ ॥

चौ० । गएउ मरह मई धई मरुवा । मति कहुँ हरिमनि अखंडा ॥  
 देखि सबस प्रथम मम मरुवा । भाषा मोह कोन सब गएउ ॥  
 करि तपस मयमान जलपाना । बट तर गएउ हृदय हरपाना ॥  
 छह छह बिहंग तह आर । सुनै राम को हरित बोझाए ॥  
 कथा पवन को बोझा बाधा । तेही समय गएउ तमबाधा ॥

पावत देखि सकल अनुराग । हरयेत हास्य चरित रामायन ॥  
 यति आदि सगति कर कीया । साकल्य दक्षिणमुख होया ॥  
 करि पूजा समेत अनुराग । मधुर वचन मन मोहयेत रामायन ॥

० । नाथ ततारय भस्त्र मैं तब दरसन अनुराग ॥  
 आयसु होइ सो करके अब प्रभु पाएउ कोहि बाग ॥  
 सदा कृतज्ञ यह तुम्ह सब सुख प्रथम समेक ॥  
 जेहि कै सन्धति सादर विनम्र कोन्हि मनेक ॥ ६४ ॥

१० । सुनऊ तात कोहि कारण आएउं । सो सब भएउ दरस तब पाएउं ॥  
 देखि परम पावन तब आनन । मण्ड मोह संवसु बाधा भन ॥  
 अब खोरामकथा अति पावसि । सदा सुखद दुखदुखनवावसि ॥  
 सादर तात वनावउ मोही । बार बार विनम्र प्रभु मोही ॥  
 सुनत मण्ड जै मिरा विनोता । सरस सुप्रेम सुख सुमुखीता ॥  
 भएउ तासु मन परम उदाहा । ज्ञान कहर रचयति मुखावा ॥  
 प्रथमहिं अति अनुराग भवानो । राम चरित हर कोहेचि बखानो ॥  
 पुनि नारद कर मोह अपारा । कहेचि बड्ढि रामन चकारा ॥  
 प्रभुअवतार कथा पुनि गरी । तब विचरिअरि कहेचि मन खारी ॥

१० । बाल चरित कहि विविध विधि मन मगं परम उदाहा ।  
 रिविषागमन कहेचि पुनि खोरखोरविवाहा ॥ ६५ ॥

१० । बड्ढि रामअभिषेकप्रथमा । पुनि नृपवचन साकरजमना ॥  
 पुरवासिअ कर बिरह विवादा । कहेचि रामअहिमनसवादा ॥  
 विपिनगवन केउअनुराग । सुरवरि उत्तरि विवाह प्रथमा ॥  
 बालमोकि प्रभुमिलन बखाना । चिचकुट जमि रहे मनमाना ॥  
 बचिवागमन कहर नृप मरवा । भरतगवन प्रेस बड्ढ बरना ॥  
 करि नृप क्रिया संग पुरबावो । भरत गए जई प्रभु मुखभयो ॥  
 पुनि रचुपति बड्ढ विधि समझाह । जे पादुका चबड्ढुर साह ॥  
 भरत रचनि सुरवतिसंत करनी । प्रभु अह अचि भेट पुनि करनी ॥

१० । कहि विराधवध जेहिं विधि देख तजो वरमंग ।  
 वरनि सुतोऊमप्रोति पुनि प्रभु अगनि सतवंग ॥ ६६ ॥

१० । कहि दंडक वन पावनतारी । गोधमद्वी पुनि तेहि नारी ॥  
 पुनि प्रभु पंचवटो नृत बाधा । मंत्री सकल सुनिअ की बाधा ॥  
 पुनि लखिमन उपदेव प्रथमा । सुपनखा जमि कीचि बरुपा ॥  
 खरदूषनवध बड्ढि बखानो । जमि पंच भरतदशवध जामा ॥  
 दशकंधर मोहीच बतकारी । जेहि विधि जई सो वच तेहि कही ॥

हुनि मायाजीना करि चला । सोरघुवीरविराजत कला ॥  
 हुनि प्रभु कीर्तिप्रिय कीर्ति कीन्ही । बधि कर्षन कलहिनि कर्महीनी ॥  
 बहुरि किराज आनन कलुवीरा । जेहि विधि कए करीराम तोरा ॥

दो० । प्रभु नारदसंवाह कवि भावति निज मन प्रबंध ॥  
 पुनि कृषीवर्जितार्द बासिप्रान कर भंग ॥  
 कपिहि तिलक करि प्रभु कृत वैल प्रवरपन बास ॥  
 वरनन वरवा वरद चह रामरोव कपिबांस । ६० ॥

चो० । जेहि विधि कपिपति कोस पठाए । सीताखोज सकल दिशि धाए ॥  
 विवर प्रवेश कीन्ह जेहि भोती । कपिन्ह बहोरि मिला संपाती ॥  
 सुनि सब कथा समोरकुमारा । नाघत भयेउ पथोधि अपारा ॥  
 लंका कपिप्रवेश जिमि कीन्हा । पुनि सीतहि धोरन जिमि दोन्हा ॥  
 बन उजारि रावनहि प्रबोधी । पुन रहि नाघेउ बहुरि पथोधी ॥  
 आए कपि सब जग रघुराई । बंदेही की कुसल सुनाई ॥  
 सेन समेत बसा रघुवीरा । उतरे जाइ बारिनिधितोरा ॥  
 मिला विभोजन जेहि विधि चारै । सागरनिग्रहकथा सुनाई ॥

दो० । सेतु बांधि कपिनेन जिमि उतरी सागर पार ॥  
 गएउ बसोठो वीरवर जेहि विधि बालिकुमार ॥  
 निसिचर कोस सराई वरनेधि विविध प्रकार ॥  
 कुंभकरन चननाद कर सब पौरुष संचार । ६८ ॥

चो० । निसिचरनिकरमरन विधि नामा । रघुपति रावन समर बखाना ॥  
 रावन बध मंदोहरि सोका । राज विभोजन देव असोका ॥  
 सीता रघुपति मिलन बहोरि । सुरन्ह कीन्हि अश्रुति कर कीरी ॥  
 पुनि पुष्पक चढ़ि कपिन्ह समेता । अवध चले प्रभु छपानिके ॥  
 जेहि विधि राम नगर निज आए । बायस निघर चरित सब गाए ॥  
 कहेधि बहोरि रामचभिषेका । परवरनन झुपकीति अनेका ॥  
 कथा सबसु सुसुख बखानी । जो मै तुन्हसन कहेउ भवानी ॥  
 सुनि सब रामकथा खगेनाहा । कहत बचन मन परम उहाहा ॥

चो० । गएउ मोर बंदेह सुनेउ सकल रघुपति चरित ॥  
 भएउ रामपदनेह सब प्रसाद वायसतिलक ॥  
 मोहि भएउ चलि मोह प्रभुबंधन रन सह निरसि ॥  
 चिदांगदंभेह राम बिकल कारण कल । ७० ॥

चो० । देखि चरित चलि नर जनवारी । भएउ हृदय मन संख्य भारी ॥  
 मोर भव सब चित करि जे जोगा । कीन्ह अचपल ज्ञानविद्या ॥

मो अति आनन्दकायक कोरे । तदकायक सुख काये कोरे ॥  
 मो नहिं होम मोह अति कोरी । निकलें अति कलम विधि कोरी ॥  
 सुनतेउ किमि अमिकाय सुवाई । अति विनिमय अति विधि सुनवाई ॥  
 निगमागम पुराण मन्त्र ह्यहा । कदाहिं बिहू मूनि अति मंदहा ॥  
 वत निमुह भिक्षां परि तेहो । चितवहिं रामकथा करि केहो ॥  
 रामकथा तेव दरसन भएज । तव प्रवाद सब सुख भएज ॥

० । सुनि बिहसपतिबाणी रहित विनय अनराग ।  
 पुखकगात सोचन समस्त मन हरवेउ अति काम ॥  
 सोता सुमति सुखीस सुचि कथारमिक हरिदास ।  
 पाद उमा अति गोप्यमपि सज्जन करहिं प्रकाश । १८ ॥

१० । बोखेउ काकभमुंडि बहोरी । नभगनाथ पर प्रीति न छोरी ॥  
 सब बिधि नाथ पूज्य तुम्ह मेरे । हृपापात्र रघुनाथक केरे ॥  
 तुम्हहिं न संभय मोह न भाया । मो पर नाथ कीन्हि तुम्ह दाया ॥  
 पठइ मोहमिम खगपति तोही । रघुपति दीन्हि बडाई मोही ॥  
 तुम्ह निज मोह कहो खगसाई । सो नहिं कहु आचरण गोसाई ॥  
 नारद भव विरंचि मनकादी । जे भूमिनाथक आतमबादी ॥  
 मोह न अंध कीन्हि केहि केहो । को जन काम नचाव न जेहो ॥  
 निछा केहि न कोन्ह बौराहा । केहि कर चरय कोध नहिं दाहा ॥

ते० । जानी तापस सुर कवि कोबिद गुनचागार ।  
 केहि कै सोभ विखंबना कोन्ह न एहि संसार ॥  
 सोमद बक न कीन्ह केहि प्रभुता बधिर न काहि ।  
 सुगच्छोचनिकोचन सर को अथ खान न जाहि । १० ॥

वै० । मुनकृत सन्धपात नहिं केहो । कोउ न मान मद तजेउ निबेहो ॥  
 ओवनज्वर केहि नहिं बखकावा । ममता केहि कर जय न मचावा ॥  
 भस्तर काहि कलंक न खावा । काहि न होकयमीर डोखावा ॥  
 चिंता सापिनि को नहिं खावा । को जन जाहि न खायो भावा ॥  
 कीटमनोरथ दाइसरोरा । जेहि न खाम पुन को अथ धीरा ॥  
 सुत बित ओक ईखना तोनी । केहि कै मति इन्ह कत न मखोनी ॥  
 यह सब माया कर परिवारा । प्रबल समित को बरने पारा ॥  
 शिव चतुरानन जाहि डेराही । अपर ओव केहि खेखे माही ॥

दो० । अपि रहेउ संसार मज्ज मायाकटक मज्ज ।  
 वेनापति कामादि अष्ट दंभ कपट पाकंड ॥  
 को दाखी रघुबीर कै समझे मिखा बोधि ।  
 हूट न रामकथा निज नाथ कहौ पररोपि । २१ ॥

चौ० । जो माया सब कर्महि जगदास । मायु चरित कहि कहि न पावै ॥  
 सोर प्रभु जगद्विनाश करमाया । नाच मने सब कहित कमाया ॥  
 सोर उचिदोसहि जग रासा । सब विज्ञान रूप बसवासा ॥  
 यापक याव सब कहि जगंत । सबिख जगनेन बनि जगवता ॥  
 अगुन अदमि निहामोतोता । सबदरी श्री अनवस अभोता ॥  
 निर्मम निमाकार निर्मोहा । नित्य निरंजन सुखबंदोहा ॥  
 प्रकृति पार प्रभु सब करवायो । ब्रह्म निरोध धरिज अविनायो ॥  
 इहाँ मोह कर कारण नाहीं । रविसमूख तम कबहुँ कि नाहीं ॥

दो० । भगत हेतु भगवान प्रभु राम धरेव तनु भूप ॥  
 किए चरित पावन परम प्राकृत नर अनु रूप ॥  
 यथा जनेक वेद धरि नृत्य करै गट कोर ॥  
 सोर सोर भाव देखावै आपुन सोर न सोर । ७२ ॥

चौ० । सबि रघुपतिखोला करमारी । दनुजविमोहनि जनसुखकारी ॥  
 जे मतिमलिन विषयवस कामो । प्रभु पर मोह धरहिं दमि स्वामी ॥  
 नखनदोष आ कहि जव होई । पोतवरन सबि कहि कहुँ सोई ॥  
 जव जहि दिशि भम होइ खगेष्ट । सो कहि पच्छिम उष्ट दिनेष्ट ॥  
 नौकाकूट बसत जग देष्टा । असल मोहवस आपुहि खेष्टा ॥  
 वासक भमहिं न भमहिं मृष्टादी । कहहिं परस्पर मिथ्याबादी ॥  
 हरिविषयिक अस मोह बिहंगा । सपनेहुँ नहि अज्ञानप्रसंगा ॥  
 मायावस मतिमंद प्रभागी । इदव जमनिका बड बिधि लागी ॥  
 ते सठ हठवस संसय करहौ । निज अज्ञान राम पर धरहौ ॥

दो० । काम क्रोध मद लोभ रत महासक्त दुखरूप ॥  
 ते किमि जानहिं रघुपतिहिं मूढ परे तमरूप ॥  
 निर्मुन रूप सुखभ बति समुन जान नहि कोर ॥  
 सुखम जगम माना चरित सुनि मुनिजन जग होर । ७३ ॥

चौ० । मुनु खगेष्ट रघुपतिप्रभुतार । कहौ यथाकति कथा सुहार ॥  
 जेहि बिधि मोह भएव प्रभु मोही । सो सब कथा सुनावौ तोही ॥  
 रामकृपाभाजन सुख तमता । हरिगुनप्रोति मोहि सुखदाता ॥  
 ता ते नहि कहुँ तुषहिं दुखवौ । परम रहस्य मनोहर गावौ ॥  
 सुनहुँ राम कर सहज सुमाख । जनअभिमान न राखहिं काख ॥  
 संसृतमूक सुखप्रद जाना । सकललोकावस अभिमाना ॥  
 ता ते करहिं कृपानिधि दूरी । सेवक पर ममता बति दूरी ॥  
 निमि विमुक्तन जग होर मुखाई । मातु चिरम कहिनि को माई ॥

१० । अथ रामायणं सुप्रसिद्धं रोच्यं वाच्यं च ।

आदिनाथः पितुः जन्मो जन्मनः सो विप्रदोः

तिमि रघुपतिं निजः शत्रुं करः हरति भावयति कामि ।

तुल्यचिदायः सैव प्रभुर्हि कथं न भवत्युत्तमः ॥ ३४ ॥

१० । रामकृपा आपनि जठराई । करौ खनेव सुनहु जन खारै ॥

अव अव राम मनुजतनु धरौ । भग्न हेतु खोजा बड करौ ॥

तव तव अवधपुरो मे जाऊ । बालचरित बिछोकि हरबाऊ ॥

जन्ममहोत्सव देखौ खारै । बरव पांच तहं रचौ खोभारै ॥

इष्टदेव मम बालक रामा । सोभावपुत्र कोटिबल कामा ॥

निज प्रभुबदन निहारि निहारी । खोजन बलक करछं उरगारी ॥

लघुबावबचपु धरि हरि संग । देखछं बालचरित बड रंभा ॥

१० । खरिकाई अहं अहं फिरहिं तहं तहं संग उठाऊ ।

जठनि परै अगिर महं सो उठाह करि खाऊ ॥

ऐकवार प्रतिबध सब चरित किए रघुवीर ।

सुमिरत प्रभुखोजा खोद पुलकित भएन खरीर । ३५ ॥

बौ० । कहै भमुंड सुनहु खगनायक । रामचरित सेवकसुखदायक ॥

नृपमंदिर सुंदर सब भांतो । खचित कमल मनि माना जानो ॥

बरनि न जाद रचिर अंगनाई । अहं खोजाई नित चरित भारै ॥

बालबिनोद करत रघुराई । विचरत अगिर जगनि सुखदाई ॥

मरकत मृदुल कछेवर खामा । अंग अंग प्रति हवि बड कामा ॥

नव राजीव अदन मृदु चरना । पदज रचिर नख बसिदतिहरना ॥

ललित अंक कुलियादिक चारो । नूपुर चार मधुररवकारो ॥

चाहपुरट मनिरचित बगारै । कटिकिंकिनि कल मुखर सुहारै ॥

दो० । रेखा चय सुंदर उदर नाभो रचिर मंगीर ।

उर आघत भाजत विविध बालविभूषण खीर । ३६ ॥

बौ० । अदन पाणि नख करज मनोहर । बाहु बिसाल विभूषण सुंदर ॥

कंध बाहू केहरि दर खोजा । चाह चिबुक आनन हविखोजा ॥

कलबल बचन आधर अदनारे । दुह दुह देखन बिसर बर वारे ॥

ललित कपोल मनोहर नाचा । बकल सुखद बहिकर सम बाचा ॥

नील कंज खोजन भवमोचन । आनन भास निजक मोरोचन ॥

बिकट भुक्तुटि सम खयक सुहाह । कुचित कच लेखक बसि लाह ॥

प्रीति खोजि जगजो तन-खोजो । किलकणि आनन भावति मोहो ॥

कपरावि नृपचरितविहारी । नाचहि निज प्रतिबिंब निहारी ॥

मोहिजन करहि विविध विधिबीडा । वरगत चरित सोत मोहि बीडा ॥  
 किडकत मोहि चरन जब धारहि । चहौ भागि जन पूष देखावहि ॥

दो० । चावल निकट हवहि प्रभु भाजत रदन कराहि ।  
 जात समीप महकवद किरि किरि चितै पराहि ॥  
 प्राकृत बिनु रव सोका देखि भयो मोहि मोह ।  
 कबल चरित करत प्रभु चिदानंददोह । ७७ ॥

चौ० । एतना मन आनत खमराया । रघुपतिप्रेरित जायो माया ॥  
 सो माया न दुखद मोहि काही । आन जीव रव संधि नाही ॥  
 नाथ रहीं कहु कारन आना । सुनऊ सो सावधान हरिआना ॥  
 ज्ञान चखंड एक कीतानर । मायाबख जीव वचराचर ॥  
 जौ सब को रह ज्ञान स्वरूप । ईसर मोविहि भेद कहऊ कब ॥  
 मायाबख जीव अभिमानो । ईसबख माया मुनखानो ॥  
 परबख जीव सबख अनवंधा । जीव चनेक एक खीकता ॥  
 मुधा भेद यद्यपि कृत माया । बिनु हरि जाह न कोटि उपाया ॥

दो० । रामचंद्र के भजन बिनु जो चह पर निर्वाण ।  
 ज्ञानवंत अपि सो जर पसु बिनु पुच्छ निषाण ॥  
 राकापति सोखत उपाहि तारागन समुदाह ।  
 सकल निरिह हूँ सादस बिनु रवि राति न आह । ७८ ॥

चौ० । कैदेहि बिनु हरि भजन खनेसा । मिटै न जीवन् कर कसेसा ॥  
 हरिसेवकहि न आस चविद्या । प्रभुप्रेरित जायै तेहि विद्या ॥  
 ता तें नाथ न होइ दास कर । भेदभगति बाह्यै निहंसवर ॥  
 भ्रम तें चकत राम मोहि देखे । बिहसे सो सुनु चरित बिसेखा ॥  
 तेहि कौतुक कर मरम न काह । जाना जगुन न सातु पिताह ॥  
 जानुपानि धाय मोहि भरना । खामख मात खरन कर चरना ॥  
 तब मै भागि चखेड करगारो । राम गहन कह भुजा पसारो ॥  
 जिमि जिमि दूरि उड़ाउ चकासा । तहं तहं भुज देखौ निज पासा ॥

दो० । ब्रह्मलोक लगि गएउ मै चितएउ पाह उड़ात ।  
 कुन संगुल कर बीच सब राम भुजहि मोहि तात ॥  
 यथावरन भेदि करि चहौ लगे गति मोरि ।  
 मएउ तहां प्रभुभुज निरखि व्याकुल भएउ बहोरि । ७९ ॥

चौ० । मूछेउ नयन पवित जब भएऊ । पुनि फिनवत कोखसुन मएऊ ॥  
 मोहि विछोकि राम मुसकाही । निहसत तुरत मएऊ मुख साही ॥  
 उदर मास सुन खंखराया । देखेउ बड ब्रह्मलोकिकाया ॥

प्रति विधि तब सोकोस चनेका । रचना प्रसिद्ध एक ते रचना ॥  
 कोटिन्ह चतुर्मुख मौरोका । चमकित कलस सब रत्नकोका ॥  
 चमकित सोकपास सब काका । चमकित भुवर भूमि विधाका ॥  
 सानर सरि सर सिद्धि प्रसादा । गाना भूमि सिद्धिप्रसादा ॥  
 सुर मुनि सिद्ध नाम सर किर । चारि प्रकार जीव चक्राचरा ॥

० । जो नहि देखा बहि मुना जो मन जं ब चकार ।  
 सो सब चहुत देखेन बरनि कवन विधि जाह ॥  
 एक एक त्रुणांड मर रहौ परब सत एक ।  
 एहि विधि देखत फिरौ मैं चंडकटाह चनेक । ॥

१० । लोक लोक प्रति भिन्न विधाता । भिन्न विधि चिन्त जनु विधिधाता ॥  
 नर गंधर्व भूत वेताका । किरर विधिचर सब सम काका ॥  
 देवदनुजमन नाकाजाती । सकल जीव तब चानहि भाती ॥  
 महि सरि सानर सर सिद्धि गाना । सब प्रपंच तब चानह चाका ॥  
 चंडकोस प्रति प्रति निज कृपा । देखेन निजब चनेक प्रनुपा ॥  
 चक्रधपुरी प्रति भुवननिधारी । परब भिन्न भिन्न सर नारी ॥  
 दसरथ कौसल्या सब मता । विविध रूप भूतनादिक भाता ॥  
 प्रति त्रुणांड रामचवतारा । देखेन बाबाबिनाद चपारा ॥

१० । भिन्न भिन्न मैं दोस सब प्रति विधि चरिचान ।  
 चमकित भुवन किरनें तब राम न देखेन जान ॥  
 सोह सिद्धमन सोह सोभा और कृपाच रघुवीर ।  
 भुवन भुवन देखत फिरौ मेरित मोहबनोर । ॥

१० । भुमत मोहि त्रुणांड चनेका । भीते मनई कलस सत हंका ॥  
 किरत किरत निज चाखम चाहं । तब पुनि रवि कहु बाह मंवाहं ॥  
 निज प्रभुचक्र चक्र सुनि पाहं । निर्भर होम चरिच उठि चाहं ॥  
 देखेन जयमयोसब जाहं । मोहि विधि प्रथम कहा मैं गार ॥  
 रामचंद्र देखेन सब मता । देखत बमै न कार बचाका ॥  
 तब पुनि देखेन राम सुबाका । मायापति कृपाच भगवाना ॥  
 करौ विचार बहोरि बहोरि । मोहकलिक काफि मति मोरी ॥  
 उभय चरौ मर मैं सब देखा । भइत सति मन मोह बिचेका ॥

१० । देखि कृपाच बिकल मोहि विधि तब रघुवीर ।  
 विधंयनपी मुख काहेर चाहं पुनमतिभीर ॥  
 सोह सतिकार मोहि बन करन बने पुनि राम ।  
 कोटि भूमि समुद्रावों मन न सरे विधाका ॥



श्री० । देखि परित कहसो प्रभुतारी । समुझत देखतक विचारही ॥  
 धरनि परेछं मुख चान न वात । चाहि चाहि चारतमकपाता ॥  
 प्रेमाकुल प्रभु मोहि बिसोखी । निज भाषा प्रभुता तब रोकी ॥  
 कर सरोज प्रभु मम फिर धरिऊ । दीनदयाल सकल दुख हरेऊ ॥  
 कोन्ह राम मोहि विनत विमोहा । सेवकसुखद कृपासंदोहा ॥  
 प्रभुता प्रथम विचारि दिखारी । मन मह होइ चरष अति भारी ॥  
 भगतवहकता प्रभु कै देखी । जपकी मम उर प्रीति बिसेखी ॥  
 सजल नयन पुलकित कर जोरी । कोन्हिउ बड विनि विनसबहोरी ॥

दो० । मुनि सप्रेम मम जानी देखि दीन निज दास ।  
 बचन सुखद गंभीर सुदु बोले रमाविवास ॥  
 काम असुंकी मांगु बर अति प्रसन्न मोहि जानि ।  
 चरितमदिक सिद्धि अपर निधि मोच्छ सकलसुखजानि ॥ ८२ ॥

श्री० । ज्ञान विवेक विरति विज्ञान । सुरदुर्लभ गुन जे जग जाना ॥  
 आज देख सब संसय माहीं । मागु जो तोहि भाव मन माहीं ॥  
 मुनि प्रभुवचन अधिक अनुरागेउ । मन अनुमान करन तब लागेउ ॥  
 प्रभु कह देन सकल सुख नही । भगति आपनी देन न कही ॥  
 भगतिहोन गुन सुख सब कैमे । सौन बिना बड विजन जैमे ॥  
 भजनहोन मुख कवने काजा । अस विचारि बोलेउ खगराजा ॥  
 जौ प्रभु होइ प्रसन्न बर देऊ । सो पर करेऊ कृपा अह नेऊ ॥  
 मनभावत बर मागौ लागी । तुन्ह उहार उर अंतरजामी ॥

दो० । अविरल भक्ति विमुक्त तब मुनि पुरान जो गाव ।  
 जेहि खोजत जोगीव मुनि प्रभुप्रसाद कोउ पाव ॥  
 भक्तकल्याण प्रनतप्रित कृपाविधु सुखभास ।  
 होइ निजभक्ति मोहि प्रभु देऊ कृपा करि पास ॥ ८३ ॥

श्री० । एवमस्त कहि रघुछुलनायक । बोले बचन परमसुखदायक ॥  
 सुनु बाच्य तैं परम प्रसादा । काहेन मागहि अथ बरदादा ॥  
 सबसुखजानि भवति तैं मांगी । नहि जन कोउ तोहि सम बडभागी ॥  
 जो मुनि कोटि जतन नहि सहरी । जे जपखोनखनक तन दहरी ॥  
 रोखेउ देखि तोरि चतुराई । समेऊ भगति मोहि अति भारी ॥  
 सुनु बिहंग प्रसाद अब मोरे । सब सुख मुन बसिहहि उर तोरे ॥  
 भगति ज्ञान विज्ञान विरावा । योगवरिष रहस्यजिभावा ॥  
 जानव तैं बरही कर खेदा । मन प्रसाद नहि साधनखेदा ॥

० । मायासंभव भव सब न आपिहो मोहि ॥  
 कानेव जगु बनावि सब अनन गुनाकर मोहि ॥  
 मोहि मनोप्रिय संतत सब विचारि ननु काम ॥  
 काय बचन मन मन पर करेसु सबसु अनुराग ॥ ८५ ॥

१० । अब सुन परम विमल मन बानी । दस्य सुगम भिन्नमाहि बखानी ॥  
 निज सिद्धाति सुनावी तोही । सुनि मन धर सब तबि भजु मोही ॥  
 मम मायासंभव सकार । जीव बराबर विविध प्रकार ॥  
 सब मम प्रिय सब मम उपकार । सब तें अधिक मनुष्य मोहि भाए ॥  
 तिनह महुं दिन दिन महुं स्तुतिधारी । तिनह महुं निरमधर्म अनुकारी ॥  
 तिनह महुं प्रिय विरक्त पुनि ज्ञानी । ज्ञानिउ तें कतिप्रिय विज्ञानी ॥  
 तिनह तें पुनि मोहि प्रिय विज-दाया । जेहि गति मोहि न दूषरि पाया ॥  
 पुनि पुनि सत्यकथैं तोहि शरी । मोहि सेवक सब प्रिय कोउ नाहीं ॥  
 भक्तिहीन विरहि किन होई । सब जोवन सब प्रिय मोहि होई ॥  
 भगतिवत अति मोची प्राणी । मोहि प्राणप्रिय सब मम बानी ॥

१० । सुधि सुधीस सेवक सुमति प्रिय कउ काहि न जान ॥  
 स्तुति पुरान कह नीति सब सावधान ननु काम ॥ ८६ ॥

शे० । एक पिता के बिपुल सुमारा । होहि पृथक मन कोउ सकारा ॥  
 कोउ पंडित कोउ तावस ज्ञाता । कोउ धनवत सूर कोउ दाता ॥  
 कोउ सरवज धरमरत कोई । सब पर प्रीति पितरि सन होई ॥  
 कोउ पितुभक्त बचन मन कर्मा । सपनउ जान न दूषर धर्मा ॥  
 सो सुत प्रिय पितुप्राण समाना । यद्यपि सो सब भीति सवाना ॥  
 एहि विधि जीव बराबर सेते । दण्डम देखे कर अपुर समेते ॥  
 अखिल बिसय सब मम उपकारा । सब पर मोहि बराबरि दाया ॥  
 तिनह महुं जो परिहरि नद मोचा । भगद मोहि मनबच सब काया ॥

दो० । पुरुष नकुपक नारि न जीव बराबर कोर ।

सर्व साधु मम कपट तबि मोहि वरम प्रिय कोर । ८७ ॥

सो० । दस्य कहौ सब तोहि सुधि सेवक मम प्राणप्रिय ।

सब विचारि भजु मोहि परिहरि सब मरीच सब । ८८ ॥

चौ० । कबहुं काख न आपिह तोही । सुमिरउ भजेउ निरतर मोही ॥  
 प्रभुबचनामृत सुनि न चखाऊ । तन पुनक्ति मम अति बरखाऊ ॥  
 सो सुख जानि मन नद कावा । नहि रचना पछि नार बखाना ॥  
 प्रभुयोभा बखानहि नमना । कहि किमि बकहि तिनहि नहि बचना ॥  
 बड विधि मोहि प्रवेदि सुख देई । सब करन विमुक्तोतु तै ॥

सजस नवन कहु मुख करि कथा । किने मातु कामी कनि भूखा ॥  
देखि मातु कातर रहि भारी । कहि कहु ब्रह्मन किने घर सारी ॥  
गोद राखि करान ब्रह्म वास । द्युपति करि कनि कर माना ॥

यो० । मेहि मुख कामि दुरति रहिय वेव कृत बिब मुखर ॥  
बबधपूरी बनभरि तेहि मुख मरुं बंति मयन ॥  
होई सुखसखीन बिब वारक सपनेऊं लहेव ॥  
तेहि नहि भवि खनेव ब्रह्मवृद्धिं ब्रह्मन सुमति । ३ ॥

यो० । मै पुनि अवध रचेउं कहु कावा । देखेउं बाकविनोद रसावा ॥  
रामप्रसाद भगतिवर पावै । प्रमुखद यदि निवासन पावै ॥  
तब ते औषि न कापी जावा । जब ते रघुनाथक सपनावा ॥  
अब कब मरुं चरित मै जावा । हरिनाथ किनि मो । नचावा ॥  
निम कनुभय कब कहौ खनेवा । विनु हरिभजन न का । कछेवा ॥  
रामकृपा विनु पुन खनवाई । जानि न कोद राम सतारै ॥  
जाने विनु न होइ परतीती । विन परतीति हो । यहि प्रीती ॥  
प्रीति बिना नहि भवि निहारै । निमि कनमति नउ कै चिकनारै ॥

यो० । विनु मुख होइ कि प्रान जान कि होइ विश्राम विनु ।  
भावहि वेद मुरान मुख कि लखिय हरिभगति विनु ॥  
कोउ बिबास कि पाव तात यवज बंतीव विनु ।  
यहै कि लख विनु पाव कोटिजतन पति पति सरिय । ५ ॥

यो० । विनु संतोष न कास कयाची । काम कलत मुख सपनेऊं नारो ॥  
रामभजन विनु मिटहि कि कामा । अथ बिबोन तब कनऊं कि कामा ॥  
विनु विज्ञान कि समता कावे । कोउ अकाल कि नभ विनु पावै ॥  
कहु बिना धर्म नहि होई । विनु मरि मरुं कि पावै कोई ॥  
विनु तप तेव कि कर कियेसरा । जक विनु हय कि होइ बंकारा ॥  
सोच कि निम विनु मुखेवकाई । किनि विनु तेज न कय कोवाई ॥  
निम मुख विनु मन होइ कि कोरा । परस कि होइ बिबोन ससोरा ॥  
कवनिउ सिद्धि कि विनु बिबासा । विनु हरिमजन व भवभयनासा ॥

दो० । विनु बिबास भवति यहि तेहि विनु इवहि ।  
रामकृपा विनु सपनेऊं जीव न लख बिबास । ८ ॥

यो० । अथ बिचारि बलिधोर तनि कुतर्क बंधव सकल ।  
अनऊं राज रघुवीर कवनाकर सुंदर मुखद । ६ ॥

यो० । बिब कति हरि नारुं मै नारै । प्रमुखापमहिना कनरारै ॥  
कहेउं न कहु करि कुमति बिबेकी । यह सकल निम नयनहि देखी ॥

- महिमा नाम स्रग्भवाद्या । सकल प्रसिद्धि सर्वत्र स्रग्भवाद्या ॥  
 निज निजमतिमुनि हरिचुष आदिहि । निजम मेव किं पार न पारहि ॥  
 तुम्हहि चाहि सग सगल प्रसिद्धा । सग सगलहि नहि काकोहि पला ॥  
 तिमि रघुपतिमहिमा स्रग्भवाद्या । तात सगल कोट काव कि बाहा ॥  
 राम काम सत कोटि सगल सग । दुर्मा कोटि प्रसिद्ध हरिचुष ॥  
 एक कोटि सत हरिच विद्याया । नम सत कोटि प्रसिद्ध स्रग्भवाद्या ॥
- १० । स्रग्भवा कोटिप्रसिद्ध विष्णु सग रवि सतकोटि प्रकाश ॥  
 सवि सतकोटि सुशोभन सगल सगल भवनाथ ॥  
 काव कोटिप्रसिद्ध हरिच प्रति दुखर दुर्ग दुर्गत ॥  
 धूमकेतु सतकोटि सग दुराधर्ष भगवत् ॥ ८८ ॥
- ११० । प्रभु स्रग्भवा सतकोटि प्रकाश । सगल कोटिप्रसिद्ध हरिच स्रग्भवा ॥  
 तोरय प्रसिद्ध कोटि सग प्रकाश । नाम प्रसिद्ध सगल सगल भवनाथ ॥  
 हिमगिर कोटि सगल स्रग्भवाद्या । विष्णु कोटिप्रसिद्ध सग सगल ॥  
 कामधेनु सत कोटि स्रग्भवाद्या । सकल कामधेनु सगल सगल ॥  
 सारद कोटि प्रसिद्ध स्रग्भवाद्या । विधि सत कोटि प्रसिद्ध निपुनार ॥  
 विष्णु कोटिप्रसिद्ध पावनकला । स्रग्भवा कोटिप्रसिद्ध सग सगल ॥  
 धनद कोटिप्रसिद्ध सग धनदाया । माया कोटि प्रसिद्ध विद्याया ॥  
 धरा धरन सतकोटि स्रग्भवाद्या । निरवधि निरवधि प्रभु स्रग्भवाद्या ॥
- १२० । निरवधि न स्रग्भवा नाम राम समान राम निजम केहे ।  
 किमि कोटिप्रसिद्ध सगल सग रवि स्रग्भवा प्रति स्रग्भवा केहे ॥  
 एहि मांतिनिज निज मति विद्याय मनोक हरिचिन्मयापहि ।  
 प्रभु भावनायक प्रसिद्धपाक सगल सुनि सुख मानहि । ८९ ॥
- १३० । राम प्रसिद्धसगल सगल सगल कि पावे कोट ।  
 सतस सग सग सग सुनिच तुम्हहि सुनाइच कोट । ९० ॥
- १४० । भाववत् सगल सुनिधियान सगल सगल ॥  
 तनि सगल सगल सगल सगल सगल सगल सगल ॥ ९१ ॥
- १५० । सुनि सगल के सगल सगल । स्रग्भवा सगल पंक सुकाश ॥  
 नयन नीर सग प्रति स्रग्भवाद्या । स्रग्भवा सगल सगल सगल ॥  
 पादिक मोह सगल सगल सगल । सगल सगल सगल सगल ॥  
 पुनि पुनि कामधेनु स्रग्भवाद्या । सगल सगल सगल सगल ॥  
 गुरु किं सगल सगल सगल । सगल सगल सगल सगल ॥  
 सगल सगल सगल सगल । सगल सगल सगल सगल ॥  
 तव सगल सगल सगल सगल । सगल सगल सगल सगल ॥  
 तव सगल सगल सगल सगल । सगल सगल सगल सगल ॥

दो० । ताहि प्रबन्धि निमिष निमिष बीच बार कर मोरि ।  
 बचन विनोत, वसेन सुदु कोखेउ नहर कहोरि ॥  
 प्रभु आपने अभिनेक में बूझौ खामी तोहि ।  
 कृपाविंधु सदर कहउ जानि दास निमिषोहि । ८१ ॥

चौ० । तुम्ह वरवत्त तम समपारा । सुमति सुखील सरल आचारा ॥  
 ज्ञान विरति विज्ञान निवासा । रघुनाथक के तुम्ह निमिष दासा ॥  
 कारन कवन देह बह पाई । तात सकल मोहि कहउ बुझाई ॥  
 रामचरित सर सुंदर खामी । बाएउ कहाँ कहउ नभगामी ॥  
 नाथ मुमा में अब बिव पाहीं । मझ प्रसन्न कह तव माहीं ॥  
 मुधा बचन नहि ईसर कहई । सोउ मोरे मन संसय अहई ॥  
 जग जग बीच नाम नर देवा । नाथ सकल जग कालकलेवा ॥  
 चंड कटाह अमित कथकारी । काह सदा दुरतिकम भारी ॥

चौ० । तुम्हहि न आपत काह अति कराह कारन कवन ।  
 मोहि सो कहउ छपाह ज्ञानप्रभाव कि योगवत । ८२ ॥

दो० । प्रभु तव आचम आणउ मोर मोह भ्रम भाग ।  
 कारन कहत सो नाथ सब कहउ बरित अनुराग । ८३ ॥

चौ० । नदबिन्दु मुनि वरवत्त जाना । बोखेउ जमा परम अनुराग ॥  
 धन्य धन्य तव मति वरनारी । प्रभु तुम्हहि मोहि अति प्यारी ॥  
 सुनि तव प्रभु वसेन सुझाई । बज्रत जग के मुधि मोहि पाई ॥  
 सब निज कहाँ कहाँ में माई । ताते सुनउ बादर मय झाई ॥  
 जय तप मय जग हम जग दाना । विरति विनेक योग विज्ञाना ॥  
 सब कर फल रघुपतिपदप्रेमा । तेहि बिनु कोउ न पावै हेमा ॥  
 एहि तन रामभगति में पाई । ता में मोहि अमता अधिकारी ॥  
 जेहि में कहु निजखारब होई । तेहि पर समता कर सबकोई ॥

चौ० । प्रसन्नारि अहि मोनि सुतिषयत सज्जन कहहि ।  
 अति मोचउसन प्रीति करिय जानि निज परक प्रीति ॥  
 पाट जोड वें सोइ तेहि में पाटंवर बधिर ।  
 कसि पावै सबकोइ परम अपावन प्राप्त सम । ८४ ॥

चौ० । खारख जोह बीक कहैं हहा । मनकम बचन रामपद जेहा ॥  
 सोइ पावन सोइ सुभन सरील । जो तनु सोइ मजिब रचबीरा ॥  
 रामविभुष कहि निधि जग बेसी । कवि कोविद न प्रबन्धि तेसी ॥  
 रामभगति इहि तन कर मोखी । ता में मोहि परम प्रिय खामी ॥  
 तजौ न तन निजदण्डादरसा । तन बिनु केह मज्जन नहि वरना ॥

।म मोह मोहि बहुत बिगोवा । रामबिमुख सुख कबहु न होवा ॥  
।ना जनम करम पुनि नावा । किसे धोन जप तब सब होवा ॥  
वन धोनि जनमेउं कहूँ नारी । मैं खनेस धनि धनि जन नारी ॥  
खेउ करि सब करम मोहारी । सुखी न भएउँ जपहि की नारी ॥  
।धि मोहि नाथ जनम बडु करी । सिवप्रसाद मति मोह न चरी ॥

। प्रथम प्रश्न के चरित अथ कहौ सुनहु बिहगेष ।  
सुनि प्रभुपदरति लखै जा ते मिटहि कलष ॥  
। पूरव कथ्य एक प्रभु युग कलियुग मलमल ॥  
। नर अह नारि अधर्मरत सकल निगम प्रतिकूल । ८१ ॥

० । तेहि कलियुग कोसलपुर नारि । जनमत भएउँ सुदतनु पारि ॥  
।सिवसेवक मन कम अथ धानी । आन देवनिंदक अभिमानि ॥  
।धनमदमत्त परम वाचावा । उय बुद्धि घर ईश विधावा ॥  
।यदपि रहेउँ रघुपतिरजधानी । तदपि न कहूँ अभिमान सव जानी ॥  
।अब जानासैं अवधप्रभावा । निगमानम धुरात अथ भावा ॥  
।कवनेउँ जेका अवध बस कोरै । रामपराधन को सरि होरै ॥  
।अवधप्रभाव जान तब जानी । अब उर बसहि राम धनुषानी ॥  
।यो कलिकाक कलिन खरगारी । पापपराधन सब जप नारी ॥

१० । कलिकाल एषे धर्म सब क्षुत्त भए सदयस ॥  
।इंभिसु मिज मति कलिय करि प्रगट किसे बडु बस ॥  
।अह जोन सब मोहबस खोम एमे सुभ कस ॥  
।सुनु हरियान ज्ञाननिधि कहौ कहुक कलिकस ॥ ८२ ॥

। वरनधर्म नहि आसुमचारी । सुतिबिरोधरत सब नर नारी ॥  
।दिज सुतिबेचक भूप प्रजाधन । कोउ नहि मान निगम चनुधावन ॥  
।मारग सोइ जा कहूँ जोइ भावा । पंडित खोर जो गास बजावा ॥  
।मिथ्यारंभ ईभरत जोरै । ता कहूँ संत कहै सब कोरै ॥  
।खोइ सद्यान जो परधनहारी । जो कर दंभ को बडु पावारी ॥  
।ओ कह झूठ मसखरी जाना । कलियुग खोर गुनवंत बसावा ॥  
।निराचार जो सुतिपंचत्ताकी । कलियुग खोर ज्ञानी जो निरानी ॥  
।जा के नख अह जटाबिसका । खोर तापव प्रसिद्ध कलिकाका ॥

दो० । असुसवेध मृदुन धरि भय्याभव जेखाधि ।  
।तेर खोगी तेइ भिहूँ नर पूष्य ते कलियुग नारि । ८३ ॥

सो० । जो चपकारीचार तिहूँ कर मौरव मान्यतेइ ।  
।जन कम बचन खवार तेइ बकता कलिकाक जह । १० ॥

चौ० । नारिविवध नर कलक नोकारि । नारहिं नर अरकट की नारि ॥  
 सुद्र दिवन्ध कपटिचरि ज्ञानी । मेलि नमेज खेहिं नर नार ॥  
 सब नर कामकोधरत कोधी । देव विप्र सुति संत निरोधी ॥  
 नूनमंदिर सुंदर नति त्वाजी । भवहिं नारि वरपुत्र नभानी ॥  
 बौभागिनी विभूषनचोना । विधवन्ध के सुंवार नवीना ॥  
 नर सिद्ध बधिर चंध का खेजा । एक न सुनै एक नहिं देखी ॥  
 हरे सिद्धधन शोक न हरई । सो मुह मोर नरक भव परई ॥  
 मातु पिता वाककन्हि नोकारहिं । चर भै मोर धर्म सिखावहिं ॥

दो० । मन्त्रज्ञान विनु नारि नर कहहिं न दूधरि वात ।  
 कौडी जागि लोभवस करहिं विप्रनुरघात ॥  
 बादहिं सुद्र दिवन्ध सग हम तुम ते कहु चाटि ।  
 जानै नर सो विप्रवर आसि देखावहिं जाटि । ८३ ॥

चौ० । परतिपन्नपुत्र कपटकमाने । मोह द्रोह ममता लपटाने ॥  
 जेह अभेदशरी ज्ञानी नर । देखा मै चरिष कलिधुन कर ॥  
 आपु गए चर तिनकन्हि नारहिं । जे कहुं सत माजम प्रतिपाकहिं ॥  
 कल्प कलिअरि एतएक नरका । परहिं जे दूखहिं सुति करि तर्का ॥  
 जे वरमाधन जेहिं लुखाना । खपष किरात कोख कलवार ॥  
 नारि मुई यद्वचनति नरकी । मूढ मुदाह खेहिं नयनी ॥  
 ते विप्रन्ध सग पावै पुखावहिं । कलस लोक विष हाथ नखावहिं ॥  
 विप्र विरचर कोखुप कामी । निराचार सठ हवकी खामी ॥  
 सुद्र करहिं अप तप मत नामा । बैठि वराधन कहहिं पुराना ॥  
 सब नर कथित करहिं अपारा । जाह न नरनि चलीति अपारा ॥

दो० । भए वरवसंकर कलि हि भिज सेतु सब खोव ।  
 करहिं पाप पावहिं दुख भव हम शोक विषोग ॥  
 सुतिवसत इरिभक्तिपन्न संयुत विरति विवेक ।  
 मोहि न नारहिं नर सोप्रहस कल्पहिं पंच सुनेक । ८४ ॥

कह्यो तोमर ।

बड दास संसारहिं ज्ञान कली । विवधा हरि कीन्हि न रही विरती ॥  
 तपसी भवसंहरि सुखी । कलिकौतुक तात न जात कही ॥  
 सुखवति निकारहिं नारि कली । यद्वचनहिं खेरिनि बेरिमती ॥  
 सुत मागहिं मातु पिता सब कौ । चरसागत दोख नहीं कब कौ ॥  
 वसुरारि पिचारि कली सब ते । रिपुद्वय सुद्वेभ अए तब ते ॥  
 कप पापपराधन भव नहीं । करि दंड विचरत प्रजा नितही ॥

नवंत कुञ्जो न मलोक नपी । हिम नीच समेक उचार तपी ॥  
हि मान पुराज न बेहर्हि को । हरिसेवक अंतर्गही कलि को ॥  
वि हृद उदार दुनी न सुनी । नरदूषकदात न कोपि सुनी ॥  
लि बारहिंवार दुकाक धरे । विनु चय दुखी सब सोन मरे । १० ॥

सुनु खगेव कलि कपड पठ दंभ देव पाखंड  
मान मोह मोरहि मंद बापि रहे मूर्ख ॥  
तामस धर्म करहि नर अप तप मख मत दाग  
देव न बरषे धरनी सोच न जामहि धान । १५ ॥

• । खबसाक चभूवन भरि दुधा । धनहीन दुखी समता बज्रधा ॥  
मुख चाहिं मूठ न धर्मरता । मति घोरि कठोरि न कोमलता ॥  
नर पीडित रोग न भोग कही । अभिमान विरोध अकारणही ॥  
सधु जीवन संबत पदसा । कलपांत न माघ नमान असा ॥  
कलिकाख बिदाख किथे मनुष्य । नहि मानत कोय अनुया तनुष्य ॥  
नहि तोष बिचार न सीतकता । सब बाति कुजाति भर अंगता ॥  
हरषा परषाच्छर कोकुप्ता । भरि पूरि रही अमता विनता ॥  
सब लोग वियोग बिशोक रह । बरनाखम धर्म बिचार नह ॥  
दम दाग दसा नहि जान पनी । अज्ञता परबलता निबनी ॥  
तनपोषक भारि भरा खगे । परनिदख से जन भौ बनरे ॥

ते० । सुनु आचारि काल कलि मलकवगुन आमार  
मुनौ बज्रत कलियुग कर विनु प्रबाध निवार ॥  
कलियुग चेता हापर पूजा मख अह धोम  
जो गति होइ सो कलि हरिमान ते पाखिं कोय । १८ ॥

शै० । कृतयुग सब सोनी विज्ञानी । करि हरिमान तरहिं भव प्राणी ॥  
चेता बिबिध यज्ञ नर करहौ । प्रभुहिं समर्पिं कर्म भव तरही ॥  
हापर करि रचुपतिवदपूजा । नर भौ तरहिं कपाव न दूजा ॥  
कलियुग कंवख हरिगुनगदा । नाचत नर पाखिं भवदादा ॥  
कलियुग लोग न यज्ञ न ज्ञाना । एक अक्षर रामगुनगाना ॥  
सब भरोख तजि को भव रामहिं । प्रेम समेत मान गुनपाखिं ॥  
घोर भव तर कहु संख नारो । नामप्रताप प्रगट कलि मारो ॥  
कलि कर एक पुनीत प्रतापा । मानव पुन्र होहि नहि पापा ॥

दो० । कलियुग दम नहि आन सुम भौ नर कर बिसास  
आर रामगुन नम निबख भव तर विनहिं कलास ॥





ति दवाक मर कलक कोधा । पुनि पुनि कोनि निवार सुनोका ॥  
 दि ते मोच कदाई काका । सो अचमकि बहि मरिच नवाका ॥  
 म चमकसंभर मुनु भाई । तेहि मुखास मनपरसी पाई ॥  
 ज मन परो निवार कलके । सब कह तदुवाक निज बहई ॥  
 दत उवाक मयम तेहि भाई । पुनि कलकनि मोहिनि परी ॥  
 नु खनपति मर कलक मयम । बुध नहि मरहि मयम कर कंग ॥  
 बि कोनि मयमि कलि मोरी । सब कलक मयम मरि मोरी ॥  
 उदासो निज रवि मयम । सब मयमि मयम की भाई ॥  
 ते सब उदास कलक मयम । मर निज मयम मोहि मुखाई ॥

० । एकवार हरमदिर मयम रवि मयम ।  
 मुद साहज मयमिनि ते मरि मरि कोक उवाक ॥  
 सो दवाक मरि कलक मयम उर न मोचि मयम ।  
 अति मयम मुदमयमिनि ते मरि मरि मयम मयम । १०० ॥

१० । मंदिर माझ भई मयमानी । हे मयम मयम मयमानी ॥  
 यद्यपि तब मुद के नहि कोधा । मयमिनि मुद मयमानी ॥  
 तदपि साप सठ देखौ तोही । मोतिनिरोध कोक मयम मोही ॥  
 जौ नहि दंड करौ खल तोर । मयम मयम मयमानी ॥  
 जे सठ मुद मयम दरवा करवौ । रोह मयम कोक मयम परवौ ॥  
 निजमजोनि पुनि मरि मरि मयम । मयम मयम मयमानी ॥  
 बैठि रहेसि मयम मयम पापी । मयम मोहि मयम मयमानी ॥  
 महा बिटपकोटर मयम काई । मयम मयम मयमानी ॥

दो० । हाहाकार कोन् मुद दाद मयम मयम ।  
 कपित मोहि निजोकि मयम उर मयम मयमानी ॥  
 करि दंडवत मयम दिव मयम मयम कर कोरि ।  
 विनय करत मयम निज मयम मयम मयमानी । १०१ ॥

॥ मयम मयम मयमानी ॥

मयमानी मयमानी निजोकि मयम । मयम मयम मयमानी ॥  
 निज निज निजोकि मयम निजोकि । मयम मयम मयमानी ॥  
 निजोकि मयमानी मयमानी । मयम मयम मयमानी ॥  
 मयमानी मयमानी मयमानी । मयम मयम मयमानी ॥  
 मयमानी मयमानी मयमानी । मयम मयम मयमानी ॥  
 मयमानी मयमानी मयमानी । मयम मयम मयमानी ॥  
 मयमानी मयमानी मयमानी । मयम मयम मयमानी ॥  
 मयमानी मयमानी मयमानी । मयम मयम मयमानी ॥

मृगशोभनचर्चकं मृगशोभनं । प्रियं प्रकरं सर्वभाषं मृगशोभनं ॥  
 प्रचरं मृगशोभनं प्रचरं मृगशोभनं । प्रचरं मृगशोभनं प्रचरं मृगशोभनं ॥  
 विधा मृगशोभनं मृगशोभनं । मृगशोभनं मृगशोभनं मृगशोभनं ॥  
 कलातीत कलातीत कलातीतकारी । कलातीत कलातीत कलातीतकारी ॥  
 चिदानन्दसंदोष मृगशोभनकारी । प्रचरं प्रचरं मृगशोभनकारी ॥  
 न चावदमानावपाकारिकर । मृगशोभनं मृगशोभनं मृगशोभनं ॥  
 न तावदुक्तं मृगशोभनं मृगशोभनं । प्रचरं प्रचरं मृगशोभनं मृगशोभनं ॥  
 न जानामि योमं जपं नैव पूजा । मृगशोभनं मृगशोभनं मृगशोभनं ॥  
 जराजकदुःखीयतातथ्यमर्ज । प्रचरं मृगशोभनं मृगशोभनं ॥१॥

सो० । दद्राष्टकमिहं प्रोक्तं विप्रेष्य स्वतोवये ।  
 ये पठन्ति नरा भक्ता तेषां मृगशोभनः प्रकोदति । ॥

दो० । सुनि विनतो सर्वज्ञ चिव देवि विप्रचनरागु ।  
 पुनि मंदिरं नभवागो भद्र दिजवर वर मां ।  
 कौ प्रवक्ष्य प्रभु मीपय माय दीन पर मेज्ज ।  
 निम वदमति देर प्रभु पुनि दूसर वर देज्ज ।  
 तव मायवक्ष्य जीव जव वतत फिरै भुजान ।  
 तेहि पर कोध न करिय प्रभु हापामिंभु भगवान ।  
 संकर दीनदयाल चव एहि पर होज हापास ।  
 साप चनुपह होइ केहि माय घोरेही काल । १०५ ॥

सो० । इति का होर परम कल्याणा । सोद करज्ज भव कृपामिधाना ॥  
 विप्रगिरा सुनि परहितसागो । एवमस्त इति भद्र नभवागो ॥  
 यदपि कोन्दि इति दाहण पापा । मै पुनि दीन कोध करि सापा ॥  
 तदपि तुम्हारि साधुता देखो । करिहौ एहि वर कृपा विसेखो ॥  
 कृमासोख जे परचपकारी । ते दिज मोहि प्रिय यथा खरारी ॥  
 मोर साप दिज कार्य न जोरहि । जका मृगशोभन चवति यह पारहि ॥  
 कल्यात मरत दुख दुख होई । इति सुखी नहि सापिहि होई ॥  
 कवनेज्ज जका मिटिहि नहि ज्ञाना । सुनि सुद मम सववप्रमाना ॥  
 रघुपतिपुरो जका मम सववप्रमाना । पुनि मै मम सेवा मम दृष्टक ॥  
 पुरोप्रभाष चनुपह जोई । रामभजनि जपनिहि कर तोरे ॥  
 सुनु मम वचन मम मम मम । हरिनाम जपनिहि कर तोरे ॥  
 चव जपि करहि विप्रचनसागो । जनेसु संत चवव कल्याण ॥  
 इन्द्रकुलिक मम सुख विद्यासा । मम मम इति वचन करारा ॥  
 जो इन्द्र कर साधन नहि मम । विप्रचनसागो चवव ॥

। विवेक राखेऊ मन मोही । तब कहं मन दुखैअ कहु जाही ॥

। रौ एक आसिवा मोरी । अप्रतिहत गति होरहि तोरी ॥

। मनि मित बचन हरिचि मह एवमसु इति भाषि ॥

मोहि प्रबोधि गएउ गृह समुचरन उर राखि ॥

प्रेरित काख विधिगिरि नार भएउ मै खाखि ॥

पुनि प्रयास बिन स तम तजेउ गए कह काख ॥

जो तन धरौ तजौ पामि अनायास हरिचान ॥

जिसि नूतन पट पहिने नर परिहरे पुरान ॥

शिव राखी सुति नीति अरु मै नहि पाव कलेश ॥

एहि विधि धरेछं विविध तनु ज्ञानन गएउ खगेस ॥ १०६ ॥

। बिजग देव नर जोर तनु धरछं । तहं तहं रामभजन अनुचरजं ॥

। एक सुख मोहि बिसर न काज । मुह कर कोमल शील सुभाज ॥

। समंदह दिज कर मै पारै । मुरदुलभ वृगज खति गारै ॥

। खेकौ तहं बालकन्ह मोला । करौ सकल रसनासकलीला ॥

। प्रौढ भए मोहि पिता पठावा । समझौ सुनौ सुनौ नहि भावा ॥

। मन तें सकल वासना भागौ । केवल रामचरन कथ लामौ ॥

। कछु खगेस अस कवन अभागी । खरो खेब सुरधनुषि त्यागौ ॥

। प्रेममगन मोहि कहु न सुहाई । हारेउ पिता पठार पठारै ॥

। भए कालवस जब पितु म्याता । मै बन गएउ भजन जनकता ॥

। जहं जहं बिपिन मुनीस्वर पावौ । आसल जाह जाह सिद्ध नावौ ॥

। बूझौ तिन्हहि रामगुनगाथा । कहहिं मनैं हरियत खगनाथा ॥

। सुनत फिरौ हरिगुनअनुवादा । अथाहतगति संभुप्रसादा ॥

। छूटो विविध ईखना गाडौ । एक कालथा उर अति बाडौ ॥

। रामचरनवारिज जब देखौ । तब निज अन्ध मफल करि लेखौ ॥

। जेहि पृथ्वी सँद मुनि अस कहई । ईस्वर सर्वभूतमय अहई ॥

। निर्गुन मत नहि मोहि सुहाई । सगुनप्रकारति मोहि अधिकाई ॥

। १० । मुह के बचन सुरति करि रामचरन मन लाम ॥

रघुपतिअस नागत फिरौ हन हव नव अनुराम ॥

। मेरुशिखर कटलाखा मुनि कोमल आसोन ॥

। देखि चरन सिद्ध मोहउ बचन कहेछं अति दीन ॥

। सुनि मम बचन विनीत खडु मुनि छपाके अथराव ॥

। मोहि शोहरं पूहत भए दिज मोहउ केहि काव ॥

। तब मै कदा छपायिनि मुह करवस दुजान ॥

। अनुभव बचनकरन मोहि कहउ अथवाचन ॥ १०७ ॥

दो० । तब मुनीक रघुनिजकथा ॥ कहे कहुन सादर समजाया ॥  
 ब्रह्मज्ञानरत्न भवि विद्यानी ॥ मोहि परम अधिकारी जानी ॥  
 सांग करन ब्रह्म उपदेश ॥ अत्र चहुँत प्रमाण दृष्टेका ॥  
 सकल जगोइ जगाम आहवा ॥ अनुसन्धन सबै प्रगट ॥  
 मन गोतोत प्रमत्त अधिकारी ॥ विविधार विप्रविधि सुजायो ॥  
 सो मै ताहि तोहि नहि मेदा ॥ वारि वीधि हर गान्धि वेदा ॥  
 विविध भौति मोहिं मुनि समझावा ॥ नियुक्त सत मम हृदय न चावा ॥  
 पुनि मै कहेछ नार पद सीधा ॥ समनसप्राप्त करहु मनीषा ॥  
 रामभगति प्रथम प्रथम मनीषा ॥ किमि विखनार मनीष प्रवीणा ॥  
 सोर उपदेश कहेछ करि दाया ॥ निज नयननि देखी रघुराया ॥  
 भरि सोचन विचोकि अवधया ॥ तब मुनिहो निगुन उपदेशा ॥  
 मुनि पुनि कहे हरिकथा सुन्या ॥ खेडि कनुमसत अगुन निरुपा ॥  
 तब मै निगुनसति करि दुरी ॥ अगुन निरुपा करि रठ भुरी ॥  
 उत्तर प्रति उत्तर मै कोना ॥ मुनिगत भर कोष के सोचा ॥  
 मुन प्रभु वज्रत चबडा किये ॥ उपज क्रोध शानिक के हिये ॥  
 अति संवरन को कर कोटि ॥ अन्ध प्रगट चंदन मै होई ॥

दो० । बारबार कथोमुनि कहे निरुपन प्रथम ॥  
 मै अपने मन देखि तब कोही विविध जगजान ॥  
 कोष कि हेतवहि किन्हे है कि निगुन प्रथम ॥  
 मायाजब परिनिज जग जीव कि ईव समान । १०८ ॥

दो० । कवहुँ कि कहुँ सब कर हित ता के ॥ तेहि कि हरिद्व परम मनि जा के ॥  
 परद्रोह कि चोर निःसंका ॥ कामी पुनि कि रहहि सकलंका ॥  
 बंध कि रह द्विजजनहित कोषे ॥ कर्म कि होहि सखपतिं चोन्ने ॥  
 काहुँ सुमति कि सखबंध जानी ॥ सुभ गति पाव कि परचिद्यगामी ॥  
 भव कि पराधि परमात्माविंदक ॥ सुखी कि होहि सबहुँ हरिमिंदक ॥  
 राज कि रहे भौति विन जाने ॥ अथ कि रहहि हरिचरित बखाने ॥  
 पावन सब कि पुन्य विन होर ॥ विनु अथ अजय कि पावै कोई ॥  
 लाभ कि कहुँ हरिभगति समाना ॥ जेहि मोचहि अति सत वराना ॥  
 हानि कि अथ एहि अथ कहुँ भाई ॥ सखिप न रामनि नर तनु पारि ॥  
 अथ कि विनुमना सब कहुँ जाना ॥ भय कि इहापरि हरियाना ॥  
 एहि विधि अमिति मुनि अथ मुनज ॥ सुखिपसक न सादर सुनज ॥  
 पुनि पुनि कनुन पण्ड मै रोषा ॥ तब मुनि मोखेव वचन बकोपा ॥  
 मठ परब विषय देखन जगजि ॥ उत्तराधिकार सब जगजि ॥

॥ वचन विज्ञापन न करसों । वाचन रूप कबहो में करसों ॥  
 ॥ स्वपश्य तव हरवविधाका । उपदि हो वि पश्यो पंथाका ॥  
 ॥ न्य बापने बांस चकार । नहि कहु भय न दीनता चार ॥

। तुरत भएछ मैं काग तव पुनि मुनि यह कहि नार ।  
 मुनिरि राम रघुवर्ममनि हरतिन बखेच चकार ॥  
 छमा ज रामचरितरत विगत काम मद कोष ।  
 निज प्रभुमय देखि जगत कोपि वन करहि विरोध ॥१०८॥

। मुनु कबोच नहि कहु रिमि कृष्ण । उपरोक्त रूपवर्ण विधुवन ॥  
 अपासिंध मुनि मनि करि मोरी । सोनी प्रेमपरीक्षा मोरी ॥  
 मन बच कोन मोहि विन भय जानी । मुनिमति पुनि फेरी भनवाना ॥  
 रिधि मम अहत सीखता देखी । रामचरितविधाक विरोधी ॥  
 प्रति विषमय पुनि मुनि यक्षिताई । सादर मुनि मोहि कोन बोकार ॥  
 मम परिलोच विविध विधि कीन्हा । हरतिन रामचरित तव होन्हा ॥  
 वाक्यकल्प राम कर ध्याना । कहेच मोहि मुनि कथाविधाना ॥  
 संदर सुन्दर मोहि मति आना । को प्रत्यक्षि मैं तुम्होच पुनाना ॥  
 मुनि मोहि कहुक काक तव राखा । रामचरित कागव तव आखा ॥  
 सादर मोहि यह कथा सुनार । पुनि बोझि मुनि मिला कृपार ॥  
 रामचरित हर गुप्त बोझावा । संसुप्रवाह तात मैं छावा ॥  
 तोहि निज भक्त राम कर कावी । ता ते मैं सब कहैच बखानी ॥  
 रामभगति जिन्ह को उर नाहीं । कवउ के मत कविच निन्द पाहीं ॥  
 मुनि मोहि विविध अति कमुझावा । मैं वप्रेम मुनिवद विद नावा ॥  
 निज करक मम परचि मम सीधा । हरतिन जतिव हीनि मुनीया ॥  
 रामभगति अविरति कर तोरे । बसिहि वदा प्रवाह सब मोरे ॥

तो० । वदा रामप्रिय होय तुम्ह बुभुगुनभवन चराम ।  
 कामरूप दृष्टाभरण आन विरामनिधान ॥  
 जेहि आखन तुम्ह कवव पुनि मुनिरत सीमग्वत ।  
 काविहि तव न कविता बीजन एक प्रगत ॥११०॥

चौ० । काक कोन मुन होय सुभाज । कहु दुख तुम्हहि न बापिहि काज ॥  
 रामरहस्य कथित विधि जाना । गुप्त प्रवृत्ति इतिहास पुराना ॥  
 विनु खम तुम्ह जानव सब सोज । निज नव नेह रामचर होज ॥  
 जो दृष्टा करिहउ मम माहीं । हरिप्रवाह कहु दुखम नाहीं ॥  
 मुनि मुनिप्रापिच कहु प्रति सीरा । प्रवृत्तिरत कर मम नदीरा ॥

हवमस्य तव वक्ष मुनि आरवे	वक्ष सम सख्य करम मम बाकी
मुनि नभगिदा हरष मोहि भवत्	प्रेममग्न्य सख्य ममम गहत्
करि विनतो मुनिचावतु पारि	पद शरीर पति पुनि सिद्ध नाई
हरष सहित सखि आरव्य आरव्य	प्रसुप्रसाद दुखम कर पाएजं
इहा वसत मोहि सुनु सुगरीवा	बोले कथ्य सात चर बोधा
करौ सदा रघुपतिगुनगाना	बाहर मुनिहि विहंग मन्ना
जब जब अवधपुरी रघुबोरा	धरहि भगत हित अशरीरा
तब तब बाद रामपुर ररजं	बिगडीला बिकीकि सब लहजं
मुनि उर राखि राम बिकुहपा	निज आरव्य आरव्य खंगभूपा
कथा सकल मै तुम्हहि सुगरी	कागदेह मोहि सारव बाई
कहेउं तात सब प्रथ तुम्हारी	रामभक्तिसहिम्य प्रति आरी

दो० । ता ते सब तव मोहिनि विष भएउ रामायण नेव ।  
 निज प्रवहसक प्रपण गहउ सकल सहेउ ।  
 भगतिपण्ड हठ करि रहेउं दोहि सहासिनि साव ।  
 मुनिदुखम कर पाएउं देखउ भजनप्रताप । १११ ॥

चौ० । जे कवि भगति जानि परिहरौ ।	केवल ज्ञान चेतु सम करौ
ते जब कामधेन मूढ लागी	खोजत चाक किरहि एक लागी
सुनु खनेष हरिभक्ति विचारै	जे सुख चाहिं जान सवाई
ते सठ महाबिधु बिनु तरनी	पेरि पार चाहिं जब करनी
मुनि भक्ति के वचन भवानी	बोलेउ मरु हरवि मूढ बाजी
तब प्रसाद प्रभु मम उर माही	संघय लोक मोह भ्रम नाही
सुनउं पुनीत रामगुनगामा	तुम्हरी कृपा कहेउं बिकामा
एक बात प्रभु पूछौ तोही	कहउ दुषाह कृपानिधि मोही
कहिं सत मुनि बंद पुराना	नहिं कहु दुखम ज्ञान समाना
बोद मनि तुम्ह वन कहेउ गोबाई	नहिं बाहरउ भगति की नाई
ज्ञानहि भगतिहि चंतर केता	सकल कहउ प्रभु कृपानिकेता
मुनि उरगारिबचन सुख लागे	बाहर बोखउ काग सुखाना
भगतिहि ज्ञानहि नहिं कहु भेदा	प्रभय हरिं भवसंभव खेदा
गाथ मुनीष कहिं कहु चतर	सावधान सोउ मुनु विहमवर
ज्ञान बिराम सोन बिल्लासा	ये सब पुरुष सुलउं हरियासा
पुनःप्रताप सबस सब भांती	खबला फलस मरुष कइजाती

दो० । सुख त्वाणि एक नहिंनि जो बिरक सतिधोर ।  
 वह काको बिल्लासिब विमुक्त जो मरु शकुनोर । ११२ ॥

सोख मुनि ज्ञाननिधान मृतमयीविषयसुख निरखि  
बिबस होइ हरिधान नारि बिस माथा प्रगट ॥ १९ ॥

इहां न पच्छपात कहू राखौ	बेदपुरानमतमत भाखौ	१
ह न नारि नारि के रूपो	बनगारि यह रोगि बनपा	॥
या भगति मुनज तुम्ह दोख	गमिबैं जानैं सब कोखे	॥
निरघुवीरहिं भगति पिचारी	माथा खनु नर्तकी बिचारी	॥
गतिहिं समुक्कल रघुराखा	ता तें तेहि करपति अति माथा	॥
मभगति निरूपम बिहपाधी	बहै जायु छर सदा चराधी	॥
हि बिसोकि माथा बकुचार्द	करि न सकै कहू निज प्रभुतार्द	॥
प्रस बिचारि जे मुनि बिजानी	जाचहिं भगति सकलसुखजानी	॥

१० । यह रहल रघुनाथ कर बेनि न जाने कोद  
जो जानै रघुपतिकृपा सपनेजं मोह न होइ ॥  
औरौ ज्ञान भगति कर भेद मुनज सुप्रवीन  
जो मुनि होइ रामपद प्रीति सदा अवकीर्ण ॥ १९ ॥

१० । मुनज तात यह सकय कहानी	समुझत कर्म न जार बखानी	॥
ईस्वर अंसजोय अविनाशी	चेतन समस्त सहज सुकराशी	॥
सो मायाबस भइल गोसाईं	बंछौ कीर मरकट की मारिं	॥
जड सेतनहिं यथि परि गरी	जदपि मृषा कूटत कठिनरी	॥
तब तें जीव भएउ संसारो	कूट न यथि न होइ संसारो	॥
सुति पुरान बज्र कहेव उपार्द	कूट न अधिक अधिकौ नहलाई	॥
जीवहृदय तम मोह बिसेखो	यथि कूटि किमि परै न देखी	॥
अस संयोग ईस जब करई	तबज कटाचित सो निद्वरई	॥
मालिक सझा घेनु सोहाई	जौ हरिकृपा हृदय बस आई	॥
जप तप व्रत यम नियम अपारा	ते सुति कजु मुभ धर्म अचारा	॥
तेह तन हरित चरै सब गरी	भाव बन्धुकिमु पाद पेनारी	॥
नोद निहन्ति पाव बिखासा	निर्मल मन सहोर निज दासा	॥
परम धरमस्य प्रथ दुहि भाई	अवटे अमल सकाम बगई	॥
तोषमहत तब कमा सुजावै	धृति सम जावन होइ कमावै	॥
मुदिता मयै बिचारमखानी	दम अचार रजु अथ सुखानी	॥
तब मखि काडि खेर नवनोता	बिमुख विराग मुनन सु सुनीता	॥

दो० । योगजनिनि करि प्रगट तब कर्म मुभासुम खार  
बुद्धि विराधै ज्ञानमृत समतामल जरिखार ॥



तव विज्ञाननिष्पत्ति बुद्धि विषय कृत पार ।  
 किन्तु दिवा भरि धरै दृढ समता दिव्यदि बजार ॥  
 तोनि अवस्था तोनि मन तेहि कपास तें काढि ।  
 तूख सुगोच सबारि पुनि बातो करै सुगति । ११४ ॥

बो० । एहि विधि कोसै दीप तेजराशि विज्ञानमय ।  
 जातहि जासु समीप जरहि मदादिक सकल सब । १२ ॥

चौ० । सोहमस्मि रति हृति अखंडा । दोपसिखा सोह परम प्रचंडा ॥  
 आतमअनभव सुख सुप्रकाशा । तव भवमूल भेद भ्रम नासा ॥  
 प्रबल अविद्या कर परिवारा । मोहआदि तख मिटै अपारा ॥  
 तव सोह बुद्धि पाद उजियारा । उरगृह बैठि राखि निहारा ॥  
 होरन राखि पाव औ सोह । तौ यह जीव कृतारथ होई ॥  
 होरत राखि जानि खगाराया । बिघ्न अनेक करै तब माया ॥  
 रिद्धि सिद्धि प्रेरै बड भारी । बुद्धिहि खोभ देखावै आई ॥  
 कल बल कल करि जाद समीपा । अंचलबात बुझावहि दीपा ॥  
 होर बुद्धि औ परम सयानी । तिन्ह तन चितव न अगहित जानी ॥  
 औ तेहि बिघ्न बुद्धि नहि बांधो । तौ बहोरि सुर करहि उपाधी ॥  
 इंद्रोदार सरोखा नाना । तहं तहं सुर बैठे करि धाना ॥  
 आवत देखहि विषयबयारी । ते हठि देखि कपाट उचारी ॥  
 जब सो प्रभंजन उरगृह जाई । तवहि दीप विज्ञान बुझाई ॥  
 राखि न छूटि मिटा को प्रकासा । बुद्धि बिकल भेद विषयबतासा ॥  
 इंद्रिन्ह सुरगृह न ज्ञान सोहाई । विषयभोग पर प्रीति मदाई ॥  
 विषयसमोर बुद्धि कृत भोरी । तेहि बिघ्न दीप को बार बहोरी ॥

दो० । तब फिरि जीव विविध विधि पावै संश्रुतिक्लेश ।  
 हरिमाया अति दुखतर तरि न जाद बिहगेश ॥  
 कहत कठिन समुद्रत कठिन साधत कठिन बिबेक ।  
 होइ सुनाकर स्वास औ पुनि प्रत्यूह अनेक । ११५ ॥

चौ० । ज्ञानपंथ कृपान को धारा । परत खगेश होइ नहि वारा ॥  
 जो निरबिघ्न पंथ निरबहरी । सो कैवल्या परम पद सहरी ॥  
 अति दुखस कैवल्या परम पद । संत पुराजनिमम ज्ञानम वेद ॥  
 राम भजन होइ मुक्ति मोहारी । अनरक्षितु आवै हरिचारी ॥  
 जमि चल बिनु जल रहि न सकाई । कोटि भोगि कोउ करै उपाई ॥  
 तथा मोक्षमुख युग खगरी । रहि न सकै हरिभगति विहारी ॥  
 सब बिचारि हरिभगति सखाये । मुक्ति निरादर जमति सोआये ॥

गति करत बिनु जलन प्रयास । वसुधैव कुटुम्बकम् ॥  
जन करिष्ये हति हित कामी । जिन सो कवन वचनै चरगारी ॥  
सि हरिभगति सुगम सुखदाई । को अब मूढ न जाहि सोदाई ॥

। सेवक सेव्य भाव बिनु भव न तरिष्य उरगारि ।  
भजत रामपद पंकज अस बिहूत बिचारि ॥  
जो सेतन कहं जड करै जडहिं करै सेतन्य ।  
अस समर्थ रघुनाथकहिं भजहिं जीव ते धन्य । ११६ ॥

० । कहेछं ज्ञानविहूत बुझाई । सुनतु भगतिमनि के प्रभुताई ॥  
रामभगति चिंतामनि सुंदर । वसै गढ़ जा के उर चतर ॥  
परम प्रकाशरूप दिन राती । नहिं कहु चहिय दिया घूत वाती ॥  
मोह दरिद्र निकट नहिं जावा । सोभ बात नहिं ताहि बुझावा ॥  
प्रबल अविद्या तम मिटि जाई । हारहिं सकल सखमसुदाई ॥  
खल कामादि निकट नहिं जाहीं । वसै भगति जा के उर माहीं ॥  
गरल सुधा सम चरि हित होई । तेहि मनि बिनु सुखपाव न कोई ॥  
स्थापहि मानसरोग न भारी । जिन्ह के बस सब जीव दुखारी ॥  
रामभगति मनि उर बस जा के । दुखकवखेस न सपनेछ ताके ॥  
चतुरसिरोमनि तेद जग माहीं । जे मनि लागि सुजनन कराहीं ॥  
सो मनि यदपि प्रगट जग अहई । रामछपा बिनु नहिं कोछ रहई ॥  
सुगम उपाद पाइबे करे । नर हतभाग्य देहि भटभरे ॥  
पावन पर्वत बेद पुराना । रामकथा बचिराकर नाना ॥  
मर्मा सज्जन सुमति कुदारी । ज्ञान विराग नयन उरगारी ॥  
भाव सहित खोजै जो प्राणी । पाव भगतिमनि सब सुखखानी ॥  
मोरे मन प्रभु अस बिखावा । राम तें अधिक राम कर दावा ॥  
राम सिंधु घन सखन धोरा । चंदनद हरि संत समोरा ॥  
सब कर फल हरिभगति सोदाई । सो बिनु संत न काह्य पाई ॥  
अस बिचारि जोद कर सतबंगा । रामभगति तेहि सुखन बिहंगा ॥

दो० । ब्रह्म पथीनिधि मंदर ज्ञान संत सुर आहि ।  
कथा सुधा अथि काहुहिं भगति मधुरता जाहि ॥  
विरति धर्म अति ज्ञान मद सोभ मोह रिपु मारि ।  
अथ पादस्य सो हरिभगति देखु कनेस विचारि । ११७ ॥

चो० । पनि प्रेम कोखे छतराज । जो लपाव कोहि अपर भाज ॥  
जाय मोहि निज सेवक कामी । वन प्रसन्न मन कष्ट दवावी ॥  
अथमहिं काहुं नाम कलिधीरा । सब तें दुखन नवन करीरा ॥

बहु दुःख कवन कवन सुख भारी	। सोय संवेष्टि कष्ट विचारी	॥
संतसंतनरम तुल्य मानस	। तिन कर कष्ट सुभाष नमानस	॥
कवन पुन सुनिबिदित विद्या	। कष्ट कवन चप मम करासा	॥
मानसरोन कष्ट समुदाई	। तुल्य वरवच कृपाप्रधिकार	॥
तात सुगुण सादर प्रति प्रीती	। मै संकष कष्ट यद नीती	॥
नरतन सम नहि कवनिक देही	। जीव चराचर आचत जेही	॥
नरक स्वर्ग अपवर्ग निवेगी	। ज्ञान विराग भगति मरु नी	॥
सो तनु धरि हरि भक्ति न जे नर	। होहि विषयत मरु भेदतर	॥
कांच किरिच बदलै तें सेही	। कर तें डारि परबमनि देही	॥
नहि दरिद्र सम दुख जन माही	। संतमिलन सम सुख जन माही	॥
परउपकार कवन मम काया	। संत सहजसुभाष खगराजा	॥
संत सहहि दुख वरहित सागी	। परदुखहेतु चरित चभागी	॥
भुजंतु सम संत कृपासा	। परहित गति सह विपति विद्यासा	॥
सन दब खल परबंधन करी	। खल कठार विपति सहि मरु	॥
खल बिनु स्वारथ परचपकारी	। अहि मूषक दब सुनु उरगारी	॥
परसंपदा बिनासि नसाही	। जिमि सहि हति हिमउपल विद्याही	॥
दुष्ट उदय जगन्धारत हेतु	। यथा प्रसिद्ध अधम यद केतु	॥
संतउदय संतन सुखकारी	। बिस्वसुखद जिमि इंदु तमारो	॥
परम धरम सुतिबिदित अधिंसा	। परनिंदा सम अच न गिरीसा	॥
हरिगुनिंदक दादुर होई	। जन्म सहस्र पाव तन सोई	॥
द्विजनिंदक बज्ज नरक भोग करि	। जग जन्म वायससीर धरि	॥
सुरसुतिनिंदक जे अभिमाजी	। रौरव नरक परहि ते प्राणी	॥
होहि उलूक संतनिंदारत	। मोहनिया प्रिय ज्ञानभानु गत	॥
सब कै निंदा जे जग करहीं	। ते समगादुर ह द चवतरही	॥
सुगुण तात अच ममल रोगा	। जिन्ह तें दुख फावहि सब लोगा	॥
मोह सकल व्याधिन कर मुला	। तिन तें पुनि उपकहि बज्ज सुखा	॥
काम बात कफ लोभ चपारा	। क्रोध पिन नित कातो जारा	॥
प्रीति करहि जौ तोनिउ भाई	। उपजै सत्यपात दुखदारी	॥
विषय मनोरथ दुर्लभ जाना	। ते सब सुख नाम को जाना	॥
समता दादु कंडु दरबार	। हरष विषाद गरहबहुतारी	॥
परसुख देखि जरेनि सोई उर	। दुष्ट कुटता ममकुटिदारी	॥
अहंकार प्रति सुखद उदका	। दंभ कष्ट मद मान बेहका	॥
हसा उदरहृष्टि प्रति जारो	। चिबिध ईदना तदन निचारी	॥
जग विधि जेन जगद्विजेको	। कष्ट सनि कही सुरोच जनेको	॥

एक आधिक्य नर नरहिं से असाधि बडु आधि ।

बीजहि संतत जीव कहं हो किमि लखे समाधि ॥

नेम धर्म आचार नव ज्ञान यज्ञ जप दान ॥

अथ पुनि कोटिन्ह नहि रोग जाहिं हरिबाव । ११८ ॥

। एहि विधि सकल जीव जगरोगी ।	सोक हरष भव प्रीति बिबोनी ॥
नर रोग ककु कैं गाए ।	। सै सब के कखि बिरसेन पाए ॥
न तें होअहि ककु पापी ।	। नाव न घातहि जन परितापी ॥
वय कुपथ पाइ भंकुरे ।	। मुनिहुं हृदय का नर बाधुरे ॥
मरुपा नासहिं सब रोगा ।	। औ एहि भांति बने संयोगा ॥
दगुरु वेद वचन विस्वाया ।	। संयम सह न बिषय के आया ॥
पुपतिभगति सजोवनमूनी ।	। अनूपान सह्यामति पूरी ॥
हि विधि भलेही रोग नसाही ।	। नाहित जतन कोटि नहि जाही ॥
। निय तव मन बिरज गोसांई ।	। जब उर बल बिराजुअधिकारी ॥
मति कुधा बाढ़ै निज नई ।	। बिषयआस दुखैलता गई ॥
बमल ज्ञानजल जब सो बहाई ।	। तब रह रामभगति उर छाई ॥
सब अज सुक सनकादिक नारद ।	। जे मुनि ब्रह्मविचारबिचारद ॥
। ब कर मत खगनायक एहा ।	। करिय रामपद पंकज नेहा ॥
। नुति पुरान सब पंथ कहांही ।	। रघुपतिभगति बिना सुख नाही ॥
। तमठपोठ आमहिं बह बारा ।	। बघ्यामुत बह काऊहिं भारा ॥
। कूलाहिं नभ बह बडु विधि फूला ।	। जीव न लख मुख हरि प्रतिकूला ॥
। हवा जाद बह मृनञ्जलापावा ।	। बह आमहिं मुखकोब कियला ॥
। अंधकार बह रबिहि बस्यै ।	। रामबिमुख न जीव सुख पावै ॥
। हिम तें अनल प्रगट बह होई ।	। बिमुख राम सुख पाव न कोई ॥

० । बरि मये घुत होइ बह शिकता तें बह तेज ॥  
 बिनु हरिभजन न भव तरिय यह सिद्धांत अपेक्ष ॥  
 मयकहिं करे बिहंषि प्रभु अजहिं मयक तें होय ॥  
 अथ बिचारि तजि संसय रामहिं भक्तहिं प्रबोध । ११९ ॥

१० । विनिश्चित बदासि ते न अन्यथा वचांसि मे ॥  
 हरिं नरा भजंति से अलिदुखर तरंति ते । ॥

ते० । कहेछं नाथ हरि चरित अनूप । आब समाध खजति अनूप ॥  
 सुति सिद्धांत इहै उरनाही । राम भविष सब काम बिकारी ॥  
 प्रभु रघुपति तजि सेदक काशी । मोहि से बडु बर मज्जा जाही ॥  
 तुम्ह बिज्ञानरूप नहि मोहा । नाथ कीन्ह ओ बह कलि होहा ॥

पूरेहु रामकथा अलि पावनि । सुख सबकाहि संभुमवभावि ॥  
 सतमंगति सुखंभ संवारा । निमिषि हउ भरि सकौ वारा ॥  
 देरु गहइ निज हृदय निचारी । मै रघुबीरभक्तचधिकारी ॥  
 सकुनाधम सब भांति अपावन । वसु मोहि कोन्ह बिदिअ जग पावन ॥

दो० । चाक भय मै भय जति वसुपि सब विधि होन ।  
 निज जग जानि राम मोहि संतवमागम होन ॥  
 नाथ पद्यामति भाषेउ राखेउ नहि कहु मोह ।  
 चरित बिंधु रघुनाथक याह कि पावै कोह । १२० ॥

चौ० । सुमिरि राम के गुनगन नामा । पुनि पुनि हरष सुसुंछि सुजागा ॥  
 महिमा निगमनेति कहि गारि । अतुलित बल प्रताप प्रभुतारि ॥  
 खिचनपूज्य चरन रघुराई । मो पर कृपा परम मृदुलाई ॥  
 अथ सुभाव कउं सुनौ न देखौ । केहि खनेउ रघुपति सम खेखौ ॥  
 साधक सिद्ध बिमल उदासी । कवि कोविद छतब्र संन्यासी ॥  
 योगी सुर सुतापस ज्ञानी । धर्मनिरत पंडित विज्ञानी ॥  
 तरहि न बिग सेवे मम स्वामी । राम गमामि गमामि गमामी ॥  
 चरन गए मो से चचरासी । होहि सुहु गमामि अविनासी ॥

दो० । जासु नाम भवभेषज हरन घोर चय सुख ।  
 सो कृपाव मोहि तोहि पर सदा रहौ अनुकुल ॥  
 सुनि भक्तिके वचन सुभ देखि रामपद नेह ।  
 बाखेउ प्रेमसहित मिरा महुदु विगत संदेह । १२१ ॥

चौ० । मै छतकृत्य भएउं तब बाजी । सुनि रघुबीरभगति रचबाजी ॥  
 रामचरन नतन रति भई । मायाजनि बिलपति सब गई ॥  
 मोहजलधि बोधित तुम्ह भए । मो कहं नाथ विविध सुख दए ॥  
 मो पहिं होइ न प्रतिउपकारा । बंदौ तब पद बारहिंवारा ॥  
 पूनकाम रामचरनुरानी । तुम्ह सम तात न कोह बड़ भागी ॥  
 संत विटप चरिता गिरि धरनी । परहित हेतु सबहु कै करनी ॥  
 संत हृदय नवनीत समाया । कहा कविन्ह पै कहै न जाना ॥  
 निज परिताप द्रवै नकनीता । परदुख द्रवहिं सुखंत पुनीता ॥  
 जीवन बन्ध सुफल मम भएऊ । तब प्रसाद संसय सब गएऊ ॥  
 जानेऊ सदा मोहि निज किंकर । पुनि पुनि लमा कहै बिहंगवर ॥

दो० । तासु चरन करि आद करि प्रेम सहित जनिघोर ।

महक नवदु बैकुंठ तब हृदय राखि रघुबीर ॥

मिरिजा वीरवमानम कर्म न साध कहु पाव ।

विष्णु हरिकृपा न होइ सो नाबहिं वेद पुराण । १२२ ॥

। कहेउं परम पुनीत रतिदावा ।	सुगत सबल हूटहिं भवपावा ॥
। त कथपतइ करुनापुंजा ।	। उपजै प्रीति रामपद कंजा ॥
। न क्रम बचन जगित अथ चाई ।	। सुगहिं जे कथा सबन मन चाई ॥
। रीयाटन साधनसमुदाई ।	। योग विराग ज्ञान निपुनाई ॥
। ना कर्म धर्म त्रत दावा ।	। संखम दम कथ तप मख नावा ॥
। तदथा दिजगुहमेवकाई ।	। बिद्या विनय विवेक बड़ाई ॥
। हं सगि साधन वेद बखानी ।	। सब कर फल हरिभगति भवानी ॥
। रघुनाथभगति सुनिगाई ।	। रामकृपा काङ्ग एक पाई ॥

। मुनिदुर्लभ हरिभगति नर पावहिं विनहिं प्रयास ।

जे कह कथा मितर सुगहिं मानि बिस्वास । १२३ ॥

। सोइ सर्वज्ञ मुनी सोइ ज्ञाता ।	। सोइ मरिचर्मित संखित दाता ॥
। अर्मपरायन सोइ कुलपाता ।	। रामचरण जा कर मन राता ॥
। तोति निपुन सोइ परम सयागा ।	। सुतिबिहारी नीक तेहि जागा ॥
। सो कवि कोविद सो नर धोरा ।	। जो कल काहि भजै रघुवीरा ॥
। धन्य देख सो जहं सुरसरी ।	। धन्य नारि पतिव्रतचमसरी ॥
। धन्य सो भूप नीति जो करई ।	। धन्य सो द्विज निज धर्म न टरई ॥
। सो धन धन्य प्रथम गति जा को ।	। धन्य पुन्यरत मति सोइ पाकी ॥
। धन्य चरी सोइ जब सतसंगा ।	। धन्य जगद्विजभगति प्रभंगा ॥

० । सो कुल धन्य उमा सुनु जगत पुज्य सुपुनीत ।

। सोरचुबोरपरायन जेहि कुल उपज विनीत । १२४ ॥

। मतिअनुरूप कथा मै भाषी ।	। यद्यपि प्रथम गुप्त करि राखी ॥
। तब मन प्रीति देखि अधिकारै ।	। तब मै रघुपतिकथा सुगारै ॥
। यह न कहिय मठहो इठहोकाहि ।	। जो मन काइ न सुनु हरिकीकाहि ॥
। कहिय न कोभिहि कोधिहि कामिहि ।	। जो न भजै सचराचरखामिहि ॥
। दिजद्रोहिहिं न सुनाइय कबळं ।	। सुरपति सगिह सोइ नय कबळं ॥
। रामकथा के ते अधिकारी ।	। जिन्ह के सतसंगति अति प्यारी ॥
। गुहपद प्रीति मोतिरन जेई ।	। द्विजसेवक अधिकारी तेई ॥
। ता कहं यह विशेषि सुखदाई ।	। जाहि प्राण प्रिय सोरचुराई ॥

० । रामचरनरति जो कह अथवा पद निर्वाण ।

। भाव सहित सो चेहि कथा करौ सबनपुट पाव । १२५ ॥

० । रामकथा मिरिजा मै बरनी । कसिमसबमनि मनोमकबरनी ॥

संसृति रोग वधोद्यममयी	। रक्तकण्ठा कामहिं सुनिन्दरी	॥
एहि महं बचिर वृत्त खोपाया	। रघुपतिभगति कोर पंथाका	॥
चतिहरिकृपा बाहि पर चोई	। पावें देइ एहि मारग चोई	॥
मनकामना सिद्धि कर पावा	। जे यह कथा कपट तजि गावा	॥
कहहिं सुनिहि अनुमोदन करहौं	। ते गोपद इव भवनिधि तरहौं	॥
सुनि सब कथा हृदय चति भाई	। गिरिजा बोखी निरा सुहाई	॥
नाथकृपा मम गत संदेहा	। रामचरन उपजोउ नव नेहा	॥

दो० । मै कृतकृत्य अरुखं सब तब प्रसाद बिखेस ।

खबजो रामभगति दृढ बोले सकल कखेस । १२६ ॥

चौ० । यह सुभ बंधुसमाजवादा	। सुखसंपादन समस्त विवादा	॥
भवभंजन गंजनसंदेहा	। जनरंजन सज्जन प्रिय एहा	॥
रामउपासक जे जग माहीं	। यह सम प्रिय निगू के कहू नाहीं	॥
रघुपतिकृपा अयामति गावा	। मै यह पावन चरित सुहावा	॥
बाहि कलिकास न बाधन दूजा	। योग यज्ञ जप तप व्रत पूजा	॥
रामहिं सुमिरिब गारुड रामहिं	। संतत सुनिब रामगुणधामहिं	॥
जासु पतितपावन बड बाजा	। गार्वाहं कबि सुनि संत पुराजा	॥
ताहि भगहिं मनतजि कुटिछाई	। राम भजे गति केहि नहिं पाई	॥

इ० । पाई न केहि गति पतित पावन राम भनि सुन सठमना ।  
 ननिका अजामिन्न बाध गीध गजादि खल तारे घना ॥  
 चाभीर जमन किरात खग खपचादि चति अधरूप जे ।  
 कहि नाम बारक तेपि पावन होहिं राम नमामि ते ॥  
 रघुवंसभूषण चरित यह नर कहहिं सुनिहिं जो गावहीं ।  
 कलिकलमनोमल धोइ किनु सम रामधाम सिधावहीं ॥  
 सत पंच सौपाई मनोहर जानि जो नर उर धरे ।  
 दाहन अविद्या पंचजनित विकार खीरघबर हरे ॥  
 सुंदर सुजान कृपानिधान अनाथ पर कर श्रुति जो ।  
 जो इक राम अकाम हित निर्वाणप्रद सम ज्ञान को ॥  
 जा की कृपाखलखेस ते मतिमंद तुलसीदासहं ।  
 पाखो वरन बिसास राम समान प्रभु नाही कहूं । १२७ ॥

दो० । सो सम दीन न दीनहित तुम्ह समान रघुबीर ।  
 सब बिचारि रघुवंसमनि हरउ विषम भवभोर ॥  
 कामहिं नारि पिथारि जमि जोभिहिं प्रिय जमि दाम ।  
 निमि रघुनाथ निरंतर प्रिय जागउ मोहिं राम । १२८ ॥

यत्पूर्वं प्रभुना कृतं सुकविना श्रीशंभुना दुर्ममं ।  
 श्रीमद्रामपदाब्जभक्तिनिम्नं प्राप्नोतु रामायणं ॥  
 मत्वा तद्रघुनामनामनिरतं स्वातन्त्र्यमः प्रातये ।  
 भावबद्धमिदं चकार तुलसीदासस्वया मानसं । १ ॥  
 पुष्पं पापहरं सदाशिवकरं विज्ञानभक्तिप्रदं ।  
 मायामोहभवापहं सुविमलं प्रेमांशुपूरं शुभं ॥  
 श्रीमद्रामचरितमानसमिदं भक्त्यावभासंति ये ।  
 ते संसारपतंगघोरकिरणैर्दृष्टांति नो मानवाः । २ ॥

ति श्रीरामचरितमानसे सकलकलिकलुपविध्वंसने ।

अविरलहरिभक्तिसंपादनो नाम सप्तमः सोपानः ॥

समाप्तः शुभमस्तु शुभं भूयात् ॥ # ॥

सन् १८६८ ई० ॥



## । कठिन शब्दों का अर्थ ।

अकथ, अकथ्य, कहने के योग्य नहीं ।  
 अकथनीय, जो कहने के योग्य नहीं ।  
 अकनि, सुन करके ।  
 अकरण, अकारण, बिना कारण ।  
 अकल, कलारहित, हाथ पांव आदि अंग  
 के बिना ।  
 अकसर, अकाल, केवल ।  
 अकाजेड, १ अकाज किया २ मरना ।  
 अकाम, कामनाहीन, जिस को कुछ इच्छा  
 नहीं ।  
 अकाल, कुसमय, बिना अतृ के ।  
 अकिंचन, जिस के पास कुछ नहीं, द-  
 रिद्री ।  
 अकुल, कुलरहित ।  
 अकुलाना, घबराना ।  
 अकटक, अशु विना ।  
 अकुंठ, १ नाशरहित २ तीक्ष्ण, चोखा ।  
 अकथ, अकथ्य, जिस का अर्थ नहीं ।  
 अखंड, अंतरहित, जिस का नाश न हो ।  
 अखारा, १ नाच २ खड़ने की जगह ३  
 गोशर्करा के रहने की जगह ।  
 अखिल, सकल, सर्व ।  
 अग, पर्वत, अचल ।  
 अगमित, अगणित, अनगिनत ।  
 अगम, १ आगम, शास्त्र २ अगम्य जहां  
 गम नहीं ।  
 अगह, अगह, एक प्रकार का सुगंध ।  
 अय, आने, मुख्य ।  
 अगड्ड, आने ।  
 अगाध, अद्यावत् ।

अगुन, १ अवगुण २ अगुन भगवान् :  
 नृपहीन ।  
 अगोचर, अविद्य, जो ज्ञान से परे ।  
 अघ, १ पाप २ दुःख ।  
 अघटित, १ अघोग्य २ अगम जो नहीं  
 छूटा ।  
 अघात, चोट ।  
 अघातो, १ द्रष्ट होता, अघाता २ घा-  
 त बिना ।  
 अचगरी, दुष्टता, बहुरी ।  
 अचल, १ पर्वत २ स्थिर, धिर ।  
 अचंचल, धिर ।  
 अकृत, रहते ।  
 अज, १ जो जनमता नहीं २ ब्रह्मा ३  
 बकरा ४ ब्रह्म ।  
 अज्ञ, अज्ञानी, अज्ञात, बिना जाने ।  
 अज्ञता, मूढ़ता ।  
 अजर, अरारहित, बुढ़ीली बिना ।  
 अजामिल, एक पापी ब्राह्मण का नाम ।  
 अजित, जो जीता नहीं गया ।  
 अजिन, मृगचर्म, चमड़ा ।  
 अजिर, आंगन ।  
 अजे, अजय ।  
 अटन, १ अंटारी, २ घुमना ।  
 अट्टहास, ठट्ठा के हसना ।  
 अतनु, अतोर बिना ।  
 अतर्क, जो तर्क के योग्य नहीं ।  
 अतिथि, अभ्यागत, पाहुन ।  
 अतिसय, बड़त, बड़ा, अतिव्रय ।  
 अतोत, रहित, बीता ।

हत, जो तोड़ा नहीं गया, बड़े ।  
 यहाँ, इसमें ।  
 प्रिया, अनुसुहदा, अक्षिचपि की  
 १ का नाम ।  
 ई, बैठक ।  
 ३, पूर्ण, वहुत ।  
 र्थित, अपूर्व ।  
 ति, देवतों की माता ।  
 य, जो देने के योग्य नहीं ।  
 य्य, जो देखने के योग्य नहीं, क्षिपा ।  
 त, अपूर्व, आश्चर्ययुत, ।  
 द्र, पर्वत, पहाड़ ।  
 त, भेदरहित, जिसके समान दूसरा  
 नहीं ।  
 ३, तरे, नीच ।  
 अगो, गुर्देन्द्रिय, मार्ग, गाँड़ ।  
 धर, १ लघु, छोटा २ छोट, ओठ ।  
 धिकारी, अधिकार के योग्य ।  
 धिप, राजा ।  
 धिवास, निवास, बसने की जगह ।  
 धीस, अधीश, राजा, स्वामी ।  
 लक्षद्विवात, विधवाधन ।  
 गहस, बुरा ।  
 गनस, १ क्रोध २ ईर्ष्या, दाह ।  
 गनघ, पापरहित ।  
 गनट, अन्याय ।  
 गनत, अन्यत्र, और जगह ।  
 गनपायिनी, नाशरहित, नित्य ।  
 गनन्य, जिस को दूसरे का भरोसा नहीं ।  
 गनस, आग, अग्नि ।  
 गनवस, दोष विना ।  
 गनयास, अनायास, बिनायत्न ।  
 गनहित, १ ज्ञान, वैरो २ बुरा ।  
 गनाथ, वे मालिक ।  
 गनगति जिस का आदि नहीं ।

गनामय, रोमरहित, भस्मा चना ।  
 गनिहित, बिंदा के योग्य नहीं ।  
 गनिप, सेनापति ।  
 गनिमनि, अनमनी, उदाह ।  
 गनिस, पवन, वायु, बहार ।  
 गनिर्वाण्य, जो करने के योग्य नहीं ।  
 गनी, १ सेना २ समूह ।  
 गनीक, १ सेना २ समूह ।  
 गनीस, गनीश, जीव, ईश्वर नहीं ।  
 गनीर, १ चेष्टारहित २ व्यवहाररहित ३ मल्ल ।  
 गन, १ आगे २ पीछे ३ छोटा ।  
 गनकथन, बारंबार कहना ।  
 गनकूल, १ प्रसन्न २ अनुसार ।  
 गनग, पीछे चलनेवाला ।  
 गनगह, दया, कृपा ।  
 गनगामी, १ आज्ञाकारी २ पीछे चलने  
 वाला ।  
 गनचर, दास ।  
 गनचरी, दासी ।  
 गनज, छोटा भाई ।  
 गनजा, छोटी बहिन ।  
 गनदिन, सदा, प्रतिदिन ।  
 गनपम, अपमारहित ।  
 गनभव, अथार्थ ज्ञान ।  
 गनमान, १ विचार २ अनुसार ३ प्रमाण,  
 ४ अटकल ।  
 गनमानी, नैपायिक ।  
 गनराग, १ मोति २ अक्षयसौदाई ।  
 गनरूप, अनुसार, योग्य ।  
 गनरोधू, अनरोध १ रोक २ अनुसार ।  
 गनमोदन, प्रशंसा, सराहना ।  
 गनवाद, बार बार कहना ।  
 गनसारी, १ अनुकूल २ कष्टी ।  
 गनभाऊ, अनुभाव, महिमा ।  
 अनुसासन, अनुशासन, आज्ञा ।

अनुबंधन, १ कामना २ खोजना ।  
 अनुहर, १ अनुसार २ खोज, अनुहार ।  
 अनुपम, उपमारहित ।  
 अमृत, झूठ ।  
 अनेक, कई एक, बहुत ।  
 अनेसे, कुदृष्टिसे, बुरे ।  
 अनंग, १ अंगहीन, शरीर विना,  
 २ कामदेव का नाम ।  
 अन्यथा, १ झूठ २ और प्रकार से ।  
 अन्वहं, निरंतर, समांतर ।  
 अपहर, १ झूठ २ डर ३ निज डर ।  
 अपत, १ पापी २ विना प्रतिष्ठा के ।  
 अपभय, भय, डर, अपनी डर ।  
 अपर, दूसरा, और ।  
 अपलोक, अपलोक, अपजस ।  
 अपवर्ग, मोक्ष, मुक्ति ।  
 अपवाद, अपजस, निंदा ।  
 अपहरण, दूर करना ।  
 अपहारी, नाश करनेवाला, अपहरण क-  
 रनेवाला ।  
 अपान, अपना ।  
 अपि, १ भी २ निश्चय ।  
 अपेल, अच्छा, ।  
 अप्रतिहत, जिस का रोक नहीं, अबाधित ।  
 अपा, दिया, दे दिया ।  
 अवला, स्त्री, मेहरारू ।  
 अबाधा, १ बाधा, बाध २ बाधा रहित,  
 बे रोक, दुख विना ।  
 अवध, अज्ञानी ।  
 अभि, सब ओर से ।  
 अभिन्तर, भीतर ।  
 अभिजित, एक नक्षत्र का नाम, एक  
 मुहूर्त ।  
 अभिनंदन, सराहना ।  
 अभिमत, वांछित, चाहा गया ।

अभिराम, १ सुंदर २ सुखद ।  
 अभिवेक, जख हिरकना, खान ।  
 अभीष्ट, वांछित, चाहा गया ।  
 अभ्युत्तिपु, अनुरहित ।  
 अभेद, १ भेद विना २ जो न टूटे ।  
 अभंग, जो न मिटता ।  
 अभरीई, आम का बगीचा ।  
 अभरावती, स्वर्ग, इंद्रलोक ।  
 अभान, १ मानरहित २ प्रमाण से घरे  
 अभानुष, जो अनुष से न हो ।  
 अभित, जिस का अंत नहीं ।  
 अभिय, अमृत, संजीवनी ।  
 अभोध, सकल ।  
 अभगल, अशुभ ।  
 अय, लोहा ।  
 अयन, घर, स्थान ।  
 अयं, यह ।  
 अयुत, दस हजार ।  
 अरगई, १ चुप २ अलग ।  
 अरगानी, १ चुप २ अलग ।  
 अरध, अर्ध, आधा ।  
 अरधंग, अधीन, आधी शरीर, आधा अंग  
 अरनव, अर्णव, समुद्र ।  
 अरनी, आग मथने की लकड़ी ।  
 अरि, वैरो, शत्रु ।  
 अरुन, १ सास, रक्त २ सूर्य, ३ सूर्य व  
 साधनी ।  
 अरुनचूड़, मुर्गा ।  
 अरुनार, सास ।  
 अरुनमिखा, मुर्गा ।  
 अलपित, अलपित, जो लखानहीं गया  
 अलहि, अलक्षी, धनहीन ।  
 अलान, अक्षीरा, मधुबन्धन ।  
 अलि, १ अमर, भौरी २ सखी ।  
 अलिनि, अमरी, भौरी ।

हा, अलीक, झूठ ।  
 हा, झूठ ।  
 झ, झल झल करके, उरझ करके, लम करके ।  
 ला, धिर ।  
 किक, जो लोक में नहीं ।  
 णति, अलंकार, शोभा ।  
 णित, निश्चित ।  
 णित, ज्ञान ।  
 णह, १ असाह २ खान, नहाना ।  
 णट, अडवट ।  
 वट, औचक ।  
 णा, अपमान ।  
 डरि, १ त्याग करके २ बेचने कसके ।  
 डर, जो नीच पर भी डरता, अर्थात्  
 दया करता ।  
 तंस, माथे का गहना ।  
 धि, अयोध्या ।  
 धि, १ सीमा, सिमाना २ प्रतिज्ञा, पण ।  
 नि, पृथ्वी ।  
 निप, पृथ्वीपति, राजा ।  
 णीष, अवनोड, राजा ।  
 वर्त्त, आवर्त्त, भवर्, जलधुमर ।  
 वराधक, सेवक ।  
 वराधना, सेवना ।  
 वरेखो, लिखो ।  
 वरेव, छलट के पद को जोड़ना, कुपेच ।  
 वलोकय, देखो ।  
 वसान, नाश, अंत ।  
 वसि, अवश्य, जरूर ।  
 ववोषित, बसा, बाकी ।  
 ववरेरो, १ देरी २ उत्कांठा ।  
 ववाधी, सुखरूप ।  
 वविकारी, विकाररहित, अक, आदि  
 विकारहीन ।  
 वविगत, व्यापक ।

वविचल, स्थिर ।  
 वविहोन, निरंतर ।  
 वविद्या, अज्ञान ।  
 वविद्यापंच, वविद्या आदि पांच क्षेत्र ।  
 वविनय, ठिठार ।  
 वविनासी, जिस का नाश नहीं ।  
 वविरल, निरंतर ।  
 वविरोध, विनाविरोध ।  
 वविवेक, अज्ञान, विवेकरहित ।  
 वव्यक्त, १ प्रकृति २ ईश्वर ३ मृत ।  
 वव्याहत, जिस का रोक नहीं ।  
 वव्यादस, अठारह ।  
 ववस, ऐषा ।  
 ववसन, अन्न, भोजन, खाना ।  
 ववसनि, वज्र, अर्धनि ।  
 ववसमय, कुसमय, विनाशकाल ।  
 ववसमसर, कामदेव का नाम ।  
 ववसमंस, दुःख ।  
 ववसहार्द, बिना सहाय के ।  
 ववसाधो, असाध्य, जो दूर न हो ।  
 ववसि, १ तरवार २ हथौड़ा ३ ऐश्वर्य ।  
 ववसिव, अस्मिन्, अमंगल ।  
 ववसुर, दैत्य, राक्षस ।  
 ववसुरसेन, महा तोर्य ।  
 ववसेष, अशेष, संपूर्ण ।  
 ववसौच, अपवित्रता ।  
 ववसभावना, अनिश्चय, संभावना नहीं ।  
 ववसंमत, प्रतिकूल ।  
 ववसिमाच, हाडभर ।  
 ववह, १ अहंकार २ कष्ट ३ दिन ।  
 ववह, हाथ, बड़ा कष्ट ।  
 ववहमिति, अहंकार ।  
 ववहि, बांध ।  
 ववहिनी, नागिन, बांधिन ।  
 ववहिताव, ज्ञेय नाम ।

अहिवात, सोहान, डीमास ।  
 अहेर, आखेट, त्रिकार ।  
 अहेरी, त्रिकारी ।  
 अहो, १ अहरेण २ आह ३ दुःख ४ हर्ष ।  
 अर्ध, हम ।  
 आह, जीवन, अमिर ।  
 आकर, आनि ।  
 आकुल १ विकल २ पूर्ण ।  
 आकृति, आकार, सुरत ।  
 आखर, अक्षर ।  
 आगर, १ मुख २ मुहजुबानी ३ घर ४ चतुर ।  
 आगरी, १ कोठरी २ नामरी ।  
 आगार, घर ।  
 आगिल, होमहार ।  
 आचरण, करतूति, आचार ।  
 आचरनी, करतूति ।  
 आचरही, करते हैं ।  
 आतप, घाम ।  
 आत्महन, आत्मघाती ।  
 आतुर, १ दुःखी २ जलदी ।  
 आदिकवि, वात्सीक ।  
 आन, १ अन्य, और २ खौगंद ।  
 आनन, मुख, मुंह ।  
 आनवी, लाइयो ।  
 आपक्ष, विपत्ति में पडा ।  
 आभोर, गोप, अहोर, भील ।  
 आमलक, आवरा ।  
 आघत, विज्ञात, बड़ा ।  
 आघतन, घर ।  
 आघसु, आशा ।  
 आघुध, हथियार, शस्त्र ।  
 आरज, १ आर्य, ओष्ठ २ असुर ।  
 आरत, आर्त, दुःखी ।  
 आरति, १ आर्ति, पीड़ा २ अति प्रीति ।  
 आराती, आराति, वैरी, बन्धु ।

आराम, १ सुखदाता २ बनीया ।  
 आरुठ, चड़ा ।  
 आरौ, आरय, आरुठ ।  
 आलथ, घर ।  
 आलवाल, आला ।  
 आव, आघुध, अमिर ।  
 आवलि, अवली, पंक्ति ।  
 आवाहन, बुलाना ।  
 आशित, आशित, अवलंब लिया ।  
 आशनी, अक्षचारी आदि ।  
 आशक, अतिसन्न ।  
 आसा, १ आशा, दिशा २ आसरा, भरोसा ।  
 आसावसन, १ मंगा २ दृष्टाहीन ।  
 आसीन, बैठा ।  
 आसु, आशु, जलदी ।  
 आंक, निस्य ।  
 आंकुरे, अंकुर, अंगुष्ठा ।  
 एकअंग, एक पक्षरा, अंग ।  
 अक्षित, वांछित, आहमया ।  
 इत, इधर ।  
 इतराई, ऐंठ के चलना, इतराना ।  
 इदम्, यह ।  
 इदमित्यम्, यह ऐसा, ए हो ।  
 इव, जैसे, सदृश ।  
 इष्टदेव, पूज्य देवता ।  
 इह, यहाँ, इस लोक में ।  
 इन्दिरा, लक्ष्मी ।  
 इन्दु, चन्द्रमा ।  
 इन्द्रजाल, बाजीगर ।  
 इन्द्रजीत, मेघनाद ।  
 इन्द्रो, इन्द्रिय, मेवादि ।  
 ईति, अति वर्षा आदि ।  
 ईमान, ईसर, शिव ।  
 ईषना, ईषणा, वाचना ।  
 ईस, ईश १ ईसर २ शिव ३ राजा ।

१. उठाने की लकड़ी ।  
 ठि, उकठा, उकड़ना ।  
 उचिं, ऊंचे होते हैं, उकड़ना ।  
 , १ भयानक २ सेठ ।  
 रे, खुले ।  
 उट्ट, उखाटन, उखड़ना ।  
 पत, योग्य ।  
 नि, उल्लेख, गोदी ।  
 गमर, प्रसिद्ध, उल्लेख ।  
 मैनी, एक नगर का नाम ।  
 हु, तारा ।  
 कि, वचन, कहना ।  
 उकठा, उल्लेख, अभिज्ञाया ।  
 तर्क, उत्कर्ष, बढ़ाई ।  
 तपात, उत्पात, उपद्रव ।  
 लव, उखाड़ ।  
 तंग, उत्तंग, ऊंचा ।  
 दक, जल, पानी ।  
 दघाटी, १ प्रकटता २ उदयाचल की  
 घाटी ।  
 दिधि, समुद्र ।  
 दिभव, उद्भव, उत्पत्ति ।  
 दिद्यगिरि, उदयाचल ।  
 इदर, पेट ।  
 इदरवृद्धि, जलोदर रोग ।  
 उदवेग, उद्देग, क्रोध ।  
 उदार, १ दाता २ बड़ा ।  
 उदासा, बेपरवाह ।  
 उदासी, सन्यासी ।  
 उदासीन, अनुमिचभावहित ।  
 उपचार, उपाय ।  
 उपधान, तकिष्ठा ।  
 उपनिषद्, वेद का रहस्य भाग ।  
 उपपातक, छोटा पाप ।  
 उपवन, विहार करने की वाटिका ।

उपराजा, यक्ष, महान ।  
 उपस, पत्थर ।  
 उपसरहन, तकिष्ठा ।  
 उपसाधा, उपवास, भूखा रहना ।  
 उपवीन, कनेज ।  
 उपराजा, उपसाधा, उपराजना ।  
 उपहार, भेंट, पूजा, बखर ।  
 उपाटी, उखाड़के, उखाड़ना ।  
 उपाधी, १ समीप प्राप्ति २ जाया ३ उप-  
 द्रव ।  
 उपाये, उत्पन्न किष्ठा ।  
 उपारे, उखारे, उपारना ।  
 उपाया, उपजाया ।  
 उपाया, उपवास, भूखा रहना, फाका ।  
 उपायक, भक्त ।  
 उपायना, भक्ति, सेवा ।  
 उपरे, उपर गया, बच गया ।  
 उबारा, बचाया ।  
 उभय, दो, दोनों ।  
 उभौ, दो, दोनों ।  
 उमा, पार्वती ।  
 उयेव, उदय हुआ, उभना ।  
 उर, कातो, हृदय ।  
 उरग, साँप ।  
 उरगाद, गहड़ ।  
 उरगारी, गहड़ ।  
 उरु, अधिक ।  
 उर्विजा, सीताजी का नाम ।  
 उल्लूक, उल्लू, घुघुषा ।  
 उहार, उखार, परहा ।  
 उमरि, उदुमर, मूसर का पेड़ ।  
 ऊना, ऊन, कमती ।  
 एक, १ एकही २ मन्त्र ३ वचन ।  
 एकरव, बहुकारे रचित अर्थात् कामादि  
 विकार से रचित ।

एकाकिन, एकाकिन, एकाकी, अकेला ।  
 एकाकी, अकेला ।  
 एतादृश, ऐसा ।  
 एवमस्तु, ऐसा हो ।  
 ऐक, अटकल ।  
 ओघ, समूह ।  
 ओडनखाँड, पटेबाज ।  
 ओडिअरि, आड़ ।  
 ओदन, भात ।  
 ओधे, लगे ।  
 ओर, १ अंत २ तरफ़ ।  
 ओरे, ओछा, वनौरी ।  
 ओक, १ अक्षर २ गोदी ३ चिह्न ४ एक  
 आदि गिनती ।  
 ओकित, चिह्नयुत ।  
 ओंग, १ शरीर २ मित्र ३ हस्त आदि ४  
 राज्य का ओंग ।  
 ओंगरी, बखतर ।  
 ओंगवनि, सङ्गना, ओंगवना ।  
 ओचल, ओचर ।  
 ओब, ओम्हा, माता, मतारी ।  
 ओबक, ओख ।  
 ओबर, १ वस्त्र २ आकाश ।  
 ओबरीष, ओबरीष, एक राजा का नाम ।  
 ओबु, जल, पानी ।  
 ओबुघर, मेघ, बादर ।  
 ओबुधि, समूह ।  
 ओबुपति, वृक्ष, वन ।  
 ओभोज, कमल ।  
 ओजि, ओजन लाना के, ओज करके ।  
 ओगुलि, ओगुरी ।  
 ओड, १ ब्रह्मांड २ ओड़ा ।  
 ओकटाह, ब्रह्मांड ।  
 ओतर, १ ओड़ २ भीतर ।  
 ओतरनामी, मन का जामनवाक़ा ।

ओतरधान, ओतधीन, क्षिपना ।  
 ओतरहित, ओतरहित, क्षिप, गुप्त ।  
 ओतावरि, ओतड़ी, ओत ।  
 ओवां, ओवी ।  
 करकर, कैकोथी ।  
 कच, बार, केस, ।  
 कक्षप, कच्छप, ककुथा ।  
 कज्जलगिरि, ओजनपर्वत ।  
 कटक, १ मेना २ कड़ा, खडुआ ।  
 कटाह, कड़ाह ।  
 कटि, कमर, करिहांव ।  
 कटिमुख, करधनी ।  
 कटु, कडुआ ।  
 कडिहार, कणधार, मल्लाह ।  
 कत, काह, किशलिये ।  
 कति, केतना ।  
 कथनीय, कहने के योग्य ।  
 कदली, केला, केरा ।  
 कदंब, १ वृक्ष विशेष २ समूह ।  
 कद्र, नागमाता ।  
 कनककशिपु, हिरण्यकक्षप, एक दैत्य  
 का नाम ।  
 कनकलोचन, हिरण्याक्षदैत्य ।  
 कनो, कंद, कनिका ।  
 कपटभ, मायाभूमि ।  
 कपाट, केवाड़ी, केवाड़ ।  
 कपाल, खोपरी ।  
 कपि, बानर ।  
 कपिकुंजर, कपिमेढ ।  
 कपिन्दा, कपींद्र, बानरों का राजा ।  
 कपिल, एक मुनि का नाम जिस ने साँझ  
 शास्त्र बनाया ।  
 कपोत, कबूतर ।  
 कपोल, गाल ।  
 कवाह, ऊंगर, गन ।

हो, १ कबूल करावी २ पची विशेष ।  
 ठ, कड़ुआ ।  
 मोय, सुंदर ।  
 ला, लप्यो ।  
 १ कार्य, काम २ बरीर ।  
 १ किरन २ हाथ ३ खंड ४ मासुका ।  
 क, पोड़ा ।  
 ज, अंगुली ।  
 तल, हाथ पर ।  
 तारी, हाथ की तारी ।  
 न, १ इंद्रिय २ कान ३ साधन ४ का-  
 रन ५ करना ।  
 मोया, करणीय, करने के योग्य ।  
 तरे, विपदा ।  
 रघा, १ ईर्ष्या २ वैर ३ रिस ।  
 रघि, खेच करके, करवना, कर्षण ।  
 रारा, कराल, भयंकर १ तट, किनारा ।  
 राल, कठोर, भयंकर ।  
 रि, हाथी ।  
 रिनी, करिणी, हयिनी ।  
 रोला, ठूल विशेष, जिस में पत्ता नहीं ।  
 रुई, कट, कड़ई ।  
 रुन, कड़णा, दया ।  
 रुनाकरति, गुण कह करके विलाप  
 करती ।  
 रुतव्य, कर्तव्य, करने के योग्य ।  
 रुनधार, पतवारी ।  
 रुल, १ सुंदर २ मोठा ।  
 रुलकंठ, कोदल ।  
 रुलप, १ कल्प, ब्रह्मा का दिन २ प्रलय  
 ३ मनोरथ ४ समर्थ ५ कल्पना ६ रचना ।  
 रुपतर, कल्पलव ।  
 रुलपना, १ तर्क, २ खालसा ३ कष्ट ४  
 रचना ।  
 रुलपि, झूठ करके, कल्पना बनाखना ।

रुलपित, कल्पित, झूठ, झूठ तर्क ।  
 रुलवल, लट नदी ।  
 रुलभ, हाथी का बच्चा ।  
 रुलमसे, संघल भये, दिसे, कलमखाना ।  
 रुलध, रुलध, गगरी, घड़ा ।  
 रुलधंस, राजधंस ।  
 रुला, १ जल तरादि २४ चंद्र, भाग ।  
 रुलाप, समूह ।  
 रुलि, १ कलियुग २ रुलध ३ रुलध  
 का लव ।  
 रुलिकवि, कलियुग के कवि कालिदास  
 आदि ।  
 रुलित, १ पवित्र २ सुंदर ३ रुचित ।  
 रुलिलसरि, कर्मनासा नदी ।  
 रुलिल, पंक, कोचड़ ।  
 रुलप, पप ।  
 रुलवर, बगीच, देह ।  
 रुलस, १ क्रोध, दुःख २ रुलियादि पांच  
 ३ चंद्रमा ।  
 रुलक, १ लांकुन २ मिहूपास ।  
 रुलोलिनो, तरंग भस्मेत नदी ।  
 रुलल, गिराम, कवर ।  
 रुलि, कायकर्ता ।  
 रुलिल, काव्य, कविता ।  
 रुलध, १ देव विशेष २ धड़ ।  
 रुलप, रुलप, एक शब्द का नाम ।  
 रुसे, कसौटीपर रंग, कलना ।  
 रुलानी, कथा ।  
 रुलक, कवच ।  
 रुलक, कौशा, कान ।  
 रुलकपक, पड़ा ।  
 रुलक, व्यंग वचन ।  
 रुलसासोती, दोनों कंधा से कांख तक  
 बाँधे, बनाये ।  
 रुलन, वन ।



कानो, बंकोच, मर्यादा ।  
 काम, १ कामना २ कामदेव ३ विषय ४  
 धंधा ५ सुंदर ।  
 कामद, मनोरथदाता ।  
 कामदगार्ह, कामधेनु ।  
 कामना, वासना, इच्छा ।  
 कामरूप, इच्छाचारी, कामस्वरूप ।  
 कामुक, धनुष ।  
 कारक, करनेवाला ।  
 कारण, कार्य, पंचभूतादि ।  
 कारण, १ प्रयोजन २ पिता ३ निमित्त  
 ४ प्रकृति ।  
 कारणकरण, महत्तत्वादि के कारण ।  
 कारो, काली ।  
 काक्ष, १ समय २ मृत्यु, मोक्ष ३ यम ४  
 काला, श्याम ५ नेत्र ।  
 काष्णकूट, विष ।  
 कालराति, प्रसन्न की रात ।  
 कालिका, देवी ।  
 काली, १ काल्ह, कलह २ श्याम ।  
 कांजी, १ सिरका २ खड़ा पानी राई का ।  
 कांधो, अंगोकार करकं ।  
 किन, १ छाव २ क्यों नहीं  
 किन्नर, देवजाति विशेष ।  
 किमपि, कुछ भी ।  
 किम्बा, अथवा ।  
 किरातिन, भोलनी ।  
 किरिच, टुकड़ा ।  
 किरीट, मुकुट भेद ।  
 किलकिला, बानर का शब्द ।  
 किसलय, किञ्चलय, नवा पत्ता ।  
 किंसु, किंस का ।  
 किशोर, किशोर, लड़का, अवस्था भेद ।  
 किंकर, दास ।  
 किंकरी, दासी ।

किंकिनी, कुदृष्टिका, करधनी, मेखला ।  
 किंसुक, १ पलाश २ फूल ।  
 कीतो, कीर्ति, जय ।  
 कीर, सुग्गा, तोता ।  
 कीरति, कीर्त्ति, यश जय ।  
 कील, खिरचा, विन, खरिका ।  
 कु, १ भूमि २ मोच, बुरा ।  
 कुचाह, बुरा समाचार ।  
 कुक्षित, घुघुरारं, टेढ़ा ।  
 कुञ्जर, हाथी ।  
 कुशोगी, कुयोगी, विषयी ।  
 कुटोर, कुटी ।  
 कुठारी, टांगी ।  
 कुठाहर, मोच जगह ।  
 कुतर्क, मोच विचार ।  
 कुदृष्टि, पापदृष्टि ।  
 कुधातु, लोहा ।  
 कुपथ, बुरी राह, कुमार्ग ।  
 कुपथ्य, बदपरहेजो ।  
 कुवलय, कमल ।  
 कुविहग, बाज पक्षी ।  
 कुम्भज, अष्टवि विशेष ।  
 कुमार, कुवारा, बालक, विन व्याह ।  
 कुमारी, कन्या, विन व्याहो ।  
 कुमुद, १ कोई, २ बानर विशेष ।  
 कुमुदवन्धु, चंद्रमा ।  
 कुररो, पक्षी विशेष, कृंज ।  
 कुराई, पांव फसने का बिल ।  
 कुरो, सब जाति ।  
 कुरुचि, मोच वासना ।  
 कुरंग, हरिन, मृग ।  
 कुल, १ वंश २ समूह ३ घर ।  
 कुलह, टोपी, कुलाह ।  
 कुलि, सब ।  
 कुलिश, कुलिश, १ वज्र २ हीरा ।

कुशलो, सुखी ।  
 कुसकोतु, जनक के भाई का नाम ।  
 कुमल, कुशल, चतुर, कलाप ।  
 कुसुमउ, अमरमर, बुरा समय ।  
 कुसुमित, प्रफुलित, फूला हुआ ।  
 कुम्हड़, कोहड़ा फल ।  
 कुकुम, १ केशर २ रंगी ।  
 कुम्भ, कुम्भ, घड़ा, हाथी का माथा ।  
 कुंत, भाखा ।  
 कुवर, राजकुमार ।  
 कुजहिं, कृपते हैं, बोलते हैं, कृपणा ।  
 कुट, १ पहाड़ की चोटी २ निहाई ।  
 कुटी, व्यंग वचन ।  
 कुप, कृपा ।  
 कुप, १ कठोर २ कपटी ३ टेढ़ा ।  
 कुल, तट, किनारा ।  
 कुल्लि, लोहे की टोपी ।  
 कुल, किया, कर्म, करतृति ।  
 कुल्लित्य, कृतार्थ ।  
 कुलांत, यमराज ।  
 कुल्लिंदक, कृतघ्न ।  
 कुल्लि, उपकार माननेवाला ।  
 कुपानि, कृपाण, तरवार ।  
 कुपिन, कृपिण, सुम ।  
 कुमि, कीड़ा, किरौना ।  
 कुम, कृश, दुर्बल, दूबर ।  
 कुमानु, कुशानु, आग, अग्नि ।  
 कुषी, खेतो ।  
 कुयिद्ध, १ व्यवहार, कियाशब्द का-  
 बहुवचन २ यज्ञादि ३ प्रीति ४ भक्ति ।  
 कुकी, मोर ।  
 कुतु, १ मोचन २ ध्वजा ।  
 कुत, का अर्थ का कर्क का चिह्न ।

कुलि, कीड़ा, खेच ।  
 कुवट, कुवर्त, मलाह ।  
 कुवल, मुख्य, एकही, चकला ।  
 कुवरी, १ केशरी, सिंह २ इनुमान के पिता ।  
 कुवरी, केशरी, सिंह ।  
 कुकथ, १ राजा २ देश विशेष ।  
 कुटभ, दंत्य विशेष ।  
 कुकथ, कोट ।  
 कुवथ, मोच, मुक्ति ।  
 कुका, १ चकई चकवा २ ।  
 कुकु, गोदी ।  
 कुटर, खोटा ।  
 कुटि, १ कठोर २ पक्ष ३ धनुष का कोर ।  
 कुदंड, धनुष ।  
 कुदव, कुदो, अन्न विशेष ।  
 कुपपर, पाच विशेष ।  
 कुपो, १ कोर २ कोधी ।  
 कुविद, पंडित ।  
 कुथ, आंध्र का संपूर्ण स्तन डेला ।  
 कुरि, खोद करके, कोरना, खुदना ।  
 कुरी, कड़ोड़ ।  
 कुल, प्रूकर, सुधर ।  
 कुम, १ कमल का मध्य २ घर ३ खजाना ।  
 कुमल, एक देश का नाम ।  
 कुमला, अयोध्या ।  
 कुमलपुरी, अयोध्या ।  
 कुह, कुंध ।  
 कुहवर, कौतुककर व्याह का ।  
 कुहाव, कुठना, कुहाना ।  
 कुही, कुधी ।  
 कु, कुषी में ।  
 कुतुक, १ तमाशा २ अनायास ।  
 कुतुहल, कुतुक ।

कौमुदी, चांदनी ।

कौल, वाममार्ग ।

कौशिक, विश्वामित्र ।

कंक, कुहो ।

कंकन, कड़ा, कंकना ।

कंचन, मोना, सुवर्ण ।

कंज, कमल ।

कंठक, १ कांटा २ शत्रु ।

कंडु, खजुली ।

कंत, पति ।

कंद, १ कमल आदि की जड़ २ मेघ ३ समूह ।

कंदरा, गुफा ।

कंदुक, गेंद ।

कंधरा, गन्ना ।

कंध, १ स्कंध, कांधा २ मोटी डार ।

कंप, कापना ।

कंपति, समुद्र ।

कंवल, कमरा, पञ्चमीना ।

कंठ, शंख ।

खग, पक्षी, चिड़िया ।

खग, (खड्ग) तरवार ।

खगकेतु, गहड़ ।

खगहा, गैंडा ।

खगेम, (खगेश) गहड़ ।

खचित, जड़ाऊ ।

खचो, जड़ाऊ ।

खटाक्षि, घिर रहना ।

खद्योत, जुगनू ।

खनि, खोद करके ।

खप्पर, खर्पर, खोपड़ी ।

खर्पर, १ पीठ २ चिर, खोपड़ी ।

खर्ब, १ छोटा २ तुच्छ ।

खभाह, होभ ।

खर, १ शस्त्र २ खस का भार २ तोल

३ गड़हा ४ शत्रु ।

खरभर, होभ ।

खरी, गदहो ।

खरो, ढण ।

खल, दुष्ट, खरखल ।

खलु, निश्चय क ।

खस, जातिविशेष ।

खमी, गिरी ।

खमेउ, गिरा, खसना ।

खंगे, कमती ।

खानिक, जो खानि में ऊँचा ।

खानी, (खानि) घर ।

खाले, मोचे, गड़हा ।

खिन्न, दुखिया ।

खोन, (चीण) दूबर, दुर्वल ।

खोम, नाश ।

खेत, (चेच) समरभूमि, अन्न बोने का स्थान ।

खेद, दुःख ।

खेर, पुरा, गांव ।

खलवार, खेलाड़ी ।

खोडम, (खोडश) सोरह ।

खोरी, १ दोष २ गली ३ चंदन की खोरी ।

खोरे, लंगड़े ।

खोह, गुफा ।

खंजन, खंडरिच ।

खंड, टुकड़ा ।

गगन, आकाश ।

गज, हाथी ।

गजानन, गणेशजी ।

गत, १ गया २ प्राप्त ३ ज्ञात ४ निष्ठ

५ विना ६ अभिय ।

गति, १ मुक्ति ० रक्षा २ चाल ४ ज्ञान

५ स्वरूप ६ दशा ७ आधार ८ उपाय ।

गद्य, दाम ।

गदगद, आनंदयुक्त ।

गर्द, धूरि ।

गन, १ गण, शिव के प्रमथ आदि, २ विघ्न,

३ समूह ।

गनराज, गणेशजी ।

गनराज, गणेशजी ।

गनि, १ गन करके २ विचार के ।

गनिक, गणिक, आतिथी ।

गनिका, वेश्या, कसबी ।

गनो, १ धनो २ विचार ३ गिनती ।

गने, गिनती के ।

गनेस, १ गणेश २ आरंभ ३ रस ।

गर्वित, अभिमानी, मानयुक्त ।

गभुवारे, गर्भवाल, बालक के नये बाल ।

गम, गमन, जाना ।

गम्य, जानने के योग्य ।

गय, हाथी ।

गयंद, हाथी ।

गरल, विष ।

गरुता, गरुता, गरुआई, भार ।

गरुह, १ गृह, २ गंठिआ, बात ।

गलित, गलतया, नाश ।

गवहिं, गंव से ।

गवासा, कसाई ।

गहगहे, बज, नकारे का शब्द ।

गहन, १ विकट २ वन ३ पकड़ना ।

गहवर, १ सघन, २ सोच के साथ ।

गहर, देरी, विचंब ।

गाहगोठ, गोहवाला ।

गाजन, नाश करनेवाला ।

गाह, गडहा ।

गाहुर, घास विशेष, खसका भेद ।

गाढा, कठिन, दृढ़ ।

गात, गात्र, शरीर, अंग ।

गाथा, कथा ।

गाथे, गूँथे ।

गादुर, चमगिदुरा ।

गाधि, एक राजा का नाम ।

गाना, कथन, कहना ।

गामी, चलनेवाला ।

गाहड़ो, विषहरनेवाला ।

गाल, बहनी ।

गालव, एक क्षत्रि का नाम ।

गालवआई, बकवाइ करके ।

गाहा, कथा ।

गिरा, १ सरझतो २ कविताई ३ वचन

गिरि, पहाड़ ।

गिरिजा, पार्वती ।

गिरिनाथ, महादेव ।

गिरिराज, सुमेरु पर्वत ।

गिरीम, १ महादेव २ हिमाचल ।

गिरिंदा, सुमेरु पर्वत ।

गिलई, झीलजावे ।

गोध, जटायू ।

गुञ्जा, घुंघुची ।

गुदरत, जनावत ।

गुन, गुण १ ज्ञान आदि २ डोरा, रस्सी

३ सत्त्वरजतम ।

गुनऊ, १ विचारो २ अपराध, गुनाह ।

गुनऊ, गुण का जाननेवाला ।

गुनि, १ गुणो, २ विचार करके ।

गुनिथ, विचारना चाहिये ।

गुह, १ छपदेश करनेवाला २ छहछति ३  
बड़ा ४ भारी ।

गुहजन, बड़े लोग ।

गुमार्द, खामो, ख्याली ।

गुहा, १ गुफा २ निषाद ।

गुहारी, १ रक्तक, सहायक ।

गूढ, गुप्त, छिपा ।

गृहादि, गृहआदि ।

गृही, गृहस्थ ।

गृहीत, पकड़ा ।

गे, गये ।

गेह, घर ।

गेह, गेहूँ ।

गो, १ गाय, बैल २ पृथ्वी ३ इंद्रिय ४ प्राप्त ।

गोई, क्षिणी, क्षिपाया ।

गोए, क्षिपाए ।

गोचर, विषय, जो इंद्रिय से जाना जाय ।

गोदावरी नदी विशेष ।

गोपद, गाय का खुर ।

गोप्य, छिपाने के योग्य ।

गोलक, चन्द्रांद्रिय का स्थान ।

गोविंद, वेदलभ्य ।

गौतम, ऋषि विशेष ।

गौतमनारी, अहिन्त्या ।

गौन, गमन, जाना ।

गौर, गोरा, सफेद ।

गौरव, बड़ाई ।

गौरीश, गौरीश, शिव ।

गंजन, नाश करना ।

गंजा, नाश किया ।

गंभीर, गहिरा ।

गह, सूर्य आदि गह ।

गहदशा, सनीचरी ।

गहे, १ पकड़े २ सूखे ।

गाम, १ गवार २ गांव ३ समूह ।

गाही, संपाही, ग्रहण करनेवाला ।

गोवा, गला, कंठ ।

गोषम, गोश, गरमी की श्रुत ।

गंध, पुष्पक ।

गंधि, गांठ ।

घट, १ चड़ा २ हृदय ।

घटज, कुंभजऋषि, अगस्त्य ।

घटव, करव ।

घटा, समूह ।

घटि, १ घटिया २ कमती ।

घटिहि, १ करेगी २ होगा ।

घन, १ बादल २ घना ३ छोड़े का घन  
४ अद्भुत ।

घमोद, १ भड़भाड़ २ बांस ।

घरनी, स्त्री, गृहस्थिनी ।

घवरि, गुच्छा ।

घाव, चोट, घाव ।

घात, १ दांव पेच २ घाव, चोट ।

घातिनी, नाश करनेवाली ।

घालक, नाश करनेवाला ।

घाला, नाश किया, घाला ।

घालि, अस्त्रमारि ।

घाली, डारी, फेंकी, घालना ।

घुनाकर, घुनकृत अक्षर, लकड़ी में न्याय-  
करके प्रसिद्ध है ।

घुमारहिं, नगारेकी आवाजकी जकल ।

घूमिति, घूमा, घूमकरके ।

घृत, घी ।

घान, घाव, नाक ।

चकित, आश्चर्यित ।

चक्रवे, चक्रवर्ती, चक्रवर्तीराजा ।

चक्र, १ सुदर्शनचक्र २ पहिया ।



चट्टिका, चाँदनी ।  
 कई, रोग विशेष ।  
 कठे, कः ।  
 कत, कत, फोड़ा, घाव ।  
 कति, हानि ।  
 कस, ठपा ।  
 कवि, कौभा ।  
 कवील, सुंदर ।  
 कमा, चमा १ पृथ्वी २ सद्गुण ।  
 कमि, जमा करके ।  
 करे, कटे ।  
 कचक, भुइँफोर ।  
 कचबधु, कचो जाति में नीच ।  
 काके, मतवाला, मत्त ।  
 काको, मंठा ।  
 काजा, सोहा, काजना, सोहना ।  
 काया, १ काँह २ अंग ।  
 कारा, राख, ।  
 कासा, चर्म, चमड़ा ।  
 काँड़ा, त्याग, कौड़ा, राख ।  
 किति, चिति, पृथ्वी ।  
 किर, किर ।  
 कोजहि, घटते, कोजना, घटना ।  
 कोना, कोण, दुबरा, रहित ।  
 कोने, काट ।  
 कोर, कोर, दूध ।  
 कुद्र, कुद्र, कोट, तुच्छ ।  
 कुधित, कुधित, भूखा ।  
 कुचे, चिचित ।  
 कूक, खासी ।  
 केका, घेरा, रोका, केकना ।  
 केमकरी, पक्षी विशेष ।  
 केमा, केम, सुख ।

केच, केच, भूमि, खेत ।  
 केस, बांका ।  
 कोनिप, कोणिप, राजा ।  
 कोभा, कोभ, घबड़ाहट ।  
 काँहा, परिखाँही ।  
 कंद, १ गायत्री आदि २ रचना ३ स्वतंत्र ।  
 जग, १ जगम २ संसार ।  
 जगजोनी, जगघोनि, ब्रह्मा ।  
 जगत, पृथ्वी ।  
 जगदीस, जगदीश, १ राजा २ ईश्वर ।  
 जगदंबा, जगत की माता ।  
 जजाति, यथाति, एक राजा का नाम ।  
 जटिल, जटाधारी ।  
 जठर, १ बूढ़ा २ पेट ।  
 जठरी, बड़ी बूढ़ी ।  
 जड़, १ मूठ २ पर्वत आदि, निर्जीव ।  
 जत, १ जितना २ यत्न, जतन ।  
 जतन, यत्न, रक्षा, उपाय ।  
 जतो, यतो, सन्यासी ।  
 जथा, यथा, जैसे ।  
 जथायित, यथास्थित, जैसा पहिले,  
 जैसा था ।  
 जथोचित, यथोचित, यथायोग्य ।  
 जनक, १ पिता २ सीता के पिता का नाम ।  
 जनकौरा, जनक, जनक सम्बंधी ।  
 जनयित्री, जननी, माता ।  
 जनि, नही, मत ।  
 जजित, उत्पन्न ।  
 जनेत, वरात, जनता ।  
 जनेस, जनेश, राजा ।  
 जनेषु, मनुष्यों में ।  
 जपति, जपते हैं ।  
 जपामि, मैं जपता हूँ

।म, १ यम, यमराज २ यमिनी आदि ।  
।मो, यमो, संयमी ।  
।मुन, यमुना, जमुना नदी ।  
।यति, जय होता है ।  
।येत्र, जीता, विजय किया ।  
।यंत, जयंता, इंद्र के बेटे का नाम ।  
।र, जर, ज्वर ।  
।रि, जर, मूल ।  
।र्जर, चोरफारे झांझर ।  
।लज्जि, जलभौरा ।  
।लक्ष्मट, जलमुर्गा, मुर्गाबी ।  
।लघर, मकुरी आदि ।  
।लज, कमल ।  
।लजात, कमल ।  
।लज्जान, जलघान, नाव, जहाज ।  
।लद, मेघ, बादल ।  
।लधर, मेघ, बादल ।  
।लधि, समुद्र ।  
।लमल, फेन आदि ।  
।लरासी, जलराशि, समुद्र ।  
।लरह, कमल ।  
।लविहंग, जलपक्षी ।  
।लाभय, जलाशय, तलाव ।  
।लंधर, दैत्य विशेष ।  
।ल्यक, बोखनेवाला, बकनेवाला ।  
।ल्यत, बकता है ।  
।ल्यसि, ठूं बकता है, जलपना ।  
।ल्यहिं, कहते हैं, जलपना ।  
।वनिका, १ कनात २ खैल ।  
।य, १ जैसा २ यशस्, कीर्ति ।  
।योमति, यशोमति, यशोदा, जशोदा ।  
।यहि, जेहि, जिसको, व्यागो, छोड़ो ।

जज्ञउपवीत, यज्ञोपवीत, जनेऊ ।  
।यार, १ बेटो २ पैदा भई ।  
।जाग, यज्ञ ।  
।जागी, जाहिर, प्रगट ।  
।जाचक, याचक, मंगल ।  
।जाचत, मांगता है ।  
।जाचा, मांगा, जाचना, मांगना ।  
।जातकर्म, लड़के के जन्मसमय की नांदी  
आहु आदि ।  
।जातना, यातना, पीड़ा, तीव्रवेदना ।  
।जातरूप, धोना, सुकना ।  
।जातुधान, राखध ।  
।जान, १ ज्ञान २ जीव ३ सवारी, घान ।  
।जानपनी, स्वरूपज्ञान ।  
।जानी, १ ज्ञानी २ स्त्री ।  
।जानु, घुटना ।  
।जापक, अपकरनेवाला ।  
।जाम, याम, पहर ।  
।जामाता, दामाद ।  
।जामिक, जामिक, पाहर, पहरवा, चौ-  
कोदार ।  
।जामिनि, जामिनी, रात्रि, रात ।  
।जाय, हुआ ।  
।जाया, १ स्त्री २ उत्पन्न ।  
।जारा, १ जलाया, जारना २ समूह ।  
।जाल, १ समूह २ झरोखा ३ फंदा ।  
।जावक, याचक, महावर ।  
।जाबाली, एक ऋषि का नाम ।  
।जिनस, जाति ।  
।जिमि, जैसे ।  
।जियाये, पाले, जिधाना, पालना ।  
।जीव, १ जीते रहो २ जीवात्मा ।  
।जीवन, १ आजीविका, रोजी २ जीना  
३ जीव, जानी ।



जोड़; जिझा, जीभ ।	जोवा, देखा, जोवना, देखना ।
जग, १ युग, दो २ सत्ययुग आदि ।	जोषिता, जोषित, स्त्री ।
जगल, १ युगल, दो ।	जोहारे, प्रणामकिया; जोहारना, प्रणाम करना ।
जगविधि, युगविधि श्रोतउष्ण दोविधि का ज्वर ।	जोहो, देखकरके, खोजकरके ।
जुझारा, लड़वैया, लड़नेवाला ।	जंगम, चलनेवाला ।
जुटत, १ लड़ते हैं, जुटना २ लड़ना ३ एकट्ठा होना ।	जत, चुड़जोव ।
जुझाने, श्रोतसभये, ठंढेभये ।	जञित, यञित ताला दे दिया ।
जुबतो, युवति, जवान स्त्री ।	जनी, वशकिया, ताला दे दिया ।
जुबराज, युवराज, कुंअर, नायब, राज्याधिकारी ।	जब, जामुन ।
जुबा, युवा, जवान ।	जबुक, सियार, शृगाल ।
जुबान, जवानपक्ष ।	ज्याये, पाले, ज्याना, पालना ।
जुवारा, जुवारी ।	झगलिया, चोखना, लड़कों का कुर्ता ।
जुझा, लड़ाई, युद्ध ।	झटति, झटिति, जलदी ।
जूथ, यूथ, समूह ।	झपकेतु, कामदेव ।
जूथप, यूथप, सेनापति ।	झारो, समूह ।
जून, १ पुराना २ समय ।	झापा, झखना ।
जूरो, १ समूह २ जोड़करके, जूरना, जोड़ना ।	झोटिंग, प्रेतभेद ।
जूहा, यूथ, समूह ।	झई, तिरमिराना, आंख के आगे अधरा ।
जूई, भोजन किया, जवना, खाना ।	झपेउ, ठपा, झपना, ठपना ।
जोई, देखो, जोवना ।	झाई, परकाही, तिरमिराना ।
जोऊ, देखना, जोवना ।	झोटी, चोटी ।
जोग, १ योग, अष्टांग २ योग्य ३ मित्राप, संबंध ।	टकोर, ध्वनि, धुनि ।
जोगवत, परिखत, खबरदारी करना जतन करना ।	टिडिभ, टिटिहरी पक्षी ।
जोजन, योजन, चार कोस ।	टई, चोखाकिया, तोखीकिया; टेवना, चोखा करना ।
जोड़ा, जोड़ी, दोनों ।	टेक, १ हठ २ अवलंब ।
जोतो, १ ज्योति, प्रकार २ स्वर्ग ।	टेको, १ हठ करके २ निश्चययुत ३ थापो ।
जोगी, १ योनि, कारण २ जाति ।	टेव, बान, आदत ।
	टेर, पुकार ।
	ठकुर, ठाकुर ।
	ठडा, समूह ।
	ठडुकि, रक करके; ठठकना, रकना ।

प्र्येव, किया, ठाना ।  
 प्रवि, चाल, घटने की रीति ।  
 प्राठ, १ रचना २ समूह ।  
 प्राणा, १ किया २ निश्चय, ठानना ।  
 प्राह, जगह, ठहर ।  
 प्रीका, निश्चय, ठीक ।  
 प्रीज, ठाँव, घर, जगह ।  
 प्री, हिलना ।  
 प्रमत्ता, घुटने की नाँठ में का रोग,  
 गठिया ।  
 प्रि, काट करके; डसना, काटना ।  
 प्रिकि, ठग करके; डहकना ठगना ।  
 प्रिडा, चास ।  
 प्रिडे, जरे ।  
 प्रिबर, गड़हा ।  
 प्रमन, बिकौना, दसौना ।  
 प्रमो, बिक्री करके ।  
 प्रिडिमो, एक प्रकार का बाजा ।  
 प्रीटा, देखा, दृष्ट ।  
 प्रीठी, दृष्टि, देखी ।  
 प्रवट, डवड़ा ।  
 प्रेल, १ डोलना २ तलाव ३ हिंडोला ।  
 प्रेली, गयी, डोलना ।  
 प्री, खोजी, ढँढीरना, खोजना ।  
 प्रमनी, लुठक गयी, डनमनाना लुठ-  
 कना ।  
 प्रिबर, मैला ।  
 प्रिग, समीप ।  
 प्रक, सारस पक्षी ।  
 प्रीटा, बेटा ।  
 प्रीजो, अंगठ के पास की अंगुली ।  
 प्रि, स्वरूपज्ञाता, (तद्, वद्, ज्ञा, जानने-

तट, तीर, किनारा, निकट ।  
 तडाग, तलाव ।  
 तडित, तडित्, बिजुकी ।  
 तत्त्व, १ सारवस्तु २ प्रकृति आदि ।  
 तथा, तैसे ।  
 तथापि, तौभी ।  
 तदपि, तौभी ।  
 तन, घोर ।  
 तनकाऊ, थोड़ा भी ।  
 तनय, पुत्र, बेटा ।  
 तनघा, पुत्री बेटो ।  
 तन, १ शरीर २ रूप, थोड़ा ३ विस्तार ।  
 तनुजा, बेटो ।  
 तनोत, विस्तार करे, फैलावे ।  
 तमोदह, रोम, रोवाँ जो शरीर में अन्धा ।  
 तपोधन, तपस्वी ।  
 तम, १ अज्ञान २ अधेरा ३ तमोगुण ४  
 अर्धत ।  
 तमकि, धरोष हो करके, तमक करके,  
 तमकना ।  
 तमारि, छर्छ ।  
 तमाल, वृक्ष विशेष ।  
 तमो, रात्रि, रात ।  
 तमोचर, राजस ।  
 तर, १ तल, तरे २ अर्धत ।  
 तरक, तर्क, विचार ।  
 तरकेड, क्रुदा; तरकना, क्रुदना ।  
 तरजत, तड़पता; तरकना, तड़पना ।  
 तरजन, झिझकारना ।  
 तरजा, क्रुदा, तरकना, क्रुदना ।  
 तरगतारन, जो चाप तर और दूसरों  
 को तारे ।  
 त्रि, १ त्रिभिर्गुणैः २ त्रिभिः ।

तरपट्टि, तड़पते हैं ।  
 तरल, १ चंचल २ तीव्र, चोखा ।  
 तरु, वृक्ष, पेड़ ।  
 तरुन, तरुण, अवान ।  
 तरुनार्द्र, तारुण्य, अवानी ।  
 तरुनी, तरुणी, अवान स्त्री ।  
 तरंग, लहर ।  
 तरंगी, बज्ररंगी, चक्काइवाले ।  
 तरंगिनि, तरंगिनी, नदी ।  
 ताग, छोरा, तागा ।  
 ताजो, घोड़ा विशेष ।  
 ताटक, तरकी, बिरिया, करनफूल ।  
 ताड़त, पीटता, मारता ।  
 तात, १ पुत्र २ पिता ३ गरम, तप्त ४ भाई  
 ५ सखा ६ प्रिय ।  
 तापस, तपस्वी ।  
 तापे, तपे, तापना, द्रवना ।  
 तामरस, कमल ।  
 तामस, तमोगुणी ।  
 तारक, १ मंत्र २ दैत्य विशेष ३ तारनेवाला  
 ४ तारा, सितारा ५ पुतली, चाँच का  
 तारा ।  
 तारा, १ बाखिकी स्त्री का नाम २ तरई  
 ताल, १ तलाव २ वृक्ष विशेष ३ ताड़ी  
 बजाना ।  
 ताल, ताल वृक्ष ।  
 तिमिर, अंधकार ।  
 तिमूहानी, चिमुख, जहाँ तीन नदी  
 मिलती हैं ।  
 तिथ, स्त्री, मेहरारू ।  
 तिरङ्गति, एक देश का नाम ।  
 तिलक, १ टीका २ श्रेष्ठ ।  
 तिष्ठे, रचे, तिठना, रचना, (सं. स्त्री) ।

तिष्ठलोक, तीनो लोक अर्थात् स्वर्ग,  
 मृत्युलोक, पाताल ।  
 तोड़े, तीव्र, चोखा, तेज ।  
 तोनकास, भूत, भविष्यत, वर्तमान ।  
 तोरयपति, तोर्यपति, प्रयाग ।  
 तोरयराज, तोर्यराज, प्रयाग, इलाहा-  
 बाद ।  
 तोत्र, तोच्छ ।  
 तुभं, तुम्हारे लिये, तुम को ।  
 तुरग, घोड़ा ।  
 तुराद, १ तोसक २ बेग से ३ तोड़ करके ।  
 तुफा, तराजू ।  
 तुमार, तुषार, पाला ।  
 तुहिन, पाला ।  
 तुनीर, तरकश ।  
 तुरी, तुष ।  
 तुल, १ रुई २ तुच्छ, बराबर ।  
 तुंबरी, तुमड़ी ।  
 तुजग, तिर्थस्थ, पशु पक्षी आदि ।  
 तुन, वृक्ष, तिनका ।  
 तुषित, प्यासा ।  
 ते, १ वे २ तेरा ३ तुम को ।  
 तेज, तेजस, प्रताप, चाँच ।  
 तेति, ते, अति, वे, बज्रत ।  
 तोषी, तोषा, डाँपा; तोषना, डाँपना ।  
 तोमर, १ ब्रह्म विशेष २ एक प्रकार का  
 हृद ।  
 तोरावति, त्वरावती, वेगवती ।  
 तोष, संतोष, हप्ति ।  
 तोषये, प्रसन्नता के लिये ।  
 त्वच, १ बोकला, त्वचा २ स्पर्शकी इंद्रि ।  
 त्वदीय, तुम्हारा, तेरा ।  
 त्वदभि, तुम्हारा चरच ।

यकित, यकाङ्क्षुषा ।  
 यल, स्याल, भूमि, स्थान ।  
 यलचर, स्यालचर, यलचारी मनुष्य आदि ।  
 याना, स्थान, ठिकाना ।  
 धिति, स्थिति १ ठहराव २ पावन ।  
 योरा, स्थिर, अचल, स्थिर ।  
 दाता, देनेवाला ।  
 दक्ष, दक्ष १ प्रजापति २ चतुर, निपुण ।  
 दक्षसुत, प्रचेता ।  
 दक्षसुता, सती ।  
 दत्त, दिया गया ।  
 दधि, दही ।  
 दधीचि, दधीच, एक ऋषि का नाम ।  
 दनुज, दैत्य, दानव ।  
 दम, दंष्ट्रियों का रोकना ।  
 दमक, चमक, दमकना ।  
 दमनीय, १ तोड़नेवाला २ दमन के योग्य ।  
 दमनू, नाश, नाश करनेवाला ।  
 दम्पति, स्त्री पुरुष, जोड़ा ।  
 दर, १ शंख २ भय, डर ३ छेद ।  
 दरबार, सभा ।  
 दरस, १ रूप २ दर्शन, दर्शन ।  
 दरशी, दर्शी, देखनेवाला ।  
 दर्पा, दर्प, अभिमान ।  
 दर्म, कुत्र, कुसा, एक प्रकार की घास ।  
 दस, १ नाश २ पत्ता ३ सेना ४ भाग ।  
 दक्षिक, दक्षिण, फटना, फूट उठना ।  
 दक्षमक्षे, पोसडाक्षे, दक्षमक्षना ।  
 दसन, नाश ।  
 दलित, टूटा ।  
 दव, वन की छाज ।  
 दवारि, द्वागद्वार, वन की छाज ।

दसन, दशन, दांत ।  
 दहन, धाग, चप्पि, जलानेवाला, जलाना ।  
 दा, देनेवाला ।  
 दाडिम, चमार ।  
 दाता, देनेवाला ।  
 दातार, दाढ़, देनेवाला ।  
 दादर, ददर, मेढक, मेढुका ।  
 दाप, दर्प १ बल २ गर्व, अभिमान ।  
 दाम, १ माया २ रस्सी ३ हपसा ।  
 दामिनि, दामिनी, बिजुली ।  
 दायक, देनेवाला ।  
 दारन, दारण, फाड़ना ।  
 दारय, नाश करो, फाड़ो ।  
 दारा, स्त्री ।  
 दारिद्र, दरिद्रता, दरिद्र ।  
 दारिका, कड़की, कच्चा ।  
 दाह, लकड़ी, काठ ।  
 दाहन, दाहण, धीर ।  
 दाहनारि, कठपुतली ।  
 दाहन, नाश ।  
 दाह, धरना, जलाना ।  
 दिग्धात्रे, दीपक, चिराग ।  
 दिग्गवर, मेला, बस होना ।  
 दितिसुत, चिरायाच ।  
 दिनकर, सूर्य ।  
 दिनदानी, अति बरार, दिन दिन देनेवाला ।  
 दिनमनि, दिनमणि, सूर्य ।  
 दिनेश, दिनेश, सूर्य ।  
 दिशिप, इंद्र कुबेर आदि ।  
 दिवय, दिन ।  
 दिव्यतन, दिव्यतनु, अक्षरा ।  
 दिव्यदृष्टि, अद्वैतिक ज्ञान ।

दिशि, दिशा, ओर ।  
 दिशिराज, इंद्र कुबेर आदि ।  
 दीक्षा, दीक्षा, मंत्रोपदेश ।  
 दीनता, गरीबी ।  
 दोसा, देखा, दोसना ।  
 दुकूल, वस्त्र, पट, रेखमी कपड़ा ।  
 दुर्ग, १ मठ, किष्का २ अगम ।  
 दुर्गम, अजय ।  
 दुर्घट, अगम, कठिन ।  
 दुनी, दुनिया, संसार ।  
 दुर्वचन, दुष्टवचन, गाली ।  
 दुर्बाह, दुर्बाह, दुष्टवचन, गाली ।  
 दुर्बासा, दुर्बासम, एक ऋषि का नाम ।  
 दुरंत, अन्तविना ।  
 दुरतिक्रम, दुस्तर ।  
 दुराधर्ष जो शत्रु से नहीं दबता ।  
 दुराराध, दुःख से सेवने के योग्य ।  
 दुराव, छिपाना, कपट ।  
 दुरासा, नीच आशा ।  
 दुरित, १ पाप, २ छिपा ।  
 दुसह, दुस्सह, जो सहने के योग्य नहीं ।  
 दुष्टजंतु, सर्प आदि ।  
 दुहाई, १ द्रोह २ सौम्य, कथम ।  
 दुहि, कामना ।  
 दुंदुभि, १ नगरा, २ एक दैत्य का नाम ।  
 दूत, हलकारा ।  
 दूगा, दुग्गा, दिगुह ।  
 दूधमुख, बच्चा, लड़का ।  
 दूषण, १ एक राक्षस का नाम २ दोष ।  
 दूग, घाँस ।  
 दूगचल, पलक ।  
 देव, १ देवी २ देवता ३ मेघ ४ राजा ।  
 देवक, देव का ।  
 देवतक, कण्टक ।

देवधुनि, गंगा ।  
 देवरिषि, नारद ।  
 देवसर, मानस आदि ।  
 देस, देश, स्थान, मुक्त ।  
 दैर्घ्य, दैवको, भाग्य को ।  
 दैत, भेद मै, तू ।  
 दोष, काम कोध आदि ।  
 दंड, १ लकड़ी २ राजदंड, सजा ३ घड़ी ।  
 दंडक, १ राजा २ एक राजा, नाम विशेष ।  
 दंभ, पाखंड ।  
 दंभ, बलमाही ।  
 द्रवी, कृपा करो वा द्रवमा, टेघरना ।  
 द्रुम, पेड़, वृक्ष ।  
 द्रव्य, वस्तु ।  
 दंड, दो, रागदोषादि ।  
 द्वादश, बारह, १२ ।  
 द्वित्रराज, द्वित्रराज, चं ।  
 धन, १ द्रव्य २ धन्य ।  
 धनद, कुबेर ।  
 धनिक, धनी ।  
 धनी, स्वामी, धनवान्, । तमंद ।  
 धनु, धनुष ।  
 धनेसा, धनेश, कुबेर ।  
 धन्या, नदी विशेष ।  
 धन्वी, धनुषधारी ।  
 धर्मध्वज, पाषंडी ।  
 धर, १ धड़ २ भूमि ।  
 धरनी, पृथ्वी ।  
 धरपि, दया कर; धरवना, दवाना ।  
 धरा, पृथ्वी ।  
 धरासुर, विप्र, ब्राह्मण ।  
 धवलु, खेत, सफेद ।  
 धाता, ब्रह्मा ।  
 धाम, १ घर २ तेज ३ वैकुण्ठ ।

धारि, सेना, फौज ।  
 धारी, १ सेना, २ धरनेवाला ।  
 धावन, दूत हरकारा ।  
 धिग, धिक, धिलार ।  
 धुआँ, १ मुरदा २ मरण ३ धूस ।  
 धुनि, १ धुन कर के, कंपा कर के २ शब्द-  
 आवाज ३ व्यंग; धुमना, कंपाना ।  
 धुर, १ बोझा २ मुख्य ।  
 धुरीन, बोझाधरनेवाला ।  
 धूति, ठग कर के, धूर्तता कर के; धूमना,  
 कड़ना ।  
 धूमकेतु, धूमकेतु, अग्नि, आग ।  
 धीरता, धीरज ।  
 धौ, गैया, गौ ।  
 धौमति, गोमती नदी ।  
 धोरो, मुख्य बैल ।  
 धिक, धंधा, काम ।  
 धौ, कि, चाकि ।  
 ध्रु, १ ध्रुव, एक भक्त का नाम २ निन्द्य,  
 ३ एक तारा का नाम ।  
 ध्रु, १ नदी २ नवोन ।  
 ध्रु, १ झुके, २ नवोन, नया ।  
 ध्रु, नेउर, नेवला ।  
 ध्रु, भाक, एक प्रकार का जलजंतु ।  
 ध्रु, नाचता है ।  
 ध्रु, नहीं तो ।  
 ध्रु, नवना, प्रणाम ।  
 ध्रु, सद्गार्ह, एक प्रकारका वाजा ।  
 ध्रु, पची ।  
 ध्रु, नभगेष्ट, नरुड़ ।  
 ध्रु, पची आदि ।  
 ध्रु, नमति, नमस्कार करता है ।  
 ध्रु, हमलोग प्रणाम करते हैं ।

नमित, नवाया, नीचे किया ।  
 नस, झुका ।  
 नय, नीति, धर्म ।  
 नयन, आँख ।  
 नयनपट, पलक ।  
 नरहरि, १ नरहरिदास, तुलसीदास के  
 गुरु का नाम २ नरहरि ।  
 नर्तक, नट, नचनिधा ।  
 नरतको, नटिन ।  
 नलिन, कमल ।  
 नर्मद, सुखद ।  
 नलिनो, कुमुदिनो, कमलिनो ।  
 नव, नया, नूतन ।  
 नवजल, बरषा का पानी ।  
 नवधा, नव प्रकार का ।  
 नवनीता, नवनीत, मखान ।  
 नवभक्ति, नौ प्रकार की भक्ति (टिप्पणी में  
 देखो) ।  
 नवरस, शृंगारदि नवरस ।  
 नवल, १ नया २ नवान ।  
 नवमत्त, नव चौर घात अर्थात्, बोलचाल  
 सिंगार ।  
 नय, नाड़ी ।  
 नवाय, बिगड़े, नाश हो, नवाजा, बिग-  
 डना ।  
 नवावा, नाश किया, नवावना, नाशकर-  
 ना ।  
 नखर, नखर, विनाशो, नाश होनेवाला ।  
 नखत, नखच ।  
 नखरुआ, जाँघ में सूतका रोग को नि-  
 कलता है ।  
 नखरु, १ घाम का टुकड़ा, २ खाज, बाज ।  
 नाद, नवाकरके, झुके ।  
 नार्द, बटुआ, की तरह ।

नाक, १ स्वर्ग २ नासिका ।  
 नाकनटो, अश्वरा ।  
 नाग, १ हाथी २ साँप ।  
 नागर, चतुर ।  
 नागरिपु, सिंह ।  
 नाटो, नटकुई ।  
 नाद, शब्द आवाज ।  
 नाना, अनेक ।  
 नानाकार, वस्तुदंत, चुरम, अर्धचंद्रादि  
 भेदवाले अनेक आकार के ।  
 नामो, नामवाला ।  
 नामानी, नाम का समूह ।  
 नायक, खामी, सदाई ।  
 नयो, झुकाया ।  
 नारकी, नारकीय, नरकवासी ।  
 नाराच, बाण, तोर ।  
 नास, डांडो ।  
 नावरि, नाव घुमाना ।  
 नाह, नाथ, पति, माफिक ।  
 निकर, समूह ।  
 निकई, भलाई, शोभा ।  
 निकाम, १ अति, बड़त २ कामना रहित ।  
 निकाय, समूह ।  
 निकेत, घर ।  
 निकेतन, घर ।  
 निकंद, नाश ।  
 निकंदन, १ नाश, २ नाशकरनेवाला ।  
 निगम, वेद ।  
 निगूडा, अतिगुप्त, बड़त छिपा ।  
 नियह, १ रोष २ दंड ।  
 निघटत, अति कमतो होता ।  
 निज, १ अपना २ उत्कृष्ट ।  
 निजगति, अपनी गति ।  
 निजतच, स्वतंच ।  
 निजधर्म, मन्त्रधर्म ।

निजानंद, स्वरूपानंद ।  
 निजसुख, आत्मसुख ।  
 निजसंधि, १ अपना द्विद २ अवसर ।  
 नित, १ सदा २ निरन्तर, वास्ते ।  
 नित्य, १ सदा २ अथकर्म जैसे संध्या  
 आदि ।  
 निदान, १ अंत २ कारण ।  
 निंदरि, निरादर कर ।  
 निधन, मृत्यु, मौत, मरण ।  
 निधान, १ धन २ आधार ३ खजाना ।  
 निधि, १ बड़त धन, खजाना २ आधार,  
 ३ संस्था विशेष ।  
 निपट, अति, बड़त ।  
 निपाता, नाश किया ।  
 निपुनई, निपुणता, चतुराई ।  
 निःपाया, पाप रहित ।  
 निबिड़, सघन, घना ।  
 निबेरो, १ चुकाई २ अवान स्त्री ।  
 निबेहो, १ निबह, निबाह २ निरंतर ।  
 निबुकि, छोड़ा कर के निबुकना, कुड़ा-  
 ना ।  
 निवृत्ति, निवृत्ति, संसार में टटना ।  
 निभ, तुल्य, समूह ।  
 निमि, एक राजा का नाम ।  
 निमेष, १ पलक मूंदना २ काल विशेष ।  
 नियराई, निकट पड़ने; नियराना, नि-  
 कट आना ।  
 नियोगा, नियोग, आज्ञा ।  
 निरत, अतिप्रोति युक्त, लगा, तत्पर ।  
 निरवहई, निबह, निबहना ।  
 निरवहा, निबहा, बचगया ।  
 निरबाह, निबाह किया ।  
 निरखि, देख करके, निरोखल ।  
 निरख, रखविना, सुखा, खादविना ।  
 निरख, निरख, आज्ञा करने ।

निर्गम, निकसना ।  
 निर्गता, निकली ।  
 निर्जल, निखुल ।  
 निर्झर, झरना ।  
 निर्लेप, धेलाय, लगाव नहीं ।  
 निर्लिकल्प, भेदरहित ।  
 निर्बन्ध, बंधन गथा ।  
 निर्बान, निर्वाण, मोक्ष, मुक्ति ।  
 निर्भर, पूर्ण, पूरन, अतिशय ।  
 निर्मथ्य, निर्माण किया, बनाया, रचा ।  
 निर्मूल, मूलरहित, नाश ।  
 निर्गमिष, भांस बिना ।  
 निर्गम, निरीक्ष, बिना आलोक ।  
 निर्गमिष, निर्गमिष, कृपाधि रहित, वि-  
 ना प्रयोजन ।  
 निर्गमि, खोले; निर्गमि, खोलना ।  
 निर्गम, निर्गम, विस्तार से कहना ।  
 निर्गम, निर्गम, स्वतंत्र ।  
 निर्गम, जल बिना ।  
 निर्गम, अविद्या रहित, राग रहित ।  
 निर्गम, दूर करनेवाला ।  
 निर्गम, निवारण, दूर करना, छटना ।  
 निर्गम, घर ।  
 निर्गम, अर्पित, नैवेद्यकिया ।  
 निर्गम, मन्त्राद ।  
 निर्गम, तरकश ।  
 निर्गम, अकेला ।  
 निर्गम, निकली; निरुत्तर, निकलना ।  
 निर्गम, रात आये ।  
 निर्गम, मन्त्रा, निश्चान ।  
 निर्गम, निशा, रात्रि, रात ।  
 निर्गम, रात्रि ।  
 निर्गम, निश्चित, तोखा, चोखा ।  
 निर्गम, खोटी ।

निर्मोत, निराशा, केवल ।  
 निहारा, देखा, निहारना, निरीक्षण,  
 देखना ।  
 निहार, कुहिरा ।  
 निहोर, निहोरा, १ विनतो २ उपकार ।  
 नीक, अच्छा ।  
 नीच, १ गड़हा २ नीच, कमीना ।  
 नोद, खोता ।  
 नीर, पानी ।  
 नीरज, कमल ।  
 नीरधर, बादल, मेघ ।  
 नील, आभरण ।  
 नीलकंठ, नीर, मयूर ।  
 नीलोपल, नीलमणि ।  
 नीर, नीर ।  
 नीर, घोड़ा, घोड़िक ।  
 नीर, पुरोहित आदि का कर ।  
 नीति, न दति, नहीं ऐसा ।  
 नीम, शीशु मन्त्रादि निधन ।  
 नीर, स्त्री का निज घर, मातृघर ।  
 नीर, गाय के पाँव बांधने की रस्सी दूधने  
 के समय ।  
 नीमि, मैं स्तुति करता हूँ ।  
 नीमी, नवमी तिथि ।  
 नीच, नीचते हैं ।  
 नीदिनि, नंदिनी ।  
 नीदोमुख, आद्वि विशेष ।  
 नीर, १ पाँव २ लगन ।  
 नीर, १ समूह २ छपना ।  
 नीर, छपना, बरोबर ।  
 नीर, कपड़ा, वस्त्र ।  
 नीर, चतुर, सुंदर ।  
 नीर, नीर, रेशमी कपड़ा ।  
 नीर, पंगति ।  
 नीर, नीर ।



पचि, १ पची २ कामसे ।  
 पताका, धजा ।  
 पति, १ राजा, स्वामी २ भर्ता, खसम  
 ३ प्रतिष्ठा ।  
 पतिदेवता, पतिप्रता ।  
 पतिनिधि, पत्नी को ।  
 पतिलोक, हिमाचल ।  
 पतंग, १ सूर्य २ चतुर्ध्र जीव, फतिंगा ३  
 गेंद ४ लासुरंग ।  
 पतंगि, गिरते हैं ।  
 पत्र, १ चिट्ठी २ पत्ता ।  
 पथिक, राहो, मुसाफिर, बटोही ।  
 पथ्य, गुनकारी ।  
 पंथ, राह, मार्ग ।  
 पद, १ पांव २ स्वरूप ३ अधिकार ।  
 पदचर, पैदल, यादे ।  
 पदज, पांव की अंगुरी ।  
 पदचारी, यादे, पैदल ।  
 पदचान, जता ।  
 पदपीठा, खराऊ, पांव रखने की चौकी ।  
 पदाति, यादे, पैदल ।  
 पदादधि, पद से भी ।  
 पदारथ, पदार्थ, वस्तु, सब चीज ।  
 पदिक, जड़ाऊ चौकी ।  
 पदुम, पद्म, कमल ।  
 पदुमराग, कालमणि ।  
 पन, प्रण, प्रतिज्ञा, अवस्था ।  
 पनव, डोख ।  
 पनस, कटहर ।  
 पनिघट, पानी भरने का घाट ।  
 पबारे, फेंके, डारे; पबारना, फेंकना ।  
 पवि, पवि, बज्ज ।  
 पष, १ दूध २ पानी ।  
 पषद, १ धन २ बादल ।  
 पयनिधि, खोरसमूह ।

पयाना, प्रयाण, यात्रा ।  
 पयं धि, समुद्र ।  
 पयोनिधि, समुद्र ।  
 पर, १ और २ शत्रु ३ शिरोमणि ४ परे  
 ५ तत्पर ६ उपरान्त ।  
 परकिद्र, १ इट्टी किद्र २ पराये का दोष ।  
 परच, परलोक ।  
 परधाना, प्रधान, मुख्य ।  
 परना, पर्ण, पत्ता ।  
 परब, १ पर्व २ गांठ ।  
 परम, बड़ा, अति, उत्तम ।  
 परमा, बहुत शोभा ।  
 परमिति, अवधि, मर्यादा ।  
 परमान, १ ध्यार्थ २ प्रत्यक्ष आदि प्र-  
 माण ।  
 परमारथ, तत्त्ववस्तु ।  
 परस, १ कूना २ पारस पत्थर ।  
 परधि, कूकरके ।  
 परसु, फरसा ।  
 परसुधर, परसुराम ।  
 पराई, १ भागा २ दूसरे का ३ पराना,  
 भागना, पलायन ।  
 परागा, पराग, धूलि, कमल का रज ।  
 पराभव, १ गिरादर २ प्रलय ।  
 परावर, ब्रह्मादि और, मनुष्यादि ।  
 परि, अति, चारों ओर ।  
 परिकर, कमर ।  
 परिघ, ब्यौड़ा ।  
 परिचरजा, परिचर्या, सेवा ।  
 परिचारक, सेवक ।  
 परिचारिका, दासो, लौंडी ।  
 परिच्छिन्न, अध्यापक, घेरागथा ।  
 परिताप, संताप ।  
 परितापी, दुखदेनेवाला ।  
 परितोष, प्रसन्नता, संतोष ।

परिचाता, रत्नक ।  
 परिधान, पहिरावा ।  
 परिनाम, १ अवस्था २ अंत ३ फल ।  
 परिपाका, अंत का फल ।  
 परिपाटो, परंपरा की रीति ।  
 परिहरि, छोड़ करके, परिहरण ।  
 परिहास, व्यंगवचन के साथ मिला ।  
 रघु, कठोर ।  
 रे, परलोक में ।  
 रेस, परेश, परमेश्वर ।  
 रंतु, लेकिन, उपरान्त ।  
 रलोट, धीरेसे पांव दाबता, पलोटना ।  
 रस, नया पत्ता ।  
 रसित, १ नये पत्ते के साथ २ रोमांचित ।  
 रस, वायु, बतास ।  
 रसति, देखते हैं ।  
 रसामि, मैं देखता हूँ ।  
 राउज, मूढ़न ।  
 रावे, प्रसादन, धोयेपधारना, धोना ।  
 रावारा, पक्ष, पंद्रह दिन ।  
 राऊ, प्रसाद, प्रसन्नता, कृपा ।  
 रानई, मेहमानी ।  
 राहक, १ पिछाड़ा २ मल ।  
 राक, १ रसोई २ एक असुर का नाम ३ पक्ष ।  
 राकरिपु, दंड ।  
 राकी, परिपक्व ।  
 रागे, खाने, पानना ।  
 राट, रेखन ।  
 राटमहिषी, पटरानी ।  
 राटल, १ गुलाब २ वृक्ष विशेष ।  
 राटे, भरिद्धा; पाटना, भरदेना ।  
 राठ, पड़ना ।

पाठोन, पठिना मकरी ।  
 पातक, पाप ।  
 पाच, बरतन, योग्य ।  
 पाच, जल, पानी ।  
 पाघोज, कमल ।  
 पाघोद, बादल, मेघ ।  
 पाघोधि, समुद्र ।  
 पादप, वृक्ष, पेड़ ।  
 पान, १ पीना २ पत्ता ३ मद्यपान, बराब पीना ।  
 पानि, पाणि, हाथ ।  
 पारथिव, पार्थिव, शिव ।  
 पारहिं, मकते हैं, पारना, सकना ।  
 पारा, १ गिरावा, पारना २ समर्थ ३ पार ।  
 पारावत, कबूतर ।  
 पारी, डारी, फेंकी; पारना, फेंकना ।  
 पाखव, १ पक्ष, पत्ता २ झाडा, डार ।  
 पाले, च धीन ।  
 पावक, अग्नि, खान ।  
 पावन, पवित्र ।  
 पावस, वर्षा ऋतु ।  
 पाच, पक्ष, पंद्रह दिन ।  
 पाच, पात्र, फाँसी, फँसड़ी ।  
 पाहन, पाषाण, पत्थर ।  
 पांवर, पामर, नीच, मूढ़ ।  
 पांवरी, पादुका, खड़ाऊँ ।  
 पांवरे, पांव रखने का वस्त्र ।  
 पाहि, रक्षा करो ।  
 पाही, पाष ।  
 पिक, कोरक ।  
 पिता, बाप, रत्नक ।  
 पिनाक, महादेव का धनुष ।  
 पिपोल्लिका, पिपट्टी ।  
 पिरीते, प्रीत, प्रीतम, प्रीतियुत ।  
 पिरोना, लंगोटी डालना का उक्ति ।

पिप्पल, चुगल ।	पुरुष, पुरुष ।
पो, प्रिय, पति ।	पूषन, सूर्य ।
पोठ, आसन, पोटा ।	पृथक्, अलग, जुदा ।
पोन, पुष्ट, मोटा ।	पृथुराज, एक राजा का नाम ।
पोयष, अमृत ।	पृष्ठ, पीठ ।
पोवर, पुष्ट, मोटा ।	पेलिहहिं, त्याग ।
पुट, दोना ।	पेली, त्याग ।
पुटो, दोना ।	पेषन, प्रेक्षण, देखना, तमाशा ।
पुनी, पवित्र ।	पेषिय, प्रेक्ष्य, देखने के योग्य ।
पुनोत, पवित्र ।	पैमार, प्रवेश, पैठाव ।
पुर, १ नगर, पुरा, गांव २ दैत्य विशेष ।	पोच, नीच, बुरा ।
पुरट, मोना, कंचन ।	पोत, १ जहाज २ बालक ।
पुरान, १ पुराण २ पुराना ।	पोतक, बालक ।
पुराकृत, पहिले किया गया ।	पोषत, पुष्ट करता है; पोषण, पोषना ।
पुरारि, शत्रु, महादेव ।	पोसो, पाला; पोसना, पालना ।
पुरुष, १ मनुष्य २ पुरखा ।	पंकरुह, कमल ।
पुरोडाम, यज्ञ का हव्य ।	पंगु, लंगड़ा ।
पुरोधो, पुरोहित ।	पंचकवलि, पंचग्राम ।
पुरंदर, इन्द्र ।	पंचदम, पंदरह ।
पुलक, रोमांच ।	पंचसवद, पांच वाजा, नगारा आदि ।
पुलस्त, एक ऋषि का नाम ।	पंजर, पिंजरा ।
पुडमि, पृथ्वी ।	पंथ, रस्ता ।
पुंगव, श्रेष्ठ ।	प्रकार, रीति ।
पुंज, समूह ।	प्रकासक, प्रकाशक, प्रकाशकरनेवाला ।
पुग, १ सोपारी २ समूह ।	प्रकाश्य, प्रकाश, प्रकाश के योग्य ।
पूजनीय, सेवा के योग्य ।	प्रकृति, १ माया २ स्वभाव ३ संसार ।
पूजिहि, पूर्ण होगा, पूजना, पूर्ण होना ।	प्रकृष्ट, श्रेष्ठ ।
पूजो, पूरी हुई ।	प्रगल्भ, शास्त्र से विजयी ।
पूज्य, पूजने के योग्य ।	प्रचार, विस्तार, फैलाव ।
पुतरो, १ कठपुतरी २ आंख की पुतली ।	प्रचारी, सत्कार के ।
पुप, मालपुष्पा ।	प्रजारी, जलायी ।
पूय, पोष ।	प्रजारना, जलाना ।
पूर, १ सम्पूर्ण २ उत्तर ३ काम का सहना ।	प्रजासन, प्रजाशन, प्रजा का योग्य ।

जस, प्रज्ञेय, दत्तप्रज्ञापति ।  
जंत, पर्यंत, तक, लो ।  
ति, १ पास २ मन्मुख ३ विरुद्ध ।  
तिउपकार, प्रत्युपकार, उपकार का  
वदला ।  
तिकृला, विमुख ।  
तिक्वांहीं, प्रतिकाया, परिक्राहीं ।  
तिपकी, प्रतिपत्नी, शत्रु ।  
तिपाद्य, वर्णन के योग्य ।  
तिभट, ममान वोर ।  
तिमा, मूर्त्ति ।  
तिमूरति, प्रतिबिंब, परिक्राहीं ।  
तिबिंब, परिक्राहीं ।  
त्यह, विघ्न ।  
यस, पहिले, मुख्य ।  
यमगति, दान ।  
द, देनेवाला ।  
इस, प्रदेश १ खंडभूमि २ परदेश ।  
होय, मध्याह्न, रात्रि का आना ।  
धान, १ मुख्य २ मंचो ।  
गत, अतिनस, शरणागत ।  
नय, प्रणय, प्रेम ।  
नवों, प्रनाम करता हूँ । प्रनवना ।  
पंच, १ संसार २ कपट, छल ।  
इंध, रचना २ बदोबस्त ।  
वीन, प्रवीण, चतुर ।  
बोध, उपदेश, ज्ञान ।  
बोधक, जनानेवाला ।  
भा, प्रकाश ।  
भाऊ, प्रभाव, प्रताप ।  
भु, १ स्वामी २ राजा ३ समर्थ ।  
भंजन, पवन, हवा ।  
मदा, स्त्री, मेहराह ।

प्रयांति, प्राप्त होते हैं ।  
प्रखंब, विद्यालय, बड़ा ।  
प्रक्षाय, अर्थरहित बचन ।  
प्रमख, १ रचित २ निर्मल ।  
प्रमव, उत्पत्ति ।  
प्रमाद, १ प्रमत्तता, लूपा २ झूठन ।  
प्रमोद, प्रमख हो ।  
प्रभुती, उत्पत्ति ।  
प्रसून, फूल ।  
प्रसंग, सम्बन्ध, कथा का चर्चा ।  
प्रमंसक, प्रशंसक, स्तुति करनेवाला ।  
प्रमंभा, प्रशंभा, स्तुति, शराहना ।  
प्रस्थिति, कीर्ति ।  
प्रहार, मार, मारना ।  
प्राकृत, १ अयोग्य २ माया का बिकार ३  
माधारण मनुष्य ।  
प्राकृतकवि, सुरदाम आदि ।  
प्राचो, पूर्वदिशा, पूर्व ।  
प्रात, सवेरा, तड़का ।  
प्रातकृत, स्नान मध्या आदि ।  
प्रातकिचा, स्नान मध्या आदि ।  
प्राणनाथ, प्राणनाथ, पति ।  
प्राविट, वर्षाच्छतु ।  
प्रियतम, अत्यंत प्रिय ।  
प्रोता, मित्र ।  
प्रेत, शव, मुरदा ।  
प्रेतनिवास, ममान ।  
प्रेरक, आज्ञा करनेवाला, प्रेरणा करने  
वाला ।  
प्रेरित, आज्ञा किया गया ।  
प्रेरे, पठाया, भेजा, प्रेरणा, भेजना ।  
प्रोक्त, कहा गया, कहा ।  
प्रौढ, १ बड़ा २ मोटा ।

फटिक, स्फटिक, बिल्वार ।

फनि, फली, सर्प ।

फनिक, फणिक, साँप ।

फल, १ अर्थ धर्म काम मोक्ष २ सेवा ।

फलित, फलसमेत ।

फहराई, कूदते हैं, फहराते हैं ।

फाबी, १ मजबूत २ फबी, फबना, मजना ।

फुर, सत्य, साँच ।

फुलवाई, फुलवारो, फूल का बाग ।

वक, वक, वगुला ।

वकता, वक्ता, कहनेवाला ।

वकुल, मौलसिरी, मुरसली ।

वक, वक, टेढ़ा ।

वगमेल, बागमिला के वा हल्ला करके ।

वगरे, फैले, बगरना, फैलना ।

वच, वचन, बात ।

वचाँसि, बातें, वचन ।

वच्छ, १ वस, बहक २ पुच ।

वच्छल, वसल, दयायुत ।

वच्छ, इंद्र का प्रसन्न ।

वट, वट का पेड़ ।

वट, ब्रह्मचारी ।

वटोही, पथिक, राही ।

वडवानल, समुद्र की आग ।

वत, बात, वार्ता ।

वतकही, बात ।

वतारि बुताही, बुझाई ।

वताना, बुताना, बुझाना ।

वताया, वताय, हवा ।

वतिया, छोटा फल ।

वद, कहो ।

वदति, कहता है ।

वदन, मुख ।

वदर, बैर का फल ।

वदरी, बैर का पेड़ ।

वदि, कह करके; वदना, कहना ।

वधिक, व्याधा, बहेलिया ।

वधिर, बहिरा ।

वधू, स्त्री, बहू ।

वधूटी, स्त्री ।

वन, १ जंगल २ पानी ।

वनचर, १ बानर २ जंगली ।

वनज, कमल ।

वनमाला, फूल और पत्ते का माला ।

वनिक, वणिक, बनिया ।

वनी, मजूरी का धन ।

वप, वप, शरीर, देह ।

वपुष, शरीर, देह ।

वमत, कांटता है, रद्द करता है ।

वमन, कांडना, कांट करना, रद्द ।

वयस, १ वयस, अवस्था, उमिर २ वैश्य,

बनिया ।

वयारी, पवन, हवा ।

वर, १ श्रेष्ठ २ पति ३ वरदान ४ वरना,

जलना ५ जोर, बल ६ बटवृत्त ।

वरन, १ वर्ण, अक्षर २ जाति ३ वर्णन ।

वरनी, कहो ।

वरवरनी, श्रेष्ठरंगवाली, गोरी ।

वरवस, जोरावरी ।

वरहि, वर्द्धि, मोर ।

वराई, दूर जाँकना ।

वराण, बचा करके ।

वराह, वराह, सृष्टर ।

वरि, बटकरके, बरना, बटना बज्ररि ।

वरिभार, बली, जोरावर ।

वरिभां, १ वेला, समय २ बाग ।

वरिवंड, बलवत्, तेजस्वी, बली ।

वरी, व्याही; बरना, व्याहकरना ।

वरीया, वर्ष, बरिस ।

।रु, बलुक, बरुक, बल्कि ।  
 ।रुन, वरुण ।  
 ।रुय, समूह, झुंड ।  
 ।रोह, स्त्री, सुंदरजांघवाली ।  
 ।रेषी, वरेक्षणा वरदेखौनी, दुलहा ठ-  
 हुराना ।  
 ।र्ग, वर्ग, जाति, समूह ।  
 ।र्वर, १ अधम, नीच २ वकवादी ।  
 ।र्म, बखतर ।  
 ।र्य, वर्य, श्रेष्ठ ।  
 ।र्षामन, वर्षाशन, वरिषदिन का भोजन ।  
 ।ल, जोर, सेना, ।  
 ।लकल, वल्लल, बोकला ।  
 ।लकावा, ऐंठ की बातें ।  
 ।लाक, बगुला ।  
 ।लाहक, बादर, मेघ ।  
 ।लि, १ बखरा, हिस्सा २ पूजा ३ व-  
 लिदान ४ राजादली ५ नंदावर ।  
 ।लित, वेष्टित, घेरा गया ।  
 ।लीमुख, बानर ।  
 ।ली, बवर, सता ।  
 ।लाना, १ स्तुति २ कहा ।  
 ।लत, बसै, रहै ।  
 ।लन, कपड़ा ।  
 ।लवर्ती, वलवर्ती, अधीन ।  
 ।लसि, तं बसता है ।  
 ।लह, बैल ।  
 ।लीठी, दूत, हरकारा ।  
 ।लुधा, इच्छी ।  
 ।ल्य, वल्ल, अधीन ।  
 ।ह, बलना, बहना ।  
 ।ह्रावा, महट्टिआवा, मुन करके अन-

बहरिं, उठाने हैं ।  
 ।हना, उठाना, लेजाना ।  
 ।हकालीना, वल्लकालीन, वल्लतकाल-  
 का ।  
 ।हलधा, वल्लत प्रकार से ।  
 ।हलवाङ्ग, रावण ।  
 ।हलरहि, फिरै ।  
 ।हलरि, फिर ।  
 ।हलरे, फिरै ।  
 ।हलरना, फिरना ।  
 ।हल, १ बधू, स्त्री २ वल्लत, वल्ल ।  
 ।हलोरो, १ बनाव २ फिर ।  
 ।या, वा, अघवा, या ।  
 ।वाङ्ग, वायु, पवन ।  
 ।वाग, वाच, वाणी ।  
 ।वागीसा, वागीशा, वल्लवाणी ।  
 ।वागुर, फंदा, जाल ।  
 ।वाचास, वाचास १ पंडित २ वकवादी ।  
 ।वाजा, लड़ा, लड़ाई, वाजना, लड़ना ।  
 ।वाजिमेध, अश्वमेध यज्ञ ।  
 ।वाजि, वाजी, घोड़ा ।  
 ।वाट, पथ, राह, रस्ता ।  
 ।वाटपरै, रोजगार जाय ।  
 ।वाटिका, वाटिका, फुलवारी, बाग ।  
 ।वात, वात, पवन, हवा, बाई ।  
 ।वाति, बनी, वर्तिका ।  
 ।वातुल, वातुल, बौल्लका, बाईचढ़ी ।  
 ।वादले, बादल, मेघ ।  
 ।वादि, १ लुथा, १ वासा, प्रयोजन ।  
 ।वादिनि, वादिनी, बोलनेवाली ।  
 ।वादी, वादी, कहनेवाला ।  
 ।वाधक, दुःखद, विघ्न, रोकनेवाला ।  
 ।वाध, विघ्न, रोक, टःका ।

वान, १ वाणासुर, २ वाण, तीर व रंग  
४ स्वभाव ५ वाना ।

वानैत, वीर, वानाफेकनेवाला, बिरदैत ।  
वापिका, वावली ।

वापुरो, १ चक्षुरोगवाला २ तुच्छ, व-  
पुरा ।

वाम, १ वाम, स्त्री २ बायाँ ।

वाय, पसार करके; वाना, पसारना ।

वायन, बैना, नेवता ।

वायस, वायस, कौवा ।

बायें, वाम, बायाँ ।

बार, १ बारंबार २ दिन ३ समूह ४ देर  
५ केश ६ काष्ठ ।

बारन, बारण, हाथी ।

बारय, दूर करो; बारना, दूर करना ।

बारहबाट, तहस नहस, मोह्रादि बारह  
रस्ता ।

बारहि, लड़कपन ।

बारि, वारि, जल ।

बारिचरकेतु, कामदेव ।

बारिज, वारिज, कमल ।

वारिद, वारिद, मेघ, बादल ।

वारिधर, बादल, मेघ ।

वारिधि, समुद्र ।

वारिस, वारोश, समुद्र ।

वारिदनाद, मेघनाद ।

बारो, १ जल, पानी २ फुलवारी ३ छोटी  
४ निहावर, वारना ।

बाहनी, वाहणी, मदिरा, शराब ।

बारे, १ छोड़ करके, २ बालक ।

बास, १ बालक २ मुख ३ केश ।

बासा, वासा, स्त्री ।

बासन, १ बरतन २ सुगंध ३ निवास ।

बासर, वासर, दिन ।

बासव, वासव, इंद्र ।

बाहन, वाहन, अश्ववाही ।

बाहिज, वाहज, वाहरि, वाहर से ।

बाहिनी, वाहिनी, सेना ।

बिकट, १ विकट, भयंकर, टेढ़ा ।

बिकरारा, विकराल, अयंकर ।

बिकसे, फूले; बिकसन, फूलना ।

बिकार, विकार १ अशुभा, ऐंगुन २ ज-  
न्मादि ३ काय, कार ।

विक्रम, विक्रम, पराक्रम, जोर, बल ।

विगत, विगत, रहित, हीन ।

विगोचे, नाश किये, बिगोना, नाश क-  
रना ।

विग्रह, विग्रह १ विरोध, झगड़ा २ श-  
रीर, देह ३ हठ ।

विख्यात, विख्यात, विदित, प्रसिद्ध ।

विघटन, विघटन, तोड़ना ।

विचरहिं, फिरते हैं, विचर, १, फिरना ।

विचक्षण, विचक्षण, चतुर ।

विचित्र, विचित्र, अनेक रंग का, आ-  
श्चर्य रूप ।

विजयी, विजयी, विशेष प्रवाला, वि-  
जयकरनेवाला ।

विज्ञान, विज्ञान, अनुभव ।

विज्ञानविद्वाना, विज्ञानविद्वान, ज्ञान  
रूप भोर ज्ञान की हानि ।

विटप, विटप, वृक्ष, पेड़ ।

विडरो, १ विशेषभय, कितराकरके,  
विडरना, कितराना ।

विडारी, भगायो, विडारना, भगाना ।

विडंब, विडंब, वचन ठगो, क्लृप्त ।

बिदूद, कमाकरके, बिद्वना, कमाना ।

बिप्त, वित्त, धन, सकटूर ।

बितान, १ वितान, विस्तार, फैलाव २  
चंदया ३ मंडप ।

विद्यकहिं, चकित होते हैं, विद्यकना,  
चकित होना ।

विद्यकि, लीनृत्ति ।

विद्युरे, फैले, विद्युरना, फैलना ।

विद, विद, ज्ञाता, जाननेवाला ।

विदक, विदक, नामधुत, पानेवाला ।

विदरेउ, विदोर्ष, फटगया, बिदरना,  
फटना ।

विदारे, विदोर्ष, फड़े, बिदारना, फा-  
ड़ना ।

विदारहिं, फाड़ते हैं, बिदारना, फा-  
ड़ना ।

विदित, १ विदित, प्रसिद्ध, ज्ञातया गथा

विदिमि, विदिमि, विदिमा, दिमा का  
कोना ।

विदुषन्ह, पंडितछोग, विदुष शब्द का  
बहुवचन ।

विदूषक, १ विदूषक, भांड २ निंदक ।

विदूषहिं, निंदाकरते हैं, विदूषना, निं-  
दाकरना ।

विदेह, १ विदेह, राजाजनक २ देहविना ।

विद्यमान, विद्यमान, वर्तमान, है, होता ।

विद्या, शिक्षा, इल्लिम ।

विद्रुम, विद्रुम, मूंगा ।

विधवा, विधवा, रुड़ा, जिस स्त्री का  
पति मरगया ।

विधाता, विधाता, ब्रह्मा ।

विधात्री, विधात्री, ब्रह्माणी ।

विधि, १ विधि, ब्रह्मा २ कर्म भाग्य ३  
विधान, रीति ।

विधिअंड, ब्रह्मांड ।

विधिवत, विधिवत्, यथायोग्य, विहित

विधुतद, राज ।

विनता, विनोता, गहड़ जी की माता  
का नाम ।

विनय, विनय १ विनयी २ विशेष नीति ।

विनयो, १ विनयो, अतिनीतिवाला,  
२ विनय करने वाला ।

विनवा, विनय किया, विनवाना, विनय  
करना ।

विनीत, विनीत १ विशेषनीति २ नम्र,  
मुग्धहृद ।

विनीद, विनीद, कीड़ा, खेस ।

विपरीत, विपरीत, उल्टा, प्रतिकूल

विपिन, विपिन, वन, जंगल ।

विपुल, विपुल, बहुत, विस्तार ।

विप्रचरन, भ्रमणता, भ्रम जी ने जो भग-  
वान की कातो में लातमारा था उसका  
चिन्ह ।

विषर, विषर, बिख, छंद ।

विषरन, विषर १ धरंग, बुरा रंग, २ जु-  
दा, अलग ।

विषर्ह, बहुत बढ़ता ।

विषम, विषम १ विकल, व्याकुल २ वि-  
शेष वश ।

विवाकी, नाश ।

विविक्त, विविक्त, १ एकांत २ त्याग ।

विवुध, १ विवुध, देवता २ पंडित ।

विवुधजन, विवुधजन, नंदनवाटिका,  
स्वर्ग का बगीचा ।

विवुधबैद, विवुधवैद्य, अश्विनीकुमार,  
देवता के वैद्य ।

विवेक, १ विवेक, ज्ञान २ मध्य अमध्य  
का विचार ।

विभव, विभव, १ ऐश्वर्य, २ पावन ।



बिभाग, विभाग, १ जुड़ाई, १ बाँट, बखरा २ भाग्यहीन ४ खंड, टुकड़ा ।	बिराग, १ विराग, वैराग्य, त्याग ।
बिभाती, विभाति, प्रकाशित होता है, सोहता है ।	बिराजति, बिराजती है, सोहती है ।
बिभिचारी, व्यभिचारी, परतियगामी, पराई स्त्री के पास जानेवाला ।	बिराट, विराट, विश्वरूप ।
बिभु, १ विभु, व्यापक २ समर्थ ।	बिरज, बिरज, नरोगी, रोगहीन ।
बिभुश्च, विभुश्च का बहुवचन, विश्व तैजस प्राप्त ब्रह्मा ।	बिरदैंत, बानावाने बीर ।
बिभ्रतो, १ विभ्रति, राख २ संपदा ३ भक्ति ।	बिरह, बिरह, विरोधयुत, वैरयुत ।
बिभेद, विभेद, फूट, शत्रुमित्रभाव ।	बिरचि, बिरचि, ब्रह्मा ।
बिभंजन, नाश करनेवाला ।	बिलग, १ न्यारा, अलग २ बुरा ।
बिभंजनि, विभंजनि, तोड़नेवाली ।	बिलपाता, पिलापकरती ।
बिमल, विमल, निर्मल, फरचा ।	बिलष, उदाम ।
बिमाच, विमाच, मैभा मतारी से जो बेटा ।	बिलषाद, बिषाद करके, बिलखाना, विषाद करना ।
बिमुख, विमुख, विरोधी ।	बिलास, १ विलास, क्रीडा, खेल २ चमत्कार ३ सुख ४ कार्य, काम ५ ऊँचे नीचे करना ।
बिद्योगी, विद्योगी, अलग, जुदा ।	बिलाशिनी, विलाशिनी, स्त्री, विलास करनेवाली ।
बिरक्त, विरक्त, वैराग्यवान्, त्यागी विरागी ।	बिलाहीं, बिलाते हैं, नष्टजाते हैं ।
बिरचि, रचकरके, बनाकरके, बिरचना, बनाना ।	बिलोकि, बिलोक्य, देख करके, बिलो-कना, देखना ।
बिरज, विरज, निर्मल, फरचा, जो रज-वोर्त्य से उत्पन्न नहीं है ।	बिलोचन, बिलोचन, आंख ।
बिरत, विरत, वैराग्यवान्, मुमुक्षु ।	बिषम, १ विषम, शत्रुमित्रभावयुत २ भयंकर ३ पांच
बिरति, विरति, १ वैराग्य, त्याग २ अति-प्रीति ।	बिषमता, विषमता, रागद्वेष ।
बिरथ, विरथ, रथ के बिना ।	बिषय, विषय, शब्द रूप रस गंध स्पर्श ।
बिरद, १ बिरद, जस २ बीरों का बाजा ।	बिषयक, विषयक, बिषे, विषय में, बाबत ।
बिरव, बीरो, छोटा पेड़, पौधा ।	बिषयी, विषयी, बिषयकरनेवाला, संसारी ।
बिरहित, विरहित, रहित, छूटा, त्याग ।	बिषाद, विषाद, शोक, दुःख ।
	बिषाना, विषाण, बीज ।
	बिष्टा, विष्टा, मल, गूद, गलीज ।
	बिषट, बिषट १ मल २ ...

समय, विमय, अचरज ।  
 समित विमित अचरजयुत ।  
 सारद, विशारद, चतुर, प्रवोण, निपण ।  
 समाल, १ विज्ञान, बड़ा २ पीडा बिना ।  
 समित, विशिष, तीर, बान ।  
 स्रुति चिन्ता करतो है । विहरना  
 चिन्ता करना ।  
 मेष, १ विशेष, कोई २ अधिका ३  
 भेद ।  
 मोक, विशोक, शोकरहित ।  
 स्तार, विस्तार, विस्तार ।  
 म्व, विश्व, १ संसार २ सर्व, सब ।  
 स्वरूप, विश्वरूप, संसाररूप, सर्वरूप ।  
 हग, विहग, पक्षी पक्षक ।  
 हरति, फटतो है, विहरना, फटना ।  
 हरन, विहरण, कोड़ा, खेल ।  
 हर, फटना ।  
 ह्राद, विहास, छोड़ करके ।  
 ह्वान, विह्वान, १ भीर, प्रात २ वीर-  
 जाना ।  
 ह्वार, विहार, कोड़ा, खेल ।  
 ह्वोना, विह्वोन, विना, रहित, अति  
 नीच ।  
 थो, गली ।  
 र, वीर १ भाई २ वीरसञ्जुत ।  
 रभद्र, शिव के गण ।  
 झाई, समझा करके, बुझाना समझाना ।  
 ध, १ पंडित २ चंद्रपुत्र ।  
 ता, बल और ।  
 क, ऊँडार ।  
 षकेठ, महादेव का नाम ।  
 टि, वर्षा, बूँदसमूह ।  
 - - - - -

हवली, शूद्री ।  
 हदारका, देवता ।  
 बेत, १ विषय, आकाश २ ऊँडी ।  
 वेद, वेद, चारो वेद ऋक् यजु आदि ।  
 बेदिका, वेदी पद को देखो ।  
 बेदी, वेदी, कर्मकांड कर्मके लिये छोटा  
 चपूतरा ।  
 बेध, वेध, कुद ।  
 बेनी, वेणी १ त्रिवेणी २ चोटी ।  
 बेनु, वेणु, १ बांस २ मुरली ३ एक राजा  
 का नाम ।  
 बेर, बेड़ा, जहाज ।  
 बेसर, खसड़ ।  
 बेहड़, बिकट स्थान, बीहड़ ।  
 बेह, बेद ।  
 बैतरनी, यमपुर की नदी ।  
 वैदिक, वैदिक १ वेद की रीति से २ वेद  
 पाठा ।  
 वैदेही, वैदेही, सीता जी का नाम ।  
 वैजतेय, वैजतेय, गहड़ ।  
 वैना, वचन ।  
 वैभव, वैभव, १ ऐश्वर्य २ पालन ।  
 वैषाज, वाणप्रस्थ ।  
 वैस, वयस, अवस्था ।  
 वैसा, बैठा, बैथना, बैठना ।  
 बोहित, जहाज ।  
 बौड़, बवंर, झना ।  
 ब्योम, ब्योम, आकाश ।  
 बंगा, लुब्धा ।  
 बंशक, वंशक, ठग ।  
 बंजन, वंजन, ठगना ।

बंदनोय, बंदनोय, नमस्कार के योग्य ।  
 बंघ, वघ, नमस्कार के योग्य ।  
 बंधु, १ भाई २ बांधना ३ संबंधी ।  
 बंस, वंस १ बांस २ कुल ।  
 ब्रजंति, जाते हैं, प्राप्त होते हैं ।  
 ब्रन, ब्रण, घाव, फोड़ा ।  
 ब्रह्मगिरा, ब्रह्मा की बानी ।  
 ब्रह्मधाम, ब्रह्मलोक ।  
 ब्रह्मभवन, ब्रह्मलोक ।  
 ब्रह्मानंद, स्वकामपद, भगवान का सुख ।  
 ब्रात, समूह, झुंड ।  
 ब्रीडा, लज्जा, शर्म ।  
 व्यय, व्यय, विकल ।  
 व्यजन, व्यजन, पंखा ।  
 व्यया, व्यया, दुख ।  
 व्यलोक, व्यलोक, कपट ।  
 व्यसनी, बानि, शौक, व्यसनी ।  
 व्याज, १ बहाना, ढल २ सुद ।  
 व्याय, जगत् ।  
 व्याधि, रोग ।  
 व्याधू, बहेलिया, चिड़ोमार ।  
 व्याल, १ सांप २ हाथी ।  
 व्याली, सर्पधारी, मंतरवारी ।  
 व्यास, १ विस्तार २ एक मुनि का नाम  
 जिनको न वेदांतसूत्र और पुराण आदि  
 बनाया ।  
 भगवान, ईश्वर ।  
 भगिनी, बहिन ।  
 भजई, सेवै, वा, सुमिरै ।  
 भजन, भक्ति ।  
 भजामि, मैं भजता हूँ ।  
 भजामहे, हम भजते हैं ।

भज, मैं भजता हूँ ।  
 भट, घोड़ा, सिपाही ।  
 भटभरे, धक्का खाते फिरते हैं ।  
 भडिहाई, चोरी, भांडा चाट के ।  
 भदंस, १ गवारा, गंवरज २ निंदायोग्य ।  
 भद्र, कल्याण, भला ।  
 भनई, कहते हैं ।  
 भनित, भणित, कविता ।  
 भनी, कह करके ।  
 भनु, कहो, कहते हो ।  
 भन, कहे ।  
 भनंता, कहते हैं ।  
 भभरि, घबरा करके ।  
 भभरा, घबराया ।  
 भयानक, १ भयंकर २ रमविशेष ।  
 भयावहा, डरानेवाला ।  
 भरा, १ बाध्या २ पोषणा, पोषना ३ धारण ।  
 भरन, १ धारण २ पोषण ।  
 भरनी, १ एक नचच का नाम २ अर्पकूल,  
 बर्णन, गीत ३ मृम जो देश में  
 प्रसिद्ध है ।  
 भरि, पूरन ।  
 भरिता, पूरन ।  
 भव, १ संसार २ शिव ३ जन्म ४ भया,  
 ऊँचा ।  
 भवदंघ्रि, आप का चरण ।  
 भवन, घर ।  
 भवंत, आप की ।  
 भवांबुनाथ, संसारमसुद्ध ।  
 भवर, १ नदी का चकोर २ भौरा, भ्रमर ।  
 भा, प्रकाश, चमक ।  
 भाउ, १ प्रेम २ भावना ३ सत्ता ४ जन्म ।

।।जन, पात्र, वरतन ।

।।या, तरकज ।

।।न, सूर्य ।

।।ङि, वरतन । भांड ।

।।मा, स्त्री ।

।।मिनि, १ स्त्री, क्रोधयुक्ता ।

।।यप, भारपना ।

।।ये, १ भाव २ सुंदर ।

।।रती, सरस्वती ।

।।ल, माया ।

।।व, १ प्रेम २ भावना ३ सत्ता ४ जन्म ।

।।वन, मोहत, अच्छा लगना ।

।।वी, होनहार ।

।।षा, कहा । भाषना, कहना ।

।।ष, कहे । भाषना, कहना ।

।।मन्त्र, अलग, जुदा, फूट गया ।

।।दिपाय, डेलवांस ।

।।ती, १ भय, भोति २ दीवार ।

।।म, भयंकर ।

।।रा, १ बोझा २ भीड़ ३ डर ।

।।रु, डरपोकना ।

।।जंग, सांप ।

।।वन, ब्रह्मांड ।

।।वाल, भूपाल, राजा ।

।।वि, पृथ्वी, पृथ्वी में ।

।।वंग, भुजंग, सांप ।

।।वगिनि, भुजंगिनी, सांपिन ।

।।जब, भोग करेगा ।

।।त, १ जीव, प्रेत ३ भया, डरा ।

।।तल, पृथ्वी में, भूमि पर ।

।।ति, १ सत्यदा, ऐश्वर्य २ मोक्ष, मुक्ति, ३ राज्य विधिति ।

।।भूप, राजा ।

।।भूमिनाग, पृथ्वी पर के सांप ।

।।भूरि, बृहत् ।

।।भुजंतक, भोजनपत्र वृक्ष ।

।।भूषित, भूषणयुक्त, जोभित ।

।।भसुर, ब्राह्मण ।

।।भकुटि, भौह ।

।।भगुनाथ, परशुराम ।

।।भ, भये, डरा ।

।।भेंद, गोलो, भिगोया, भवना, भिगोना ।

।।भेज, भेद पद को देखो ।

।।भक, मेंहक, मेंझुका ।

।।भेट, १ भिजना, मुलाकात २ मजरा, भेंट पृजा ।

।।भेद, १ जुदाई २ फूट करना, तोड़ना ३ मर्म ।

।।भेरी, १ बड़ा मगारा २ बड़ा मूँदवाला पोतर का बाजा ।

।।भेव, १ जुदाई २ भेद, मर्म ३ फूट करना, तोड़ना ।

।।भेष, भेष ।

।।भेषज, औषध, दवाई ।

।।भोग, सुगंध, दि, भोग, विलास, सुख उठाना ।

।।भोगवति, भोगावती, सर्पनगरी ।

।।भोजनखानी, रमोंदे का घर ।

।।भोरा, दोष, मोला, सुधा ।

।।भोरी, भोली, सीधी ।

।।भोरे, भूल के भी ।

।।भौम, मंगल ग्रह ।

।।भग, १ नाश २ टेंटाई ।

।।भंजन, १ नाश, २ नाश करनेवाला ।

भृंगो, महादेव का गण ।  
 भ्रम, भूलना, धोखा ।  
 भ्राजा, शोभित, । भ्राजना, शोभना ।  
 भू, भौह ।  
 भइके, नैहर, माता का घर ।  
 भक, बहक, बल्कि ।  
 भकर, १ दखई राशि २ मच्छ ३ मगर ।  
 भकरी, भकरी ।  
 भकरंद, फूल का रस ।  
 भख, यज्ञ ।  
 भग, १ मार्ग, रस्ता, २ मगध, मगह ।  
 भगन, भग्न, १ डूबा, लवलीन, प्रसन्न, खुश ।  
 भघवा, हंद्र ।  
 भघवान, हंद्र ।  
 भज्जहिं, नहाते हैं ।  
 भज्जा, चरबी ।  
 भझारी, मध्य, भीतर, मांझ ।  
 भत, सल्लाह ।  
 भति, बुद्धि ।  
 भत्सर, ईर्ष्या, डाह ।  
 भद, १ अभिमान २ मदिरा, शराब ।  
 भदन, कामदेव ।  
 भधु, १ चेत महोना २ भकरंद, फूल का रस ३ शहद ४ जल ५ बसंत ६ एक दैत्य का नाम ।  
 भधुकर, भौरा, भ्रमर ।  
 भधुप, भ्रमर, भौरा ।  
 भधुपर्क, दसो शहद थी मिखाऊआ कांस के पात्र में ।  
 भधुर, मोठा, सुंदर ।  
 भध्यगति, उदासीन ।

मध्यम, उदासीन, बिचवैत ।  
 मनजात, मनोजात, कामदेव ।  
 मनमथ, मनमथ, कामदेव ।  
 मनमारे, उदास ।  
 मनमहिं, मन में ।  
 मनसा, इच्छा, मन ।  
 मनमिज, कामदेव ।  
 मनाक, मनाक, थोड़ासा ।  
 मनि, मणि, सर्प केशिर में को मनि शिरोमणि ।  
 मनिथारा, मणियुत ।  
 मनुज, मनुष्य, आदमी ।  
 मनुजाद, राक्षस ।  
 मनुमाई, पुरुषारथ ।  
 मनोज, कामदेव ।  
 मनोभव, कामदेव ।  
 मनोभूत, कामदेव ।  
 मनोरथ, अभिलाष, इच्छा ।  
 मनोरम, सुंदर ।  
 मम, मेरा, ममता ।  
 मय, १ कारज २ वज्रत, प्राचुर्य, प्रधान ४ रूप ५ अमुर विश्व ।  
 मयत्री, मैत्री, मित्रता ।  
 मयन, कामदेव ।  
 मयूष, किरण ।  
 मयंक, चंद्रमा ।  
 मरकत, नीलमनि ।  
 मरकट, मर्कट, बानर ।  
 मरजाद, १ मर्याद, हद २ रीति ।  
 मरम, १ भेद २ हृदय आदि अंग ।  
 मराल, हंस ।  
 मरु, निर्जल देश ।  
 मरदन, नाश करनेवाला ।  
 मरि, मल करके ।

मल, १ पाप २ मैल ।  
 मलय, चंदन ।  
 मल्लाम, प्लान, मैला, उदास ।  
 मलिन, मैला, उदास ।  
 मष्ट, चप ।  
 ममक, १ मच्छर २ बिहार ।  
 मसि, स्याही, रोगनाई ।  
 महति, महती, बड़ी ।  
 महा, बड़ा ।  
 महागद, बड़ारोग ।  
 महान, बड़ा, महत्त्व ।  
 महामर्ज, जहरमोहरा आदि ।  
 महामोह, अज्ञान ।  
 महिदेव, महोदेव, ब्राह्मण ।  
 महिपाल, महोपाल, राजा ।  
 महिषी, १ भैंस २ पटरानी ।  
 महिषम, महिषम, १ महिषासुर २ य-  
 मराज ।  
 महोधर, पहाड़ ।  
 महोसुर, ब्राह्मण ।  
 महिम, महेश, महादेव ।  
 महोत्सव, बड़ा उत्सव, महोत्सो ।  
 महोष, एक प्रकार का पत्नी ।  
 राजा, नये वर्षा के जल का फेन ।  
 राझ, मध्य, बीच ।  
 रातलि, इंद्र का सारथी ।  
 रातहि, मतवारा ।  
 राब, वहीभर, उतनाही, परिमाण ।  
 राधुरी, मिठाई, माधुर्य ।  
 रान, अहंकार, अभिमान ।  
 रानस, १ तलाव, सरोवर २ मन ।  
 रानसमल, सरजू नदी ।

रानिक, जवाहर, काल ।  
 रान्यता, पूज्यता, मान ।  
 रापा, खापा, मापना, खापना ।  
 रापी, मतवारी ।  
 राथा, १ दया २ विगुणावृत्ति ३ कपट ।  
 राथापति, रामचंद्र ।  
 राथिक, मिथ्या, मायासम्बंधी ।  
 रार, १ कामदेव २ मारना ।  
 रारगन, १ मार्गण बाण तीर २ खोजना ।  
 रागीच, एक शास्त्र का नाम ।  
 राहत, पवन, वायु ।  
 राहति, हनुमान ।  
 राल, १ ममूह २ कुलोबाध ३ माला,  
 हार ।  
 रालव, मज्ज, मालवा देश ।  
 राला, १ पंगति, पंक्ति २ हार, माला ।  
 राष, कोप ।  
 रापी, १ मच्छी २ शहद ।  
 रासा, मांस, महाना ।  
 राहुर, जहर, विष ।  
 रां, मुझ को ।  
 रमिति, १ अंत २ मर्याद ३ शोभा ४  
 नाप ।  
 रमिथिला, एक नगरी का नाम ।  
 रमिथिलमि, जनकजी की रानी का  
 नाम ।  
 रमिजित, युक्त, मिला हुआ ।  
 रमि, बहाना, मिस ।  
 मोच, मृत्यु, मोत ।  
 मोन, मकरी ।  
 मोला, मिला करके ।  
 मुकुता, मुक्ता, मोती ।

मुक्क, दर्पण ।  
 मुकुंद, मुक्तिदाता ।  
 मुखर, १ शब्द २ बकवादी ।  
 मुखागर, जुबानी ।  
 मुठभंगो, निकट से, नगोच से ।  
 मुदित, हर्षित, खुश ।  
 मुद्रिका, मुंदरी, अंगूठी ।  
 मुधा, झूठ ।  
 मुनिपट, बोकले का कपड़ा ।  
 मुनिराज, मुनिराज, वशिष्ठजी ।  
 मुनिवर, मुनिश्रेष्ठ, गुरुकाचार्य ।  
 मुनिदा, मुनींद्र, मुनियों में प्रधान ।  
 मूक, गूंगा ।  
 मूरि, मूल, जड़ी, वा, जमा, मूल ।  
 मूल, १ जड़ २ कारण ३ पंजी ।  
 मूलक, मूली ।  
 मूषक, चूहा, मूसा ।  
 मृगपति, सिंह ।  
 मृगजल, मृगहय्या ।  
 मृगमद, कस्तुरी ।  
 मृगया, शिकार ।  
 मृगराज, सिंह ।  
 मृगाधोम, सिंह ।  
 मृदु, कोमल ।  
 मृदुल, कोमल ।  
 मृनाल, कमल की जड़ ।  
 मृषा, झूठ ।  
 मरुलसुता, नर्मदा नदी ।  
 मेषउंबर, ऊँच विशेष ।  
 मेचक, धाम ।  
 मंडुकनि, मंडुका ।  
 मेदिनी, पृथ्वी ।  
 मेधा, बुद्धि ।

मेह, सुमेह पर्वत ।  
 मेली, डाली, मेलना, डालना ।  
 मेष, भैंड़ा ।  
 मेखला, करधनी ।  
 मैना, पार्वती की माला का नाम ।  
 मैनाक, एक पर्वत का नाम ।  
 मोई, मोही, मोना, मोहना ।  
 मोचन, कोरना ।  
 मोद, हर्ष, खुशी ।  
 मोदक, लड्डू ।  
 मोरपच्छ, मोर की पांख ।  
 मोरकृति, मेरी ओर से ।  
 मोह, अज्ञान ।  
 मोहमय, झूठा ।  
 मौलि, माथा ।  
 मगलद्रव्य, पुष्पादि ।  
 मंच, मंचान, तखत ।  
 मंजिर, पांव का भूषण यज्ञोपवीत आदि ।  
 मंजुल, सुंदर ।  
 मंडन, भूषण, गहना ।  
 मंडल, १ चौरस २ ताल ।  
 मंडली, समूह ।  
 मंडलिक, मंडलेश्वर, राजा ।  
 मंडित, भूषित, शोभित ।  
 मंत्र, १ रामता क आदि मंत्र २ मन्त्राह, उपदेश ।  
 मंत्रराज, रामतारक मंत्र ।  
 मंद, १ नीच २ धीरे ३ अभागी ४ मूढ़ ।  
 मंदतर, अति नीच ।  
 मंदर, मंदराचल पर्वत ।  
 मंदाकिनी, गंगाजी ।  
 यज्ञ, यह समय ।  
 यावत्, जबतक, जितना ।

सुधाकर, चन्द्रमा ।  
 सुनयना, जनक की स्त्री ।  
 सुनासीर, इंद्र ।  
 सुषाम, सुख, आराम, सुबिस्ता ।  
 सुभ, सुवृद्ध, मनुक ।  
 सुभ, १ अच्छा २ सुंदर शोभा ।  
 सुभग, १ सुंदर २ प्रिय ।  
 सुभगुन, ज्ञान वैराग्यादि अच्छे गुण ।  
 सुभाउ, १ संस्कार २ अच्छा भाव ।  
 सुभुज, सुबाहु दैत्य ।  
 सुभ्र, सफेद ।  
 सुमन, १ फूल २ सुंदर मन ।  
 सुमिरत, ध्यान करता हुआ ।  
 सुमृति, स्मृतिग्रंथ धर्मशास्त्र ।  
 सुमंत्र, मंत्र, मन्त्राह ।  
 सुरभि, १ गंध २ सुगंध ।  
 सुरमणि, चिंतामणि ।  
 सुररुख, मंदार आदि पांच वृक्ष ।  
 सुरसर, मानसरोवर ।  
 सुरसरि } गंगा नदी, मंदाकिनी ।  
 सुरसरिता }  
 सुरसेनप, कार्तिकेय ।  
 सुरवीथी, देवता की राह ।  
 सुरा, मदिरा, शराब ।  
 सुराई, शूरता, बीरता ।  
 सुररुचि, अच्छी रुचि ।  
 सुरंगा, १ पीत रंग २ लाल रंग ३ अच्छा रंग ।  
 सुलभ, सुगम ।  
 सुवन, सुनु, पुत्र ।  
 सुवास, १ सुगंध २ यज्ञ ।  
 सुवासिनी, सुहागिनी ।  
 सुवेल, १ समुद्र का किनारा २ पर्वत ३ सुंदर समय ।  
 सुहाई, सुंदर ।

सुकरखत, वार, हल्लेच ।  
 सुच }  
 सुचक } जनाता हुआ ।  
 सुचत }  
 सुत, १ सारथी २ पुराण से स्तुति करने वाला ।  
 सुवधार, पुतरी, नचनेवाला ।  
 सुनु, पुत्र ।  
 सुप, १ दाल २ हाथ ।  
 सुपकारक, रसोदया रसोद करानेवाला ।  
 सुल, शूल, १ दुख २ चिशूल ।  
 सुत, १ पुत्र, बांध २ मर्यादा ।  
 सुनप, सेनापति ।  
 सुला, बरखी, भाला ।  
 सुवो, सेवक, सेवा करनेवाला ।  
 सुव, १ शेष नाग २ थोड़ा, बाकी ।  
 सुल, पर्वत ।  
 सुलजा, पार्वती, गिरिजा ।  
 सुलराज, हिमालय ।  
 सुचनीय, सोचने के योग्य ।  
 सुधा, शुद्ध किया ।  
 सुधेउ, खोजा, तलाश किया ।  
 सुन, १ सोनभद्र नदी २ लाल ३ सोना ।  
 सुनित, लोह, रक्त ।  
 सुपान, सोड़ी ।  
 सुपि, झूठ, भी ।  
 सुपो, वह भी ।  
 सुम, चंद्रमा ।  
 सुरा, आवाज ।  
 सुवत, मोता हुआ ।  
 सुह, शोभा ।  
 सुहमस्मि, वही मैं हूँ ।  
 सुधाई, अच्छा समय ।  
 सुच, १ शुद्धता २ दंडकवन आदि ।



सौध, मंदिर ।  
 सौमित्र, सुमित्रा का बेटा, लक्ष्मण ।  
 सौरभ, आम का पेड़ ।  
 सौरज, शूराता ।  
 सं, शं, कल्याण, भला ।  
 संकट, १ मुर्दा २ विपत्ति ।  
 संकर, १ शिव २ महादेव, मिखा ऊआ ।  
 संकाश, तुल्य, बराबर ।  
 संकुल, पर्ण, भरा, बिलकुल ।  
 संग, १ संबंध २ राग ।  
 संग्रह, संगीकार, लेना ।  
 संघट, संयोग ।  
 संघर्षन, रगर ।  
 संघात, १ समूह २ संबंध ।  
 संजम, नियम ।  
 संजात, उत्पन्न, पैदा ऊआ ।  
 संजुग, युद्ध, लड़ाई ।  
 संजोग, उपाय, तदवीर ।  
 संतत, निरंतर, सर्वदा, सबदिन ।  
 संदोह, समूह ।  
 संधान, जोड़ा ।  
 संपन्न, १ युक्त २ धनी ।  
 सपुट, १ हाथ और के २ डब्बा ।  
 संभव, जन्म, उत्पत्ति ।  
 संभावित, अति आदर वा, मान किया गया ।  
 संभूत, उत्पन्न, पैदा ऊआ ।  
 संभ्रम, १ वेग, जल्दी २ भ्रम, धोखा ३ उत्साह ।  
 संमत, सहाह से ।  
 संवल, राह का खरबा ।  
 संवृक्त, घोंघा ।  
 संवर्ग, संगति ।

संसृति, संसार, दुनिया ।  
 सान्ति, शान्ति, शमन ।  
 सांसत, १ दंड २ पीड़ा ।  
 सिंगरौर, गृहवेर पुर ।  
 सिंचल, उपदीप सिंच ।  
 सिंधु, समुद्र ।  
 सिधुर, हाथी ।  
 सिंह, १ श्रेष्ठ २ व्याघ्र, बाघ ।  
 शीव, हट, शीवा ।  
 शृंग, शीघ, सिखर ।  
 सुंदरी, स्त्री ।  
 स्फुरत, चमकता ऊआ ।  
 स्मरामहे, हम ध्यान करते हैं ।  
 स्यामल, काला रंग ।  
 स्यामा, १ एक चिड़िया २ सोलह वर्ष की स्त्री ।  
 स्यंदन, रथ ।  
 स्रग, फूल का माला ।  
 स्रजत, बनाता ऊआ ।  
 सम, अस, मेहनत, थक जाना ।  
 समबिन्दु, पसीना ।  
 समित, अमित, थका ।  
 सवन, श्रवण १ कान २ सुनना ।  
 सवत, १ गिरता ऊआ २ बहता ऊआ ।  
 स्रो, १ सीता २ लक्ष्मी ३ धन ४ शोभा ।  
 श्रोपति, श्रोपति, विष्णु ।  
 स्त्रीफल, १ नारियर २ बेल ।  
 स्त्रीवत्स, श्रीवत्स, लक्ष्मी का चिह्न ।  
 स्त्रीरंग, लक्ष्मीपति ।  
 सुति, श्रुति १ वेद २ कान ३ सुनना ।  
 सुवा, होम में का एक काष्ठ ।  
 सुनी, श्रेणी, १ पत्ति, पांती २ समूह ।  
 सु, अपमा ।

लेखति, खोदती है ।

लेखा, १ रेखा २ देवता ३ लखा देखा  
४ हिमाव ।

लेख, लेख, थोड़ा सा ।

लोई, लोग ।

लोक, १ जगत् २ सैतानिक आदि ।

लोकप, लोकपाल इन्द्रादि ।

लोगाई, स्त्री, मेहराब ।

लोना, सुंदर ।

लोनाई, सुंदरता ।

लोयनि, आँख ।

लोला, लोल, चंचल ।

लोलुप, लंपट ।

लोवा, लोमड़ी ।

लोह, लोहा, शस्त्र ।

मई, एक नदी का नाम ।

मक, १ मंदिर २ समर्थ ।

मकरन, मकरुण, करना के साथ, दीनता  
के साथ ।

मकल, १ मव २ कला के साथ, विद्यायुत  
३ सावयव ।

मकाना, डरा, डरना ।

मकाली, मकुचानी, मकालना, मकु-  
चाना ।

मकिलि, बटुर करके एकट्ठा हो करके ।

मकिलना, बटुरना ।

मकुनि, शकुनि, पक्षी, चिड़िया ।

मकत, १ एक २ एक वीर ।

मकेलि, बटोर करके, मकेलना, बटो-  
रना ।

मक्ती, १ शक्ति, बल २ स्त्री ३ बरकी ।

मक, मक, इंद्र ।

मखर, खर समेत राक्षस ।

मगरे, सब, सकल ।

मगर्भ, तात्पर्ययुत ।

मगलानि, १ मल्लानि, निरादर से २  
मलानि के साथ, हर्षविना ।

मगाई, माता ।

मचान, मिकरा, पक्षी विशेष ।

मचिव, मंचो ।

मचो, इंद्राली ।

मचु, मुख, आनंद ।

मचेता, मचेत, सावधान ।

मजग, सावधान, सबरदार ।

मजनो, मखी ।

मजाई, १ दंड, मजा २ मज्ज करके भा-  
जना ।

मजिव, मजोव १ मुख में जीना २ प्राण  
सहित ।

मजोवन, तयारी ।

मट, शठ, मूर्ख ।

मडमिन्ह, मनमि ।

मत, १ साधु २ अविनाशी ३ ज्ञत, भौ ४  
अच्छा ।

मतपंच, मात पांच ।

मतरूपा, मन की स्त्री का नाम ।

मतानंद, जनक जी के पुरोहित का नाम ।

मति, सुधा, भीधा ।

मती, १ पतिव्रता २ दल की बेटी ।

मत्यलोक, ब्रह्मलोक ।

मद, श्रेष्ठ, बैठनेवाला ।

मदन, घर ।

मदय, दया सहित ।

मदाचार, श्रेष्ठ आचार, अच्छा आचरण  
है जिस का ।

मदैव, मदाही, मदा, हमेशा ।

मद्य, जलदी, उषी प्राण में ।

सन, से, साथ ।

सनकाई, सनक आदि चार ब्रह्मा के बेटे ।

सनकारे, इशारा किया, सनकारना,

इशारा करना ।

सनाथ, १ श्यामो सहित २ हतार्थ ।

सनाह, १ बखतर २ सनाथ, पतिके साथ ।

सपच्छ, सपत्न, पंख सहित ।

सपथ, शपथ, सौगंद ।

सपदि, जलदी, तुरंत ।

सरब, सपर्व, गाँठ के साथ ।

सपेला, माँप का बच्चा ।

सप्त, सात ।

सप्तावरण, प्रकृत आदि सात आवरण ।

सभीत, डर के साथ ।

सम, १ बरोबर २ वासना का त्याग व  
रागद्वेषरहित ।

समदर्शी, समदर्शी, बरोबर देखनेवाला ।

समदि, पूजा करके ।

समन, १ शमन, नाश २ यमराज ।

समय, १ काल २ अच्छे दिन ।

समरस, वीरस ।

समर्प, सौंपे, समर्पना ।

समस्त, सब ।

सम्यक, अच्छी भाँति ।

समागत, मभा ।

समाज, १ सभा २ समूह ।

समाधि, १ सुख २ स्थिरता ।

समान, १ बरोबर २ प्रवेश, समाना ।

समिध, लकड़ी ।

समास, संक्षेप, थोड़ा ।

समोती, मिताई, दोस्ती ।

समीप, निकट, निचरे ।

समीर, पवन, हवा ।

समीहा, कासादिक तीन का व्यवहार ।

समुदाई, समुदाय, समूह ।

समुहानी, समुख भई, समुहाना, समुख  
होना ।

सय, सौ, १०० ।

सयन, १ सेवना २ सय्या व इशारा ।

सर, १ तात्काव २ बाण चिन्ता ।

सरद, शरद, एक ऋतु का नाम ।

सरपि, घी ।

सरल, १ सीधा २ सड़ा ।

सरवरि, बराबरी ।

सरवरी, रात्रि, रात ।

सरस, १ प्रेम सहित २ मकरंद समेत ।

सरसई, सरस्वती नदी ।

सरमोरुह, कमल (तत्काव में जो पैदा  
हो) ।

सरासन, धनुष ।

सरासुर, बाणासुर ।

सरि, नदी ।

सरित, नदी ।

सरिस, समान, बराबर ।

सरुज, रोगो, विमरिहा, रोगयुक्त ।

सरुष, कुट्ट, क्रोधसहित ।

सरेन, सरमे, बाण से ।

सरोज, पद्म, कमल ।

सरोरुह, कमल ।

सर्गै, डंड ।

सर्व, १ सब, सकल २ सबरूप ।

सर्वकाल, सबदिन ।

सर्वज्ञ, सब जाननवाला ।

सर्वदा, सबदिन, हमेशा ।

सलभ, पतंग, फतिंगा ।

सलिल, पानी, जल ।

सलोक, यज्ञ, जय ।

खे, जो लोग जे. खह ।

यं, जिस को ।

रघुनाथ, १ दशरथजी २ रामचंद्रजी ।

रघुराज, १ दशरथजी २ रामचंद्रजी ।

रश्क, रसक, रसवार ।

रज, धर ।

रजत, चांदी, स्या ।

रजधानी, राजधानी, राजा के रहने की जगह ।

रजनो, रात्रि, रात ।

रजाई, आजा ।

राजायम, राजाजा, आजा ।

रजु, रज्जु, डोरी ।

रट, बोलना ।

रतनार, लाल रंग ।

रति, १ प्रीति २ कामदेव की स्त्री ।

रथांग, चकई चकवा ।

रथी, रथयुत ।

रद, दांत ।

रदपट, होठ, ओठ ।

रन, रण, युद्ध ।

रनिवाम, १ रानी आदि २ जमाना स्थान ।

रवि, रवि, सूरज ।

रविनंदिनि, रविनंदिनी, यमुना नदी ।

रमन, १ रमण, पति २ व्यापक ३ कोड़ा ।

रमा, लक्ष्मी ।

रम्य, सुंदर ।

रय, वेग, जलदी ।

रये, रंगे ।

रवनी, रमणी, स्त्री ।

रवन, रमण, पति ।

रविमनि, सूर्यकांतमणि ।

रस, १ विषय २ मार ३ बल ४ मधुर आदि

५ शृंगार आदि ६ प्रेम ७ धीरे ।

रसना, जीभ ।

रसा, पृथ्वी ।

रसाक, १ भोटा, सामका पेड़, रसाकच ।

रसिक, रस का जाननेवाला ।

रसिषि, १ रस २ उकांत ।

रसस, गुप्त तत्व, भेद ।

राउत, सुंदार ।

राउर, १ आपका २ राजमंदिर ।

राऊ, राजा ।

राका, पूर्णमासी ।

राकेस, राकेस, पूर्णचंद्र ।

रासा, लगा, रासना, लगना ।

राजत, मोहता, भोभता, राजना, खो हुना ।

राजति, मोहती है ।

राजनय, राजनीति ।

राजी, १ राजि पंगति २ प्रभंग ३ शोभित ।

राजीव, कमल ।

राजे, प्रमत्त ।

राता, रत, प्रीतियुत ।

रामायुध, धनुष, बाण ।

राय, १ राजा २ धन ।

रायमुनि, लाल नाम पक्षी ।

रार, झगड़ा ।

रामभ, गंधा ।

रामि, राशि, ठेरी, समूह ।

राज्ज, यह विशेष ।

रिच्छम, जामवंत ।

रितुराज, ऋतुराज, वसंत ।

रिपु, वैरी ।

रिपुसुदन, शत्रुघ्न ।

रिषि, ऋषि, मुनिदर्शी ।

रिष्ट, रचित, रुग्ण ।

रिषिनायक, ऋषिनायक, ऋषिऋषि ।

रिसानी, क्रोध, क्रुद्ध भाई, रिसाना ।

रीते, खाली ।  
 रुख, १ रुग्ण २ क्रोध ३ दयादृष्टि ।  
 रुज, रोग ।  
 रुह, उत्पन्न ।  
 रुड, धड़ ।  
 रुंधु, कांटा का खावा ।  
 रुरी, सुंदर ।  
 रेख, १ रेखा, लकीर २ गिनती ।  
 रेत, रेत, बाजू ।  
 रेनु, रेण, धूर ।  
 रेस, ईर्ष्या ।  
 रेगाई, चलाई, रेगांना, चलाना ।  
 रोचन, १ गोरोचन २ हरदी ।  
 रोदन, रोना ।  
 रोदिति, रोता है ।  
 रोमपाट, ऊनी कपड़ा ।  
 रोष, क्रोध ।  
 रोहिनि, रोहिणी, चंद्रमा की स्त्री ।  
 रोड्ड, रोकना ।  
 रौताई, मरदारो ।  
 रंक, निर्धन ।  
 रंगभूमि, १ धनुष यज्ञ की भूमि, रण-  
 भूमि ।  
 रंजनि, रंजितो, र्घ्य देनेवाली ।  
 रंतिदेव, एक राजा का नाम ।  
 रंभ, कंद ।  
 रंकुट, लकड़ो ।  
 रूगि, १ वास्ते २ तक ३ अवलम्ब ।  
 रुघ, १ हलुका २ थोड़ा ३ छोटा ।  
 रुघुता, हलुकई ।  
 रुघुतापस, लक्ष्मिन ।  
 रुक, १ निशान, लच्छन २ ब्रह्म ।  
 रुक्का, रुक, रुख, १००००० ।  
 रुक्कि, रुक्मिणी ।

रुटत, मरता है, लटना ।  
 रुय, १ चित्त ठुल्ल २ लोभ ।  
 रुलना, स्त्री ।  
 रुलाट, माथा ।  
 रुलाम, १ अष्ट २ रतन ।  
 रुलित, सुंदर ।  
 रुव, १ अंश २ अल्प ३ काल ।  
 रुवण, रुवण, नोन ।  
 रुवणमिंधु, रुवणमिंधु, खारा रुमुद्र ।  
 रुवा, पत्नी विशेष ।  
 रुवाई, १ नयी बिआई गौ २ लिवा करके ।  
 रुषन, १ लच्छण २ देखना ।  
 रुषणो, देखते हैं, लखना, देखना ।  
 रुषाऊ, १ चिह्न २ जानना ।  
 रुषत, मोहत, लमना, मोहना ।  
 रुई, वास्ते, लिये ।  
 रुग, आधार, लाग ।  
 रुघव, १ शीघ्र २ हलका ।  
 रुजा, १ लावा २ लज्जा ।  
 रुाटी, तारु आदि सुख ।  
 रुलमा, दृष्टा ।  
 रुली, दुलारी, लालना, दुलारना ।  
 रुवक, रुवा ।  
 रुवन्य, रुवण्य, शोभा ।  
 रुल्ल, लाम ।  
 रुंधि, पाये ।  
 रुल्लहिं, लोला से, विना अम ।  
 रुलार, रुलाट, माथा ।  
 रुका, १ लीक, मर्यादा २ रेखा ३,  
 गिनती ।  
 रुठत, लोटना, लुठन ।  
 रुबुध, रुभ, लोभो ।  
 रुक, तारा, रुक्म ।  
 रुखई, लखतो है, देखतो है ।

सलोन, सुंदर ।

सव, श्व, मुट ।

सवोज, बीजाक्षर सहित ।

सम, प्रज्ञा, खरहा, खरगोज ।

समक, प्रज्ञक, खरहा ।

समि, १ प्रज्ञा चंद्रमा २ रेवती ।

समिरम, शक्तिरस, अमृत ।

मह, समेत, सहित ।

सहगामिनी, यती ।

सहज, स्वाभाविक, स्वभाव से पैदा हुआ ।

सहनी, द्रोणा ।

सहम, १ उर २ बेफिकिर ।

सहरोमा, १ उत्साह २ रोष सहना, क्रोध सहना ।

सहस, सहस्र, हजार ।

सहसबाहु, सहस्रबाहु, सहस्रभुज राजा ।

सहमा, १ जल्दी २ छट ३ बिना विचार के ।

सहमखी, १ सहस्राक्षि, हजार आंख-  
रखनेवाला, इन्द्र २ गवाह समेत, साखी  
सहित ।

सहस्यानन, समनाग, हजार मुख रखने-  
वाला ।

सहाया, १ साथ २ मददगार, सहायक ।

सहित, १ हितसमेत, मित्रसमेत २ संग  
समेत ।

सही, निश्चय ।

सहेली, सखी ।

सहोदर, एक पेट से जन्मा ।

साईं, स्वामी, मालिक ।

साउज, मृगा, हरिना ।

साक बनिक, १ कुंजड़ा, साग बेचनेवाला  
२ बिमाती ।

साखामृग, बानर ।

साखोचार, बस बखी कहना ।

सागर, समुद्र ।

साज, १ सामग्री २ सजव ।

साडेमाती, शनीचरी दशा ।

साधरी, आभरी ।

साखा, १ डार २ बहुत प्रकार से विचार ।

सादर, आदर पूर्वक ।

साधक, साधन समेत, उपाय युक्त ।

साधक, उपाय, तदबीर ।

साधा, मिलाया ।

साधु, १ मज्जन, भला आदमी २ अच्छा

३ सोलपान की दृष्टि रखनेवाला ।

साधमत, शिष्टाचार, अच्छा व्यवहार ।

साध्य, साधन के योग्य ।

सान, १ बाठ, तेज करना २ मिमाना  
आदरमान ।

साती, मिली ।

सापत, खाप देता हुआ ।

सावर, किरात क भय में शिवकृतादि  
मंत्र ।

सामध, समर्थियों का मिलना ।

सायक, शायक, साण, तीर ।

सायुज्य, ब्रह्म में लीन ।

सारद, १ सरस्वती २ सार देनेवाला ।

सारदी, जो वस्तु शरद ऋतु में होती है ।

सारस, एक विडिया ।

सारा, १ पाला, पोषा २ किया ।

सारी, मैना ।

सारंग, १ धनुष २ भौंगा ।

साल, १ दुख २ शोभा ३ घर ।

सालक, दुखदायी ।

साली, १ धान २ सोभायुक्त ३ संयुत ।

सावक, शवक, बच्चा, विडिया का बच्चा ।

सावकरण, श्यामकर्ण काळा कानवाला  
घोड़ा ।

सावकाम, काम से कुट्टी ।

साखत, अमर ।

सिकता, बालू ।

सिखा, १ शिला २ शिष्य, चेला ।

सिख, १ छोटी २ दोया का टेम ।

सिखिनो, मोरनी ।

सित, खेत, रुफंद ।

सिथिल, ढोला ।

मिद्ध, १ अणिमादि मिट्ट २ मुक्त ३ मि-  
धारा ।

मिधारी, गद्दे, मिधारना, जाना ।

मिधि, १ अणिमादि आठ मिट्टि २  
काम होना ।

मिमटे, दक्कटे, मिमटना ।

मिय, मोता ।

मियन, मोना ।

मियरे, जूड़े ।

मिरम, मरमि ठूठ ।

मिरानी, बीतो, मिराना ।

मिरावै, ठंडा करे ।

मिराहिं, बीतते हैं ।

मिरिजा, रक्षा, बनाया (मंसूज) ।

सिलोमुख, १ बानर २ भूमर ।

सिन्ध, शिन्ध, कारोगरी, राजगोरी ।

सिव, शिव, १ महादेव २ कल्याण ।

सिवमैल, कैलास पर्वत ।

शिवा, शिवा, पार्वती ।

शिवि, शिवि, राजा ।

शिविका, पालकी ।

सिसिर, शिशिर ऋतु ।

सिसु, शिशु, बड़का, बच्चा ।

सिसुपा, १ बीसो का पेड़ २ सरीफा का पेड़ ।

सिख, लिङ्ग ।

सिहाही, १ देख के मंतुष्ट होते हैं २ अ-  
भिलाष, डाह, सिहाना ।

सोकर, कीटा, बंद ।

सोत, शीत, १ पाला २ ठंडा ।

सोर्दाह, दुखी होते हैं ।

सोपी, सुतुही ।

सुकाल, शृंगाल, मियार ।

सृष्टि, १ संसार २ उत्पत्ति ।

सञ्चार, रमोई ।

सञ्जन, अच्छा अजन, मिट्ट अजन ।

सक, १ सगा २ सखदेव मुनि ।

सककेश, अति कटोर ।

सुकत, पुण्य, अच्छी करनी ।

सुवतो, धर्मात्मा, अच्छा कार्य करने  
वाला ।

सुकेतु, यत्न विशेष ।

सुकंठ, सघीव ।

सुखमा, अति शोभा ।

सुखासन, सुखपाल ।

सुक, १ वीर्य २ शुकाचार्य ।

सुगाद, लगाकर के ।

सघटित, अच्छा बना ।

सुचार्द, सुधार्द ।

सुचि, शुचि, पवित्र ।

सुचितित, अतिविचारित ।

सुजन, साधु, भला आदमी ।

सुजान, चतुर ।

सुटकि, कोड़ा मार के ।

सुठि, अति, बड़त ।

सुत, पुत्र, बेटा ।

सुदेश, सुदेश, १ अंग २ सुंदर देश ।

सुदेम, अच्छी वस्तु देनेवाला ।

सुधा, १ अमृत २ जल ।







